

श्री भगवत्-पुष्पदन्त-भूतबलि-प्रणीतः

# षट्खंडागमः

श्रीवीरसेनाचार्य-विरचित-धवला-टीका-समन्वितः ।

तस्य

प्रथम-खंडे जीवस्थाने

हिन्दीभाषानुवाद-तुलनात्मकटिप्पण-गणितोदाहरण-प्रस्तावनानेकपरिशिष्टैः सम्पादितः

## द्रव्यप्रमाणानुगमः ३



सम्पादकः

अमरावतीस्थ-किंग-एडवर्ड-कालेज-संस्कृताध्यापकः, एम्. ए., एल्. एल्. बी., इत्युपाधिवहारी

हीरालालो जैनः

सहसम्पादकी

पं. फूलचन्द्रः सिद्धान्तशास्त्री \* पं. हीरालालः सिद्धान्तशास्त्री, न्यायतीर्थः

संशोधने सहायकौ

व्या. वा., सा. सू., पं. देवकीनन्दनः

\*

डा. नेमिनाथ-तनय-आदिनाथः

सिद्धान्तशास्त्री

उपाध्यायः, एम्. ए., डी. लिट्.

प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शितावराय लक्ष्मीचन्द्र

जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालयः

अमरावती ( बरार )

वि. सं. १९९८ ]

वीर-निर्वाण-संवत् २४६७

[ ई. सं. १९४१

मूल्यं रूप्यक-दशकम्

MUNSHI RAM MANOHAR LAL

Oriental & Foreign P. L-Sellers

P.B.1165, Nai Sarak, DELHI-6



प्रकाशकः

श्रीमन्त सेठ शिताबराय लक्ष्मीचन्द्र,  
जैन-साहित्योद्धारक-फंड-कार्यालय,  
अमरावती [ वरार ]



मुद्रक-

टी. एम्. पाटील,  
मॅनेजर

सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, अमरावती [ वरार ]

# THE ṢAṬKHAṆḌĀGAMA

OF

PUSPADANTA AND BHŪTABALI

WITH

THE COMMENTARY DHAVALĀ OF VIRASENA

VOL. III

## DRAVYA-PRAMĀṆĀNUGAMA

*Edited*

*with introduction, translation, notes and indexes*

BY

HIRALAL JAIN, M.A., LL. B.,

C. P. Educational Service, King Edward College, Amraoti.

ASSISTED BY

Pandit Phoolchandra  
Siddhānta Shāstri

\*

Pandit Hiralal Siddhānta Shastri,  
Nyāyatīrtha.

*With the co-operation of*

Pandit Devakinandana,  
Siddhānta Shāstri

\*

Dr. A. N. Upadhye,  
M. A., D. Litt.

*Published by*

Shrimanta Seth Shitabrai Laxmichandra,

Jaina Sāhitya Uddhāraka Fund Karyālaya,

AMRAOTI ( Berar ).

1941

Price rupees ten only.



JP 2  
P.B./Jai

*Published by—*  
**Shrimant Seth Shitabrai Laxmichandra,**  
Jaina Sahitya Uddhāraka Fund Karyālaya,  
**AMRAOTI ( Berar ).**



**CENTRAL ARCHAEOLOGICAL  
LIBRARY, NEW DELHI.**

**Acc. No.**.....17236.....

**Date**.....23.6.39.....

**Call No.**.....22.2.18.....

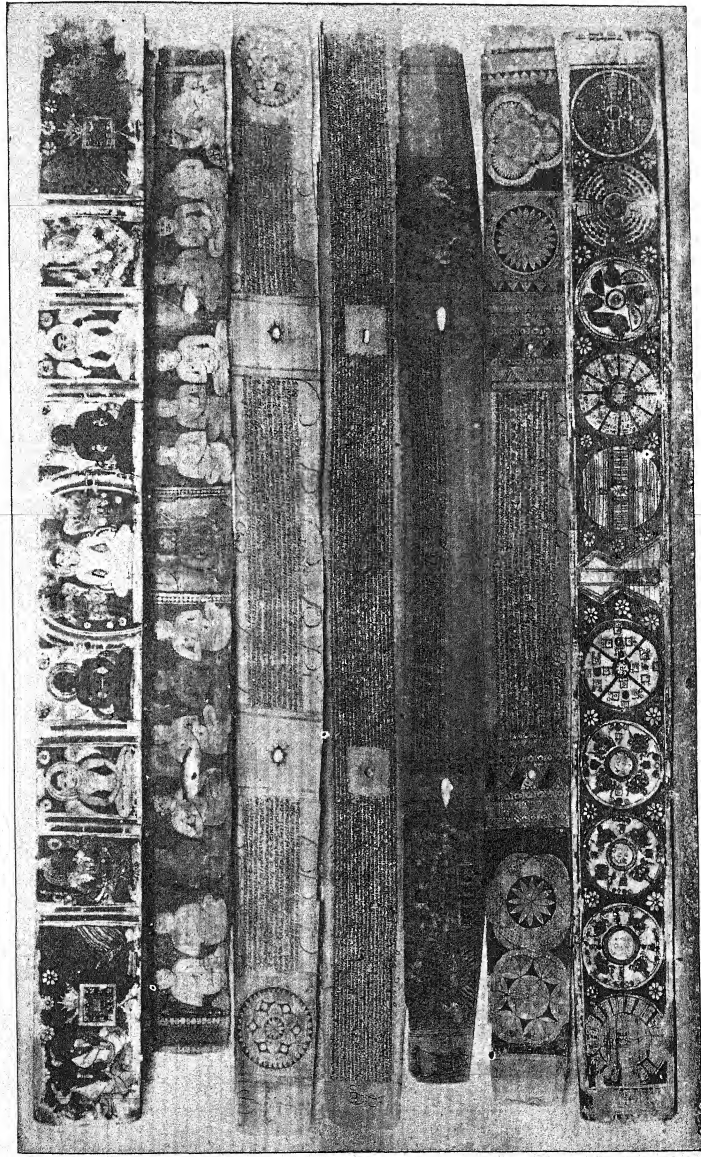
*Printed by—*

**T. M. Patil, Manager,**

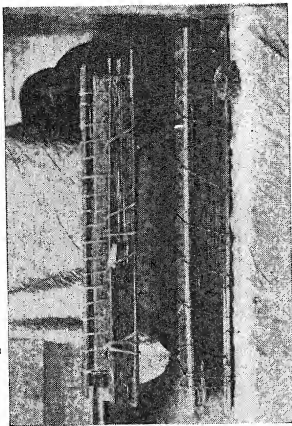
Saraswati Printing Press,

**AMRAOTI (Berar ).**

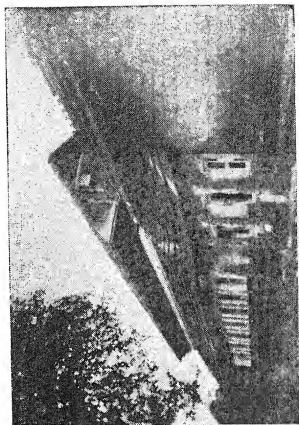
Read for Mumbai R. Manohar Lal. Delhi on 12/5/79 @ Rs 10.00



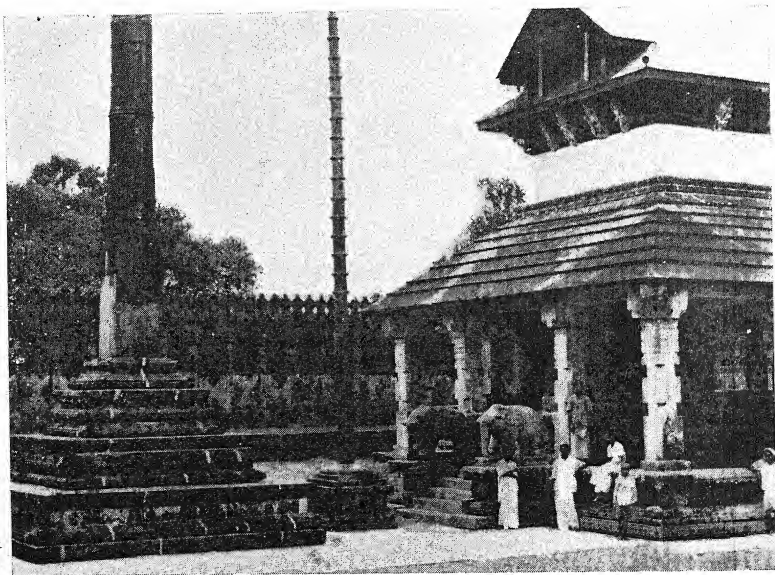
१. मृदबिंद्रीमें सिद्धान्त ग्रंथोंके कुछ खुले हुए सचित्र व लिखित ताड़पत्र.



२. मूडविट्टीमें सिद्धान्त ग्रंथों की प्रतिमां बंधी हुई



३. मूडविट्टीका सिद्धान्त मंदिर (मुखवसादि)

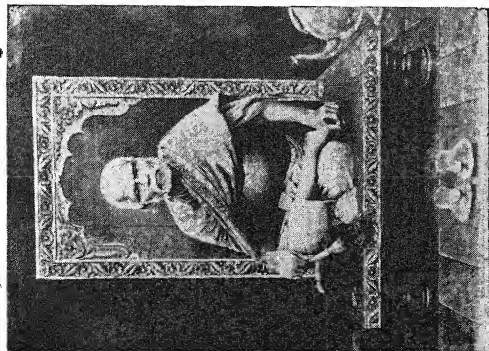


४. मूडविट्टीका सहस्रस्तंभ मंदिर (बड़ा मंदिर)

श्री

अतिशय क्षेत्र मूडविद्रीकी जिस सम्मान्य  
भट्टारक-परम्पराने इन अनुपम सिद्धान्त ग्रंथोंकी  
चिरकालसे बड़ी सावधानी और सतर्कतापूर्वक  
रक्षा की, तथा अब सुअवसर प्राप्त होने पर  
विद्वत्संसारको उनका लाभ दिया, उसीके भूतपूर्व  
और वर्तमान गुरुओंके सत्प्रयत्नोंकी स्मृतिमें यह  
ग्रंथ विशेष रूपसे समर्पित है ।

त्वदीयं वस्तु, भो स्वामिन्,  
तुभ्यमेव समर्प्यते ।

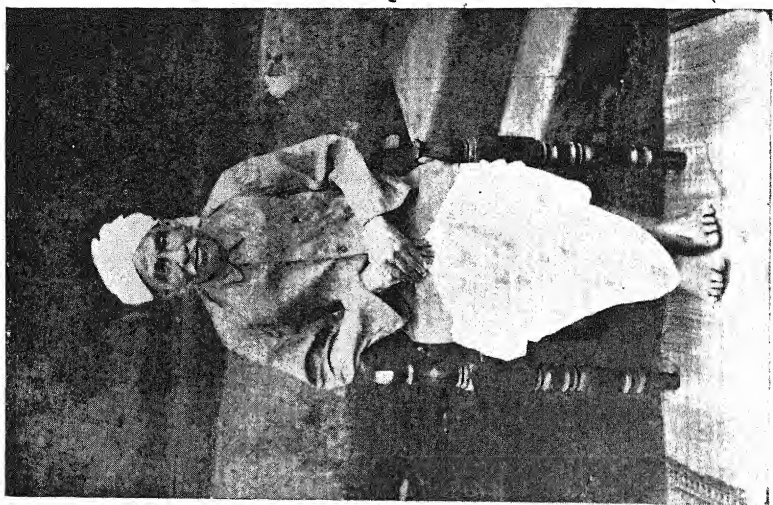


५. मूडविद्दीके स्वर्गीय भट्टारक  
चारकीर्ति स्वामी



६. मूडविद्दीके वर्तमान भट्टारक  
चारकीर्ति स्वामी





३. मूडबिंद्रीय सिद्धान्त वसदिके ट्रस्टी नगरसेठ श्री. देवराजजी



२. सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतिलिपि व मिलान करनेवाले  
सरस्वती-भूषण पं. लोकनाथजी शास्त्री



४. मूडबिंद्रीय सिद्धान्त वसदिके ट्रस्टी  
श्रीयुक्त धर्मपालजी

## विषय सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
प्राक् कथन	१-३	५ मतान्तर और उनका खंडन	४४
१		६ गणितकी विशेषता	४७
प्रस्तावना	१-६७	८ मूडबिंद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके	
ग्रंथकी प्रस्तावना (अंग्रेजीमें)	i-iv	मिलानका निष्कर्ष	४९
१ चित्र और चित्र-परिचय	१	९ द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची	५२
२ मूडबिंद्रीका इतिहास	४	१० अर्थसंबंधी विशेष-सूचना	६६
३ महाबंधकी खोज	६-१४	११ पाठसंबंधी विशेष-सूचना	६७
१ खोजका इतिहास	६	शुद्धि पत्र	६८
२ सत्कर्मपंचिका परिचय	७	मंगलाचरण	७२
३ महाबंध परिचय	१२		
४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रति- पत्तिपर कुछ और प्रकाश	१५	२	
५ णमोकार मंत्रके सादित्व अनादित्व- का निर्णय	१६	द्रव्यप्रमाणानुगम	१-४८७
६ शंका-समाधान	१८	( मूल, अनुवाद और टिप्पण )	
७ द्रव्यप्रमाणानुगम	३१-५१	३	
१ उत्पत्ति	३१	परिशिष्ट	१-४२
२ प्रमाणका स्वरूप	३२	१ द्व्वपरूवणासुत्ताणि	१
३ जीवराशिका गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण	३७	२ अवतरणगाथासूची	१०
४ जीवराशिका मार्गणास्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण	३८	३ न्यायोक्तियां	११
		४ ग्रंथोल्लेख	१२
		५ पारिभाषिक शब्दसूची	१६
		६ मूडबिंद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलान	२०

## प्राक् कथन

हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि गत द्वितीय भागके प्राक् कथनमें हमने मूढविद्दी सिद्धान्तभवनके अधिकारियोंके सहयोगसंबंधी जो सूचना प्रकट की थी, वह क्रियात्मक रूपमें परिणत हुई। इसके प्रमाण पाठक इसी भागके साथ प्रकाशित साहित्यसामग्रीमें देखेंगे। हमने महाधवलके अन्तर्गत ग्रंथ-रचनाके संबंधमें एक स्वतंत्र लेखकेद्वारा जो चिन्ता और जिज्ञासा प्रकट की थी, उसने उक्त सिद्धान्त भवनकी क्रियात्मक शक्तिको जागृत कर दिया। शीघ्र ही हमें स्वयं भट्टारक स्वामी चारुकीर्तिजी द्वारा महाधवलके संबंधमें अनेक सूचनाएं और उसका परिचय भी प्राप्त हुआ और उसी सिलसिलेमें सिद्धान्तग्रंथोंके ताड़पत्रों, मंदिरों व अधिकारियों व कार्यकर्ताओंके चित्र भी उन्होंने भिजवानेकी कृपा की, व ताड़पत्रीय प्रतियोंसे पाठ-मिलानकी सुविधा भी करा दी। इस पुण्य कार्यमें हमारे सदा सहायक पं. लोकनाथजी शास्त्री ने उक्त महाधवल-परिचय और मूढविद्दीका कुछ इतिहास भी लिख भेजनेकी कृपा की, तथा वे अपने दो सहयोगी पं. नागराजजी शास्त्री और पं. देवकुमारजी शास्त्री के साथ मिलान कार्यमें दत्तचित्त भी हो गये। इस समस्त सहयोगके फलस्वरूप इस भागके साथ हम मूढविद्दी, वहांकी सिद्धान्तप्रतियों, मन्दिरों और अधिकारियोंके चित्र व परिचय और इतिहास पाठकोंके सन्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं। यही नहीं, अब तक प्रकाशित तीनों भागोंके पाठका ताड़पत्रीय प्रतियोंसे मिलान व तत्संबंधी निष्कर्ष अत्यन्त परिश्रमपूर्वक सुव्यवस्थित करके पाठकोंके विचारार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। एक ध्यान देने योग्य हर्षकी बात यह है कि मूढविद्दीमें धवलसिद्धान्तकी एक संपूर्ण ताड़पत्रीय प्रतिके अतिरिक्त दो और ताड़पत्रीय प्रतियां हैं। यद्यपि ये बहुत अधिक नुटित हैं— इनके बीचके सैकड़ों पत्र अप्राप्य हो गये हैं—तथापि जितने हैं उतने पाठसंशोधनकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि, इनमें परस्पर पाठभेद भी पाये जाते हैं जहासे हमारे मिलानमें दिये हुए 'ब' खंडके पाठभेदोंकी उत्पत्ति संभव है। विशेषतः मिलानके 'ब' खंडमें दिये हुए भाग एकके पृष्ठ २२८ से अन्ततकके पाठभेद तो यहीं से उत्पन्न हुए विदित होते हैं। यथाशक्ति इन नुटित प्रतियोंके मिलान लेनेका भी हमने प्रयत्न किया है, किन्तु वर्तमान परिस्थितिमें इनका उतना और उसप्रकार उपयोग नहीं हो पाया जितना सूक्ष्मताकी दृष्टिसे अभीष्ट है। यथावसर इन प्रतियोंका विशेष परिचय देने और उपयोग लेनेका भी प्रयत्न किया जायगा। इस महान् साहित्यिक निधिको सर्वोपादेय बनानेमें सहायताके लिये मूढविद्दीके उक्त महानु-भावोंका हम जितना उपकार माने, थोड़ा है।

१ यह लेख जैन गजट, जैन मित्र, जैन संदेश, जैन बोधक आदि पत्रोंमें नवम्बर १९४० में प्रकट हुआ था। उसका पूर्णरूप अन्तिम सूचनाओं तकके समाचार लेकर दिसम्बर १९४० के जैन सिद्धान्त भास्करमें प्रकाशित हो चुका है।

प्रस्तुत भागके पाठ-संशोधन व अनुवादमें सम्पादकोंको विशेष कठिनाईका साम्हना करना पड़ा है। एक तो यहाँका विषय ही बड़ा सूक्ष्म है, और दूसरे उसपर ध्वलाकारने अपने समयेके गणित शास्त्रकी गहरी पुट जमाई है। इसने हमें बड़ा हैरान किया, तथापि किसी अज्ञात शक्तिकी प्रेरणा, जनताकी सद्भावना और विद्वानोंके सहयोगसे वह कठिनाई भी अन्ततः हल हो ही गई, और अब हम यह भाग भी पूर्व भागोंके समान कुछ आत्मविश्वासके साथ पाठकोंके हाथमें सौंपते हैं। मूल भागमें सामान्य विषय-प्ररूपणके अतिरिक्त कोई २८० शंकाएं उठाकर उनका समाधान किया गया है। इसके गहन, अपरिचित और दुरूह भागको अनुवादमें बीजगणित और अंकगणितके कोई २८० उदाहरणों तथा ५० विशेषार्थों व ३३३ पादटिप्पणोंद्वारा सुगम और सुबोध बनानेका प्रयत्न किया गया है। इसका गणित बैठनेमें हमें हमारे कालेजके सहयोगी, गणितके अध्यापक **प्रोफेसर काशीदत्तजी पांडे**, एम. ए., से विशेष सहायता मिली है। उन्होंने कई दिनोंतक लगातार घंटों हमारे साथ बैठ बैठकर करण-गाथाओंको समझाने समझाने व अन्य गणित व्यवस्थित करनेमें बड़ी रुचि और लगनसे खूब परिश्रम किया है। गाथा नं. २८ (पृ. ४७) का गणित नागपुरके वयो-वृद्ध गणिताचार्य, हिस्लप कालेजके भूतपूर्व गणिताध्यापक **प्रोफेसर जी. के. गर्देने** बैठा देने की कृपा की है, तथा उसीका दूसरा प्रकार, एवं पृ. ५०-५१ पर दिये हुए पश्चिम-विकल्पका जो गणित संबंधी सामंजस्य प्रस्तावनाके पृ. ६६ पर 'अर्थसंबंधी विशेष सूचना' शीर्षकसे दिया गया है वह लखनऊ विश्वविद्यालयके गणिताचार्य व 'हिन्दू गणितशास्त्रका इतिहास' के लेखक **डाक्टर अवधेश नारायणसिंहजी**ने लगाकर भेजनेकी कृपा की है। इस अत्यन्त परिश्रम पूर्वक दिये हुए सहयोगके लिये उपर्युक्त सभी सज्जनोंके हम बहुत ही कृतज्ञ हैं। इस भागमें यदि कुछ सुन्दर और महत्त्वपूर्ण सम्पादन कार्य हुआ है तो वह इसी सहयोगका परिणाम है। हाँ, जो कुछ त्रुटियाँ और स्खलन रहे हों उनका उत्तरदायित्व हमारे ही ऊपर है, क्योंकि, अन्ततः समस्त सामग्रीको वर्तमान रूप देनेकी जिम्मेदारी हमारी ही रही है।

इन सिद्धान्त ग्रंथोंकी ओर विद्वान् पाठक कितने आकर्षित हुए हैं, यह उन अभिप्रायोंसे स्पष्ट है जो या तो समालोचनादिके रूपमें विविध पत्रोंमें प्रकाशित हो चुके हैं, या जो विशेष पत्रों द्वारा हमें प्राप्त हुए हैं। उन सभी सदभिप्रायोंके लिये हम लेखकोंके विशेष आभारी हैं। इन अभि-प्रायोंमें ऐसी अनेक सैद्धान्तिक व अन्य शंकाएं भी उठाई गई हैं जो ग्रंथके सूक्ष्म अध्ययनसे पाठकोंके हृदयमें उत्पन्न हुईं। कितने ही अंशोंमें उन शंकाओंके उत्तर भी हम यथाशक्ति उन उन पाठकोंको व्यक्तिगत रूपसे भेजते गये हैं। अब हम उनमेंसे कुछ महत्त्वपूर्ण शंकाएं और उनके समाधान, इस भागकी भूमिकामें पृष्ठक्रमसे व्यवस्थित करके प्रकाशित कर रहे हैं, जिससे ग्रंथराजके सभी पाठ-कोंको लाभ हो और इस सिद्धान्तके समझने समझाने में सहायता पहुँचे। गहन सिद्धान्तोंके अर्थपर प्रकाश डालनेवाले अभिमतों का हम सदैव आदर करेंगे।

सम्पादन-संबंधी हमारी शेष साधन-सामग्री और सहयोगप्रणाली पूर्ववत् ही इस भागके लिए भी उपलब्ध रही। हमें अमरावती जैन मन्दिरकी हस्तलिखित प्रतिके अतिरिक्त आराके सिद्धान्तभवन और कारंजाके महावीर ब्रह्मचर्याश्रमकी प्रतियोंका मिलानके लिये लाभ मिलता रहा, तथा सहारनपुरकी प्रतिके नोट किये हुए पाठभेद भी समुपलब्ध रहे। अतएव हम उनके अधिकारियोंके बहुत आभारी हैं। मूढब्रिदीय प्रतियोंके मिलान प्राप्त हो जानेसे हमने इन प्रतियोंके परस्पर पाठ-भेद व छूटे हुए पाठ आदि देना आवश्यक नहीं समझा।

हमारे सम्पादनकार्यमें विशेषरूपसे सहायक पं. देवकीनन्दनजी सिद्धान्तशास्त्री गत तीन चार मास बहुत ही व्याधिग्रसित रहे, जिसकी हमें अत्यन्त चिन्ता और आकुलता रही। यद्यपि अभी भी वे बहुतही दुर्बल हैं, तथापि व्याधि दूर हो गई है और वे उत्तरोत्तर स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं जिसका हमें परम हर्ष है। हमें आशा और विश्वास है कि वे शीघ्र ही पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करके अपनी विद्वत्ताका लाभ हमें देते रहनेमें समर्थ होंगे।

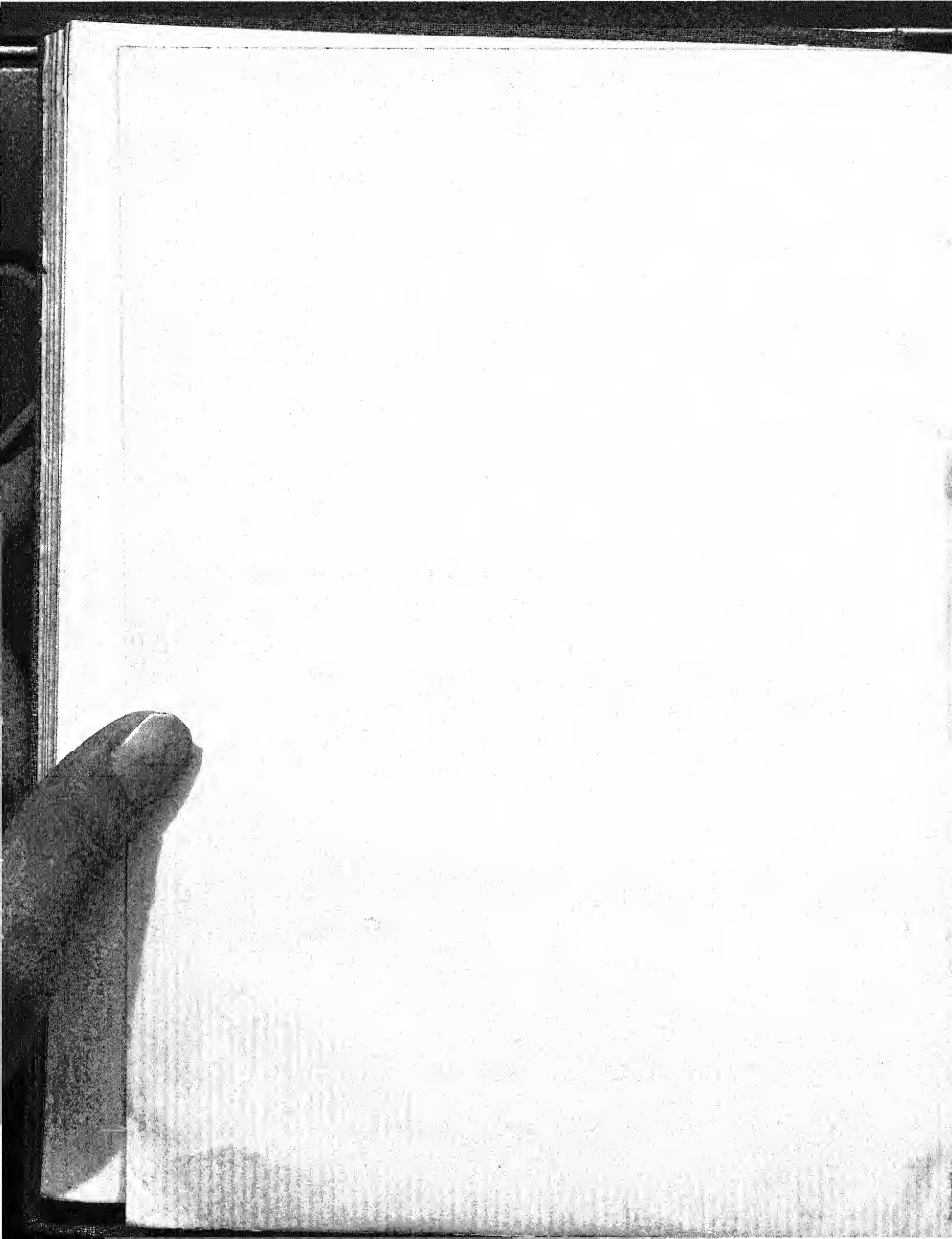
हमारे सहयोगी पं. फूलचन्द्रजी सिद्धान्तशास्त्रीका नवजात पुत्र गत फरवरी मासमें अत्यन्त रुग्ण हो गया, जिससे फरवरीके अन्तमें पंडितजीको अकस्मात् देश जाना पड़ा। यथाशक्ति खूब उपचार करने पर भी दुर्दैवसे पंडितजीको पुत्र-वियोगका अपार दुःख सहन करना पड़ा, जिसका हमें भी अत्यन्त शोक है, और शेष कुटुम्बकी सहानुभूतिसे हृदय द्रवित होता है। तबसे फिर पंडितजी वापिस नहीं आ सके। चूंकि इस समय पंडित फूलचन्द्रजी हमारे सन्मुख नहीं हैं, इससे हमें यह निस्संकोच प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि प्रस्तुत कठिन ग्रन्थको वर्तमान स्वरूप देनेमें पंडितजीका भारी प्रयास रहा है, जिसके लिये शेष सम्पादकवर्ग उनका बहुत आभारी है।

प्रथम भागके प्रकाशित होनेसे ठीक आठ माह पश्चात् ही दूसरा भाग जुलाई १९४० में प्रकाशित हुआ था। मार्च १९४१ में आठ माहके पश्चात् ही यह तीसरा भाग प्रकाशमें आ रहा है। जो कुछ सहयोग और सहानुभूति इस महत्त्वपूर्ण साहित्यके प्रकाशनमें मिल रही है उससे आशा और विश्वास होता है कि यह पुण्य कार्य सुचारु रूपसे प्रगतिशील होता जायगा।

किंग एडवर्ड कॉलेज,  
अमरावती  
१-४-४१

हीरालाल जैन

प्रस्तावना



# INTRODUCTION.

## 1. Cooperation of the Moodbidri Authorities and Collation of the Palmleaf Manuscripts.

It will be noticed with the greatest pleasure by every one interested in the publication of this series that the present Volume is appearing with the full cooperation of the authorities at the pontifical seat at Moodbidri where the old palmleaf Mss. of this unique work are deposited and worshipped. The publication of the first two volumes and our ceaseless efforts, as well as of those who realised the value and importance of this venture, brought about this miraculous and most welcome change in the outlook of those who had so far stood apart and looked upon the undertaking with doubts and misgivings. The immediate occasion for the change was provided by the publication of my article in which anxiety was expressed concerning the real contents of the palmleaf Ms. which goes by the name of Mahābhāvala. It aroused a sensation amongst those who had any idea of the possible contents of those Mss. and stirred the hearts of all concerned. An examination of the palmleaf Mss. was, therefore, immediately arranged and I was soon informed by telegrams and letters about the results of that examination. The contact thus established proved lasting and the collation of the Dhavala Mss. with the published part of the work was carried out. The collation of the rest of the work is also proceeding, thanks to the sympathetic attitude of the authorities and the cooperation of a band of learned people there.

As a result of the search, two more old but incomplete palmleaf Mss. of Dhavala have been discovered. These would prove of immense value in settling the text more accurately. At present, the collation of all these palmleaf Mss. in a thorough and accurate manner was not possible, but it might be hoped that this will also be accomplished in the near future. The result of the Moodbidri collations, so far, has been that of the 483 variants noticed in the text of the three volumes yet published, including the present volume, 149 contribute towards the improvement of the text in the matter of sense or expression or both, 62 appear to be optionally acceptable, 157 are phonetic options of the Prakrit language, while 120 are unacceptable, being scribal or other errors. These have been properly classified by us in an appendix and the general results are embodied in the Hindi Introduction (page 49). It was necessary to amend the translation very slightly only at 78 places in all. Our principles of text constitution and translation, as laid down by us in the Introduction to Volume I, are thus mostly borne out by this collation. The position of the euphonic *ya* may have to be reconsidered, but we must wait for more material. Of the 19 expressions which were not found in the available Mss. but were thought to be necessary by us and were, therefore, added and placed within brackets in the



present Volume, 13 have been found almost verbatim in the palmleaf Mss. We re-examined the remaining 6 additions and found that even if we omit them from their allotted positions we have to infer the sense from the context.

## 2. Contents of the Mahādhavala manuscript.

The examination of the Mahādhavala palmleaves corroborated our doubts as well as fulfilled our hopes. The Ms. has been found to contain, on the first twenty-seven leaves, a work which has been called **Sattakamma-Panchika**. A careful examination of the extracts received by us from that work, reveals the fact that it is a gloss on the first four out of the eighteen Adhikaras or chapters contained in the supplementary part of Dhavalā which is entirely the composition of Virasena without any strata of old Sūtras. The author and the date of this gloss remain yet obscure.

The rest of the Mahādhavala Ms. contains the **Mahābandha**, presumably the composition of Āchārya Bhūtabali himself. This is indicated by the nature of the contents examined in the light of what has been said about the Mahābandha of Bhūtabali in the Dhavala and Jayadhavala.

## 3. Subject matter of this volume.

The subject matter of this volume is the enumeration of souls in each of the fourteen stages of spiritual advancement (Gūṇasthānas), and in the different varieties of life and existence called the soul-quests (Mārgaṇasthānas). These have been calculated in terms of infinite (Ananta), innumerable (Asamkhyāta) and numerable (Samkhyāta), and the standards have been first explained and defined. Living beings are infinite in number. Of these, the major bulk, which also is infinite in number, consists of beings that are on the lowest rung of the spiritual ladder, the first stage of mental evolution (Mithyātvas). Of the rest, again, the major part are the absolved beings (Mukta or Siddha) who are also infinite. The beings in the stages from the 2nd to the 5th are innumerable, while those in the last nine stages (6th to 14th) are in all just three less than nine crores. The author of Dhavala has illustrated these quantities arithmetically by taking the entire living creation to be 16, out of which 13 would fall under the first category, while the remaining 3 would include the Siddhas and all the souls of the other thirteen stages. We have tried to carry this illustration further by splitting up the 3 as well so as to allot 2 to the Siddhas and distribute the remaining 1 among the thirteen stages according to their quantitative order. (See Intro. page 37).

The soul quantities, according to the subdivisions falling under the Mārgaṇasthānas, have been defined and illustrated in his own way by the author. But we have tried to work the same out in figures that are consistent with the Gūṇasthāna distribution, keeping the entire Jivārāshi as 16, the Mithyādrishti as 13, the Siddhas 2, and the rest comprised within 1. The categories falling under the fourteen Mārgaṇasthānas are 63, of which 23 are infinite, 32 innumerable, and 8 numerable. It would be interesting to note that the entire human race is said to be innumerable, but those that are found in the stages from the 2nd to the 14th are just three less than eight hundred and seventy-eight crores. These are spread over all

the two and half Dvipas or mainlands over which the human population is spread.  
( Page 38-43 )

#### 4. Scientific Importance of the Work.

The distribution of souls in the various stages of spiritual advancement and the varieties of life and existence is based upon certain Jaina dogmas which are in their nature inscrutable. An attempt has been made by the authors of the Sutras and the Commentary to put the distribution in a precise mathematical form. The authors have made full use of the mathematical knowledge of their times, which reveals a considerably high state of development during the earliest centuries of the Christian era when the Sutras were composed, as well as during the latter part of the 8th and the earlier part of the 9th century when the commentary was written. The author of the Sutras shows a clear conception of infinity and orders of infinity within infinity in their application to matter, time and space. Within the sphere of finite numbers he mentions figures from one to hundred, thousand, tens and hundreds of thousands, and crores, also their multiples, squares and square roots, as well as the fundamental operations of arithmetic, namely, addition, subtraction, multiplication and division. The commentator has amplified this knowledge considerably in the light of what was known at his time. Several practical methods of division have been explained. There is a free use of the place value notation. The use of fraction has been frequently made in order to arrive at quotients with particular divisors, or to determine divisors when a particular quotient is given. This indicates the knowledge of fractions at that stage. The processes of evolution and involution are identical with those current in modern mathematics. Thus, we notice the use of powers ( Vargita-samvargita ) and roots ( Varga-mula ). This indicates that the author of Dhavala had a clear knowledge of the law of indices and possibly of the theory of logarithms, as may be inferred from the relations shown between the Varga-shalakas and Ardhacchedas ‡ The rule of three was an operation well known to the author for the purposes of showing variations. We also find the use of the summation of an arithmetic series. The author is also found to have employed the mensuration formula for a circle. The ratio of the circumference to the diameter is taken as a little less than  $\sqrt{10}$ , and it is just possible that approximations to this value in a fractional form to a fair degree of accuracy were known to the author.

It may be hoped that the work will considerably widen our knowledge about the state of mathematics and its application to the problems of life in ancient India. As I have already acknowledged in my foreword, my colleague Professor K. D. Pandey, M. A., has interpreted for me many of the author's formulas and has also assisted in framing the illustrations, while Dr. Avadhesh Narain Singh, D. Sc., Professor

---

‡ The number of times that a particular figure is multiplied by itself is its Varga-shalakas, while the number of times that a particular figure is successively halved is its ardhacchedas.

of Mathematics in the Lucknow University and the author of the History of Hindu Mathematics has contributed the interpretations of formulas which are set forth by us on page 66 of the Hindi Introduction. Both these scholars are at present studying the work from the point of view of its mathematical importance, and some of my remarks above are based upon information already supplied by them. The emendation of the text of the verse 28 as well as its explanation and illustration as given in our translation are the contributions of Professor G. R. Garde, M. A., the well known Sanskritist and Mathematician of Nagpur.

### 5. Other Topics.

Other topics discussed in the Hindi Introduction are as follows:—

1. An account of the palmleaf manuscripts as well as of the institutions and personalities of Moodbidri, together with a short history of the place, has been given with illustrations. It appears that the Jaina institutions of Moodbidri date from about the 11th century, with a back ground that may be about four centuries older. The foundation of the pontifical seat was laid during the 12th century and the zenith of prosperity was reached during the following two or three centuries. (Page 1-6)

2. A little more light is shed on what have been called by the author of Dhavalā the Northern and Southern Schools of thought (Uttara Pratipatti and Dakṣiṇa pratipatti), to which we had drawn attention in the Introduction to Vol. I, page iii & 57, and which are cited more than once in the text now presented. (Page 92, 94, 98 of the text.) One mention of these Schools noticed by us in the Jayadhavalā associates one school with Arya Mankhu and the other with Nāgahasti. An attempt is being made by us to get more light on this important subject (page 15).

3. Our conclusions about the authorship of Namokara Mantra expressed in the Introduction to Vol. II, created a considerable stir amongst people who have come to regard the sacred formula as eternal. A reconsideration of the pertinent text in the light of the readings obtained from the palmleaf Mss. of Moodbidri, corroborates our previous conclusions so far as the linguistic expression of the sacred formula in its present form is concerned. But there is no contradiction in regarding the sense of the formula as even older than Pushpadanta. (Page 16)

4. After the publication of the first Vol., a great interest in the subject matter of the work was aroused and a number of questions were received by us from time to time for more light about the text and its interpretation. We tried to satisfy the curiosity of our inquirers then and there, and now we reproduce here in a properly arranged form a set of twenty-four questions with answers, because we considered them important from one point of view or another. It will be seen from these that our principles of text constitution and interpretation are fully justified. (Page 18-31)

## १ चित्र परिचय.

१

ऊपरसे नीचेकी ओर प्रथम सचित्र ताड़पत्र श्रीधवल ग्रंथका है। इसके मध्यमें एक तीर्थकरका चित्र है, जिसके दोनों ओर अनुमानतः यक्ष-यक्षिणी खड़े किये गये हैं। इसके दोनों ओर दो दो तीर्थकरोंके और चित्र हैं, तथा उनके एक ओर यक्ष और दूसरी ओर यक्षिणी चित्रित हैं। फिर दोनों छोरोंपर प्रवचन करते हुए आचार्य व श्रोता श्रावकोंके चित्र हैं।

दूसरा सचित्र ताड़पत्र भी श्रीधवल ग्रंथराजका है। बीचमें तीर्थकर विराजमान हैं, और आजू-बाजू सात सात भक्त वन्दना करते हुए दिखाये गये हैं।

तीसरा ताड़पत्र श्रीधवलका कनाड़ी लिपिमें हस्त-लिखित है।

चौथा ताड़पत्र कनाड़ी लिपिमें हस्त-लिखित श्रीमहाधवल ग्रंथका है।

पांचवां ताड़पत्र श्रीजयधवल ग्रंथका है। बीचमें कनाड़ीका हस्तलेख तथा आजू-बाजू चित्र हैं।

छठवां ताड़पत्र श्रीमहाधवलका २७ वां पत्र है, जहां 'सत्तकम्मपंचिका' पूरी हुई कही जाती है। इसके भी बीचमें हस्तलेख और आजू-बाजू चक्राकार चित्र हैं।

सातवां ताड़पत्र त्रिलोकसार ग्रंथके भीतरका है।

२

नीचेसे ऊपरकी ओर प्रथम ग्रंथ श्रीधवल सिद्धान्त (षट्खंडागम) है। इसके ताड़पत्रोंकी लम्बाई २ फुट, चौड़ाई २॥ इंच, तथा पत्र संख्या ५९२ है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १४ पंक्तिय हैं, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १३८ अक्षर हैं। इसप्रकार प्रत्येक ताड़पत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२०॥ आती है, जिससे कुल ग्रंथका प्रमाण ७१४८४ श्लोकोंके लगभग आता है।

अभीतक यही समझा जाता था कि धवलाकी प्राचीन ताड़पत्रीय प्रति एकमात्र यही है। किन्तु अब खोजसे ज्ञात हुआ है कि वहां धवलाकी दो और भी ताड़पत्रीय प्राचीन प्रतियां हैं, जिनकी ताड़पत्रोंकी संख्या क्रमशः ८०० और ६०५ है। इनमें पाठभेदभी कहीं कहीं बहुत कुछ पाया जाता है। किन्तु इन दोनों प्रतियोंके बीचबीच के अनेक ताड़पत्र अप्राप्य हैं, और इस प्रकार ये दोनोही प्रतियां बहुत कुछ त्रुटित हैं। इनका प्रशस्तियों आदि सहित विशेष परिचय आगेके भागमें देनेका प्रयत्न किया जायगा।

दूसरा ग्रंथ श्रीमहाधवल कहलाता है। इसके ताड़पत्रोंकी लम्बाई २ फुट ४ इंच, चौड़ाई २॥ इंच तथा पत्रसंख्या २०० है। प्रत्येक पृष्ठपर प्रायः १३ पंक्तियां, और प्रत्येक पंक्तिमें

लगभग १७० अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक-संख्या १३८ आती है, जिससे कुलग्रंथका प्रमाण २७६०० श्लोकोंके लगभग आता है। किन्तु बड़े बड़े पारिभाषिक शब्दोंके सूक्ष्म-रूप बनाकर लिखे गये हैं, इससे श्लोक प्रमाण अधिक भी हो सकता है।

तीसरा ग्रंथ श्रीजयधवल सिद्धान्त है। इसके ताडपत्रोंकी लम्बाई २। फुट, चौड़ाई १। इंच, तथा पत्रसंख्या ५१८ है। प्रत्येक पृष्ठपर प्रायः १३ पंक्तियाँ, और प्रत्येक पंक्तिमें लगभग १३८ अक्षर हैं। इस प्रकार प्रत्येक ताडपत्रपर श्लोक-संख्या लगभग १२० आती है, जिससे कुल ग्रंथका प्रमाण ६११२४ श्लोकोंके लगभग आता है।

## ३

यह मूडविद्रीका वही सुप्रसिद्ध मंदिर है, जहाँ सिद्धान्त ग्रंथोंकी ताडपत्रीय प्रतियाँ शता-ब्दियोंसे विराजमान हैं। इन्हींके कारण यह मन्दिर 'सिद्धान्त मन्दिर' या 'सिद्धान्त वसदि' कहलाता है। अनेक रत्नमयी प्रतिमायें भी यहाँ विराजमान हैं, जिनके दर्शनके लिये प्रतिवर्ष दूर दूरसे यात्री आते हैं। यहाँके मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ तीर्थकर हैं। यहाँ भट्टारक गढ़ी है, जिससे इसे 'गुरु वसदि' भी कहते हैं। इसका सब कार्यभार एक पंचायतके आधीन है, जिससे यह 'पंचायती मन्दिर' भी कहलाता है।

## ४

यह मूडविद्रीका 'बडम मन्दिर' है। यहाँ के मूलनायक श्री चन्द्रप्रभ तीर्थकर हैं, जिनकी मूर्ति सुवर्ण आदि पंच धातुओंकी बनी मानी जाती है। इसकी इमारत तीन मंजिलकी है। दूसरे मंजिलपर 'सहस्रकूट चैत्यालय' बहुत ही मनोह्र है। तीसरे मंजिलमें छोटी बड़ी ४० प्रतिमाएँ विराजमान हैं जो स्फटिकमयी हैं। इसीलिये इस मंजिलको 'सिद्धकूट' भी कहते हैं। मन्दिरके सम्मुख एक 'मानस्तंभ' और एक 'ध्वजस्तंभ' खड़ा है। तीनों मंजिलोंमें स्तंभोंकी संख्या कोई एक हजार है, जिससे इस मन्दिरका नाम 'सहस्रस्तंभ' या हजार स्तंभवाला मन्दिर प्रसिद्ध हुआ है। अपनी अनुपम सुन्दरताके कारण यह मन्दिर 'त्रिभुवन-तिलक-चूडामणि' भी कहलाता है।

## ५

ये मूडविद्रीके स्वर्गीय भट्टारक श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं। आप संस्कृतके अच्छे विद्वान् थे, तथा अन्य अनेक भाषाओंके भी जानकार थे। आपके समयमें मूडविद्री में अच्छी धर्मप्रभावना हुई। आपने कई जगह कितने ही जैनमंदिरोंका जीर्णोद्धार कराया व पंचकल्याणादि कराये। आप-केही सुसमय में श्रीधवल और श्रीजयधवल, इन दोनों सिद्धांत ग्रंथोंकी प्रतिलिपियाँ हुई थीं, और तीसरे सिद्धान्त ग्रंथ महाधवलकी प्रतिलिपिका कार्य भी प्रारम्भ हो गया था। अजैन जनतामें भी आपका अच्छा गौरव और सम्मान रहा।

६

ये मूडबिंद्रीके वर्तमान भट्टारक श्रीचारुकीर्ति स्वामी हैं, जो सिद्धान्त बसदिके मुख्य अधिकारी हैं। आप अपनी मातृभाषा कनाड़ी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि अनेक भाषाओंके ज्ञाता हैं। उत्तर भारतमें भी आप दीर्घकाल तक रह चुके हैं। आपके ही समयमें श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि पूर्ण हुई। आपके ही सरल स्वभाव और उदार विचारोंका यह सुफल है कि वहांकी पंचायतद्वारा श्रीमहाधवलकी प्रतिलिपि जिज्ञासु समाज को प्राप्य बनानेका प्रस्ताव स्वीकृत हो गया है। आप जीर्णोद्धारदि धार्मिक कार्योंमें खूब दत्तचित्त रहते हैं। ग्रंथोंका जीर्णोद्धार कार्य भी आपकी दृष्टिके अश्लेष नहीं रह सका। हमारे सिद्धान्त-ग्रंथके संशोधन व प्रकाशन कार्यमें अब हमें आपकी पूर्ण सहायता और सहायता मिल रही है, जिसके सुफल पाठक इस ग्रंथभागमें तथा आगे भी देखेंगे।

७

आप मूडबिंद्रीके नगरसेठ श्रीदेवराजजी सेठी हैं। सिद्धान्तमन्दिरके आप पंच हैं, और भट्टारकजीके सत्कार्योंमें आपकी सम्मति और सहयोग रहता है। आप भी सिद्धान्तग्रंथोंके सुप्रचार के पक्षपाती हैं।

८

आप मूडबिंद्री सिद्धान्तमन्दिरके पंच श्रीयुक्त धर्मपालजी हैं। आप एक बड़े उत्साही युवक हैं, और सिद्धान्तग्रंथोंके सुप्रचार करानेमें आपकी विशेष रुचि है।

९

सरस्वती भूषण पं. लोकनाथजी शास्त्रीका पैतृक निवासस्थान मूडबिंद्री ही है। आपका विद्याभ्यास स्वनामधन्य स्वर्गीय पं. गोपालदासजी बैरैयाकी अध्यक्षतामें मोरेला विद्यालयमें हुआ था। तत्पश्चात् आपने मूडबिंद्रीकी जैन संस्कृत पाठशालामें बीस वर्ष तक अध्यापन कार्य किया, और अनेक ऐसे योग्य विद्वान् उत्पन्न किये जो अब उस प्रान्तमें धर्म और समाजकी भारी सेवा कर रहे हैं। आपने अपने निरंतर कठिन परिश्रमसे वीरवाणीविलास सिद्धान्तभवनकी स्थापना की है जिसमें मुद्रित व हस्तलिखित ताडपत्रादि चार हजार ग्रंथोंसे ऊपरका संग्रह है। यहांसे आप एक वीरवाणी ग्रंथमालाका भी संपादन करते हैं, जिसमें सोलह ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। आप मूडबिंद्रीके भंडारसे अलम्य ग्रंथोंकी प्रतिलिपि कराकर मुंबई, आरा, इंदौर, सहारनपुर, कलकत्ता आदि शालभंडारोंको भेज चुके हैं, जिसकी श्लोक सं. ८५००० से भी ऊपर हो गई है। आपका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य सिद्धान्तग्रंथोंकी प्रतिलिपियोंसे संग्रह रखता है। जैसा हम प्रथम भागकी भूमिकामें कह आये हैं, महाधवलकी नागरी प्रतिलिपि पहले पहले आपके द्वारा ही सन् १९१८ से १९२२ तक की गई थी। सन् १९२४ में आपने सहारनपुर पहुंचकर वहांकी भवला और जयधवलकी कनाड़ी और नागरी प्रतियोंका मिलान करवाया था। वर्तमानमें हमारी

महाधवलकी प्रतिसंबंधी शंकाओंपर आपने ही अपने दो तीन सहयोगी विद्वानोंसहित उक्त प्रतिकी जाँच पड़ताल की, और बहुमूल्य परिचय भेजनेकी कृपा की। हमारे प्रकाशित व प्रकाशनीय ग्रंथशोंका ताड़पत्नीय प्रतियोंसे मिलान भी आपके ही द्वारा किया जा रहा है। आपकी आयु इस समय पचास वर्षकी है। लगभग दस वर्षसे आसकी व्याधिसे पीड़ित होते हुए भी आप साहित्यसेवाके कार्यसे विश्रान्ति नहीं लेते, और प्रस्तुत सिद्धान्तप्रकाशन कार्यमें तो आप अत्यन्त तन्मयताके साथ जी तोड़कर सहयोग दे रहे हैं, जिसके सुफल पाठक इस भागमें तथा आगे प्रकाशनीय भागोंमें देखेंगे।

## २ मूडबिद्रीका इतिहास

दक्षिण भारतका कर्नाटक देश जैन धर्मके इतिहासमें अपना एक विशेष स्थान रखता है। दिगम्बर जैन सम्प्रदायके अधिकांश सुविख्यात और प्राचीनतम ज्ञात आचार्य और ग्रंथकार इसी प्रान्तमें हुए हैं। आचार्य पुष्पदन्त, समन्तभद्र, पूज्यपाद, वीरसेन, जिनसेन, गुणभद्र, नेमिचन्द्र, चामुण्डराय आदि महान् ग्रंथकारोंने इसी भूभागको अलंकृत किया था।

इसी दक्षिण कर्नाटक प्रान्तमें ही मूडबिद्री नामका एक छोटासा नगर है जो शताब्दियोंसे जैनियोंका तीर्थक्षेत्र बना हुआ है। कहा जाता है कि यहां जैनधर्मका विशेष प्रभाव सन् ११०० ईस्वीके लगभग होय्सल-नरेश बल्लाळदेव प्रथमके समयसे बढ़ा। तेरहवीं शताब्दिमें यहांकी पार्श्वनाथ बसदिकी तुल्यके आलूप नरेशोंसे राज्यसन्मान मिला। पन्द्रहवीं शताब्दिमें विजयनगरके हिन्दू नरेशोंके समय इस स्थानकी कीर्ति विशेष बढ़ी। शक १३५१ ( सन् १५२९ ) के देवराय द्वितीयके एक शिष्टालेखमें उल्लेख है कि वेणुपुर (मूडबिद्री) उसके भव्यजनोके लिये सुप्रसिद्ध है। वे शुद्ध चारित्र पाळते हैं, शुभ कार्य करते हैं, और जैनधर्मकी कथाओंका श्रवण करते हैं। यहांके स्थानीय राजा भैरसने अपने गुरु वीरसेन मुनिकी प्रेरणासे यहांके चन्द्रनाथ मन्दिर को दान दिया था। सन् १४५१-५२ में यहांकी होस बसदि ( त्रिमुवन-तिलक-चूडामणि व बड़ा मन्दिर ) का ' भैरादेवी मण्डप ' नामसे प्रसिद्ध सुखमण्डप विजयनगर नरेश मल्लिकार्जुन इम्मडिदेवरायके राज्यमें बनाया गया था। विरूपक्ष नरेश के राज्यमें उनके सामन्त विद्वरस ओडेयरेने सन् १४७२-७३ में इसी बसदिकी भूमिदान दिया था। यहां सब मिलाकर अठारह बसदि ( जिनमन्दिर ) हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध ' गुरु बसदि ' है जहां सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियां सुरक्षित हैं और जिनके कारण वह ' सिद्धान्त बसदि ' भी कहलाती है। यह नगर ' जैन काशी ' नामसे भी प्रसिद्ध है। यहां अब जैनियोंकी जनसंख्या बहुत कम रह गई है, किन्तु जैन संसारमें इसका पवित्र्य कम नहीं हुआ। यहांकी गुरुपरंपरा और सिद्धान्त-रक्षाके लिये यह स्थान जैन धार्मिक इतिहासमें सदैव अमर रहेगा।

मूडबिंद्रीके पंडित लोकनाथजी शास्त्रीने मूडबिंद्रीका निम्न इतिहास लिखकर भेजनेकी कृपा की है। कनाड़ी भाषामें बांसको 'बिदिर' कहते हैं। बांसोंके समूह को छेदकर यहांके सिद्धान्त मंदिरका पता लगाया गया था, जिससे इस ग्रामका 'बिदुरे' नाम प्रसिद्ध हुआ। कनाड़ीमें 'मूड' का अर्थ पूर्व दिशा होता है, और पश्चिम दिशाका वाचक शब्द 'पडु' है। यहां मूडकी नामक प्राचीन ग्राम पडुबिदुरे कहलाता है, और उससे पूर्वमें होनेके कारण यह ग्राम मूडबिदुरे या मूडबिंद्री कहलाया। वंश और वेणु शब्द बांस के पर्यायवाची होनेसे इसका वेणुपुर अथवा वंशपुर नामसे भी उल्लेख किया गया है। अनेक व्रती साधुओंका निवासस्थान होनेसे इसका नाम व्रतिपुर या व्रतपुर भी पाया जाता है।

यहां की गुरुबसदि अपरनाम सिद्धान्त बसदिके सम्बन्धमें यह दंतकथा प्रचलित है कि लगभग एक हजार वर्ष पूर्व यहांपर बांसोंका सघन वन था। उस समय श्रवणवेलगुल (जैनबिंद्री) से एक निर्ग्रन्थ मुनि यहां आकर पडुबस्ती नामक मंदिरमें ठहरे। पडुबस्ती नामक प्राचीन जिनमंदिर अब भी वहां विद्यमान है, और उस मंदिरसे सैकड़ों प्राचीन ग्रंथ स्वर्गीय भट्टारकजीने मठमें विराजमान किये हैं। एक दिन उक्त निर्ग्रन्थ मुनि जब बाहर शौचको गये थे तब उन्होंने एक स्थानपर एक गाय और व्याघ्रको परस्पर क्रीड़ा करते देखा, जिससे वे अत्यन्त विस्मित होकर उस स्थानकी विशेष जांच पड़ताल करने लगे। उसी खोजबीनके फलस्वरूप उन्हें एक बांसके भिरेमें छुपी हुई व पत्थरों आदिसे घिरी हुई पार्श्वनाथ स्वामीकी काले पाषाणकी नौ हाथ प्रमाण खड्गासन मूर्तिके दर्शन हुए। तत्पश्चात् जैनियों-केद्वारा उसका जीर्णोद्धार कराया गया, और उसी स्थानपर 'गुरुबसदि' का निर्माण हुआ। उक्त मूर्तिके पादपीठपर उसके शक ६३६ (सन् ७१४) में प्रतिष्ठित किये जानेका उल्लेख पाया जाता है। उसके आगेका गद्दीमंडप (लक्ष्मी मंडप) सन् १५३५ में चोलसेठीद्वारा निर्मापित किया गया था। इस बसदिके निर्माण का व्यय छह करोड़ रुपया कहा जाता है जिसमें संभवतः वहां की रत्नमयी प्रतिमाओंका मूल्य भी सम्मिलित होगा। इस मन्दिरके गुप्तगृहमें सुवर्णकलशोंमें 'सिद्ध रस' स्थापित है, ऐसा भी कहते हैं।

एक किंवदन्ती है कि होशाल-नरेश विष्णुवर्धनने सन् १११७ में वैष्णव धर्म स्वीकार करके हलेबीडु अर्थात् दोरसमुद्रमें अनेक जिन मन्दिरोंका ध्वंस कर डाला, व जैनधर्मपर अनेक अन्य अत्याचार किये। उसी समय एक भयंकर भूकंप हुआ और भूमि फटकर एक विशाल गर्त वहां उत्पन्न होगया, जिसका संबंध नरेशके उक्त अत्याचारोंसे बतलाया जाता है। उनके उत्तराधिकारी नारसिंह और उनके पश्चात् वीर बल्लाळदेवने जैनियोंके क्षोभको शान्त करनेके लिये नये मन्दिरोंका निर्माण, जीर्णोद्धार, भूमिदान आदि अनेक उपाय किये। वीर बल्लाळदेवने तो अपने राज्यमें शान्ति-स्थापनाके लिये श्रवणवेलगुलसे भट्टारक चारुकीर्तिजी पंडिताचार्यको आमंत्रित किया। वे दोरसमुद्र



पहुंचे और उन्होंने अपनी विद्या व बुद्धिके प्रभावसे वहांका सब उपद्रव शान्त किया, जिससे जैन-धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई। इसका कुछ उल्लेख विळगीके शासन लेखमें भी पाया जाता है, जो इस प्रकार है—

“कर्नाटक-सिद्धसिंहासनाधीश्वर-बह्मलारायं प्रार्थिते श्री चारुकीर्तिपंडिताचार्यर् हंतु कीर्तियं पदेद्वर्”

तिबें रायनगेंबु ने—

लंबादिबडे तब मंत्रजपविधिपिनदं ॥

कुंबलकार्थि सुल्लदु य—

शं बडेदेसकके पंडितार्थने नोंतं ॥

दोस्तमुद्रसे चारुकीर्तिजी महाराज अपने शिष्योसहित मूडविंद्री आये और उन्होंने वहां गुरुपीठ (भट्टारक गद्दी) स्थापित की, यहां आते समय उन्होंने पासही नल्लूर ग्राममें भी भट्टारक गद्दी स्थापित की थी, किन्तु वर्तमानमें वहां कोई अलग भट्टारक नहीं है, वहांके मठका सब प्रबंध मूडविंद्री मठसे ही होता है। यह मूडविंद्रीमें भट्टारक गद्दी स्थापित होनेका इतिहास है, जिसका समय सन् ११७२ ईस्वी बतलाया जाता है। तबसे भट्टारकोंका नाम चारुकीर्ति ही रखा जाता है, यद्यपि उसके साथ साथ कुछ स्वतंत्र नामों, जैसे वर्धमानसागर, अनन्तसागर, नेमि-सागर आदिका भी उल्लेख पाया जाता है। धवलदि सिद्धान्त ग्रंथोंकी प्रतियां यहां धारवाड जिलेके बंकापुरसे लाई गईं, ऐसी ही एक जनश्रुति है। इस मठसे दक्षिण कर्नाटकमें जैनधर्मका खूब प्रचार व उन्नति हुई। वर्तमानमें मठकी संपात्तिसे वार्षिक आय लगभग दस हजारकी है।

## ३ महाबंधकी खोज

### १ खोजका इतिहास

षट्खंडागमका सामान्य परिचय उसके प्रथम दो भागोंमें प्रकाशित भूमिकाओंमें दिया जा चुका है। वहां हम बतला आये हैं कि धरसेनाचार्यसे आगमका उपदेश पाकर पुष्पदन्त और भूतबलि आचार्योंने उसकी छह खंडोंमें ग्रन्थरचना की, जिनमेंसे प्रथम पांच खंड उपलब्ध श्रीधवलकी प्रतियोंके अन्तर्गत पाये जाते हैं और छठे खंड महाबंधके सम्बन्धमें धवल तथा जय-धवलमें यह सूचना पाई जाती है कि महाबंध स्वयं भूतबलि आचार्यका रचा हुआ ग्रन्थ है, उसमें बंधविधानके चार प्रकारों प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश का खूब विस्तारसे वर्णन किया गया है, तथा यह वर्णन इतना विशद और सर्वमान्य हुआ कि यतिवृषभ और वीरसेन जैसे आचार्योंने अपनी अपनी ग्रन्थरचनामें उसकी सूचनामात्र दे देना पर्याप्त समझा; उस विषयपर और कुछ विशेष कहनेकी उन्हें गुंजायश नहीं दिखी।

१ देखो लोकनाथशास्त्रीकृत मूडविंद्रय चरित (कनाडी)।

२ देखो प्रथम भाग, भूमिका पृ. ६३ आदि, व द्वि. भाग भूमिका पृ. १५ आदि।

इस महाबंधकी अभीतक कोई प्रति प्रकाशमें नहीं आई। किन्तु हम सब यह आशा करते रहे हैं कि मूडबिंदीके सिद्धान्तभवनमें जो महाधवल नामकी कनाडी प्रति तांबपत्रोंपर तृतीय सिद्धान्तग्रन्थ रूपसे सुरक्षित है, वही भूतबलिकृत महाबंध ग्रन्थ है। इस आशाका आधार अभी-तक केवल हमारा अनुमान ही था, क्योंकि न तो कोई परीक्षक विद्वान् उस प्रतिका अच्छीतरह अवलोकन कर पाया था और न किसीने उसके कोई विस्तृत अवतरण आदि देकर उसका सुपरिचय ही कराया था। उस प्रतिका जो कुछ थोड़ासा परिचय उपलब्ध हुआ था, वह मूड-बिंदीके पं. लोकनाथजी शास्त्रीकी कृपासे उनके वीरवाणीबिलास जैन सिद्धान्त भवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट ( १९१५ ) के भीतर पाया जाता था। उस परिचयमें दिये गये महाधवल प्रतिके प्रारंभिक भागके सूक्ष्म अवलोकनसे मुझे ज्ञात हुआ कि वह ग्रन्थरचना महाबंध खंडकी नहीं है, किन्तु संतकम्मके अन्तर्गत शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी एक ' पंचिका ' है, जिसे उसके कर्ताने ' पंचियरूपेण विवरणं सुमहत्त्वं ' कहा है। उन अवतरणोंसे महाबंधका कहीं कोई पता नहीं चला। मैंने अपनी इस आशंकाको एक लेखके द्वारा प्रकट किया और इस बातकी प्रेरणा की कि महाधवलकी प्रतिका शीघ्रही पर्यालोचन किया जाना चाहिए और महाबंधका पता लगानेका प्रयत्न करना चाहिये। इस लेखके फलस्वरूप मूडबिंदीमठके भट्टारकस्वामी व पंचौने उस प्रतिका जांचकी व्यवस्था की, और शीघ्र ही मुझे तारद्वारा सूचित किया कि महाधवल प्रतिके भीतर सत्कर्म-पंचिका भी है, और महाबंध भी है। तत्पश्चात् वहांसे पं. लोकनाथजी शास्त्रीद्वारा संग्रह किये हुए उक्त प्रतिमेंके अनेक अवतरण भी मुझे प्राप्त हुए, जिनपरसे महाधवल प्रतिके अन्तर्गत ग्रन्थरचनाका यहां कुछ परिचय कराया जाता है।

## २ सत्कर्मपंचिका परिचय

महाधवल प्रतिके अन्तर्गत ग्रन्थरचनाके आदिमें ' संतकम्मपंचिका ' है, जिसकी उत्थानिका का अवतरण अनेक दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण है। यद्यपि यह अवतरण पूर्व प्रकाशित धवलाके दोनों भागोंकी भूमिकाओंमें यथास्थान उद्धृत किया जा चुका है, तथापि वह उक्त रिपोर्टपरसे लिया गया था, और कुछ त्रुटित था। अब यह अवतरण हमें इस प्रकार प्राप्त हुआ है।

बोच्छमि सत्कम्मे पंचियरूपेण विवरणं सुमहत्त्वं।

“ महाकम्मपयडिपाडुडस्स कदिवेदणाओ ( दि- ) चउत्तवीसमणियोगाद्वित्तु तत्थ कदिवेदणा सि जाणि अणियोगाद्वाराणि वेदणाखंडग्धि, पुणो पास.कम्म-पयडि-बंधण चत्तारि अणियोगाद्वारेसु तत्थ बंध-बंध-णिज्जणामणियोगेहि सह वग्गणाखंडग्धि, पुणो बंधविधानासणियोगो महाबंधम्मि, पुणो बंधगणियोगो सुधा-बंधग्धि सत्त्ववेचणे परुविदाणि । पुणो तेहितो सेसट्ठारसाणियोगाद्वाराणि सत्तकम्मे सत्त्वाणि परुविदाणि । तो वि तस्साहग्गभीरसादो अत्थविसंमपदानमत्थे थोरुद्धयेण पंचियसरूपेण भणित्तामो । ”

इस उत्थानिकासे सिद्धान्तग्रन्थोंके सम्बन्धमें हमें निम्न लिखित अत्यन्त उपयोगी और महत्वपूर्ण सूचनाएं बहुत स्पष्टतासे मिल जाती हैं—

१ महाकर्मप्रकृतिपाहुडके चौबीस अनुयोगद्वारोंमेंसे प्रथम दो अर्थात् कृति और वेदना, वेदनाखंडके अन्तर्गत रचे गये हैं। फिर अगले स्पर्श, कर्म, प्रकृति और बंधनके चार भेदोंमेंसे बंध और बंधनीय वर्गणाखंडके अन्तर्गत हैं। बंधविधान महाबंधका विषय है, तथा बंधक खुदाबंध खंडमें सन्निहित है। इस स्पष्ट उल्लेखसे हमारी पूर्व बतलाई हुई खंड-व्यवस्थाकी पूर्णतः पुष्टि हो जाती है, और वेदनाखंडके भीतर चौबीसों अनुयोगद्वारोंको मानने तथा वर्गणाखंडको उपलब्ध धवलाकी प्रतियोंके भीतर नहीं माननेवाले मतका अच्छी तरह निरसन हो जाता है।

२ उक्त छह अनुयोगद्वारोंसे शेष अठारह अनुयोगद्वारोंकी ग्रन्थरचनाका नाम सत्कर्म (सत्कर्म) है, और इसी सत्कर्मके गंभीर विषयको स्पष्ट करनेके लिए उसके थोड़े थोड़े अवतरण लेकर उनके विषमपदोंका अर्थ प्रस्तुत ग्रंथमें पंचिकारूपसे समझाया गया है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि शेष अठारह अनुयोगद्वारोंसे वर्णन करनेवाला यह सत्कर्म ग्रन्थ कौनसा है? इसके लिए सत्कर्मपंचिकाका आगेका अवतरण देखिए, जो इस प्रकार है—

तं जहा । तत्र ताव जीवद्वस्स पोगलद्वस्समवलंबिय पज्जालेसु परिणमणाविहाणं उच्चदे—जीवद्वस्सं दुविहं, संसारिजीवो सुक्कजीवो चेदि । तस्य मिच्छतासंजमकसायजोगेहि परिणदंसंसारिजीवो जीव-भव-खेत्त-पोगल-विवाइसरूवकम्मपोगले बंधियुण पच्छा तेहिंतो पुब्बुत्त—छविहफलसरूवपज्जायमणेयमेयभिणं संसरदो जीवो परिणमदि त्ति । एदेसिं पज्जायाणं परिणमणं पोगलणिबंधणं होदि । पुणो सुक्कजीवस्स एवं-विध-णिबंधणं गत्थि, किंतु सत्थाणेण पज्जायंतंरं गच्छदि । पुणो—

जरस्स वा दब्बस्स सहावो दब्बंतरपडिबद्धो इदि ।

एदस्सत्थो—एत्थ जीवद्वस्स सहावो गाणदंसणाणि । पुणो दुविहजीवाणं गाणसहावविबन्धिद-जीवेहिंतो वदिरित्त-जीवपोगलादि-सत्त्वद्ववाणं परिच्छेदणसहावेण पज्जायंतरगमणनिबंधणं होदि । एवं दंसणं पि वत्तव्वं ।

यहां पंचिकाकार कहते हैं कि वहांपर अर्थात् उनके आधारभूत ग्रन्थके अठारह अधि-कारोंमेंसे प्रथमानुयोगद्वार निबंधनकी प्ररूपणा सुगम है। विशेष केवल इतना है कि उस निबंधन-का निक्षेप छह प्रकारसे बतलाया गया है। उनमें तृतीय अर्थात् द्रव्यनिक्षेपके स्वरूपकी प्ररूपणामें आचार्य इस प्रकार कहते हैं। जिसका खुलासा यह है कि यहां पर पुद्गलद्रव्यके अवलंबनसे जीवद्रव्यके पर्यायोंमें-परिणमन विधानका कथन किया जाता है। जीवद्रव्य दो प्रकारका है, संसारी व मुक्त। इनमें मिथ्यात्व, असंयम, कषाय और योगसे परिणत जीव संसारी है। वह जीवविपाकी, भवविपाकी, क्षेत्रविपाकी और पुद्गलविपाकी कर्मपुद्गलोंको बांधकर अनन्तर उनके निमित्तसे पूर्वोक्त छह प्रकारके फलरूप अनेक प्रकारकी पर्यायोंमें संसरण करता है, अर्थात् फिरता है। इन पर्यायोंका परिणमन पुद्गलके निमित्तसे होता है। पुनः मुक्तजीवके इस प्रकारका परिणमन नहीं पाया जाता है। किन्तु वह अपने स्वभावसे ही पर्यायान्तरको प्राप्त होता है। ऐसी स्थितिमें 'जरस्स वा दब्बस्स सहावो दब्बंतरपडिबद्धो इदि' अर्थात् 'जिस द्रव्यका स्वभाव द्रव्यान्तरसे प्रतिबद्ध है' इति।

इस प्रकरणके मिलानके लिए हमने वीरसेन स्वामीके धवलान्तर्गत निबन्धन अधिकारको निकाला। वहां आदिमें ही निबंधनके छह निक्षेपोंका कथन विद्यमान है और उनमें तृतीय द्रव्य-निक्षेपका कथन शब्दशः ठीक वही है जो पंजिकाकारने अपने अर्थ देनेसे ऊपरकी पंक्तिमें उद्धृत किया है और उसीका उन्होंने अर्थ कहा है। यथा—

निबंधणेति अणियोगहारे निबंधणं ताव अपयदणिबंधणगिराकरणट्ठं णिक्खिवियब्बं । तं जहा-  
णामणिबंधणं, उवणणिबंधणं, दब्बणिबंधणं, खेत्तणिबंधणं, कालणिबंधणं, भावणिबंधणं चेदि छव्विहं निबंधणं  
होदि ।

इसके पश्चात् नाम और स्थापना निबंधनका स्वरूप बतलाया गया है और उसके पश्चात् द्रव्यनिबंधनका वर्णन इस प्रकार है—

जं दब्बं जाणि दब्बाणि अस्सिदूण परिणमदि, जस्स वा सदस्स (दब्बस्स) सद्भावो  
दब्बन्तरपडिबद्धो तं दब्बणिबंधणं । ( धवला क. प्रति, पत्र १२६० )

प्रतिमें 'सदस्स' पद अशुद्ध है, वहां 'दब्बस्स' पाठ ही होना चाहिए। यहां वाक्यमें ये शब्द 'जस्स वा दब्बस्स सद्भावो दब्बन्तरपडिबद्धो' ठीक वे ही हैं, जो पंजिकामें भी पाये जाते हैं, और इन्हीं शब्दोंका पंजिकाकारने 'एत्य जीवदब्बस्स सद्भावो गाणदंसणाणि' आदि वाक्योंमें अर्थ किया है। यथार्थतः जितना वाक्यांश पंजिकामें उद्धृत है, उतने परसे उसका अर्थ व्यवस्थित करना कठिन है। किन्तु धवलके उक्त पूरे वाक्यको देखनेमात्रसे उसका रहस्य एकदम खुल जाता है। इसपरसे पंजिकाकारकी शैली यह जान पड़ती है कि आधारग्रन्थके सुगम प्रकरणकी तो उसके अस्तित्वकी सूचनामात्र देकर छोड़ देना, और केवल कठिन स्थलोंका अभिप्राय अपने शब्दोंमें समझाकर और उसी सिलसिलेमें मूलके विवक्षितपदोंको लेकर उनका अर्थ कर देना। इस परसे पंजिकाकारकी उस प्रतिज्ञाका भी स्पष्टीकरण हो जाता है, जहां उन्होंने कहा है कि 'तस्साद्गमभीरत्तादो अथविसमपदान्त्ये थोरुद्वयेण पंचियसरुवेण भणित्तामो' अर्थात् उन अठारह अनुयोगद्वारोंका विषय बहुत गहन होनेसे हम उनके अर्थकी दृष्टिसे विषमपदोंका व्याख्यान करते हैं, और ऐसा करनेमें मूलके केवल थोड़ेसे उद्धरण लेंगे। यही पंचिकाका स्वरूप है। मूलग्रन्थके वाक्योंको अपनी वाक्यपरचनामें लेकर अर्थ करते जाना अन्य टीकाग्रन्थोंमें भी पाया जाता है। उदाहरणार्थ, विधानन्दिकृत अष्टसहस्रीमें अकलंकदेवकृत अष्टशती इसीप्रकार गुंथी हुई है। पंजिकाकी यह विशेषता है कि उसमें पूरे ग्रन्थका समावेश नहीं किया जाता, केवल विषमपदोंको ग्रहण कर समझाया जाता है।

सकर्मपंचिकाके उक्त अवतरणके पश्चात् शास्त्रीजीने लिखा है—

“इस प्रकार छह द्रव्योंके पर्यायान्तरका परिणामन विधान-विवरण होनेके बाद निम्न प्रकार प्रतिज्ञा वाक्य है—

सपहि पक्कमाहिबारस्स उक्कस्सपक्कमदब्बस्स उत्तप्पाबहुगविवरणं कस्सामो । तं जहा-अप्यपक्कमाण-  
माणस्स उक्कस्सपक्कमदब्बं थोवं । कुवो ।” इत्यादि ।

आगे चलकर कहा गया है—

चत्वारि आडगाणं णीसुच्चागोदाणं पुणो एक्कारस्स-पयडीणं सगसेसत्थपण्णबंघपयडिस्सुचयणमिदि । चउसत्थिपयडीणमप्यावहुगं गंथयरेहि पुरुविदं । अग्गेहि पुणो सुचिदपयडीणमप्यावहुगं गंथउत्तप्यावहुगवलेण पुरुविदं । ..... एवं पक्कमाणिओगो गदो ।

आगे चलकर पुनः आया है—

एत्थ पयडीसु जहणपक्कमदन्वागं अप्पावहुगं उक्खेदं । तं जहा—सस्वत्थोवमपक्कखाणमाणे पक्कम-दस्वं । कुदो ? इत्यादि ।

यहाँ उपर्युक्त निबंधन अधिकारके पश्चात् प्रक्रम अविकारका प्रारम्भ बतलाया है और क्रमशः उसके उत्कृष्ट और जघन्य प्रक्रम द्रव्यके अल्पबहुत्वका कथन किया है, तथा इस बातकी सूचना की है कि चौसठ प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व ग्रन्थकारने स्वयं कर दिया है, अतः हम यहाँ केवल उनके द्वारा सूचित प्रकृतियोंका अल्पबहुत्व उक्त ग्रंथोक्त अल्पबहुत्वके बलसे करते हैं । धवलमें भी निम्नोक्त अनुयोगद्वारके पश्चात् आठवें अनुयोग प्रक्रमका वर्णन है, और वहाँ उत्तरप्रकृति-प्रक्रमके उत्कृष्टउत्तरप्रकृतिप्रक्रम और जघन्यउत्तरप्रकृतिप्रक्रम ऐसे दो भेद करके वर्णन प्रारम्भ किया गया है । तथा वहाँ वह सब अल्पबहुत्व पाया जाता है जो पंचिकाकारने स्वीकार किया है और जिसके सम्बन्धमें शंकादि उठाकर उचित समाधान किया है ।

उत्तरपयडिपक्कमो हुविहो, उक्कस्सउत्तरपयडिपक्कमो जहणउत्तरपयडिपक्कमो चेदि । तत्थ उक्कस्सए पयदं । सस्वत्थोवं अपचक्खणाकसायमाणपदेसगं । अपचक्खणाकोपे विसेसाहिया । ..... जहणपए पयदं । सस्वत्थोवमपचक्खणामाणे पक्कमद्ववं । कोपे विसेसाहिया । ..... एवं पक्कमे त्ति समत्तमणिओगहारं । (धवला क. प्रति, पत्र १२६६-६७)

प्रक्रम अधिकारके पश्चात् पंचिकामें उपक्रमका वर्णन इस प्रकार प्रारम्भ होता है—

उक्कमो चउत्तिहो—बंघणोवक्कमो उदारीणोवक्कमो उवसामणोवक्कमो विपरिणामोवक्कमो चेदि । तत्थ बंघणोवक्कमो चउत्तिहो पयडि-ट्टिदि-अणुभाग-पदेसबंघणोवक्कमणभेदेण । पुणो एदेसिं चउण्णं पि बंघणो-वक्कमाणं अत्थो जहा सत्तकम्मपाहुडम्मि उत्तो तद्वा वत्तव्वो । सत्तकम्मपाहुडम्मि णाम कदमं । महाकम्मपयडिपाहुडस्स चउव्वीसमणिओगहारसु विदियाहियारो वेदणा णाम । तस्स सोलसाणिओगहारसु चउत्थ-लट्ठम-सत्तमणियोगद्वाराणि दस्स-काल-भावविहाणणामधेयाणि । पुणो तद्वा महाकम्मपयडिपाहुडस्स पंचमो पयडिणमाहियारो । तत्थ चत्वारि अणियोगद्वाराणि अट्ठकम्माणं पयडि-ट्टिदि-अणुभाग-पदेससत्ताणि पुरुविथ सुविहुत्तरपयडि-ट्टिदि-अणुभाग-पदेससत्तादो । एदाणि सत्तकम्मपाहुडं णाम । मोहणीयं पडुच्च कसायपाहुडं पि होदि । (सत्तकम्मपंचिका)

यहाँ उपक्रमके चार भेदोंका उल्लेख करके प्रथम बंधन उपक्रमके, पुनः प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशरूप चार प्रभेदोंके विषयमें यह बतलाया गया है कि इनका अर्थ जिसप्रकार संतकम्मपाहुडमें किया गया है उसप्रकार करना चाहिए । उस संतकम्मपाहुडमें भी प्रकृतमें वेदना-नुयोगद्वारके तीन और प्रकृति अनुयोगद्वारके चार अधिकारोंसे अभिप्राय है । यहाँ भी पंचिकाकार स्पष्टतः धवलके निम्न उल्लिखित प्रकरणका विवरण कर रहे हैं—

जो सो कम्मोवक्कमो सो चउव्विहो, बंधणउवक्कमो उदीरणउवक्कमो उवसामणउवक्कमो विप-  
रिणामउवक्कमो चेदि । ..... जो सो बंधणउवक्कमो सो चउव्विहो, पथडिबंधणउवक्कमो ठिदिबंधणउवक्कमो  
अणुभागबंधणउवक्कमो पदेसबंधणउवक्कमो चेदि ।... .. एत्थ एदेसिं चउण्हमुवक्कमाणं जहा संतकम्मपयडि-  
पाहुडे परुविदं तहा परुचेयव्वं । जहा महाबंधे परुविदं, तहा परुवणा एत्थ किण्ण कीरदे ? ण, तस्स  
पदमसमयबंधम्मि चैव वावारादो । ण च तमेव्व वोतुं जुत्तं, पुणरुत्तदोसप्पसंगादो । (धवला क. पत्र १२६७)

यहां जो बंधनके चारों उपक्रमोंका प्ररूपण महाबंधके अनुसार न करके संतकम्म-  
पाहुडके अनुसार करनेका निर्देश किया गया है, उसीका पंचिकाकारने स्पष्टीकरण किया है कि  
महाकम्मपयडिपाहुडके किन किन विशेष अधिकारोंसे यहां संतकम्मपाहुड पदद्वारा अभिप्राय है ।

पंचिकामें उपक्रम अधिकारके पश्चात् उदयअनुयोगद्वारका कथन है जैसा उसके अन्तिम  
भागके अवतरणसे सूचित होता है । यथा—

उदयाणियोगद्वारं गदं ।

यहांके कोई विशेष अवतरण हमें उपलब्ध नहीं हुए । अतः धवलासे मिलान नहीं किया  
जा सका । तथापि उपक्रमके पश्चात् उदय अनुयोगद्वारका प्ररूपण तो है ही । उक्त पंचिका यहीं  
समाप्त हो जाती है । इससे जान पड़ता है कि इस पंचिकामें केवल निबंधन, प्रक्रम, उपक्रम  
और उदय, इन्हीं चार अधिकारोंका विवरण है । शेष मोक्ष आदि चौदह अनुयोगोंका उसमें कोई  
विवरण यहां नहीं है । इससे जान पड़ता है कि यह पंचिका भी अधूरी ही है, क्योंकि पंचि-  
काकी उत्पानिकामें दी गई सूचनासे ज्ञात होता है कि पंचिकाकार शेष अठारहों अधिकारोंकी  
पंचिका करनेवाले थे । शेष ग्रन्थभाग उक्त प्रतिमें छूटा हुआ है, या पंचिकाकारद्वारा ही किसी  
कारणसे रचा नहीं गया, इसका निर्णय वर्तमानमें उपलब्ध सामग्री परसे नहीं हो सकता ।

यह पंचिका किसकी रची हुई है, कब रची गई, इत्यादि खोजकी सामग्रीका भी अभी  
अभाव है । पंचिका प्रतिकी अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री जिनपदकमलमधुव्रत-

ननुपम सत्पात्रदाननिरतं सम्य-

कवनिधानं किन्ते वधू-

मनसिजनेने शातिनाथ नेसेदं धरेयोळ् ॥

धरेयोळ्.....पुजिदनुपमं चारुचारिप्रनाहुन्नतधैर्यं सादिपर्यतं रदिय नेनेसि पैंविगुणानीकदिं  
.....सन्नक्तियादेशदिं सत्कमेव्वा पंचियं विस्तरदिं श्रीमाघणंदित्रतिगे बरेसिदं रागदिं शातिनाथं ॥

उवविदमुददिं सत्क-

मंदं पंजियननुपमाननिर्वाणसुख-

प्रदमं बरेथिसि शाण्तं

मदरहितं माघणंदियतिपतिगित्तं ॥

श्री माघनंदिसिद्धान्तदेवधों सत्कर्मपंजियं श्रीमदुदयादित्यं प्रतिसमानं बरेदं ॥ मंगलं महा ॥

पं. लोकनाथजी शास्त्रीकी सूचनानुसार इस “ अन्तिम प्रशस्तिमें दो तीन कानडीमें

कंदद्वय पद्य हैं जो कि शान्तिनाथ राजाके प्रशंसात्मक पद्य हैं। उक्त राजाने 'सत्कर्मपञ्चिका' को विस्तारसे लिखवाकर भक्तिके साथ श्री माधनंदाचार्यजीको दे दिया। प्रति लिखनेवाला श्री उदयदिव्य है।”

इसके ताड़पत्रोंकी संख्या २७ और ग्रन्थ-प्रमाण लगभग ३७२६ श्लोकके है।

### ३ महाबंध-परिचय

मूढ़विद्विदी महाधवल नामसे प्रसिद्ध ताड़पत्रीय प्रतिके पत्र २७ पर पूर्वोक्त सत्कर्मपञ्चिका समाप्त हुई है। २८ वां ताड़पत्र प्राप्त नहीं है। आगे जो अधिकार-समाप्तिकी व नवीन अधि-कार-प्रारंभकी प्रथम सूचना पाई जाती है वह इसप्रकार है—

एवं पगदिसमुक्किचणा समत्तं (त्ता)। जो सो सब्बबंधो णो सब्बबंधो...इत्यादि।

तथा 'एवं कालं समत्तं' 'एवं अंतरं समत्तं' इत्यादि।

पं. लोकनाथजी शास्त्रीके शब्दोंमें 'इस रीतिसे भंगविचय, भागाभाग, परिमाण, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अंतर, भाव और अल्पबहुत्वका वर्णन है'। अल्पबहुत्वकी समाप्ति-पुष्पिका इसप्रकार है—

एवं परत्थाणअद्वाअप्पाबहुगं समत्तं। एवं पगदिवंधो समत्तो।

इस थोड़ेसे विवरणसे ही अनुमान हो जाता है कि प्रस्तुत ग्रंथरचना महाबंधके विषयसे संबन्ध रखती है। हम प्रथम भागकी भूमिकाके पृष्ठ ६७ पर धवला और जयधवलाके दो उद्धरण दे चुके हैं, जिनमें कहा गया है कि महाबंधका विषय बंधविधानके प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश, इन चारों प्रकारोंका विस्तारसे वर्णन करना है। इन प्रकारोंका कुछ और विषय-विभाग धवला प्रथम भागके पृष्ठ १२७ आदि पर पाया जाता है जहाँ जीवद्वानकी प्ररूपणाओंका उद्गम-स्थान बतलाते हुए कहा गया है—

बंधविहाणं चउदिवहं। तं जहा-पयडिबंधो द्विविंधो अणुभागबंधो पदेसबंधो चेदि। तत्थ जो सो पयडिबंधो सो दुविहो, मूलपयडिबंधो उत्तरपयडिबंधो चेदि। तत्थ जो सो मूलपयडिबंधो सो थणो। जो सो उत्तरपयडिबंधो सो दुविहो, एगेउत्तरपयडिबंधो अब्बोगाडउत्तरपयडिबंधो चेदि। तत्थ जो सो एगेउत्तर-पयडिबंधो तस्स चउवीस अणियोगहारणि णाडव्वाणि भवंति। तं जहा-समुक्किचणा सब्बबंधो णोसब्बबंधो उक्कस्सबंधो अणुक्कस्सबंधो जहणणबंधो अजहणणबंधो सादियबंधो अणादियबंधो धुवबंधो अद्धवबंधो बंध-सामितविचयो बंधकालो बंधंतरं बंधसाणियासो णाणाजीवेहि भंगविचयो भागाभागाणुगमो परिमाणाणुगमो खेत्ताणुगमो पोत्तणाणुगमो कालाणुगमो अंतराणुगमो भावाणुगमो अप्पाबहुगाणुगमो चेदि।

यहाँ प्रकृतिबंध विधानके एकैकोत्तरप्रकृतिबंधके अन्तर्गत जो अनुयोगद्वारा गिनये गये हैं, उनमेंसे आदिके समुत्कीर्तना सर्वबंध और नोसर्वबंध, इन तीन, तथा अन्तके भंगविचयादि नौ अनुयोग-द्वारोंका उल्लेख महाधवलाकी उक्त ग्रंथरचनाके परिचयमें भी पाया जाता है। अतः यह भाग महाबंधके प्रकृतिबंधविधान अधिकारकी रचनाका अनुमान किया जा सकता है। यह प्रकृतिबंध ताड़पत्र ५० पर अर्थात् २३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है।

प्रकृतिबंध अधिकारकी समाप्तिके पश्चात् महाधवलमें ग्रंथरचना इसप्रकार है—

‘ णमो अरहंताणं ’ इत्यादि

एत्थो णिदिबंधो दुविंधो, मूलपगदिदिदिबंधो चेव उत्तरपगदिदिदिबंधो चेव । एत्थो मूलपगदिदिदिबंधो पुण्वगमणिज्जो । तत्थ इमाणि चत्तरि अणियोगद्वाराणि णादव्वाणि भवंति । तं जहा—णिदिबंधाणपरूवणा, णिसेयपरूवणा अद्राकंडयपरूवणा अप्पाबहुनेत्ति ।..... एवं भूयो णिदिअप्पाबहुगं समत्तं । एवं मूलपगदिदिदिबंधो (धे) चउव्वीसमणियोगद्वारं समत्तं ।

भुजगारबंधेत्ति ।.....

‘ इसप्रकार भुजगारबंध प्रारंभ होकर काल, अन्तर इत्यादि अल्पबहुत्व तक चला गया है ।’

एवं जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्वाराणि । एवं णिदिबंधं समत्तं ।

बंधविधानके इस स्थितिबंधनामक द्वितीय प्रकारका भी कुछ परिचय धवला प्रथम भागसे मिलता है । पृ. १३० पर कहा गया है—

ट्टिदिबंधो दुविंधो, मूलपयडिट्टिदिबंधो उत्तरपयडिट्टिदिबंधो चेदि । तत्थ जो सो मूलपयडिट्टिदिबंधो सो थण्णो । जो सो उत्तरपयडिट्टिदिबंधो तस्स चउवीस अणियोगद्वाराणि । तंजहा—अद्वाछेदो, सव्वबंधो..... इत्यादि ।

यहां स्थितिबंधके मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृति, इसप्रकार दो भेद करके उनमेंसे प्रथमको अप्रकृत होनेके कारण छोड़कर प्रस्तुतोपयोगी द्वितीय भेदके चौबीस अनुयोगद्वार बतलाये गये हैं । इनसे पूर्वोक्त महाधवलकी रचनाके महाबंधसे संबंधकी सूचना मिलती है ।

यह स्थितिबंध ताड़पत्र ५१ से ११३ अर्थात् ६३ पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

इनसे आगे महाधवलमें क्रमशः अनुभागबंध और फिर प्रदेशबंधका विवरण पाया जाता है । यथा—

एवं जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्वाराणि । एवं उत्तरपगदिअणुभागबंधो समत्तो । एवं अणुभागबंधो समत्तो । × × × ×

जो सो पदेसबंधो सो दुविंधो, मूलपगदिपदेसबंधो चेव उत्तरपगदिपदेसबंधो चेव । एत्तो मूलपयदिपदेसबंधो पुण्वं गमणीयो भागाभागसमुदाहरो अट्टविधबंधगस्स आउगभावो × × × × एवं अप्पाबहुगं समत्तं । एवं जीवसमुदाहरेत्ति समत्तमणियोगद्वारं । एवं पदेसबंधं समत्तं ।

एवं बंधविधानेत्ति समत्तमणियोगद्वारं । एवं चदुबंधो समत्तो भवदि ।

अनुभागबंध ताड़पत्र ११४ से १६९ अर्थात् ५६ पत्रोंमें, व प्रदेशबंध १७० से २१९ अर्थात् ५० पत्रोंमें समाप्त हुआ है ।

यहीं महाधवल प्रतीकी ग्रंथरचना समाप्त होती है । इस संक्षिप्त परिचयसे स्पष्ट है कि महाधवल प्रतीके उत्तर भागमें बंधविधानके चारों प्रकारों—प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशका विस्तारसे वर्णन है, तथा उनके भेद-प्रभेदों व अनुयोगद्वारोंका विवरण धवलादि ग्रंथोंमें संकेतित विषय-विभाषके अनुसार ही पाया जाता है । अतएव यही भूतबलि आचार्यकृत महाबंध हो सकता है । दुर्भाग्यवतः इसके प्रारंभका ताड़पत्र अप्राप्य होनेसे तथा यथेष्ट अवतरण न मिलनेसे जितनी जैसी चाहिये उतनी छात्रजीन प्रश्नकी फिर भी नहीं हो सकी । तथापि अनुभागबंध-विधानकी समाप्तिके



पश्चात् प्रतिमें जो पांच छह कनाड़ीके कंद-वृत्त पद्य पाये जाते हैं, उनमेंसे एक शास्त्रीजीने पूरा उद्धृत करके भजनेकी कृपा की है, जो इस प्रकार है—

सकलधरित्रीविभुत—

प्रकटितयधीशे मल्लिकम्बे बरेसि सत्पु-

ण्याकर-महाबंध पु—

स्तकं श्रीमाघनंदिसुनिगलि गितळ्

इस पद्यमें कहा गया है कि श्रीमती मल्लिकाम्बा देवीने इस सत्पुण्याकर महाबंधकी पुस्तक-को लिखाकर श्रीमाघनन्दि मुनिको दान की। यहां हमें इस ग्रन्थके महाबंध होनेका एक महत्वपूर्ण प्राचीन उल्लेख मिल गया। शास्त्रीजीकी सूचनानुसार शेष कनाड़ी पद्योंमेंसे दो तीनमें माघनन्दाचार्यके गुणोंकी प्रशंसा की गई है, तथा दो पद्योंमें शान्तिसेन राजा व उनकी पत्नी मल्लिकाम्बा देवीका गुणगान है, जिससे महाबंध प्रतिका दान करनेवाली मल्लिकाम्बा देवी किसी शान्तिसेन नामक राजाकी रानी सिद्ध होती हैं। ये शान्तिसेन व माघनन्दि निःसंदेह वे ही हैं जिनका सत्कर्मपंजिकाकी प्रशस्तिमें भी उल्लेख आया है। प्रतिके अन्तमें पुनः ५ कनाड़ीके पद्य हैं जिनमेंसे प्रथम चारमें माघनन्दि मुनीन्द्रकी प्रशंसा की गई है व उन्हें 'यतिपति' 'व्रतनाथ' व 'व्रतिपति' तथा 'सैद्धान्तिकाग्रेसर' जैसे विशेषण लगाये गये हैं। पांचवें पद्यमें कहा गया है कि रूपवती सेनवधूने श्रीपंचमीव्रतके उद्यापनके समय (यह शास्त्र) श्रीमाघनन्दि व्रतिपतिको प्रदान किया। यथा—

श्रीपंचमियं नोतुध्यापनेयं माडि बरेसि अध्यातमना।

रूपवती सेनवधू जितकोष श्रीमाघनन्दि व्रतिपति गितळ् ॥

यहां सेनवधूसे शान्तिसेन राजाकी पत्नीका ही अभिप्राय है। नामके एक भागसे पूर्ण-नामको सूचित करना सुप्रचलित है।

यह अन्तकी प्रशस्ति धीरवाणीविलास जैनसिद्धान्त भवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) में पूर्ण प्रकाशित है।

उक्त परिचयमें प्रतिके लिखाने व दान किये जानेका कोई समय नहीं पाया जाता। शान्तिसेन राजाका भी इतिहासमें जल्दी पता नहीं लगता। माघनन्दि नामके मुनि अनेक हुए हैं जिनका उल्लेख श्रवणबेरगोला आदिके शिलालेखोंमें पाया जाता है। जब शान्तिसेन राजाके उल्लेखादि संबन्धी पूर्ण पद्य प्राप्त होंगे, तब धीरे धीरे उनके समयादिके निर्णयका प्रयत्न किया जा सकेगा।

हम ऊपर कह आये हैं कि इस प्रतिमें महाबंध रचनके प्रारंभका पत्र २८ वां नहीं है। शास्त्रीजीकी सूचनानुसार प्रतिमें पत्र नं. १०९, ११४, १७३, १७४, १७६, १७७, १८३, १८४, १८५, १८६, १८८, १९७, २०८, २०९ और २१२ भी नहीं हैं। इसप्रकार कुल १६ पत्र नहीं मिल रहे हैं। किन्तु शास्त्रीजीकी सूचना है कि कुछ लिखित ताड़पत्र बिना पत्र-संख्याके भी प्राप्त हैं। संभव है यदि प्रयत्न किया जाय तो इनमेंसे उक्त त्रुटिकी कुछ पूर्ति हो सके।

## ४ उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति पर कुछ और प्रकाश

प्रथम भागकी प्रस्तावनामें<sup>१</sup> हम वर्तमान ग्रंथभाग अर्थात् द्रव्यप्रमाणप्ररूपणामें कै तथा अन्यत्रसे तीन चार ऐसे अवतरणोंका परिचय करा चुके हैं जिनमें 'उत्तरप्रतिपत्ति' और 'दक्षिण-प्रतिपत्ति' इसप्रकारकी दो भिन्न भिन्न मान्यताओंका उल्लेख पाया जाता है। वहां हम कह आये हैं कि 'हमने इन उल्लेखोंका दूसरे उल्लेखोंकी अपेक्षा कुछ विस्तारसे परिचय इस कारणसे दिया है क्योंकि यह उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तिका मतभेद अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय है। संभव है इनसे धवलाकारका तात्पर्य जैनसमाजके भीतरकी किन्हीं विशेष सांप्रदायिक मान्यताओंसे ही हो' यहाँ हमारा संकेत यह था कि संभवतः यह श्वेताम्बर और दिगम्बर मान्यता भेद हो और यह बात उक्त प्रस्तावनाके अन्तर्गत अप्रेजी वक्तव्यमें मैंने व्यक्त भी कर दी थी कि—

"At present I am examining these views a bit more closely. They may ultimately turn out to be the Svetambara and Digambara Schools".

उक्त अवतरणोंमें दक्षिणप्रतिपत्तिको 'पवाइज्जमाण' और 'आयरियपरंपरागय' भी कहा है। अब श्रीजयधवलमें एक उल्लेख हमें ऐसा भी दृष्टिगोचर हुआ है जहाँ 'पवाइज्जंत' तथा 'आइरियपरंपरागय' का स्पष्टार्थ खोलकर समझाया गया है और अज्जमंखुके उपदेशको वहाँ 'अपवाइज्जमाण' तथा नागहस्ति क्षमाश्रमणके उपदेशको 'पवाइज्जंत' बतलाया है। यथा—

को पुण पवाइज्जंतोवएसो णाम वुत्तमेदं ? सन्वाइरियसम्मदो चिरकालमञ्जोच्छिण्णसंप्रदायकमेणा-  
गच्छमाणो जो सिस्सपरंपराए पवाइज्जदे पणविज्जदे सो पवाइज्जंतोवएसो ति भण्णदे । अथवा अज्जमंखु-  
भयवेत्ताणमुवएसो एत्थापवाइज्जमाणो णाम । णागहस्तिखवणाणमुवएसो पवाइज्जंतो ति वेत्तव्वो ।

(जयधवला अ. पत्र ९०८)

अर्थात् यहाँ जो 'पवाइज्जंत' उपदेश कहा गया है उसका अर्थ क्या है ? जो सब आचार्योंको सम्मत हो, चिरकालसे अब्युच्छिन्नसंप्रदाय-क्रमसे आ रहा हो और शिष्यपरंपरासे प्रचलित और प्रज्ञापित किया जा रहा हो वह 'पवाइज्जंत' उपदेश कहा जाता है। अथवा, भगवान् अज्जमंखुका उपदेश यहाँ (प्रकृत विषयपर) 'अपवाइज्जमाण' है, तथा नागहस्ति-क्षपणका उपदेश 'पवाइज्जंत' है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये।

अज्जमंखु और नागहस्तिके भिन्न मतोपदेशोंके अनेक उल्लेख इन सिद्धान्त ग्रन्थोंमें पाये जाते हैं, जिनकी कुछ सूचना हम उक्त प्रस्तावनामें दे चुके हैं। जान पड़ता है कि इन दोनों आचार्योंका जैनसिद्धान्तकी अनेक सूक्ष्म बातोंपर मतभेद था। जहाँ वीरसेनस्वामीके संमुख ऐसे मतभेद उपस्थित हुए, वहाँ जो मत उन्हें प्राचीन परंपरागत ज्ञात हुआ, उसे 'पवाइज्जमाण' कहा।

१ बद्वंशभाग भाग, १ भूमिका पृष्ठ ५७.

२ देखो पृ. ९२, ९४, ९८ आदि, मूल व अनुवाद.

तथा जिस मतकी उन्हें प्रामाणिक प्राचीन परंपरा नहीं मिली, उसे 'अपवाइज्जमाण' कहा है। प्रस्तुत उल्लेखसे अनुमान होता है कि उक्त प्रतिपत्तियोंसे उनका अभिप्राय किन्हीं विशेष गद्दी हुई मत-धाराओंसे नहीं था। अर्थात् ऐसा नहीं था कि किसी एक आचार्यका मत सर्वथा 'अपवाइज्जमाण' और दूसरेका सर्वथा 'पवाइज्जमाण' हो। किंतु इन्हें दक्षिणप्रतिपत्ति और उत्तरप्रतिपत्ति क्यों कहा है यह फिर भी विचारणीय रह जाता है।

## ५ णमोकारमंत्रके सादित्व-अनादित्वका निर्णय।

द्वितीय भागकी प्रस्तावना (पृ. ३३ आदि) में हम प्रगट कर चुके हैं कि धवलाकारने जीवट्टणखंड व वेदनाखंडके आदिमें जो शास्त्रके निबद्धमंगल व अनिवद्धमंगल होनेका विचार किया है उसका यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवट्टणके आदिमें णमोकारमंत्ररूप मंगल भगवान् पुण्यदंतकृत होनेसे यह शास्त्र निबद्धमंगल है, किन्तु वेदनाखंडके आदिमें 'णमो जिणाणं' आदि नमस्कारात्मक मंगलवाक्य होनेपर भी वह शास्त्र अनिवद्धमंगल है, क्योंकि वे मंगलसूत्र स्वयं भूत-ब्रह्मिकी रचना न होकर गौतमगणधरकृत हैं। वेदनाखंडमें भी निबद्धमंगलत्व तभी माना जा सकता है, जब वेदनाखंडको महाकर्मप्रकृतिपाहुड मान लिया जाय और भूतब्रह्म आचार्यकी गौतम गणधर। अन्य किसी प्रकारसे निबद्धमंगलत्व सिद्ध नहीं हो सकता। इस विवेचनसे धवलाकारका यह मत स्पष्ट समझमें आता है कि उपलब्ध णमोकारमंत्रके आदि रचयिता आचार्य पुण्यदंत ही हैं।

प्रथम भागमें उक्त विवेचनसंबन्धी मूलपाठका संपादन व अनुवाद करते समय हस्तलिखित प्रतियोंका जो पाठ हमारे सम्मुख उपस्थित था उसका सामञ्जस्य बैठाना हमारे लिये कुछ कठिन प्रतीत हुआ, और इसीसे हमें वह पाठ कुछ परिवर्तित करके मूलमें रखना पड़ा। तथापि प्रतियोंका उपलब्ध पाठ यथावत् रूपसे वहीं पादटिप्पणमें दे दिया था। (देखो प्रथम भाग पृ. ४१)। किंतु अब मूडविद्दीकी ताडपत्रीय प्रतिसे जो पाठ प्राप्त हुआ है वह भी हमारे पादटिप्पणमें दिये हुए प्रतियोंके पाठके समान ही है। अर्थात्—

“जो सुत्तसादीए सुयकत्तारेण कयदेवताणमोक्कारो तं निबद्धमंगलं। जो सुत्तसादीए सुचकत्तारेण निबद्धदेवताणमोक्कारो तमनिबद्धमंगलं”

अब वेदनाखंडके आदिमें दिये हुए धवलाकारके इसी विषयसंबन्धी विवेचनके प्रकाशमें यह पाठ समुचित जान पड़ता है। इसका अर्थ इसप्रकार होगा—

“जो सूत्रग्रंथके आदिमें सूत्रकारद्वारा देवतानमस्कार किया जाता है, अर्थात् नमस्कार-वाक्य स्वयं रचकर निबद्ध किया जाता है उसे निबद्धमंगल कहते हैं। और जो सूत्रग्रंथके आदिमें सूत्रकारद्वारा देवतानमस्कार निबद्ध कर दिया जाता है, अर्थात् नमस्कारवाक्य स्वयं न रचकर किसी अन्य आचार्यद्वारा पूर्वराचित नमस्कारवाक्य निबद्ध कर दिया जाता है, उसे अनिवद्धमंगल कहते हैं।”

इसप्रकार मूढबिद्दीकी प्रति व प्रचलित प्रतियोंके पाठकी पूर्णतया रक्षा हो जाती है, उसका वेदनाखंडके आदिमें किये गये विवेचनसे ठीक सामंजस्य बैठ जाता है, तथा उससे ध्वलाकारके गमोकारमंत्रके कर्तृत्वसंबन्धी उस मतकी पूर्णतया पुष्टि हो जाती है जिसका परिचय हम विस्तारसे गत द्वितीय भागकी प्रस्तावनामें करा आये हैं। गमोकारमंत्रके कर्तृत्वसंबन्धी इस निष्कर्ष-द्वारा कुछ लोगोंके मतसे प्रचलित एक मान्यताको बड़ी भारी ठेस लगती है। वह मान्यता यह है कि गमोकारमंत्र अनादिनिधन है, अतएव यह नहीं माना जा सकता कि उस मंत्रके आदिकर्ता पुष्पदन्ताचार्य हैं। तथापि ध्वलाकारके पूर्वोक्त मतके परिहार करनेका कोई साधन व प्रमाण भी अबतक प्रस्तुत नहीं किया जा सका। गंभीर विचार करनेसे ज्ञात होता है कि गमोकारमंत्र-संबन्धी उक्त अनादिनिधनत्वकी मान्यता व उसके पुष्पदन्ताचार्यद्वारा कर्तृत्वकी मान्यतामें कोई विरोध नहीं है। भावकी (अर्थकी) दृष्टिसे जबसे अरिहंतादि पंच परमेश्वरी मान्यता है तभीसे उनको नमस्कार करनेकी भावना भी मानी जा सकती है। किंतु 'गमो अरिहंताणं' आदि शब्द-रचनाके कर्ता पुष्पदन्ताचार्य माने जा सकते हैं। इस बातकी पुष्टिके लिये मैं पाठकोंका ध्यान श्रुतावतारसंबन्धी कथानककी ओर आकर्षित करता हूँ। ध्वला, प्रथम भाग, पृ. ५५ पर कहा गया है कि—

‘सुतमोद्गुणं अथदो तित्थयरादो, गंधदो गणधरदेवादो चि’

अर्थात् सूत्र अर्थप्ररूपणाकी अपेक्षा तीर्थकरसे, और ग्रंथरचनाकी अपेक्षा गणधरदेवसे अवतीर्ण हुआ है।

यहां फिर प्रश्न उत्पन्न होता है—

द्रव्यभावाभ्यामकृत्रिमत्वतः सदा स्थितस्य श्रुतस्य कथमवतार इति ?

अर्थात् द्रव्य-भावसे अकृत्रिम होनेके कारण सर्वदा अवस्थित श्रुतका अवतार कैसे हो सकता है ?

इसका समाधान किया जाता है—

एतत्सर्वमभिव्यज्यद्यदि द्रव्यार्थिकनयो ऽ विवक्षिष्यत् । पर्यायार्थिकनयपेक्षायामवतारस्तु पुनर्घटत एव ।

अर्थात् यह शंका तो तब बनती जब यहां द्रव्यार्थिक नयकी विवक्षा होती। परंतु यहां-पर पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा होनेसे श्रुतका अवतार तो बन ही जाता है।

आगे चलकर पृष्ठ ६० पर कर्ता दो प्रकारका बतलाया गया है, एक अर्थकर्ता व दूसरा ग्रंथकर्ता। और फिर विस्तारके साथ तीर्थकर भगवान् महावीरको श्रुतका अर्थकर्ता, गौतम गणधरको द्रव्यश्रुतका ग्रंथकर्ता तथा भूतबलि-पुष्पदन्तको भी खंडसिद्धान्तकी अपेक्षा कर्ता या उपतलकर्ता कहा है। यथा—

‘तत्थ कत्ता दुविहो, अत्थकत्ता गंधकत्ता चेदि । महावीरोऽर्थकर्ता ।... एवंविधो महावीरोऽर्थकर्ता । ... तदो भावसुदस्स अत्थपदाणं च तित्थयरो कत्ता । तित्थयरादो सुदपज्जाएण गोदमो परिणदो चि वृत्त-

सुदस्स गोदमो कत्ता । तत्तो गंधरयणा जादेति ।... तदो एयं खंडसिद्धंतं पडुच्च भूदबलि-पुण्यंताइरिया वि क्तारो उच्चति । तदो मूलतंतकत्ता वडुमाणभडारओ, अणुतंतकत्ता गोदमसामी, उवतंतकत्तारा भूदबलि-उएक-यंतादयो वीयरायदोसमोहा मुणिवरा । किमर्थं कत्तां प्ररूप्यते ? शास्त्रस्य प्रामाण्यप्रदर्शनार्थम्, 'वचन-प्रामाण्याद् वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायात् । ( षट्खंडागम भाग १, पृष्ठ ६०-७२ )

उसी प्रकार, स्वयं धवल ग्रंथ आगम है, तथापि अर्थकी दृष्टिसे अत्यन्त प्राचीन होनेपर भी उपलभ्य शब्दरचनाकी दृष्टिसे उसके कर्ता वीरसेनाचार्य ही माने जाते हैं । इससे स्पष्ट है कि णमोकारमंत्रको द्रव्यार्थिक नयसे पुष्पदन्ताचार्यसे भी प्राचीन मानने व पर्यायार्थिक नयसे उपलब्ध भाषा व शब्दरचनाके रूपमें पुष्पदन्ताचार्यकृत माननेमें कोई विरोध उत्पन्न नहीं होता । वर्तमान प्राकृत भाषात्मक रूपमें तो उसे सादि ही मानना पड़ेगा । आज हम हिन्दी भाषामें उसी मंत्रको 'अहिंतांको नमस्कार' या अंग्रेजीमें 'Bow to the Worshipful' आदि रूपमें भी उच्चारण करते हैं, किंतु मंत्रका यह रूप अनादि क्या, बहुत पुराना भी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि, हम जानते हैं कि स्वयं प्रचलित हिन्दी या अंग्रेजी भाषा ही कोई हजार आठसौ वर्षसे पुरानी नहीं है । हाँ, इस बातकी खोज अवश्य करना चाहिये कि क्या यह मंत्र उक्त रूपमें ही पुष्पदन्ताचार्यके समयसे पूर्वकी किसी रचनामें पाया जाता है? यदि हाँ, तो फिर विचाराणीय यह होगा कि धवलाकारके तत्संबंधी कथनोंका क्या अभिप्राय है । किन्तु जबतक ऐसे कोई प्रमाण उपलब्ध न हों तबतक अब हमें इस परम पावन मंत्रके रचयिता पुष्पदन्ता-चार्यको ही मानना चाहिये ।

## ६. शंका-समाधान

षट्खंडागम प्रथम भागके प्रकाशित होनेपर अनेक विद्वानोंने अपने विशेष पत्रद्वारा अथवा पत्रोंमें प्रकाशित समालोचनाओंद्वारा कुछ पाठसम्बंधी व सैद्धान्तिक शंकाएं उपस्थित की हैं । यहां उन्हीं शंकाओंका संक्षेपमें समाधान करनेका प्रयत्न किया जाता है । ये शंका-समाधान यहां प्रथम भागके पृष्ठक्रम से व्यवस्थित किये जाते हैं ।

### पृष्ठ ६

१ शंका--'वियलियमलमूढदंसणुत्तिलया' में 'मलमूढ' की जगह 'मलमूल' पाठ अधिक ठीक प्रतीत होता है, क्योंकि सम्पदशेनके पच्चीस मल दोषोंमें तीन मूढता दोष भी सम्मिलित हैं ।

( विवेकाम्युदय, ता० २०-१०-४० )

समाधान--'मलमूढ' पाठ सद्धारनपुरकी प्रतिके अनुसार रखा गया है और मूढविद्रीसे जो प्रतिमिळान होकर संशोधन-पाठ आया है, उसमें भी 'मलमूढ' के स्थानपर कोई पाठ-परिवर्तन नहीं प्राप्त हुआ । तथा उसका अर्थ सर्वप्रकारके मल और तीन मूढताएं करना असंगत भी नहीं है ।

२ शंका—गाथा ४ में 'महु' पाठ है, जिसका अनुवाद 'मुझपर' किया गया है। समझमें नहीं आता कि यह अनुवाद कैसे ठीक हो सकता है, जब कि 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'मयु' होता है ?  
( विवेकान्मुदय, ता० २०-१०-४० )

समाधान—प्रकृतमें 'महु' का संस्कृत रूपान्तर 'मह्यम्' करना चाहिए। देखो हैम व्याकरण 'महु मञ्छु ङसि ङ्स्याम्' ८, ४, ३७९. इसीके अनुसार 'मुझपर' ऐसा अर्थ किया गया है।

३ शंका—गाथा ४ में 'दाणवरसीहो' पाठ है। पर उसमें नाश करनेका सूचक 'हर' शब्द नहीं है। 'वर' की जगह 'हर' रखना चाहिए था। (विवेकान्मुदय, ता० २०-१०-४०)

समाधान—हमारे सन्मुख उपस्थित समस्त प्रतियोंमें 'दाणवरसीहो' ही पाठ था और मूडविद्वांसों उसमें कोई पाठ-परिवर्तन नहीं मिला। तब उसमें 'वर' के स्थानपर जबरदस्ती 'हर' क्यों कर दिया जाय, जब कि उसका अर्थ 'हर' के बिना भी सुगम है ? 'वादीमसिंह' आदि नामोंमें बिनाशबोधक कोई शब्द न होते हुए भी अर्थमें कोई कठिनाई नहीं आती।

### पृष्ठ ७

४ शंका—गाथा ५ में 'दुक्कयंत' पाठ है जिसका अर्थ किया गया है 'दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले' यह अर्थ किसप्रकार निकाला गया, उक्त शब्दका संस्कृत रूपान्तर क्या है, यह स्पष्ट करना चाहिए।  
( विवेकान्मुदय, २०-१०-४० )

समाधान—'दुक्कयंत' का संस्कृत रूपान्तर है 'दुष्कृतान्त' जिसका अर्थ दुष्कृत अर्थात् पापोंका अन्त करनेवाले सुस्पष्ट है।

५ शंका—गाथा ५ में '—बहं सया दंतं' पाठ है, जिसका रूपान्तर होगा '—पति सदा दन्तं'। इसमें हमें समझ नहीं पड़ता कि 'दन्त' शब्दसे इन्द्रियदमनका अर्थ किसप्रकार लाया जा सकता है ?  
( विवेकान्मुदय, २०-१०-४० )

समाधान—प्राकृतमें 'दंतं' शब्द 'दान्त' के लिये भी आता है। यथा, 'दंतेण चित्तेण चरंति धीरा' ( प्राकृतसूक्तारनमाला ) पांडुअसदमहर्णयो कोषमें 'दंत' का अर्थ 'जितेन्द्रिय' दिया गया है। इसीके अनुसार 'निरन्तर पंचेन्द्रियोंका दमन करनेवाले' ऐसा अनुवाद किया गया है।

६ शंका—गाथा ६ में 'विणिहयवग्महपसरं' का अर्थ होना चाहिये 'जिन्होंने ब्रह्मा-द्वैतकी व्यापकताको नष्ट कर दिया है और निर्मलज्ञानके रूपमें ब्रह्मकी व्यापकताको बढ़ाया है'।  
( विवेकान्मुदय, २०-१०-४० )

समाधान—जब काव्यमें एकही शब्द दो बार प्रयुक्त किया जाता है तब प्रायः दोनों जगह उसका अर्थ भिन्न भिन्न होता है। किन्तु उक्त अर्थमें 'वग्मह' का अर्थ दोनों जगह 'ब्रह्म' ले लिया गया है, और उनमें भेद करनेके लिए एकमें 'अद्वैत' शब्द अपनी ओरसे डाला गया

है, जिसके लिए मूलमें सर्वथा कोई आधार नहीं है। प्राकृतमें 'वम्मह' शब्द 'मन्मथ' के लिए आता है। हैम प्राकृतव्याकरणमें इसके लिए एक स्वतंत्र सूत्र भी है— 'मन्मथे वः' ८, १, २४२. इसकी वृत्ति है 'मन्मथे मस्य वो भवति, वम्महो'। इसीके अनुसार हमने अनुवाद किया है, जिसमें कोई दोष नहीं।

### पृष्ठ १५

७ श्लोका—आगमे मूल 'सम्महसुत्ते' इति लिखितमस्य भवद्भिरर्थः कृतः 'सम्मतितर्क'। सम्मतितर्काख्यं श्वेताम्बरीयग्रन्थमस्ति, तस्य निर्देश आचार्यैः कृतः वा सम्महसुत्ते नाम किमपि दिगम्बरीयं ग्रन्थं वर्तते ? (पं. क्षम्भनलालजी तर्कतीर्थ, पत्र ता. ४-१-४१)

अर्थात् मूलके 'सम्महसुत्ते' से सम्मतितर्कका अर्थ लिया है जो श्वेताम्बरीय ग्रंथ है। आचार्यने उसीका उल्लेख किया है या इस नामका कोई दिगम्बरीय ग्रंथ भी है ?

समाधान—'णामं ठवणा दवियं' इत्यादि गाथा उद्धृत करके जो सम्मतिसूत्रका उल्लेख किया है वह सम्मतितर्क नामका प्राप्त ग्रन्थ ही प्रतीत होता है, क्योंकि यह गाथा तथा उससे पूर्व उद्धृत चार गाथाएँ वहाँ पाई जाती हैं। सम्मतितर्कके कर्ता सिद्धसेनका स्मरण महापुराण आदि अनेक 'दिगम्बर ग्रन्थोंमें भी पाया जाता है, जिससे अनुमान होता है कि ये आचार्य दोनों सम्प्रदायोंमें भाग्य रहे हैं। इससे अन्य कोई ग्रन्थ इस नामका जैन साहित्यमें उपलब्ध भी नहीं है।

### पृष्ठ १९

८ श्लोका—'वक्ष्यन्तिरेवेकलो मंगलसहो णाममंगलं' इत्यत्र तस्य मंगलस्याधारविषयेष्वष्ट-विधेष्वजीवाधारकथने भाषायां जिनप्रतिमाया उदाहरणं प्रदत्तं, तत्कथं संगच्छते ? .....अजीवोदाहरणे जिनभवनसुदाहियतामिति। (पं. क्षम्भनलाल जी तर्कतीर्थ, पत्र ता. ४-१-४१)

अर्थात् नाममंगलके आठ प्रकारके आधार—कथनमें भाषासुवादमें अजीव आधारका उदाहरण जिनप्रतिमाका दिया गया है, सो कैसे संगत है ? जिनभवनका उदाहरण अधिक ठीक था ?

समाधान—धवलकारने नाममंगलका जो लक्षण दिया है और उसके जो आधार बतलाये हैं, उनसे तो यही ज्ञात होता है कि एक या अनेक चेतन या अचेतन मंगल द्रव्य नाममंगलके आधार होते हैं। उदाहरणार्थ, यदि हम पार्थनाथ तीर्थंकरका नामोच्चारण करें तो यह एक जीवाश्रित नाममंगल होगा। यदि हम चौबीस तीर्थंकरोंका नामोच्चारण करें तो यह अनेक जीवाश्रित नाममंगल होगा। यदि हम अन्तरीक्ष पार्थनाथ, या केशरियानाथ आदि प्रतिमा-ओंका नामोच्चारण करें तो यह अजीवाश्रित नाममंगल होगा, इत्यादि। इस प्रकार जिनप्रतिमा नाममंगलका आधार बन जाती है, जिसका कि उसी पृष्ठपर दी हुई टिप्पणियोंसे यथोचित समर्थन हो जाता है। इसी प्रकार पंडितजी द्वारा सुझाया गया जिनमन्दिर भी अजीव नाममंगलका आधार माना जा सकता है।

पृष्ठ २९

९ शंका—पृ० २९ पर क्षेत्रमंगलके कथनमें लिखा है 'अर्धाष्टारस्यादि पंचविंशत्युत्तर-पंचधनुःशतप्रमाणशरीर' जिसका अर्थ आपने 'साढ़े तीन हाथसे लेकर ५२५ धनुष तकके शरीर' किया है, और नीचे फुटनोटमें 'अर्धाष्ट इत्यत्र अर्धचतुर्थ इति पाठेन भाव्यम्' ऐसा लिखा है। सो आपने यह कहाँसे लिखा है और क्यों लिखा है ?

( नानकचंदजी, पत्र १-४-४० )

समाधान—केवलज्ञानको उत्पन्न करनेवाले जीवोंकी सबसे जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ (अरलि) और उत्कृष्ट अवगाहना पांचसौ पच्चीस धनुष प्रमाण होती है। सिद्धजीवोंकी जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहना इसीलिए पूर्वोक्त बतलाई है। इसके लिए त्रिलोकसारकी गाथा १४१-१४२ देखिये। संस्कृतमें साढ़े तीनको 'अर्धचतुर्थ' कहते हैं। इसी बातको ध्यानमें रखकर 'अर्धाष्ट' के स्थानमें 'अर्धचतुर्थ' का संशोधन सुझाया गया है, वह आगमानुकूल भी है। 'अर्धाष्ट' का अर्थ 'साढ़े सात' होता है जो प्रचलित मान्यताके अनुकूल नहीं है। इसी भागके पृष्ठ २८ की टिप्पणीकी दूसरी पंक्तिमें त्रिलोकप्रज्ञतिका जो उद्धरण (आहुडहृत्पहुदी) दिया है उससे भी सुझाए गये पाठकी पुष्टि होती है।

पृष्ठ ३९

१० शंका—धवलराजमें क्षयोपशमसम्यक्त्वकी स्थिति ६६ सागरसे न्यून बतलाई है, जब कि सर्वार्थसिद्धिमें पूरे ६६ सागर और राजवार्तिकमें ६६ सागरसे अधिक बतलाई है ? इसका क्या कारण है।

( नानकचंदजी, पत्र १-४-४१ )

समाधान—सर्वार्थसिद्धिमें क्षयोपशमिकसम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति पूरे ६६ सागर वा राजवार्तिकमें सम्यग्दर्शनसामान्यकी उत्कृष्ट स्थिति साधिक ६६ सागर और धवल टीका पृ. ३९ पर सम्यग्दर्शनकी अपेक्षा मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति देशोन छायासठ सागर कही है। इस मतभेदका कारण जाननेके पूर्व ६६ सागर किस प्रकार पूरे होते हैं, यह जान लेना आवश्यक है।

धवलकारने जीवद्वारा खंडकी अन्तरप्ररूपणामें ६६ सागरकी स्थितिके पूरा करने का क्रम इसप्रकार दिया है:—

एकी तिरिबखो मणुसेवा वा लंतव—काविट्ठवासियदेवैसु चौइससागरोवमाउट्टिदिएसु उपपण्णो। एक्कं सागरोवमं गमिय विविहसागरोवमादिसमए सम्मत्तं पडिवण्णो। तेरस सागरोवमाणि तत्थ अछिय सम्मसेण सह बुदो मणुसो जादो। तत्थ संजमं संजमासंजमं वा अणुगालिय मणुसाउएणूण—वावीससागरोवममाउट्टिदि-एसु आरण्णुबुददेवेषु उववण्णो। तत्तो बुदो मणुसो जादो। तत्थ संजममणुसारिय उवरिमगेवजे देवेषु मणुसा-उगेण्णएक्कतिससागरोवमाउट्टिदीएसु उववण्णो। अंतोमुहुत्तूणजवट्टिसागरोवमचरिसमए परिणामपच्चएण सम्मामिच्छत्तं गदो। × × × एसो उपपत्तिकमो अउपपण्णउपपायणट्ठे उत्ती। परमत्थदो पुण जेण केण वि पयारेण जवट्टी पूरेदव्वा।

अर्थात्—कोई एक तिर्यंच अथवा मनुष्य चौदह सागरोपमकी आयुस्थितिवाले लास्तब



कापिष्ठ कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांपर एक सागरोपम काल बिताकर दूसरे सागरोपमके आदि समयमें सम्यक्त्वको प्राप्त हुआ और तेरह सागरोपम तक वहां रहकर सम्यक्त्वके साथ ही च्युत होकर मनुष्य हो गया। उस मनुष्यभवमें संयमको अथवा संयमासंयमको परिपालनकर इस मनुष्यभवसम्बन्धी आयुसे कम बाईस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले आरण-अभ्युत कल्पके देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहांसे च्युत होकर पुनः मनुष्य हुआ। इस मनुष्यभवमें संयमको धारणकर उपरिम प्रैवेयकमें मनुष्य आयुसे कम इकतीस सागरोपम आयुकी स्थितिवाले अहमिन्द्र देवोंमें उत्पन्न हुआ। वहां पर अन्तर्मुहूर्त कम छयासठ सागरोपमके अन्तिम समयमें परिणामोंके निमित्तसे सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त हुआ।  $\times \times \times$  यह उत्पत्तिक्रम अभ्युत्पन्नजनोके व्युत्पादनार्थ कहा है। परमार्थसे तो जिस किसी भी प्रकारसे छयासठ सागरोपमकालको पूरा करना चाहिए।

सर्वार्थसिद्धिकार जो क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी स्थिति पूरे ६६ सागर बता रहे हैं, वह षट्खंडागम के दूसरे खंड खुदाबंधके आगे बताये जानेवाले सूत्रोंके अनुसार ही है, उसमें ध्वला से कोई मतभेद नहीं है। भेद केवल ध्वलाके प्रथम भाग पृ. ३९ पर बताई गई देशोन ६६ सागरकी स्थितिसे है। सो यहांपर ध्यान देनेकी बात यह है कि ध्वलाकार वेदकसम्यक्त्व या सम्यक्त्वसामान्यकी स्थिति नहीं बता रहे हैं, किन्तु मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति बता रहे हैं, और वह भी सम्यग्दर्शनकी अपेक्षासे, जिसका अभिप्राय यह समझमें आता है कि सम्यक्त्व होने पर जो असंख्यातगुणश्रेणी कर्म-निर्जरा सम्यक्त्वकी जीवके हुआ करती है, उसीकी अपेक्षा मंगल अर्थात् पापकी गलानेवाला होनेसे वह सम्यक्त्व मंगलरूप है, ऐसा कहा गया है। किन्तु जो जीव ६६ सागर पूर्ण होनेके अन्तिम मुहूर्तमें सम्यक्त्वको छोड़कर नीचेके गुणस्थानोंमें जा रहा है, उसके सम्यक्त्वकालमें होनेवाली निर्जरा बंद हो जाती है, क्योंकि परिणामोंमें संक्षेशकी वृद्धि होनेसे वह सम्यक्त्वसे पतनोन्मुख हो रहा है। अतएव इस अन्तिम अन्तर्मुहूर्तसे कम ६६ सागर मंगलकी उत्कृष्ट स्थिति बताई गई प्रतीत होती है।

अब रही राजवार्त्तिकमें बताये गये साधिक ६६ सागरोपमकालकी बात सो उस विषयमें एक बात खास ध्यान देनेकी है कि राजवार्त्तिककार जो साधिक छयासठ सागरकी स्थिति बता रहे हैं वह क्षायोपशमिकसम्यक्त्वकी नहीं बता रहे हैं किन्तु सम्यग्दर्शनसामान्यकी ही बता रहे हैं, और सम्यग्दर्शनसामान्यकी अपेक्षा वह अधिकता बन भी जाती है। उसका कारण यह है कि एकबार अनुत्तरादिकमें जाकर आये हुए जीवके मनुष्यभवमें क्षायिकसम्यक्त्वकी उत्पत्तिकी भी संभावना है। पुनः क्षायिकसम्यक्त्वको प्राप्तकर संयमी हो अनुत्तरादिकमें उत्कृष्ट स्थितिको प्राप्त हुआ। ऐसे जीवके साधिक छयासठ सागर काल बन जाता है, और क्षायोपशमिकसे क्षायिक सम्यक्त्वको उत्पन्न कर लेनेपर भी सम्यग्दर्शनसामान्य बराबर बना ही रहता है। इसकी पुष्टि जीवस्थान खंडकी अन्तर प्ररूपणाके निम्न अवतरणसे भी होती है:—

‘ उक्कस्सेण छावट्ठि सागरोवमाणि सादिरेयाणि ॥ तं जहा—एक्को अट्ठावीससंतकम्मिअो पुव्वकोडाउअमणुसेसु उववण्णो अट्ठवस्सिअो वेदगसम्मत्तमप्पमत्तगुणं च जुगवं पडिवण्णो १ तदो पमत्तापमत्तपरावत्तसहस्सं कादूण २ उवसमसेदीपाओगविसोहीए विसुद्धो ३ अपुव्वो ४ अणियट्ठो ५ सुहुमो ६ उवसंतो ७ पुणो वि सुहुमो ८ अणियट्ठो ९ अपुव्वो १० होदूण हेट्ठा पडिय अंतरिदो देसुणपुव्वकोटिं संजममणुपालेदूण मदो तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदीएसु देवेसु उववण्णो । तत्तो सुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो । खड्दयं पि ट्ठविय संजमं कादूण कालं गदो । तेत्तीससागरोवमाउट्ठिदीएसु देवसु उववण्णो । तत्तो सुदो पुव्वकोडाउएसु मणुसेसु उववण्णो × संजमं पडिवण्णो । अंतोमुहुत्तावसेसे संसारे अपुव्वो जादो लद्धमंतरं ११ अणियट्ठो १२ सुहुमो १३ उवसंतो १४ भूओ सुहुमो १५ अणियट्ठो १६ अपुव्वो १७ अप्पमत्तो १८ पमत्तो जादो १९ अप्पमत्तो २० उवरि छ अंतोमुहुत्ता अट्ठहि वस्सेहि छव्वीसंतोमुहुत्तेहि य ऊणा पुव्वकोटीहि सादिरेयाणि छावट्ठिसागरोवमाणि उक्कस्संतरं होदि ’

यह विवरण उपशमक जीवोंका एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तरकाल बताते हुए अन्तरप्ररूपणमें आया है । अर्थात् कोई एक जीव उपशमश्रेणीसे उतरकर साधिक छायासठ सागरको बाद भी पुनः उपशमश्रेणीपर चढ़ सकता है । उक्त गद्यका भाव यह है:—

‘ मोहकर्मकी अट्ठाईस प्रकृतियोंकी सत्ता रखनेवाला कोई एक जीव पूर्वकोटिकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और आठ वर्षका होकर वेदकसम्यक्त्व और अप्रमत्त गुणस्थानको युगपत् प्राप्त हुआ । पश्चात् प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थानोंमें कईवार आ जा कर उपशमश्रेणीपर चढ़ा और उतरकर आठ वर्ष और दश अन्तर्मुहूर्त कम पूर्वकोटी वर्षतक संयमको पालके मरणकर तेतीस सागरकी आयुवाला देव हुआ । वहांसे च्युत होकर पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ । यहांपर क्षायिकसम्यक्त्वको भी धारण कर तथा संयमी होकर मरा और पुनः तेतीस सागरोपम की स्थिति वाले देवोंमें उत्पन्न हुआ । वहांसे च्युत हो पुनः पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न हुआ और यथासमय संयमको धारण किया । जब उसके संसारमें रहनेका काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण रह गया, तब पहले उपशमश्रेणीपर चढ़ा, पीछे क्षपकश्रेणीपर चढ़कर निर्वाणको प्राप्त हुआ । इसप्रकारसे उपशमश्रेणीवाले जीवका उत्कृष्ट अन्तर आठ वर्ष और छव्वीस अन्तर्मुहूर्तोंसे कम तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक छायासठ सागरोपमकाल प्रमाण होता है ।

इस अन्तरकाल में रहते हुए भी वह बराबर सम्यग्दर्शनसे युक्त बना हुआ है, भले ही प्रारंभमें ३३ सागर तक क्षायोपशमिकसम्यक्त्वी और बाद में क्षायिकसम्यक्त्वी रहा हो । इस प्रकार सम्यग्दर्शनसामान्यकी दृष्टिसे साधिक छायासठ सागरकी स्थितिका कथन युक्तिसंगत ही है और उसमें उक्त दोनों मतोंसे कोई विरोध भी नहीं आता है ।

खुदाबंधके कालानुयोगद्वारमें भी सम्यक्त्वमार्गणाके अन्तर्गत सम्यक्त्वसामान्यकी उत्कृष्ट स्थिति ६६ सागरसे कुछ अधिक दी है । यथा—

सम्मताणुवादेण सम्मादिट्ठि केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । ( धवला. अ. १, ५०७ )

इस सूत्रकी व्याख्यामें कहा गया है कि कोई मिथ्यादृष्टि जीव तीनों करणोंको करके प्रथमोपशमसम्यक्त्वको ग्रहण कर अन्तर्मुहूर्तकालके बाद वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होकर उसमें तीन पूर्वकोटियोंसे अधिक व्याखीस सागरोपम बिताकर बादमें क्षायिकसम्यक्त्वको धारणकर और चौबीस सागरोपमवाले देवोंमें उत्पन्न होकर पुनः पूर्वकोटीकी आयुवाले मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले जीवके साधिक ६६ सागरकाल सिद्ध हो जाता है ।

किंतु वेदकसम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थिति बतलाते हुए पूरे ६६ सागर ही दिये हैं, यथा—

वेदगसम्माद्वेदी केवचिरं कालादो ह्येति ? जहण्णेण अतोऽप्युद्धुतं । उक्कस्सेण छवट्टिसागरोवमाणि ।

( धवला. अ. प, ५०७ )

इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए कहा गया है कि मनुष्यभवकी आयुसे कम देवायुवाले जीवोंमें उत्पन्न कराना चाहिए और इसी प्रकारसे पूरे ६६ सागर काल वेदकसम्यक्त्वकी स्थिति पूरी करना चाहिए ।

उक्त सारे कथनका भाव यह हुआ कि सम्यग्दर्शनसामान्यकी अपेक्षा साधिक ६६ सागर, वेदकसम्यक्त्वकी अपेक्षा पूरे ६६ सागर, और मंगलपर्यायकी अपेक्षा देशोन ६६ सागरकी स्थिति कही है, इसलिए उनमें परस्पर कोई मत-भेद नहीं है ।

### पृष्ठ ४२

११. शंका—णमो अरिहंताणमित्यत्र अरिमोहस्तस्य हननात् अरिहंता शेषवातिनामविनासावि-  
त्वात् अरिहंता इति प्रतिपादितम् । तदभीष्टमाचार्यैः । पुनः अस्वरसात् उच्यते वा ' रजो ज्ञानदृगावरणादयः  
मोहोऽपि रजः, तेषां हननात् अरिहंता, इति लिखितम् तदत्र अरहंता इति पदं प्रतीयते । भवद्विरपि श्रीमू-  
लाचारादिप्रधानां गाथाटिप्पण्यो निम्ने लिखितं तत्र गाथायामपि अरहंता लिखितम् । आचार्योणामुभयम-  
भीष्टं प्रतीयते ' णमो अरिहंताणं, णमो अरहंताणं ' परन्तु उभयत्र कथने ' णमो अरिहंताणं ' लिखितम् ।  
इत्थयत्र लेखकविस्मृतिस्तु नास्ति वान्यत् प्रयोजनम् ? ( पं० क्षम्मनलालजी, पत्र ४-१-४१ )

अर्थात् धवलाकारने णमोकारमंत्रके प्रथम चरणके जो विविध अर्थ किये हैं उनसे अनुमान होता है कि आचार्यको अरिहंत और अरहंत दोनों पाठ अभीष्ट हैं । किन्तु आपने केवल ' अरिहंता ' पाठ ही क्यों लिखा ?

समाधान—णमोकारमंत्रके पाठमें तो एकही प्रकारका पाठ रखा जा सकता है । तो भी ' णमो अरिहंताणं पाठ रखनेमें यह विशेषता है कि उससे अरि+हंता और अर्हत् दोनो प्रकारके अर्थ लिये जा सकते हैं । प्राकृत व्याकरणानुसार अर्हत् शब्दके अरहंत, अरुहंत व अरिहंत तीनों प्रकारके पाठ हो सकते हैं । अतएव अरिहंत पाठ रखनेसे उक्त दोनों प्रकारके अर्थों की गुंजाइश रहती है । यह बात अरहंत पाठ रखनेसे नहीं रहती ( देखो परिशिष्ट पृ. १८ )

१२ शंका—' अपरिवादीए पुण सयलसुद्धपारगा संखेज्जसहस्सा ' । और यदि परिपाटी क्रमकी अपेक्षा न की जाय तो उस समय संख्यात हजार सकल श्रुतके धारी हुए । भगवान् महावीरके

समयमें तो गिने चुने ही श्रुतकेवली हुए हैं। संख्यात हजार सकल श्रुतके धारियोंका पता तो शास्त्रोंसे नहीं लगता। अतः यह अंश विचारणीय प्रतीत होता है। ( पृष्ठ ६५ )

( जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४० )

**समाधान**—त्रिलोकप्रज्ञति, हरिवंशपुराण आदिमें भगवान् महावीरके तीर्थकालमें पूर्व-धारी ३००, केवलज्ञानी ७००, विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी ५००, शिक्षक ९९००, अवधि-ज्ञानी १३००, वैक्रियिकऋद्धिधारी ९०० और वादी ४०० बतलाये हैं। इनमें यद्यपि पूर्वधारी केवल तीनसौ ही बतलाये हैं, पर केवलज्ञानी केवलज्ञानोत्पत्तिके पूर्व श्रेणी-आरोहणकालमें पूर्वविद् हो चुके हैं और विपुलमती मनःपर्ययज्ञानी जीव तद्भव-मोक्षगामी होनेके कारण पूर्वविद् होंगे। अवधिज्ञानी आदि साधुओंमें भी कुछ पूर्वविद् हों तो आश्चर्य नहीं। पर अवधिज्ञान आदिकी विशेषताके कारण उनकी गणना पूर्वविदोंमें न करके अवधिज्ञानी आदिमें की गई हो। इस प्रकार परिपाटी क्रमके बिना भगवान् महावीरके तीर्थकालमें हजारों द्वादशांगधारी माननेमें कोई आपत्ति नहीं दिखाई देती है।

### पृष्ठ ६८

**१३ शंका**—‘ धदगारवपडिबद्धो ’ का अर्थ ‘ रसगारवके आधीन होकर ’ उचित नहीं जंचता। गारल ( गारव ? ) दोषका अर्थ मैंने किसी स्थानपर देखा है, किन्तु स्मरण नहीं आता। ‘ धद ’ का अर्थ रस भी समझमें नहीं आता। स्पष्ट करनेकी आवश्यकता है।

( जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४० )

**समाधान**—‘ गारव ’ पदका अर्थ गौरव या अभिमान होता है, जो तीन प्रकारका है—ऋद्धिगारव, रसगारव और सातगारव। यथा—

तथो गारवा पञ्चत्ता। तं जहा—इद्धिगारवे रसगारवे सातगारवे। स्था. ३, ४.

ऋद्धियोंके अभिमानको ऋद्धिगारव, दधि दुग्ध आदि रसोंकी प्राप्तिसे जो अभिमान हो उसे रसगारव, तथा शिष्यों व भक्तों आदि द्वारा प्राप्त परिचर्याके सुखको सातगारव या सुखगारव कहते हैं।

उक्त वाक्यसे हमारा अभिप्राय ‘ रसादि गारवके आधीन होकर ’ से है। मूलपाठका संस्कृत रूपान्तर हमारी दृष्टिमें ‘ धृतगारवप्रतिबद्धः ’ रहा है। प्रतियोंमें ‘ धद ’ के स्थानपर ‘ दध ’ पाठ भी पाया जाता है जिससे यदि दधिका अभिप्राय लिया जाय तो उपलक्षणासे रसगारवका अर्थ आजाता है।

### पृष्ठ १४८

**शंका १४.**—प्रतिभासः प्रमाणञ्चाप्रमाणञ्च ’ इत्यादि वाक्यमें प्रतिभासका अनव्यवसायरूप अर्थ ठीक प्रतीत नहीं होता। मेरी समझमें उसका अर्थ वहां ज्ञान-सामान्य ही होना चाहिए, क्योंकि ज्ञानका प्रामाण्य और अप्रामाण्य बाह्यार्थ पर अवलम्बित है, अतः वह विसंवादी भी हो

सकता है और अविस्वादी भी। अनध्यवसाय विसंवादी ज्ञानका भेद है। उसमें जिस तरहसे विसंवादित्व और अविस्वादित्वकी चर्चा दी गई है वह स्याद्वादकी दृष्टिके अनुकूल होते हुए भी चित्तको नहीं लगती। (जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

**समाधान—**यद्यपि प्रतिभासका जो अर्थ किया गया है, वह स्वयं शंकाकारके मतसे भी सदोष नहीं है, तथापि यदि प्रतिभासका अर्थ ज्ञानसामान्य भी ले लिया जाय, तो भी कोई आपत्ति नहीं आती है। ऐसी अवस्थामें अनुवाद पंक्ति १२ में 'और अनध्यवसायरूप जो प्रतिभास है' के स्थानमें 'और जो ज्ञान-सामान्य है' अर्थ करना चाहिए।

पृष्ठ १९६

**१५ शंका—**'असर्वज्ञानां व्याख्यातृत्वाभावे आर्षसन्ततिर्विच्छेदस्यार्थद्वयस्याया वचनपद्धतेराष-त्वाभावात्'। यहाँ 'विच्छेदस्य' के स्थानमें 'विच्छेदः' पाठ अच्छा जंचता है। उससे वाक्यरचना भी ठीक हो जाती है। (जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

**समाधान—**प्राप्त प्रतियोंसे जो पाठ समुपलब्ध हुआ उसकी यथाशक्ति संगति अनुवादमें बैठती गई है। मूळविद्वांसों से भी उस पाठके स्थानपर हमें कोई पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ। तथापि 'विच्छेदस्य' के स्थानपर 'विच्छेदः स्यात्' पाठ स्वीकार कर लेनेसे अर्थ और अधिक सीधा और सुगम हो जाता है। तदनुसार उक्त शंकाका अनुवाद इस प्रकार होगा—

**शंका—**असर्वज्ञको व्याख्याता नहीं मानने पर आर्ष-परम्पराका विच्छेद हो जायगा, क्योंकि, अर्थद्वय वचन-रचनाको आर्षपना प्राप्त नहीं हो सकता है।

पृष्ठ २१३

**१६ शंका—**संस्कृत (मूल) में जो 'नवक' शब्द आया है उसका अर्थ आपने कुछ न करके 'नवक' ही लिखा है। सो इसका क्या अर्थ है? (नानकचंदजी, पृ. १४-४०)

**समाधान—**'नवक' का अर्थ नवीन है, इसलिए सर्वत्र नवीन बंधनेवाले समयप्रबद्ध को नवक समयप्रबद्ध कह सकते हैं। पर प्रकृतमें विवक्षित प्रकृतिके उपशमन और क्षपणके द्विचरमावली और चरमावली अर्थात् अन्तकी दो आवलियोंके कालमें बंधनेवाले समयप्रबद्धको ही नवकसमयप्रबद्ध कहा है। इस नवकसमयप्रबद्धका उस विवक्षित प्रकृतिके उपशमन या क्षपण-कालके भीतर उपशम या क्षय न होकर उपशमन या क्षपणकालके अनन्तर एक समय कम दो आवलीकालमें उपशम या क्षय होता है। एक समय कम दो आवलीकालमें उपशम या क्षय कैसे होता है, इसके लिए प्रथमभाग पृष्ठ २१४ का विशेषार्थ देखिये। विशेषके लिए देखिये लब्धिसार, क्षपणासार।

पृष्ठ २५०

**१७ शंका—**शंकाका प्रारंभ प्रथम पंक्तिमें आये हुए 'तथापि' शब्दसे जान पड़ता है, न

कि उससे पूर्वके 'शरीरस्य स्थौल्यनिर्वर्तकं' इत्यादिसे, क्योंकि उसी शास्त्रीय परिभाषाके करनेपर, जो उससे पहले नहीं की गई है, शंकाकारने 'तथापि' से शंकाका उत्थान किया है।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

**समाधान**—यहाँपर 'तथापि' से शंका मान लेनेपर 'शरीरस्य स्थौल्यनिर्वर्तकं कर्म बावर-मुच्यते' इसे आगमिक परिभाषा मानना पड़ेगी। परन्तु यह आगमिक परिभाषा नहीं है। धवलाकारने स्वयं इसके पहले 'न बादरशब्दोऽयं स्थूलपर्यायः' इत्यादि रूपसे इसका निषेध कर दिया है। अतः शंकाकारके मुखसे ही स्थूल और सूक्ष्मकी परिभाषाओंका कहलाना ठीक है, ऐसा समझकर ही उन्हें शंकाके साथ जोड़ा गया है।

पृष्ठ २९७

**१८ शंका**—'ऋद्धेरपर्यभावात्' पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है, उसके स्थानमें 'ऋद्धेरस्थ-भावात्' पाठ ठीक प्रतीत होता है।

(जैनसंदेश, १५ फरवरी १९४०)

**समाधान**—उक्त पाठके ग्रहण करनेपर भी 'ऋद्धेरपरि' इतने पदका अर्थ ऊपरसे ही जोड़ना पड़ता है, और उस पाठके लिए प्रतियोगिका आधार भी नहीं है। इसलिए हमने उपलब्ध पाठको ज्योंका त्यों रख दिया था। हालहीमें धवला अ. पत्र २८५ पर एक अन्य प्रकरण सम्बंधी एक वाक्य मिला है, जो उक्त पाठके संशोधनमें अधिक सहायक है। वह इस प्रकार है—'यमत्तेतेजा-हारं गच्छि, लद्धीए उच्चरि लद्धीणमभावा ।' इसके अनुसार उक्त पाठको इस प्रकार सुधारना चाहिए 'ऋद्धेरपरि ऋद्धेरभावात्' अथवा 'ऋद्धेः ऋद्धेरपर्यभावात्' तदनुसार अर्थ भी इस प्रकार होगा—'क्योंकि, एक ऋद्धिके ऊपर दूसरी ऋद्धिका अभाव है'।

पृष्ठ ३००

**१९ शंका**—६० वीं गाथा (सूत्र) का अर्थ करते हुए लिखा है कि 'तत्र कार्मणकाय-योगः स्यादिति'। जिसका अर्थ आपने 'इषुगतिको छोड़कर शेष तीनों विप्रहगतियोंमें कार्मणकाय-योग होता है, ऐसा किया है। सो यहाँ प्रश्न होता है कि इषुगतिमें कौनसा काययोग होता है ?

(नानकचंदजी, पत्र १-४-४०)

**समाधान**—इषुगतिमें औदारिकमिश्रकाय और वैक्रियिकमिश्रकाय, ये दो योग होते हैं, क्योंकि उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली ऋजुगतिमें जीव आहारक ही होता है। अनाहारक केवल विप्रहवाली गतियोंमें ही रहता है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि पाणिमुक्ता, लंगलिका और गोमूत्रिका, इन तीन गतियोंके अन्तिम समयमें भी जीव आहारक हो जाता है, क्योंकि, अन्तिम समयमें उपपातक्षेत्रके प्रति होनेवाली गति ऋजु ही रहती है। इस व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ही सर्वार्थसिद्धिमें 'एकं है त्रीन्वानाहारकः' इस सूत्रकी व्याख्या करते हुए यह कहा है कि 'उपपादक्षेत्रं प्रति ऋज्व्यां गत्वा आहारकः। इतरेषु त्रिषु समयेषु अनाहारकः।'

पृष्ठ ३३२

२० शंका—सूत्र नं. ९३ में ‘सम्प्राप्तिश्चैव—असंजदसम्प्राप्तिश्चैव—संजदासंजदद्वारेण नियमा पञ्चसिद्धांशो’ पर आपने फुटनोट लगाकर “अत्र ‘संजद’ इति पाठशेषः प्रतिभाति” ऐसा लिखा है। सो लिखना कि यह आपने कहाँसे लिखा है, और क्या मनुष्यनीके छठा गुणस्थान होता है? आगे पृ० ३३३ पर शंका-समाधानमें लिखा है कि ब्रह्मियोंके संयतासंयत गुणस्थान होता है, सो पहलेसे विरोध आता है?

(नानकचंदजी, पत्र १-४-४०)

“अत्र ‘संजद’ इति पाठशेषः प्रतिभाति” यह सम्पादक महोदयोंका संशोधन है। ऐसे संशोधनको मूलसूत्रका अर्थ करते समय नहीं जोड़ना उचित प्रतीत होता है। (जैनगजद, ३ जुलाई १९४०)

समाधान—उक्त पाद-टिप्पण देनेके निम्न कारण है:—

(१) आलापिकाधिकारमें मनुष्यब्रह्मियोंके आलाप बतलाते समय सभी (चौदह) गुणस्थानोंमें उनको आलाप बतलाये हैं।

(२) द्रव्यप्रमाणानुगममें मनुष्यब्रह्मियोंका प्रमाण कहते समय चौदहों गुणस्थानोंकी अपेक्षा उनका प्रमाण कहा है। यथा—

मणुसिणीषु मिच्छाद्विती दम्बपमाणेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेद्वदो, छण्हं वग्गणमुवरि सत्तण्हं वग्गणं हेद्वदो ॥ ४८ ॥ पृ. २६०. मणुसिणीषु सासणसम्प्राप्तिष्पडुडि जाव अजोगिकेवलि वि दम्बपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ४९ ॥ पृ. २६१.

(३) आगममें मनुष्यके सामान्य, पर्याप्त, योनिमती और अपर्याप्त, ये चार भेद किये हैं। वहाँ योनिमती मनुष्यसे भावसे लीवेदी मनुष्योंका ही ग्रहण किया है। षट्खंडागममें उसी भेदके लिये मणुसिणी शब्द आया है, और उन्हीं भेदोंके क्रमसे वर्णन भी है।

(४) इससे ऊपरके सूत्रमें मनुष्यनियोंको मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें जो पर्याप्त और अपर्याप्त बतलाकर इसी सूत्रमें जो शेष गुणस्थानोंमें केवल पर्याप्त ही बतलाया है, इससे भी भाववेदकी ही मुख्यता प्रतीत होती है, क्योंकि गुणस्थानोंमें पर्याप्तत्व और अपर्याप्तत्वकी व्यवस्था भाववेदकी अपेक्षासे ही की गई है।

(५) यदि यहाँ उक्त पादटिप्पणको ग्रहण न किया जावे तो ध्वलाकारने इसी सूत्रकी व्याख्यामें जो यह शंका उठाई है कि ‘अस्मादेवापांद् द्रव्यस्त्रीणां निर्द्वितः सिद्धयेत्’ अर्थात्, तो इसी आगमसे द्रव्यब्रह्मियोंका मुक्ति जाना भी सिद्ध हो जायगा, ऐसी शंकाके उत्पन्न होनेका कोई कारण नहीं रह जाता है।

इन उपर्युक्त हेतुओंसे यही प्रतीत होता है कि यहाँ मनुष्यनियोंका भाववेदकी अपेक्षाही प्रतिपादन किया गया है, द्रव्यवेदकी अपेक्षासे नहीं। और इसीलिये उक्त ९३ सूत्रपर ‘अत्र ‘संजद’ इति पाठशेषः प्रतिभाति’ यह पादटिप्पण जोड़ा गया है।

२१ शंका—९३ सूत्रके नीचे जो शंका दी है कि हुण्डावसर्पिणी कालसम्बन्धी

लियोंमें सम्यग्दृष्टि जीव क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं? उसका समाधान करते हुए लिखा है कि 'नहीं; क्योंकि, उनमें सम्यग्दृष्टि जीव उत्पन्न होते हैं'। सो इसका खुलासा क्या है? क्या सम्यग्दृष्टि जीव लियोंमें उत्पन्न हो सकता है?

( नावकचंदजी, १-४-४० )

लियोंको अपर्याप्तदशामें सम्यक्त्व नहीं होता है, ऐसा गोमटसार आदि ग्रंथोंका कथन है। तदनुसार धवलाके द्वितीय खंडमें पृ. ४३० पर भी लिखा है 'इत्यिवेदेण विणा ..... ' अपर्याप्त-दशामें स्त्रीवेदांको सम्यक्त्व नहीं। किन्तु धवलाके प्रथम खंडमें पृ. ३३२ पर इसके विरुद्ध लिखा है—  
हुण्डावसर्पिण्यां स्त्रीषु सम्यग्दृष्टयः क्रिद्योत्पद्यन्ते इति चेन्न, उत्पद्यन्ते। तत्कुतोऽवसीयते? अस्मा देवार्थात्।  
ऐसा विरोधी कथन क्यों है?

( पं० अजितकुमारजी शाली, पन् २२-१०-४० )

**समाधान**—अन्य गतिसे आकर सम्यग्दृष्टि जीव लियोंमें उपन्न नहीं होता है, यह तो सुनिश्चित है। इसलिए उक्त शंका-समाधानका अर्थ इस प्रकार लेना चाहिए—

**शंका**—हुंडावसर्पिणीकालमें लियोंमें सम्यग्दृष्टि क्यों नहीं होते हैं?

**समाधान**—नहीं; क्योंकि, उनमें सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं।

यहां 'उत्पद्यन्ते' क्रियाका अर्थ 'होना' लेना चाहिए। इससे स्पष्ट हो जाता है कि हुंडावसर्पिणीकालके दोषसे लियां सम्यग्दृष्टि न होवें, ऐसा शंकाकारके पूछनेका अभिप्राय है।

अथवा, इस शंका-समाधानका निम्न प्रकारसे दूसरा भी अभिप्राय कदाचित् संभव हो सकता है—

**शंका**—हुंडावसर्पिणीकालमें जैसे अन्य अनेकों असंभव बातें संभव हो जाती हैं, उसी प्रकारसे अन्य गतिसे आकर सम्यग्दृष्टि जीव लियोंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं?

**समाधान**—सूत्र नं. ९३ में कहा है कि 'असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें लियां नियमसे पर्याप्त होती हैं' इससे जाना जाता है कि किसी भी कालमें सम्यग्दृष्टि जीव लियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं।

इस अभिप्रायके लिये मूलपाठमें 'चेन्न' के पश्चात्तका विराम हटा लेना चाहिये। तथापि आगेके संदर्भसे इस अभिप्रायका सामंजस्य यथाचित नहीं बैठता।

पृष्ठ ३४२

**२२ शंका**—धवलसिद्धान्तानुसार जो द्रव्यसे पुरुष होवे और भावोंमें स्त्रीरूप हो उसे योनिमती कहते हैं। किन्तु गोमटसार जीवकांड गाथा १५०, १५६, ३८० से ज्ञात होता है कि द्रव्यमें स्त्री हो, और परिणतिमें स्त्रीभाव हो उसको योनिमती कहते हैं। इस प्रकारकी योनिमतीके १४ गुणस्थान माने हैं। इसका समाधान कीजिए।

( प्र० लक्ष्मीचंद्रजी )

**समाधान**—योनिमती तीर्थच लियोंके उदय प्रकृतियां बतलाते हुए कर्मकांड गाथा नं.



२९६ में कहा है—‘सुसंज्ञनिश्चिदा जोणिणीये’ अर्थात् योनिमतीके पूर्वोक्त ९७ प्रकृतियोंमेंसे पुरुषवेद और नपुंसक वेदको घटाकर स्त्री वेदके मिला देनेपर ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। मनुष्यनियोंके विषयमें कहा है—‘मणुसिणिए स्थीसहिदा’ ॥३०१॥ अर्थात् पूर्वोक्त १०० प्रकृतियोंमें स्त्रीवेदके मिला देनेपर और तीर्थंकर आदि ५ प्रकृतियाँ निकाल देनेपर मनुष्यनियोंके ९६ प्रकृतियोंका उदय होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि यहां योनिमती उसे कहा है जिसके स्त्रीवेदका उदय हो। ऐसे जीवके द्रव्य वेद कोई भी रहेगा तो भी वह योनिमती कहा जायगा। अब रही योनिमतीके १४ गुणस्थान की बात, सो कर्मभूमिज स्त्रियोंके अन्तर्गत तीन संहननोंका ही उदय होता है, ऐसा गो० कर्मकांड की गाथा ३२ से प्रगत है। परन्तु शुक्लध्यान, क्षपकश्रेण्यारोहणादि कार्य प्रथम संहननवालेके ही होते हैं। इससे यह तो स्पष्ट है कि द्रव्यस्त्रियोंके १४ गुणस्थान नहीं होते हैं। पर गोम्मटसारमें स्त्रीवेदीके १४ गुणस्थान बतलाये गये हैं, इसलिए वहां द्रव्यसे पुरुष और भावसे स्त्रीवेदीका ही योनिमती पदसे ग्रहण करना चाहिए। इस विषयमें गोम्मटसार और धवलसिद्धान्तमें कोई मतभेद नहीं है। द्रव्यस्त्रीके आदिके पांच गुणस्थान ही होते हैं। गोम्मटसारकी गाथा नं. १५० में भाव-वेदकी मुख्यतासे ही योनिमतीका ग्रहण है। गाथा नं. १५६ और १५९ में टीकाकारने योनिमतीसे द्रव्यस्त्रीका ग्रहण किया है, किन्तु वहां भी परिणतिमें स्त्रीभाव हो, ऐसा नहीं कहा गया है।

### टिप्पणियोंके विषयमें

**२३ शंका**—धवलके फुटनोटोंमें दिये गये भगवती आराधनाकी गाथाओंको मूलाराधनाके नामसे उल्लेखित किया गया है, यह ठीक नहीं। जबकि ग्रन्थकार शिवार्य स्वयं उसे भगवती आराधना लिखते हैं, तब मूलाराधना नाम उचित प्रतीत नहीं होता। मूलाराधनादर्पण तो पं. आशाधरजीकी टीका का नाम है, जिसे उन्होंने अन्य टीकाओंसे व्यावृत्ति करनेके लिए दिया था। यदि आपने किसी प्राचीन प्रतिमें ग्रन्थका नाम मूलाराधना देखा हो तो कृपया लिखनेका अनुग्रह कीजिए।

(पं० परमानन्दजी शर्मा, पृष्ठ २९-१०-३९)

**समाधान**—टिप्पणियोंके साथ जो ग्रंथ-नाम दिये गये हैं वे उन टिप्पणियोंके आधारभूत प्रकाशित ग्रंथोंके नाम हैं। शोलापुरसे जो ग्रन्थ छपा है, उसपर ग्रन्थका नाम ‘मूलाराधना’ दिया गया है। वही प्रति हमारी टिप्पणियोंका आधार रही है। अतएव उसीका नामोद्धेख कर दिया गया है। ग्रन्थके नामादि सम्बन्धी इतिहासमें जानेके लिए वह उपयुक्त स्थल नहीं था।

**२४ शंका**—टिप्पणियोंमें अधिकांश तुलना श्वेताम्बर ग्रन्थोंपरसे की गई है। अच्छा होता यदि इस कार्यमें दिगम्बर ग्रन्थोंका और भी अधिकता के साथ उपयोग किया जाता। इससे तुलनाकार्य और भी अधिक प्रशस्तरूपसे सम्पन्न होता।

(अमेकान्त, ३, २ पृ. २०१.)

(जैनवंदेश, १५ फरवरी १९४०.)

(जैनमज्ज, ३ जुलाई १९४०.)

**समाधान**—प्रथम भागमें कुल टिप्पणियोंकी संख्या ८५५ है। उनमेंसे दिगम्बर ग्रन्थोंसे ६२२ और श्वेताम्बर ग्रन्थोंसे २२८ तथा अन्य ग्रन्थोंसे ५ टिप्पणियां ली गई हैं। यदि ग्रन्थ-संख्याकी दृष्टिसे भी देखा जाय तो टिप्पणीमें उपयोग किये गये ग्रन्थोंकी संख्या ७७ है, जिनमें दिगम्बर ग्रन्थ ४०, श्वेताम्बर ग्रन्थ ३०, अजैन ग्रन्थ १, व कोष, व्याकरण, अलंकारादि विषयक ग्रन्थोंकी संख्या ६ है। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश तुलना किन ग्रन्थोंपरसे की गई है। जहां जिस ग्रन्थकी जो टिप्पणी उपयुक्त प्रतीत हुई वह ली गई है। इसमें ध्येय यही रखा गया है कि इस सिद्धान्त विषयसे सम्बन्ध रखनेवाले सभी साहित्यकी ओर पाठकोंकी दृष्टि जा सके।

## ७ द्रव्यप्रमाणानुगम

### १ द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति

षट्खंडागमके प्रस्तुत भागमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान कराया गया है; अर्थात् यहाँ यह बतलाया गया है कि समस्त जीवराशि कितनी है; तथा उसमें भिन्न भिन्न गुणस्थानों व मार्गस्थानोंमें जीवोंका प्रमाण क्या है। स्वभावतः प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस अत्यन्त अगाध विषयका वर्णन आचार्योंने किस आधारपर किया है? यह तो पूर्वभागमें बता ही आये हैं कि षट्खंडागमका बहुभाग विषय-ज्ञान महावीर भगवान्की द्वादशांगवाणीके अंगभूत चौदह पूर्वोंमेंसे द्वितीय आश्रयणीय पूर्वके कर्मप्रकृति नामक एक अधिकार-विशेषमेंसे लिया गया है। उसमेंसे भी द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाई गई है—

कर्मप्रकृतिपाहुड, अपरनाम वेदनाकृत्स्नपाहुड (वेयणकसिणपाहुड) के कृति, वेदना आदि चौबीस अधिकारोंमें छठवां अधिकार 'बंधन' है, जिसमें बंधका वर्णन किया गया है। इस बंधन के चार अर्थाधिकार हैं, बंध, बंधक, बंधनीय और बंधविधान। इनमेंसे बंधक नामक द्वितीय अधिकारके एकजीवकी अपेक्षा स्वात्मत्व, एकजीवकी अपेक्षा काल, आदि ग्यारह अनुयोगद्वार हैं। इन ग्यारह अनुयोगद्वारोंमें से पांचवां अनुयोगद्वार द्रव्यप्रमाण नामका है और वहींसे प्रकृत द्रव्यप्रमाणानुगम लिया गया है। (देखा षट्खंडागम, प्रथम भाग, पृ. १२५-१२६)

यहाँ प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जब जीवद्वाराकी सत्, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर और अरुबहुत्व, ये छह प्ररूपणार्थ बंधविधानके प्रकृतिस्थानबंध नामक अवान्तर अधिकारके आठ अनुयोगद्वारोंमेंसे ली गई हैं, तब यह द्रव्यप्रमाणानुगम भी वहींसे क्यों नहीं लिया, क्योंकि, वहाँ भी तो यह अनुयोगद्वार यथास्थान पाया जाता था? इसका उत्तर यह दिया गया है कि प्रकृतिस्थानबंधके द्रव्यानुयोगद्वारमें 'इस बंधस्थानके बंधक जीव इतने हैं' ऐसा केवल सामान्य रूपसे कथन किया गया है; किन्तु मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन नहीं किया गया। बंधक अधिकारमें

गुणस्थानोंकी अपेक्षा कथन किया गया है, वहां बतलाया गया है कि मिथ्यादृष्टि जीव इतने होते हैं, सासादनसम्बन्धदृष्टि जीव इतने हैं; इत्यादि। अतएव जीवद्वयणमें द्रव्यप्रमाणानुगमके लिये बंधक अधिकारका यही द्रव्यप्रमाणानुगम उपयोगी सिद्ध हुआ। (देखो षट् प्रथम भाग, पृ. १२९)

## २ प्रमाणका स्वरूप

द्रव्यप्रमाणानुगमकी उत्पत्ति बतलानेमें जो कुछ कहा गया है उसीसे स्पष्ट है कि यह भिन्न भिन्न गुणस्थानों और मार्गनास्थानोंमें जीवोंका प्रमाण बतलाया गया है। यह प्रमाण चार अपेक्षाओंसे बतलाया गया है, द्रव्य, काल, क्षेत्र और भाव।

१. द्रव्यप्रमाण—द्रव्यप्रमाणके तीन भेद हैं, संख्यात, असंख्यात और अनन्त। जो संख्यात पंचेन्द्रियोंका विषय है वह संख्यात है। उससे ऊपर जो अवधिज्ञानका विषय है वह असंख्यात है और उससे ऊपर जो केवलज्ञानका विषय है वह अनन्त है।

संख्यातके तीन भेद हैं, जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट। गणनाका आदि एकसे माना जाता है। किन्तु एक केवल वस्तुकी सत्ताको स्थापित करता है, भेदको सूचित नहीं करता। भेदकी सूचना दोसे प्रारंभ होती है, और इसीलिये दोको संख्यातका आदि माना है। इसप्रकार जघन्य संख्यात दो है। उत्कृष्ट संख्यात आगे बतलाये जानेवाले जघन्य परीतासंख्यातसे एक कम होता है। तथा इन दोनों छोरोंके बीच जितनी भी संख्यायें पाई जाती हैं वे सब मध्यम संख्यातके भेद हैं।

असंख्यातके तीन भेद हैं, परीत, युक्त और असंख्यात, और इन तीनोंमेंसे प्रत्येक पुनः जघन्य, मध्यम और उत्कृष्टके भेदसे तीन प्रकारका होता है। जघन्य परीतासंख्यातका प्रमाण अनवस्था, शलाका, प्रतिशलाका और महाशलाका, ऐसे चार कुंडोंको द्वीपसमुद्रोंकी गणना-नुसार सरसोंसे भर भरकर निकालनेका प्रकार बतलाया गया है, जिसके लिये त्रिलोकसार गाथा १८-३५ देखिये। आगे बतलाये जानेवाले जघन्य युक्तासंख्यातसे एक कम करने पर उत्कृष्ट परीतासंख्यातका प्रमाण मिलता है, तथा जघन्य और उत्कृष्ट परीतके बीचकी सब गणना मध्यम परीतासंख्यातके भेद रूप है।

जघन्य परीतासंख्यातके वर्गित-संवर्गित करनेसे अर्थात् उस राशिको उतने ही बार गुणित प्रगुणित करनेसे जघन्य युक्तासंख्यातका प्रमाण प्राप्त होता है। आगे बतलाये जानेवाले जघन्य असंख्यातासंख्यातसे एक कम उत्कृष्ट युक्तासंख्यातका प्रमाण है और इन दोनोंके बीचकी सब गणना मध्यम युक्तासंख्यातके भेद हैं।

१ जं संखानं पंचिदिवविसओ तं संखेजं णाम । तदो उवरी जं ओहिणणविसओ तमसंखेजं णाम । तदो उवरी जं केवलणणस्सेव विसओ तमणतं णाम । (पृ. २६७-२६८).

२ 'एयादीया गणणा, वीयादीया हवेज्ज संखेज्जा' । (त्रि. सा, १६) जघन्यसंख्यातं द्विसंख्यं तस्य भेदमाहकत्वेन एकस्य तदभावात् । (गो. जी. जी. प्र. टीका ११८ गा.)

जघन्य युक्तासंख्यातका वर्ग (य × य) जघन्य असंख्यातासंख्यात कहलाता है, तथा आगे बतलाये जानेवाले जघन्य परीतानन्तसे एक कम उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात होता है, और इन दोनोंके बीचकी सब गणना मध्यम असंख्यातासंख्यातके भेदरूप है।

जघन्य असंख्यातासंख्यातको तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होती है उसमें धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, एक जीव और लोकाकाश, इनके प्रदेश तथा अप्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित वनस्पतिके प्रमाणको मिला कर उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करना चाहिये। इसप्रकार प्राप्त हुई राशिमें कल्पकालके समय, स्थिति और अनुभागबंधाध्यवसायस्थानोंका प्रमाण तथा योगके उत्कृष्ट अविभागप्रतिच्छेद मिलाकर उसे पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी वह जघन्य परीतानन्त कही जाती है। आगे बतलाये जानेवाले जघन्ययुक्तानन्तसे एक कम उत्कृष्ट परीतानन्त का प्रमाण है, तथा बीचके सब भेद मध्यम परीतानन्त हैं।

जघन्य परीतानन्तको वर्गित संवर्गित करनेसे जघन्य युक्तानन्त होता है। आगे बताये जानेवाले जघन्य अनन्तानन्तसे एक कम उत्कृष्ट युक्तानन्तका प्रमाण है, तथा बीचके सब भेद मध्यम युक्तानन्त होते हैं।

जघन्य युक्तानन्तका वर्ग जघन्य अनन्तानन्त होता है। इस जघन्य अनन्तानन्तको तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें सिद्ध जीव, निगोदराशि, प्रत्येकवनस्पति, पुद्गलराशि, कालके समय और अलोकाकाश, ये छह राशियां मिलाकर उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसमें धर्मद्रव्य और अधर्मद्रव्य संबंधी अगुरुलघुगुणके अविभागप्रतिच्छेद मिला देना चाहिये। इस प्रकार उत्पन्न हुई राशिको पुनः तीन बार वर्गित संवर्गित करके उसे केवलज्ञानमेंसे घटावे और फिर शेष केवलज्ञानमें उसे मिला देवे। इस प्रकार प्राप्त हुई राशि अर्थात् केवलज्ञानप्रमाण उत्कृष्ट अनन्तानन्त होता है। जघन्य और उत्कृष्ट अनन्तानन्तकी मध्यवर्ती सब गणना मध्यम अनन्तानन्त कहलाती है।

( देखो पृ. १९-२६ तथा त्रिलोकसार गाथा १८-५१ )

**२. कालप्रमाण**—जीवोंका परिमाण जाननेके लिये दूसरा माप कालका लगाया गया है, जिसके भेद प्रभेद इसप्रकार हैं— एक परमाणुको मंदगतिसे एक आकाशप्रदेशसे दूसरे आकाशप्रदेशमें जानेके लिये जो काल लगता है वह समय कहलाता है। यह कालका सबसे छोटा, अविभागी परिमाण है। असंख्यात (अर्थात् जघन्य युक्तासंख्यात प्रमाण) समयोंकी एक आवलि होती है। संख्यात आवलियोंका एक उच्छ्वास या प्राण होता है। सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक, सात स्तोकोंका एक लव, और साढ़े अड़तीस लवोंकी एक नाली होती है। दो नालीका मुहूर्त और तीस मुहूर्तका एक अहोरात्र या दिवस होता है। वर्तमान कालगणनामें अहोरात्र चौबीस घंटोंका माना जाता है। इसके अनुसार एक मुहूर्त अड़तीस मिनिटका, एक नाली चौबीस मिनिटकी, एक लव ३७३३ सेकेंडका, एक स्तोक ५३६६ सेकेंडका तथा एक उच्छ्वास ३६६६ सेकेंडका पड़ता है। आवलि और समय एक सेकेंडसे बहुत सूक्ष्म काल प्रमाण होता है।

( देखो पृ. ६५, तथा ति. प. ४, २८४-२८८ )

यह कालप्रमाण तालिकास्वरूपमें इस प्रकार रखा जा सकता है—

अहोरात्र या दिवस	= ३० मुहूर्त	= २४ घंटे
मुहूर्त	= २ नाली	= ४८ मिनट
नाली	= ३८॥ छत्र	= २४ मिनट
छत्र	= ७ स्तोत्र	= ३७३३ सेकंड
स्तोत्र	= ७ उच्छ्वास	= ५६६६ सेकंड
उच्छ्वास या प्राण	= संख्यात आवलि	= ३८८३ सेकंड
आवलि	= असंख्यात (ज. यु. असं.) समय	
समय	= एक परमाणुके एक आकाशप्रदेशसे दूसरे आकाशप्रदेशमें	
	मन्दगतिसे जानेका काल	

एक सामान्य स्वल्प प्राणीके (मनुष्यके) एक बार श्वास लेने और निकालनेमें जितना समय लगता है उसे उच्छ्वास कहते हैं। एक मुहूर्तमें इन उच्छ्वासोंकी संख्या ३७७३ कही गई है, जो उपर्युक्त प्रमाणानुसार इस प्रकार आती है— $2 \times 384 \times 7 \times 7 = 3772$ । एक अहोरात्र (२४ घंटे) में  $3772 \times 30 = 1,13,160$  उच्छ्वास होते हैं। इसका प्रमाण एक मिनटमें  $3772 = 37.72$  आता है, जो आधुनिक मान्यताके अनुसार ही है।

एक मुहूर्तमेंसे एक समय कम करने पर भिन्नमुहूर्त होता है, तथा भिन्नमुहूर्तसे एक समय कम कालसे लगाकर एक आवलि व आवलिसे कम कालको भी अन्तर्मुहूर्त कहा है। (पृ. ६७) इस प्रकार एक अन्तर्मुहूर्त सामान्यतः संख्यात आवलि प्रमाण ही होता है, किन्तु कहीं कहीं अन्तर् शब्दको सामीप्यार्थक मानकर असंख्यात आवलि प्रमाण भी मान लिया गया है। (पृ. ६९)

पंद्रह दिनका एक पक्ष, दो पक्षका मास, दो मासकी ऋतु, तीन ऋतुओंका अयन, दो अयनका वर्ष, पांच वर्षका युग, चौरासी लाख वर्षका पूर्वांग, चौरासी लाख पूर्वांग का पूर्व, चौरासी पूर्वका न्युतांग, चौरासी लाख न्युतांग का न्युत, तथा इसीप्रकार चौरासी और चौरासी लाख गुणित क्रमसे कुमुदांग और कुमुद, पद्मांग और पद्म, नलिनांग और नलिन, कमलांग और कमल, त्रुटितांग और त्रुटित, अट्टांग और अट्ट, अममांग और अमम, हाहांग और हाहा, हृहांग और हृह, लतांग और लता, तथा महालतांग और महालता क्रमशः होते हैं। फिर चौरासी लाख गुणित क्रमसे श्रीकल्प (या शिरःकंप), हस्तप्रहेलित (हस्तप्रहेलिका) और अचलप्र (चंचिका) होते हैं। चौरासीको इकतीस बार परस्पर गुणा करनेसे अचलप्रकी वर्षोंका प्रमाण आता है, जो नव्वे शून्यांकोंका होता है<sup>१</sup>। यद्यपि इन न्युतांगादि काल-गणनाओंका उल्लेख प्रस्तुत ग्रंथभागमें नहीं आया, तथापि संख्यात गणनाकी मान्यताका कुछ बोध करानेके लिये यह

१ हाहांग और हाहा नामक संख्याओंके नाम राजवार्तिक व हरिवंशपुराणके कालविवरणमें नहीं पाये जाते।

२ यह तिलोपपण्णक्तिके अनुसार है। किन्तु चौरासीको इकतीस बार परस्पर गुणित करनेसे  $(25)^{25}$  Logarithm के अनुसार केवल साठ (६०) अंकप्रमाण ही संख्या आती है।

सब यहां दी गई है। यह सब संख्यात (मध्यम) का ही प्रमाण है। इससे कई गुणे ऊपर जाकर उलूख संख्यातका प्रमाण होता है जो ऊपर गणना-मापमें बता ही आये हैं।

आगे क्षेत्रप्रमाणमें बतलाये जानेवाले एक प्रमाण योजन (अर्थात् दो हजार कोश) लम्बा चौड़ा और गहरा कुंड बनाकर उसे उत्तम भोगभूमिके सात दिनके भीतर उत्पन्न हुए मेढ्रेके रोमाग्रों (जिनके और खंड कैचीसे न हो सकें) से भर दे, और उनमेंसे एक एक रोमखंडको सौ सौ वर्षमें निकाले। इसप्रकार उन समस्त रोमोंको निकालनेमें जितना काल व्यतीत होगा, उसे व्यवहारपत्य कहते हैं। उक्त रोमोंकी कुल संख्या गणितसे ४५ अंक प्रमाण आती है, और तदनुसार व्यवहारपत्यका प्रमाण ४५ अंक प्रमाण शताब्दियां अथवा ४७ अंक प्रमाण वर्ष हुआ।

इस व्यवहारपत्यको असंख्यात कोटि वर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर उद्धारपत्यका प्रमाण आता है, जिससे द्वीप-समुद्रोंकी गणना की जाती है। इस उद्धारपत्यको असंख्यात कोटि वर्षोंके समयोंसे गुणित करनेपर अद्वापत्यका प्रमाण आता है। कर्म, भव, आयु और काय, इनकी स्थितिके प्रमाणमें इसी अद्वापत्यका उपयोग होता है। जीवद्रव्यकी प्रमाण-प्ररूपणमें भी यथावश्यक इसी पत्योपमका उपयोग किया गया है। एक करोड़को एक करोड़से गुणा करने पर जो लब्ध आता है उसे कोड़ाकोड़ी कहते हैं। दस कोड़ाकोड़ी अद्वापत्योपमोंका एक अद्वा-सागरोपम और दस कोड़ाकोड़ी अद्वासागरोपमोंकी एक उत्सर्पिणी और इतने ही कालकी एक अवसर्पिणी होती है। इन दोनोंको मिलाकर एक कल्पकाल होता है।

३. क्षेत्रप्रमाण—पुद्गल द्रव्यके उस सूक्ष्मातिमूक्ष्म भागको परमाणु कहते हैं जिसका पुनः विभाग न हो सके, जो इन्द्रियों द्वारा ग्राह्य नहीं और जो अप्रदेशी तथा अंत, आदि व मध्य रहित है। एक अविभागी परमाणु जितने आकाशको रोकता है उतने आकाशको एक क्षेत्रप्रदेश कहते हैं। अनन्तानन्त परमाणुओंका एक अवसन्नासन्न स्कंध, आठ अवसन्नासन्न स्कंधोंका एक सन्नासन्न स्कंध, आठ सन्नासन्न स्कंधोंका एक त्रुदरेणु (त्रुटिरेणु, त्रुदरेणु), आठ त्रुदरेणुओंका एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणुओंका एक रथरेणु, आठ रथरेणुओंका उत्तम भोगभूमिसंबंधी बालाग्र, आठ उत्तम भोगभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक मध्यम भोगभूमिसंबंधी बालाग्र, आठ मध्यम भोगभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक जघन्य भोगभूमिसंबंधी बालाग्र, आठ जघन्य भोगभूमिसंबंधी बालाग्रोंका एक कर्मभूमिसंबंधी बालाग्र, आठ कर्मभूमिसंबंधी बालाग्रोंकी एक लिक्षा (लीख), आठ लिक्षाओंका एक जूँ, आठ जूँका एक यव (यव-मध्य), और आठ यवोंका एक अंगुल होता है। अंगुल तीन प्रकारका है, उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुल। ऊपर जिस अंगुलका प्रमाण बतलाया है वह उत्सेधांगुल (सूचि) है। पाँचसौ उत्सेधांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है, जो अपसर्पिणीकालके प्रथम चक्रवर्तीके पाया जाता है। भरत और ऐरावत क्षेत्रमें जिस कालमें सामान्य मनुष्यका जो अंगुल प्रमाण होता है वह उस उस कालमें उस उस क्षेत्रका आत्मांगुल कहलाता है। मनुष्य, तिर्यच, देव और नारकियोंके शरीरकी अवगाहना तथा चतुर्विकाय देवोंके निवास और नगरके प्रमाणके लिये उत्सेधांगुल ही ग्रहण किया जाता है। द्वीप, समुद्र,

पर्वत, वेदी, नदी, कुंड, जगती (कोट), वर्ष (क्षेत्र) का प्रमाण प्रमाणांगुलसे किया जाता है, तथा झुंगार, कलश, दर्पण, वेणु, पटह, युग, शयन, शकट, हल, मूसल, शक्ति, तोमर, सिंहासन, बाण, नाली, अक्ष, चामर, दुंदुभि, पीठ, छत्र तथा मनुष्योंके निवास व नगर, उद्यानादिका प्रमाण आत्मांगुलसे किया जाता है। छह अंगुलोंका पाद, दो पादोंकी विहस्ति (बलिस्ति), दो विहस्तियोंका हाथ, दो हाथोंका किष्कु, दो किष्कुओंका दंड, युग, धनु, मुसल व नाली, दो हजार दंडोंका एक कोश तथा चार कोशोंका एक योजन होता है। (ति. प. १, ९८-११६)

द्रव्यका अविभागी अंश = परमाणु	८ जू = यत्र
अनन्तानन्त परमाणु = अवसन्नासन्न स्कंध	८ यव = उत्सेधांगुल
८ अवसन्नासन्नस्कंध = सन्नासन्नस्कंध	(५०० उत्सेधांगुल = प्रमाणांगुल)
८ सन्नासन्नस्कंध = वृट्टरेणु	६ अंगुल = पाद
८ वृट्टरेणु = त्रसरेणु	२ पाद = विहस्ति
८ त्रसरेणु = रथरेणु	३ विहस्ति = हाथ
८ रथरेणु = उत्तम भो. भू. बालाप्र	२ हाथ = किष्कु
८ उ. भो. भू. बा. = मध्यम " " "	२ किष्कु = दंड, युग, धनु,
८ म. भो. भू. बा. = जघन्य " " "	मुसल या नाली
८ ज. भो. भू. बा. = कर्मभूमि बालाप्र	२००० दंड = कोस
८ क. भू. बालाप्र = लिक्षा	४ कोश = योजन
८ लिक्षा = जू	

अंगुलसे आगेके प्रमाण भी आत्म, उत्सेध व प्रमाण अंगुलके अनुसार तीन तीन प्रकारके होते हैं। एक प्रमाण योजन अर्थात् दो हजार कोश लम्बे, चौड़े और गहरे कुंडके आश्रयसे अद्वापल्य नामक प्रमाण निकालनेका प्रकार ऊपर कालप्रमाणमें बता आये हैं। उसी अद्वापल्यके अर्धच्छेद प्रमाण अद्वापल्योका परस्पर गुणा करनेपर सूच्यंगुलका प्रमाण आता है। सूच्यंगुलके वर्ग को प्रतरांगुल और घनको घनांगुल कहते हैं। अद्वापल्यके असंख्यातवें भागप्रमाण, अथवा मतान्तसे अद्वापल्यके जितने अर्धच्छेद हों उसके असंख्यातवें भागप्रमाण, घनांगुलोंके परस्पर गुणा करनेपर जगश्रेणीका प्रमाण आता है। जगश्रेणीके सातवें भाग प्रमाण रज्जु होता है, जो तिर्यक् लोकके मध्य विस्तार प्रमाण है। जगश्रेणीके वर्गको जगप्रतर तथा जगश्रेणीके घनको लोक कहते हैं।

ये सब अर्थात् पल्य, सागर, सूच्यंगुल प्रतरांगुल, घनांगुल, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक उपमा मान हैं, जिनका उपयोग यथावसर द्रव्य, क्षेत्र और काल, इन तीनों अपेक्षाओंसे बतलाये गये प्रमाणोंमें किया गया है। उनका तात्पर्य द्रव्यप्रमाणमें उतनी संख्यासे, कालप्रमाणमें उतने समयोंसे तथा क्षेत्रप्रमाणमें उतने ही आकाशप्रदेशोंसे समझना चाहिये।

१ एक राशि जितनी बार उचरोचर आधी आधी की जा सके, उतने उस राशिसे अर्धच्छेद कहे जाते हैं।

४. भावप्रमाण—पूर्वोक्त तीनों प्रकारके प्रमाणोंके ज्ञानको ही भावप्रमाण कहा है। (देखो सूत्र ५)। इसका अभिप्राय यह है कि जहां जिस गुणस्थान व मार्गणास्थानका द्रव्य, काल व क्षेत्रकी अपेक्षासे प्रमाण बतलाया गया है वहां उस प्रमाणके ज्ञानको ही भावप्रमाण समझ लेना चाहिये।

### ३ जीवराशिका गुणस्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

सर्व जीवराशि अनन्तानन्त है। उसका बहुभाग मिथ्यादृष्टिगुणस्थानवर्ती है, तथा शेष एक भाग अन्य तरह गुणस्थानों और सिद्धोंमें विभाजित है। इनमें भी मिथ्यादृष्टि और सिद्ध क्रम-हानिरूपसे अनन्तानन्त हैं। सासादनादि चार गुणस्थानोंके जीव प्रत्येक राशिमें असंख्यात हैं,<sup>१</sup> तथा शेष प्रमत्तादि नौ गुणस्थानोंके जीव संख्यात हैं जिनकी कुल संख्या तीन कम नौ करोड़ निश्चित है। यद्यपि अनन्तको संख्यामें उतारना भ्रामक हो सकता है, तथापि ध्वलाकारने उक्त राशियोंके क्रमिक प्रमाणका बोध करानेके लिये सर्व जीवराशिको १६ और इनमेंसे मिथ्यादृष्टिराशिको १३, तथा सासादनादि तरह गुणस्थानोंके जीवों और सिद्धोंका संयुक्त प्रमाण ३ अंकोंके द्वारा सूचित किया है। अब हम यदि इसी अकसंदृष्टिके आधारसे सभी गुणस्थानों व सिद्धोंका अलग अलग प्रमाण कल्पित करना चाहें, तो स्थूलतः इसप्रकार किया जा सकता है—

#### चौदह गुणस्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी संदृष्टि

गुणस्थान	प्रमाण	अकसंदृष्टि
१. मिथ्यादृष्टि	अनन्त	१३
*२. सासादन	असंख्य	६४
३. मिश्र	"	३६
४. अविरतसम्यग्दृष्टि	"	३३
५. संयतासंयत	"	६४
६. प्रमत्तविरत	५९३९८२०६	} १५
७. अप्रमत्तविरत	२९६९९१०३	
८. अपूर्वकरण	८९७	
९. अनिवृत्तिकरण	८९७	
१०. सूक्ष्मसाप्पराय	८९७	} १६
११. उपशान्तमोह	२९९	
१२. क्षीणमोह	५९८	
१३. सवोगिकिवली	८९८५०२	
१४. अयोगिकिवली	५९८	} २
सिद्ध	अनन्त	
सर्वजीवराशि	अनन्त	१६

१ सासादनसे संयतासंयत तक चारों गुणस्थानोंके जीव समुच्चय व पृथक् पृथक् रूपसे भी पश्योपसके



चौदहों गुणस्थानोंकी जीवराशियोंके प्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् उनका भागाभाग और फिर उनका अल्पबहुत्व बतलाया गया है। भागाभागमें सामान्य राशिको लेकर विभाग करते हुए सबसे अल्प राशि तक आये हैं। अल्पबहुत्वमें सबसे छोटी राशिसे प्रारंभ करके गुणा और योग (सातिरेक) करते हुए सबसे बड़ी राशि तक पहुँचे हैं। इस अल्पबहुत्वका तीन प्रकारसे प्ररूपण किया गया है, स्वस्थान, परस्थान और सर्वपरस्थान। स्वस्थानमें केवल अवहारकाल और विवक्षित राशिका अल्प-बहुत्व बतलाया गया है। परस्थानमें अवहारकाल, भाज्य तथा अन्य जो राशियाँ उनके प्रमाणके बीचमें आ पड़ती हैं उनका और विवक्षित राशिका अल्पबहुत्व दिखाया गया है। तथा सर्वपरस्थानमें उक्त राशियोंके अतिरिक्त अन्य राशियोंसे भी अल्पबहुत्व दिखाया गया है। (पृ. १०१-१२१)

### ४ जीवराशिका मार्गणास्थानोंकी अपेक्षा प्रमाण-प्ररूपण

गुणस्थानोंमें जीवप्रमाण-प्ररूपणके पश्चात् गति आदि चौदह मार्गणाओं व उनके भेद-प्रभेदोंमें जीवराशिका प्रमाण दिखलाया गया है और यहां प्रत्येक राशिका प्रमाण, भागाभाग और अल्प-बहुत्व यथाक्रमसे समझाया गया है। जिसप्रकार गुणस्थानोंमें प्रथम मिथ्यादृष्टिके प्रमाण समझानेमें आचार्यने गणितकी अनेक प्रक्रियाओंका उपयोग करके दिखाया है, उसी प्रकार मार्गणास्थानोंमें प्रथम नरकागतिके प्रमाणप्ररूपणमें भी गणितविस्तार पाया जाता है। (देखो पृ. १२१-२०५)

उक्त प्रमाण-विवेचन बड़ी सूक्ष्मता और गहराईके साथ किया गया है, किन्तु आचार्यने अंक-संदृष्टि कायम नहीं रखी, जिससे सामान्य पाठकोंको विषयका बोध होना सुगम नहीं है। अतएव हम यहांपर उन सब मार्गणाओंकी पृथक् पृथक् प्रमाण-प्ररूपक अंकसंदृष्टियाँ आचार्यद्वारा कल्पित अंकोंके आधारसे बनानेका प्रयत्न करते हैं, जिसका मुख्य उद्देश्य अनन्त, असंख्यात व संख्यातेक भीतर राशियोंके अल्पबहुत्वका कुछ स्थूल बोध कराना मात्र है। प्रत्येक मार्गणाके भीतर संपूर्ण जीवराशिका समुच्चय प्रमाण १६ ही रखा गया है। किन्तु सूक्ष्म दृष्टिसे परीक्षण करनेपर एक दूसरी मार्गणाओंकी अंकसंदृष्टियोंमें परस्पर वैषम्य दृष्टिगोचर हो सकता है। यह सर्वजीवराशिके लिये केवल १६ जैसी अल्प संख्या लेकर समस्त मार्गणाओंके प्रभेदोंको उदाहृत करनेमें प्रायः अनिवार्य ही है। एक राशि दूसरी राशिसे जितनी विशेष व जितनी गुणित अधिक है उसका अनुमान इन अंकोंसे कदापि नहीं करना चाहिये। यहां तो सिर्फ एक मार्गणाके भीतर राशियोंकी परस्पर अधिकता या अल्पताका ही क्रम जाना जा सकता है। यद्यपि गणितके सूक्ष्म विचारसे यह वैषम्य भी संभवतः दूर किया जा सकता था, किन्तु उससे फिर संदृष्टियाँ सुगम होने की अपेक्षा दुर्गम सी हो जाती, जिससे हमारा अभिप्राय पूर्ण नहीं होता। चूँकि यहां प्रत्येक मार्गणाके भीतर जीवराशियोंका प्रमाणक्रम निर्दिष्ट करना अभीष्ट है, अतएव राशियाँ बहुत्वसे अल्पत्वकी ओर क्रमसे रखी गई हैं, उनके रूढक्रमसे नहीं। हां, सिद्ध सर्वत्र अन्त-

असंख्यातवे माग हैं। इनमें भी असंयतसम्यग्दृष्टि सबसे अधिक, इनके असंख्यातवे माग मिश्रगुणस्थानीय, इनके संख्यातवे माग सासादरगुणस्थानीय तथा इनके असंख्यातवे माग संयतासंयत जीव हैं।

की ओर ही रहे हैं। कहीं कहीं राशिके जो अंक दिये गये हैं उनसे कुछ अधिक प्रमाण विवक्षित है, क्योंकि, उसमें कोई अन्य अल्प राशि भी प्रविष्ट होती है। ऐसे स्थानोंपर अंकोंके आगे धनका चिन्ह + बना दिया गया है, और अंक देकर टिप्पणीमें उस विवक्षित राशिका उल्लेख कर दिया गया है। इस दिशामें यह प्रयत्न, जहां तक हमें ज्ञात है, प्रथम ही है, अतः सावधानी रखने पर भी कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। यदि पाठकोंके ध्यानमें आवें, तो हमें अवश्य सूचित करें।

### चौदह मार्गणास्थानोंमें जीवराशियोंके प्रमाणकी संदृष्टियां

( मार्गणा शीर्षकके आगे दी गई पृष्ठसंख्या उस मार्गणाके भागाभागी सूचक है। )

#### १ गति मार्गणा ( पृ. २०७ )

तिर्य्यच	देव	नारक	मनुष्य	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
२००	१२	८	४	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	

#### २ इन्द्रिय मार्गणा ( पृ. ३१९ )

१ इन्द्रिय	२ इन्द्रिय	३ इन्द्रिय	४ इन्द्रिय	५ इन्द्रिय	अतीन्द्रिय	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१८२	१४	१२	१०	६	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	

#### ३ काय मार्गणा ( पृ. ३४१ )

वनस्पति	वायु	जल	पृथिवी	तेज	अस	अकाय	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१७६	१६	१२	१०	६	४	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	

#### ४ योग मार्गणा ( पृ. ४१२ )

काय.	वचन.	मन.	अयोगी	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१८४	२४	१६	३२	१६
१६	१६	१६	१६ +	

१ यहां यह सिद्धोंका प्रमाण अयोगिकवर्तियोंसे सातिरेक समझना चाहिये।

## ५ वेद मार्गणा (पृ. ४२१)

नपुंसक	स्त्री	पुरुष	अवेद	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
$\frac{२००}{१६}$	$\frac{२०}{१६}$	$\frac{४}{१६}$	$\frac{३२}{१६} + २$	१६

## ६ कषाय मार्गणा (पृ. ४३१)

लोभ.	माया.	क्रोध.	मान.	अकषायी.	सर्व जीव
अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त
$\frac{८२}{१६}$	$\frac{५०}{१६}$	$\frac{४८}{१६}$	$\frac{४४}{१६}$	$\frac{३२}{१६} + ३$	१६

## ७ ज्ञान मार्गणा (पृ. ४४२)

कुमति.	विभंग.	मति.	अवधि.	मनःपर्यय.	केवल.	सर्व जीव
कुश्रुत.		श्रुत.				
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	संख्यात	अनन्त	अनन्त
$\frac{८३२}{६४}$	$\frac{३९}{६४}$	$\frac{२०}{६४}$	$\frac{४}{६४}$	$\frac{१}{६४}$	$\frac{१२८}{६४} + ४$	१६

## ८ संयम मार्गणा (पृ. ४५१)

असंयमी	देशसं.	सामा.	यथाख्या.	परि. वि.	सू. सां.	सिद्ध	सर्व जीव
		छेदा.					
अनन्त	असंख्य	संख्यात	संख्यात	संख्यात	संख्यात	अनन्त	अनन्त
$\frac{८३२}{६४} + ५$	$\frac{३०}{६४}$	$\frac{२०}{६४}$	$\frac{१०}{६४}$	$\frac{३}{६४}$	$\frac{१}{६४}$	$\frac{१२८}{६४}$	१६

## ९ दर्शन मार्गणा (पृ. ४५७)

अचक्षु.	चक्षु.	अवधि.	केवल.	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
$\frac{८३२}{६४}$	$\frac{६०}{६४}$	$\frac{४}{६४}$	$\frac{१२८}{६४} + ६$	१६

२. यहाँ सिद्धोंका प्रमाण ९ वें गुणस्थानके अवेद भागसे ऊपरके समस्त गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

३. यहाँ सिद्धोंका प्रमाण ११ वें और ऊपरके समस्त गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

४. यहाँ सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

५. यहाँ मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण २ सरे, ३ सरे और ४ थे गुणस्थानकी राशियोंसे साधिक है।

६. यहाँ सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक है।

१० लेख्या मार्गणा (पृ. ४६६)

कृष्ण.	नील.	कापोत.	पीत.	पद्म.	शुक्र.	अलेख्य	सर्व जीव
अनन्त	अनन्त	अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
७६	६७	६५	८	६	२	३२ ७	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६ +	

११ भव्य मार्गणा (पृ. ४७३)

भव्य	अभव्य	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	अनन्त	अनन्त	अनन्त
१९६	२८	३२	१६
१६	१६	१६	

१२ सम्यक्त्व मार्गणा (पृ. ४७८)

मिथ्याह.	क्षायोप.	क्षायिक.	औपश.	मिश्र.	सासा.	सिद्ध	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	असंख्य	अनन्त	अनन्त
२०८	६	४	३	२	१	३२	१६
१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	

१३ संज्ञा मार्गणा (पृ. ४८३)

असंज्ञी	संज्ञी	अनुभव	सर्व जीव
अनन्त	असंख्य	अनन्त	अनन्त
१९९	२५	३२ ८	१६
१६	१६	१६ +	

१४ आहार मार्गणा (पृ. ४८५)

आहारक	अनाहारक	सर्व जीव
अनन्त	बंधक अनन्त	अनन्त
११	३	१६
	अबंधक अनन्त	
	२	

७ यहाँ सिद्धोंका प्रमाण १४ वें गुणस्थान राशिसे सातिरेक है।

८ यहाँ सिद्धोंका प्रमाण १३ वें और १४ वें गुणस्थानोंकी राशियोंसे सातिरेक समझना चाहिये।

मार्गणास्थानोंके भीतर बतलाई गई राशियोंका बहुत्वसे अल्पत्वकी ओर क्रम जहांतक हमारे विचारमें आया है, निम्न प्रकार है—

अनन्त	असंख्यात	संख्यात
१ असंयमी	२४ वायुकायिक	५६ सामायिकसंयत }
२ अचक्षुदर्शनी	२५ जल ”	५७ छेदोपस्थापना ” }
३ कुमति }	२६ पृथिवी ”	५८ यथाख्यात ” }
४ कुक्षुत }	२७ तेज ”	५९ केवलज्ञानी }
५ मिथ्यादृष्टि	२८ तल ”	६० केवलदर्शनी }
६ नपुंसकवेदी	२९ वचनयोगी	६१ परिहारसंयत
७ तिर्यंच	३० त्रीन्द्रिय	६२ मनःपर्ययज्ञानी
८ असेक्षी	३१ त्रीन्द्रिय	६३ सूक्ष्मसांपरायसंयत
९ काययोगी	३२ चतुरिन्द्रिय	
१० एकेन्द्रिय	३३ चक्षुदर्शनी	
११ वनस्पतिकायिक	३४ पंचेन्द्रिय	
१२ भव्य	३५ संक्षी	
१३ आहारक	३६ मनोयोगी	
१४ अनाहारक	३७ विभंगज्ञानी	
१५ कृष्ण लेइया	३८ देवगति	
१६ नील ”	३९ स्त्रीविही	
१७ कापोत ”	४० नारक	
१८ लोभ कषायी	४१ पुरुषवेदी	
१९ माया ”	४२ मनुष्य	
२० क्रोध ”	४३ पीतलेइया	
२१ मान ”	४४ पद्म ”	
२२ सिद्ध	४५ मतिज्ञानी }	
२३ अमव्य	४६ क्षुत ” }	
	४७ अवधि ” }	
	४८ अवधिदर्शनी }	
	४९ शुक्ललेइया	
	५० क्षायोपशमिकसम्यक्त्वी	
	५१ क्षायिक ”	
	५२ औपशमिक ”	
	५३ मिश्र	
	५४ सासादन	
	५५ देशसंयत	

अनन्त राशियां २३, असंख्यात राशियां २४-५५=३२, संख्यात ५६-६३=८; कुल ६३.

इस प्रमाण-प्ररूपणमें स्वभावतः पाठकोंको मनुष्योंके प्रमाणके सम्बन्धमें विशेष कौतुक हो सकता है। इस आगमानुसार सर्व मनुष्योंकी संख्या असंख्यात है। उनमें गुणस्थानोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात, कालप्रमाणसे असंख्यातासंख्यात कल्पकाल (अवसर्पिणियों-उत्सर्पिणियों) के समय प्रमाण, तथा क्षेत्रप्रमाणसे जगत्त्रेणिके असंख्यातवें भाग अर्थात् असंख्यात करोड़ योजन क्षेत्रप्रदेश प्रमाण हैं। द्वितीयादि गुणस्थानवर्ती जीव संख्यात हैं, जो इस प्रकार हैं—

२ सासादन गुणस्थानवर्ती मनुष्य ५२ करोड़ (व मतान्तरसे ५० करोड़)

३ मिश्र " " १०४ करोड़ (पूर्वोक्तसे दुगुने)

४ असंयतसम्यग्दृष्टि " " ७०० करोड़

५ संयतासंयत " " १२ करोड़

छठ्वेसे चौदहवें गुणस्थानतकके मनुष्योंकी संख्या वही है जो ऊपर गुणस्थान प्रमाण-प्ररूपणमें दिखा आये हैं, क्योंकि, ये गुणस्थान केवल मनुष्योंके ही होते हैं, देवादिकोंके नहीं। अतः जिनका प्रमाण संख्यात है, ऐसे द्वितीय गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थान तकके कुल मनुष्योंका प्रमाण ५२+१०४+७००+१२=तीन कम ९ करोड़, अर्थात् कुल तीन कम आठसौ अठहत्तर करोड़ होता है। आजकी संसारभरकी मनुष्यगणनासे यही प्रमाण चौगुनेसे भी अधिक हो जाता है। मिथ्यादृष्टियोंको मिलाकर तो उसकी अधिकता बहुत ही बढ़ जाती है। जैन सिद्धान्तानुसार यह गणना द्वाि द्वीपवर्ती विदेह आदि समस्त क्षेत्रोंकी है जिसमें पर्याप्तिकोंके अतिरिक्त निवृत्त्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्य भी सम्मिलित हैं।

नाना क्षेत्रोंमें मनुष्य गणनाका अल्पबहुत्व इस प्रकार बतलाया गया है—अन्तर्द्वीपिके मनुष्य सबसे थोड़े हैं। उनसे संख्यातगुणे उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य हैं। इसीप्रकार हरि और रम्यक, हैमवत और हैरणवत, भरत और ऐरावत, तथा विदेह इन क्षेत्रोंका मनुष्यप्रमाण पूर्व पूर्वसे क्रमशः संख्यातगुणा है। (देखो पृ. ९९)

एक बात और उल्लेखनीय है कि वर्तमान हुंडावसर्पिणियोंमें पद्मप्रभ तीर्थंकरका ही शिष्य-परिवार सबसे अधिक हुआ है, जिसकी संख्या तीन लाख तीस हजार ३,३०,००० थी।

उपर्युक्त चौदह गुणस्थानों और मार्गणा-स्थानोंमें जीवद्रव्यके प्रमाणका ज्ञान भगवान् भूतबलि आचार्यने १९२ सूत्रोंमें कराया है, जिनका विषयक्रम इस प्रकार है—

प्रथम सूत्रमें द्रव्यप्रमाणानुगमके ओष और आदेश द्वारा निर्देश करनेकी सूचना देकर दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें सूत्रोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके जीवोंका प्रमाण क्रमशः द्रव्य, काल, क्षेत्र और भावकी अपेक्षा बतलाया है। छठवें सूत्रमें द्वितीयसे पांचवें गुणस्थान तकके जीवोंका तथा आगेके सातवें और आठवें सूत्रमें क्रमशः छठे और सातवें गुणस्थानोंका द्रव्य-प्रमाण बतलाया है। उसी प्रकार ९ वें और १० वें सूत्रमें उपशमक तथा ११ वें व १२ वें में क्षपकों और अयोग-केवली जीवोंका तथा १३ वें व १४ वें सूत्रमें सयोगिकेवलियोंका प्रवेश और संचय-कालकी

अपेक्षासे प्रमाण कहा गया है। सूत्र नं. १५ से मार्गणास्थानोंमें प्रमाणका निर्देश प्रारंभ होता है, जिसके प्ररूपणकी सूत्र-संख्या निम्न प्रकार है—

सूत्रसे	सूत्रतक	कुल सूत्र	सूत्रसे	सूत्रतक	कुल सूत्र
नरकगति १५	—	२२ = ९	ज्ञान मार्गणा १४१	—	१४७ = ७
तिर्य्यचगति २४	—	३९ = १६	संयम „ १४८	—	१५४ = ७
मनुष्यगति ४०	—	५२ = १३	दर्शन „ १५५	—	१६१ = ७
देवगति ५३	—	७३ = २१	लक्ष्या „ १६२	—	१७१ = १०
इंद्रिय मार्गणा ७४	—	८६ = १३	भव्य „ १७२	—	१७३ = २
काय „ ८७	—	१०२ = १६	सम्यक्त्व „ १७४	—	१८४ = ११
योग „ १०३	—	१२३ = २१	संज्ञी „ १८५	—	१८९ = ५
वेद „ १२४	—	१३४ = ११	आहार „ १९०	—	१९२ = ३
कषाय „ १३५	—	१४० = ६			

#### ५ मतान्तर और उनका खंडन

धवलाकारने अपने समयकी उपलब्ध सैद्धांतिक सम्पत्तिका जितना भरपूर उपयोग किया है वह ग्रंथके अवलोकनसे ही पूर्णतः ज्ञात हो सकता है। सूत्रों, व्याख्यानों और उपदेशोंका जो साहित्य उनके सन्मुख उपस्थित था, उसका सिंहावलोकन प्रथम भागकी भूमिकामें कराया जा चुका है। प्रस्तुत ग्रंथभागमें भी जहाँ प्रकृत विषयके विशेष प्रतिपादनके लिये धवलाकारको सूत्र, सूत्रयुक्ति व व्याख्यानका आधार नहीं मिला, वहाँ उन्होंने 'आचार्य परंपरागत जिनोपदेश', 'परम गुरूपदेश', 'गुरुपदेश', व 'आचार्य-वचन' के आश्रयसे प्रमाणप्ररूपण किया है<sup>१</sup>। किन्तु विशेष ध्यान देने योग्य कुछ ऐसे स्थल हैं, जहाँ आचार्यने भिन्न भिन्न मतोंका स्पष्ट उल्लेख करके एकका खंडन और दूसरेका मंडन किया है। यहाँ हम इसीप्रकारके मत-मतान्तरोंका कुछ परिचय कराते हैं—

( १ ) सूत्रकारने प्रमाणप्ररूपणामें प्रथम द्रव्यप्रमाण, फिर कालप्रमाण, और तत्पश्चात् क्षेत्र-प्रमाणका निर्देश किया है। सामान्य क्रमानुसार क्षेत्र पहले और काल पश्चात् उल्लिखित किया जाता है, फिर यहाँ कालका क्षेत्रसे पूर्व निर्देश क्यों किया गया ? इसका समाधान धवलाकार करते हैं कि कालकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण सूक्ष्म होता है, अतएव 'जो स्थूल और अल्प वर्णनीय हो, उसका पहले व्याख्यान करना चाहिये।' इस नियमके अनुसार कालप्रमाण पूर्व और क्षेत्रप्रमाण उसके अनन्तर कहा गया है। इस स्थलपर उन्होंने सूक्ष्मत्वके संबंधमें कुछ आचार्योंकी एक भिन्न मान्यताका उल्लेख किया

<sup>१</sup> परमशुर्वदेसादो जाणिज्जदे।...इदमेत्थियं होदि ति कथं गव्वदे? आहरियपरंपरागदजिणोवदेसादो।...  
अध्वमत्तसज्जदाणं पमाणं शुर्वदेसादो बुच्चदे। ( पु. ८९ ) और भी देखिये पु. १११, ३५१, ४०६, ४७१.

है कि जो बहुप्रदेशोंसे उपचित हो वही सूक्ष्म होता है, और इस मतकी पुष्टिमें एक गाथा भी उद्धृत की है जिसका अर्थ है कि काल सूक्ष्म है, किन्तु क्षेत्र उससे भी सूक्ष्मतर है, क्योंकि, अगुलके असंख्यातवें भागमें असंख्यात कल्प होते हैं । ध्वलाकारने इस मतका निरसन इसप्रकार किया है कि यदि सूक्ष्मत्वकी यही परिभाषा मान ली जाय तब तो द्रव्यप्रमाणका भी क्षेत्रप्रमाणके पश्चात् प्ररूपण करना चाहिये, क्योंकि, एक गाथानुसार, एक द्रव्यागुलमें अनन्त क्षेत्रागुल होनेसे क्षेत्र सूक्ष्म और द्रव्य उससे सूक्ष्मतर हाता है । ( पृष्ठ २७-२८ )

( २ ) तिर्यक् लोकोके विस्तार और उसी संबन्धसे रज्जूके प्रमाणके संबंधमें भी दो मतोंका उल्लेख और विवेचन किया गया है । ये दो भिन्न भिन्न मत त्रिलोकप्रज्ञात और परिकर्मके भिन्न भिन्न सूत्रोंके आधारसे उत्पन्न हुए ज्ञान होने हैं । रज्जूका प्रमाण लानेकी प्रक्रियामें जम्बूद्वीपके अर्धच्छेदोंको रूपाधिक करनेका विधान परिकर्मसूत्रमें किया गया है जिसका 'एक रूप' अर्थ करनेसे कुछ व्याख्यानकारोंने यह अर्थ निकाला है कि तिर्यक्लोकका विस्तार स्वयंभूरमण समुद्र की बाहिरी वेदिकापर समाप्त हो जाता है । किन्तु त्रिलोकप्रज्ञातिके आधारसे ध्वलाकारका यह मत है कि स्वयंभूरमण समुद्रसे बाहर असंख्यात द्वीपसागरोंके विस्तार परिमाण योजन जाकर तिर्यक्लोक समाप्त होता है, अतः जम्बूद्वीपके अर्धच्छेदोंमें एक नहीं, किन्तु संख्यातरूप अधिक बढ़ाना चाहिये । इस मतका परिकर्मसूत्रसे विरोध भी उन्होंने इसप्रकार दूर कर दिया है कि उस सूत्रमें 'रूपाधिक' का अर्थ 'एकरूप अधिक' नहीं, किन्तु 'अनेक रूप अधिक' करना चाहिये । एक रूपवाले व्याख्यानको उन्होंने सच्चा व्याख्यान नहीं, किन्तु व्याख्यानाभास कहा है । अपने मतकी पुष्टिमें ध्वलाकारने यहां जो अनेक युक्तियां और सूत्रप्रमाण दिये हैं उनसे उनकी संप्राहक और समालोचनात्मक योग्यताका अच्छा परिचय मिलता है । इस विवेचनके अन्तमें उन्होंने कहा है—

‘ एसो अथो जह्वि पुञ्वाहरियसंपदायविरुद्धो, तो वि तंतजुत्तिबलेण अम्हेहि परूविदो । तदो ह्दमिस्थं वेत्ति जेहासग्गहो कायग्गो, अहंदिमस्थविसए लुदुवेत्थवियप्पिदजुत्तीणं गिण्णयहेउत्ताणुववतीदो । तम्हा उवएसं लद्धूण विसेसगिण्णयो एत्थ कायग्गो ’ ।

अर्थात् हमारा किया हुआ अर्थ यद्यपि पूर्वाचार्य-संप्रदायके विरुद्ध पड़ता है, तो भी तंत्र-युक्तिके बलसे हमने उसका प्ररूपण किया । अतः ‘ यह इसीप्रकार है ’ ऐसा दुर्गम नहीं करना चाहिये, क्योंकि, अतीन्द्रिय पदार्थोंके विषयमें अल्पज्ञों द्वारा विकल्पित युक्तियोंके एक निश्चयरूप निर्णयके लिये हेतु नहीं पाया जाता । अतः उपदेशको प्राप्त कर विशेष निर्णय करनेका प्रयत्न करना चाहिये । यहां ग्रंथकारकी कैसी निष्पक्ष, निर्मल, शोधक बुद्धि और जिज्ञासा प्रकट हुई है ?

( पृ. ३४ से ३८ )

( ३ ) एक मुहूर्तमें कितने उच्छ्वास होते हैं, यह भी एक मतभेदका विषय हुआ है । एक मत है कि एक मुहूर्तमें केवल ७२० प्राण अर्थात् आसोच्छ्वास होते हैं । किन्तु ध्वलाकार कहते हैं कि यह मत न तो एक स्वस्थ पुरुषके आसोच्छ्वासोंकी गणना करनेसे सिद्ध होता है,



और न केवली द्वारा भाषित प्रमाणभूत अन्य सूत्रसे इसका सामञ्जस्य बैठता है। उन्होंने एक प्राचीन गाथा उद्धृत करके बतलाया है कि एक सुहृत्के उच्छ्वासोंका ठीक प्रमाण ३७७३ है, और इसी प्रमाण द्वारा सूत्रोक्त एक दिवसमें १,१३,१९० प्राणोंका प्रमाण सिद्ध होता है। पूर्वोक्त मतसे तो एक दिनमें केवल २१,६०० प्राण होंगे, जो किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं। (पृ. ६६-६७)

(४) उपशामक जीवोंकी संख्याके विषयमें उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिणप्रतिपत्ति, ऐसी दो भिन्न मान्यताएं दी हैं। प्रथम मतानुसार उक्त जीवोंकी संख्या ३०४, तथा द्वितीय मतानुसार उनसे ५ कम अर्थात् २९९ है। इस मतभेदकी प्ररूपक दो गाथाएं भी उद्धृत की गई हैं। उनमेंसे एकमें एक तीसरा मत और स्फुटित होता है, जिसके अनुसार उपशामकोंकी संख्या घरे ३०० है। इन मत-भेदोंपर ध्वलाकारने कोई उद्घापोह नहीं किया, उन्होंने केवलमात्र उनका उल्लेख ही किया है।

(५) इन्हीं उत्तर और दक्षिण प्रतिपत्तियोंका मतभेद प्रमत्तसंयत राशिके प्रमाण-प्ररूपणमें भी पाया जाता है। उत्तरप्रतिपत्तिके अनुसार प्रमत्तोंका प्रमाण ४,६६,६६,६६४ है, किन्तु दक्षिणप्रतिपत्त्यनुसार यह प्रमाण ५,९३,९८,२०६ आता है। इन मतभेदोंके बीच निर्णय करनेका भी ध्वलाकारने यहां कोई प्रयत्न नहीं किया। किन्तु दक्षिणप्रतिपत्तिके प्रमाणमें जो कुछ आचार्योंने यह शंका उठाई है कि सब तीर्थक्षेत्रोंमें सबसे बड़ा शिष्यपरिवार पद्मप्रमस्वामीका ही था, किन्तु वह परिवार भी मात्र ३,३०,००० ही था। तब फिर जो सर्व संयत्तोंकी पूरी संख्या ८९९९९९९७ एक प्राचीन गाथामें बतलाई है, वह कैसे सिद्ध हो सकती है? इसका परिहार ध्वलाकारने यह किया है कि इस ङंडावसरिणी कालवर्ती तीर्थक्षेत्रोंके साथ भले ही संयत्तोंका उक्त प्रमाण पूर्ण न होता हो, किन्तु अन्य उत्सर्पिणी-अवसरिणियोंमें तो तीर्थक्षेत्रोंका शिष्य-परिवार बड़ा पाया जाता है। दूसरे, भरत और ऐरावत क्षेत्रोंकी अपेक्षा मनुष्योंका प्रमाण विदेह क्षेत्रमें संख्यातगुणा पाया जाता है, अतः वहां उक्त प्रमाण पूरा हो सकता है। इसलिये उक्त प्रमाणमें कोई दूषण नहीं है। (पृ. ९८-९९)

(६) पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल देवोंके अवहारकालके आश्रयसे बतलाया गया है। किन्तु ध्वलाकारका मत है कि कितने ही आचार्योंका उक्त व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, वानव्यन्तर देवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र बतलाया गया है। यहां कोई यह शंका कर सकता है कि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि संबंधी अवहारकाल ही गलत है और वानव्यन्तर देवोंका अवहारकाल ठीक है, यह कैसे जाना जाता है? यहां ध्वलाकार कहते हैं कि हमारा कोई एकान्त आप्रह नहीं है, किन्तु जब दो बातोंमें विरोध है तो उनमेंसे कोई एक तो असत्य होना ही चाहिये। किन्तु इतना समाधानपूर्वक कह चुकने पर ध्वलाकारको अपनी निर्णायक बुद्धिकी प्रेरणा हुई और वे कह उठे—‘अहवा दोगि वि वख्खाणाणि असञ्चणि, एसा अम्हानं पइज्जा।’ अर्थात् उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं। इसके आगे ध्वलाकारने खुदाबंध सूत्रके आधारसे उक्त दोनों अवहारकालोंको असिद्ध करके उनमें यथोचित प्रमाण-प्रवेश करनेका उपदेश दिया है। (पृ. २३१-२३२)

( ७ ) सासादनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण एक प्राचीन गाथामें ५२ करोड़ और दूसरी गाथामें ५० करोड़ पाया जाता है। ध्वलाकारने प्रथम मत ही ग्रहण करनेका आदेश किया है, क्योंकि, वह प्रमाण आचार्य-परंपरागत है। (पृ. २५२)

( ८ ) सूत्र ४५ में मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण बतलाया है 'कोड़ाकोड़ाकोड़ीसे ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीसे नीचे' अर्थात् छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे। किन्तु एक दूसरा मत है कि मनुष्य-पर्याप्तराशि बादाळ वर्गके ( ४२९४९६७२९६ ) अर्थात् द्विरूप वर्गधाराके पांचवें वर्गस्थानके घनप्रमाण है। ध्वलाकारने इस दूसरे मतका परिहार किया है और उसके दो कारण दिये हैं। एक तो बादाळका घन २९ अंक प्रमाण होकर भी कोड़ाकोड़ा-कोड़ाकोड़ीके ऊपर निकल जाता है, जिससे सूत्रोक्त अंक-सीमाओंका सर्वथा उल्लंघन हो जाता है। दूसरे यदि ढाई द्वीपके उस भागका क्षेत्रफल निकाला जाय जहाँ मनुष्य विशेषतासे पाये जाते हैं, तो उसका क्षेत्रफल केवल २५ अंक प्रमाण प्रतरांगुलोंमें आता है, जिससे उस २९ अंक प्रमाण मनुष्यराशिका वहाँ निवास असंभव सिद्ध होता है। यही नहीं, सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण मनुष्य पर्याप्तराशिसे संख्यातगुणा कहा गया है जबकि सर्वार्थसिद्धि विमानका प्रमाण केवल जम्बूद्वीपके बराबर है। अतएव उक्त प्रमाणसे इन देवोंकी अवगाहना भी उनकी निश्चित निवास-भूमिमें असंभव हो जायगी। अतः उक्त राशिका प्रमाण सूत्रोक्त अर्थात् कोड़ाकोड़ाकोड़ा-कोड़ीसे नीचे ही मानना उचित है। (पृ. २५३-२५८)

( ९ ) आहारमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण आचार्य-परम्परागत उपदेशसे २७ माना गया है, किन्तु सूत्र नं. १२० में उनका प्रमाण 'संख्यात' शब्दके द्वारा सूचित किया गया है। इसपरसे ध्वलाकारका मत है कि उक्त राशिका प्रमाण निश्चित २७ नहीं मानना चाहिये, किन्तु मध्यम संख्यातकी अन्य कोई संख्या होना चाहिये, जिसे जिनेन्द्र भगवान् ही जानते हैं। यद्यपि २७ भी मध्यम संख्यातका ही एक भेद है और इसलिये उसके भी उक्त प्रमाणप्ररूपणमें ग्रहण करनेकी संभावना हो सकती है, किन्तु इसके विरुद्ध ध्वलाकारने दो हेतु दिये हैं। एक तो सूत्र में केवल 'संख्यात' शब्द द्वारा ही वह प्रमाण प्रकट किया गया है, किसी निश्चित संख्या द्वारा नहीं। दूसरे मिश्रकाययोगियोंसे आहारकाययोगी संख्यातगुणे कहे गये हैं। दोनों विकल्पोंमें यहाँ सामंजस्य बन नहीं सकता, क्योंकि, सर्व पर्याप्तकालसे जघन्य पर्याप्तकाल भी संख्यात-गुणा माना गया है। (पृ. ४०२)

## ६ गणितकी विशेषता

ध्वलाकारने अपने इस ग्रंथभागके आदिमें ही मंगलाचरण गाथामें कहा है कि—'गमिऊण जिणं भणिमो दब्बणिओगं गणियसारं' अर्थात् जिनेन्द्रदेवको नमस्कार करते हम द्रव्यप्रमाणानुयोगका कथन करते हैं, जिसका सार भाग गणितशास्त्रसे सम्बन्ध रखता है, या जो गणित-शास्त्र-प्रधान है। यह प्रतिज्ञा इस ग्रंथमें पूर्णरूपसे निवाही गई है। ध्वलाकारने इस ग्रंथभागमें गणितज्ञानका खूब उप-

योग किया है, जिससे तत्कालीन गणितशास्त्रकी अवस्थाका हमें बहुत अच्छा परिचय मिल जाता है। ध्वलाकारसे शतब्दियों पूर्व रचे गये भूतबलि आचार्यके सूत्रोंमें जो गणितशास्त्रसंबंधी उल्लेख हैं, वे भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। उनमें एकसे लगाकर शत, सहस्र, शतसहस्र (लक्ष), कोटि, कोटाकोटाकोटी व कोटाकोटाकोटाकोटी तक की गणना, व उससे भी ऊपर संख्यात, असंख्यात, अनन्त और अनन्तानन्तका कथन, गणितकी मूल प्रक्रियाओं जैसे सात्तिके, हीन, गुण और अवहार या प्रतिभाग अर्थात् जोड़ बाकी, गुणा, भाग, वर्ग और वर्गमूल, तथा प्रथम, द्वितीय आदि सातवें तक वर्ग व वर्गमूल, घन, अन्योन्याभ्यास आदिका खूब उपयोग किया गया है। क्षेत्र और कालसंबंधी विशेष गणना—मानों जैसे अंगुल, योजन, श्रेणी, जगप्रतर व लोक तथा आवली, अन्तर्मुहूर्त, अवसर्पिणी—उत्सर्पिणी, पल्योपम, तथा विष्कंभ विष्कंभसूची (पंक्तिरूप क्षेत्रआयाम), इन सबका भी सूत्रोंमें खूब उपयोग पाया जाता है, जिनके स्वरूपपर ध्यान देनेसे आजसे लगभग दो हजार वर्षपूर्वके एतद्देशीय गणितज्ञानका अच्छा दिग्दर्शन मिल जाता है।

ध्वलाकारकी रचनामें असंख्यात, असंख्यातासंख्यात तथा अनन्त और अनन्तानन्तके आन्तरिक प्रभेदों और तारतम्योंका और भी सूक्ष्म निदर्शन किया गया है, जिसका स्वरूप हम ऊपर दिखा आये हैं। इस विषयमें ध्वलाकारद्वारा अर्धच्छेद और वर्गशलाकाओंके परस्पर संबंधका तथा वर्गीत—संवर्गीत राशिका जो परिचय दिया गया है वह गणितकी विशेष उपयोगी वस्तु है। (देखो पृ. १८—२६)। सर्व जीवराशिका उसके अन्तर्गत राशियोंमें भाग—प्रतिभाग दिखानेके लिये ध्वलाकार ने ध्रुवराशि (भागद्वारा विशेष) स्थापित करनेकी क्रिया और उससे भाग देनेकी प्रक्रियाएँ जैसे खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत विस्तारसे दी हैं, जो गणितज्ञोंको रुचिकर सिद्ध होंगी। (देखो पृ. ४१)। ध्रुवराशिसे भाग देनेपर विवक्षित मिथ्यादृष्टिराशि क्यों आती है, इसका कारण समझानेमें भाज्य और भाजकके हानि-वृद्धिक्रमका जो तारतम्य और संबंध बतलाया गया है और क्षेत्र-गणितसे समझाया गया है, वह गणितशास्त्रका एक बहुमूल्य भाग है। (देखो पृ. ४२ आदि)। अवतरण गाथा २४ से ३२ तककी नौ गाथाओंमें इसी संबंधके बड़े सुंदर नियम गुरुरूपमें उद्धृत किये गये हैं और उनका उपयोग विवक्षित राशियाँ ढानेके लिये यथासंभव और यथास्थान भागके अनेक विकल्पोंमें करके बतलाया गया है। अधस्तन विकल्पमें निश्चित भाज्य और भाजकसे नीचेकी संख्या लेकर वही भजनफल उत्पन्न करके बतलाया गया है, और वह भी द्विरूप अर्थात् वर्गधारमें, अष्टरूप अर्थात् घनधारमें और घनाघन-धारमें। अर्थात् निश्चित संख्याका प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्गमूल लेकर भाजकको कम कर वही भजनफल उत्पन्न कर दिखाया है। उपरिम विकल्पमें निश्चित भाज्य व भाजकसे ऊपरकी अर्थात् वर्ग, घन व घनाघनरूप राशियाँ ग्रहण करके वही भजनफल उत्पन्न किया गया है। इस प्रक्रियामें ध्वलाकारने तीन और विकल्प कर दिखाये हैं, गृहीत, गृहीतगृहीन और गृहीतगुणकार। गृहीत तो सीधा है, अर्थात् उसमें ऊपरके भाज्य और भाजकके द्वारा निश्चित भजनफल उत्पन्न किया गया है। किन्तु गृहीतगृहीन में निश्चित भजनफल भी एक बड़ी राशिका भाजक बन जाता है और उसके

लब्धका उसी भाजकमें भाग देनेसे निश्चित भजनफल प्राप्त होता है। गृहीतगुणकारमें निश्चित भजनफलका विवक्षित राशियें भाग देनेसे जो लब्ध आया उसका उसी भाजक राशिसे गुणा करके उत्पन्न हुए भजनफलका विवक्षित राशिके वर्गमें भाग देकर निश्चित भजनफल प्राप्त किया गया है। ये सब विकल्प वर्गात्मक राशियोंमें ही घटित होते हैं। इनका पूर्ण स्वरूप पृष्ठ ५२ से ८७ तक देखिये। प्रमाणराशि, फलराशि और इच्छाराशि, इनकी त्रैराशिक क्रियाका उपयोग जगह जगह दृष्टिगोचर होता है। (पृ. १५, १००)

मनुष्यगति-प्रमाणके प्ररूपणमें राशि दो प्रकारकी बतलाई है ओज और युग्म। इनमेंसे प्रत्येकके पुनः दो विभाग किये गये हैं। किसी राशिमें चारका भाग देनेसे यदि तीन शेष रहें तो वह तेजोराशि, यदि एक शेष रहे तो कलिओज राशि, यदि चार शेष रहें (अर्थात् कुछ शेष न रहे) तो कृतयुग्म राशि तथा यदि दो शेष रहें तो बादरयुग्म राशि कहलाती है। इनमेंसे मनुष्यराशि तेजोराशि कही गई है। (पृ. २४९)

## ८ मूडविद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

यह तो पाठकोंको विदित ही है कि इन सिद्धान्तग्रंथोंकी प्राचीन प्रतियां केवल एकमात्र मूड-विद्रीक्षेत्रके सिद्धान्तमन्दिरमें प्रतिष्ठित हैं। पूर्व प्रकाशित दो भागोंके लिये हमें इन प्राचीन प्रतियोंके पाठ-मिलानका सुअवसर प्राप्त नहीं हो सका था। किन्तु हर्षकी बात है कि अब हमें वहांके भट्टारक-स्वामी और पंचोका सहयोग प्राप्त हो गया है, जिसके फलस्वरूप ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलानकी व्यवस्था हो गई है। पूर्व प्रकाशित दोनों भागों और इस तृतीय भागका मूल पाठ वहांकी ताड़पत्रीय प्रतियोंसे मिलाया जा चुका है और उससे जो पाठभेद हमें प्राप्त हुए हैं उनपर खूब विचार कर हमने उन्हें चार श्रेणियोंमें विभाजित किया है—

(अ) वे पाठभेद जो अर्थ व पाठकी दृष्टिसे अधिक शुद्ध प्रतीत हुए। (देखो परिशिष्ट पृ. २० आदि)

(ब) वे पाठभेद जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियोंसे दोनों ही शुद्ध हैं, अतएव जो संभवतः प्राचीन प्रतियोंके पाठभेदोंसे ही आये हैं। (देखो परिशिष्ट पृ. २९ आदि)

(स) वे पाठभेद जो प्राकृतमें उच्चारणभेदसे उत्पन्न होते हैं और विकल्परूपसे पाये जाते हैं। (देखो परिशिष्ट पृ. ३२ आदि)

(द) वे पाठभेद जो अर्थ या शब्दकी दृष्टिसे अशुद्ध हैं और इस कारण ग्रहण नहीं किये जा सकते। (देखो परिशिष्ट पृ. ३८ आदि)

इस श्रेणी-विभागके अनुसार मूडविद्रीकी प्रतियोंका पाठ-मिलान इस भागके साथ प्रकाशित हो रहा है। संक्षेपमें यह पाठभेद-परिस्थिति इस प्रकार आती है—

(अ) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ६२, भाग २ में २५ और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल १४९ पाये गये हैं। भेद प्रायः बहुत थोड़ा है, और अर्थकी दृष्टिसे तो अत्यन्त अल्प। यह इस बातसे और भी स्पष्ट हो जाता है कि इन पाठभेदोंके कारण अनुवादमें किंचित् भी परिवर्तन करनेकी आवश्यकता केवल भाग १ में १९, भाग २ में १० और भाग ३ में ३२, इस प्रकार कुल ६१ स्थलोंपर पड़ी है। शेष ८८ स्थलोंका पाठपरिवर्तन बांछनीय होनेपर भी उससे हमारे किये हुए भावानुवादमें कोई परिवर्तन आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ।

(ब) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ३०, भाग २ में कोई नहीं, और भाग ३ में ३२, इस प्रकार कुल ६२ पाये गये, और इसमें भी किंचित् अनुवाद-परिवर्तन केवल प्रथम भागमें १७ स्थलोंपर आवश्यक समझा गया है।

(स) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ६०, भाग २ में ३० और भाग ३ में ६७, इस प्रकार कुल १५७ पाये गये हैं। इनसे अर्थमें कोई भेदकी तो संभावना ही नहीं है। इनमेंके अधिकांश पाठ तो ऐसे हैं जो उपलब्ध प्रतियोंमें भी पाये जाते थे, किन्तु हमने प्राकृत व्याकरणके नियमोंको ध्यानमें रखकर परिवर्तित किये हैं। (देखिये 'पाठ संशोधनके नियम,' षट्खं. भाग १, प्रस्तावना पृ. १०-१३)

(ड) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ३८, भाग २ में १५, भाग ३ में ६७, इस प्रकार कुल १२० पाये गये। इनमेंके अधिकांश तो स्पष्टतः अशुद्ध हैं, और जहाँ उनके शुद्ध होनेकी संभावना हो सकती है, वहाँ टिप्पणी देकर स्पष्ट कर दिया गया है कि वे पाठ प्रकृतमें क्यों नहीं ग्राह्य हो सकते।

इस प्रकार कुल पाठभेद  $१४९+६२+१५७+१२०=४८८$  आये हैं। संक्षेपमें यह परिस्थिति इस प्रकार है—

भाग	मूल पाठमें भेद					अनुवाद परिवर्तन		
	अ	ब	स	ड	कुल	अ	ब	कुल
१	६२	३०	६०	३८	१९०	१९	१७	३६
२	२५	×	३०	१५	७०	१०	×	१०
३	६२	३२	६७	६७	२२८	३२	×	३२
कुल	१४९	६२	१५७	१२०	४८८	६१	१७	७८

मूलपाठके संशोधनमें अर्थ और शैलीकी दृष्टिसे कुछ स्थानोंपर हमें पाठ स्वलिखित प्रतीत हुए थे। प्रतियोंका आधार न होनेसे हमने वे पाठ कोष्ठकोंके भीतर रखे हैं, जिससे पाठक सुलभतासे हमारे जोड़े हुए पाठको अलग पहिचान सकें। गत द्वितीय भागमें भी इसीप्रकार पाठ कहीं कहीं जोड़ना पड़े थे। किन्तु वह आलाप प्रकरण होनेसे स्वल्न शीघ्र दृष्टिमें आजाते हैं। पर इस

भागका विषय बहुत कुछ सूक्ष्म है, अतएव यहांके स्वल्पन बड़े ही गंभीर विचारके पश्चात् ध्यानमें आसके और उनका पाठ धवलाकारकी शैलीमें ही बड़े विचारके साथ रखना पड़ा। ऐसे पाठ प्रस्तुत भाग में १९ हैं। हमें यह प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि मूडविद्दीके मिलानसे इन पाठोंमें के १२ पाठ जैसे हमने रखे हैं वैसे ही शब्दशः ताडपत्रीय प्रतियोंमें पाये गये। एक पाठमें हमारे रखे हुए 'खवगा' के स्थानपर 'बंधगा' पाठ आया है, किन्तु विचार करनेपर यह अशुद्ध प्रतीत होता है, वहां 'खवगा' ही चाहिये। शेष ६ पाठ मूडविद्दीकी प्रतिमें नहीं पाये गये। किन्तु वे पाठ अशुद्ध फिर भी नहीं हैं। यथार्थतः वहां अर्थकी दृष्टिसे वही अभिप्राय पूर्वापर प्रसंगसे लेना पड़ता है। धवलाकारकी अन्यत्र शैलीपरसे ही वे पाठ निहित किये गये हैं।

१ देखो पृष्ठ २६४, २५४, ३८३, ३८४, ३९२, ४१२, ४२४, ४३५, ४४४, ४५१.

२ देखो पृष्ठ ४८६.

३ देखो पृष्ठ ६१, २४८, ३४८, ३५३, ४४०.

17596

## द्रव्यप्रमाणानुगम-विषयसूची

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	<b>१</b>				
	विषयकी उत्थानिका	१-१०		कानन्त, एकानन्त, उभयानन्त, विस्तारानन्त, सर्वानन्त और भावानन्तके भेद और स्वरूप	१५-१६
१	द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा निर्देश-भेद-कथन	१	१९	प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजनकी सिद्धि और शेष दश अनन्तोंके कथन करनेका हेतु	१६-१७
२	द्रव्यशब्दकी निरुक्ति और भेद	२	२०	गणनानन्तके तीन भेद-परीत, युक्त और अनन्तानन्त	१८
३	जीवद्रव्यका साधारण और असाधारण लक्षण	२	२१	मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें विवक्षित अनन्तानन्तका प्रतिपादन	१८
४	अजीवद्रव्यके रूपी और अरूपी भेद वा उनके लक्षण	२-३	२२	अनन्तानन्तके जघन्यादि तीन भेद, तथा मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें मध्यम अनन्तानन्तके ग्रहणका परिकर्मके प्रमाणपूर्वक प्रतिपादन	१९
५	द्रव्यप्रमाणानुगममें प्रकृत द्रव्यका निर्देश	४	२३	अथवा, मिथ्यादृष्टिराशि तीन बार वर्गीत-संवर्गितराशिसे अनन्तगुणी तथा छह द्रव्यप्रक्षिप्तराशिसे अनन्तगुणी हीन है, इसका सोपान्तिक प्रतिपादन और इन राशियोंके उत्पत्तिक्रमका प्ररूपण	१९-२६
६	प्रमाण शब्दकी निरुक्ति तथा द्रव्य-प्रमाण शब्दका समास-विच्छेद	४-५	२४	कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव-राशिका निरूपण, तथा क्षेत्र-प्रमाणके पूर्व कालप्रमाणके प्रतिपादनकी सार्थकता	२७
७	द्रव्यका लक्षण	५-६	२५	कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव-राशिकी गणना करनेका प्रकार तथा इस गणनामें केवल अतीत-कालके ग्रहणका प्रतिपादन	२८-२९
८	छहों समासोंके लक्षण व उदाहरण	६-७	२६	अतीतकालसे मिथ्यादृष्टिराशि बड़ी है, इसका सोलह-प्रतिक अल्प-बहुत्वसे समर्थन	३०-३१
९	संख्याकी सर्वथा एकरूपताका परिहार	७	२७	क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण-प्ररूपण, तथा क्षेत्रप्रमाणके पूर्व भावप्रमाणके प्रतिपादन न करनेका कारण	३२
१०	द्रव्यप्रमाणानुगमका अर्थ	८			
११	निर्देशका स्वरूप और उसके भेदोंका स्पष्टीकरण	८-१०			
	<b>२</b>				
	ओषसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश १०-१०१				
१२	मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण-प्ररूपण	१०			
१३	अनन्तके ११ भेद, नामानन्त और स्थापनानन्तका स्वरूप	११			
१४	द्रव्यानन्तके भेद	१२			
१५	आगम और आतका लक्षण	१२			
१६	आगम द्रव्यानन्तका स्वरूप	१२			
१७	नोआगम द्रव्यानन्तके भेद, उनका स्वरूप और तद्विषयक शंका-समाधान	१३-१५			
१८	शाब्दवतानन्त, गणनानन्त अप्रदेशि-				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
२८	क्षेत्रकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टिराशिके मापनेका प्रकार		४४	गृहीतगुणकार	५४
२९	लोक, जगच्छ्रेणी और राजुका स्वरूप	३२	४४	द्विरूपधारामें गृहीत उपरिम विकल्प-द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिकी उत्पत्ति	५४
३०	मध्यलोक-विस्तारके संबंधमें मत-भेद तथा ध्वलाकारका तत्संबंधी सयुक्तिक निर्णय	३४-३८	४५	घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५७
३१	क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणकी सार्थकता	३८	४६	घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प	५८
३२	भावप्रमाणका स्वरूप व उसके भेद	३८-३९	४७	गृहीतगृहीत-उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिकी उत्पत्ति	५९
३३	स्वप्नमें भावप्रमाणके नहीं कहनेमें हेतु	३९	४८	गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें तीनों धाराओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिकी उत्पत्ति	६१
३४	भावप्रमाणकी अपेक्षा खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत नामक गणितकी प्रक्रियाओंके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिके लानेकी विधि	३९	४९	सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर संय-तासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	६३
३५	वर्गस्थानमें खंडित, आदिके द्वारा मिथ्यादृष्टिराशिके प्रमाण-निरूपण-की प्रतिष्ठा	४०	५०	सासादनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण	६३
३६	मिथ्यादृष्टिराशि लानेके लिए ध्रुव-राशिकी स्थापना व उसके द्वारा खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत विधिओंसे मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण-प्ररूपण	४०	५१	क्षेत्र और कालकी अपेक्षा सासा-दनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररू-पणा नहीं करनेका कारण	६३
३७	मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण तथा तत्संबंधी गणितका शास्त्रीय कारण	४२-४६	५२	कालप्रमाणसंबंधी आवली, उच्छ्वास, स्तोक, लव, नाली, मुहूर्त, भिन्न-मुहूर्त और अन्तर्मुहूर्तका स्वरूप	६५
३८	गणितसंबंधी नौ कारण-गाथाएं	४६-४९	५३	एक मुहूर्तमें प्राणोंकी संख्यासिद्धि और मतान्तरका खंडन	६६
३९	सर्वजीवराशिमेंसे मिथ्यादृष्टि और सिद्ध-तेरस गुणस्थानोंके प्रमाण पृथक् करनेकी निरुक्ति	५१	५४	असंयतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या-दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और संय-तासंयत अवधारकाओंका कथन	६५
४०	विकल्पके अधस्तन और उपरिम भेद, तथा वर्गधारामें मिथ्यादृष्टि राशि लानेके लिए अधस्तन विकल्पकी असंभयता	५२	५५	ओघसम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन-सम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोका अवधारकाल आवलीके असंख्या-तवें भाग न होकर 'असंख्यात आवली प्रमाण है' इस बातका समर्थन व विरोध-परिहार	६८
४१	घनधारामें अधस्तन विकल्प	५२	५६	सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशि-योंके अनवस्थित रहने पर भी उनके निश्चित प्रमाण लानेके लिए निश्चित भागधारका समर्थन	७०
४२	घनाघनधारामें अधस्तन विकल्प	५३			
४३	उपरिम विकल्पके तीन भेद-गृहीत,				



क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
५७	खंडित, भाजित विरलित, अपहत, प्रमाण कारण और निहत्तिके द्वारा धर्गधारामें सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण			पात्तिके अनुसार उपशामकों और क्षपकोंकी संख्याका मतभेद	९४
५८	अधस्तनविकल्पमें द्विरूपवर्गधारा आदिका आश्रय लेकर सासादन-सम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण	७१	७१	एक एक गुणस्थानमें उपशामक और क्षपकोंका संयुक्त प्रमाण	९५
५९	उपरिमविकल्पके तीनों भेदोंमें द्विरूपवर्गधारा आदिका आश्रय लेकर सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणका प्ररूपण	७३	७२	सयोगिकेवलियोंका प्रवेश व कालकी अपेक्षा प्रमाण	९५
६०	सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत की प्ररूपणा खंडित आदि विधिसे सासादनसम्यग्दृष्टिकी प्ररूपणके समान उनके पृथक् पृथक् अवधारकालके द्वारा करनेका निर्देश	७७	७३	सयोगिकेवली जिनोंकी लक्षपृथक्त्व संख्याके निकालनेका विधान	९५
६१	सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके अवधारकाल, प्रमाण और पत्त्योपमकी अकसंदृष्टि	७७	७४	यथाख्यातसंयतोंका, सर्वसंयतराशिका तथा उपशामक और क्षपकोंका प्रमाण	९७
६२	प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	८७	७५	प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंकी राशिके निकालनेका एक नया प्रकार	९७
६३	अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	८७	७६	दक्षिणप्रतिपत्तिवाली सर्व संयतोंकी संख्यापर आक्षेप और समाधान	९८
६४	अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे प्रमत्तसंयतोंके दूने प्रमाणका कारण	८८	७७	उत्तरप्रतिपात्तिकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत आदिका प्रमाण	९९
६५	चारों उपशामकोंका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	८९	७८	ओघ भागाभाग प्ररूपण	१०१
६६	चारों उपशामकोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण व उनकी संख्याके जोड़नेका प्रकार	९०	७९	अल्पबहुत्वके कथनकी प्रतिज्ञा और स्वतंत्र अल्पबहुत्व अनुयोग-द्वारके होते हुए भी यहां उसके कहनेका कारण	११४
६७	चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	९०	८०	अल्पबहुत्वके दो भेद-स्वस्थान और सर्वपरस्थान	११४
६८	चारों क्षपक और अयोगिकेवलीका कालकी अपेक्षा प्रमाण व उनकी संख्याके जोड़नेका प्रकार	९१	८१	मिथ्यादृष्टिराशियोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्वका अभाव	११४
६९	उपशामकों और क्षपकोंकी संख्याके लानेका करणसूत्र	९१	८२	सासादनादि राशियोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व	११४
७०	उत्तरप्रतिपत्ति और दक्षिण प्रति-	९२	८३	ओघ सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व	११६
			३		
				आदेशसे द्रव्यप्रमाणनिर्देश	१२१-४८७
				१ गतिमार्गणा	१२१-३०५
				(नरकगति)	
				८४ सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	१२१

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
८५	असंख्यातके नामादि ग्यारह भेद और उनका स्वरूप	१२३-१२५		विकल्पके द्वारा उक्त राशिकी प्ररूपणा	१५०
८६	प्रकृतमें गणनासंख्यातसे प्रयोजन तथा शेष असंख्यातोंके वर्णनकी सार्थकता	१२५	९९	सासादनसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य नारकियोंका प्रमाण	१५६
८७	गणनासंख्यातके जघन्यपरीतासंख्यात आदि नौ भेद, तथा प्रकृतमें मध्यम असंख्यातासंख्यातका ग्रहण	१२६	१००	गुणस्थान-प्रतिपन्न सामान्य नारकियोंको गुणस्थान-प्रतिपन्न ओघप्रमाणके समान मान लेनेपर आनेवाले दोषका परिहार	१५६
८८	तीन बार वर्णित संवर्गितराशिसे असंख्यातगुणी तथा छह द्रव्यप्रक्षिप्तराशिसे असंख्यातगुणी हीन राशिसे प्रयोजन और उक्त राशियोंका स्वरूप-निर्दर्शन	१२८	१०१	ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि-अवहारकालके आश्रयसे गुणस्थान प्रतिपन्न देव, तिर्यंच और नारकियोंके प्रमाण लानेके लिए अवहारकाल उत्पन्न करनेकी विधि और उनका प्रमाण	१५७
८९	सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण व हेतु	१२९	१०२	प्रथम पृथिवीमें नारकियोंका प्रमाण	१६१
९०	क्षेत्रप्रमाणसे पहले कालप्रमाणके वर्णनकी सार्थकता	१३०	१०३	सामान्य नारकोंके प्रमाण समान प्रथम पृथिवीके नारकोंका प्रमाण माननेपर उत्पन्न होनेवाली आपत्तिका परिहार और विशेषताका प्रतिपादन	१६१
९१	नारक मिथ्यादृष्टियोंकी कालकी अपेक्षा गणना करनेका प्रकार	१३१	१०४	प्रथम नरकके मिथ्यादृष्टि नारकोंकी विष्कम्भसूची और अवहारकाल	१६२
९२	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१३१	१०५	उक्त नारकोंका प्रकारान्तरसे अवहारकाल	१६४
९३	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूचीका प्रमाण	१३३	१०६	प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहारकाल, प्रक्षेप शलाकार्प और विष्कम्भसूचीमें आपनयनरूपसंख्याके प्रमाणका प्रतिपादन	१६६
९४	सूत्रपठित 'अंगुल' शब्दसे सूच्यंगुलके ग्रहणका सप्रमाण समर्थन	१३४	१०७	सामान्य अवहारकालमात्र छह पृथिवियोंके द्रव्यका आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिवीमें अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्प निकालनेका विधान	१७१
९५	वर्गस्थानमें खंडित आदिके द्वारा विष्कम्भसूचीका प्ररूपण	१३५	१०८	उक्त सातों अवहारकालोंके मिलानकी विधि और उनसे प्रथम	
९६	नारकसामान्य मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण लानेके लिए विष्कम्भसूचीके बलसे भागहारकी उत्पत्ति	१४१			
९७	वर्गस्थानमें प्रमाण आदिके द्वारा अवहारकालका निरूपण	१४२			
९८	नारक सामान्य मिथ्यादृष्टिराशिका प्रमाण अवहारकालसे किस प्रकार आता है, यह बताकर प्रमाण, कारण, निरुक्ति और				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	पृथिवीके अवहारकालके उत्पन्न करनेका क्रम	१७५		वतलानेवाली अंकसंहति	१९७
१०९	प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके अवहारकाल लानेकी विधियाँ	१७७	१२१	दूसरीसे सातवीं पृथिवी तकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	१९८
११०	छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१७९	१२२	जगच्छूणोंके कितने कितने वर्ग-मूलोंके परस्पर गुणा करनेसे किस किस पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है, इसका स्पष्टीकरण और उसमें प्रमाण	२००
१११	पाँचवीं, छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८०	१२३	तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके द्रव्य उत्पन्न करनेकी विधि	२०१
११२	चौथी, पाँचवीं, छठी और सातवीं पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८२	१२४	प्रथम पृथिवीके आश्रयसे दूसरी पृथिवीके द्रव्य उत्पन्न करनेकी विधि और इसी प्रकार शेष पृथिवियोंके द्रव्य उत्पन्न करनेकी सूचना	२०३
११३	तीसरीसे सातवीं तक पाँच पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८३	१२५	दूसरीसे सातवीं पृथिवीतक गुण-स्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण	२०६
११४	दूसरीसे सातवीं तक छह पृथिवियोंका संयुक्त अवहारकाल	१८४	१२६	दूसरीसे सातवीं पृथिवी तक गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण ओघप्रमाणके समान कदनेसे उत्पन्न होनेवाले दोषका परिहार और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालोंका प्रतिपादन	२०६
११५	दूसरी आदि छह पृथिवियोंके संयुक्त अवहारकालसे प्रथम पृथिवीके अवहारकालके लानेकी विधि	१८६	१२७	नरकगति-सम्बन्धी भागाभाग	२०७
११६	हानिरूप और प्रक्षेपरूप अंकोंका ज्ञान करानेके लिये अंकसंहति, तथा प्रक्षेपरूप राशिकी विधि	१८७	१२८	नरकगति-सम्बन्धी अल्पबहुत्व (तिर्यचगति)	२०८
११७	राशिके हानिरूप विधानका अंक-संहति द्वारा स्पष्टीकरण	१९१	१२९	मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक सामान्य तिर्यचोंका प्रमाण, तथा सामान्य तिर्यचोंका प्रमाण ओघप्रमाणके समान माननेपर आनेवाले दोषका परिहार	२१५
११८	सामान्य अवहारकालके एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य द्रव्यके सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाण खंड करके उनका सातों पृथिवियोंमें विभाजन और इनपरसे प्रथम पृथिवीके अवहारकालकी उत्पत्ति	१९३	१३०	सामान्य तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि और गुणस्थान प्रतिपन्न	
११९	खंड शलाकाओंका आश्रय करके प्रकारान्तरसे प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहार कालकी उत्पत्ति	१९६			
१२०	नरकगतिके सामान्य और विशेष-रूपसे अवहारकाल, विष्कंभ-सूची और प्रक्षेप अवहारकाल				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	सामान्य तिर्यचोंका अवहारकाल	२१६		पर्याप्तोंका प्रमाण	२२९
१३१	जहां राशिका अनन्तरूप प्रमाण बताया है वहां भी कालप्ररूपणासे द्रव्यप्ररूपणाकी सूक्ष्मता सिद्ध होती है, इसका स्पष्टीकरण	२१७	१४२	पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२२९
१३२	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण	२१७	१४३	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनि-मतियोंका अवहारकाल और उसके विषयमें मतभेद	२३०
१३३	असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणी-उत्सर्पिणीकालोंके बीतने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टिराशि-के विच्छेद होनेकी शंकाका समाधान	२१८	१४४	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टि योनि-मतियोंके अवहारकालका खंडित आदिके द्वारा कथन	२३३
१३४	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टिराशि-का क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व उनके अवहारकालकी सिद्धि	२१९	१४५	पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंकी विष्कम्भ सूची और द्रव्यका वर्णन	२३७
१३५	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालका खंडित आदिके द्वारा प्ररूपण	२२०	१४६	सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यच योनि-मतियोंका प्रमाण तथा उसे ओघवत् कहनेसे उत्पन्न हुई आपत्तिका परिहार	२३७
१३६	पंचेन्द्रियतिर्यच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कम्भसूची और द्रव्यका सम-र्थन	२२५	१४७	पंचेन्द्रियतिर्यच योनिमती असं-यतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतका अवहारकाल	२३८
१३७	सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुण-स्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यचोंका प्रमाण	२२६	१४८	पंचेन्द्रियतिर्यच पर्याप्तोंमें असंयत-सम्यग्दृष्टि पुहववेदियोंसे असं-यतसम्यग्दृष्टि स्त्रीवेदियोंके, और स्त्रीवेदियोंसे, नपुंसकवेदियोंके उत्तरोत्तर कम होनेका कारण	२३८
१३८	द्रव्यप्रमाणके आदिमें कथन करनेका प्रयोजन, व द्रव्य-प्रमाण अन्य प्रमाणोंसे स्तोक है, इसमें हेतु	२२७	१४९	पंचेन्द्रियतिर्यच तीनवेदवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे पंचेन्द्रिय-तिर्यच योनिमती असंयतसम्य-ग्दृष्टि जीव कम हैं, या अधिक हैं	२३८
१३९	द्रव्यप्रमाणसे कालप्रमाणके सूक्ष्मत्वकी सिद्धि	२२८	१५०	इस विषयमें उपदेशका अभाव	२३८
१४०	पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्या-दृष्टियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण, तथा उनके अवहारकालका स्पष्टीकरण	२२८	१५१	पंचेन्द्रियतिर्यच अपर्याप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण व अवहारकालका निरूपण	२३९
१४१	सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तक पंचेन्द्रिय तिर्यच			तिर्यचगत सम्यग्धी अज्ञाभागा और अल्पबहुत्व	२४०

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	(मनुष्यगति)				
१५२	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२४४		मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है, इसका समर्थन	२५४
१५३	सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल व खंडित आदिके द्वारा उसका कथन	२४६	१६४	देव वेदवाले मनुष्य पर्याप्तोंका अवहारकाल और उनका प्रमाण	२५४
१५४	मध्यम विकल्प और उपरिम विकल्पमें भेद	२४८	१६५	बादालके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्तराशि है, इस मतका खंडन और सूत्रप्रतिपादित मतका समर्थन	२५५
१५५	मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालका जगत्त्रेणीमें भाग देने पर रूप अधिक मिथ्यादृष्टिराशि आती है, इसमें प्रमाण	२४९	१६६	सासादनगुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२५९
१५६	ओज और शुग्म राशियोंके भेद-प्रभेद और उनके लक्षण	२४९	१६७	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण	२६०
१५७	यहां जीवस्थानमें मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालका जगत्त्रेणीमें भाग देनेपर रूप अधिक सासादनादि तेरह गुणस्थानवर्ती अपनयनराशि आती है, इसका समर्थन	२५०	१६८	मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल निरूपण	२६०
१५८	मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालका कथन	२५१	१६९	सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली तक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्यनियोंका प्रमाण, तथा गुणस्थान-प्रतिपन्न मनुष्यनी गुणस्थान-प्रतिपन्न सामान्य मनुष्योंके संख्यातवें भाग होती है, इसमें हेतु	२६१
१५९	सासादन गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य मनुष्योंका प्रमाण	२५१	१७०	लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२६२
१६०	सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंके प्रमाणमें मतभेद	२५२	१७१	मनुष्यगतिसम्बन्धी भागाभाग और अल्पबहुत्व	२६४
१६१	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक मनुष्योंका प्रमाण	२५२		(देवगति)	
१६२	पर्याप्त मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण और खंडित आदिके द्वारा उसका कथन	२५३	१७२	सामान्यदेवोंमें मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६६
१६३	पर्याप्तमनुष्यराशिमेंसे गुणस्थान-प्रतिपन्नराशिके घटा देनेपर		१७३	संख्यात, असंख्यात और अनन्तके लक्षण व परस्पर भेद	२६७
			१७४	काल और क्षेत्रकी अपेक्षा सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	२६८
			१७५	सासादन गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य देवोंका प्रमाण	२६९		सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण, तथा सनत्कुमारसे लेकर शतार सहस्रार कल्पतक मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण और भागहार	२८०
१७६	असंयतसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका अवहारकाल	२६९	१८८	आनत-प्राणत कल्पसे लेकर नव त्रैवेयक तक मिथ्यादृष्ट्यादि चारों गुणस्थानवर्ती देवोंका प्रमाण	२८१
१७७	भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७०	१८९	अनुदिशोंसे लेकर अपराजित अनुत्तरविमानतक असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण	२८१
१७८	सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासियोंका प्रमाण	२७१	१९०	गुणस्थान-प्रतिपन्न सर्व देवोंके अवहारकाल	२८२
१७९	वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७२	१९१	आनतादि उपरिम गुणस्थान-प्रतिपन्न देवोंका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भाग है, यह वचन 'इसके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है' ऐसा विशेषित करके क्यों कहा? इसकी सफलता	२८५
१८०	वानव्यन्तर और योनिमतियोंके अश्वारकालमें मतभेद और उसका निर्णय	२७३	१९२	सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवोंका प्रमाण	२८६
१८१	सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वानव्यन्तरोंका प्रमाण	२७४	१९३	देवगति संबंधी भागाभाग	२८६
१८२	ज्योतिषी देवोंका प्रमाण, व उस प्रमाणको सामान्य देवराशिके समान कहनेसे आनेवाले दोषका परिहार	२७५	१९४	देवगति संबंधी अल्पबहुत्व	२८८
१८३	ज्योतिषी देवोंका अवहारकाल	२७६	१९५	चतुर्गति संबंधी भागाभाग	२९५
१८४	सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	२७६	१९६	चतुर्गति संबंधी अल्पबहुत्व	२९७
१८५	सौधर्म और ऐशान मिथ्यादृष्टि देवोंकी विष्कंभसूची	२७७	२ इन्द्रियमार्गणा ३०५-३२९		
१८६	खुदाबंधमें सामान्यसे जीवोंका प्रमाण कहते समय जो विष्कंभसूत्रियां बतलाई हैं, वे ही यहां विशेषरूपसे जीवोंका प्रमाण बताते समय कही गई हैं, अतः यह कथन परस्पर विरुद्ध है, इस प्रकार उत्पन्न हुई शंकाका समाधान	२७८	१९७	सामान्य एकेन्द्रिय, बाह्य एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त तथा अपर्याप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३०५
१८७	सौधर्म और ऐशान कल्पवासी		१९८	उक्त नौ राशियोंकी भूवराशियां	३०७
			१९९	खंडित आदिके द्वारा उक्त नौ राशियोंका वर्णन	३०८
			२००	पर्याप्त और अपर्याप्त विकलत्रय जीवोंका द्रव्यकी अपेक्षा प्रमाण	३१०
			२०१	प्रकृतमें पर्याप्त और अपर्याप्त	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	तथा इन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतु- रिन्द्रिय पक्ष से किनका ग्रहण किया गया है, इसका स्पष्टीकरण	३११	२१३	अपर्याप्तकालमें गुणस्थान-प्रति- पन्न जीव लब्ध्यपर्याप्तक नहीं होते, इसका समर्थन	३१८
२०२	सयोगिकेवलीके पंचेन्द्रियत्वका समर्थन	३११	२१४	इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा भागा- भाग	३१८
२०३	विकलतय जीवोंका कालकी अपेक्षा प्रमाण	३१२	२१५	इन्द्रियमार्गणाकी अपेक्षा अल्प- बहुत्व	३२२
२०४	इन्द्रियादि राशियां सर्वथा आयसहित होनेसे विच्छिन्न नहीं होती हैं, फिरभी ये असंख्याता- संख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा विच्छिन्न होती हैं, ऐसे विरोधका परिहार		३ कायमार्गणा ३२९-३८६		
२०५	विकलवय जीवोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण				
२०६	पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय- पर्याप्तोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१२	२१६	पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तैज- स्कायिक, वायुकायिक, तथा बादरपृथिवीकायिक, बादरअप्का- यिक, बादरतैजस्कायिक, बादर- वायुकायिक, बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर तथा इन पांच बाद- रोंके अपर्याप्त; सूक्ष्मपृथिवीका- यिक, सूक्ष्मअप्कायिक, सूक्ष्म- तैजस्कायिक, सूक्ष्मवायुकायिक, तथा इन चार सूक्ष्मोंके पर्याप्त और अपर्याप्तोंका प्रमाण	३२९
२०७	विकलवयोंके प्रमाण-प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाण- का प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा, इसका स्पष्टीकरण	३१३	२१७	पृथिवीकायिकका अर्थ, प्रसंगसे कर्मके भेदोंका उल्लेख, तथा बादर का स्वरूप	३३०
२०८	विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियोंका अवधारकाल तथा द्रव्यप्रमाण	३१५	२१८	पृथिवीकायिक आदिके प्रत्येक होते हुए उन्हें 'प्रत्येकशरीर' यह विशेषण क्यों नहीं लगाया जाता है, इसका स्पष्टीकरण	३३१
२०९	सासादनगुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक पंचेन्द्रियसामान्य और पंचेन्द्रिय- पर्याप्तोंका प्रमाण	३१५	२१९	सूक्ष्म, पर्याप्त और अपर्याप्त इनके स्वरूपोंका स्पष्टीकरण	३३१
२१०	जिनकी इन्द्रियां नष्ट होगई हैं, पैसे सयोगी अयोगी जिनको पंचेन्द्रिय कैसे कहा जा सकता है, इस शंकाका समाधान	३१७	२२०	विप्रवृत्तिमें विद्यमान वनस्पति- कायिक जीव प्रत्येक है, या साधारण, इस शंकाका समा- धान	३३२
२११	लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३१७	२२१	तैजस्कायिकराशिके उत्पन्न कर- नेकी विधि	३३४
२१२	लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंके प्रमाण- का प्रतिपादक सूत्र पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण प्रतिपादक सूत्रके साथ नहीं कहनेका कारण	३१८	२२२	चौथीवार कितनी गुणकारशला- काओंके जानेपर तैजस्कायिक- राशि उत्पन्न होती है, इससे	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	लेकर इस विषयमें अनेक मतान्तरोंका उल्लेख, और कौन मत पूर्व परंपरागत है, इसका समर्थन			खंडित आदिसे राशिका कथन	३५१
२२३	प्रकारान्तरसे तैजस्कायिक-राशिके उत्पन्न करनेका विधान	३३७	२३५	बादरतैजस्कायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	३५५
२२४	खंडित आदिके द्वारा तैजस्कायिकराशिका वर्णन	३३९	२३६	बादरवायुकायिक पर्याप्तराशिका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३५५
२२५	तैजस्कायिकराशिसे पृथिवी, जल और वायुकायिकराशिके उत्पन्न करनेकी प्रक्रिया, तथा इन्हीं तीनों राशियोंके अवहारकाल	३४०	२३७	बादरवायुकायिक पर्याप्तराशिका प्रमाण	३५६
२२६	प्रकृतोपयोगी करणसूत्र, तथा उक्त चारों राशियोंके सूक्ष्म, सूक्ष्मपर्याप्त, सूक्ष्मअपर्याप्त और बादरराशिसम्बन्धी अवहारकाल	३४१	२३८	भेद-प्रभेदयुक्त वनस्पतिकायिक जीवोंका द्रव्य-प्रमाण	३५६
२२७	बादरतैजस्कायिक आदि राशियोंके अर्धच्छेद	३४२	२३९	'जिनका शरीर वनस्पतिकारूप होता है उन्हें वनस्पतिकायिक कहते हैं' वनस्पतिकायिकका ऐसा अर्थ करनेपर विग्रहगतिमें स्थित जीवोंको वनस्पतिकायिकत्व कैसे प्राप्त होता है, इस शंकाका समाधान	३५७
२२८	बादरतैजस्कायिकराशिकी सत्तरह प्रकारकी प्ररूपणा	३४४	२४०	भेद-प्रभेदयुक्त वनस्पतिकायिक जीवोंका काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३५८
२२९	बादरवनस्पति प्रत्येक शरीर-राशिकी सत्तरह प्रकारकी प्ररूपणा, तथा दूसरी बादरराशियोंकी पूर्वोक्त राशियोंके समान प्ररूपण करनेकी सूचना	३४४	२४१	पूर्वोक्त जीवराशियोंकी ध्रुव-राशियां	३५९
२३०	सप्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिमें भेद	३४६	२४२	त्रसकायिकसामान्य और त्रसकायिकपर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३६०
२३१	सूत्रमें बादरवनस्पतिप्रत्येकशरीर का ही प्रमाण कहा, उनके भेदोंका नहीं, इसका कारण	३४७	२४३	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक त्रसकायिक सामान्य और त्रसकायिकपर्याप्तोंका प्रमाण	३६२
२३२	बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अष्कायिक पर्याप्त और बादरवनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त राशियोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३४८	२४४	लब्ध्यपर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण	३६२
२३३	उक्त तीनों राशियोंके भागहार	३४८	२४५	लब्ध्यपर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके समान करनेसे उत्पन्न हुई आपत्तिका परिहार	३६३
२३४	बादरतैजस्कायिक पर्याप्त-राशिका प्रमाण, अवहारकाल व	३५०	२४६	कायमार्गणासम्बन्धी भागाभाग	३६३
			२४७	कायमार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व	३६५



क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	<b>४ योगमार्गणा</b>	<b>३८६-४१३</b>		<b>दनसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण और अवहारकाल</b>	
२४८	पाँचों मनोयोगी तथा सत्य, उभय और असत्य इन तीन वचनयोगी जीवोंका प्रमाण	३८६	२६१	औदारिकमिश्रकाययोगी असंयत-सम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	३९७
२४९	उक्त आठ राशियाँ देवोंके संख्यातवे भाग क्यों हैं? इसका समर्थन	३८६	२६२	वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवहारकाल	३९८
२५०	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक उक्त आठों राशियोंका प्रमाण तथा उसका ओघप्ररूपणाके समान कथन करनेमें हेतु	३८७	२६३	वैक्रियिककाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टि, और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण व अवहार-काल	३९९
२५१	प्रमत्तसंयतसे लेकर सयोगिकेवली तक उक्त आठों राशियोंका प्रमाण	३८७	२६४	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्या-दृष्टियोंका प्रमाण	४००
२५२	प्रमत्तसंयतादि गुणस्थानोंमें आठ राशियोंका प्रमाण ओघसमान न कहनेका कारण	३८८	२६५	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०१
२५३	वचनयोगी और अनुभूयवचन-योगी मिथ्यादृष्टिजीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	३८८	२६६	आहारककाययोगी प्रमत्तसंयतों का प्रमाण	४०१
२५४	सासादनादि गुणस्थानवर्ती उक्त राशियोंका प्रमाण	३९०	२६७	आहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्त-संयतोंका प्रमाण व मतान्तर परिहार	४०२
२५५	स्व-भेद-युक्त मनोयोगी, वचन-योगी और काययोगी जीवोंके अवहारकाल और जीवराशियाँ	३९०	२६८	कर्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टिजीवों का प्रमाण व ध्रुवराशि	४०२
२५६	काययोगी और औदारिककाय-योगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण	३९५	२६९	कर्मणकाययोगी सासादनसम्य-ग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४०३
२५७	सासादनगुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली तक काययोगी और औदारिककाययोगियोंका प्रमाण, ध्रुवराशि तथा अवहार-काल	३९५	२७०	कर्मणकाययोगी सयोगिजिनोंका प्रमाण	४०४
२५८	औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्या-दृष्टियोंका प्रमाण और ध्रुवराशि	३९६	२७१	योगमार्गणा सम्बन्धी भागाभाग	४०४
२५९	औदारिककाययोगराशिके संख्या-तर्वे भाग औदारिकमिश्रकाय-योगराशिके होनेमें हेतु	३९६	२७२	योगमार्गणा सम्बन्धी अल्पबहुत्व	४०८
२६०	औदारिकमिश्रकाययोगी सासा-			<b>५ वेदमार्गणा ४१३-४२४</b>	
			२७३	स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण, देवियोंके प्रमाणकी खुद्दाबंधसे सिद्धि और स्त्रीवेदियोंका अव-हारकाल	६१३
			२७४	सासादन सम्यग्दृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें स्त्रीवेदियोंका	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	प्रमाण	४१४		६ कषायमार्गणा	४२४-४३६
२७५	स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके कम होनेका कारण	४१५	२८८	क्रोध, मान, माया और लोभ-कषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुण-स्थानसे लेकर संयतासंयत गुण-स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण व अवधारकाल	४२४
२७६	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके सवेदभाग तक स्त्री-वेदियोंका प्रमाण	४१५	२८९	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्ति गुणस्थानतक चारों कषायवाले जीवोंका प्रमाण	४२८
२७७	पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण व अवधारकाल	४१६	२९०	लोभकषायी उपशमक, व क्षपक सूक्ष्मसाम्परायिकसंयतोंका प्रमाण	४२९
२७८	सासादनसम्यग्दृष्टिसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक व क्षपकके सवेद भाग तक पुरुष वेदियोंका प्रमाण व अवधारकाल	४१६	२९१	अकषायी जीवोंमें उपशान्तकषाय-धीतरागछद्मस्थोंका प्रमाण और द्रव्यकर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उप-शान्तकषायराशि प्रत्येक मूलोघ-प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है, इस शंकाका समाधान	४३०
२७९	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत तकके नपुंसक वेदियोंका प्रमाण व अवधारकाल	४१७	२९२	अकषायी क्षीणकषायधीतराग-छद्मस्थ और अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४३०
२८०	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक क्षपकके सवेद भाग तक नपुंसकवेदियोंका प्रमाण	४१८	२९३	अकषायी सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४३१
२८१	स्त्रीवेदी प्रमत्तादिराशिसे भी नपुंसकवेदी प्रमत्तादिराशिके संख्यातवें भाग होनेका कारण	४१९	२९४	कषायमार्गणासम्बन्धी भागाभाग	४३१
२८२	अपगतवेदी उपशमकोंका प्रवेशकी अपेक्षा प्रमाण	४१९	२९५	कषायमार्गणासम्बन्धी अल्प-बहुत्व	४३३
२८३	उपशान्तकषायजीवके उपशामक संज्ञा कैसे है, इस शंकाका समाधान	४१९		७ ज्ञानमार्गणा	४३६-४४६
२८४	अपगतवेदी उपशमकोंका संचय-कालकी अपेक्षा प्रमाण	४२०	२९६	मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्या-दृष्टि व सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण, ध्रुवराशि और अवधारकाल	४३६
२८५	अपगतवेदी तीनों क्षपक और अयोगिकेवलियोंका प्रमाण	४२०	२९७	विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवधारकाल	४३७
२८६	अपगतवेदी सयोगिकेवलियोंका प्रमाण	४२१	२९८	विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण	४३८
२८७	वेदमार्गणासम्बन्धी भागाभाग व अल्पबहुत्व	४२१	२९९	मति, श्रुत, और अवधिज्ञानी जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुण-	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	स्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुण- स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४३९		इस विषयका जहापोहात्मक शंका-समाधान	४५३
३००	अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४४१	३१४	चक्षुदर्शनी जीवोंमें सासादन- सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक के जीवोंका प्रमाण	४५४
३०१	मनःपर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक जीवोंका प्रमाण	४४१	३१५	अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण व ध्रुवराशि	४५५
३०२	केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४४२	३१६	अवधिदर्शनी जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४५५
३०३	ज्ञानमार्गणा सम्बन्धी भागाभाग	४४२	३१७	केवलदर्शनी जीवोंका प्रमाण	४५६
३०४	ज्ञानमार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व ८ संयममार्गणा	४४७-४५२	३१८	श्रुतदर्शन और मनःपर्ययदर्शन क्यों नहीं होता है, इस शंका का समाधान	४५६
३०५	संयमी जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुण- स्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतकका प्रमाण	४४७	३१९	ज्ञानमार्गणासम्बन्धी भागाभाग	४५७
३०६	सामायिक और छंदोपस्थापना- संयतोमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानका प्रमाण व दोनों संयतोंके भेदाभेद विष- यक शंकाका समाधान	४४७	३२०	ज्ञानमार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व १० लेश्यामार्गणा	४५९-४७१
३०७	परिहार विशुद्धिसंयमवाले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण	४४९	३२१	कृष्ण, नील और कापोत लेश्या- वालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुण- स्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण व ध्रुवराशि	४५९
३०८	सूक्ष्मसाम्परायसंयमवाले उप- शमक व क्षपकोंका प्रमाण	४४९	३२२	तेजोलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्या- दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहार- काल	४६१
३०९	यथाख्यातसंयमी, संयमासंयमी और असंयमी जीवोंका पृथक् पृथक् प्रमाण	४५०	३२३	तेजोलेश्यावाले जीवोंमें सासा- दन सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान- तकके जीवोंका प्रमाण	४६२
३१०	संयममार्गणासम्बन्धी भागाभाग	४५१	३२४	पञ्चलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्या- दृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहार- काल	४६३
३११	संयममार्गणासम्बन्धी अल्पबहुत्व ९ दर्शनमार्गणा	४५१	३२५	पञ्चलेश्यावाले जीवोंमें सासादन गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४६३
३१२	चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	४५३	३२६	शुक्लेश्यावाले जीवोंमें मिथ्या-	
३१३	चक्षुदर्शनी जीव किसे कहते हैं,				

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.	क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयता- संयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण- स्थानमें जीवोंका प्रमाण व अव- हारकाल		३३९	उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत- सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४७६
३२७	शुक्ललेख्यावाले जीवोंमें प्रमत्त- संयत गुणस्थानसे लेकर सयोगि- केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुण- स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	४६३	३४०	सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्या- दृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४७७
३२८	लेख्यामार्गणासंबंधी भागाभाग	४६५	३४१	सम्यक्त्वमार्गणासम्बन्धी भागा- भाग	४७९
३२९	लेख्यामार्गणासंबंधी अल्पबहुत्व	४६७	३४२	सम्यक्त्वमार्गणासम्बन्धी अल्प- बहुत्व	४७९
	११ भव्यमार्गणा ४७२-४७३		३४३	प्रमत्तसंयत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे क्षयिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव संख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं, इस शंकाका समाधान	४८०
३३०	भव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४७२		१३ संज्ञीमार्गणा ४८२-४८३	
३३१	अभव्यसिद्धिक जीवोंका प्रमाण	४७२	३४४	संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण व अवहारकाल	४८२
३३२	भव्यमार्गणासम्बन्धी भागाभाग और अल्पबहुत्व	४७३	३४५	संज्ञी जीवोंमें सासादन गुणस्था- नसे लेकर क्षीणकषायगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण	४८२
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा ४७४-४८१		३४६	असंज्ञी जीवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण	४८३
३३३	सम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयत- सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका प्रमाण	४७४	३४७	संज्ञीमार्गणासंबंधी भागाभाग व अल्पबहुत्व	४८३
३३४	क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत- सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उप- शान्तकषाय गुणस्थानतक के जीवोंका प्रमाण	४७४		१४ आहारमार्गणा ४८३-४८७	
३३५	क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत संख्यात ही क्यों होते हैं, इस शंकाका समाधान	४७५	३४८	आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें आहारक जीवोंका प्रमाण व ध्रुव- राशि	४८३
३३६	क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों क्षपक व अयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४७५	३४९	अनाहारक जीवोंका प्रमाण, ध्रुवराशि व अवहारकाल	४८४
३३७	क्षायिकसम्यग्दृष्टि सयोगिकेवली जिनोंका प्रमाण	४७६	३५०	अनाहारक अयोगिकेवली जीवों का प्रमाण	४८५
३३८	वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयत- सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतकके जीवोंका प्रमाण	४७६	३५१	आहारमार्गणासम्बन्धी भागाभाग	४८५
			३५२	आहारमार्गणासम्बन्धी अल्प- बहुत्व	४८५

## १० अर्थसंबंधी विशेष सूचना

### १. पृष्ठ ४७ की गाथा नं. २८ का प्रतियोंमें उपलब्ध पाठको रखते हुए अर्थ

दो हारोंके अन्तरसे एक हारमें भाग देने पर जो लब्ध आता है उससे भाजित पूर्व लब्धका, तथा दोनों हारोंसे अलग अलग भाजित भाज्यके भजनफलोंका अन्तर हानिवृद्धिरूप होता है। (अर्थात् उपर्युक्त दोनों प्रक्रियाओंका फल बराबर ही होता है और समानरूपसे घटता बढ़ता है।)

उदाहरण (बीजगणितसे) —

$$\text{भाज्य} = \text{अ}; \text{हार (भाजक)} = \text{ब और स}; \text{पूर्वलब्ध} \frac{\text{अ}}{\text{ब}} = \text{क}$$

$$(१) \text{ यदि स से ब छोटा है तो — } \frac{\text{अ}}{\text{ब}} - \frac{\text{अ}}{\text{स}} = \text{क} \div \frac{\text{स}}{\text{स} - \text{ब}}$$

$$(२) \text{ यदि स से ब बड़ा है तो — } \frac{\text{अ}}{\text{स}} - \frac{\text{अ}}{\text{ब}} = \text{क} \div \frac{\text{स}}{\text{ब} - \text{स}}$$

(अंक्राणितसे) —

$$\text{भाज्य} = ३६; \text{हार (भाजक)} = ६ और ९;$$

$$\text{पूर्वलब्ध} = \frac{३६}{६} = ६; \text{दूसरा लब्ध} \frac{३६}{९} = ४; \text{हारान्तर } ९ - ६ = ३.$$

$$\frac{९}{३} = ३; \frac{६}{३} = २; ६ - ४ = २.$$

### २. पृष्ठ ५०-५१ परके पश्चिम विकल्पका स्पष्टीकरण

पृ. ५०-५१ पर मूलमें जो पश्चिमविकल्प बतलाया गया है, उसके सम्बन्धमें हमारे सम्मुख दो आपत्तियां उपस्थित हुईं, कि एक तो वह धबलाकार द्वारा स्वीकृत अंकसंज्ञासे घटित नहीं होता, और दूसरे प्रकृतमें उसका कोई फल नहीं दिखाई देता। इन्हीं आपत्तियोंको दूर करनेके लिये मूलमें प्राप्त पाठ रखकर भी अनुवादमें हमने उस पाठका संशोधन सुझाया है। तथापि एक तरहसे बीजगणित द्वारा मूलमें दिया हुआ गणित सिद्ध भी हो सकता है। जैसे —

$$\text{मानलो, जीवराशि} = \text{क}; \text{मिथ्याद्विधाशि} = \text{अ}; \text{सिद्धतेरसराशि} = \text{ब}; \text{अ} = \text{क} - \text{ब}.$$

$$\text{अब चूंकि क अनन्तराशि है, अतएव — } \text{क} + १ = \text{क}; \text{क} - १ = \text{क}.$$

अब मूल पाठानुसार—

$$\frac{क^२}{क + \frac{अ}{ब}} = \frac{क^२}{क + \frac{क-ब}{ब}} = \frac{क^२}{(क-१) + \frac{क}{ब}} = \frac{क^२}{क + \frac{क}{ब}}$$

$$= क - \frac{क}{ब + १} = क - \frac{क}{ब}$$

किन्तु यह उदाहरण बनता तभी है, जब यह मान लिया जाय कि अनन्तमें एक घटाने व एक बढ़ानेसे अनन्त ही रहता है। अतएव यह उदाहरण अंकसंदिष्टिसे नहीं बतलाया जा सकता।

## ११ पाठसंबंधी विशेष सूचना

पृ. २८८ की पंक्ति ९ में 'एवं जोइसिय.....' आदिसे लगाकर पृ. २९० पंक्ति २ के 'एगपद्चादो' तकका पाठ प्रतियोंमें व मूडबिंदीकी प्रतियोंमें निम्न प्रकार है, जो ध्वलाकारकी अन्यत्र पाठ-व्यवस्थासे कुछ भिन्न है। हमने उसे मुद्रणमें अन्यत्रकी व्यवस्थानुसार कुछ हेरफेरसे रख दिया है और उसका कारण भी वहीं दे दिया है। किन्तु पाठकोंकी सूचनाके लिये वह पूरा पाठ प्रतियोंके अनुसार यहां दिया जाता है—

परस्थाने पयदं । सव्वस्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं गेयव्वं जाव पल्लिदोवमो त्ति । तदो उवरि सिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पल्लिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । केत्थियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पल्लिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । उवरि सत्थाण-अंगो । एवं जोइसियवाणवेंतराणं पि गेयव्वं । भवणवासियाणं सत्थाणे सव्वस्थोवा सिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? विक्खंभसूई । अहवा सेटीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेटिपडमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? विक्खंभसूचि-वग्गो । अहवा घर्णगुलं । सेटी असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुण-गारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेटी । सासणादीणं मूलोवमंगो । भवणवासियाणं सव्वस्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं गेयव्वं जाव पल्लिदोवमो त्ति । तदो उवरि भवणवासियंसिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग-विक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पल्लिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असं-खेज्जगुणि सूचिअंगुलाणि । केत्थियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलपडमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडि-भागो ? पल्लिदोवमो । उवरि सगसत्थाणमंगो । सोहम्मादि जाव उवरिमउवरिमगेव्वं त्ति सत्थाणपावबुद्ध्यं जाणिय गेयव्वं । उवरि परत्थाणं गत्थि, तत्थ सेसगुणद्वगणमभावादो । सव्वट्ठे सत्थाणं पि गत्थि एकपद्-चादो ।

## शुद्धिपत्र



### ( पुस्तक १ )

पृष्ठ	पांक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६७	१६	नानाप्रकारकी उज्ज्वल और निर्मल धवल, निर्मल और नानाप्रकारकी विनयसे विनयसे	
१८८	४	उपदेशष्टव्यम्	उपदेशष्टव्यम्
२०५	२५	शंका—	×
"	२९	इसलिये	शंका— तो फिर
२५१	१	तत्प्रतिघातः	तत्प्रतिघातः
३४५	८	-सन्तापान्मन्यूनतया	-सन्तापान्मन्यूनतया
"	२६	संतापसे न्यून नहीं है,	सन्तापरूप है,

### ( पुस्तक २ )

४३३	२८	आहार, भय और मैथुन	भय, मैथुन और परिग्रह
५३७	४	दब्बेण छलेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुकलेस्साओ;	दब्ब-भावेहिं छलेस्साओ,
"	१५	द्रव्यसे छहों लेर्यारं, भावसे तेज, पद्म और शुक्लेर्यारं;	द्रव्य और भावसे छहों लेर्यारं,

### ( पुस्तक ३ )

९	२	अवशेषः	अविशेषः
"	१२	अवशेष	अविशेष
१५	२	कडय-रुजगदीव	कडय-रुजग-दीव
"	१४	कटक, रुचकवरद्वीप	कटक (कंकण), रुचक (ताबीज) व द्वीप
१५	३-४	चेत्तद्व्यतिरिक्त	चेत्तद्व्यतिरिक्त
"	१२	नोआगमद्रव्यानंत	नोआगमद्रव्यानन्त
१६	१४	अप्रदेशानन्त	अप्रदेशानन्त
१८	६	तस्स	तत्थ तस्स
२६	२८	दुक्खेवा	पक्खेवा
२७	३०	असंखेज्जा	असंखेज्जा
२८	७	रासमिह	रासिमिह
"	८	अवाहिरज्जादि	अवाहिरिज्जादि

पृष्ठ	पंक्ति अशुद्ध	शुद्ध
„	१३ व्याख्यान	व्याख्यान
३०	२६ शतप्रथक्त्व	शतप्रथक्त्व
३२	१० कोडवेण	कोडवेण
„	३० कौदोके समान	या कुडव (कुड़े) से
३३	२९ घणयमाणो	घणयमाणो
३४	३ छिण्णावसिद्धं	छिण्णावसिद्धं
३५	३० बेगद्	बेसद्
३८	२ णेहासंगहो	णेहासंगहो
„	१६ भी हो.....चाहिये,	ही है, ऐसा असत् आप्रह नहीं करना चाहिये,
३९	५ सहिय	सुहिय
४५	५ असंखेज्ज	असंखेज्ज
५१	१४ क-व ( मिथ्यादृष्टि )	क-अ ( मिथ्यादृष्टि )
८८	६ विरदाण णु कमेण	विरदाणणुकमेण
८९	३ पमत्तसंजदा णं	पमत्तसंजदाणं
११२	६ दसगुणद्वारासिणा	दसगुणद्वारासिणा
१२६	३ ज	च
१३५	७ अस्संखेज्जदि	असंखेज्जदि
१५७	२७ जिनविम्ब	जिन और जिनविम्ब
१७६	१६ जगश्रेणी	जगश्रेणी
१७६	२२ <u>१०४८५७६</u> १२३	<u>१०४८५७६</u> १२३
१९०	सव्वहीणरूवाणि	सव्वहाणि रूवाणि
२०७	६ सिअवहारकाला	सि अवहारकाला
२१७	६ पंचिदिय	पंचिदिय
१७१	२ ताए	तीए
२२१	११ गुणियं	गुणिय
२५७	२२-२४ यहां धवलाके....स्पष्ट है	×
२६०	१० मणुसणीणं	मणुसिणीणं
२६२	४ असंखेज्जस्स-	असंखेज्जस्स
२६३	८ पक्खिस्सपहि	पक्खिस्सपहि
„	„ पादेसु	पाठेसु
२६४	९ के	को
२८१	१ सासणादीणं	सासणादीणं
२८७	५ असंजदसम्माइट्ठिणो	असंजदसम्माइट्ठिणो



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२९०	२	पदत्थादो	पदत्तादो
"	१०	पदार्थ	पदत्व
"	२४	सर्वासिद्धि	सर्वार्थसिद्धि
२९१	१४	सम्यग्दृष्टियोंका	सम्यग्दृष्टियोंका
२९२	५	असंखेज्जदिभाग	असंखेज्जदिभाग
२९६	२६	जार	चार
३०२	१	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर	ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर
३०६	१०	णादरेद्व्वमिदि	णादवेद्व्वमिदि
"	११	णादरेद्व्वं	णादवेद्व्वं
"	२६	ग्रहण	प्रारंभ
"	२८	"	"
३०७	४	सराग-	सराग-
"	६	जं तेण	जंतेण
"	१६	सरागस्वरूपसे	एकस्वरूपसे
"	१९	उस अतीत	जाते हुए
३१२	८	-वत्तादो	-वत्तीदो
३१८	९	संखेज्ज-	संखेज्ज
३२०	४	-कम्मत्त-	-कम्मंत-
३५९	११	पुवुत्त	पुवुत्त
३६६	५	वादरवण्फइ	बादरवण्फइ
३६७	२	तेसिमपज्जत्ता ।	तेसिमपज्जत्ता
३६९	६	वाउणं	वाऊणं
३८१	२	पजत्ता	पज्जत्ता
४४०	१०	आवलिपाए	आवलियाए
४४७	९	पुविस्ल	पुव्विस्ल
४८०	१०	सव्वसम्मत्तेसुप्पायण-	सव्वसम्मत्तेसु पाएण

द्वपमाणागमो

# मंगलाचरणम्

पंच-परमेष्ठि-वन्दनं

( धवलान्तर्गतम् )

सिद्धा ददद्भुमला विसुद्ध-बुद्धी य लद्ध-सम्बत्था ।

तिहुवण-सिर-सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे ॥ १ ॥

तिहुवण-भवणप्पसरिय-पच्चक्खववोह-किरण-परिवेढो ।

उइओ वि अणत्थवणो अरहंत-दिवायरो जयऊ ॥ २ ॥

ति-रयण-खग्ग-णिहाएणुत्तारिय-मोह-सेण-सिर-णिवहो ।

आइरिय-राउ पसियउ परिवालिय-भविय-जिय-लोओ ॥ ३ ॥

अण्णाणयंधयारे अणोरपारे भमंत-भवियाणं ।

उज्जोओ जेहि कओ पसियंतु सया उवज्झाया ॥ ४ ॥

संधारिय-सीलहरा उचारिय-चिरपमाद-दुस्सीलभरा ।

साहू जयंतु सव्वे सिव-सुह-पह-संठिया हु णिग्गलिय-भया ॥ ५ ॥

जयउ धरसेण-णाहो जेण महाकम्म-पयडि-पाहुड-सेलो ।

बुद्धिसिरेणुद्धरिओ समप्पिओ पुप्फयंतस्स ॥ ६ ॥



सिरि-भगवंत-पुण्ड्र-भूदबलि-पणीदे

## छक्खंडागमे

जीवट्टाणं

तस्स

सिरि-वीरसेणाहरिय-विरहया टीका

धवल

केवलणाणुजोइयछद्वयमणिजियं पवाईहि ।

णमिऊण जिणं भणिमो द्ववणिओगं गणियसारं ॥१॥

संपहि चोदसण्हं जीवसमासाणमत्थित्तमवगदाणं सिस्साणं तेसिं चव परिमाण-  
पडिबोहणट्ठं भूदबलियाहरियो सुत्तमाह—

द्वयप्रमाणाणुगमेण दुविहो णिदेसो ओघेण आदेसेण य ॥१॥

जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंको प्रकाशित किया है और जो प्रवादियोंके द्वारा नहीं जीते जा सके ऐसे जिनेन्द्रदेवको मैं (वीरसेन आचार्य) नमस्कार करके गणितकी जिसमें मुख्यता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हूं ॥ १ ॥

विशेषार्थ—द्रव्यानुयोगका दूसरा नाम द्वयप्रमाणाणुगम या संख्याप्ररूपणा है। यद्यपि द्रव्य छह हैं फिर भी इस अधिकारमें गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंका आश्रय लेकर केवल जीवद्रव्यकी संख्याका ही प्ररूपण किया गया है।

जिन्होंने चौदहों गुणस्थानोंके अस्तित्वको जान लिया है ऐसे शिष्योंको अब उन्होंने चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके परिमाण (संख्या) के ज्ञान करनेके लिये भूलबलि आचार्य आगेका सूत्र कहते हैं—

द्रव्यप्रमाणाणुगमकी अपेक्षा निर्देश दो प्रकारका है, ओघनिर्देश और आदेश-निर्देश ॥ १ ॥

द्रवति द्रोष्यति अदुद्रवत्पर्यायानिति द्रव्यम् । अथवा द्रूयते द्रोष्यते अद्रावि पर्याय इति द्रव्यम् । तं च द्रव्यं दुविहं, जीवद्रव्यं अजीवद्रव्यं चेदि । तत्थ जीवद्रव्यस्त लक्षणं वुचदे । तं जहा, ववगदपंचवण्णो ववगदपंचरसो ववगददुग्धो ववगदअट्ठफासो सुहुमो अमुत्ती अगुरुगलहुओ असंखेज्जपदेसिओ अणिदिट्ठसंठाणो चि एदं जीवस्स साहारणलक्षणं । उड्डुगई भोत्ता सपरप्पगासओ चि जीवद्रव्यस्त असाहारणलक्षणं ।  
उत्तं च—

अरसमरुवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसदं ।

जाण अलिंगगहणं जीवमणिदिट्ठसंठाणं<sup>१</sup> ॥ १ ॥

जं तं अजीवद्रव्यं तं दुविहं, रूवि-अजीवद्रव्यं अरूवि-अजीवद्रव्यं चेदि । तत्थ जं तं रूवि-अजीवद्रव्यं तस्स लक्षणं वुचदे— रूपरसगन्धस्पर्शवन्तः पुद्गलाः<sup>२</sup> रूपि अजीवद्रव्यं

जो पर्यायोको प्राप्त होता है, प्राप्त होगा और प्राप्त हुआ है उसे द्रव्य कहते हैं । अथवा, जिसके द्वारा पर्याय प्राप्त की जाती है, प्राप्त की जायगी और प्राप्त की गई थी उसे द्रव्य कहते हैं । वह द्रव्य दो प्रकारका है, जीवद्रव्य और अजीवद्रव्य । उनमेंसे जीवद्रव्यका लक्षण कहते हैं । वह इसप्रकार है, जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, पांच प्रकारके रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है, सूक्ष्म है, अमूर्ति है, अगुरुलघु है, असंख्यातप्रदेशी है और जिसका कोई संस्थान अर्थात् आकार निर्दिष्ट नहीं है वह जीव है । यह जीवका साधारण लक्षण है । अर्थात् यह लक्षण जीवको छोड़कर दूसरे धर्मादि अमूर्त द्रव्योंमें भी पाया जाता है, इसलिये इसे जीवका साधारण लक्षण कहा है । परंतु ऊर्ध्वगतिस्वभावत्व, भोक्तृत्व और स्वपरप्रकाशकत्व यह जीवका असाधारण लक्षण है । अर्थात् यह लक्षण जीवद्रव्यको छोड़कर दूसरे किसी भी द्रव्यमें नहीं पाया जाता है, इसलिये इसे जीवद्रव्यका असाधारण लक्षण कहा है । कहा भी है—

जो रसरहित है, रूपरहित है, गन्धरहित है, अव्यक्त अर्थात् स्पर्शगुणकी व्यक्तिले रहित है, चेतनागुणयुक्त है, शब्दपर्यायसे रहित है, जिसका लिंगके द्वारा ग्रहण नहीं होता है और जिसका संस्थान अनिर्दिष्ट है अर्थात् सब संस्थानोंसे रहित जिसका स्वभाव है उसे जीवद्रव्य जानो ॥ १ ॥

अजीवद्रव्य दो प्रकारका है, रूपी अजीवद्रव्य और अरूपी अजीवद्रव्य । उनमें जो रूपी अजीवद्रव्य है उसका लक्षण कहते हैं । रूप, रस, गन्ध और स्पर्शसे युक्त पुद्गल रूपी

<sup>१</sup> प्रवच. २, ८०; पञ्चा. १३४.

<sup>२</sup> 'स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः' तत्त्वार्थद्व. ५, २३.

शब्दादि । तं च रूवि-अजीवद्वयं छन्विहं, पुढवि-जल-छाया चउरिदियविसय-कम्म-  
कखंध-परमाणू चेदि । वुत्तं च—

पुढवी जलं च छाया चउरिदियविसय-कम्म-परमाणू ।

छन्विहमेयं भणियं पोगगलद्वयं जिणवोहिं ॥ २ ॥

जं तं अरूवि-अजीवद्वयं तं चउन्विहं, धम्मद्वयं अधम्मद्वयं आगासद्वयं काल-  
द्वयं चेदि । तत्थ धम्मद्वयस्स लक्खणं वुत्तदे-ववगदपंचवणं ववगदपंचरसं ववगद-  
दुगंधं ववगदअट्ठपासं जीव-पोगगलणं गमणागमणकारणं असंखेज्जपदेसियं लोगपमाणं  
धम्मद्वयं । एवं चेव अधम्मद्वयं पि, णवरि जीव-पोगगलणं एदं ट्ठिदिहेदू । एव-  
मागासद्वयं पि, णवरि आगासद्वयमणंतपदेसियं सव्वगयं ओगाहणलक्खणं । एवं चेव  
कालद्वयं पि, णवरि स-परपरिणामहेऊ अपदेसियं लोगपदेसपरिमाणं । एदाणि छ

अजीवद्वय है, जैसे शब्दादि । वह रूपी अजीवद्वय छह प्रकारका है, पृथिवी, जल, छाया,  
नेत्रको छोड़कर शेष चार इन्द्रियोंके विषय, कर्मस्कन्ध और परमाणु । कहा भी है—

जिनेन्द्रवेने पृथिवी, जल, छाया, नेत्र इन्द्रियके अतिरिक्त शेष चार इन्द्रियोंके  
विषय, कर्म और परमाणु, इसप्रकार पुद्गलद्वय छह प्रकारका कहा है ॥ २ ॥

विशेषार्थ—ऊपर जो पुद्गलके छह भेद बतलाये हैं वे उपलक्षणमात्र हैं, इसलिये  
उपलक्षणसे उस उस जातिके पुद्गलोंका उस उस भेदमें ग्रहण हो जाता है । ग्रन्थान्तरोंमें जो  
पुद्गलके स्थूल-स्थूल, स्थूल, स्थूल-सूक्ष्म, सूक्ष्म-स्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्म-सूक्ष्म, ये छह भेद  
गिनाये हैं और उनका दृष्टान्तोंद्वारा स्पर्शकरण करनेके लिये उपर्युक्त पृथिवी आदि छह प्रकार  
बतलाये हैं, इससे भी यही सिद्ध होता है कि ये पृथिवी आदि नाम उपलक्षणरूपसे लिये  
गये हैं ।

अरूपी अजीवद्वय चार प्रकारका है, धर्मद्वय, अधर्मद्वय, आकाशद्वय और काल-  
द्वय । उनमेंसे धर्मद्वयका लक्षण कहते हैं । जो पांच प्रकारके वर्णसे रहित है, पांच प्रकारके  
रससे रहित है, दो प्रकारके गन्धसे रहित है, आठ प्रकारके स्पर्शसे रहित है, जीव और  
पुद्गलोंके गमन और आगमनमें साधारण कारण है, असंख्यतप्रदेशी है और लोकाकाशके  
बराबर है वह धर्मद्वय है । इसीप्रकार अधर्मद्वय भी है, परंतु इतनी विशेषता है कि यह  
जीव और पुद्गलोंकी स्थितिमें साधारण कारण है । इसीप्रकार आकाशद्वय भी है, पर इतनी  
विशेषता है कि आकाशद्वय अनन्तप्रदेशी, सर्वगत और अवगाहनलक्षणवाला है । इसीप्रकार

१ गो. जी. ६०९. पुढवी जलं च छाया चउरिदियविसयकम्मपाओगा । कम्मातीदा एवं छमेया  
पोगगला होति ॥ पञ्चा. ८३.

२ लोगागासपदेसे एकेके जे ट्टिया हु एकेका । रयणाणं रासी इव ते कालायू असंखदव्वाणि ॥ दव्व सं.  
२२; गो. जी. ५८९.

द्व्वाणि । एदेसु छसु द्व्वेसु केण द्व्वेण पगदं ? जस्स संताणिओगहारे चोद्दसमग्गण-  
ट्ठाणेहि चोद्दसजीवसमासाणमत्थित्तं परुविदं जीवद्व्वस्स तेण पगदं । तं क्खं णव्वदि  
त्ति मणिदे ' मिच्छादिट्ठी केवडिया ' इदि सेसद्व्व्वाणं परिमाणमुज्झिदूण जीवद्व्व-  
परिमाणपरुवयसुत्तादो जाणिज्जदि जीवद्व्वेणकेण चैव पगदं, ण अण्णद्व्वेहि ति ।  
प्रमीयन्ते अनेन अर्था इति प्रमाणम् । द्व्वस्स पमाणं द्व्वपमाणं । एवं तत्पुुरिससमासे  
कीरमाणे द्व्व्वादो पमाणस्स भेदो दुक्कदि, जहा देवदत्तस्स कंवल्लो त्ति । एत्थ देवदत्तादो  
कंवल्लस्सेव भेदो ण, अभेदे वि उत्पलगंधो इच्चैवमादिसु तत्पुुरिससमासदंसणादो । अधवा  
द्व्व्वादो पमाणं केण वि सरुवेण मिण्णं चैव, अण्णहा विसेसिय विसेसणभावाणुवव-

कालद्रव्य भी है, पर इतनी विशेषता है कि कालद्रव्य अपने और दूसरे द्रव्योंके परिणमनमें  
साधारण कारण है, अप्रदेशी अर्थात् एकप्रदेशी है और लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतने ही  
कालाणु हैं । इसप्रकार ये छह द्रव्य हैं ।

शंका—इन छह द्रव्योंमेंसे यहां प्रकृतमें किस द्रव्यसे प्रयोजन है, अर्थात् किस  
द्रव्यके द्वारा प्रकृत विषय कहा जायगा ?

समाधान—सत्परूपणानुयोगद्वारमें चौदहों मार्गास्थानोंके द्वारा जिस जीवद्रव्यके  
चौदहों जीवसमासोंके अस्तित्वका निरूपण कर आये हैं, प्रकृतमें उसी जीवद्रव्यसे  
प्रयोजन है ।

शंका—यह कैसे जाना ?

समाधान—' मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं ' इसप्रकार शेष पांच द्रव्योंके परिमाणको  
छोड़कर एक जीवद्रव्यके परिमाणके निरूपण करनेवाले सूत्रसे यह जाना जाता है कि प्रकृतमें  
एक जीवद्रव्यसे ही प्रयोजन है, अन्य द्रव्योंसे नहीं ।

जिसके द्वारा पदार्थ मापे जाते हैं या जाने जाते हैं उसे प्रमाण कहते हैं और द्रव्यके  
प्रमाणको द्रव्यप्रमाण कहते हैं ।

शंका—इसप्रकार ' द्रव्य प्रमाण ' इन दोनों पदोंमें तत्पुरुष समास करने पर द्रव्यसे  
प्रमाणका भेद प्राप्त होता है, जैसे ' देवदत्तका कम्बल ' ?

समाधान—देवदत्तसे कम्बलका जिसप्रकार भेद है, प्रकृतमें उसप्रकारका भेद नहीं है,  
क्योंकि, अभेदे रहने पर भी ' उत्पलगन्ध ' इत्यादि पदोंमें तत्पुरुष समास देखा जाता है ।  
इसका यह तात्पर्य है कि ' उत्पलगन्ध ' इत्यादि पदोंमें ' उत्पलस्य गन्धः उत्पलगन्धः ' इत्यादि  
रूपसे तत्पुरुष समासके रहने पर भी जिसप्रकार उत्पलसे गन्धका भेद नहीं होता है, उसी  
प्रकार यहां पर भी द्रव्यसे प्रमाणका सर्वथा भेद नहीं समझना चाहिये ।

अथवा, द्रव्यसे प्रमाण किसी अपेक्षासे भिन्न ही है । यदि द्रव्यसे प्रमाणका कथंचित्  
भेद न माना जाय तो द्रव्य और प्रमाणमें विशेष्य-विशेषणभाव नहीं बन सकता है । अथवा,

त्तीदो । अधवा कम्मधारयसमासो काद्व्वो दव्वमेव पमाणं दव्वपमाणमिदि । एत्थ वि ण दव्वपमाणाणमेयेतेण एगत्तं, एकत्थ समासमावादो । अधवा दुंदसमासो काद्व्वो । तं जधा, दव्वं च पमाणं च दव्वपमाणमिदि । दुंदसमासो अवयवपहाणो त्ति दव्वपमाणाणं पुध पुध परूवणं पावेदि । ण च सुत्तं पुध पुध दव्वपमाणाणं परूवणा कदा । जदि वि समुदायपहाणो दुंदसमासो आसइज्जदि तो वि अवयववदिरित्तसमुदायाभावादो अवयवाणं चेव परूवणा पावेदि । ण च सुत्ते अवयवाणं समूहस्स वा परूवणा कदा । तदो ण दुंदसमासो कीरदि त्ति ? ण एस दोसो, दव्वस्स पमाणे परूविदे दव्वं पि परूविदेमेव । कुदो ? दव्ववदिरित्तपमाणाभावादो । तिकालगोयराणंतपज्जयाणमणोण्णा-जहवुत्ती दव्वं । वुत्तं च —

नयोपनयैकान्तानां त्रिकालानां समुच्चयः ।

अविभ्राद्भावसम्बन्धो द्रव्यमेकमेकशः ॥ ३ ॥

संखाणं दव्वस्सवेको पज्जाओ, तदो ण दोण्हमेगतमिदि । वुत्तं च —

द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें 'द्रव्यमेव पमाणं दव्वपमाणं' अर्थात् द्रव्य ही प्रमाण द्रव्यप्रमाण है, इसप्रकार कर्मधारय समास करना चाहिए । यहां पर भी द्रव्य और प्रमाण इन दोनोंमें एकान्तसे एकत्व अर्थात् अभेद नहीं है, क्योंकि, सर्वथा एकार्थमें अर्थात् अभेदमें समास ही नहीं हो सकता है । अथवा, द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्व्वसमास करना चाहिये । वह इसप्रकार है, द्रव्य और प्रमाण द्रव्यप्रमाण ।

शंका — द्व्वसमास अवयवप्रधान होता है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक् प्ररूपण प्राप्त हो जाता है । परंतु सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणका पृथक् पृथक् कथन नहीं किया है । यद्यपि समुदायप्रधान भी द्व्वसमास हो सकता है, तो भी अवयवोंको छोड़कर समुदाय पाया नहीं जाता है, इसलिये समुदायप्रधान द्व्वसमासके करने पर भी अवयवोंकी ही प्ररूपणा प्राप्त होती है । परंतु सूत्रमें अवयवोंकी अथवा समूहकी प्ररूपणा नहीं की गई है । इसलिये द्रव्य और प्रमाण इन दोनों पदोंमें द्व्वसमास नहीं किया जा सकता है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर द्रव्यका भी प्ररूपण हो ही जाता है, क्योंकि, द्रव्यको छोड़कर उसका प्रमाण नहीं पाया जाता है ।

त्रिकालगोचर अनन्त पर्यायोंकी परस्पर अयुक्तवृत्ति द्रव्य है । कहा भी है—

जो नैगमावि नय और उनकी शाखा उपशाखारूप उपनयोंके विषयभूत त्रिकालवर्ती पर्यायोंका अभिन्न संबन्धरूप समुदाय है उसे द्रव्य कहते हैं । वह द्रव्य कथंचित् एकरूप और कथंचित् अनेकरूप है ॥ ३ ॥

द्रव्यकी एक पर्याय संबन्धान है, इसलिये द्रव्य और प्रमाणमें एकत्व अर्थात् सर्वथा अभेद नहीं है । कहा भी है—



एयदवियमि जे अत्यपज्जया वयणपज्जया चावि ।

तीदाणागदभूदा तावदियं तं हवदि दव्वं ॥ ४ ॥

एवं ताणं भेदो भवदु णाम, किंतु दव्वगुणपरूवणादारेणेव दव्वस्स परूवणा भवदि, अण्णहा दव्वपरूवणोवायाभावादो । उच्चं च—

नानात्मातमप्रजहत्तदेकमेकात्मातमप्रजहच्च नाना ।

अंगांगिभावात्तव वस्तु यत्तत् क्रमेण वाग्वाच्यमनन्तरूपम् ॥ ५ ॥

तदो दव्वगुणे पमाणे परूविदे दव्वं परूविदं चेव । एवं सुत्ते दव्वपमाणाणं परूवणा अत्थि त्ति दुंदसमासो वि ण विरुज्झदे । सेससमासाणमेत्थ संभवो णत्थि । ते सव्वे पि समासा केत्थिया ? छच्चेव भवन्ति । उच्चं च—

बहुव्रीह्यव्ययीभावो द्वन्द्वस्तत्पुरुषो द्विगुः ।

कर्मधारय इत्येते समासाः षट् प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥

किमिदि इदरोस्ति संभवो णत्थि ? एत्थ तदत्थाभावादो । को तेसिमत्थो ?

एक द्रव्यमें अतीत, अनागत और 'अपि' शब्दसे वर्तमान पर्यायरूप जितने अर्थ-पर्याय और व्यंजनपर्याय हैं तत्प्रमाण वह द्रव्य होता है ॥ ४ ॥

यद्यपि इसप्रकार द्रव्य और प्रमाणमें भेद रहना आवे, फिर भी द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके द्वारा ही द्रव्यकी प्ररूपणा हो सकती है, क्योंकि, द्रव्यके गुणोंकी प्ररूपणाके बिना द्रव्यप्ररूपणाका कोई उपाय नहीं है । कहा भी है—

अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नानास्वरूपताको न छोड़ता हुआ वह द्रव्य एक है और अन्वयरूपसे एकपनेको नहीं छोड़ता हुआ वह अपने गुणों और पर्यायोंकी अपेक्षा नाना है । इसप्रकार अनन्तरूप जो वस्तु है वही, हे जिन, आपके मतमें क्रमशः अंगांगिभावसे वचनोंद्वारा कही जाती है ॥ ५ ॥

अतः द्रव्यके गुणरूप प्रमाणके प्ररूपण कर देने पर द्रव्यका कथन हो ही जाता है । इसप्रकार सूत्रमें द्रव्य और प्रमाणकी प्ररूपणा है ही, अतएव द्वन्द्वसमास भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है । इसप्रकार तत्पुरुष, कर्मधारय और द्वन्द्व समासको छोड़कर शेष समासोंकी यहाँ संभावना नहीं है ।

शंका—वे संपूर्ण समास कितने हैं ?

समाधान—वे समास छह ही हैं । कहा भी है—

बहुव्रीहि, अव्ययीभाव, द्वन्द्व, तत्पुरुष, द्विगु और कर्मधारय, इसप्रकार ये छह समास कहे गये हैं ॥ ६ ॥

शंका—यहाँ द्रव्यप्रमाण इस पदमें उपर्युक्त तीन समासोंको छोड़कर दूसरे समासोंकी संभावना क्यों नहीं है ?

बहिरथो बहुव्रीहिः परं तत्पुरुषस्य च ।

पूर्वमव्ययीभावस्य द्वन्द्वस्य तु पदे पदे ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वकस्तत्पुरुषो द्विगुः समासः, यथा पञ्चनदमित्यादि । एकाधिकरणः तत्पुरुषः कर्मधारय इति । एत्थ चोदगो भणदि—संखा एका चेव, एगवदिरिच्छदुवादीण-मभावादो । सा च एकसंखा सव्वपदत्थाणमत्थि चि जाणिज्जदि, अण्णहा तेसिमत्थि-चाणुववचीदो । तदो किं तीए संखापरूषणाए इदि । एत्थ परिहारो बुच्चदे—सयल-पयत्थाणं जदि एका चेव संखा णियमेण भवदि तो सव्वपदत्थाणं एकादो अव्वदि-रित्ताणं एगत्तं पसज्जेज्ज । तहा च एगद्वदंसणे सयलद्वदंसणं, एगद्वविणासे सयलद्व-विणासो, एयद्वुप्पत्तीए सयलद्वुप्पत्ती जाएज्ज । ण च एवं, तहा अदंसणादो । तम्हा पदत्थभेदो इच्छिदव्वो । संते तव्वभेदे तत्थ द्वियसंखाए भेदो भवदि चेव, भिण्णद्वद्विय-संखाणाणमेगत्तविरोधादो । होदु एकसंखा चेव बहुवा, ण तदो अण्णा संखा चे ण,

समाधान—क्योंकि यहां पर उनका अर्थ घटित नहीं होता है, इसलिये अन्य समासोंका ग्रहण नहीं किया ।

शंका—उन छहों समासोंका क्या अर्थ है ?

समाधान—अन्य अर्थग्रधान बहुव्रीहि समास है । उत्तर पदार्थग्रधान तत्पुरुष समास है । अव्ययीभाव समासमें पूर्व पदार्थग्रधान है । द्वन्द्व समासकी प्रत्येक पदमें प्रधानता रहती है ॥ ७ ॥

संख्यापूर्वक तत्पुरुषको द्विगु समास कहते हैं, जैसे पंचनद इत्यादि । जहां पर दो पदार्थोंका एक आधार दिखाया जाता है ऐसे तत्पुरुषको कर्मधारय समास कहते हैं ।

शंका—यहां पर शंकाकार कहता है कि संख्या एकरूप ही है, क्योंकि, एकको छोड़कर दो आदिक संख्याएं नहीं पाई जाती हैं । और वह एकरूप संख्या संपूर्ण पदार्थोंमें रहती है ऐसा जाना जाता है । यदि ऐसा न माना जाय तो उन संपूर्ण पदार्थोंका अस्तित्व ही नहीं बन सकता है, इसलिये यहां पर उस संख्याकी प्ररूपणासे क्या प्रयोजन है ?

समाधान—आगे उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं । संपूर्ण पदार्थोंके नियमसे एक ही संख्या होती है, यदि ऐसा मान लिया जाय तो वे संपूर्ण पदार्थ एकरूप संख्यासे अभिन्न हो जाते हैं, इसलिये उन सबको एकत्वका प्रसंग आ जाता है । और ऐसा मान लेने पर एक पदार्थका ज्ञान होने पर संपूर्ण पदार्थोंका ज्ञान, एक पदार्थके विनाश होने पर संपूर्ण पदार्थोंका विनाश और एक पदार्थकी उत्पत्ति होने पर संपूर्ण पदार्थोंकी उत्पत्ति होने लगेगी । परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा देखा नहीं जाता है, इसलिये पदार्थोंमें भेद मान लेना चाहिये । इसप्रकार पदार्थोंमें भेदके सिद्ध हो जाने पर उनमें रहनेवाली संख्यामें भेद सिद्ध हो ही जाता है, क्योंकि, अनेक पदार्थोंमें रहनेवाली संख्याओंमें एकत्व अर्थात् अभेद माननेमें विरोध आता है ।

शंका—एक यह संख्या ही अनेक रूप हो जाओ, परंतु उससे भिन्न संख्या नहीं

एकस्से बहुत्त-विरोधादो । एगत्तं पडि समाणत्तणेण एगत्तमावण्णाए दब्ब-खेत्त-काल-भावभेदेण णाणत्तमुवगदाए एकसंखाए ण बहुत्तं विरुज्झदे चेज्जदि एवं तो एगसंखादो कथंचि भेदा दुवादिसंखाए भेदो किमिदि ण इच्छिज्जदे । कहं भेदो चे, दब्बादिभेदं पडुच्च; तदो चेव दुब्भावो समाणत्तदंसणादो । दोण्हमेगत्तं दब्बद्वियणयविवक्खादो । पज्जवद्वियणये विवक्खिखदे एकसंखादो सेसेकसंखा वदिरित्तेत्ति णाणत्तं । णेगमणए विवक्खिखदे दुवादिसावो । एत्थ पुण णेगमणयविवक्खादो संखाभेदो गहेदव्वो । यथावस्त्वव-बोधः अनुगमः, केवलि-श्रुतकेवलिभिरनुगतानुरूपेणावगमो वा । द्रव्यप्रमाणस्य द्रव्य-प्रमाणयोर्वा अनुगमः द्रव्यप्रमाणानुगमः, तेन द्रव्यप्रमाणानुगमेनेति निमित्ते तृतीया । दुविहो णिद्देसो, सोदारणं जहा णिच्छयो होदि तहा देसो णिद्देसो । कुतीर्थपाखण्डिनः

पार्ज जाती है ?

समाधान — ऐसा नहीं है, क्योंकि, एक संख्याको बहुतरूप माननेमें विरोध आता है ।

शंका—एक यह संख्या एकत्वके प्रति समान होनेसे एकरूप है, और द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावके भेदसे नानारूप है, इसलिये एक संख्यामें बहुतव्य विरोधको प्राप्त नहीं होता है ?

प्रतिशंका—यदि ऐसा है तो एक संख्यासे कथंचित् भिन्न होनेके कारण दो आदि संख्याओंका उससे भेद क्यों नहीं मान लेते हो ?

शंका—एक संख्यासे दो आदि संख्याओंका भेद कैसे है ?

समाधान — द्रव्य, क्षेत्र आदि भेदोंकी अपेक्षासे दो आदि संख्याओंका भेद है और इसीलिये संख्याओंमें दो आदि रूपता बन जाती है, क्योंकि, द्रव्य आदि भेदोंके साथ दो आदि संख्यारूप भेदोंकी समानता देखी जाती है ।

द्रव्यार्थिकनयकी विवक्षासे एक और नाना इन दोनोंमें एकत्व है । पर्यायार्थिकनयकी विवक्षा होने पर विवक्षित एक संख्यासे शेष एक संख्याएं भिन्न हैं, इसलिये उनमें नानात्व है । तथा नैगमनयकी विवक्षा होने पर द्वित्व आदि भाव बन जाता है । इसप्रकार ( संख्याके कथंचित् एकरूप और कथंचित् नानारूप सिद्ध हो जाने पर उनमेंसे ) यहां प्रकृतमें तो नैगमनयकी विवक्षासे संख्याभेद ही ग्रहण करना चाहिये ।

वस्तुके अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते हैं । अथवा, केवली और श्रुतकेवलियोंके द्वारा परंपरासे आये हुए अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते हैं । द्रव्यगत प्रमाणके अथवा द्रव्य और प्रमाणके अनुगमको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं । उससे अर्थात् द्रव्यप्रमाणानुगमकी अपेक्षा, इसप्रकार द्रव्यप्रमाणानुगम पदके साथ सूत्रमें जो तृतीया विभक्ति जोड़ी है वह निमित्तरूप अर्थमें जानना चाहिये ।

निर्देश दो प्रकारका है । जिस प्रकारके कथन करनेसे श्रोताओंको पदार्थके विषयमें

अतिशय कथनं वा निर्देशः । स द्विविधः द्विप्रकारः शरीरस्वभावरूपप्रकृतिशीलधर्मानां निर्देश इव । ओषेण, ओषं वृन्दं समूहः संपातः समुदयः पिण्डः अवशेषः अभिन्नः सामान्यमिति पर्यायशब्दाः । गत्यादिमार्गस्थानैरविशेषितानां चतुर्दशगुणस्थानानां प्रमाणप्ररूपणमोघनिर्देशः । चतुर्दशगुणस्थानविशिष्टसकलजीवराशिप्ररूपणादादेशः किञ्च स्यादिति चेन्न, सर्वजीवराशिनिरूपणं प्रति प्रतिज्ञाभावात् । क प्रतिज्ञास्याचार्यस्येति चेत्, जीवसमासप्रमाणनिरूपणे प्रतिज्ञा । सा कुतोऽवसीयत इति चेत्, ' एतो इमेसि चोद्दसणं जीवसमासाणं ' इत्यादिस्मृतादवसीयते । सर्वजीवराशिव्यतिरिक्तचतुर्दशगुणस्थानानामभावाच्चापि सर्वजीवराशिरैव निरूपितस्यादिति चेन्न, जीवसमुदायस्या-  
निश्चय होता है उस प्रकारके कथन करनेको निर्देश कहते हैं । अथवा, कुतार्थ अर्थात् सर्वथा एकान्तवादके प्रस्थापक पाखण्डियोंको उल्लंघन करके अतिशयरूप कथन करनेको निर्देश कहते हैं । वह निर्देश शरीरके स्वभाव, रूप, प्रकृति, शील और धर्मके निर्देशके समान दो प्रकारका है । उनमेंसे एक ओघनिर्देश है । ओघ, वृन्द, समूह, संपात, समुदय, पिण्ड, अवशेष, अभिन्न और सामान्य ये सब पर्यायवाची शब्द हैं । इस ओघनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार हुआ कि गत्यादि मार्गस्थानोंसे विशेषताको नहीं प्राप्त हुए केवल चौदहों गुणस्थानोंके अर्थात् चौदहों गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण करना ओघनिर्देश है ।

शंका—वह ओघनिर्देश चौदहों गुणस्थानविशिष्ट संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाला होनेसे आदेशनिर्देश क्यों नहीं कहलाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघनिर्देशमें संपूर्ण जीवराशिके निरूपणकी प्रतिज्ञा नहीं की गई है ।

शंका—तो फिर आचार्यने ओघनिर्देशकी किस विषयमें प्रतिज्ञा की है ?

समाधान—आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके ( गुणस्थानोंके ) प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है ।

शंका—आचार्यने ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके प्रमाणके निरूपणमें प्रतिज्ञा की है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—' एतो इमेसि चोद्दसणं जीवसमासाणं ' इत्यादि श्रुतसे जाना जाता है कि ओघनिर्देशसे जीवसमासोंके विषयमें आचार्यकी प्रतिज्ञा है ।

शंका—संपूर्ण जीवराशिको छोड़कर चौदह गुणस्थान पाये नहीं जाते हैं, इसलिये चौदह गुणस्थानोंके निरूपण करने पर भी तो संपूर्ण जीवराशिका ही निरूपण हो जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघनिर्देशके निरूपणमें समस्त जीवसमुदाय अविध-  
क्षित है ।

विशेषार्थ—यद्यपि गुणस्थानोंमें संपूर्ण जीवराशिका अन्तर्भाव हो जाता है, फिर भी एक जीवके भी एक पर्यायमें संपूर्ण गुणस्थान संभव हैं, इसलिये यह कहा गया है कि ओघनिर्देशमें

विश्वस्तित्वात् । आदेसेण, आदेशः पृथग्भावः पृथक्करणं विभजनं विभक्तीकरणमित्यादयः पर्यायशब्दाः । गत्यादिविभिन्नचतुर्दशजीवसमासप्ररूपणमादेशः । 'जहा उदेसो तथा णिहेसो' इदि कट्टु आदेसं थप्पं काट्ठण ओघपरूवणहुमुत्तरसुत्तं भणदि—

**ओघेण मिच्छाइही दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता' ॥ २ ॥**

ओघसदुच्चारणाभावे ओघादेसपरूवणासु कदमेसा परूवणेत्ति सोदारस्स चित्तं मा घुलिससदि त्ति तच्चित्तस्स थिरनुप्पायणट्ठं ओघेणेत्ति भाणिदं । मिच्छादिट्ठिग्गहणाभावे कदमस्स जीवसमासस्स इमा परूवणा इदि सोदारस्स संदेहो होज्ज, तस्स संदेहुप्पत्ति-णिवारणट्ठं मिच्छादिट्ठिग्गहणं कदं । दव्वपमाणेणेत्ति अभिणय केवडिया इदि सामण्णेण पुच्छिदे इमा पुच्छा किं दव्वविसया, किं खेत्तविसया, किं कालविसया, किं वा भाव-विसया, इदि संदेहो होज्ज; तण्णिवारणट्ठं दव्वपमाणग्गहणं कदं । केवडिया इदि पुच्छा ।

संपूर्ण जीवराशिके कथन करनेकी विवक्षा नहीं की गई है ।

आदेशसे कथन करनेको आदेशनिर्देश कहते हैं । आदेश, पृथग्भाव, पृथक्करण, विभजन, विभक्तीकरण इत्यादिक पर्यायवाची शब्द हैं । आदेशनिर्देशका प्रकृतमें स्पष्टीकरण इसप्रकार है कि गति आदि मार्गणाओंके भेदोंसे भेदको प्राप्त हुए चौदह गुणस्थानोंका प्ररूपण करना आदेशनिर्देश है ।

'उद्देशके अनुसार निर्देश करना चाहिये' ऐसा समझकर आदेशको स्थगित करके पहले ओघनिर्देशका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

**ओघसे मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं, अनन्त हैं ॥ २ ॥**

ओघ शब्दके उच्चारण नहीं करने पर ओघ और आदेश प्ररूपणाओंमेंसे 'यह कौनसी प्ररूपणा है' इसप्रकार श्रोताका चित्त मत घुले, इसलिये उसके चित्तकी स्थिरता उत्पन्न करनेके लिये सूत्रमें 'ओघसे' यह पद कहा है । सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदके ग्रहण नहीं करने पर कौनसे जीवसमासकी यह प्ररूपणा है इसप्रकार श्रोताको संदेह हो सकता है, इसलिये उसकी सन्देहोत्पत्तिके निवारण करनेके लिये सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदका ग्रहण किया है । सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाणसे' इस पदको न कहकर 'कितने हैं' इसप्रकार सामान्यसे पूछने पर यह पुच्छा क्या द्रव्यविषयक है, क्या क्षेत्रविषयक है, क्या कालविषयक है, अथवा क्या भावविषयक है, इसप्रकारका सन्देह हो सकता है, अतः उस सन्देहके निवारणार्थ सूत्रमें 'द्रव्यप्रमाण' पदको ग्रहण किया है । 'कितने हैं' यह पद प्रश्नरूप है ।

पुच्छामंतरेण 'ओधेण मिच्छाद्विपमाणेण अणंता' इदि किण्णं वुच्चदे ? न, अस्य स्वकर्तृत्वनिराकरणद्वारेणाप्तकर्तृत्वप्रतिपादनफलत्वात् । तदपि किं फलमिति चेन्न, 'वक्तृप्रामाण्याद्वचनप्रामाण्यम्' इति न्यायात् वचनस्यास्य प्रामाण्यप्रदर्शनफलम् । भूतबल्यादीनामाचार्याणां क व्यापार इति चेन्न, तेषां व्याख्यातृत्वाभ्युपगमात् । अणंता इदि पमाणं वुच्चं, एवं वुच्चे संखेज्जासंखेज्जाणं पडिणियची । तं च अणंतमणेयविधं । तं जहा—

णामं हवणा दवियं सस्सद गणणापदेसियमणंतं ।

एगो उमयादेसो वित्थारो सब्ब भायो य ॥ ८ ॥

तत्थ णामाणंतं जीवाजीवमिस्सदव्वस्स कारणणिरवेक्खा सण्णा अणंता इदि । जं तं हवणाणंतं णाम तं कट्ठकम्मेसुं वा चिचकम्मेसुं वा पोचकम्मेसुं वा लेप्पकम्मेसुं वा लेण-

शंका—'कितने हैं' इसप्रकारके प्रश्नके बिना ही 'ओधनिर्देशसे मिथ्याद्विप जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अनन्त हैं' इसप्रकारका सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तके कर्तृत्वका प्रतिपादन करना 'कितने हैं' इस पदके सूत्रमें देनेका फल है ।

शंका—अपने कर्तृत्वका निराकरण करके आप्तकर्तृत्वके प्रतिपादन करनेका भी क्या फल है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'वक्ताकी प्रमाणतासे वचनोंमें प्रमाणता आती है' इस न्यायके अनुसार 'अनन्त हैं' इस वचनकी प्रमाणता दिखाना इसका फल है ।

शंका—जब कि 'ओधेण मिच्छाद्विप' इत्यादि वचनके कर्ता आप्त सिद्ध हो जाते हैं तो फिर भूतबलि आदि आचार्योंका व्यापार कहाँ पर होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उनको आप्तके वचनोंका व्याख्याता स्वीकार किया है, इसलिये आप्तके वचनोंके व्याख्यान करनेमें उनका व्यापार होता है ।

सूत्रमें दिये गये 'अणंता' इस पदके द्वारा मिथ्याद्विप जीवोंका प्रमाण कहा गया है । मिथ्याद्विप जीव अनन्त हैं, इसप्रकार कथन करने पर संख्यात और असंख्यातकी निवृत्ति हो जाती है । वह अनन्त अनेक प्रकारका है, जो इसप्रकार है—

नामानन्त, स्थापनानन्त, द्रव्यानन्त, शश्वतानन्त, गणनानन्त, अप्रदेशिकानन्त, एकानन्त, उभयानन्त, विस्तारानन्त, सर्वानन्त और भावानन्त, इसप्रकार अनन्तके ग्यारह भेद हैं ॥ ८ ॥

उनमेंसे कारणके बिना ही जीव, अजीव और मिश्र द्रव्यकी अनन्त ऐसी संज्ञा करना नाम अनन्त है ।

काष्ठकर्म, चित्रकर्म, पुस्तकर्म, लेप्यकर्म, लेनकर्म, शैलकर्म, भित्तिकर्म, गृहकर्म,

१ सौवणिखदरसो गकठदिस्स × × जहावरूणे वडियहवणा × × चित्तरिहिंतो वण्णसेसेहिं णिक्कणाणि

कम्मेसु वा सेलकम्मेसु वा भित्तिकम्मेसु वा गिहकम्मेसु वा मंडकम्मेसु वा दंतकम्मेसु वा अकखो वा वराडयो वा जे च अण्णे डुवणाए डुविदा अणंतमिदि तं सच्चं डुवणाणंतं णाम । जं तं दव्वाणंतं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमो गंधो सुदणाणं सिद्धंतो पवयणमिदि एगद्धो । अत्रोपयोगिनः श्लोकाः—

पूर्वापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोषसंहतेः ।

द्योतकः सर्वभाषानामाप्तव्याहृतिरागमः ॥ ९ ॥

आगमो ह्याप्तवचनमातं दोषक्षयं विदुः ।

त्यक्तदोषोऽनृतं वाक्यं न ब्रूयाद्व्यसंभवात् ॥ १० ॥

रागाद्वा द्वेपाद्वा मोहाद्वा वाक्यमुच्यते ह्यनृतम् ।

यस्य तु नैते दोषास्तस्यानृतकारणं नास्ति ॥ ११ ॥

तत्थ आगमदो दव्वाणंतं अणंतपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो । अवगम्य विस्मृता-

भेदकर्म अथवा दन्तकर्ममें अथवा अक्ष (पासा) हो या कौड़ी हो, अथवा दूसरी कोई वस्तु हो उसमें, यह अनन्त है, इसप्रकारकी स्थापना करना यह सब स्थापनानन्त है ।

द्रव्यानन्त आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । आगम, ग्रन्थ, श्रुतज्ञान, सिद्धान्त और प्रवचन ये एकार्थवाची शब्द हैं । इस विषयमें उपयोगी श्लोक हैं—

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित और संपूर्ण पदार्थोंके द्योतक आप्तवचनको आगम कहते हैं ॥ ९ ॥

आप्तके वचनको आगम जानना चाहिये और जिसने अम्म, जरा आदि अठारह दोषोंका नाश कर दिया है उसे आप्त जानना चाहिये । इसप्रकार जो त्यक्तदोष होता है वह असत्यवचन नहीं बोलता है, क्योंकि, उसके असत्यवचन बोलनेका कोई कारण ही संभव नहीं है ॥ १० ॥

रागसे, द्वेषसे अथवा मोहसे असत्य वचन बोला जाता है, परंतु जिसके ये रागादि दोष नहीं रहते हैं उसके असत्य वचन बोलनेका कोई कारण भी नहीं पाया जाता है ॥ ११ ॥

अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले परंतु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीवको

चित्तकम्माणि णाम । वत्थेस पाण्णालियकसदादीहिं जाणिदूणं किरियाणं पिप्पासाणि रुवाणि छिपण्णि वा कदाणि पोत्तकम्माणि णाम । लेप्पयारेहि लेविऊणं जाणि णिप्पाइदाणि रुवाणि ताणि लेप्पकम्माणि णाम । एत्थं रट्टइइहि जाणि पव्वेदेस वडिदिणा रुवाणि ताणि लेणकम्माणि णाम । वडूइपिण्णं पासादेस वडिदरुवाणि गिहकम्माणि णाम । तेण चैव कुड्डेस वडिदरुवाणि भित्तिकम्माणि णाम । दंतिदेतादिस्स वडिदरुवाणि दंतकम्माणि णाम । सिंहेहि वडिदरुवाणि मिब्बकम्माणि णाम । यवला १२०९.

१ अनु, पत्र १६४, टीका.

वगमानां अवगमिष्यतां वा किमिति द्रव्यागमव्यपदेशो न स्यादिति चेन्न, शक्तिरूपो-  
पयोगस्य श्रुतावरणक्षयोपशमलक्षणस्य साम्प्रतं तत्रातस्वात् । आगमादणो णोआगमो । जं  
तं णोआगमदो दव्वाणंतं तं ति विहं, जाणुगसरीरदव्वाणंतं भवि यदव्वाणंतं तव्वदिरिच-  
दव्वाणंतं चेदि । तत्थ जाणुगसरीरदव्वाणंतं अणंतपाहुडजाणुगसरीरं तिकालजादं । कथं  
अणंतपाहुडादो आधारत्तणेण वदिरिचस्स सरीरस्स अणंतववएसो ? ण, असिसदं धावदि  
परसुसदं धावदि इचेवमादिसु तदो वदिरिचस्स वि आधारपुरुस्स आधेयववदेसदं-  
णादो । भवदु वट्टमाणमिह आधारस्स आधेयोवयारो णादीदाणागदकालेसु त्ति ? ण एस दोसो,  
णट्ट-भविस्सरज्जमिह वि पुरिसे राया आगच्छदि त्ति ववहारदंसणादो । पज्जयपज्जणो

आगमद्रव्यानन्त कहते हैं ।

शंका—जिनको पहले ज्ञान था किंतु पश्चात् विस्मृत हो गया है, अर्थात् छूट गया है अथवा जो भविष्यकालमें जानेंगे उन्हें भी द्रव्यागम यह संज्ञा क्यों न दी जाय ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, श्रुतज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम है लक्षण जिसका ऐसा शक्तिरूप उपयोग वर्तमानमें उन जीवोंके नहीं पाया जाता है, इसलिये उन्हें द्रव्यागम यह संज्ञा नहीं प्राप्त हो सकती है ।

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं । वह नोआगम द्रव्यानन्त तीन प्रकारका है, ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यानन्त, भव्य नोआगमद्रव्यानन्त और तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त । उनमेंसे, अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवालेके तीनों कालोंमें होनेवाले शरीरको ज्ञायकशरीर नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं ।

शंका—अनन्तविषयक शास्त्र अर्थात् अनन्तविषयक शास्त्रका ज्ञाता आधेय है और उसका शरीर आधार है, अतएव अनन्तविषयक शास्त्रके ज्ञातासे आधारतया शरीर भिन्न है, इसलिये उस शरीरको अनन्त यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सौ तरवारें ( सौ तरवारवाले ) दौड़ती हैं, सौ फरसा ( सौ फरसावाले ) दौड़ते हैं इत्यादि प्रयोगोंमें तरवार और फरसासे भिन्न परंतु उनके आधारभूत पुरुषोंमें भी जिसप्रकार आधेयरूप तरवार और फरसा यह संज्ञा देखी जाती है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी आधारभूत शरीरमें आधेयका व्यवहार जान लेना चाहिये ।

शंका—वर्तमान कालमें आधारभूत शरीरमें आधेयका उपचार भले ही हो जाओ, परंतु अतीत और अनागतकालीन शरीरोंमें यह व्यवहार नहीं हो सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसकी राजारूप पर्याय नष्ट हो गई है, अथवा जिसे भविष्यमें राजारूप पर्याय प्राप्त होगी, ऐसे पुरुषमें भी जिसप्रकार ' राजा जाता है ' यह व्यवहार देखा जाता है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये ।

शंका—पर्याय और पर्यायोंमें भेद न होनेके कारण वहां पर आधार-आधेयभाव नहीं



भेदाभावादो ण तत्थ आधाराधेयभावो । अह जइ एत्थ वि आधाराधेयभावो होज्ज,  
जाणुमसरीरभविषाणं पुणरुत्तदा डुक्खेज्जेत्ति । जदि एवं, तो एदं परिहरिय धणुसदं  
भुंजदीदि एदं गहेयव्वं । न धनुर्घृतायामेवायं व्यवहारः, धनूण्यपसार्यं भुंजानेष्वपि  
धनुःशतं भुंक्त इति व्यवहारदर्शनात् । न घृतकुम्भदृष्टान्तो घटते, घटस्य घृतव्यप-  
देशानुपलम्भतो दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकयोः साधर्म्याभावात् । जं तं भविषाणंतं तं अणंत-

पाया जाता है । फिर भी यदि यहां भी आधार-आधेयभाव माना जावे; तो ज्ञायकशरीर और  
भावी इन दोनोंके कथनमें पुनरुक्तता प्राप्त हो जायगी ?

समाधान— यदि ऐसा है तो इस दृष्टान्तको छोड़कर 'सौ धनुष (सौ धनुषवाले)  
भोजन करते हैं' प्रकृतमें इस दृष्टान्तको लेना चाहिये । धनुषोंके धारण करनेरूप अवस्थामें  
ही सौ धनुष भोजन करते हैं यह व्यवहार नहीं होता है किंतु धनुषोंको दूर करके भोजन  
करनेवालोंमें भी 'सौ धनुष भोजन करते हैं' इसप्रकार व्यवहार देखा जाता है । किन्तु यहां पर  
घृतकुम्भका दृष्टान्त लागू नहीं होता है, क्योंकि, घटके घृत इसप्रकारका व्यवहार नहीं पाया  
जानेके कारण दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें साधर्म्य नहीं है ।

विशेषार्थ— नोआगमद्रव्यनिक्षेपके तीन भेद किये हैं, ज्ञायकशरीर, भावी और  
तद्व्यतिरिक्त । इनमेंसे ज्ञायकशरीरमें ज्ञाताका त्रिकालभावी शरीर लिया जाता है और  
भावीमें जो वर्तमानमें ज्ञाता नहीं है किंतु आगे होगा उसका ग्रहण किया जाता है । अब यदि  
जो पर्याय पहले हो चुकी है या आगे होगी उसे ही ज्ञायकशरीरका अतीत और भावी मान  
लें तो ज्ञायकशरीरभावी नोआगमद्रव्यमें और भावी नोआगमद्रव्यमें कोई अन्तर नहीं रह  
जायगा । इसलिये ज्ञायकशरीरमें संबन्धप्राप्त भिन्न आधारमें आधेयका उपचार किया जाता है  
और भावीमें वही वस्तु आगे होनेवाली पर्यायरूपसे कही जाती है ऐसा समझना चाहिये ।  
यद्यपि ऊपर आधारमें आधेयका उपचार दिखानेके लिये 'असिसदं धावदि' इत्यादि  
दृष्टान्त दे आये हैं जिससे यह समझमें आ जाता है कि जिसप्रकार तरवारधारी सौ  
पुरुषोंके दौड़नेपर सौ तरवारें दौड़ती हैं इत्यादि रूपसे व्यवहार होता है उसीप्रकार अनन्त  
आदि विषयक शास्त्रके ज्ञाताके शरीरको भी नोआगमद्रव्यानन्त आदि कह सकते हैं । परंतु  
जो शरीर अभी प्राप्त नहीं हुआ है या प्राप्त होगा उसे कैसे नोआगमद्रव्यानन्त आदि  
कह सकते हैं, क्योंकि, उपचार संबद्ध पदार्थमें होता है । इसका समाधान यह है कि  
जिसप्रकार धनुषोंको दूर रखकर भोजन करने पर भी 'धणुसदं भुंजदि' यह व्यवहार बन  
जाता है, उसीप्रकार अतीत और अनागत शरीरकी अपेक्षा भी उपचारसे आधार-आधेयभाव  
मान कर नोआगमद्रव्यानन्त आदि संज्ञा बन जाती है । प्रकृतमें घृतकुम्भका दृष्टान्त इसलिये  
लागू नहीं होता है कि घटमें घी इसप्रकारका व्यवहार नहीं होनेसे वहां आधार-आधेयभावकी  
संभावना ही नहीं है ।

प्राहुडजाणुगभावी जीवो । जं तं तच्चदिरिचद्व्याणंतं तं दुविहं, कम्माणंतं णोकम्मा-  
णंतमिदि । जं तं कम्माणंतं तं कम्मस्स पदेसा । जं तं णोकम्माणंतं तं कडय-रुजगदीव-  
समुदादि एयपदेसादि पोग्गलद्वयं वा । आगममधिगम्य विस्मृतः क्वान्तर्भवतीति चेत्-  
द्वितिरिक्तद्रव्यानन्ते । जं तं सस्सदाणंतं तं धम्मादिद्वयगयं । कुदो ? सासयत्तेण  
द्व्याणं विणासाभावादो । जं तं गणणाणंतं तं बहुवर्णणीयं सुगमं च । जं तं अपदेसियाणंतं  
तं परमाणू । नोक्कर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यत्वं प्रत्यविशिष्टयोः शाश्वताप्रदेशानन्तयोरन्तर्भावः  
किमिति न स्यादिति चेत् ? उच्यते—न तावच्छाश्वतानन्तं नोक्कर्मद्रव्यानन्तेऽन्तर्भवति,  
तयोर्भेदात् । अन्तो विनाशः, न विद्यते अन्तो विनाशो यस्य तदनन्तम् । द्रव्यं शाश्वतम-  
नन्तं शाश्वतानन्तम् । नोक्कर्म च द्रव्यगतानन्त्यापेक्षया कटकदीनां वास्तवान्ताभावापेक्षया  
च अनन्तम्, ततो नानयोरैकत्वमिति । एकप्रदेशे परमाणौ तद्व्यतिरिक्तापरो द्वितीयः

जो जीव भविष्यकालमें अनन्तविषयक शास्त्रको जानेगा उसे भावी-नोआगमद्रव्यानन्त  
कहते हैं । तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त दो प्रकारका है, कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त  
और नोक्कर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त । ज्ञानावरणादि आठ कर्मोंके प्रदेशोंको कर्मतद्व्य-  
तिरिक्त नोआगमद्रव्यानन्त कहते हैं । कटक, रुचकवरद्वीप और समुद्रादि अथवा एक प्रदेशादि  
पुद्गलद्रव्य ये सब नोक्कर्मतद्व्यतिरिक्त-नोआगमद्रव्यानन्त हैं ।

शंका—जो आगमका अध्ययन करके भूल गया है उसका द्रव्यनिक्षेपके किस भेदमें  
अन्तर्भाव होता है ?

समाधान—ऐसे जीवका तद्व्यतिरिक्त नोक्कर्मद्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव होता है ।

शाश्वतानन्त धर्मादि द्रव्योंमें रहता है, क्योंकि, धर्मादि द्रव्य शाश्वतिक होनेसे  
उनका कभी भी विनाश नहीं होता है ।

जो गणनानन्त है वह बहुवर्णनीय और सुगम है । एक परमाणुको अप्रदेशिकानन्त  
कहते हैं ।

शंका—द्रव्यत्वके प्रति अविशिष्ट ऐसे शाश्वतानन्त और अप्रदेशानन्तका नोक्कर्म-  
द्रव्यानन्तमें अन्तर्भाव क्यों नहीं हो जाता है ?

समाधान—शाश्वतानन्तका नोक्कर्मद्रव्यानन्तमें तो अन्तर्भाव होता नहीं है, क्योंकि,  
इन दोनोंमें परस्पर भेद है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं । अन्त विनाशको कहते हैं,  
जिसका अन्त अर्थात् विनाश नहीं होता है उसे अनन्त कहते हैं । जो धर्मादिक द्रव्य  
शाश्वत अनन्त है उसे शाश्वतानन्त कहते हैं । और नोक्कर्म द्रव्यगत अनन्तताकी अपेक्षा और  
कटकादिके वस्तुतः अन्तके अभावकी अपेक्षा अनन्त है, इसलिये इन दोनोंमें एकत्व नहीं  
हो सकता है । एकप्रदेशी परमाणुमें उस एक प्रदेशको छोड़कर अन्त इस संज्ञाको प्राप्त होने-  
वाला दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है, इसलिये परमाणु अप्रदेशानन्त है । ऐसी स्थितिमें

प्रदेशोऽन्तव्यपदेशभाक् नास्तीति परमाणुरप्रदेशानन्तः। तथा च कथमयं नोर्कर्मद्रव्यानन्ते द्रव्यगतानन्तसंख्यापेक्षया अनन्तव्यपदेशभाज्यन्तर्भवेत्। द्रव्यं प्रत्येकत्वं तत्रास्ति इति चेत् ? अस्तु तथैकत्वं न पुनरन्येनान्येन प्रकारेणायातानन्त्यं प्रति। जं तं एयाणंतं तं लोगमज्झादो एगसेहिं पेक्खमाणे अंताभावादो एयाणंतं। ण दव्वाणंते दव्वभेदमस्सि-  
ऊणाद्धिदे एदमणंतं पददि, एगदव्वस्सागासस्स पज्जवसाणंदंसाणाभावमस्सिदूणं हिदत्तादो। जहा अपारो सागरो, अथाहं जलमिदि। जं तं उभयाणंतं तं तथा चेव उभयदिसाए पेक्खमाणे अंताभावादो उभयादेसाणंतं। जं तं वित्थाराणंतं तं पदरागरेण आगासं पेक्खमाणे अंताभावादो भवदि। जं तं सव्वाणंतं तं घणागारेण आगासं पेक्खमाणे अंता-  
भावादो सव्वाणंतं भवदि। जं तं भावाणंतं तं हुविहं आगमदो णोआगमदो य। आगमदो भावाणंतं अणंतपाहुडजाणगो उवजुत्तो। जं तं णोआगमदो भावाणंतं तं तिकालज्जादं अणंतपज्जयपरिणदजीवादिदव्वं।

एदेसु अणंतेसु केण अणंतेण पयदं ? गणणाणंतेण पयदं। तं कथं जाणिज्जदि ?

द्रव्यगत अनन्त संख्याकी अपेक्षा अनन्त संज्ञाको प्राप्त होनेवाले नोर्कर्मद्रव्यानन्तमें यह अप्रदेशानन्त कैसे अन्तर्भूत हो सकता है, अर्थात् नहीं हो सकता है, इसलिये अप्रदेशानन्त भी स्वतन्त्र है।

शंका—द्रव्यके प्रति एकत्व तो उनमें पाया ही जाता है ?

समाधान—इन अनन्तोंमें यदि द्रव्यके प्रति एकत्व पाया जाता है तो रहा आवे, परंतु इतने मात्रसे इन अनन्तोंमें अन्य अन्य प्रकारसे आये हुए आनन्त्यके प्रति एकत्व नहीं हो सकता है।

लोकके मध्यसे आकाश-प्रदेशोंकी एक श्रेणीको देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे एकानन्त कहते हैं। द्रव्यभेदका आश्रय लेकर स्थित द्रव्यानन्तमें यह एकानन्त अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, यह एकानन्त एक आकाशद्रव्यका अन्त नहीं दिखाई देनेके कारण उसका आश्रय लेकर स्थित है, जैसे अपार समुद्र, अथाह जल इत्यादि। लोकके मध्यसे आकाश प्रदेशपंक्तिको दो दिशाओंमें देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे उभयानन्त कहते हैं। आकाशको प्रतरूपसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे विस्तरानन्त कहते हैं। आकाशको घनरूपसे देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे सर्वानन्त कहते हैं। आगम और नोआगमकी अपेक्षा भावानन्त दो प्रकारका है। अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके उपयोगसे उपयुक्त जीवको आगमभावानन्त कहते हैं। त्रिकालजात अनन्त पर्यायोंसे परिणत जीवादि द्रव्य नोआगमभावानन्त है।

शंका—इन ग्यारह प्रकारके अनन्तोंमेंसे प्रकृतमें किस अनन्तसे प्रयोजन है ?

समाधान—प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है।

‘मिच्छादिद्वी केवडिया’ इदि सिस्सेण पुच्छिदे ‘अणंता’ इदि पमाणपरूषणादो जाणि-  
ज्जदि। ण च सेस-अणंताणि पमाणपरूषयाणि तत्थ तधादंसणादो। जदि गणणाणंतेण पगदं  
सेस-दसविध-अणंतपरूषणं किमट्ठं कीरदे ? पुच्छदे—

अवगयणिवारणट्ठं पयदस्स परूषणाणिमित्तं च ।

संसयविणासणट्ठं तच्चत्यवधारणट्ठं च’ ॥ १२ ॥

उत्तं च पुत्वाहरिण्हि—

जत्थ बहू जाणेज्जो अपरिमिदं तत्थ णिक्खेवो सूरि ।

जत्थ बहू अ ण जाणइ चउत्थवो तत्थ णिक्खेवो’ ॥ १३ ॥

अधवा णिक्खेवविसिट्ठमेदं वणिज्जमाणं वत्तारस्सुण्णथोत्थाणं कुज्जा इदि  
णिक्खेवो कीरदे। तथा चोक्तम्—

प्रमाण-नयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते ।

युक्तं चायुक्तवद् भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ १४ ॥

शंका—यह कैसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है ?

समाधान—‘मिथ्यादृष्टि जीव कितने हैं’ इसप्रकार शिष्यके द्वारा पूछने पर ‘अनन्त  
हैं’ इत्यादि रूपसे प्रमाणका प्ररूपण करनेसे जाना जाता है कि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन  
है। इस गणनानन्तको छोड़कर शेष अनन्त प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले नहीं हैं, क्योंकि, शेष  
अनन्तोंमें गणनारूपसे कथन नहीं देखा जाता है।

शंका—यदि प्रकृतमें गणनानन्तसे प्रयोजन है तो गणनानन्तको छोड़कर शेष दश  
प्रकारके अनन्तोंका प्ररूपण यहां पर किसलिये किया है ?

समाधान—अप्रकृत विषयके निवारण करनेके लिये, प्रकृत विषयके प्ररूपण करनेके  
लिये, संशयका विनाश करनेके लिये, और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये यहां पर सभी  
अनन्तोंका कथन किया है ॥ १२ ॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहां जीवादि पदार्थोंके विषयमें बहुत जानना चाहे, वहां पर आचार्य सभीका निक्षेप  
करे। तथा जहां पर बहुत न जाने, तो वहां पर चार निक्षेप अवश्य करना चाहिये ॥ १३ ॥

अथवा निक्षेपके विना वर्णन किया गया यह विषय कदाचित् वक्ताको उन्मार्गमें ले  
जावे, इसलिये यहां पर सभी अनन्तोंका निक्षेप किया है। कहा भी है—

प्रमाण, नय और निक्षेपोंके द्वारा जिस पदार्थकी समीक्षा नहीं की जाती है उसका  
अर्थ युक्त होते हुए भी अयुक्तसा प्रतीत होता है और कभी अयुक्त होते हुए भी युक्तसा

ज्ञानं प्रमाणमित्याहुर्मुपायो न्यास उच्यते ।

नयो ज्ञातुमिप्रायो युक्तितोऽर्थपरिग्रहः' ॥ १५ ॥

जं तं गणणाणंतं तं पि तिविहं, परिचाणंतं जुत्ताणंतं अणंताणंतमिदि । अणंता इदि सामण्णेण युत्ते एदम्हि चेवाणंते मिच्छाइड्ढि-जीवा होंति इदरेसु अणंतेसु ण होंति चि ण जाणिज्जदे, अणंता इदि बहुवयणाणिदेसादो । जत्थ तिणिण वि अणंताणि अत्थि तस्स चेव अणंताणंतस्स गहणं हेदि इदि चे ण, मिच्छाइड्ढीणं बहुत्तमवेक्खिय बहुवयणुप्पत्तीदो । अह्वा तिणिण वि अणंताणि सभेदे अस्सिऊण अणंतवियप्पाणि । तत्थ एदस्स बहुत्तविवक्खाए बहुवयणं अण्णभेदस्स' णेदि ण जाणिज्जदे ? एत्थ परिहारो युच्चदे- 'अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि ण अवहिंरंति कालेण' चि ज्ञापकादवसीयते यथा अनन्तानन्ता मिथ्यादृष्टय इति, व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिरिति

प्रतीत होता है ॥ १४ ॥

विद्वान् पुरुष सम्यग्ज्ञानको प्रमाण कहते हैं, नामादिकके द्वारा वस्तुमें भेद करनेके उपायको न्यास या निक्षेप कहते हैं और ज्ञाताके अभिप्रायको नय कहते हैं । इसप्रकार युक्तिले अर्थात् प्रमाण, नय और निक्षेपके द्वारा पदार्थका ग्रहण अथवा निर्णय करना चाहिये ॥ १५ ॥

गणनानन्त तीन प्रकारका है, परीतानन्त, युक्तानन्त और अनन्तानन्त ।

शंका—सूत्रमें 'अणंता' इसप्रकार मिथ्यादृष्टियोंका परिमाण सामान्यरूपसे कहा गया है, पर इन्हे कथन करनेमात्रसे अनन्तके तीन भेदोंमेंसे इसी अनन्तमें मिथ्यादृष्टि जीव अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण पाया जाता है दूसरे अनन्तोंमें नहीं, यह बात नहीं जानी जाती है, क्योंकि, सूत्रमें अनन्तके किसी भी भेदका उल्लेख न करके केवल उसका बहुवचनरूपसे निर्देश किया है । जहां पर तीनों अनन्त पाये जाते हैं वहां उसी अनन्तानन्तका ग्रहण होता है, सो भी नहीं है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवोंके बहुत्वकी अपेक्षा करके अनन्त शब्दका बहुवचन प्रयोग बन सकता है । अथवा तीनों अनन्त अपने अपने भेदोंका आश्रय करके अनन्त विकल्परूप हैं । उनके इसी भेदकी विवक्षासे बहुवचन दिया है अन्य भेदकी अपेक्षासे नहीं, यह भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान—आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं—'मिथ्यादृष्टि जीव कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं' इस ज्ञापक सूत्रसे जाना जाता है कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं । अथवा, 'व्याख्यानसे

१ प्रतिपु 'प्रमाण नयं युक्तवत् । ज्ञानं प्रमाणं परिग्रहः' । इति एतेनैव पाठेनोक्तकारिकादयस्य सूचना प्राप्यते । दे. ( सं. प. गा. १०-११ )

२ प्रतिपु 'उपण्णभेदस्स' इति पाठः ।

न्यायाद्वा ।

जं तं अणंताणंतं तं पि तिविहं, जहण्णमुक्कस्सं मज्झिममिदि । तत्थ इमं होदि  
त्ति ण जाणिज्जदि जहण्णमणंताणंतं ण भवदि उक्कस्समणंताणंतं च भवदि ? 'जम्हि  
जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतस्सेव गहणं'  
इदि परियम्मवयणादो जाणिज्जदि अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतस्सेव गहणं होदि त्ति ।  
तं पि अणंताणंतवियप्पमत्थि त्ति इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदि ? जहण्णअणंताणंतादो  
अणंताणि वग्गण-ट्ठाणाणि उवरि अचुस्सरिऊण उक्कस्स-अणंताणंतादो अणंताणि वग्गण-  
ट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण अंतरे जिणदिट्ठमावो रासी धेत्तव्वो । अहवा तिण्णिवारवग्गिद-  
संवग्गिदरासीदो अणंतगुणो छदव्वपक्खित्तरासीदो अणंतगुणहीणो मिच्छाद्विट्ठिरासी होदि ।  
को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी ? उच्चदे- जहण्णमणंताणंतं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स

विशेषकी प्रतिपत्ति होती है ' ऐसा न्याय है जिससे भी जाना जाता है कि मिथ्यावादि जीव  
अनन्तानन्त होते हैं ।

ऊपर जो अनन्तानन्त कह आये हैं वह भी तीन प्रकारका है, जघन्य अनन्तानन्त,  
उत्कृष्ट अनन्तानन्त और मध्यम अनन्तानन्त ।

शंका — उन तीनों अनन्तानन्तोंमेंसे यहां पर जघन्य अनन्तानन्त नहीं होता है और  
उत्कृष्ट अनन्तानन्त होता है, ऐसा कुछ भी नहीं जाना जाता है ?

समाधान — ' जहां जहां अनन्तानन्त देखा जाता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात्  
मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण होता है ' इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें  
अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तका ही ग्रहण है ।

शंका — वह मध्यम अनन्तानन्त भी अनन्तानन्त विकल्परूप है, इसलिये उनमेंसे यहां  
कौनसा विकल्प लिया है, इस बातका केवल मध्यम अनन्तानन्तके कथन करनेसे ज्ञान  
नहीं होता है ?

समाधान — जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान ऊपर जाकर और उत्कृष्ट  
अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान नीचे आकर मध्यमें जिनेन्द्रदेवके द्वारा यथादृष्ट राशि यहां पर  
अनन्तानन्त पक्षसे ग्रहण करनी चाहिये । अथवा, जघन्य अनन्तानन्तके तीनवार वर्गित-  
संवर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी और छह द्रव्योंके  
प्रक्षिप्त करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी हीन मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण  
मिथ्यावादि जीवोंकी राशि है ।

शंका — तीन बार वर्गितसंवर्गित राशि कौनसी है ?

जहणमणंताणंतं दाऊण वगिदसंवगिदं काऊणुप्पणमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण  
तत्थेक्करासिं विरलेऊण अवरं महारासिपमाणं रुवं पडि दाऊण वगिदसंवगिदं काऊण  
पुणो उड्ढिमहारासिं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेक्करासिपमाणं विरलेऊण अवरमहारासिं  
विरलणरासिरुवं पडि दाऊण अण्णोणणम्भासे कदे तिण्णिवारवगिदसंवगिदरासीं णाम ।

समाधान—जघन्य अनन्तानन्तका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक  
एकके ऊपर जघन्य अनन्तानन्तको देयरूपसे देकर उनके परस्पर वर्गितसंवर्गित करने पर  
जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी दो पंक्ति करनी चाहिये, अर्थात् तत्प्रमाण राशिको दो स्थानों-  
पर स्थापित करना चाहिये । उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके  
प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर और उनके परस्पर  
वर्गितसंवर्गित करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्ति करनी चाहिये ।  
उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें  
स्थापित महाराशिको देयरूपसे देकर उनके परस्पर गुणा करने पर जो महाराशि उत्पन्न होती  
है उसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कहते हैं ।

उदाहरण ( वीजगणितसे )— जघन्य अनन्तानन्त=क

$$\begin{aligned}
 &\text{एकवार वर्गितसंवर्गित राशि} = \text{क} \\
 &\text{दोवार } ,, = \left( \begin{array}{c} \text{क} \\ \text{क} \end{array} \right) = \text{क} \times \text{क} = \text{क}^2 \\
 &\text{तीनवार } ,, = \left( \begin{array}{c} \text{क} \\ \text{क} + 1 \end{array} \right) = \text{क} \times \text{क} + \text{क} \\
 &\text{चौवार } ,, = \left( \begin{array}{c} \text{क} \\ \text{क} + 1 + \text{क} \end{array} \right) = \text{क}^2 + 2\text{क} + \text{क} \\
 &\text{पांचवार } ,, = \left( \begin{array}{c} \text{क} \\ \text{क} + 1 + \text{क} + \text{क} \end{array} \right) = \text{क}^2 + 3\text{क} + \text{क} \\
 &\text{छाटवार } ,, = \left( \begin{array}{c} \text{क} \\ \text{क} + 1 + \text{क} + \text{क} + \text{क} \end{array} \right) = \text{क}^2 + 4\text{क} + \text{क} \\
 &\text{सातवार } ,, = \left( \begin{array}{c} \text{क} \\ \text{क} + 1 + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} \end{array} \right) = \text{क}^2 + 5\text{क} + \text{क} \\
 &\text{आठवार } ,, = \left( \begin{array}{c} \text{क} \\ \text{क} + 1 + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} \end{array} \right) = \text{क}^2 + 6\text{क} + \text{क} \\
 &\text{नौवार } ,, = \left( \begin{array}{c} \text{क} \\ \text{क} + 1 + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} \end{array} \right) = \text{क}^2 + 7\text{क} + \text{क} \\
 &\text{दसवार } ,, = \left( \begin{array}{c} \text{क} \\ \text{क} + 1 + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} + \text{क} \end{array} \right) = \text{क}^2 + 8\text{क} + \text{क}
 \end{aligned}$$

( अंकगणितसे )— जघन्य अनन्तानन्त=२

$$\begin{aligned}
 &२ \quad ४ \quad २५६ \\
 &\text{एकवार } २ = ४; \text{ दोवार } ४ = २५६; \text{ तीनवार } २५६
 \end{aligned}$$

१ अवराणंताणंतं तिप्पडिरासिं करिंतु विरळादिं । तिसलार्गं च समाणिय लद्धेदे पक्खिवेदधा ॥  
नि. सा. ४८.

एसो सच्चजीवरासीदो किंचूणमिच्छादिद्विरासीदो य अणंतगुणहीणो चि कथं जाणिज्जदि ?  
 बुद्धे— जहणपरित्ताणंतस्स अद्वच्छेदणाणमुवरि तस्सेव वग्गसलागाओ रूवाहियाओ  
 पक्खित्ते जहण-अणंताणंतस्स वग्गसलागा भवंति । जहणपरित्ताणंतस्स अद्वच्छेदणाहि  
 दुगुणिदाहि जहणपरित्ताणंतं गुणिदे जहणमणंताणंतस्स अद्वच्छेदणयसलागा हवंति ।  
 एदाओ च जहणपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो असंखेज्ज-  
 गुणहीणाओ । एदाणमुवरि जहण-अणंताणंतस्स वग्गसलागाओ जहणपरित्ताणंतस्स  
 अद्वच्छेदणाहितो विसेसाहियाओ पक्खित्ते पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा  
 भवंति । जहण-अणंताणंतस्स अद्वच्छेदणाओ जहण-अणंताणंतेण गुणिदे पढमवार-  
 वग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्वच्छेदणयसलागा भवंति । एदाओ जहण-अणंताणंतादो

( यदि हम २५६ को २५६ से इतने ही बार गुणा करें तो जो संख्या उत्पन्न होगी वह ६१७ अंकवाली होगी । इसप्रकार इकारूप छोटोंसी २ संख्याको तीनबार वर्गितसंवर्गित करने पर ६१७ अंकवाली महासंख्या उत्पन्न होती है । इस परसे किसी भी मूलराशिसे उत्पन्न हुई त्रिवार वर्गितसंवर्गित राशिके विस्तारका अनुमान लगाया जा सकता है । )

शंका— तीनबार वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई यह महाराशि संपूर्ण जीवराशिसे और संपूर्णजीवराशिसे कुछ कम ( द्वितीयादि शेष तेरह गुणस्थानसंबन्धी राशि और सिद्ध-राशि प्रमाण कम ) मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे अनन्तगुणी हीन है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी अर्थात् जघन्य परीतानन्तकी एक अधिक वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं । तथा जघन्य परीतानन्तके द्विगुणित अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तके गुणित करने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं । ये जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं जघन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी हैं और उसीके अर्थात् जघन्य परीतानन्तके उपरिम वर्गसे असंख्यातगुणी हीन हैं । इन जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें, जो जघन्य परीतानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाओंसे अधिक हैं, ऐसी जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाएं होती हैं । जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेदोंको जघन्य अनन्तानन्तसे गुणित करने पर प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं

तत्त्वमे पुण जायइ णंताणंतं लहु तं च तिख्खुचो । वग्गसु तह न तं होइ णंतखेवे खिवसु छ इमे ॥ क.  
 मं. ५, ८४.

१ वग्गिदवारा वग्गसलागा रासिस्स अद्वच्छेदस्स । अद्विदवारा वा खलु दलवारा हंति अद्वच्छेदी ॥  
 त्रि. सा. ७६.

२ विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्सद्वच्छेदीहि संगुणिदे । अद्वच्छेदा हंति हं सच्चत्थुप्पणरासिस्स ॥  
 त्रि. सा. १०७.



अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गादो अणंतगुणहीणाओ । एदाणमुवरि पढमवारवग्गिदसं-  
वग्गिदरासिस्स वग्गसलगाओ पक्खिख्चे विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलगा  
हवंति । पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धच्छेदणाहि पढमवारवग्गिदसंवग्गिदरासि  
गुणिदे विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स अद्धदण्यसलगाओ भवंति । एदाओ पढम-  
वारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो अणंतगुणाओ तस्सेव उवरिमवग्गणादो अणंतगुणहीणाओ ।  
एदाणमुवरि विदियवारवग्गिदसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलगाओ पक्खिख्चे तदियवारवग्गि-

होती है । ये प्रथमवार वर्णितसंवर्णित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं जघन्य अनन्तानन्तसे  
अनन्तगुणी हैं और उसीके अर्थात् जघन्य अनन्तानन्तके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणी हीन हैं ।  
इन प्रथमवार वर्णितसंवर्णित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंमें प्रथमवार वर्णितसंवर्णित  
राशिकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर दूसरीवार वर्णितसंवर्णित राशिकी वर्गशलाकाएं होती  
हैं । तथा प्रथमवार वर्णितसंवर्णित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके द्वारा प्रथमवार वर्णितसं-  
वर्णित राशिको गुणित करने पर दूसरीवार वर्णितसंवर्णित राशि की अर्धच्छेदशलाकाएं होती  
हैं । ये दूसरीवार वर्णितसंवर्णित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं प्रथमवार वर्णितसंवर्णित राशिसे  
अनन्तगुणी हैं, और उसीके, अर्थात् प्रथमवार वर्णितसंवर्णित राशिसे उपरिम वर्गसे अनन्त-  
गुणी हीन हैं । इन दूसरीवार वर्णितसंवर्णित राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंमें दूसरीवार वर्णित-  
संवर्णित राशिकी वर्गशलाकाएं मिला देने पर तीसरीवार वर्णितसंवर्णित राशिकी वर्गशला-  
काएं होती हैं ।

विशेषार्थ—जो राशि विरलन-देयक्रमसे उत्पन्न होती है उसके अर्धच्छेद विरलित-  
राशिको देयराशिसे अर्धच्छेदोंसे गुणा करने पर आते हैं । तथा उसकी वर्गशलाकाएं विरलित-  
राशिसे अर्धच्छेदोंमें देयराशिसे अर्धच्छेदोंके अर्धच्छेद या वर्गशलाकाएं मिला देने पर होती  
हैं । गणितके इस नियमके अनुसार जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे जघन्य परीतानन्तको गुणा  
कर देने पर जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी वर्ग-  
शलाकाएं मिला देने पर जघन्य युक्तानन्तकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होंगी । फिर भी प्रकृतमें जघन्य  
अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लाना है । परंतु जघन्य अनन्तानन्त जघन्य युक्ता-  
नन्तके उपरिम वर्गरूप है, और वर्गसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाओं और अर्धच्छेदोंको  
लानेके लिये यह नियम है कि विवक्षित वर्गके अर्धच्छेदोंसे उपरिम वर्गके अर्धच्छेद दूने और  
विवक्षित वर्गकी वर्गशलाकाओंसे उपरिम वर्गकी वर्गशलाकाएं एक अधिक होती हैं । इसलिये  
जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेदोंको दूना कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद और जघन्य  
युक्तानन्तकी वर्गशलाकाओंमें एक और मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं

होंगी। इस संपूर्ण व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर यह कहा गया है कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी एक अधिक वर्गशलाकाएं मिला देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाएं और जघन्य परीतानन्तकी द्विगुणित अर्धच्छेदशलाकाओंसे जघन्य परीतानन्तको गुणित कर देने पर जघन्य अनन्तानन्तकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं। इसीप्रकार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लानेकी पद्धतिके अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिके अर्धच्छेद और वर्गशलाकाओंके संबन्धमें भी समझ लेना चाहिये।

उदाहरण ( बीजगणितसे )—

जघन्य परीतानन्तको वर्गितसंवर्गित करनेसे जघन्य युक्तानन्त उत्पन्न होता है। तथा जघन्य युक्तानन्तके वर्गप्रमाण जघन्य अनन्तानन्त है।

$$\begin{array}{rcl}
 & \text{अ} & \\
 & २ & \\
 \text{मान लो जघन्य परीतानन्तका मान } २ & & \\
 & \text{अ} & \\
 & २ + \text{अ} + १ & \text{क} \\
 \text{परीतानन्तकी वर्गितसंवर्गित राशिके} & २ & २ \\
 \text{उपरिम वर्ग प्रमाण जघन्य अनन्तानन्त} & = २ & = २ \text{ ( मान लो )} \\
 & \text{क} & \\
 & २ + \text{क} & \text{ख} \\
 \text{अनन्तानन्त प्रथमवार वर्गितसंवर्गित} & = २ & = २ \text{ ( मान लो )} \\
 & \text{ख} & \\
 & २ + \text{ख} & \text{ग} \\
 \text{द्वितीयवार वर्गितसंवर्गित} & = २ & = २ \text{ ( मान लो )} \\
 & \text{ग} & \\
 & २ + \text{ग} & \\
 \text{तृतीयवार वर्गितसंवर्गित} & = २ & 
 \end{array}$$

२ संख्यासे लेकर जितनीवार वर्ग करनेसे विवक्षित राशि उत्पन्न होती है उतनी उस वर्गराशिकी वर्गशलाकाएं होती हैं। जैसे ४ की वर्गशलाका १ और १६ की २ होती हैं, क्योंकि, २ का एकवार वर्ग करनेसे ४ और २ वार वर्ग करनेसे १६ उत्पन्न होते हैं। तथा विवक्षित राशिको जितनीवार आधा आधा करते हुए एक शेष रहे उतने उस राशिके

अर्धच्छेद होते हैं; जैसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं। बीजगणितसे २ राशिके अर्धच्छेद २ होंगे और वर्गशलाका अ होगी।

दसंवग्गिदरासिस्स वग्गसलागा भवति । एसो वग्गसलागरासी पढमवारवग्गिदसंवग्गिद-  
रासीदो उवरि एगमवि वग्गद्वानं ण च वड्ढिदो, तेणेदेसिं दोण्हं रासीणं वग्गसलागाओ  
सरिसाओ । एदाणं च वग्गसलागाओ जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जगुणाओ । जदि  
एसो रासी सच्चजीववग्गसलागरासिणा सरिसो हवदि तो तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासिणा  
सच्चजीवरासी वि सरिसो होज्ज; ण च एवं । तं कथं ? ' जहण्ण-अणंतानंतं वग्गिज्जमाणे  
जहण्ण-अणंतानंतस्स हेट्ठिमवग्गणद्वानेहिंतो उवरि अणंतगुणवग्गद्वानाणि गंतूण सच्च-  
जीवरासिवग्गसलागा उप्पज्जदि ' ति परियम्मे वुत्तं । गुणमारो पि जम्हि जम्हि अणंतयं  
मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्ण-अणुक्कस्साणंतानंतयं धेत्तव्वं । ण च तदियवारवग्गिद-

अथ आगे इन सब राशियोंकी वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेद लिखे जाते हैं—

	ज. प. अ.	ज. अ. अ.	प्र. व. सं.	द्वि. व. सं.	तृ. व. सं.
	अ	अ	क	ख	ग
	२	२ + अ + १	२ + क	२ + ख	२ + ग
प्रमाण	२	२	२	२	२
	अ	अ	क	ख	ग
वर्ग श.	अ	२ + अ + १	२ + क	२ + ख	२ + ग
	अ	अ	क	ख	ग
	अ	२ + अ + १	२ + क	२ + ख	२ + ग
अर्धच्छेद	२	२	२	२	२

यह तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि प्रथमवार वर्गितसंवर्गित  
राशिसे ऊपर एक भी वर्गस्थानसे वृद्धिको प्राप्त नहीं हुई है, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित  
राशिसे उपरिम वर्गके भीतर ही तीसरीवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि आती  
है, इसलिये इन दोनों राशियोंकी, अर्थात् प्रथमवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं और  
तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं समान हैं, जो वर्गशलाकाएं  
जघन्य परीतानन्तसे असंख्यातगुणी हैं। यदि यह तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाका-  
राशि संपूर्ण जीवोंकी वर्गशलाकाराशिसे समान होती है, ऐसा मान लिया जावे, तो  
तीनवार वर्गितसंवर्गितराशिसे समान संपूर्ण जीवराशि भी हो जावे। परंतु ऐसा है नहीं।

शंका—यह कैसे ?

समाधान — ' जघन्य अनन्तानन्तके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर जघन्य अनन्तानन्तके  
अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाएं  
उत्पन्न होती हैं, ' इसप्रकार परिकर्ममें कहा है। गुणकार भी जहां जहां अनन्तरूप देखनेमें  
आता है वहां वहां अजघन्यातुल्य अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप गुणकारका ग्रहण करना

संवर्गिदरासिवर्गसलागाओ हेट्टिमवग्गणट्ठाणेहिंतो उवरि परियम्म-उत्त-अणंतगुणवग्गण-  
ट्ठाणाणि गंतूणुप्पणाओ, किंतु हेट्टिमवग्गणट्ठाणादो उवरि सादिरेयजहण्ण-परित्ताणंत-  
गुणमट्ठाणं गंतूणुप्पणाओ । केण कारणेण ? जहण्णपरित्ताणंतस्स अट्ठच्छेदणाहितो  
विसेसाहियहि जहण्ण-अणंताणंतस्स वग्गसलागाहि तदियवारवग्गिदसंवर्गिदरासिवग्ग-  
सलागाणं वग्गसलागाओ हेट्टिमअट्ठाणैणूणाओ अवहिरिज्जमाणे सादिरेयजहण्णपरित्ताणंत-  
मागच्छदि चि । ण च जहण्ण-अणंताणंतदो हेट्टिम-अट्ठाणं पडुच्च सादिरेयजहण्णपरि-  
त्ताणंतगुणं गंतूण सच्चजीवरासिवग्गसलागाओ उप्पणाओ, किंतु अणंताणंतगुणं गंतूण  
सच्चजीवरासिवग्गसलागाओ । कुदो ? 'अणंताणंतविसए अजहण्णमणुक्कस्स-अणंताणंतेणेव  
गुणगारेण भागहारेण वि होदव्वं' इदि परियम्मवयणादो । ण च एदस्स जहण्णपरि-  
त्ताणंतादो विसेसाहियस्म असंखेज्जचमसिद्धं, संते वए णट्ठंतस्स' अणंतविरोहादो । ण

चाहिये । परंतु तृतीयवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन  
वर्गस्थानसे ऊपर परिकर्मसूत्रमें कहे गये अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर नहीं उत्पन्न होती हैं,  
किंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंसे ऊपर कुछ अधिक जघन्यपरीतानन्तगुणे  
वर्गस्थान जाकर उत्पन्न होती हैं । इससे प्रतीत होता है कि संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाका-  
ओंसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाएं अनन्तगुणी न्यून हैं ।

शंका — ऐसा किस कारणसे है ?

समाधान — जो कि जघन्य परीतानन्तके अर्धच्छेदोंसे अधिक हैं ऐसी जघन्य अनन्ता-  
नन्तकी वर्गशलाकाओंके द्वारा जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानसे न्यून तीसरीवार  
वर्गितसंवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं अग्रहत करने पर कुछ अधिक जघन्य  
परीतानन्त आता है । परंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंकी अपेक्षा जघन्य  
अनन्तानन्तसे कुछ अधिक जघन्य परीतानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी-  
वर्गशलाकाएं नहीं उत्पन्न होती हैं, किंतु जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्तानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर  
संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाएं उत्पन्न होती हैं । क्योंकि, 'अनन्तानन्तके विषयमें गुणकार  
और भागहार अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम अनन्तानन्तरूप ही होना चाहिये' इसप्रकार  
परिकर्मसूत्रका वचन है । ऊपर जो जघन्य परीतानन्तसे विशेषाधिक कह आये हैं वह  
विशेषाधिक असंख्यात रूप है यह बात अस्तिद्ध नहीं है, क्योंकि, व्यय होने पर समाप्त  
होनेवाली राशिकी अनन्तरूप माननेमें विरोध आता है । इसप्रकार कथन करनेसे अर्धपुत्रल

१ तस्मिन्नेकवारं वर्गिते द्विकवारानन्तस्य जघन्यमुत्पद्यते । ततोऽनन्तस्थानानि गत्वा वर्गशलाकाः । भि. सा.  
गा. ६९ टीका । तस्मिन्नेकवारं वर्गिते जघन्यद्विकवारानंतमुत्पद्यते । ततः अनंतानंतवर्गस्थानानि गत्वा जीवराशेर्वर्गशलाका-  
राशिः । गो. जी. जी. प्र. टी. ( पर्याप्तिप्ररूपणा ) ।

२ प्रतिपु ' णिटंतस्स ' इति पाठः ।

च अद्रुपोग्गलपरियट्टेण वियहिचारो, उवयारेण तस्स आणंतियादो । को वा छट्ठव-  
पक्खित्तरासी ? युच्चदे- तिण्णिवारवग्गिगदसंवग्गिगदरासिम्हि—

सिद्धा णिगोदजीवा वणप्फदी कालो य पोग्गला चैय ।

सव्वमलोगागासं छप्पेदे णंतपक्खेवा' ॥ १६ ॥

एदे छप्पक्खेवपक्खित्ते छट्ठवपक्खित्तरासी होदि । एदस्स अजहण्णमणुकस्स-  
अणंतानंतयस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तो' मिच्छाहट्ठिरासी । एदं कथं णव्वदि त्ति  
भणिदे अणंता इदि वयणादो । एदं वयणमसच्चत्तणं किं ण अल्लियदि त्ति भणिदे  
असच्चकारणमुक्कजिणवयणकमलविणिग्गयत्तादो । ण च पमाणपडिग्गहिओ पयत्थो  
पमाणंतरेण परिक्खिज्जदि, अवट्ठणादो ।

परिवर्तनके साथ व्यभिचार हो जायगा सो भी बात नहीं है, क्योंकि, अर्धपुद्गलपरिवर्तन  
कालको उपचारसे अनन्तरूप माना है ।

शंका—जिसमें छह द्रव्य प्रक्षिप्त किये गये हैं वह राशि कौनसी है ?

समाधान—तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिमें—सिद्ध, निगोदजीव, वनस्पतिकायिक,  
पुद्गल, कालके समय और अलोकाकाश ये छहों अनन्त राशियां मिला देना चाहिये ॥ १६ ॥

प्रक्षिप्त करने योग्य इन छह राशियोंके मिला देने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि  
होती है । इसप्रकार तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिसे अनन्तगुणे और छह द्रव्य प्रक्षिप्त  
राशिसे अनन्तगुणे हीन इस मध्यम अनन्तानन्तकी जितनी संख्या होती है तन्मात्र मिथ्यादृष्टि-  
जीवराशि है ।

शंका—मिथ्यादृष्टिराशि इतनी है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सूत्रमें 'अणंता' ऐसा बहुवचनान्त पद दिया है, जिससे जाना जाता  
है कि मिथ्यादृष्टिराशि मध्यम अनन्तानन्तप्रमाण होती है ।

शंका—यह वचन असत्यपनेको क्यों नहीं प्राप्त हो जाता है ?

समाधान—असत्य बोलनेके कारणोंसे रहित जिनेन्द्रदेवके सुखकमलसे निकले हुए  
ये वचन हैं, इसलिये इन्हें अप्रमाण नहीं माना जा सकता । जो पदार्थ प्रमाणप्रसिद्ध है उसकी  
दूसरे प्रमाणोंके द्वारा परीक्षा नहीं की जाती है, क्योंकि, वह पदार्थ प्रमाणसे  
अवस्थित है ।

१ ति. प. पत्र ५३. सिद्धा णिगोदसाहियवणप्फदिपोग्गलपमा अणंतगुणा । काल अलोगागासं छप्पेदेणंत-  
दुक्खेवा ॥ ति. सा. ४९. सिद्धा निगोदजीवा वणप्फदी काल पुग्गला चैव । सव्वमलोगान्हं पुण तिवग्गिं केवल-  
पग्गिं ॥ क. म. ४, ८५.

२ प्रतिपु 'तत्तियामेत्तो' इति पाठः ।

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति का-  
लेण ॥ ३ ॥

किमहं खेत्तप्रमाणमइकम्म कालप्रमाणं बुद्धे ? ' जं थूलं अप्पवण्णणीयं तं पुच्चमेव भाणियव्वं ' इदि पायादो । कथं कालप्रमाणादो खेत्तप्रमाणं बहुवण्णणिज्जं ? बुद्धे-  
खेत्तप्रमाणे लोगो परुवेदव्वो । सो वि सेट्ठिपरुवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति सेट्ठी  
परुवेदव्वा । सा वि रज्जुपरुवणाए विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जू परुवेदव्वा । रज्जू  
वि समच्छेदणाहि विणा ण जाणिज्जदि त्ति रज्जुच्छेदणा परुवेदव्वा । ताओ वि दीव-  
सागरपरुवणाए विणा ण जाणिज्जंति त्ति दीवसागरा परुवेदव्वा त्ति । ण च कालप्रमाणे  
एवं महंती परुवणा अत्थि, तदो कालादो खेत्तं सुहुममिदि जाणिज्जदे । के वि आहिरिया  
एवं भणंति बहुवेहि पदेसेहि उवचिदं सुहुममिदि । उत्तं च—

सुहुमो य हवदि कालो तत्तो य सुहुमदरं हवदि खेत्तं ।

अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखेज्जा' ॥ १७ ॥ इदि ॥

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके  
द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ॥ ३ ॥

शंका—क्षेत्रप्रमाणको उल्लंघन करके कालप्रमाणका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—' जो स्थूल और अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले ही कथन करना  
चाहिये ' इस न्यायके अनुसार पहले कालप्रमाणका कथन किया जा रहा है ।

शंका—कालप्रमाणकी अपेक्षा क्षेत्रप्रमाण बहुवर्णनीय कैसे है ?

समाधान—क्षेत्रप्रमाणमें लोक प्ररूपण करने योग्य है । उसका भी जगच्छ्रेणीके  
प्ररूपणके बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये जगच्छ्रेणीका प्ररूपण करना चाहिये ।  
जगच्छ्रेणीका भी रज्जुके प्ररूपण किये बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये रज्जुका प्ररूपण  
करना चाहिये । रज्जुका भी उसके अर्धच्छेदोंका कथन किये बिना ज्ञान नहीं हो सकता है,  
इसलिये रज्जुके छेदोंका प्ररूपण करना चाहिये । रज्जुके छेदोंका भी द्वीपों और सागरोंके  
प्ररूपणके बिना ज्ञान नहीं हो सकता है, इसलिये द्वीपों और सागरोंका प्ररूपण करना चाहिये ।  
परंतु कालप्रमाणमें इसप्रकार बड़ी प्ररूपणा नहीं है, इसलिये कालप्रमाणकी प्ररूपणाकी अपेक्षा  
क्षेत्रप्रमाणकी प्ररूपणा अतिसूक्ष्मरूपसे वर्णित है, यह बात जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह  
सूक्ष्म होता है । कहा भी है—

कालप्रमाण सूक्ष्म है, और क्षेत्रप्रमाण उससे भी सूक्ष्म है, क्योंकि, अंगुलके असंख्या-

१ सुहुमो य होह कालो तत्तो सुहुमदरं हवदि खेत्तं । अंशुलपेदीमेवे ओवीथिणीओ असंखेज्जा ॥ वि. मा.

पृ. २४, गा. २१८.

एदं वक्खाणं ण वड्ढे । कुदो ? खेत्तादो दव्वस्स परूवणपसंगादो । तं कथं ? एकम्हि दव्वंगुले अणंतपरमाणुपदेमेहि णिष्कण्णे एगं खेत्तंगुलमोगाहे, गणणं पडुच्च अणंताणि खेत्तंगुलाणि होति चि ।

सुद्धमं तु हवदि खेत्तं ततो य सुहुमदरं हवदि दव्वं ।

खेत्तंगुला अणंता एगे दव्वंगुले होति ॥ १८ ॥ इदि ॥

कथं कालेण मिणिज्जंते मिच्छाइड्डी जीवा ? अणंताणंताणं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणं समए ठवेदूण मिच्छाइड्डीरासिं च ठवेउण कालम्हि एगो समयो मिच्छाइड्डीरासम्हि एगो जीवो अवहिरज्जदि । एवमवहिरज्जमाणे अवहिरिज्जमाणे सव्वे समया अवहिरिज्जंति, मिच्छाइड्डीरासी ण अवहिरिज्जदि । एत्थ चोदगो भणदि— मिच्छाइड्डीरासी अवहिरिज्जदु, सव्वे समया ण अवहिरिज्जंति चि । केण कारणेण ? कालमाहपरूवयसुत्तदंसणादो । किं तं सुत्तं ? उच्चदे—

तव्वं भागमें असंख्यात कल्प होते हैं ॥ १७ ॥

परंतु उनका इसप्रकारका व्यख्यान करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर क्षेत्रप्ररूपणाके अनन्तर द्रव्यप्ररूपणाका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

शंका—यह कैसे ?

समाधान—क्योंकि, अनन्त परमाणुरूप प्रदेशोंसे निष्पन्न एक द्रव्यांगुलमें अवगाहनाकी अपेक्षा एक क्षेत्रांगुल ही है, किंतु गणनाकी अपेक्षा अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं, इसलिये 'जो बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है' यह कहना ठीक नहीं है ।

क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्मतर द्रव्य होता है, क्योंकि, एक द्रव्यांगुलमें अनन्त क्षेत्रांगुल होते हैं ॥ १८ ॥

शंका—कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण कैसे निकाला जाता है ?

समाधान—एक ओर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके समयोंको स्थापित करके और दूसरी ओर मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशिको स्थापित करके कालके समयोंमेंसे एक एक समय और उसीके साथ मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणमेंसे एक एक जीव कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार उत्तरोत्तर कालके समय और जीवराशिके प्रमाणको कम करते हुए चले जाने पर अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके सब समय समाप्त हो जाते हैं, परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है ।

शंका—यहां पर शंकाकारका कहना है कि मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण भले ही समाप्त हो जाओ परंतु कालके संपूर्ण समय समाप्त नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणकी अपेक्षा कालके समयोंका प्रमाण बहुत अधिक है । इसप्रकारसे प्ररूपण करनेवाला सूत्र भी देखनेमें आता है । वह सूत्र कौनसा है इसप्रकार पूछने पर शंकाकार कहता है—

धम्माधम्मागासा तिणि वि तुल्लाणि होति थोवाणि ।

वड्डीहु जीवपोग्गलकालागासा अणंतमुणा ॥ १९ ॥

ण एस दोसो, अदीदकालगहणादो । जहा सव्वे लोए<sup>१</sup> पत्थो तिहा विहत्तो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अणिक्कण्णो अणागदो णाम । वडिज्जमाणो वट्टमाणो । णिक्कण्णो ववहारजोग्गो अदीदो णाम । तत्थ अदीदेण पत्थेण मिणिज्जंते सव्ववीजाणि । एत्थुवसंहारगाहा—

पत्थो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।

एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे सव्ववीजं तु ॥ २० ॥

तथा कालो वि तिविहो, अणागदो वट्टमाणो अदीदो चेदि । तत्थ अदीदेण मिणिज्जंते सव्वे जीवा । एत्थुवसंहारगाहा—

कालो तिहा विहत्तो अणागदो वट्टमाणतीदो य ।

एदेसु अदीदेण दु मिणिज्जदे जीवरासी दु ॥ २१ ॥

धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य और लोकाकाश, ये तीनों ही समान होते हुए स्तोक हैं । तथा जीवद्रव्य, पुद्गलद्रव्य, कालके समय और आकाशके प्रदेश, ये उत्तरोत्तर वृद्धिकी अपेक्षा अनन्तगुणे हैं ॥ १९ ॥

समाधान--यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मिथ्याद्वि जीवराशिका प्रमाण निकालनेमें अतीत कालका ही ग्रहण किया है ।

जिसप्रकार, सब लोकमें प्रस्थ तीन प्रकारसे विभक्त है, अनागत, वर्तमान और अतीत । उनमेंसे जो निष्पन्न नहीं हुआ है वह अनागत प्रस्थ है, जो बनाया जा रहा है वह वर्तमान प्रस्थ है, और जो निष्पन्न हो चुका है तथा व्यवहारके योग्य है वह अतीत प्रस्थ है । उनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं । यहाँ पर इस विषयकी उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

प्रस्थ तीन प्रकारका है, अनागत, वर्तमान और अतीत । इनमेंसे अतीत प्रस्थके द्वारा संपूर्ण बीज मापे जाते हैं ॥ २० ॥

उसीप्रकार, काल भी तीन प्रकारका है, अनागत, वर्तमान और अतीत । उनमेंसे अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है । यहाँ पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

काल तीन प्रकारका है, अनागतकाल, वर्तमानकाल और अतीतकाल । इनमेंसे अतीतकालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण जाना जाता है ॥ २१ ॥



तेण कारणेण मिच्छाहट्ठिरासी ण अवहिरिज्जदि, सव्वे समया अवहिरिज्जंति । अदीदकालो थोवो मिच्छाहट्ठिरासी बहुगो ति कथं णव्वेद ? सोलस-पडिय-अप्पावहु-गादो । कथं सोलसपडिय-अप्पावहुगं ? सव्वत्थोवा वट्टमाणद्धा, अभवसिद्धिया अणंत-गुणा । को गुणगारो ? जहणजुत्ताणंतं । सिद्धकालो अणंतगुणो । को गुणगारो ? छम्मासट्टममाणेण रूवाहिण्ण छिण्ण-अदीदकालस्स अणंतममाणो । अणाइस्स अदीद-कालस्स कथं पमाणं ठविज्जदि ? ण, अण्णहा तस्सामावपसंगादो । ण च अणादि ति जाणिदे सादित्तं पावेदि, विरोहा । सिद्धा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? रूवसर्दपुधत्तं । असिद्धकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जावलियाओ । अदीदकालो विसे-साहिओ । केत्थियमेत्तेण ? सिद्धकालमेत्तेण । भवसिद्धिया मिच्छाइड्डी अणंतगुणा । को

इसलिये मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण समाप्त नहीं होता है, परंतु अतीतकालके संपूर्ण समय समाप्त हो जाते हैं ।

शुंका—अतीतकाल स्तोक है और मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण उससे अधिक है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—सोलह राशिगत अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण अधिक है ।

शुंका—सोलह राशिगत अल्पबहुत्व किसप्रकार है ?

समाधान—वर्तमानकाल सबसे स्तोक है । अभव्य जीवोंका प्रमाण उससे अनन्तगुणा है । यहाँ पर गुणकार क्या है ? जघन्य युक्तानन्त यहाँ पर गुणकाररूपसे अभीष्ट है । अभव्यराशिसे सिद्धकाल अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? छद्म महीनोके अष्टम भागमें एक मिला देने पर जो समयसंख्या आवे उससे भक्त अतीतकालका अनन्तत्वां भाग गुणकार है ।

शुंका—अतीतकाल अनादि है, इसलिये उसका प्रमाण कैसे स्थापित किया जा सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यदि उसका प्रमाण नहीं माना जाय तो उसके अभावका प्रसंग आ जायगा । परंतु उसके अनादित्वका ज्ञान हो जाता है, इसलिये उसे सादित्वकी प्राप्ति हो जायगी, सो बात भी नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है ।

सिद्धकालसे सिद्ध संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? यहाँ पर शतप्रत्यक्त्वरूप गुणकार लेना चाहिये । सिद्ध जीवोंसे असिद्धकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? यहाँ पर संख्यात आवलिकार्प गुणकार हैं । असिद्धकालसे अतीतकाल विशेष अधिक है । कितना विशेष अधिक है ? सिद्धकालका जितना प्रमाण है, उतने विशेषसे अधिक है । अर्थात्

गुणगारो ? भवसिद्धिमिच्छाद्द्विगुणमणंतिमभागो । भवसिद्धिया विसेसाहिया । केत्तिय-  
मेत्तेण ? तेरसगुणद्वानमेत्तेण । मिच्छाद्द्वि विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरसगुणद्वान-  
मेत्तेण पमाणेणूण-अभवसिद्धियमेत्तेण । संसारत्था विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? तेरस-  
गुणद्वानमेत्तेण । सव्वे जीवा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सिद्धजीवमेत्तेण । पोग्गल-  
द्वयमणंतगुणं । को गुणगारो ? सव्वजीवेहि अणंतगुणो । एसद्दा अणंतगुणा । को गुण-  
गारो ? सव्वपोग्गलद्ववादो अणंतगुणो । सव्वद्दा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? वट्ट-  
माणातीदकालमेत्तेण । अलोगागासमणंतगुणं । को गुणगारो ? सव्वकालादो अणंतगुणो ।  
सव्वागासं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? लोगागासपदेसमेत्तेण । जेण अदीदकालादो  
मिच्छाद्द्वि अणंतगुणा तेण सव्वे समया अवहिरिज्जंति मिच्छाद्द्विरात्ती ण अवहिरिज्जदि

असिद्धकालमें सिद्धकालका प्रमाण मिला देने पर अतीतकालका प्रमाण हो जाता है । अतीत-  
कालसे भव्य मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? भव्य मिथ्यादृष्टियोंका  
अनन्तवां भाग गुणकार है । भव्य मिथ्यादृष्टियोंसे भव्य जीव विशेष अधिक हैं । कितने  
अधिक हैं ? सासादन गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक जीवोंका जितना प्रमाण  
है उतने विशेषरूप अधिक हैं । अर्थात् भव्य मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणमें सासादन आदि तेरह  
गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणके मिला देने पर समस्त भव्य जीवोंका प्रमाण होता है । भव्य  
जीवोंसे सामान्य मिथ्यादृष्टि जीव विशेष अधिक हैं । कितने विशेषरूप अधिक है ? अभव्य  
राशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको कम कर देने पर जो राशि  
अवशिष्ट रहे उतने विशेषसे अधिक हैं । अर्थात् भव्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुण-  
स्थानवालोंका प्रमाण कम करके अभव्यराशिमेंसे मिला देने पर सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवोंका  
प्रमाण होता है । सामान्य मिथ्यादृष्टियोंसे संसारी जीव विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ?  
सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका जितना प्रमाण है उतने विशेषसे अधिक  
हैं । संसारी जीवोंसे संपूर्ण जीव विशेष अधिक हैं ? कितने अधिक हैं ? सिद्ध जीवोंका जितना  
प्रमाण है उतने अधिक हैं । संपूर्ण जीवराशिसे पुद्गलद्रव्य अनन्तगुणा है । यहां पर गुणकार  
क्या है ? यहां पर संपूर्ण जीवराशिसे अनन्तगुणा गुणकार है । पुद्गलद्रव्यसे अनागतकाल  
अनन्तगुणा है । यहां पर गुणकार क्या है ? यहां पर संपूर्ण पुद्गलद्रव्यसे अनन्तगुणा गुणकार  
है । अनागतकालसे संपूर्ण काल विशेष अधिक है । कितना अधिक है ? वर्तमान और अतीत-  
कालमात्र विशेषसे अधिक है । संपूर्ण कालसे अलोकाकाश अनन्तगुणा है । यहां पर गुणकार  
क्या है ? संपूर्ण कालसे अनन्तगुणा यहां पर गुणकार है । अलोकाकाशसे संपूर्ण आकाश  
विशेष अधिक है । कितना अधिक है ? लोकाकाशके जितने प्रदेश हैं उतना विशेषरूप  
अधिक है । इसप्रकार इस अल्पबहुत्वसे यह प्रतीत हो जाता है कि अतीतकालसे मिथ्यादृष्टि जीव  
अनन्तगुणे हैं, अतः अतीतकालके संपूर्ण समय अपहृत हो जाते हैं, परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशि  
अपहृत नहीं होती है, यह बात सिद्ध हो जाती है ।

चि सिद्धं । किमहं कालप्रमाणं बुद्धे ? मिच्छाहट्ठिरासिस्स मोक्खं गच्छमाणजीवे पडुच्चं  
संते वि वए ण वोच्छेदो होदि चि जाणावणहं ।

### खेत्तेण अणंतानंता लोमा ॥ ४ ॥

खेत्तप्रमाणमुलंघिय अप्पवण्णणिज्जं भावप्रमाणं किमिदि ण परुविज्जदि ? खेत्त-  
परुवणादो भावपरुवणं महद्वरमिदि ण परुविज्जदे । तं जहा, भावप्रमाणं णास णाणं । तं पि  
पंचविहं । तत्थ वि एकेकमणेयवियप्पं । तत्थ वि अणेगाओ विप्पडिवत्तीओ चि । खेत्तेण  
कथं मिच्छाहट्ठिरासी मिणिज्जदे ? बुद्धे- जधा पत्थेण जव-गोभूमादिरासी मिणिज्जदि  
तथा लोएण मिच्छाहट्ठिरासी मिणिज्जदि । एवं मिणिज्जमाणे मिच्छाहट्ठिरासी अणंत-  
लोममेत्तो होदि चि । एत्थुवउज्जंती गाहा—

पत्थेण कोदयेण व जह कोइ मिणेज्ज सत्त्ववीजाहं ।

एवं मिणिज्जमाणे हवंति लोमा अणंता दु ॥ २२ ॥

शंका—यहां पर कालकी अपेक्षा प्रमाण किसलिये कहा गया है ?

समाधान—मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा संसारी जीवराशिका व्यय होने पर  
भी मिथ्यादृष्टि जीवराशिका सर्वथा विच्छेद नहीं होता है, इस बातका ज्ञान करानेके लिये  
यहां पर कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा है ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण  
है ॥ ४ ॥

शंका—यहां पर क्षेत्रप्रमाणका उल्लंघन करके अल्पवर्णनीय भावप्रमाणका प्ररूपण  
क्यों नहीं किया गया है ?

समाधान—क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपण करनेकी अपेक्षा भावप्रमाणका प्ररूपण अतिविस्तृत  
है, इसलिये भावप्रमाणका प्ररूपण पहले नहीं किया गया है । भावप्रमाणका प्ररूपण  
अतिविस्तृत है आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं । ज्ञानको भावप्रमाण कहते हैं । वह भी पांच  
प्रकारका है । उन पांच भेदोंमें भी प्रत्येक अनेक भेदरूप है । उसमें भी अनेक विवाद हैं । इससे  
सिद्ध होता है कि भावप्रमाणका प्ररूपण क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणकी अपेक्षा अतिविस्तृत है ।

शंका—क्षेत्रप्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि कैसे मापी, अर्थात् जानी, जाती है ?

समाधान—जिसप्रकार प्रस्थसे जौ, गेहूं आदिकी राशिका माप किया जाता है,  
उसीप्रकार लोक प्रमाणके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी अर्थात् जानी जाती है । इसप्रकार  
लोकके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका माप करने पर वह अनन्त लोकमात्र है । यहां पर इस  
विषयकी उपयोगी गाथा दी जाती है—

जिसप्रकार कोई प्रस्थसे कोदोंके समान संपूर्ण बीजोंका माप करता है उसीप्रकार  
मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी लोकसे अर्थात् लोकके प्रदेशोंसे तुलना करने पर मिथ्यादृष्टि जीव-

पथेण ताव पत्थवाहिरत्थो पुरिसो पत्थवाहिरत्थाणि वीयाणि मिणेदि । कथं लोएण लोयत्थो पुरिसो लोयत्थं मिच्छाइटिरासिं मिणेदि त्ति ? जदो लोणेण पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइटिजीवा तदो ण एस दोसो । कथं पण्णाए मिणिज्जंते मिच्छाइटिजीवा ? बुद्धे— एकेकस्मि लोणागासपदेसे एकेकं मिच्छाइटिजीवं णिक्खेविऊण एक्को लोगो इदि मणेण संकप्पेयव्वो । एवं पुणो पुणो मिणिज्जमाणे मिच्छाइटिरासी अणंतलोगमेत्तो होदि । एत्थुवसंहारगाहा—

लोणागासपदेसे एकेके णिक्खेवेवि तह दिट्ठं ।

एवं गणिज्जमाणे हवन्ति लोणा अणंता दु ॥ २३ ॥

को लोगो' णाम ? सेट्ठिणो । का सेटी' ? सत्तरज्जुमेत्तायामो । का रज्जु

राशिका प्रमाण लानेके लिये अनन्त लोक होते हैं, अर्थात् अनन्तलोकप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ॥ २२ ॥

शंका— प्रस्थसे बहिर्भूत पुरुष प्रस्थसे बहिर्भूत बीजोंको प्रस्थके द्वारा मापता है, यह तो युक्त है, परंतु लोकके भीतर रहनेवाला पुरुष लोकके भीतर रहनेवाली मिथ्यादृष्टि जीवराशिको लोकके द्वारा कैसे माप सकता है ?

समाधान— जिसलिये बुद्धिसे संपूर्ण मिथ्यादृष्टि जीव लोकके द्वारा मापे जाते हैं, इसलिये उपर्युक्त दोष नहीं आता है ।

शंका— बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीव कैसे मापे जाते हैं ?

समाधान— लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करके एक लोक हो गया इसप्रकार मनसे संकल्प करना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः माप करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि अनन्तलोकप्रमाण होती है । इसप्रकार बुद्धिसे मिथ्यादृष्टि जीवराशि मापी जाती है । इस विषयकी यहाँ पर उपसंहाररूप गाथा कहते हैं—

लोकाकाशके एक एक प्रदेश पर एक एक मिथ्यादृष्टि जीवको निक्षिप्त करने पर जैसा जिनैन्द्रदेवने देखा है उसीप्रकार पूर्वोक्त लोकप्रमाणके क्रमसे गणना करते जाने पर अनन्त लोक हो जाते हैं ॥ २३ ॥

शंका— लोक किसे कहते हैं ?

समाधान— जगछेणीके घनको लोक कहते हैं ।

शंका— जगछेणी किसे कहते हैं ?

समाधान— सात रज्जुप्रमाण आकाश प्रदेशोंकी लंबाईको जगछेणी कहते हैं ।

१ जगसेट्ठिवण्यमाणो लोयायासो । ति. प. पत्र ४. पयंरं सेटीए शणियं लोगो । अज. सू. पृ. १५९.

२ सेटी वि पङ्खेदाणं । होदि असंखेज्जदिमपमाणविंदशुलाण हदी । त्रि. सा. ७. असंखेज्जाओ जोयण- कोडाकोडीओ सेटी । अज. पृ. १५९.

णाम ? तिरियलोगस्स मज्झिमवित्थारो । कथं तिरियलोगस्स रुंदत्तणमाणिज्जदे ? जत्तियाणि दीवसागररूपाणि जंबूदीवच्छेदणाओ च रूवाहियाओ केसिं च आहरियाणमुवसेण संखेज्जरूवाहियाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्थरासिणा छिण्णाविसिट्ठं गुणिदे रज्जू णिप्पज्जदि । एसो एति सेटीए सत्तमभागो । कम्मि तिरियलोगस्स पज्जवसाणं ?

शंका—रज्जु किसे कहते हैं ?

समाधान—तिर्यग्लोकके मध्यम विस्तारको रज्जु कहते हैं ।

शंका—तिर्यग्लोककी चौड़ाई कैसे निकाली जाती है ?

समाधान—जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उनको तथा एक अधिक जम्बूद्वीपके छेदोंको विरलित करके तथा उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, अर्धच्छेद करनेके पश्चात् अवशिष्ट राशिको गुणित कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है । अथवा, कितने ही आचार्योंके उपदेशसे जितना द्वीपों और सागरोंका प्रमाण है उसको और संख्यात अधिक जम्बूद्वीपके छेदोंको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे, छेद करनेके पश्चात् अवशिष्ट राशिको गुणा कर देने पर रज्जुका प्रमाण उत्पन्न होता है । यह जगच्छेणीका सातवां भाग आता है ।

विशेषार्थ—रज्जुके विषयमें दो मत पाये जाते हैं । कितने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिका पर जाकर रज्जु समाप्त होती है । तथा कितने ही आचार्योंका ऐसा मत है कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंकी चौड़ाईसे रुके हुए क्षेत्रसे संख्यात गुणे योजन जाकर रज्जुकी समाप्ति होती है । स्वयं वीरसेन स्वामीने इस दूसरे मतको अधिक महत्व दिया है । उनका कहना है कि ज्योतिषियोंके प्रमाणको लानेके लिये २५६ अंगुलके वर्ग प्रमाण जो भागद्वार बतलाया है उससे यही पता चलता है कि स्वयंभूरमण समुद्रसे संख्यातगुणे योजन जाकर ही मध्यलोककी समाप्ति होती है । इन दोनों मतोंके अनुसार रज्जुका प्रमाण निकालनेके लिये रज्जुके जितने अर्धच्छेद हों उतने स्थानपर २ रख कर परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका अर्धच्छेद करनेके अनन्तर जो भाग अवशिष्ट रहे उससे गुणा कर देना चाहिये । इसप्रकार करनेसे रज्जुका प्रमाण आ जाता है । जितने द्वीप और समुद्र हैं उनमें एक अधिक या संख्यात अधिक जम्बूद्वीपके अर्धच्छेद मिला देने पर रज्जुके अर्धच्छेद हो जाते हैं । इनके निकालनेकी प्रक्रिया इसप्रकार है—

मध्यसे रज्जुके दो भाग करना चाहिये, यह प्रथम अर्धच्छेद है । अनन्तर आधा आधा

१ जगसेटीए सत्तमभागो रज्जु य भासते । ति. प. पत्र ६. जगसेटीसत्तमभागो रज्जु । त्रि. सा. ७. उद्धारसागराणं अद्धारज्जाण जत्तिया समया । दुग्गादुग्गणपत्तिथरदीवोदहि रज्जु एवइया ॥ वृ. क्षे. १, ३.

तिण्हं वादवलयणं बाहिरभागे । तं कथं जाणिज्जदि ? ' लोगो वादपदिट्ठिदो ' ति वियाह-  
पण्णत्तीवयणादो । सयंभूरमणसमुद्वाहिरवेदियाए परदो केचियमद्धानं गंतूण तिरियलोग-  
समत्ती होदि ति भणिदे असंखेज्जदीवसमुद्दरुंदरुद्धजोयणेहिंतो संखेज्जगुणाणि गंतूण  
होदि । एदं कुदो णव्वेदे ? जोइसियाणं वेळ्ळपण्णंगुलसदवग्गमेत्तमागहारपरूवयसुत्तादो,

करनेसे (पहले मतके अनुसार) दूसरा अर्धच्छेद स्वयंभूरमण समुद्रमें, तीसरा अर्धच्छेद स्वयंभूरमण द्वीपमें, इसप्रकार एक एक अर्धच्छेद उत्तरोत्तर एक एक द्वीप और एक एक समुद्रमें पड़ता है । किन्तु लवण समुद्रमें दो अर्धच्छेद पड़ेंगे । उनमेंसे पहला डेढ़लाख योजन भीतर जाकर और दूसरा पचास हजार योजन भीतर जाकर पड़ता है । इनमेंसे दूसरा अर्ध-च्छेद जम्बूद्वीपका मान लेने पर जितने द्वीप और समुद्र हैं उतने अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ जाता है । अन्तमें पचास हजार योजन लवण समुद्रके और इतने ही योजन जम्बूद्वीपके अवशिष्ट रहते हैं । इनको मिला देने पर एक लाख योजन होता है । इस एक लाख योजनके १७ अर्धच्छेद करने पर एक योजन अवशिष्ट रहता है, जिसके १९ अर्धच्छेद करनेके बाद एक सूर्यगुल शेष रहता है । पल्यके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण एक सूर्यगुलके अर्धच्छेद होते हैं । इसप्रकार पहले मतके अनुसार जितने द्वीप और समुद्र हैं उनकी संख्यामें १+१७+१९=३७ अर्धच्छेद अधिक पल्यके अर्धच्छेदोंके वर्ग प्रमाण अर्धच्छेद मिला देने पर रज्जुके कुल अर्धच्छेद होते हैं । तथा दूसरे मतके अनुसार इस संख्यामें संख्यात और मिला देने पर रज्जुके संपूर्ण अर्धच्छेद होते हैं, क्योंकि, इस मतके अनुसार संख्यात अर्धच्छेद हो जानेके बाद स्वयंभूरमण समुद्रमें अर्धच्छेद प्राप्त होता है ।

शंका—तिर्यग्लोकका अन्त कहां पर होता है ?

समाधान—तीनों वातवलयोंके बाह्य भागमें तिर्यग्लोकका अन्त होता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—' लोक वातवलयोंसे प्रतिष्ठित है ' इस व्याख्याप्रकृतिके ध्वननसे जाना जाता है कि तीनों वातवलयोंके बाह्य भागमें लोकका अन्त होता है ।

स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य घेदिकासे उस ओर कितना स्थान जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे जितने योजन रुके हुए हैं उनसे संख्यात् गुणा जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है ।

शंका—यह किससे जाना जाता है ?

समाधान—ज्योतिषी देवोंके दोसौ छप्पन अंगुलोंके वर्गमात्र भागहारके प्ररूपक

१ मज्झिम सैट्ठिकगे वेसयच्छपणअंगुलकीए । जं लद्धं सो राशी जोदिसियसुराणं सव्वाणं । ति. प. पत्र २०१. तिणिसयजोयणाणं वेगदछप्पणअंगुलाणं च । कदिहिदपदरं वेतरजोइसियाणं च परिमाणं ॥ गो. जी. १६०. वेळ्ळपण्णंगुलसयवग्गपळिभागो पयरस्स । अनु. सू. १४२. पृ. १९२.

‘दुगुणदुगुणो दुवग्गो णिरंतरो तिरियलोमे’ चि तिलोयपण्णत्तिमुत्तादो य णव्वदे । ण च एदं वक्खाणं जत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबूदीवछेदणाणि च रूवाहियाणि चि परियम्म-सुत्तेण सह विरुज्झइ, रूवेहि अहियाणि रूवाहियाणि चि गह्वाणादो । अण्णाइरिय-वक्खाणेण सह विरुज्झदि चि ण, एदस्स वक्खाणस्स जं भदंतं तेण वक्खाणाभासेण विरुद्धाए एदस्स समवट्ठाणादो । तं वक्खाणाभासमिदि कुदो णव्वदे ? जोइसियभाग-हारमुत्तादो चंदाइच्चविषयमाणपरूवयतिलोयपण्णत्तिमुत्तादो च । ण च सुत्तविरुद्धं वक्खाणं होइ, अहप्पसंगादो । किं च ण तं वक्खाणं घडदे, तस्मिह वक्खाणे अवलंबिज्जमाणे सेटीए सत्तमभागस्मिह अट्टमुण्णदंसणादो । ण च सेटीए सत्तमभागस्मिह अट्टमुण्णओ अत्थि, तदत्थित्तविहाययसुत्ताणुवलंभादो । तदो तत्थ अट्टमुण्णविणासणद्वं केत्तिण वि रासिणा

सूत्रसे और ‘तिर्यग्लोकमें दोके धर्मसे लेकर उत्तरोत्तर दूना दूना है’ इस त्रिलोकप्रकृति के सूत्रसे जाना जाता है कि असंख्यात द्वीपों और समुद्रों के व्याससे रुके हुए क्षेत्रसे संख्यातगुणा जाकर तिर्यग्लोककी समाप्ति होती है । और यह व्याख्यान ‘जितने द्वीपों और सागरोंकी संख्या है और जम्बूद्वीपके रूपाधिक जितने छेद हैं उतने रज्जुके अर्धच्छेद हैं’ परिकर्म सूत्रके इस व्याख्यानके साथ भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, वहां पर रूपसे अधिक अर्थात् एकसे अधिक ऐसा ग्रहण न करके रूपसे अधिक अर्थात् बहुत प्रमाणसे अधिक ऐसा ग्रहण किया है ।

शंका—यह व्याख्यान अन्य आचार्योंके व्याख्यानके साथ तो विरोधको प्राप्त होता है ?

समाधान- नहीं, क्योंकि, यह व्याख्यान जिसलिये संगत है इसलिये दूसरे व्याख्यानाभासोंसे इसके विरुद्ध पड़ने पर भी यह व्याख्यान प्रमाणरूपसे अवस्थित ही रहता है ।

शंका—अन्य आचार्योंका व्याख्यान व्याख्यानाभास है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—ज्योतिषियोंके भागहारके प्ररूपक सूत्रसे और खन्द्र तथा सूर्यके बिम्बोंके प्रमाणके प्ररूपक त्रिलोकप्रकृति के सूत्रसे जाना जाता है कि पूर्वोक्त व्याख्यानके विरुद्ध जो अन्य आचार्योंका व्याख्यान पाया जाता है वह व्याख्यानाभास है । और सूत्रविरुद्ध व्याख्यान ठीक नहीं कहा जा सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा । तथा वह अन्य आचार्योंका व्याख्यान घटित भी तो नहीं होता है, क्योंकि, उस व्याख्यानके अवलम्बन करने पर जगच्छ्रेणीके सप्तम भागका जो प्रमाण बतलाया है उसके अन्तमें आठ शून्य दिखाई देते हैं । परंतु जगच्छ्रेणीके सप्तम भागरूप प्रमाणमें अन्तके आठ शून्य नहीं पाये जाते हैं, क्योंकि, अन्तमें आठ शून्योंके अस्तित्वका विधायक कोई सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये

१ अट्टवउट्टतितिसत्तासत्त य द्वाणेषु णव सुण्णाणि । छत्तीससत्तद्वणवअट्ठा तित्तकत्ता होति अंककमा ॥ एदेहि शुणित्तंखेज्जरूपपदंछलेहिं मज्झिमाए । सेटिकदीए लुद्धं माणं चंदाण जोइसिदाण ॥ तेत्थियमेत्ताणि रविणो हवन्ति ॥ १२, १३, १४ ॥ ति. प. पत्र २०१.

अहिण होद्वं । होंतो वि असंखेज्जभागमहिओ संखेज्जभागमहिओ वा ण होदि, तदणुगहकारिसुत्ताणुवलंभादो । तदो दीवसमुद्गरुद्धखेत्तायामादो संखेज्जगुणेण बाहिर-  
खेत्तेण होद्वमण्णहा पुच्चुत्तसुत्तेहि सह विरोहप्पसंगादो । ' जो मच्छो जोयणसहस्सिओ  
सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तडे वेयणसमुग्धाएण समुद्दो काउलेस्सियाए लग्गो ' ति  
एदेण वेयणासुत्तेण सह विरोहो किण्ण होदि चि भणिदे ण, सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिर-  
वेदियादो परभागद्विदपुढवीए बाहिरिल्लतडत्तणेण गहणादो । तो वि काउलेस्सियाए  
महामच्छो ण लग्गदि चि णासंकणिज्जं, पुढविद्विदपदेसम्हि चेव हेट्ठा वादवलायाम-

रज्जुके प्रमाणके अन्तमें बतलाये हुए आठ शून्योंके नष्ट करनेके लिये जो कुछ भी राशि हो  
वह अधिक ही होना चाहिये । अधिक होती हुई भी वह राशि असंख्यातवांभाग अधिक अथवा  
संख्यातवांभाग अधिक तो हो नहीं सकती है, क्योंकि, इसप्रकारके कथनकी पुष्टि करनेवाला कोई  
सूत्र नहीं पाया जाता है । इसलिये जितने क्षेत्र-विस्तारको डीपों और समुद्रोंने रोक रक्खा  
है उससे संख्यातगुणा बाहिरी अर्थात् अन्तके समुद्रसे उस ओरका क्षेत्र होना चाहिये, अन्यथा  
पहले कहे गये सूत्रोंके साथ विरोधका प्रसंग आ जायगा ।

'जो एक हजार योजना महामत्स्य है वह वेदनासमुद्रातस पीडित हुआ स्वयंभूरमण  
समुद्रके बाह्य तट पर कापोतलेश्या अर्थात् तनुवातवलयसे लगता है, इस वेदनाखंडके  
सूत्रके साथ पूर्वोक्त व्याख्यान विरोधको क्यों नहीं प्राप्त होता है ऐसा किसीके पूछने पर  
आचार्य कहते हैं कि फिर भी इस कथनका पूर्वोक्त कथनके साथ विरोध नहीं आता है,  
क्योंकि, यहाँ पर 'बाह्य तट' इस पदसे स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिकाके परभागमें  
स्थित पृथिवीका ग्रहण किया गया है ।

शंका—यदि ऐसा है तो महामत्स्य कापोतलेश्यासे संसक्त नहीं हो सकता है ?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, पृथिवीस्थित प्रदेशोंमें अध-  
स्तन वातवलयका अवस्थान रहता ही है ।

विशेषार्थ—यहाँ ऐसा अभिप्राय जानना चाहिये कि समुद्रकी वेदिका और

१ रुवाहियदीवसागररूवाणि विरलिय विगं करिय अण्णोणम्मत्तं कादूण तत्थ तिपिण रूवाणि अवणिय  
जोयणलक्खेण गुणिदे दीवसमुद्गरुद्धतिरियलोगखेत्तायामुप्पत्तीदो । ण च एत्थियो चेव तिरियलोगविवस्संमो जगसेदीए  
सत्तमभागमि पंचसुण्णाणुवलंभादो । ण च एदम्हादो रज्जुविवस्संमो ऊणो होदि रज्जुअम्भंतरमुद्दस्स चडव्वीसजोयणमेत्त-  
वादरुद्धवस्सत्तस्स वज्झामुवलंभादो । ण च तेत्थियमेत्तं पक्खित्ते पंचसुण्णओ फिट्ठेति तहाणुवलंभादो । तम्हा सवलदीव-  
सायरविवस्सादो वाहिं केत्तिण्ण वि खेत्तेण होद्वं । धवला. ८८१. ति. प. प. २२५.

२ जो मच्छो जोयणसहस्सओ सयंभूरमणसमुद्दस्स बाहिरिल्लए तड अज्झदो ॥ ८ ॥ वेयणसमुग्धाएण  
समुद्दो ॥ ८ ॥ काउलेस्सियाए लग्गो, काउलेस्सिया णाम तदियो वादवलओ ॥ ९ ॥ सू. धवला. पत्त ८८१-८८२



वहाणादो'। एसो अत्थो जइवि पुब्बाहरियसंपदायविरुद्धो तो वि तंतजुत्तिबलेण अम्हेहि परूविदो। तदो इदमिथं वेत्ति णेहासंगहो कायव्वो, अईदियत्थविसए छुदुवत्थवियप्पिद-जुत्तीणं णिण्णयहेउत्ताणुववत्तीदो। तम्हा उवएसं लद्धं विसेसणिण्णयो एत्थ कायव्वो चि। खेत्तपमाणपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? असंखेज्जपदेसे लोगागासे अणंतलोगमेत्तो वि जीवरासी सम्माइ चि जाणावणट्ठं। अट्ठसु माणेसु लोगपमाणेण मिणिज्जमाणे एत्थिलोगा होंति चि जाणावणट्ठं वा। तो वि ते केत्तिया होंति चि भणिदे एगलोगेण मिच्छाइट्ठि-रासिम्हि भागे हिदे लद्धरूवमेत्ता लोगा होंति।

### तिण्हं पि अधिगमो भावपमाणं ॥ ५ ॥

वातवलयके मध्यभागमें जो पृथिवी है वहां वातवलयकी संभावना है। और इसलिये महामत्स्य वेदनासमुद्रातके समय उससे स्पर्श कर सकता है। इसलिये स्वयंभूरमणकी बाह्य वेदिकाके उस ओर असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंके व्याससे संख्यातगुणी पृथिवीके सिद्ध हो जाने पर भी 'वेदनासमुद्रातसे पीड़ित हुआ महामत्स्य वातवलयसे संसक्त होता है' वेदनाखंडके इस वचनके साथ उक्त कथनका कोई विरोध नहीं आता है।

यद्यपि यह अर्थ पूर्वाचार्योंके संप्रदायके विरुद्ध है, तो भी आगमके आधारपर युक्तिके बलसे हमने (वीरसेन आचार्यने) इस अर्थका प्रतिपादन किया है। इसलिये यह अर्थ इसप्रकार भी हो सकता है, इस विकल्पका संग्रह यहां पर छोड़ना नहीं चाहिये, क्योंकि, अतीन्द्रिय पदार्थोंके विषयमें छन्नस्थ जीवोंके द्वारा कल्पित युक्तियोंके विकल्प रहित निर्णयके लिये हेतुता नहीं पाई जाती है। इसलिये उपदेशको प्राप्त करके इस विषयमें विशेष निर्णय करना चाहिये।

शंका—यहां पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किसलिये किया है ?

समाधान—असंख्यात प्रदेशी लोकाकाशमें अनन्तलोकप्रमाण जीवराशि समा जाती है इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहां पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किया है। अथवा, आठ प्रकारके प्रमाणोंमेंसे लोकप्रमाणके द्वारा जीवोंकी गणना करने पर इतने लोक हो जाते हैं इस बातके ज्ञान करानेके लिये यहां पर क्षेत्रप्रमाणका प्ररूपण किया है। तो भी वे लोक कितने होते हैं ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि एक लोकका अर्थात् एक लोकके जितने प्रदेश हैं उनका मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जितनी संख्या लब्ध आवे तत्प्रमाण लोक होते हैं।

उपर्युक्त तीनों प्रमाणोंका ज्ञान ही भावप्रमाण है ॥ ५ ॥

१ भावत्थो पुब्बवेरियदेवेण महामच्चो सयंभुरमणवातिविश्याए बाहिरे भागे लोणगालीए सामीवे पुत्तीदो। तत्थ तिव्ववेयवाधेसेण वेयणसमुवादेण समुवादी जाव लोणगालीए बाहिरेपरेतो लम्पो चि वत्तं होदि।  
धनवा. पन्. ८८२.

अधिगमो णाणपमाणमिदि एगट्ठो । सो वि अधिगमो पंचविधो मदि-सुद-ओहि-मणपज्जव-केवलणाणभेदेण । एकेके ति विहं द्वय-खेत्त-कालभेएण । द्वयस्थितिविसयणाणं द्वयभावपमाणं । खेत्तविसिद्धद्वयस्स णाणं खेत्तभावपमाणं । तहा कालस्स वि वत्तच्चं । सुत्ते भावपमाणं ण वुत्तं ? ण, तस्स अणुत्तसिद्धीदो । ण च भावपमाणमंतरेण तिण्हं पमाणानं सिद्धी भवदि, सहियपमाणामावे गउणपमाणस्सासंभवादो, भावपमाणं बहु-वण्णणीयमिदि वा हेदुवादाहेदुवादाणं अवधारणसिस्साणमभावादो वा । अथवा एयं भावपमाणं वत्तच्चं । तं जहा— मिच्छाश्ङ्खिरासिणा सव्वपज्जए भागे हिदे जं भागलद्धं तं भागहारमिदि कट्टु सव्वपज्जयस्सुवरि खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि वत्तच्चाणि । तं जहा— सव्वपज्जए भागहारमेत्ते खंडे कदे तत्थ एगखंडपमाणं मिच्छाश्ङ्खिरासी होदि । खंडिदं गदं । तेणेव भागहारेण सव्वपज्जए भागे हिदे भागलद्धपमाणं मिच्छा-श्ङ्खिरासी होदि । भाजिदं गदं । तं चेव भागहारं विरलेदूण सव्वपज्जयं समखंडं कादूण

अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं। वह ज्ञानप्रमाण भी मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके भेदसे पांच प्रकारका है। तथा उन पाँचोंमेंसे प्रत्येक ज्ञानप्रमाण द्रव्य, क्षेत्र और कालके भेदसे तीन तीन प्रकारका है। उन तीनोंमेंसे द्रव्योंके अस्तित्व विषयक ज्ञानको द्रव्यभावप्रमाण कहते हैं। क्षेत्रविशिष्ट द्रव्योंके ज्ञानको क्षेत्रभावप्रमाण कहते हैं। इसीप्रकार कालभावप्रमाणके विषयमें भी जानना चाहिये।

शंका— सूत्रमें भावप्रमाणका स्वतंत्र कथन नहीं किया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, उसकी बिना कहे ही सिद्धि हो जाती है। दूसरे भाव-प्रमाणके बिना शेष तीन प्रमाणोंकी सिद्धि भी नहीं हो सकती है, क्योंकि, योग्य अर्थात् मुख्य प्रमाणके अभावमें गौणप्रमाणका होना असंभव है। अथवा, भावप्रमाण बहुवर्णनीय है, अथवा, हेतुवाद और अहेतुवादके अवधारण करनेवाले शिष्योंका अभाव होनेसे सूत्रमें स्वतन्त्ररूपसे भावप्रमाणका कथन नहीं किया है।

अथवा, इस भावप्रमाणका कथन करना चाहिये। वह इस प्रकार है, मिथ्यादृष्टि जीवराशिका संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसे भागहाररूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंके ऊपर खंडित, भाजित, विरलित और अपहृत इनका कथन करना चाहिये। आगे उन्हीं चारोंका स्पष्टीकरण करते हैं—

संपूर्ण पर्यायोंके भागहारप्रमाण खंड करने पर जितने खंड आवें, उनमेंसे एक खण्डका जितना प्रमाण हो तन्मात्र मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार खण्डितका वर्णन समाप्त हुआ।

पूर्वोक्त भागहारका ही संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देने पर जो भजनफल लब्ध आवे तत्प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ।

पूर्वोक्त भागहारको ही विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर

दिण्ये तत्थ बहुखंडाणि च्छोड्डिय एगखंडगहिदे मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं होदि । विरलिदं गदं । तं चेव भागहारं सलागभूदं ठवेदूण मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सच्चपज्जए अवहिरिज्जदि, सलागादो एगरूवं अवणिज्जदि । पुणो मिच्छाइट्ठिरासिपमाणं सच्चपज्जयम्मि अवहिरि-ज्जदि, सलागादो एगं रूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे सच्चपज्जओ व सला-गाओ च जुगवं णिट्ठिदाओ । तत्थ एगवारमवहारिदपमाणं मिच्छाइट्ठिरासी होदि । अवहिदं गदं । मिच्छाइट्ठिरासिस्स पमाणविसए सोदाराणं णिच्छयुप्पायणट्ठं मिच्छाइट्ठि-रासिस्स पमाणपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । सुत्ताभावे कथमेदं वुच्चदे ? सुत्तेण सूचिदसादो । तं जहा—

सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं मिच्छाइट्ठिरासिभाजिदसिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणवग्गं च

संपूर्ण पर्यायोंके समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर उनमेंसे बहुत खण्डोंको छोड़कर और एक खण्डके ग्रहण करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ ।

उसी भागद्वारेको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंमेंसे मिथ्यादृष्टि जीव-राशिके प्रमाणको कम करना चाहिये, एकवार कम किया इसलिये शलाकाराशिमेंसे एक घटा देना चाहिये । दूसरीवार मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको शेष संपूर्ण पर्यायोंमेंसे घटा देना चाहिये । दूसरीवार मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको कम किया इसलिये शलाका राशिमेंसे एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर संपूर्ण पर्यायों और उसीप्रकार शलाकाराशि युगपत् समाप्त हो जाती हैं । यहाँ पर संपूर्ण पर्यायोंमेंसे जितना प्रमाण एकवार घटाया गया है तत्प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । इसप्रकार अपहतका कथन समाप्त हुआ ।

अब आगे मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशिके विषयमें श्रोताओंको निश्चय उत्पन्न करानेके लिये वर्गस्थानमें खण्डित, भाजित, विरलित, अपहत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं ।

शंका—वर्गस्थानमें खण्डित आदिकके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपक सूत्र नहीं होने पर इसका कथन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—सूत्रसे सूचित होनेके कारण इसका कथन किया है, जो इसप्रकार है—

सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिको तथा सिद्ध और तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके वर्गमें मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका भाग देने पर



होदि । विरलिदं गदं । तं चेव धुवरासिं सलागभूदं ठवेऊण मिच्छाइडिरासिपमाणं सच्चजीवरासिउवरिमवग्गमिह अवणीय धुवरासीदो एगरूवमवणिज्जदि । पुणो वि मिच्छा-इडिरासिपमाणं सच्चजीवरासिस्सुवरिमवग्गमिह अवणीय धुवरासीदो एगं रूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे सच्चजीवरासिउवरिमवग्गो च धुवरासी च जुगवं णिड्ढिदा । तत्थ एगवारमवणिदपमाणं मिच्छाइडिरासी होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं केसियं ? सच्चजीवरासिस्स अणंता भागा अणंताणि सच्चजीवरासिपढमवग्गमूलाणि चि । तं जहा—

सच्चजीवरासिपढमवग्गमूलं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स सच्चजीवरासिं समखंडं

अतः एक खंड १३ प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि हुई ।

पूर्वोक्त ध्रुवराशिको शलाकारूपसे स्थापित करके और मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणको संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे निकालकर शलाकाभूत ध्रुवराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । फिर भी मिथ्यादृष्टि राशिके प्रमाणको शेष संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रमाणमेंसे न्यून करके ध्रुवराशिमें एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग और ध्रुवराशि युगपत् समाप्त हो जाती है । इसमें एकवार निकाली हुई राशिका जितना प्रमाण हो उतनी मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । इसप्रकार अपहृतका वर्णन समाप्त हुआ ।

उद्धारण ( अपहृत )—

शलाकारूप ध्रुवराशि	१९ $\frac{१}{३}$	जीवराशिका उपरिम वर्ग	२५६
	-१		-१३
	१८ $\frac{१}{३}$		२४३
	-१		-१३
	१७ $\frac{१}{३}$		२३०

इस क्रमसे उपरिम वर्गमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण और ध्रुवराशिमेंसे एक एक बटाते जाने पर शलाकाराशि और उपरिम वर्गराशि एक साथ समाप्त होंगे । इनमें एकवार बटाई जानेवाली संख्या १३ प्रमाण मिथ्यादृष्टि हैं ।

शंका—उस मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण कितना है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके अनन्त बहुभागप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है, जो प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलोंके बराबर होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक

काऊण दिण्णे रूवं पडि सव्वजीवरासिपढमवग्गमूलपमाणं पावेदि । पुणो सिद्धतेरसगुण-  
ट्टणोहि भजिदसव्वजीवरासिपढमवग्गमूलं पुव्वविरलणाए हेड्डा विरलिय उवरिमविरलणाए  
एगपढमवग्गमूलं घेत्तूण समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सिद्धतेरसगुणट्टाणपमाणं  
पावेदि । तत्थुवरिमविरलणयरूवूणमेत्तसव्वजीवरासिपढमवग्गमूलाणि रूवूणहेट्ठिमविर-  
लणमेत्तसिद्धतेरसगुणट्टाणपमाणाणि च घेत्तूण मिच्छाहृदिरासी होदि । पमाणं गदं । केण  
कारणेण ? सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? सव्व-

एकके ऊपर जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक  
एकके प्रति संपूर्ण जीवराशिका प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है । अनन्तर सिद्धराशि और सासादन  
आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो  
लब्ध आवे उसे पहले विरलनके नीचे विरलित करके उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त  
संपूर्ण जीवराशिके प्रथम वर्गमूलको ग्रहण करके और उसके समान खण्ड करके अधस्तन  
विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर देयरूपसे स्थापित करने पर प्रत्येक एकके प्रति सिद्धराशि और  
सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर उपरिम  
विरलनमें प्ररूपण किये गये संपूर्ण जीवराशिके एक कम प्रथम वर्गमूलोंको और एक कम  
अधस्तन विरलनमात्र सिद्ध और सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणको मिला  
देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण ( प्रमाण )— जीवराशि = १६; प्रथम वर्गमूल=४; सिद्धतेरस=३

( १ विरलन वर्गमूल )  $\frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} \frac{४}{१} = १ \frac{१}{३}$  सिद्धतेरसका प्रथम वर्गमूलमें  
भाग देने पर लब्ध

( २ विरलन )  $\frac{३}{१} \frac{१}{३}$

( अतः मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण प्रथम विरलनकी शेष तीन राशियां ४+४+४=१२  
और दूसरे विरलनमें प्रथम राशि ( सिद्धतेरस ) को छोड़कर दूसरी राशि १ मिला देने पर  
मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण १२+१=१३ आ जाता है । )

किस कारणसे ?

शंका—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी  
राशि आती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर  
संपूर्ण जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण ( बीजगणितसे )—जीवराशि = क;  $\frac{क^२}{क} = क$

जीवरासी चेव आगच्छदि । दुभागवमहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? तिभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिवग्गमखेत्तं पुव्वावरायामेण तिणिण खंडाणि करिय तत्थेगखंडं धेत्तूण खंडं करिय संधिदे सव्वजीवरासिदुभागवित्थारं वेति । भागायामखेत्तं होदि । एदं अधिय-  
विरलणाए दिण्णे एक्केक्खस्स रूवस्स तिभागहीणसव्वजीवरासी पावेदि । तिभागवमहिय-  
सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? चउवभागहीण-

( अंकगणितसे )— $२५६ \div १६ = १६$

शंका—दूसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—तीसरा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

उदाहरण ( बीजगणितसे )— $\frac{क^३}{क + \frac{क}{२}} = \frac{२}{३} क = क - \frac{क}{३}$

( अंकगणितसे )—१६ का दूसरा भाग ८ है; अतः द्वितीय भाग ८ अधिक १६ = २४ का २५६ में भाग देने पर १० $\frac{२}{३}$  आता है, जो जीवराशि १६ का तीसरा भाग हीन है ।

शंका—दूसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीसरा भाग हीन जीवराशि किस कारणसे आती है ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और जीवराशिवर्ग  
पश्चिमके विस्तारसे तीन खंड करके और उनमेंसे एक खंड ग्रहण १  
करके उसके भी दो खंड करके संधित अर्थात् प्रसारित कर देने पर २  
संपूर्ण जीवराशिका दूसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है । यहाँ ३  
भागायाम क्षेत्र है । इसको अधिक विरलन राशिके प्रत्येक एकके ऊपर देयरूपसे देने पर  
प्रत्येक एकके प्रति तीसरा भागहीन संपूर्ण जीवराशि प्राप्त होती है ।

शंका—तीसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान—चौथा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है । यहाँ पर भी कारणका पहलेके समान कथन करना चाहिये । अर्थात् संपूर्ण जीवराशिके वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व और पश्चिम विस्तारसे चार खण्ड करके और उनमेंसे एक खण्डके तीन खण्ड करके प्रसारित कर देने पर संपूर्ण जीवराशिका तीसरा भागरूप विस्तार जाना जाता है । अनन्तर इन खण्डोंको

१		अ
२		ब
३	अ	ब

सव्वजीवरासी आगच्छदि । एत्थ वि कारणं पुवं व वत्तवं । एवं संखेज्जभागब्भहिय-  
सव्वजीवरासिणा तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? संखेज्जभागहीणसव्वजीव-  
रासी आगच्छदि । उक्कस्ससंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे  
किमागच्छदि ? जहण्णपरित्तसंखेज्जभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । असंखेज्जभाग-  
ब्भहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? असंखेज्जभागहीण-  
सव्वजीवरासी आगच्छदि । उक्कस्स-असंखेज्जासंखेज्जभागब्भहियसव्वजीवरासिणा तदु-  
वरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? जहण्णपरित्तान्तभागहीणसव्वजीवरासी आगच्छदि ।

अधिक विरल्लन राशिक्के प्रत्येक एकके ऊपर दे देने पर चौथा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि  
आ जाती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{k^2}{k + \frac{k}{2}} = \frac{2}{3} k = k - \frac{k}{3}$$

(अंकगणितसे) — (१६ का तीसरा भाग ५ $\frac{1}{3}$  है, अतः तृतीय भाग ५ $\frac{1}{3}$ +१६=२१ $\frac{1}{3}$   
का २५६ में भाग देने पर १२ आते हैं, जो जीवराशि १६ का चौथा भाग हीन है ।)

शंका—इसीप्रकार संख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिक्के  
उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — संख्यातवां भागहीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{k^2}{k + \frac{k}{n}} = \frac{n}{n+1} k = k - \frac{k}{n+1} \text{ (संख्यात } = n \text{)}$$

शंका—उत्कृष्ट संख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिक्के  
उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान — जघन्य परीतासंख्यातवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

शंका—असंख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिक्के उपरिम  
वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ?

समाधान—असंख्यातवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।

शंका—उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीव-  
राशिक्के उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—जघन्य परीतानन्तवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है ।



अणंतभागवमहियसव्वजीवरासिणा तदुवरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? अणंतभाग-  
हीणसव्वजीवरासी आगच्छदि । सव्वत्थ कारणं पुच्चं व वत्तच्चं । एत्थ उवउज्जंतीओ  
गाहाओ—

अवहारवट्टिरूवाणवहारादो ढु लद्धअवहारो ।

रूवहिओ हाणीए होदि ढु वट्टीए विवरीदो ॥ २४ ॥

अवहारविसेसेण य छिण्णवहारादु लद्धरूवा जे ।

रूवाहियऊणा वि य अवहारो हाणिवट्टीणं ॥ २५ ॥

लद्धविसेसच्छिण्णं लद्धं रूवाहिऊणयं चावि ।

अवहारहाणिवट्टीणवहारो सो मुण्यव्वो ॥ २६ ॥

शुंका— अनन्तवां भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें  
भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—अनन्तवां भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है । सर्वत्र कारणा कथन  
पहलेके समान करना चाहिये । अब यहाँ पर उपयुक्त गाथाएँ दी जाती हैं—

भागहारमें उसीके वृद्धिरूप अंशके रहने पर भाग देनेसे जो लब्ध भागहार (हर)  
आता है वह हानिमें रूपाधिक और वृद्धिमें इससे विपरीत अर्थात् एक कम होता है ॥ २४ ॥

उदाहरण ( बीजगणितसे )—

$$(१) \frac{\frac{k^2}{k}}{k + \frac{k}{n}} = k - \frac{k}{n+1}, \quad (२) \frac{\frac{k^2}{k}}{k - \frac{k}{n}} = k + \frac{k}{n-1}$$

$$(\text{अंकगणितसे})— (१) \frac{1}{1 + \frac{1}{2}} = \frac{2}{3} = 1 - \frac{1}{3} \quad (२) \frac{1}{1 - \frac{1}{2}} = \frac{2}{1} = 1 + \frac{1}{1}$$

भागहार विशेषसे भागहारके छिन्न अर्थात् भाजित करने पर जो संख्या आती  
है उसे रूपाधिक अथवा रूपन्यून कर देने पर वह क्रमसे हानि और वृद्धिमें भागहार  
होता है ॥ २५ ॥

लब्ध विशेषसे लब्धको छिन्न अर्थात् भाजित करने पर जो संख्या उत्पन्न हो उसे एक  
अधिक अथवा एक कम कर देने पर वह क्रमसे भागहारकी हानि और वृद्धिका भागहार  
होता है ॥ २६ ॥

उदाहरण गाथा २५-२६ के ( बीजगणितसे )—  $\frac{k}{b} = p; \quad \frac{k}{s} = m;$

लद्धंतरसंगुणिदे अवहारे भजमाणरासिन्धि ।

पक्खित्ते उप्पज्झइ लद्धस्सद्वियस्स जो रासी ॥ २७ ॥

हारान्तरद्वतहाराल्लब्धेन हतस्य पूर्वलब्धस्य ।

हारद्वतभाज्यशेषः सै चान्तरं हानिवृद्धी स्तः ॥ २८ ॥

$$\begin{aligned} \text{वृद्धिका—} \frac{\text{क}}{\text{प} + \text{म}} &= \frac{\text{क}}{\text{प} \left( 1 + \frac{\text{म}}{\text{प}} \right)} = \frac{\frac{\text{क}}{\text{प}}}{1 + \frac{\text{ब}}{\text{स}}} = \frac{\frac{\text{ब}}{\text{स}}}{1 + \frac{\text{ब}}{\text{स}}} \\ \text{हानिका—} \frac{\text{क}}{\text{प} - \text{म}} &= \frac{\text{क}}{\text{म} \left( \frac{\text{प}}{\text{म}} - 1 \right)} = \frac{\frac{\text{क}}{\text{म}}}{\frac{\text{प}}{\text{म}} - 1} = \frac{\frac{\text{स}}{\text{ब}}}{\frac{\text{स}}{\text{ब}} - 1} \end{aligned}$$

( अंकगणितसे ) —

$$\text{वृद्धिका—} \frac{3}{5} = 8; \frac{3}{5} = 6; \frac{1}{5} \text{ छिन्न अवहार} + 1 = \frac{3}{5} + 1 = \frac{8}{5};$$

$$9 \div \frac{1}{5} = \frac{1}{5} \text{ हानिरूप अवहार। } 36 \div \frac{1}{5} = 180 \text{ वृद्धिरूप लब्ध.}$$

$$\text{हानिका—} \frac{3}{5} - 1 = \frac{3}{5}; 9 \div \frac{1}{5} = 18; \frac{3}{5} = 2 = 6 - 4 \text{ हानिरूप लब्ध.}$$

( भागहारके स्थानमें लब्ध लेकर प्रक्रिया करनेसे पहलेके समान ही भागहार आ जाता है । )

दो लब्ध राशियोंके अन्तरसे भागहारको गुणित करके और इससे जो उत्पन्न हो उसे भज्यमान राशिमें मिला देनेपर अधिक लब्धकी जो भज्यमान राशि होगी वह उत्पन्न होती है ॥ २७ ॥

$$\text{उदाहरण ( बीजगणितसे ) —} \frac{\text{अ}}{\text{ब}} = \frac{\text{क}}{\text{ब}} = \text{ड, ब ( स - ड ) + क = ब स = अ}$$

( अंकगणितसे ) — भज्यमान राशि ४० और ३६ भाजक ४;  $40 \div 4 = 10$ ;  $36 \div 4 = 9$ ;  $10 - 9 = 1$  लब्धान्तर  $4 \times 1 = 4 + 36 = 40$  अधिक लब्धकी भज्यमान राशि ।

हारान्तरसे अर्थात् हारके एक खंडसे हारको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे पूर्व लब्धको गुणित करने पर उत्पन्न हुई राशिका ( और नये लब्धका ) भागहारसे भाजित भाज्य-शेष ही अन्तर है जो हानि और वृद्धिरूप होता है ॥ २८ ॥

१ प्रतिषु ' हतस्य ' इति पाठः ।

२ प्रतिषु ' शेषस्य चा ' इति पाठः । किन्तु अजमेरस्थपत्रौ अत्र स्वीकृतः पाठः उपलभ्यते ।

अवणयणरासिगुणितो अवणयणेणूणण लद्धेण ।

भजिदो ह्म भागहारो पक्खेवो होदि अवहारो ॥ २९ ॥

उदाहरण ( बीजगणितसे ) —

भज्यमान राशि—न, भाजक—ख = अ × ब;

$$(१) \quad \text{लब्ध—क, शेष—र (वृद्धिरूप).}$$

$$(२) \quad \text{लब्ध—(क + १), शेष—र' (हानिरूप).}$$

$$न = (अ × ब) क + र - (१)$$

$$\text{और } न = (अ × ब) (क + १) - र' - (२)$$

$$(१) \text{ से } \frac{न}{अ} = ब × क + \frac{र}{अ} \text{—वृद्धिरूप.}$$

$$(२) \text{ से } \frac{न}{अ} = ब (क + १) - \frac{र'}{अ} \text{—हानिरूप.}$$

( अंकगणितसे ) —

भज्यमान राशि—२६३; हार—७२; हारांतर—९;

$$(१) \quad \frac{२६३}{७२} = ३\frac{४७}{७२} \quad \begin{array}{l} \text{पूर्व लब्ध—३} \\ \text{भाज्य शेष—४७} \end{array}$$

$$\frac{२६३}{९} = ८ × ३ + \frac{४७}{९} \quad (\text{हारांतरद्वहारा—८}).$$

$$= २९ + \frac{२}{९} \text{—(वृद्धिरूप).}$$

$$(२) \quad \frac{२६३}{७२} = ४ - \frac{२५}{७२},$$

$$\frac{२६३}{९} = ८ × ४ - \frac{२५}{९} = ३० - \frac{७}{९} \quad (\text{हानिरूप}).$$

भागहारको अपनयन राशिसे गुणा कर देने पर और अपनयनराशि को लब्धराशिमेंसे घटाकर जो शेष रहे उसका भाग दे देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें प्रक्षेपराशि होती है ॥ २९ ॥

उदाहरण ( बीजगणितसे ) —  $\frac{अ}{ब} = क$ , इष्ट ख, अपनयन राशि क—ख

$$ब + \frac{ब(क-ख)}{ख} = \frac{ब क}{ख} \text{ प्रक्षेप अवहार}$$

( अंकगणितसे ) — भज्यमान ३६; भाजक ४; इष्ट ६;  $३६ ÷ ४ = ९$ ;  $९ - ६ = ३$  अपनयन

राशि;  $\frac{४ × ३}{६} = २$  प्रक्षेप भागहार

पक्खेवरासिगुणिदो पक्खेवेणाहिण लद्धेण ।

भजिओ हु भागहारो अवणेजो होइ अवहोरे ॥ ३० ॥

जे अहिया अवहारे रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं ।

अहियवहारेण हिण लद्धं पुव्वफलं ऊणं ॥ ३१ ॥

जे ऊणा अवहारे रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं ।

ऊणवहारेण हिण लद्धं पुव्वफलं अहियं ॥ ३२ ॥

भागहारको प्रक्षेपराशिसे गुणा कर देने पर और प्रक्षेपसे अधिक लब्धराशिका भाग देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें अपनेय राशि होती है ॥ ३० ॥

उदाहरण ( बीजगणितसे )— $\frac{अ}{ब} = क$ , इष्ट ख, प्रक्षिप्त राशि ( ख-क ),

$$\text{अपनेय भागहार ब} - \frac{ब (क-ख)}{ख} = \frac{ब क}{ख}$$

( अंकगणितसे )— $\frac{३६}{४} = ९$ ; इष्ट १२; प्रक्षेप ३; अपनेय भागहार  $\frac{३ \times ४}{१२} = ४ - १ = ३$

भागहारमें जितनी अधिक संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा अधिक अवहारसे हृत अर्थात् भाजित करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमेंसे घटा देने पर नया लब्ध आता है ॥ ३१ ॥

उदाहरण ( बीजगणितसे )— $\frac{अ}{ब} = स$ ; नया भागहार—ब + ड

$$\text{नया लब्ध} = \frac{अ}{ब + ड} = \frac{ब स}{ब + ड} = स - \frac{स ड}{ब + ड}$$

अर्थात्  $\frac{स ड}{ब + ड}$  इसे पुराने भजनफल स में से घटा देने पर नया भजनफल आ जाता है ।

( अंकगणितसे )— $\frac{३६}{४} = ९$ ; १२ नया भागहार; भागहारमें अधिक ३;

$$\frac{४ \times ३}{१२} = १; ९ - १ = ८ \text{ नया भजनफल.}$$

भागहारमें जितनी न्यून संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा न्यून भागहारसे हृत करने पर जो आवे उसे पूर्वफलमें जोड़ देने पर नया लब्ध आता है ॥ ३२ ॥

एदाहि गाहाहि पडिबोहियस्स सिस्सस्स पच्छिमवियप्पो वत्तव्वो । तं जहा, सिद्ध-  
तेरसगुणट्ठाणोवीट्ठिमिच्छाईट्ठिभागम्भहियसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे  
हिदे किमागच्छदि ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणमजिदसव्वजीवरासिभागहीणसव्वजीवरासी आग-

उदाहरण ( बीजगणितसे )—  $\frac{अ}{ब} = स; ब - ड नया भागहार;$

$$नया लब्ध = \frac{अ}{ब - ड} = \frac{ब स}{ब - ड} = स + \frac{स ड}{ब - ड};$$

$\frac{स ड}{ब - ड}$  इसे पुराने भजनफल स में जोड़नेसे नया भजन-  
फल आ जाता है ।

( अंकगणितसे )—  $\frac{३६}{१२} = ३; ९ नया भागहार;$

$$\frac{३ \times ३}{९} = १; ३ + १ = ४ नया भजनफल.$$

इन गाथाओंके द्वारा जो शिष्य प्रतिबोधित किया जा चुका है उसको पश्चिम विकल्प  
बतलाया जाता है । वह इसप्रकार है—

शंका—सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका  
मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे अधिक संपूर्ण जीवराशिका  
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका  
संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो प्रमाण लब्ध आवे उतनी कम संपूर्ण जीवराशि आती  
है, इसमें कुछ भी संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

विशेषार्थ—यहां पर जो अन्तिम विकल्प बतलाया गया है उसका गणित पूर्व  
निश्चित संकेतोंके अनुसार निम्न प्रकार बैठता है—

उदाहरण ( बीजगणितसे )—

$$\frac{\frac{क}{ब}}{क + अ} = क - \frac{क}{अ}$$

( अंकगणितसे )—

$$\frac{१६९}{१६ + १३} = १६ - ३$$

किन्तु एक तो गणितसे ये राशियां समान नहीं सिद्ध होतीं, और दूसरे  
उनका जो फल निकलता है वह मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण न होनेसे प्रकृतमें उसका  
कोई उपयोग दिखाई नहीं देता । बहुत कुछ सोच विचार करने पर भी हम इस  
विषयमें ठीक निर्णय पर नहीं पहुंच सके । तथापि विषयके पूर्वापर प्रसंगको देखते हुए यहां  
अन्तिम विकल्पमें वही बात आना चाहिये जिससे यह प्रकरण प्रारंभ हुआ है, और जिसका कि

च्छदि त्ति ण संदेहो (?) । कारणं गदं । तस्स का णिरुत्ती ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणेण सच्चजीवरासिं भागे हिदे जं भागलद्धं तं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स सच्चजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं पावदि । तत्थ बहुखंडा मिच्छाद्विपमाणं होदि । एयं खंडं सिद्धतेरसगुणट्ठाणपमाणं हवदि । णिरुत्ती गदा ।

यहां कारण बतलाया जा रहा है, अर्थात् सर्वजीवराशि व सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिकी अपेक्षा ध्रुवराशिके द्वारा मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण निश्चित करना । तदनुसार पाठ कुछ निम्न प्रकार होना चाहिये था—

सिद्धतेरसगुणट्ठाणेण मिच्छाद्विभजिदसिद्धतेरसगुणट्ठाणवग्गेण च अब्भहियसच्चजीवरासिणा सच्चजीवरासिउपरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? सिद्धतेरसगुणट्ठाणहीणसच्चजीवरासी आगच्छदि त्ति ण संदेहो ।

अर्थात् सिद्धतेरस गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक और मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्धतेरसगुणस्थानवर्गसे अधिक सर्व जीवराशिका सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर क्या आता है ? सिद्धतेरसगुणस्थान राशिसे हीन सर्वजीवराशि आती है, इसमें संदेह नहीं ।

$$\text{उदाहरण (बीजगणितसे)} — \frac{क^2}{अ + \frac{अ^2}{ब} + क} = ब = क - ब \text{ (मिथ्यादृष्टि)}$$

$$\text{(अंकगणितसे)} — \frac{१६^2}{३ + \frac{९}{४३} + १६} = १३ = १६ - ३ \text{ (मिथ्यादृष्टि)}$$

शंका—इसकी अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणके निकालनेकी निरुक्ति क्या है ?

समाधान—सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका संपूर्ण जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर संपूर्ण जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे स्थापित कर देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । उसमें अर्थात् विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त खण्डोंमें एक भाग कम बहुभागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है और एक भाग सिद्ध और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण है । इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण सर्वजीवराशि १६; सिद्धतेरस ३;  $\frac{१६}{३} = ५\frac{१}{३}$

३ ३ ३ ३ ३ १ इसप्रकार एक खण्ड ३ सिद्ध और सासादनादि तेरह गुणस्थान-  
१ १ १ १ १ १ वर्ती जीवराशिका प्रमाण और शेष बहुभाग १३ मिथ्यादृष्टि  
३ राशिका प्रमाण हुआ ।

जो सो वियप्पो सो दुविहो, हेडिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेडि-  
मवियप्पं वत्तइस्सामो । तं जहा, वेरूवे हेडिमवियप्पो णत्थि । कारणं सव्वजीवरासीदो  
धुवरासी अब्भहिओ जादो ति । अट्ठरूवे हेडिमवियप्पं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्व-  
जीवरासिं गुणेऊण सव्वजीवरासिघणे भागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि । केण  
कारणेण ? जदि सव्वजीवरासिणा तस्स घणो अवहिरिज्जदि तो सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो  
आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो भागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी  
आगच्छदि ? एवं मिच्छाइड्डिरासिमागमणं मणेणावहारिय गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ  
दुगुणादिकरणं वत्तइस्सामो । तं जहा, सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवड्डिदे  
सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । दुगुणिदसव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे  
ओवड्डिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदसव्वजीवरासिणा  
सव्वजीवरासिघणे ओवड्डिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स तिभागो आगच्छदि । अणेण

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । इन दोनोंमेंसे अधस्तन  
विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

द्विरूपवर्गधारां ( प्रकृतमें ) अधस्तनविकल्प संभव नहीं है, क्योंकि, संपूर्ण  
जीवराशिसे धुवराशिका प्रमाण अधिक है । अब अष्टरूप अर्थात् घनधारांमें अधस्तनविकल्प  
बतलाते हैं । धुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका संपूर्ण  
जीवराशिसे घनमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, यदि  
संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिका घन अपहृत किया जाता है तो संपूर्ण जीव-  
राशिसे उपरिम वर्गका प्रमाण आता है । और फिर धुवराशिसे प्रमाणका संपूर्ण जीवराशिसे  
प्रमाणके उपरिमवर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । इसप्रकार  
मिथ्यादृष्टिरासि आती है इस बातको मनमें निश्चित करके पहले गुणा करके अनन्तर भागका  
ग्रहण किया है ।

उदाहरण—जीवराशि १६; धुवराशि १९ $\frac{१}{३}$ ;  $१६ \times १९\frac{१}{३} = \frac{४०९६}{३}$ ;

जीवराशि १६ का घन  $४०९६ \div \frac{४०९६}{३} = ३$  मिथ्यादृष्टि

अब यहां पर द्विगुणाधिकरणविधिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— संपूर्ण जीव-  
राशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीवराशिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिम-  
वर्गका प्रमाण आता है (  $४०९६ \div १६ = २५६$  ) । द्विगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण  
जीवराशिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गका दूसरा भाग  
आता है (  $४०९६ \div ३२ = १२८$  ) । त्रिगुणित संपूर्ण जीवराशिसे प्रमाणसे संपूर्ण जीव-  
राशिसे घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिसे उपरिमवर्गके प्रमाणका तीसरा  
भाग आता है (  $४०९६ \div ४८ = ८४\frac{२}{३}$  ) । इसप्रकार इसी विधिसे जबतक धुवराशिका प्रमाण

विहाणेण गुणमारो वड्डुवेदव्वो जाव धुवरासिपमाणं पत्तो त्ति । पुणो धुवरासिगुणिद-  
सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्ठिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स धुवरासिभागो  
आगच्छदि सो चेव मिच्छाद्विट्ठिरासी । एदेण कारणेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण  
सव्वजीवरासिघणे ओवट्ठिदे मिच्छाद्विट्ठिरासी आगच्छदि त्ति ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिं गुणेऊण तेण घणपढमवग्गमूलं  
गुणेऊण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्ठिदे मिच्छाद्विट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ?  
घणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले ओवट्ठिदे सव्वजीवरासिस्स घणो आगच्छदि ।  
पुणो वि सव्वजीवरासिणा सव्वजीवरासिघणे ओवट्ठिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो  
आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विट्ठिरासी  
आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणे  
कदे हेट्ठिमवियप्पो सम्पपदि ।

१९१ $\frac{१}{३}$  प्राप्त नहीं हो जाता है तबतक गुणकारको बढ़ाते जाना चाहिये । पुनः धुवराशिसे  
संपूर्ण जीवराशिको गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे संपूर्ण जीवराशिके घनके अपवर्तित  
करने पर, संपूर्ण जीवराशिके उपरिमवर्गमें धुवराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे,  
तत्प्रमाण भाग आता है, और वही मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है । इसी कारणसे यह  
कहा कि धुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे संपूर्ण जीव-  
राशिके घनके अपवर्तित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $\frac{१९}{३} \times \frac{२५६}{३} = \frac{४९०६}{३}$ ;  $\frac{४९०६}{३} \div \frac{४९०६}{३} = \frac{४९०६}{३} \times \frac{३}{४९०६} = १३$  मि.

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । धुवराशिसे संपूर्ण जीवराशिको  
गुणित करके जो गुणनफल आवे उससे जीवराशिके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो  
गुणनफल आवे उसके द्वारा घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्धर्तित करने पर मिथ्यादृष्टि जीव-  
राशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनके प्रथम वर्गमूलसे घनाघनके प्रथम वर्गमूलको उद्धर्तित  
करने पर संपूर्ण जीवराशिका घन आता है । अनन्तर संपूर्ण जीवराशिसे संपूर्ण जीवराशिके  
घनके अपवर्तित करने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । अनन्तर धुवराशिका  
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।  
घनाघनधारामें इसप्रकार जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझ कर पहले गुणा करके,  
अनन्तर, भागका ग्रहण किया है । यहां पर द्विगुणादिकरणके कर लेने पर अधस्तन विकल्प  
समाप्त हो जाता है ।

उदाहरण—१६ के घनका प्रथम वर्गमूल ६४; घनाघनका प्रथम वर्गमूल २६२१४४;

$$\frac{१९}{३} \times १६ \times ६४ = \frac{२६२१४४}{३}; \quad \frac{२६२१४४}{३} \div \frac{२६२१४४}{३} = १३ \text{ मि.}$$



उपरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सच्चजीवरासिउपरिमवग्गे भागे हिदे किमागच्छदि ? मिच्छा-इट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्तवारं रासिस्स अद्धच्छेदणं कदे मिच्छाइट्ठिरासी चेव अवचिट्ठे । केण कारणेण ? धुवरासिस्स अद्धच्छेदणयसलागा जदि सच्चजीवरासिअद्धच्छेदणयसलागाहि सरिसा । त्ति वेप्पंति तो धुवरासिं अद्धद्वेण छिदिऊणु-व्वराविदरासिपमाणं सच्चजीवरासिं मिच्छाइट्ठिरासिणा खंडिदपमाणं होदि । एवं होदि । त्ति काऊण सच्चजीवरासिअद्धच्छेदणयं सलागभूदं द्वेऊण सच्चजीवरासिउपरिमवग्गे अद्धच्छेदण छिण्णे सच्चजीवरासी आगच्छदि । पुणो मिच्छाइट्ठिरासिणोवीट्ठिदसच्चजीवरासिणा उपरिम-

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको दिखलाते हैं—

शंका — धुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर कौनसी राशि आती है ?

समाधान—मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ( $246 \div 19\frac{1}{3} = 12$ ) ।

धुवराशिप्रमाण भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार जीवराशिके उपरिमवर्गरूप राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आ जाती है ।

उदाहरण—धुवराशि  $19\frac{1}{3}$  है । इसमेंसे १६ के अर्धच्छेद ४ होते हैं । शेष  $3\frac{1}{3}$  के चौथे अर्धच्छेद पर  $\frac{1}{3}$  अधिक रहता है, इसलिये  $19\frac{1}{3}$  के  $1\frac{1}{3}$  अधिक ४ अर्ध-च्छेद हुए । अतएव जीवराशि १६ के वर्ग २५६ के इतनीवार अर्थात् ४ +  $\frac{1}{3}$  बार अर्धच्छेद करने पर १२ आ जाते हैं ।

शंका—भागहारराशिके अर्धच्छेदप्रमाण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि किस कारणसे आती है ?

धुवराशिकी अर्धच्छेदशलाकार्ण संपूर्ण जीवराशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके बराबर होती हैं, यदि ऐसा ग्रहण कर लिया जाता है तो धुवराशिको अर्धारूपसे छिन्न करके शेष रही हुई राशिका प्रमाण, संपूर्ण जीवराशिको मिथ्यादृष्टि राशिसे खण्डित करने पर जो लब्ध आता है, उतना होता है ( $16 \div 12 = 1\frac{1}{3}$ ) । इसप्रकार होता है, इसलिये संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंकी शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको अर्धच्छेदोंके बराबर छिन्न करने पर संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण आ जाता है । अनन्तर मिथ्या-दृष्टि जीवराशिके द्वारा उद्धर्तित संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणसे ऊपर उत्पन्न की हुई संपूर्ण जीव-राशिमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—जीवराशि १६ के अर्धच्छेद ४ के बराबर जीवराशि के वर्ग २५६ के अर्ध-च्छेद करने पर १६ लब्ध आते हैं । अनन्तर मिथ्यादृष्टिके प्रमाणसे भाजित जीवराशिके प्रमाण

सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि । अधवा धुवरासिअद्दच्छेदणया जदि सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अद्दच्छेदणयसरिसा हवन्ति तो अद्दद्वेण छिण्णावसिद्ध-  
रासिपमाणं मिच्छाद्द्विरासिणा एगरूवं खंडिदेगखंडपमाणं होदि । पुणो धुवरासिअद्द-  
च्छेदणए सलागा काऊण सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे अद्दद्वेण छिण्णे एगरूवमाणगच्छदि ।  
पुणो तमेगरूवं मिच्छाद्द्विरासिभजिदेगरूवेण भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि त्ति ।  
अधवा धुवरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छा-  
द्द्विरासी आगच्छदि त्ति । केण कारणेण ? सव्वजीवरासिउवरिमवग्गेण तदुवरिमवग्गे भागे  
हिदे सव्वजीवरासिस्स उवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे  
भागे हिदे मिच्छाद्द्विरासी आगच्छदि त्ति । तस्स भागहारस्स अद्दच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

११ का जीवराशिके प्रमाण १६ में भाग देने पर १३ मिथ्यादृष्टिका प्रमाण लब्ध आता है ।

अथवा, ध्रुवराशिके अर्धच्छेद यदि संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अर्धच्छेदोंके समान होते हैं तो उत्तरोत्तर अर्धाध्रूपसे छिन्न करनेके अनन्तर अवशिष्ट रही राशिका प्रमाण, मिथ्यादृष्टि जीवराशिके एक रूपको खंडित करके जो एक भाग आता है, उतना होता है । अनन्तर ध्रुवराशिके अर्धच्छेदोंको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको अर्धाध्रूपसे छिन्न करने पर एक आता है । अनन्तर उस एकको मिथ्यादृष्टि जीव-  
राशिके प्रमाणसे भक्त एकके द्वारा भाजित करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—१६ के उपरिम वर्ग २५६ के अर्धच्छेद ८ के बराबर ध्रुवराशि १९१ के अर्धच्छेद करने पर आठवां अर्धच्छेद ११ होता है जो १ में मिथ्यादृष्टिके प्रमाण १३ के भाग देने पर जो लब्ध आता है उतनेके बराबर है । पुनः इन ८ अर्धच्छेदोंको शलाका करके २५६ के इतनी बार अर्धच्छेद करने पर १ आता है । पुनः इस १ में ११ का भाग देने पर १३ लब्ध आते हैं, यही मिथ्यादृष्टिराशि है ।

अथवा, ध्रुवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसके उपरिम वर्गमें ( जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें ) भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । पुनः ध्रुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—सर्व जीवराशिका उपरिम वर्ग २५६; सर्व जीवराशिके उपरिम वर्ग २५६ का उपरिम वर्ग ६५५३६;

$$\frac{256}{13} \times \frac{256}{1} = \frac{65536}{13}, \quad \frac{65536}{1} \div \frac{65536}{13} = 13 \text{ मि.}$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि

अद्वच्छेदणए कदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । एदस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयसलागा केसिया ? सव्वजीवरासीदो उवरि दोणिण वग्गट्ठाणाणि चडिदाणि चि दो रुवे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्थरासिरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिअद्वच्छेदणयमेत्ता होऊण अंतिमभागहारेण अधिया भवंति । एवं भागहारस्स तिगच्छेदणए सलागा काऊण तीहि तीहि सरूवेहि रासिम्मि भागे हिदे वि मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । एवं चउकादि-छेदणयसलागाहि वि रासिम्मि छिज्जमाणे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि चि परूवेदव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु वग्गट्ठाणेषु उवरि वत्तव्वं । णवरि भागहारच्छेदणाओ संकलिज्जमाणे एवं संकलेदव्वाओ । तं जहा, सव्वजीवरासीदो चडिदट्ठाणमेत्तवग्गसलागाओ विरलिय विगं करियण्णोण्णमत्थरासिरूवूणेण सव्वजीवरासिच्छेदणए गुणिदे भागहार-

जीवराशि आती है ।

शंका—इस भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान—संपूर्ण जीवराशिके ऊपर दो वर्गस्थान जाकर वह भागहार उत्पन्न हुआ है, इसलिये दोका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो संख्या उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके अवशिष्ट राशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो प्रमाण आवे उसे अन्तिम भागहारसे अधिक करने पर अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं ।

उदाहरण— $2 \times 2 = 4 - 1 = 3 \times 3 = 12$  पूर्ण, और  $\frac{3}{12}$  अधिक उक्त भागहारके कुल १ १

अर्धच्छेद होते हैं ।

इसीप्रकार भागहारके त्रिकच्छेदोंको शलाका करके तीन तीनका राशिमें भाग देने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है । इसीप्रकार चतुर्थ आदि छेद शलाकाओंके द्वारा भी राशिके छिन्न करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा कथन करना चाहिये ।

उदाहरण— $\frac{246}{12}$  के  $\frac{22}{12}$ ,  $\frac{22}{12}$  इसप्रकार २ त्रिकछेद हैं, अतः इतनीवार २५६ में ३ का भाग देने पर १३ लब्ध आ जाते हैं ।

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंके ऊपर भी कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि भागहारके अर्धच्छेदोंका संकलन करते समय इसप्रकार संकलन करना चाहिये । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

संपूर्ण जीवराशिसे जितने वर्गस्थान ऊपर गये हों उतनी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके शेष राशिसे संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने

छेदणया भवति । सन्वत्थ दुगुणादिकरणं पि वत्तव्वं । तदो वेरूवधारापरुह्वणा समत्ता भवदि ।

अष्टरूपधाराए गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सन्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सु-  
वरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विपरासी आग-  
च्छदि । केण कारणेण ? सन्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिम-  
वग्गे भागे हिदे सन्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि धुवरासिणा  
सन्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विपरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि  
त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स  
अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्विपरासी चेव अवचिट्ठेदं । तस्स भागहारस्स अद्व-  
च्छेदणया केत्तिया ? एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा तिगुणं-

पर भागद्वार राशिके अर्धच्छेद होते हैं । सर्वत्र द्विगुणादिकरणका भी कथन करना चाहिये ।  
तब जाकर द्विरूप वर्गधाराका प्ररूपण समाप्त होता है ।

अब अष्टरूपधारा अर्थात् घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—  
धुवराशिके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो  
लब्ध आवे उसका जीवराशिके घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्वि जीवराशि  
आ जाती है, क्योंकि, संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका जीवराशिके घनके  
उपरिम वर्गमें भाग देने पर संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । अनन्तर धुवराशिका  
संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्वि जीवराशि आती है । घनधारामें इस-  
प्रकार मिथ्याद्वि जीवराशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण  
किया है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{16^3}{1} \times \frac{16^3}{1} \times \frac{256}{13} = \frac{16777216}{13};$$

$$\frac{16777216}{1} \div \frac{16777216}{13} = 13 \text{ मिथ्याद्वि.}$$

उक्त भागद्वारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्याद्वि  
जीवराशि ही आ जाती है ।

शंका — उक्त भागद्वारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान — एकका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो  
राशि आवे उसे त्रिगुणित करके और उसमेंसे एक कम करके जो राशि रहे उससे संपूर्ण

रूबूणेण गुणिदसंव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति । उवरि सव्वत्थ दोरूवादीणमणोण-  
न्मत्थरासिणा तिगुणरूबूणेण गुणिदसंव्वजीवरासिच्छेदणयमेत्ता हवंति । एवं संखेज्जा-  
संखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं । एवं कदे अट्ठपरूवणा  
समत्ता भवदि ।

घणाघणे गहिदं वत्तइस्सामो । धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं  
गुणेऊण तेण घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणउवरिमवग्गे भागे हिदे  
मिच्छाइडिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघण-  
उवरिमवग्गे भागे हिदे घणउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि सव्वजीवरासिउवरिम-  
वग्गस्सुवरिमवग्गेण घणउवरिमवग्गे भागे हिदे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गो आगच्छदि ।  
पुणो वि धुवरासिणा सव्वजीवरासिउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइडिरासी आगच्छदि ।  
एवमागच्छदि चि कट्ठु गुणेऊण भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अट्ठच्छेदणयमेत्ते

जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर जो संख्या आवे उतने उक्त भागहारके अर्धच्छेद  
होते हैं ।

उदाहरण— $2 = 2 \times 2 = 4 - 1 = 4 \times 8 = 20$  अर्धच्छेद; पर अन्तिम  $1\frac{1}{2}$  होगा ।

ऊपर सर्वत्र दो संख्या आदिका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे  
त्रिगुणित करके और उस त्रिगुणित राशिमेंसे एक कम करके शेष राशिसे संपूर्ण जीवराशिके  
अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है । इसप्रकार संख्यात असंख्यात  
और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । सर्वत्र द्विगुणादिकरण भी करना चाहिये । इस-  
प्रकार करने पर घनधारा समाप्त होती है ।

अब घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—धुवराशिसे संपूर्ण  
जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे  
जीवराशिके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका  
घनाघनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, घनके  
उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनाघनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनका उपरिम वर्ग आता  
है । फिर संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनके उपरिम वर्गमें भाग देने पर  
संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग आता है । फिर धुवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें  
भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । घनाघनधारामें इसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीव-  
राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया है ।

उदाहरण— $16^3 \times 16^3 \times 16^3 = 640192000000$ ;

$640192000000$

$= 12$  मिथ्यादृष्टि.

$640192000000 \times \frac{256}{12} \times 160000000000$

रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्ध-  
च्छेदणया केत्तिया ? एगरूवं विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा णवगुण-  
रूवूणेण सव्वजीवरासिच्छेदणए गुणिदमेत्ता । उवरि सव्वत्थ चडिदद्धानसलागाओ  
विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा णवगुणरूवूणेण गुणिदसव्वजीवरासिच्छेदण-  
यमेत्ता भवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणतेसु णेयव्वं । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं पि कायव्वं ।  
एवं कदे घणाघणपरूवणा समत्ता भवदि ।

गहिदगहिदं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण मिच्छाइड्डि-  
रासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी  
मिथ्यादृष्टि जीवराशि आ जाती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ६८ अर्धच्छेद होंगे, पर अन्तिम अर्धच्छेद १६१ होगा ।  
अतः इतनीवार उक्त भाज्य राशिके छेद करने पर लब्ध १३ मिथ्यादृष्टि राशि आती है ।

शंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान—एकका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो  
राशि उत्पन्न हो उसे नौ से गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके जो राशि शेष  
रहे उसे संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणित कर देने पर जो राशि आवे उतने उक्त  
भागहारके अर्धच्छेद हैं ।

उदाहरण— $2 = 2 \times 9 = 18 - 1 = 17 \times 8 = 136$ .

१

आगे सर्वत्र जितने स्थान ऊपर जावें तत्प्रमाण शलाकाओंका विरलन करके और  
उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि  
उत्पन्न हो उसे नौसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके शेष राशिको संपूर्ण  
जीवराशिके अर्धच्छेदोंसे गुणित कर दे । ऐसा करने पर घनाघनधारा में विवक्षित भागहारके  
अर्धच्छेद आ जावेंगे । इसीप्रकार घनाघनधाराके संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें  
भी लगा लेना चाहिये । सर्वत्र द्विगुणादिकरण भी कर लेना चाहिये । इसप्रकार करने पर  
घनाघनधाराकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके  
अनन्तिम भागरूप मिथ्यादृष्टि जीवराशिका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध  
आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उपरिम वर्ग २५६ का इच्छित वर्ग ६५५३६।

$$\frac{65536}{1} \div \frac{13}{1} = \frac{65536}{13}, \quad \frac{65536}{1} \div \frac{65536}{13} = 13 \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

मिच्छाइटिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइटिरासी चेव अवचिट्ठदे । तस्सद्धच्छेदणया केत्तिया ? मिच्छाइटिरासि-  
अद्धच्छेदणएणूणतम्भजिदरासिअद्धच्छेदणयमेत्ता । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं ।  
वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिघणस्स अणंतिमभागेण उवरि  
इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्मिह चेव वग्गे भागे हिदे मिच्छाइटिरासी आग-  
च्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि मिच्छाइटिरासी  
आगच्छदि ति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । एवमट्ठरूवपरूवणा गदा ।  
घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघणपढमवग्गमूलस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके १२ अर्धच्छेद होंगे, पर अन्तिम अर्धच्छेद  $१\frac{३}{४}$  होगा । अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

श्रुंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान—जिस राशिमें मिथ्यादृष्टि राशिका भाग दिया गया है उसके अर्धच्छेदोंमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिके अर्धच्छेद कम कर देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम् विकल्पमें द्विरूपवर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब गृहीतगृहीत उपरिम् विकल्पमें अष्टरूप अर्थात् घनधाराको बतलाते हैं—

संपूर्ण जीवराशिके घनके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनराशि ४०९६ का इच्छित वर्ग १६७७७२१६;

$$\frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{१६७७७२१६}{१३} ; \frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१६७७७२१६}{१३} = १३ \text{ मिथ्यादृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २० अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद  $१\frac{३}{४}$  होगा । अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम् विकल्पमें घनधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनाघनधारामें गृहीत-गृहीत उपरिम् विकल्पको बतलाते हैं—

घनाघनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो

भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तम्हि चैव वग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विप्रासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्विप्रासी चैव आगच्छदि । ( एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं ) । एवं घणाघणपरूवणा गदा । गहिद-  
गहिदं गदं ।

गहिदगुणगारं वत्तइस्सामो । वेरूवे सव्वजीवरासिउवरिमवग्गस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाद्विप्रासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाद्विप्रासी चैव अवचिट्ठदे । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं ।

भाग लब्ध आवे उसका उसी वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्वि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—घनाघनका प्रथम वर्गमूल २६२१४४;

$$\frac{२६२१४४}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{२६२१४४}{१३}; \quad \frac{२६२१४४}{१} \div \frac{२६२१४४}{१३} = १३ \text{ मिथ्याद्वि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्याद्वि राशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ३२ अर्धच्छेद होंगे पर अन्तिम अर्धच्छेद  $१\frac{३}{४}$  होता है । अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्याद्वि राशि १३ आती है ।

( इसीप्रकार संख्येय, असंख्येय और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये ) । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पमें घनाघनकी परूवणा समाप्त हुई । इसप्रकार गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अब गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—द्विरूप वर्गधारामें संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके अनन्तवें भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उक्त वर्गराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्याद्वि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उपरिम वर्ग २५६ का इच्छित वर्ग ६५५३६;

$$\frac{६५५३६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{६५५३६}{१३}; \quad \frac{६५५३६}{१३} \times \frac{६५५३६}{१} = \frac{६५५३६^२}{१३};$$

$$\frac{६५५३६^२}{१} \div \frac{६५५३६^२}{१३} = १३ \text{ मिथ्याद्वि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्याद्वि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २८ अर्धच्छेद होते हैं । अन्तिम अर्धच्छेद  $१\frac{३}{४}$  होता है । अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्याद्वि राशि १३ आती है ।

इसप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार



वेरूपपरूषणा गदा। अट्रूवे वत्तइस्सामो। घणस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि। तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेवे रासिस्स अद्धच्छेदण कदे वि मिच्छाइड्डिरासी चेव आगच्छदि। एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतिसु णेयव्वं। अट्रुपरूषणा गदा। घणाघणे वत्तइस्सामो। घणाघणपढमवग्गमूलभस्स अणंतिमभागेण उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जो भागलद्धो तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइड्डिरासी

गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें द्विरूप वर्गधाराकी प्ररूपणा समाप्त हुई। अब अष्टरूप धारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके लब्ध राशिका उक्त वर्गराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—घनराशि ४०९६ का इच्छित वर्ग १६७७२१६।

$$\frac{१६७७७२१६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{१६७७७२१६}{१३}; \quad \frac{१६७७७२१६}{१३} \times \frac{१६७७७२१६}{१} \\ = \frac{१६७७७२१६^२}{१३}; \quad \frac{१६७७७२१६^२}{१} \div \frac{१६७७७२१६^२}{१३} = १३ मिथ्यादृष्टि.$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है।

उदाहरण—उक्त भागहारके ४४ अर्धच्छेद प्रमाण उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ लब्ध आती है।

इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये। इसप्रकार गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पमें अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई। अब घनाघनधारामें उसीको बतलाते हैं—

घनाघनके प्रथम वर्गमूलके अनन्तिम भागका ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी वर्गराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उक्त वर्ग राशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

उदाहरण—घनाघनके प्रथम वर्गमूल २६२१४४ का इच्छित वर्ग ६८७१९४७६७३६;

$$\frac{६८७१९४७६७३६}{१} \div \frac{१३}{१} = \frac{६८७१९४७६७३६}{१३}; \\ \frac{६८७१९४७६७३६}{१} \times \frac{६८७१९४७६७३६}{१३} = \frac{६८७१९४७६७३६^२}{१३}; \\ \frac{६८७१९४७६७३६^२}{१} \div \frac{६८७१९४७६७३६^२}{१३} = १३ मिथ्यादृष्टि.$$

आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदनयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदनए कदे वि मिच्छा-  
इट्ठिरासी चेव आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । घणाघणपरूवणा गदा ।

सासणसम्माइट्टिपहुडि जाव संजदासंजदा त्ति द्व्यपमाणेण  
केवडिया ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवम-  
मवहिरिज्जदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ६ ॥

एत्थ ताव सासणसम्माइट्टिरासिस्स पमाणपरूवणं वत्तइस्सामो । सासणसम्माइट्टि  
द्व्यपमाणेण केवडिया ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । खेत्तकालपमाणेहि किमिदि

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद् हों उतनीवार उक्त भाग्य राशिके अर्धच्छेद् करने  
पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ६८ अर्धच्छेद् होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान  
राशिके अर्धच्छेद् करने पर मिथ्यादृष्टि राशि १३ आती है ।

इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें भी लगा लेना चाहिये । इसप्रकार  
गृह्यतिगुणकार उपरिम विकल्पमें घनाघनपरूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-  
स्थानवर्ती जीव द्व्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र हैं ।  
इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके प्रमाणकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम  
अपहृत होता है ॥ ६ ॥

उनमेंसे पहले यहां सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं—

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि द्व्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी है ? पल्योपमके  
असंख्यातवें भागमात्र है ।

विशेषार्थ—आगे अंकसंदृष्टिसे सासादनसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती  
जीवराशिका प्रमाण लानेके लिये पल्योपमका प्रमाण ६५५३६ और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव-  
राशिका प्रमाण लानेके लिये अवधारकालका प्रमाण ३२ कल्पित किया है । इसप्रकार सासा-  
दनसम्यग्दृष्टिके अवधारकाल ३२ का ६५५३६ प्रमाण पल्योपममें भाग देने पर सासादन-  
सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८ आता है जो कि पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र है ।  
अर्थपरूपणा भी इसीप्रकार जान लेना चाहिये ।

शंका—यहां क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे भी सासादनसम्यग्दृष्टि

१ सासादनसम्यग्दृष्टयः सम्यग्मिथ्यादृष्टयोऽसंयतसम्यग्दृष्टयः संयतासंयताच्च पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः ।  
स. सि., १, ८. मिच्छासावयसासणमिस्साविस्साद्वयारणता य। पट्ठासंखेज्जदिममसंखगुणं संखसंखगुणं ॥ गो. जी. ६२४.  
पल्यासंख्यातमागास्तु परे गुणचतुष्टये । पं. सं. ५९. सासायणइच्छती हौति असंखा ॥ पञ्चसं. २, २२.

सासनसम्माइडिपरूवणा ण परूविदा ? ण, एत्थ मिच्छाइडिसिस्व तेहि परूवेदच्चस्स कारणाभावा । किं तत्थ कारणं ? बुच्चदे—असंखेज्जपएसिए लाए कथमणंतो जीवरासी सम्मादि त्ति जादसंदेहणिराकरणहं खेत्तपमाणं बुच्चदे । आयविरहिदस्स सिज्झंतजीवे अवेक्खिय सच्चयस्स सच्चजीवरासिस्स किं वोच्छेदो होदि, ण होदि त्ति जादसंदेह-णिराकरणहं कालपमाणं परूविज्जदि । ण च एदेसु कारणेसु एकं पि कारणमेत्थ संभवइ, अणुवलंभादो । तम्हा खेत्तकालपरूवणा सासणादीणं गंथे ण परूविदा । एत्थ

जीवराशिका प्ररूपण क्यो नही किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जिसप्रकार मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणकी अपेक्षासे प्ररूपण करनेका कारण था, उसप्रकार यहां पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका कोई कारण नहीं है । अतएव उक्त प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण नहीं किया ।

शंका—वहां पर उक्त दोनों प्रमाणोंके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्ररूपण करनेका क्या कारण है ?

समाधान—असंख्यात प्रदेशी लोकमें अनन्तप्रमाण जीवराशि कैसे समा जाती है, इसप्रकारसे उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये क्षेत्रप्रमाणका कथन किया जाता है । तथा आयरहित और सिद्धयमान जीवोंकी अपेक्षा व्ययसहित संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद होता है या नहीं, इसप्रकार उत्पन्न हुए संदेहके दूर करनेके लिये कालप्रमाणका प्ररूपण किया जाता है । परंतु इन कारणोंमेंसे यहां पर एक भी कारण संभव नहीं है, क्योंकि, यहां पर कोई भी कारण नहीं पाया जाता है । अतः क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्ररूपण ग्रन्थमें नहीं किया ।

विशेषार्थ—शंकाकारका कहना है कि जिसप्रकार पहले मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करते समय 'अणंताणंताहि ओसप्पिणउस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका कालकी अपेक्षा प्रमाण कहा है, और 'खेत्तेण अणंताणंता लोग' इस सूत्रके द्वारा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा है, उसीप्रकार प्रकृतमें भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षासे कहना चाहिये । शंकाकारकी इस शंकाका समाधान इसप्रकार समझना चाहिये कि मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त होते हैं, अतएव उनका असंख्यातप्रदेशी लोकाकाशमें रहना असंभव है ऐसी शंका किसीको हो सकती है । अतः इसके परिहारके लिये मिथ्यादृष्टि जीवराशिका क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण किया । दूसरे, मोक्षको जानेवाले जीवोंकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका व्यय तो निरंतर चालू है पर उनकी बुद्धि कभी भी नहीं होती इसलिये उनका अभाव हो जायगा, ऐसी शंका भी किसीको हो सकती है, अतएव इसके परिहार करनेके लिये कालप्रमाणकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्ररूपण किया कि अनन्तानन्त

भागहारपमाणमंतोमुहुत्तमिदि सासणसम्माइट्टिआदिरासिपमाणविसयणिण्णयुप्पायणडुं परू-  
विदं । तं च अंतोमुहुत्तमणेयवियप्पं, तदो एत्थिमिदि ण जाणिज्जदि । तत्थ णिच्छय-  
जणणमिच्चं किंचि अद्वापरूवणं कस्सामो । तं कथं ? असंखेज्जे समए धेत्तूण एया  
आवलिया हवदि । तप्पाओगसंखेज्जावलियाओ धेत्तूण एगो उस्सासो हवदि । सत्त  
उस्सासे धेत्तूण एगो थोवो हवदि । सत्त थोवे धेत्तूण एगो लवो हवदि । अठतीस लवे  
अद्धलवं च धेत्तूण एगा णालिया हवदि । उच्चं च—

आवलि असंखसमया संखेज्जावलिसमूह उस्सासो ।

सत्तुस्सासो थोवो सत्तथोवा लवो एक्को ॥ ३३ ॥

उत्सर्पिणियों और अवसर्पिणियोंके हो जाने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि समाप्त नहीं हो सकती है । परंतु सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके संबन्धमें इन दोनों प्रश्नोंमेंसे कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता है, क्योंकि, वे केवल पत्थोपमके असंख्यातवर्गे भागप्रमाण हैं । अतः उनकी लोकाकाशमें अवस्थिति कैसे होगी, यह बात नहीं कही जा सकती है । और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, यद्यपि मिथ्यात्व गुण-स्थानको प्राप्त होते रहते हैं इसलिये उनका व्यय होता है, फिर भी उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमेंसे उसी अनुपातसे सासादन गुणस्थानको भी प्राप्त होते रहते हैं, अतएव व्ययके समान आय भी निरंतर चालू है । इसलिये उनका अभाव हो जायगा, यह भी नहीं कहा जा सकता है । इसप्रकार क्षेत्र और कालप्रमाणकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका प्रमाण कहनेके लिये कोई कारण नहीं होनेसे उक्त प्रमाणोंके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका कथन नहीं किया ।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवराशिका प्रमाण कहते समय भागहारका प्रमाण जो अन्तर्मुहूर्त कहा है वह सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके प्रमाण विषयक निर्णयके उत्पन्न करनेके लिये कहा है । परंतु वह अन्तर्मुहूर्त अनेक प्रकारका है, इसलिये प्रकृतमें इतना अन्तर्मुहूर्त विवक्षित है, यह नहीं जाना जाता है । इसलिये विवक्षित अन्तर्मुहूर्तके विषयमें निश्चय उत्पन्न करनेके लिये थोड़ेमें कालका प्ररूपण करते हैं ।

शंका—वह कालप्ररूपण किसप्रकार है ?

समाधान—असंख्यात समयकी एक आवली होती है । ऐसी तद्योग्य संख्यात आवलियोंका एक उच्छ्वास होता है । सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है । सात स्तोकोंका एक लव होता है, और साठे अठतीस लवोंकी एक नाली होती है । कहा भी है—

असंख्यात समयोंकी एक आवली होती है । संख्यात आवलियोंके समूहको एक उच्छ्वास कहते हैं । सात उच्छ्वासोंका एक स्तोक होता है और सात स्तोकोंका एक लव होता है ॥ ३३ ॥

अट्तीसद्वलवा णाली वे णालिया मुहुत्तो दु ।

एगसमएण हीणो मिण्णमुहुत्तो भवे सेसं ॥ ३१ ॥

अट्टस्स अणलसस्स य गिरुवहदस्स य जिणेहि जंतुस्स ।

उस्सासो गिस्सासो एगो पाणो त्ति आहिदो एसो ॥ ३५ ॥

तिणिण सहस्सा सत्त य सयाणि तेहत्तरि च उस्सासा ।

एगो होदि मुहुत्तो सव्वेसिं चैव मणुयाणं ॥ ३६ ॥

सत्तसएहि वीसुत्तरेहि पाणेहि एगो मुहुत्तो होदि त्ति केवि मणंति, पाइयपुरि-  
सुस्सासे दट्ठण तण्ण वधदे । कुदो ? केवलिसासिदत्थादो पमाणभूदेण अण्णेण सुत्तेण  
सह विरोहादो । कथं विरोहो ? जेणेदं चउहि गुणिय सत्तूण-गवसदं पक्खिचे सुत्तुस्सा-

साढ़े अट्तीस लवोंकी एक नाली होती है, और दो नालियोंका एक मुहूर्त होता है ।  
तथा मुहूर्तमेंसे एक समय कम करने पर भिन्नमुहूर्त होता है, और शेष अर्थात् दो, तीन आदि  
समय कम करने पर अन्तमुहूर्त होते हैं ॥ ३४ ॥

जो सुखी है, आलस्यरहित है और रोगादिकी चिन्तासे मुक्त है, ऐसे प्राणीके श्वासो-  
च्छ्वासको एक प्राण कहते हैं, ऐसा जिनेन्द्रदेवने कहा है ॥ ३५ ॥

सभी मनुष्योंके तीन हजार सातसौ तेहत्तर उच्छ्वासोंका एक मुहूर्त होता है ॥ ३६ ॥

कितने ही आचार्य सातसौ बीस प्राणोंका एक मुहूर्त होता है, ऐसा कहते हैं; परंतु  
प्राकृत अर्थात् रोगादिसे रहित स्वस्थ मनुष्यके उच्छ्वासोंको देखते हुए उन आचार्योंका इस-  
प्रकार कथन करना घटित नहीं होता है, क्योंकि, जो केवली भाषित अर्थ होनेके कारण प्रमाण  
है, ऐसे अन्य सूत्रके कथनके साथ उक्त कथनका विरोध आता है ।

शंका—सूत्रके कथनसे उक्त कथनमें कैसे विरोध आता है ?

समाधान—क्योंकि ऊपर कहे गये सातसौ बीस प्राणोंको चारसे गुणा करके जो

१ गो. जी. ५७५. होंति तु असंखसमया आवलिणामो तद्देव उस्सासो । संखेज्जावल्लिणवहो सो चैव पाणो  
त्ति विवखादो ॥ सत्तुस्सासो थोव सत्त थवा लव त्ति पादव्वो । सत्तत्तरिदल्लिदलवा णाली वे णालिया मुहुत्तं  
च ॥ ति. प. पञ्च ५०. ग. सा. १, ३२-३४. असंखिज्जाणं समयाणं समुदयसमितिसमागमेण सा एगा  
आवलिअत्ति वुच्चइ, संखेज्जाओ आवलिओ ऊसासो, संखिज्जाओ आवलिआओ नीसासो, सत्त पाणूणि से थोवे,  
सत्त थोवाणि से लवे । लवाणं सत्तहत्तरीए एस मुहुत्ते विआहिए । अट्ट. पृ. १६४. व्या. प्र. पृ. ५००.

२ गो. जी. ५७४. टी. हट्टस्स अणवगहस्स निरुवकिट्टस्स जंतुणो । एगो ऊसानीसासे एस पाणु त्ति  
वुच्चइ । अट्ट. पृ. १६४. व्या. प्र. पृ. ५००.

३ आब्बानलसात्तपहतमत्तुजोच्छ्वासैस्सिप्तसप्तविमितैः । आहुर्ध्वहर्तय... ॥ गो. जी., जी. प्र. टी.,  
१२५. तिणिण सहस्सा सत्त य सयादि तेहत्तरि च ऊसासा । एस मुहुत्तो मणिओ सव्वेहि अणंतनाणीहि । अट्ट. पृ.  
१६४. व्या. प्र. पृ. ५००.

सपमाणं पावदि । एकवीससहस्र-छस्सयमेत्तपाणेहि संवच्छरियाण दिवसो होदि । एत्थ पुण एगलक्ख-तेरहसहस्स-णउदि-सयपाणेहि दिवसो होदि । पाणेहि विप्पडिवण्णाणं संवच्छरियाणं कालववहारो कथं घडदे ? ण, केवलिभासिददिवसमुहुत्तेहि समाणदिवस-मुहुत्तञ्चुवगमादो । एवं परूविदमुहुत्तुस्सासे ठवेऊण तत्थ एगो उस्सासो घेत्तवो । संखेज्जावलियाहि एगो उस्सासो णिप्फज्जदि ति सो उस्सासो संखेज्जावलियाओ कयाओ । तत्थ एगमावलियं घेत्तूण असंखेज्जेहि समएहि एगावलिया होदि ति असंखेज्जा समया कायव्वा । तत्थ एगसमए अवणिदे सेसकालपमाणं भिण्णमुहुत्तो उच्चदि । पुणो वि अवरोगे समए अवणिदे सेसकालपमाणमंतोमुहुत्तं होदि । एवं पुणो पुणो समया अवणेयव्वा जाव उस्सासो णिट्ठिदो ति । तो वि सेसकालपमाणमंतोमुहुत्तं चेव होइ । एवं सेमुस्सासे वि अवणेयव्वा जावेगावलिया सेसा ति । सा आवलिया वि

गुणनफल आवे उसमें सात कम नौ सौ अर्थात् आठसौ तेरानवे और मिलाने पर सूत्रमें कहे गये मुहूर्तके उच्छ्वासोंका प्रमाण होता है, इसलिये प्रतीत होता है कि उपर्युक्त मुहूर्तके उच्छ्वासोंका प्रमाण सूत्रविरुद्ध है । यदि सातसौ बीस प्राणोंका एक मुहूर्त होता है, इस कथनको मान लिया जाय तो केवल इक्कीस हजार छह सौ प्राणोंके द्वारा ही ज्योतिषियोंके द्वारा माने हुए दिन अर्थात् अहोरात्रका प्रमाण होता है । किन्तु यहां आगमावकूल कथनके अनुसार तो एक लाख तेरह हजार और एक सौ नव्वे उच्छ्वासोंके द्वारा एक दिन अर्थात् अहोरात्र होता है ।

शंका— इसप्रकार प्राणोंके द्वारा दिवसके विषयमें विवादको प्राप्त हुए ज्योतिषियोंके कालव्यवहार कैसे बन सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, केवलीके द्वारा कथित दिन और मुहूर्तके समान ही ज्योतिषियोंके दिन और मुहूर्त माने गये हैं, इसलिये उपर्युक्त कोई दोष नहीं है ।

इसप्रकार केवलीके द्वारा प्रतिपादित एक मुहूर्तके उच्छ्वासोंको स्थापित करके उनमेंसे एक उच्छ्वास ग्रहण करना चाहिये । संख्यात आवलियोंसे एक उच्छ्वास निष्पन्न होता है, इसलिये उस एक उच्छ्वासकी संख्यात आवलियां बना लेना चाहिये । उन आवलियोंमेंसे एक आवलीको ग्रहण करके, असंख्यात समयोंसे एक आवली होती है, इसलिये उस आवलीके असंख्यात समय कर लेना चाहिये ।

यहां मुहूर्तमेंसे एक समय निकाल लेने पर शेष कालके प्रमाणको भिन्नमुहूर्त कहते हैं । उस भिन्नमुहूर्तमेंसे एक समय और निकाल लेने पर शेष कालका प्रमाण अन्तर्मुहूर्त होता है । इसप्रकार उत्तरोत्तर एक एक समय कम करते हुए उच्छ्वासके उत्पन्न होने तक एक एक समय निकालते जाना चाहिये । वह सब एक एक समय कम किया हुआ काल भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ही होता है । इसीप्रकार जब तक आवली उत्पन्न नहीं होती है तब तक शेष रहे हुए एक उच्छ्वासमेंसे भी एक एक समय कम करते जाना चाहिये । ऐसा करते हुए जो आवली उत्पन्न होती है उसे भी अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

अंतोमुहुत्तमिदि भण्णदि । तदो अवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण तस्मिह आवलियस्मिह मागे हिदे जं भागलद्धं तं असंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । एसो वि कालो अंतो-मुहुत्तमेव । असंजदसम्माइड्ढिअवहारकालमवरेण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे हि संजदासंजदअवहारकालो होदि । ओवसासणसम्मादिड्ढि-सम्मामिच्छाइड्ढि-संजदासंजदाणं अवहारकालो असंखेज्जदि-भागो ण होदि, असंखेज्जावलियाहि होदव्वं । तं कुदो णव्वदे ? 'उवसमसम्माइड्ढी थोवा । खइयसम्माइड्ढी असंखेज्जगुणा । वेदयसम्माइड्ढी असंखेज्जगुणा' ति अप्पावहुगसुत्तादो णव्वदे । तं जहा, खइयसम्माइड्ढीणमवहारकालेण ताव संखेज्जाव-लियमेत्तेण आवलियाए संखेज्जदिभागमेत्तेण वा होदव्वं, अण्णहा मणुस्सेसु असंखे-

तदनन्तर दूसरी आवलीके असंख्यातवें भागका उस आवलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतना असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंके प्रमाणके निकालनेके विषयमें अवहारकालका प्रमाण होता है । यह काल भी अन्तर्मुहूर्तप्रमाण ही है । असंयतसम्यग्दष्टिविषयक अवहार-कालको दूसरी आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादष्टिविषयक अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दष्टिविषयक अवहार-काल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर संयतासंयतविषयक अवहारकाल होता है । इसप्रकार जो पूर्वोक्त चार गुणस्थानवाले जीवोंका अवहारकाल बत-लाया है उसमें सासादनसम्यग्दष्टि, सम्यग्मिथ्यादष्टि और संयतासंयतविषयक सामान्य अवहारकाल आवलीके असंख्यातवें भाग नहीं होता, किन्तु उसे असंख्यात आवलीप्रमाण होना चाहिये ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'उपशमसम्यग्दष्टि जीव थोड़े होते हैं, क्षायिकसम्यग्दष्टि जीव उनसे असंख्यातगुणे होते हैं और वेदकसम्यग्दष्टि जीव उनसे असंख्यातगुणे होते हैं' इस अल्प-बहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे उक्त बात जानी जाती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

क्षायिकसम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल संख्यात आवली अथवा आवलीके संख्यातवें भागप्रमाण होना चाहिये । यदि ऐसा न माना जाये तो मनुष्योंमें असंख्यात क्षायिकसम्यग्दष्टि-

१ असंजदसम्मादिड्ढिगणे षव्वथोवा उवसमसम्मादिड्ढी । खइयसम्मादिड्ढी असंखेज्जगुणा । वेदगसम्मा-दिड्ढी असंखेज्जगुणा ॥ जी. ड्डा. अ. व. १५-१७. ६. तदनन्तरं (औपशमिकानन्तरम्) क्षायिकग्रहणं तस्य प्रतियोगित्वात्सार्थविक्षया द्रव्यतस्ततोऽसंख्येयगुणत्वाच्च । तत उच्यते मिश्रग्रहणं तदुभयात्मकत्वात्ततोऽसंख्येयगुणत्वाच्च । स. सि. २, १.

ज्जखइयसम्माइड्डीणं संभवप्पसंगादो । संखेज्जावलियभागहारुप्पायणविहाणं वुच्चदे । तं जहा, वासपुधत्तमंतरिय जइ सोहम्मदेवसे सुखेज्जाणं खइयसम्माइड्डीणमुप्पत्ती लब्भइ तो संखेज्जपलिदोवमेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्ठिदाए संखेज्जावलियाहि पलिदोवमे खंडिय तत्थेगखंडमेत्ता खइयसम्माइड्डी-हंतो तेसि असंखेज्जगुणहीणत्तणहाणुववत्तीदो । सासणसम्माइड्डी-सम्माभिच्छा-इड्डीणं पि अवहारकालो असंखेज्जावलियमेत्तो, उवसमसम्माइड्डीहंतो तेसिमसंखेज्ज-गुणहीणत्तणहाणुववत्तीदो । 'एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेण' इत्ति सुत्तेण सह विरोहो वि ण होदि, सामीप्यार्थे वर्तमानान्तःशब्दग्रहणात् । मुहूर्तस्यान्तः

योंकी उत्पत्तिका प्रसंग आ जायगा । अब आगे संख्यात आवलीरूप भागहारके उत्पन्न करनेकी विधि कहते हैं । वह इसप्रकार है—

एक वर्षगृथक्त्वके अनन्तर यदि सौधर्म देवोंमें संख्यात क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति प्राप्त होती है तो संख्यात पल्योपमकी स्थितिवाले देवोंमें कितने क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक विधिके अनुसार फलराशि संख्यातको इच्छाराशि संख्यात पल्योपमसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि वर्षगृथक्त्वका भाग देने पर अर्थात् संख्यात आवलियोंसे पल्योपमके खंडित करने पर जो भाग लब्ध आवे उतने एक खण्ड प्रमाण क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तो असंख्यात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं । उसीप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका भी अवहारकाल असंख्यात आवलीप्रमाण है, अन्यथा उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे उक्त दोनों गुणस्थानवाले जीव असंख्यातगुणे हीन बन नहीं सकते हैं । 'इन गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानकी अपेक्षा अन्तर्मुहूर्तप्रमाण कालसे पल्योपम अपहृत होता है' इस पूर्वोक्त सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध भी नहीं आता है, क्योंकि, अन्तर्मुहूर्तमें जो अन्तर शब्द आया है उसका सामीप्य अर्थमें ग्रहण किया गया है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि जो मुहूर्तके समीप हो उसे अन्तर्मुहूर्त कहते हैं ।

विशेषार्थ—अन्तर्मुहूर्तका पल्योपममें भाग देने पर जो लब्ध आवे उतना सासादन आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवाले जीवोंका प्रमाण है, यह पूर्वोक्त सूत्रका अभिप्राय है । पर टीकाकार वीरसेनस्वामीने यह सिद्ध किया है कि सासादन, मिश्र और देशविरतके अवहारकालका प्रमाण असंख्यात आवलियां हैं । अब यहां यह प्रश्न उत्पन्न होता

१ एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण कालेणत्ति सुत्तेण वि ण विरोहो, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो ।

अवला, उत्पन्न.



अन्तर्मुहूर्तः । कुतः पूर्वनिपातः ? राजदन्तादिस्वात् । कुतः ओत्वम् ? 'एए छच्च समाणा' इत्येतस्मात् । एदेण सणक्कुमारदिगुणपडिवण्णाणमवहारकालाणं पि असंखेज्जावलियत्तं पसाहियं । एत्थ चोदमो भणदि । एदाओ रासीओ अवट्ठिदाओ ण होंति, हाणिवट्ठिसंजुदत्तादो । ण च हाणिवट्ठिओ णत्थि चि वोतुं सकिज्जेदे, आयव्वयाभावे मोकखाभावादो अणादिअपज्जवासिदसासणादिगुणकालाणुवलट्ठिदो च । जदि एदाओ रासीओ अवट्ठिदाओ तो एदे भागहारा घडंति, अण्णहा पुण ण घडंति । अणवट्ठिदरासिभागहारेणापि अणवट्ठिदसरूपेणव अवट्ठणा होंति । एत्थ परिहारो बुच्चदे— सासणसम्माइट्ठिरासीणमुक्कस्ससंचयं

है कि उक्त तीनों गुणस्थानोंकी संख्या लानेके लिये यदि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात आवलियां मान लिया जाता है तो सूत्रमें आये हुए अन्तर्मुहूर्त प्रमाण भागहारके साथ उक्त असंख्यात आवलिप्रमाण भागहारका विरोध आता है, क्योंकि, उत्कृष्ट एक अन्तर्मुहूर्तमें संख्यात आवलियां ही होती हैं, असंख्यात नहीं । इस पर धीरसेनखामीने यह समाधान किया है कि यहां पर अन्तर्मुहूर्तमें आये हुए अन्तर शब्दसे मुहूर्तके समीपवर्ती कालका ग्रहण करना चाहिये जिससे अन्तर्मुहूर्तका अभिप्राय मुहूर्तसे अधिक भी हो सकता है ।

शंका — यहां पर अन्तर शब्दका पूर्व निपात कैसे हो गया है ?

समाधान— क्योंकि, अन्तर शब्दका राजदन्तादि गणमें पाठ होनेसे पूर्वनिपात हो गया है ।

शंका — अन्तर शब्दमें अर्के स्थानमें ओत्व कैसे हो गया है ?

समाधान— 'एए छच्च समाणा' इस नियामक वचनके अनुसार यहां पर ओत्व हो गया है ।

इस उपर्युक्त कथनसे गुणस्थानप्रतिपन्न सानत्कुमार आदि कल्पवासी देवोंसंबन्धी अवहारकाल असंख्यात आवलीप्रमाण सिद्ध कर दिया गया ।

शंका — यहां पर शंकाकार कहता है कि ये उपर्युक्त जीवराशियां अवस्थित नहीं होती हैं, क्योंकि, इन राशियोंकी हानि और वृद्धि होती रहती है । यदि कहा जाय कि इन राशियोंकी हानि और वृद्धि नहीं होती है, सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, यदि इन राशियोंका आय और व्यय नहीं माना जाय तो मोक्षका भी अभाव हो जायगा । तथा अनादि अपर्यवसितरूपसे सासादन आदि गुणस्थानोंका काल भी नहीं पाया जाता है, इसलिये भी इन राशियोंकी हानि और वृद्धि मान लेना चाहिये । यदि इन उपर्युक्त राशियोंको अवस्थित माना जावे तो ये भागहार बन सकते हैं, अन्यथा नहीं, क्योंकि, अनवस्थित राशियोंके भागहारोंका भी अनवस्थितरूपसे ही सङ्ग्राह माना जा सकता है ?

समाधान— आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार किया जाता है । क्योंकि सासादन-

तिकालगोयरमस्सिऊण जम्हा पमाणपरूवणं कदं तम्हा वड्डिहाणीओ णत्थि त्ति भागहार-  
परूवणं घडदि त्ति । सासणसम्माइडिअवहारकालेण वलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा-  
इडिरासी आगच्छदि । सासणसम्माइड्डीणं पमाणपरूवणं वगट्ठाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-  
अवहिद-पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । तं जहा—

पलिदोवमे असंखेज्जावलियमेत्तखंडे कए तत्थ एगखंडं सासणसम्माइडिरासि-  
पमाणं होदि । खंडिदं गदं । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे जं भागलदं तं  
सासणसम्माइडिरासिपमाणं होदि । भाजिदं गदं । असंखेज्जावलियाओ विरेलूण  
एकेकस्स रुवस्स पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडपमाणं सासणसम्मा-  
इडिरासी होदि । विरलिदं गदं । सासणसम्माइडिअवहारकालं सलागभूदं ठवेऊण

सम्यग्दृष्टि आदि राशियोंके त्रिकालविषयक उत्कृष्ट संचयका आश्रय लेकर प्रमाण कहा गया  
है, इसलिये उस अपेक्षासे वृद्धि और हानि नहीं है । अतः पूर्वोक्त भागहारोंका कथन करना  
बन जाता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकालका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्य-  
ग्दृष्टि जीवराशि आ जाती है ।

अब वर्गस्थानमें खण्डित, भाजित, विरलित, अपहत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और  
विकल्पके द्वारा सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण कहते हैं । वह इसप्रकार है—

असंख्यात आवलीके समर्थोंका जितना प्रमाण हो उतने पल्योपमके खण्ड करने पर  
उनमेंसे एक खण्डके बराबर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है । इसप्रकार  
खण्डितका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्योपमप्रमाण ६५५३६ के सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकाल  
३२ प्रमाण खण्ड करने पर २०४८ आते हैं । यही सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।

असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतना सासा-  
दनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है । इसप्रकार भाजितका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $६५५३६ \div ३२ = २०४८$  सासादनसम्यग्दृष्टि.

असंख्यात आवलियोंको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पल्यो-  
पमको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर उनमेंसे एक खण्ड प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि  
जीवराशि होती है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $२०४८ \quad २०४८ \quad २०४८$  इसप्रकार ३२ बार विरलित करके  
 $१ \quad १ \quad १$  ६५५३६ को उक्त विरलित राशिके  
प्रत्येक एक पर समानरूपसे दे देने पर २०४८ सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आ जाती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टिविषयक अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके पल्योपममेंसे

पलिदोवमम्हि सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूवमवणिज्जदि; पुणो वि सासणसम्माइट्ठिरासिपमाणं पलिदोवमम्हि अवणिज्जदि, अवहारकालादो एगरूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो कीरमाणे पलिदोवमो अवहारकालो च जुगवं णिहिदो । तत्थ एगवारमवहिदपमाणं सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं पलिदोपमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेजाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि ति । पमाणं गदं । केण कारणेण ? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे पलिदोवमपढमवग्गमूलमागच्छदि । तस्सेव विदियवग्गमूलादो पलिदोवमे भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स

सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना चाहिये । पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिको एकवार कम किया, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । फिर भी पल्योपममेंसे सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिके प्रमाणको घटा देना चाहिये । दूसरीवार यह किया हुई, इसलिये अवहारकालरूप शलाकाराशिमेंसे एक और कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करने पर पल्योपम और अवहारकाल एक साथ समाप्त हो जाते हैं । इस क्रियामें एकवार जितनी राशि घटाई जाये उतना सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण है । इसप्रकार अपहतता कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—शलाका राशि	३२	पल्योपम	६५५३६	इस क्रमसे पल्योपममेंसे
	१		२०४८	२०४८ और शलाकारूप
	३१		६३४८८	भागहारमेंसे एक एक कम
	१		२०४८	
	३०		६१४४०	करते जाने पर दोनों

राशियां एक साथ समाप्त होती हैं । इनमेंसे एकवार घटाई जानेवाली संख्या २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि है ।

उस सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण पल्योपमका असंख्यातर्वा भाग है, जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्योपम ६५५३६ का प्रथम वर्गमूल २५६ है और सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८ है । २५६ का २०४८ में भाग देने पर ८ आते हैं । इस ८ संख्याको असंख्यातरूप मान लेने पर यह सिद्ध हो जाता है कि पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि होती है ।

शंका—किस कारणसे पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि आती है ?

समाधान—पल्योपमके प्रथम वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर पल्योपमका प्रथम वर्गमूल आता है । उसीके दूसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर, दूसरे वर्गमूलका जितना

जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । तदियवग्गमूलेण पलिदोवमे भागे हिदे विदियतदियवग्गमूलाणि अण्णोण्णमत्थे कए तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण द्विदअसंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति त्ति ण संदेहो । कारणं गदं । तस्स का णिरुत्ती ? असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूलं गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं

प्रमाण हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते है । पल्योपमके तीसरे वर्गमूलका पल्योपममें भाग देने पर दूसरे और तीसरे वर्गमूलके प्रमाणका परस्पर गुणा करनेसे जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं । इस क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर जो असंख्यात आवलियां स्थित हैं उनका पल्योपममें भाग देने पर असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं । इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—पल्यके प्रथम वर्गमूल २५६ का ६५५३६ में भाग देने पर २५६ लब्ध आते हैं । दूसरे वर्गमूल १६ का ६५५३६ में भाग देने पर दूसरे वर्गमूल १६ बार २५६ अर्थात् ४०९६ लब्ध आते हैं । तीसरे वर्गमूल ४ का ६५५३६ में भाग देने पर, दूसरे वर्गमूल १६ और तीसरे वर्गमूल ४ को परस्पर गुणा करनेसे जो ६४ लब्ध आते हैं, उतने अर्थात् ६४ बार प्रथम वर्गमूल २५६ अर्थात् १६३८४ लब्ध आते हैं । इसीप्रकार उत्तरोत्तर नीचे जाने पर असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आवेंगे इसमें कोई संदेह नहीं ।

शंका — असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं, इसकी निवृत्ति क्या है ?

समाधान — असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा, असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित कर देने पर जितना प्रमाण आवे उतने पल्योपमके प्रथम वर्गमूल होते हैं । अथवा, असंख्यात आवलियोंका पल्योपमके तीसरे वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे तीसरे वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे दूसरे वर्गमूलको गुणित करके वहां जितना प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं । इसी क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर असंख्यात आवलियोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे प्रतरावलीको गुणित करके, उस गुणित राशिसे प्रतरा-

भागलद्धं तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुवरिमवग्गं गुणेऊण एवमुवरि-  
मुवरिमवग्गट्ठाणाणि विदियवग्गमूलंताणि गिरंतरं सव्वाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि  
रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवन्ति त्ति । गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ वेरुवे हेट्ठिमवियप्पं  
वचइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण  
पलिदोवमपढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । अधवा अवहारकालेण पलि-  
दोवमविदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिद-  
रासिणा पढमवग्गमूले गुणिदे सासणसम्माइट्ठिरासी होदि । अधवा अवहारकालेण  
पलिदोवमतदियवग्गमूले भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण गुणिद-  
रासिणा विदियवग्गमूलं गुणेऊण पुणो वि तेण गुणिदरासिणा पढमवग्गमूलं गुणिदे

चलीके उपरिम वर्गको गुणित करके, इसप्रकार द्वितीय वर्गमूलपर्यंत सर्व उपरिम उपरिम वर्ग-  
स्थानोंको निरंतर गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उतने प्रथम वर्गमूल होते हैं ।  
इसप्रकार निकटिका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—असंख्यात आवलीप्रमाण ३२ का भाग पत्यके प्रथम वर्गमूल २५६ में देने  
पर ८ लब्ध आते हैं । इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि २०४८ में ८ ही प्रथम वर्गमूल  
होते हैं । द्वितीय वर्गमूल १६ में ३२ का भाग देने पर ३ लब्ध आता है । इसका द्वितीय वर्ग-  
मूलसे गुणा करने पर ८ लब्ध आते हैं । तृतीय वर्गमूल ४ में ३२ का भाग देने पर ८ लब्ध  
आता है । इसका, दूसरे १६ और तीसरे ४ वर्गमूलके परस्पर गुणनफल ६४ से, गुणा कर देने  
पर ८ लब्ध आते हैं । इसप्रकार सर्वत्र समझ लेना चाहिये ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तनविकल्प और उपरिमविकल्प । उन दोनोंमेंसे पहले  
द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—

असंख्यात आवलियोंसे पत्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करने पर सासादन-  
सम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—पत्योपम ६५५३६ का प्र. वर्गमूल २५६; असंख्यात आवलियां ८.

$$२५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा.}$$

अथवा, अवहारकालका पत्योपमके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध  
आवे उससे द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित  
करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—६५५३६ का द्वितीय वर्गमूल १६; अवहारकाल ३२;

$$१६ \div ३२ = \frac{१}{२}; १६ \times \frac{१}{२} = ८; २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा.}$$

अथवा, अवहारकालका पत्योपमके तृतीय वर्गमूलमें भाग देने पर जो भाग लब्ध  
आवे उससे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके उस गुणित राशिसे द्वितीय वर्गमूलको गुणित  
करके फिर भी उस गुणित राशिसे प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि

सासणसम्माइडिरासी होदि । एदेण कमेण असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण असंखेज्जावलियाहि पदरावलियाए भागे हिदाए जं भागलद्धं तेण पदरावलियं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा तदुवरिमवग्गं गुणेऊण एवमुवरिमवग्गट्ठाणाणि पढमवग्गमूलंताणि सच्चाणि णिरंतरं गुणिदे सासणसम्माइडिरासी होदि । जदि वि णिरुत्तिं भणमाणे एसो अत्थो पुच्छं परूविदो तो वि ण पुणरुत्तो होदि, तिण्णि वि वग्गधाराओ अस्सिऊण हिदेहेट्ठिमवियप्पसंबंधत्तादो । वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो गदो ।

अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी होदि । केण कारणेण ? पलिदोवमपढमवग्गमूलेण घणपल्लपढमवग्गमूले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमाग-

जीवराशि होती है ।

उदाहरण—६५५३६ का तृतीय वर्गमूल ४;

$$४ \div ३२ = \frac{१}{८}; ४ \times \frac{१}{८} = \frac{१}{२}; १६ \times \frac{१}{२} = ८; २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा.}$$

इसी क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर असंख्यात आवलियोंका प्रतरावलीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे प्रतरावलीको गुणित करके उस गुणित राशिसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार प्रथम वर्गमूलपर्यन्त उपरिम उपरिम संपूर्ण वर्गस्थानोंको निरन्तर गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है ।

उदाहरण—प्रतरावलि = २;

$$२ \div ३२ = \frac{१}{१६}; २ \times \frac{१}{१६} = \frac{१}{८}; ४ \times \frac{१}{८} = \frac{१}{२};$$

$$१६ \times \frac{१}{२} = ८; २५६ \times ८ = २०४८ \text{ सा.}$$

यद्यपि निरुक्तिका कथन करते समय यह विषय पहले वहां पर कह आये हैं, तो भी इस विषयके यहां पर पुनः कथन करनेसे पुनरुक्त दोष नहीं होता है, क्योंकि, यहां पर तीनों ही वर्गधाराओंका आश्रय लेकर स्थित अधस्तन विकल्पका संबन्ध है । इसप्रकार द्विरूप वर्गधारामें अधस्तन विकल्पका कथन समाप्त हुआ ।

अब घनधारामें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनपल्यके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है, क्योंकि, पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे घनपल्यके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर पल्योपमका प्रमाण आता है । अनन्तर असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है । घनपल्यमें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझ कर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—पल्योपमका प्रथम वर्गमूल २५६; घनपल्यका प्रथम वर्गमूल १६७७७२१६;

$$२५६ \times ३२ = ८१९२; १६७७७२१६ \div ८१९२ = २०४८ \text{ सा.}$$

च्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पो भवदु णाम, वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो ण घडदे । केण कारणेण ? अवहारकालेण पलिदोवमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि भागे हिदे सासणसम्माइट्ठिरासी ण उप्पज्जदि त्ति । ण एस दोसो, पलिदोवमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि अवहारकालेणोवट्ठिय तप्पाओग्गवग्गट्ठाणाणि गुणिदे केवलमोवट्ठिदे च जत्थ रासी आगच्छदि सो हेट्ठिमवियप्पो त्ति अब्बुवग्गमादो । मिच्छाइटिरासिपरूवणाए वि एदस्मि णए अवलंबिज्जमाणे वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो अत्थि त्ति वत्तव्वो ? एस परूवणा जेण अवहारकालपहाणा तेण पलिदोपमादो हेट्ठिमवग्गट्ठाणाणि अवहारेणोवट्ठिय जदि सासणसम्माइट्ठिरासी उप्पाइदुं सकिज्जदे तो हेट्ठिमवियप्पस वि संभवो होज्ज । ण च एवं वेरूवधाराए संभवइ । एदं णयमास्सिऊण मिच्छाइटिरासिपरूवणाए हेट्ठिमवियप्पो णत्थि त्ति भणिदं । एसो णओ एत्थ पहाणो । एवमट्ठरूवपरूवणा गदा ।

शंका—घनधारामें अधस्तन विकल्प रहता आवे, परंतु द्विरूप वर्गधारामें अधस्तन विकल्प घटित नहीं होता है, क्योंकि, अवहारकालका पद्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंमें भाग दिया जाता है तो सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि उत्पन्न नहीं होती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पद्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे उसके योग्य वर्गस्थानोंके गुणित करने पर अथवा, केवल अपवर्तित करने पर, अर्थात् पद्योपमको अवहारकालसे भाजित करने पर, जहां पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि आती है वह अधस्तन विकल्प यहाँ पर स्वीकार किया गया है ।

उदाहरण—पद्योपमका अधस्तन वर्गस्थान = २५६;  $२५६ \div ३२ = ८$ ;  $२५६ \times ८ = २०४८$  सा. अथवा,  $६५५३६ \div ३२ = २०४८$  सा.

शंका—मिथ्यादष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें भी इस नयके अवलम्बन करने पर द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प बन जाता है, इसलिये वहाँ पर उसका कथन करना चाहिये था ?

समाधान—क्योंकि यह प्ररूपणा अवहारकालप्रधान है, इसलिये पद्योपमसे नीचेके वर्गस्थानोंको अवहारकालसे भाजित करके यदि सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि उत्पन्न करना शक्य है तो यहाँ पर अधस्तन विकल्प भी संभव है । परंतु मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालते समय द्विरूपवर्गधारामें इसप्रकार अधस्तन विकल्प संभव नहीं है । इसी नयका आश्रय करके मिथ्यादष्टि जीवराशिकी प्ररूपणामें अधस्तन विकल्प नहीं होता, ऐसा कहा है । यह नय यहाँ पर प्रधान है । इसप्रकार घनधारा समाप्त हुई ।

विशेषार्थ—सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये असंख्यात आवली-

घणाघणे वत्तइस्सामो ! असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणपल्लविदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणपल्लविदियवग्गमूले भागे हिंदे सासणसम्मा-इडिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लविदियवग्गमूलेण घणाघणपल्लविदियवग्गमूले भागे हिंदे घणपल्लपढमवग्गमूलमागच्छदि । पुणो वि पलिदोवमपढमवग्गमूलेण घणपल्ल-पढमवग्गमूल भागे हिंदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिंदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागगहणं कदं । एत्थ दुगुणादिकरणे कदे हेट्ठिमवियप्पो सम्पदि ।

उपरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगाहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ वेरूवधाराए गहिदं वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिंदे सासणसम्मा-

प्रमाण जो भागहार है वह पत्योपमके प्रथम वर्गमूलसे छोटा है, इसलिये यहाँ पर अधस्तन विकल्प बन जाता है । परंतु मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालनेके लिये जो भागहार कह आये हैं वह जीवराशिके उपरिम वर्गके प्रथम वर्गमूलरूप जीवराशिके बड़ा है, अतएव वहाँ पर द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प किसी प्रकार भी संभव नहीं है ।

अब घनाघनधारामें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—असंख्यात आवलियोंसे पत्यो-पमके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपत्यके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनपत्यके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनपत्यके द्वितीय वर्गमूलका घनाघन पत्यके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर घनपत्यका प्रथम वर्गमूल आता है । अनन्तर पत्योपमके प्रथम वर्ग-मूलका घनपत्यके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर पत्योपम आता है । अनन्तर असंख्यात आव-लियोंका पत्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघन-धारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका प्रहण किया ।

उदाहरण—पत्योपमका प्रथम वर्गमूल २५६; घनपत्यका द्वितीय वर्गमूल ४०९६; घनाघन पत्यका द्वितीय वर्गमूल ६८७१९४७६३६;

$$\frac{६८७१९४७६३६}{३२ \times २५६ \times ४०९६} = २०४८ \text{ सा.}$$

यहाँ पर द्विगुणादिकरणके कर लेने पर अधस्तन विकल्प समाप्त हो जाता है ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले द्विरूप वर्गधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—असंख्यात आवलियोंका पत्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६५५३६ ÷ ३२ = २०४८ सा.



इड्डिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए' कदे वि सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । एवं तिय-चउक-पंचादिछेदणाणि वि अवलंबिय सासणसम्माइड्डिरासी उप्पाएदव्वो । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमं गुणेऊण पदरपछे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पलिदोवमेण पदरपछे भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे सासणसम्माइड्डि-

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार पश्योपम राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ भागहारके ५ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार ६५५३६ के अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार त्रिकछेद, चतुष्कछेद और पंचछेद आदिका अवलंबन करके भी सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये ।

$$\text{उदाहरण—३२ के त्रिकछेद } \begin{array}{r} 1 \\ 32 \\ 3 \\ 27 \end{array}$$

$$65536 \text{ के त्रिकछेद } \begin{array}{r} 1 \\ 65536 \\ 3 \\ 21845 \\ 27 \end{array}$$

$$\frac{65536}{27} \div \frac{32}{27} = 2048 \text{ सा.}$$

इसीप्रकार चतुष्कछेद आदि के भी उदाहरण बना लेना चाहिये ।

अधवा, असंख्यात आवलियोंसे पश्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरपश्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । इसका कारण यह है कि पश्योपमका प्रतरपश्यमें भाग देने पर पश्योपम आता है, और फिर असंख्यात आवलियोंका पश्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है । द्विरूपवर्गधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, अतएव पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{65536}{65536 \times 32} = 2048 \text{ सासादनसम्यग्दृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ × ६५५३६ रूप भागहारके २१ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार ६५५३६ × ६५५३६ के अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

१ प्रतिशु 'मेत्ते सारिव्व छेदणए' इति पाठः ।

रासी आगच्छदि । तस्स अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? असंखेज्जावलियद्वच्छेदण-  
याहियपलिदोवमद्वच्छेदणयमेत्ता । अधवा असंखेज्जावलियाहि पलिदोवमं गुणेऊण तेण  
गुणिदरासिणा पदरपह्ले गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आग-  
च्छदि । केण कारणेण ? पदरपह्लेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरपह्लो आगच्छदि ।  
पुणो वि पलिदोवमेण पदरपह्ले भागे हिदे पह्लो आगच्छदि । पुणो असंखेज्जावलियाहि  
पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कट्टु गुणेऊण  
भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि  
सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ?  
पलिदोवमादो उवरि चडिद्वणसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णकमत्थरासि-  
रूवूणेण पलिदोवमस्स अद्वच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलियाणं छेदणापक्खित्तमेत्ता ।

शंका — उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान — असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंको पल्योपमके अर्धच्छेदोंमें मिला देने  
पर जितना प्रमाण आवे उतनी उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं हैं ।

उदाहरण—३२ के अर्धच्छेद ५ और ६५५३६ के अर्धच्छेद १६ इन दोनोंका जोड़ २१  
होता है । यही ३२ × ६५५३६ के अर्धच्छेद जानना चाहिये ।

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे पल्योपमको गुणित करके जो गुणा की  
हुई राशि लब्ध आवे उससे प्रतरपल्यको गुणित करके जो राशि लब्ध आवे  
उसका प्रतरपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका  
प्रमाण आता है, क्योंकि, प्रतरपल्यका प्रतरपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने  
पर प्रतरपल्य आता है । पुनः पल्योपमका प्रतरपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है ।  
पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण  
आता है । द्विरूप वर्गधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है,  
इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^२ \times ६५५३६^२}{३२ \times ६५५३६ \times ६५५३६} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों, उतनीवार उक्त राशिके अर्धच्छेद करने पर भी  
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—३२ × ६५५३६ × ६५५३६ रूप भागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये  
इतनीवार ६५५३६ × ६५५३६ प्रमाण भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ आते हैं ।

शंका — उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान—पल्योपमसे ऊपर दो स्थान आये हैं, इसलिये दोका विरलन करके  
और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न  
होवे उसमेंसे एक कमा कर जो शेष रहे उससे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो  
लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद

एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयच्चं । वेरूवपरूवणा गदा ।

अद्वरूवे वचइस्सामो । असंखेज्जावलिआहि पदरपल्लं गुणेऊण घणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवममागच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलिआहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स अद्वच्छेदणयसलागा केत्तिआ ? दुगुणिदपलिदोवमद्वच्छेदणएसु असंखेज्जावलिआणं अद्वच्छेदणयपभिलत्तमेत्ता । अथवा असंखेज्जावलिआहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणपल्लं गुणेऊण घणपल्लउवरिसवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी

शलाकाएं आ जाती हैं ।

$$\text{उदाहरण—} 2 \quad 2 = 8 - 1 = 3 \times 16 = 48 + 4 = 52.$$

१ १

इसीप्रकार संख्यात असंख्यात और अनन्तराशिमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हो गई ।

अब घनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपत्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनपत्यमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है, क्योंकि, प्रतरपत्यका घनपत्यमें भाग देने पर पत्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पत्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनधारामें इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{64 \times 36^3}{32 \times 64 \times 36^3} = 2080 \text{ सासादनसम्यग्दृष्टि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उनकीवार उक्त भज्यमानराशि घनपत्यके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण—उक्त भागहार  $32 \times 64 \times 36^3$  के अर्धच्छेद ३७ होते हैं; इसलिये ३७ वार उक्त भज्यमान राशि  $36 \times 36^3$  के अर्धच्छेद करने पर भी २०८० आते हैं ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान—द्विगुणित पत्योपमके अर्धच्छेदोंमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं ।

$$\text{उदाहरण—} 16 \times 2 = 32 + 4 = 36.$$

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपत्यको गुणित करके जो गुणितराशि लब्ध आवे उससे घनपत्यको गुणित करके लब्ध राशिका घनपत्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर

आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लेणुवरिमवग्गे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलिआहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कट्ठु गुणेऊण भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? एगरूवं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णवभत्थरासितिगुणरूवणेण पलिदोवमस्स अद्वच्छेदणाओ गुणिय असंखेज्जावलिआणं अद्वच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । एवमुवरि वि अद्वच्छेदणयाणं संकलण-विहाणं वत्तव्वं । एत्थ दुगुणादिकरणं कायव्वं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतसु णेयव्वं । अट्ठरूवपरूवणा गदा ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । असंखेज्जावलिआहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लउव-

सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है, क्योंकि, घनपल्यका घनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनपल्य आता है । पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीव-राशिका प्रमाण आता है । घनधारामें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{३२ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८५ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये ८५ बार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि आती है ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी होती हैं ?

समाधान—एकका विरलन करके और उसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिको तीनसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके शेषसे पल्यो-पमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो संख्या आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं ।

$$\text{उदाहरण—} २ = २ \times ३ = ६ - १ = ५ \times १६ = ८० + ५ = ८५.$$

१

इसीप्रकार ऊपर भी अर्धच्छेदोंके संकलन करनेके विधानका कथन करना चाहिये । यहाँ पर द्विगुणादिकरणविधि करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त-स्थानोंमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार घनधारा प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनधारामें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके उपरिम

स्मिन्नगं गुणेऊण तेण घणाघणपल्ले भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणपल्लउवरिमवग्गेण घणाघणपल्ले भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पल्लिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेज्जावलियाहि पल्लिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागगणहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । तस्स अद्धच्छेदणयसलागा केत्तिया ? रूवणणवहि रूवेहि पल्लिदोवमस्स अद्धच्छेदणए गुणिय असंखेज्जावलियद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता । अधवा असंखेज्जावलियाहि पदरपल्लं गुणेऊण तेण घणपल्लउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण पुणो घणाघणपल्लं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? घणाघणेण उवरिमवग्गे भागे हिदे घणाघणो आगच्छदि । पुणो वि

वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनपल्यमें भाग देने पर सासादन्-सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनपल्यके उपरिम वर्गका घनाघनपल्यमें भाग देने पर घनपल्य आता है । पुनः प्रतरपल्यका घनपल्यमें भाग देने पर पल्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पल्योपममें भाग देने पर सासादन्सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघनधारामें इसप्रकार सासादन्सम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{३२ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३ \times ६५५३६^३} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादन्सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके अर्धच्छेद १३३ होते हैं, इसलिये उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादन्सम्यग्दृष्टि जीवराशि २०४८ आती है ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी हैं ?

समाधान—नौमैसे एक कम करके जो शेष रहते हैं उनसे पल्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेद होते हैं ।

$$\text{उदाहरण—} ९ - १ = ८ \times १६ = १२८ + ५ = १३३.$$

अथवा, असंख्यात आवलियोंसे प्रतरपल्यको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनपल्यके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनपल्यको गुणित करके आये हुए लब्धका घनाघनपल्यके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादन्सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनाघनपल्यका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनाघनपल्य

घणपल्लवरिमवगेण घणाघणे भागे हिदे घणपल्लो आगच्छदि । पुणो वि पदरपल्लेण घणपल्ले भागे हिदे पलिदोवमो आगच्छदि । पुणो वि असंखेजावलिआहि पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? एगघणाघणवग्गसलागं विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थकदणवगुणरूवूणरासिणा पलिदोवमद्वच्छेदणए गुणिय असंखेजावलिआणं अद्वच्छेदणयपक्खित्तेत्ता । एवं दोणिण-चत्तारि-आदि-वग्गट्ठाणाणि विरलिय विगुणिदण्णोण्णभत्थणवगुणरूवूणरासिणा पलिदोवमद्वच्छेदणा गुणिय सादिरेगा

आता है । पुनः घनपक्ष्यके उपरिम वर्गका घनाघनपक्ष्यमें भाग देने पर घनपक्ष्य आता है । पुनः प्रतरपक्ष्यका घनपक्ष्यमें भाग देने पर पक्ष्योपम आता है । पुनः असंख्यात आवलियोंका पक्ष्योपममें भाग देने पर सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है । घनाघनधारिमें इसप्रकार भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है, इसलिये पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६ \times ६५५३६}{३२ \times ६५५३६ \times ६५५३६ \times ६५५३६ \times ६५५३६} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि आती है ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेदशलाकाएं कितनी होती हैं ?

समाधान—घनाघनरूप एक वर्गशलाकाका विरलन करके और उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुए दोको नौसे गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे पक्ष्योपमके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेदोंके मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण आ जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} २ = २ \times ९ = १८ - १ = १७ \times १६ = २७२ + ५ = २७७.$$

१

इसप्रकार दो वर्गस्थान या चार वर्गस्थान आदि ऊपर गये हों तो दो या चार आविका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसे नौसे गुणा करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करे, जो शेष रहे उसे पक्ष्योपमके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद मिला कर सर्वत्र भागहारके अर्धच्छेद उत्पन्न कर लेना चाहिये । सर्वत्र द्विगुणादि-

करिय भागहारद्वच्छेदणया उप्पाएदव्वा । सव्वत्थ दुगुणादिकरणं कादव्वं । गहिदं परूवणा गदा ।

गहिदगहिदं वचइस्सामो । तं जहा, पलिदोवमस्स असंखेज्जिभागेण वेरूव-  
धाराए उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव वग्गे भागे हिदे  
सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स  
अद्वच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । एवमुवरि सव्वत्थ कायव्वं ।  
वेरूवपरूवणा गदा । अद्वरूवे वचइस्सामो । घणपल्लपटमवग्गमूलस्स असंखेज्जिभागेण  
सासणसम्माइट्टिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तम्हि चेव  
वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते

करण कर लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिमविकल्प प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— पच्योपमके  
असंख्यातवें भाग ( सासादनसम्यग्दृष्टिराशि ) का द्विरूपवर्गधारामें ऊपर इच्छित वर्गमें भाग  
देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि  
जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—६५५३६ का इच्छित वर्ग ६५५३६<sup>२</sup>

$$\frac{६५५३६^२}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२; \quad \frac{६५५३६^२}{६५५३६ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भाज्य राशिके अर्धच्छेद करने  
पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २१ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भाज्यमान राशिके  
अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

इसप्रकार ऊपरके वर्गस्थानोंमें भी सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपवर्गधारकी  
प्ररूपणा समाप्त हुई । अब घनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनपल्यके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका  
ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गमें भाग देने  
पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घन ६५५३६<sup>३</sup> का प्रथम वर्गमूल २५६<sup>३</sup>

$$\frac{२५६^३}{२५६ \times ३२} = २०४८; \quad \frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^२}{२०४८} = ६५५३६^३ \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६^३}{६५५३६^३ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । एवं सच्चत्थ परू-  
वेदव्वं । अड्डरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वचइस्सामो । घणाघणपल्लविदियवग्गमूलस्स  
असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइड्डिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण  
तस्मिं चैव वग्गे भागे हिदे सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स  
अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि सासणसम्माइड्डिरासी आगच्छदि ।  
गहिदगहिदो गदो ।

गहिदगुणगारं वचइस्सामो । पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइड्डि-  
रासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिम-

उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी  
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८५ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान  
राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टिराशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र प्ररूपण करना चाहिये । इसप्रकार घनधारा समाप्त हुई । अब  
घनाघनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—

घनाघनपर्ययके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके  
प्रमाणका घनाघनपर्ययके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसका उसी  
वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—घनाघन ६५५३६ का द्वितीय वर्गमूल १६; १६ का असंख्यातवां भाग  
 $२ \times १६,$

$$\frac{१६}{२ \times १६} = २०४८; \quad \frac{६५५३६ \times ६५५३६}{२०४८} = ६५५३६^{१०} \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६ \times ६५५३६}{६५५३६^{१०} \times ३२} = २०४८.$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद  
करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके २७७ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्य-  
मान राशिके अर्धच्छेद करने पर २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है । इसप्रकार  
गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

अब गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—पर्योपमके असंख्यातवें भागरूप  
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणका पर्योपमके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो  
भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिका इच्छित  
वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।



वर्गमे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदण कदे वि सासणसम्माइडिरासी अवचिड्ठे । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । घणपल्लपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइडिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वर्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदण कदे वि सासणसम्माइडिरासी अवचिड्ठे । एवं सव्वत्थ वत्तव्वं । अट्ठरूवपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । घणाघण-

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२; \quad ६५५३६ \times ६५५३६ \times ३२ = ६५५३६ \times ३२$$

$$\frac{६५५३६ \times ६५५३६}{६५५३६ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि ही आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५३ अर्धच्छेद होते हैं, अतएव इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र करना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हुई । अब अष्ट-रूपमें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनपल्लके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दष्टि राशिका घन-पल्लके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित वर्गको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिका इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर सासादन-सम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

$$\text{उदाहरण—} ६५५३६ \text{ का प्रथम वर्गमूल } २५६;$$

$$\frac{२५६}{३२ \times २५६} = २०४८; \quad \frac{६५५३६ \times ६५५३६}{२०४८} = ६५५३६ \times ३२;$$

$$६५५३६ \times ६५५३६ \times ३२ = ६५५३६ \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६ \times ६५५३६}{६५५३६ \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशि आती है ।

उक्त भागहारके १८१ अर्धच्छेद होते हैं, अतएव इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्ध-च्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि आती है ।

इसीप्रकार सर्वत्र कहना चाहिये । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई । अब

विदियवगमूलस्स असंखेज्जदिभागेण सासणसम्माइडिरासिणा उवरि इच्छिदवग्गे भागे हिदे जं भागलद्धं तेण तमेव वग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे सासणसम्माइडिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्ध-  
च्छेदणए कदे वि सासणसम्माइडिरासी अवचिड्ढे । एवं सव्वत्थ घणाघणधाराए वत्तव्वं ।  
गहिदगुणगारो गदो । एवं सासणसम्माइडिपरूवणा समत्ता । एवं सम्मामिच्छाइडि-  
असंजदसम्माइडि-संजदासंजदाणं च वत्तव्वं । णवरि विसेसो अप्पण्णो अवहारकालेहि  
खंडिदादओ वत्तव्वा । एत्थ एदेसिं संदिद्धिं वत्तइस्सामो—

वत्तीस सोलस चत्तारि जाण सदसहिदमद्वीसं च ।

एदे अवहारत्था हवति संदिद्धिणा दिट्ठा ॥ ३७ ॥

घनाघनधारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनाघनके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका  
घनाघनपक्षके ऊपर इच्छित वर्गमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उससे उसी इच्छित  
वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी इच्छित वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर  
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१६^३}{२ \times १६^३} = २०४८; \frac{६५५३६^३ \times ६५५३६^३}{२०४८} = ६५५३६^{१०} \times ३२;$$

$$६५५३६^{१०} \times ६५५३६^{१०} \times ३२ = ६५५३६^{३३} \times ३२;$$

$$\frac{६५५३६^{३३}}{६५५३६^{३३} \times ३२} = २०४८ \text{ सा.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद  
करने पर भी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ५६५ अर्धच्छेद होते हैं, इसलिये इतनीवार उक्त भज्यमान  
राशिके अर्धच्छेद करने पर भी २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि राशि आती है ।

सर्वत्र घनाघनधारामें आगे भी इसीप्रकार कहना चाहिये । इसप्रकार गृहीतगुणकार  
उपरिम विकल्प समाप्त हुआ ।

इसप्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि प्ररूपणा समाप्त हुई ।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवराशिके प्रमाणका  
खण्डित, भाजित आदिके द्वारा कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि अपने अपने  
अवहारकालके द्वारा ही खण्डित, भाजित आदिका कथन करना चाहिये । आगे इन सबकी  
अंकसंदृष्टि बतलाते हैं—

सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण ३२, सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी  
अवहारकालका प्रमाण १६, असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण ४, और संयता-

पण्णही च सहस्सा पंचसया खलु छउत्तरा तीसं ।  
 पलिदोवमं तु एवं वियाण संदिट्ठिणा दिट्ठं ॥ ३८ ॥  
 विसहस्सं अडयाळं छण्णउदी चैय चटुसहस्साणि ।  
 सोलसहस्साणि पुणो तिण्णिणसया चउरसीदीया ॥ ३९ ॥  
 पंचसय वासुत्तरमुदिट्ठाई तु लद्धदव्वाइं ।  
 सासण-मिस्सासंजद-विरदाविरदाण णु कमेण ॥ ४० ॥

सासणसम्माइट्ठी ३२; सम्मामिच्छाइट्ठी १६; असंजदसम्माइट्ठी ४; संजदासंजद १२८; एदे अवहारकाला । सासणसम्माइट्ठिद्ववपमाणं २०४८ सम्मामिच्छाइट्ठिद्ववपमाणं ४०९६ असंजदसम्माइट्ठिद्ववपमाणं १६३८४ संजदासंजदद्ववपमाणं ५१२ । पलिदोवमपमाणं ६५५३६ ।

**प्रमत्तसंजदा द्ववपमाणेण केवडिया, कोटिपुधत्तं ॥ ७ ॥**

प्रमत्तसंजदग्गहणं सेसगुणट्ठाणणं पडिसेहट्ठं । कोटिपुधत्तग्गहणं सेससंखाणिरा-

संयतसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण १२८ जानना चाहिये । सम्यग्ज्ञानियोंके द्वारा देखे गये थे अवहारार्थ हैं ॥ ३७ ॥

पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीसको पत्योपम जानना चाहिये ऐसा सम्यग्ज्ञानियोंने अवलोकन किया है ॥ ३८ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८, सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण ४०९६, असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण १६३८४ और संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण ५१२ आता है ॥ ३९-४० ॥

सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी भागहार ३२, सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी भागहार १६, असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी भागहार ४ और संयतासंयतसंबन्धी भागहार १२८ है । सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण २०४८, सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण ४०९६, असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण १६३८४ और संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण ५१२ है । तथा पत्योपमका प्रमाण ६५५३६ समझना चाहिये ।

प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? कोटिपुथक्त्वप्रमाण हैं ॥ ७ ॥

शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध करनेके लिये प्रमत्तसंयतपदका ग्रहण किया है । शेष संख्याओंका निराकरण करनेके लिये कोटिपुथक्त्व पदका ग्रहण किया है ।

१ पं. सं. पृ. ८.

२ प्रमत्तसंयताः कोटीपृथक्त्वसंख्याः । पृथक्त्वमित्यागमसंज्ञा तिसृणां कोटीनामुपरि नवानामधः । स. सि. १, ८. पंचेव य तेणवदी णवट्ठविसयच्छउत्तरं पमदे । गो. जी. ६२४.

करणद्धं । पुधत्तमिदि तिण्हं कोडीणमुवरि णवण्हं कोडीणं हेड्डो जा संखा सा घेत्तवा । सा अणेगवियप्पादो इमा होदि त्ति ण जाणिज्जे ? ण, परमगुरुवदेसादो जाणिज्जे । तत्थ पमत्तसंजदा णं पंच कोडीओ तेणउदिलक्खा अट्टाणउदिसहस्सा छउत्तरं विसदं च ५९३९८२०६ । एदमेत्तियं होदि त्ति कथं णव्वदे ? आइरियपरंपरागदजिणोवदेसादो ।

**अप्पमत्तसंजदा द्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥८॥**

जदि वि एदं संखेज्जा इदि वयणं सव्वसंखेज्जवियप्पाणं साहारणं हवदि तो वि कोडिपुधत्तं ण पूरेदि त्ति णव्वदे । तं कथं ? पुध सुत्तारंभणहाणुववत्तीदो, 'पमत्तद्वादो अप्पमत्तद्वा संखेज्जगुणहीणो' त्ति सुत्तादो वा । अप्पमत्तसंजदाणं पमाणं गुरुवदेसादो वुच्चे । दो कोडीओ छण्णउदिलक्खा णवणउदिसहस्सा तिरहियसयं च । अंकदो वि एत्तिया हवंति २९६९९१०३ । वुत्तं च-

शंका—पृथक्त्व इस पदसे तीन कोटिके ऊपर और नौ कोटिके नीचे जितनी संख्या है, वह लेना चाहिये । परंतु वह मध्यकी संख्या अनेक विकल्परूप होनेसे यही संख्या यहां ली गई है यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यह परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है । उसमें प्रमत्त-संयत जीवोंका प्रमाण पांच करोड़ तेरानवे लाख अठानवे हजार दोसौ छह ५९३९८२०६ है ।

शंका—यह संख्या इतनी है यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्यपरंपरासे आये हुए जिनेन्द्रदेवके उपदेशसे यह जाना जाता है कि यह संख्या इतनी ही है ।

अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ८ ॥

यद्यपि सूत्रमें आया हुआ 'संखेज्जा' यह वचन, संख्यात संख्याके जितने भी विकल्प हैं, उनमें समानरूपसे पाया जाता है तो भी वह कोटिपृथक्त्वको पूरा नहीं करता है; अर्थात् यहां पर कोटिपृथक्त्वसे नीचेकी संख्या इष्ट है, यह जाना जाता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यहां पर पूर्वोक्त अर्थ इष्ट न होकर यदि कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ ही इष्ट होता तो अलगसे सूत्र बनानेकी कोई आवश्यकता नहीं थी । अथवा, 'प्रमत्तसंयतके कालसे अप्रमत्तसंयतका काल संख्यातगुणा हीन है' इस सूत्रसे भी जाना जाता है कि यहां पर कोटिपृथक्त्वरूप अर्थ इष्ट नहीं है ।

अब गुरुपदेशसे अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण कहते हैं—

अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण दो करोड़ छयानवे लाख निन्यानवे हजार एकसौ तीन

तिगहिय-सद णवणउदी छण्णउदी अपमत्त वे कोडी ।

पंचेव य तेणउदी णवड विसया छउत्तरा चेय' ॥ ४१ ॥

अपमत्तदद्वादो पमत्तद्वच्चं केण कारणेण दुगुणं ? अपमत्तद्वादो पमत्तद्वादो दुगुणत्तादो ।

**चटुण्हमुवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया; पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ॥ ९ ॥**

एगेगगुणद्वाणम्हि एगसमयम्हि चारित्तमोहणीयमुवसामेंतो जहण्णेण एगो जीवो पविसइ, उक्कस्सेण चउवण्ण जीवा पविसंति । एदं सामण्णदो भवदि । विसेसदो पुण अट्ठ-समयाहिय-वासपुधत्तम्भंतरे उवसमसेट्ठिपाओग्गा अट्ठ समयो हवंति । तत्थ पढमसमए एगजीवमाई कादूण जा उक्कस्सेण सोलस जीवा त्ति उवसमसेट्ठि चडंति । विदियसमए एगजीवमाई काऊण जा उक्कस्सेण चउवीस जीवा त्ति उवसमसेट्ठि चडंति । तदियसमए एगजीवमाई काऊण जा उक्कस्सेण तीस जीवा त्ति उवसमसेट्ठि चडंति । चउत्थसमए एगजीवमाई काऊण जा उक्कस्सेण छत्तीस जीवा त्ति उवसमसेट्ठि चडंति ।

हे । अंकोंसे भी अप्रमत्तसंयत २९६९९१०३ इतने ही हैं । कहा भी है—

प्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण पांच करोड़ तेरानवे लाख अठ्ठानवे हजार दोसौ छह है और अप्रमत्तसंयत जीवोंका प्रमाण दो करोड़ छयानवे लाख निन्यानवे हजार एकसौ तीन है ॥४१॥

शुंका—अप्रमत्तसंयतके द्रव्यसे प्रमत्तसंयतका द्रव्य किस कारणसे दूना है ?

समाधान—क्योंकि, अप्रमत्तसंयतके कालसे प्रमत्तसंयतका काल दुगुणा है ।

चारों गुणस्थानोंके उपशामक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे चौवन होते हैं ॥ ९ ॥

उपशमश्रेणीके प्रत्येक गुणस्थानमें एक समयमें चारित्रमोहनीयका उपशम करता हुआ जघन्यसे एक जीव प्रवेश करता है और उत्कृष्टरूपसे चौवन जीव प्रवेश करते हैं । यह कथन सामान्यसे है । विशेषकी अपेक्षा तो आठ समय अधिक वर्षपृथक्त्वके भीतर उपशमश्रेणीके योग्य (लगातार) आठ समय होते हैं । उनमेंसे प्रथम समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे सोलह जीवतक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौबीस जीवतक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे तीस जीवतक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे

१ गो. जी. ६२५. परं तत् 'पंचेव य तेणउदी णवडविसयच्छउत्तरं पमदे' इति पाठः । पं. सं. ६२, ६३.

२ चत्वार उपशामकाः प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा । उत्कर्षेण चतुःपंचाशत् । स. सि. १, ८. एगाह चउवण्णा समगं उवसामगा य उवसेता । पञ्चसं. २, २३.

पंचमसमए एगजीवमाई काऊण जा उक्कस्सेण वायाल जीवा चि उवसमसेहिं चडंति ।  
छट्ठसमए एगजीवमाई काऊण जा उक्कस्सेण अड्ढाल जीवा चि उवसमसेहिमारुहंति ।  
सत्तमद्वमदोसु समएसु एकजीवमाई काऊण जाउक्कस्सेण चउवण्ण जीवा चि उवसमसेहिं  
चडंति । उच्चं च—

सोलसयं चउवीसं तीसं छत्तीस तह य वायालं ।

अड्यालं चउवण्णं चउवण्णं होइ अंतिमए<sup>१</sup> ॥ ४२ ॥

### अड्ढं पडुच्च संखेजा<sup>२</sup> ॥ १० ॥

पुवुत्तेसु अट्ठसु समएसु एगेगगुणट्ठाणम्मि उक्कस्सेण संचिदसच्चजीवे एगट्ठं कदे  
चउरुत्तरतिसयमेत्ता हवंति । तैसिं संखेवेण मेलावणविहाणं वुच्चदं । अड्ढं गच्छं डुविय  
सत्तारसमाई काऊण छउत्तरं करिय संकलणसुत्तेण<sup>३</sup> मेलाविदे एगेगगुणट्ठाणम्मि संचिद-

छत्तीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । पांचवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्ट-  
रूपसे व्यालीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । छठे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्ट-  
रूपसे अड्ढतालीस जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । सातवें और आठवें इन दोनों समयोंमें एक  
जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौवन चौवन जीव तक उपशमश्रेणी पर चढ़ते हैं । कहा भी है—

निरन्तर आठ समयपर्यन्त उपशमश्रेणी पर चढ़नेवाले जीवोंमें अधिकसे अधिक प्रथम  
समयमें सोलह, दूसरे समयमें चौवीस, तीसरे समयमें तीस, चौथे समयमें छत्तीस, पांचवें  
समयमें व्यालीस, छठे समयमें अड्ढतालीस, सातवें समयमें चौवन और अन्तिम अर्थात् आठवें  
समयमें भी चौवन जीव उपशमश्रेणीपर चढ़ते हैं ॥ ४२ ॥

कालकी अपेक्षा उपशमश्रेणीमें संचित हुए सभी जीव संख्यात होते हैं ॥ १० ॥

पूर्वोक्त आठ समयोंमें एक एक गुणस्थानमें उत्कृष्टरूपसे संचित हुए संपूर्ण  
जीवोंको एकत्रित करने पर तीनसौ चार होते हैं । आगे संक्षेपसे उन्हींके जोड़ करनेकी  
विधि कहते हैं—

आठको गच्छरूपसे स्थापित करके, सत्रहको आदि अर्थात् मुख करके और छट्ठको  
उत्तर अर्थात् चय करके 'पद्मेगेण विहीणं' इत्यादि संकलन सूत्रके नियमानुसार जोड़  
करने पर प्रत्येक गुणस्थानमें उपशमक जीवोंकी संचित राशिका प्रमाण तीनसौ चार  
आ जाता है ।

उदाहरण— $८ - १ = ७ \div २ = ३\frac{१}{२} \times ६ = २१ + १७ = ३८ \times ८ = ३०४$  .

१ गो. जी. ६२७, पं. सं. ६५, ६७.

२ स्वकालेन समुदिताः संख्येयाः । स. सि. १, ८. अड्ढं पडुच्चं सेदीए<sup>३</sup> इति सखे नि संखेज्जा ।  
पञ्चसं. २, २३.

३ पद्मेगेण विहीणं इमाजिदं उत्तरेण संशुणिदं । पसववुदं पदशुणिदं पदगणिदं तं विजाणाहि । वि. सा.  
१६४. एकहीनं पदं वृद्धया ताडितं भाजितं द्विभिः । आदियुक्तं पराम्यस्तमीक्षितं गणितं मतए ॥ पं. सं. ७७.

उवसाममाणं पमाणं हवदि । सउक्कस्सपमाणजीवसहिदा सन्वे समया जुगवं ण लहंति चि के वि पुब्बुत्तपमाणं पंचूणं करेति । एदं पंचूणं वक्खाणं पवाइज्जमाणं दक्खिण-माइरियपरंपरागयमिदि जं वुत्तं होइ । पुब्बुत्तवक्खाणमपवाइज्जमाणं वाउं आइरियपरं-परा-अणागदमिदि णायच्चं ।

**चउण्हं खवा अजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया; पवेसेण एको वा दो वा तिण्णि वा, उक्कस्सेण अटोत्तरसदं ॥ ११ ॥**

अट्टसमयाहिय-ठ-मासभंतरे खवगसेट्ठिपाओग्गा अट्ट समया हवंति । तेसि समयणं विसेसविवक्खमकाऊण सामण्णपरूवणं कीरमाणे जहण्णेण एगो जीवो खवग-गुणट्ठाणं पडिवज्जदि । उक्कस्सेण अटोत्तरसयमेत्तजीवा खवगगुणट्ठाणं पडिवज्जंति । विसेसमास्सिदूण परूविज्जमाणे पढमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण वत्तीस जीवा चि खवगसेट्ठिं चडंति । विदियसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अडदालीस जीवा चि खवगसेट्ठिं चडंति । तदियसमए वि एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण सट्ठि जीवा चि खवगसेट्ठिं चडंति । चउत्थसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण वाहत्तरि जीवा चि

अपने इस उत्कृष्ट प्रमाणवाले जीवोंसे युक्त संपूर्ण समय एकसाथ नहीं प्राप्त होते हैं, इसलिये कितने ही आचार्य पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पांच कम करते हैं । पूर्वोक्त प्रमाणमेंसे पांच कमका यह व्याख्यान प्रवाहरूपसे आ रहा है, दक्षिण है और आचार्य-परंपरागत है, यह इस कथनका तात्पर्य है । तथा पूर्वोक्त ३०४ का व्याख्यान प्रवाहरूपसे नहीं आ रहा है, वाम है, आचार्य-परंपरासे अनागत है, ऐसा जानना चाहिये ।

चारों गुणस्थानोंके क्षपक और अयोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? प्रवेशकी अपेक्षा एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ हैं ॥ ११ ॥

आठ समय अधिक छह महीनाके भीतर क्षपकश्रेणीके योग्य आठ समय होते हैं । उन समयोंके विशेष कथनकी विवक्षा न करके सामान्यरूपसे प्ररूपण करने पर जघन्यसे एक जीव क्षपक गुणस्थानको प्राप्त होता है । तथा उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ जीव क्षपक गुणस्थानको प्राप्त होते हैं । विशेषका आश्रय लेकर प्ररूपण करने पर प्रथम समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे बत्तीस जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । दूसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे अट्ठालीस जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । तीसरे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे साठ जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । चौथे समयमें एक जीवको

१ सर्वोत्कृष्टप्रमाणविलिख्यन्ते न यतः क्षणाः । आचार्यैरपरिस्ताः पंचमो रहितस्ततः ॥ पं. सं. ६८.

२ चत्वारः क्षपका अयोगिकेवलिनवच प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा । उत्कृष्टगण्योत्तरावसतसंख्याः । स. सि. १, ८. खवगा खीणाजोगी एगाइ जाव होति अट्टसयं । पञ्चसं. २, २४.

खवगसेदिं चडंति । पंचमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण चउरासीदि जीवा ति खवगसेदिं चडंति । छट्ठमसमए एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण छण्णउदि जीवा ति खवगसेदिं चडंति । सत्तमसमए अट्ठमसमए च एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण अट्ठत्तरसयजीवा ति खवगसेदिं चडंति । उच्चं च—

वत्तीसमट्ठदालं सट्ठी वाहत्तरी य चुलसीई ।

छण्णउदी अट्ठत्तरसदमट्ठत्तरसयं च वेदव्वं ॥ ४३ ॥

## अद्धं पडुच्च संखेज्जा ॥ १२ ॥

अट्ठसमयसंचिदसव्वजीवे उक्कस्सेणै एगट्ठे कदे अट्ठत्तरछस्सयमेत्तजीवा हवन्ति । तिस्से मेलावणविहाणं वुच्चे । तं जहा—अट्ठं गच्छं द्विविय चोत्तीसमाइं काऊण वारसुत्तरं करिय संकलणसुत्तेण मेलाविदे खवगरासी मिलदि । एत्थ करणगाहा—

आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे बहत्तर जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । पांचवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे चौरासी जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । छठे समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे छयानवे जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । सातवें और आठवें समयमें एक जीवको आदि लेकर उत्कृष्टरूपसे प्रत्येक समयमें एकसौ आठ जीवतक क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं । कहा भी है—

निरन्तर आठ समयपर्यन्त क्षपकश्रेणी पर चढ़नेवाले जीवोंमें पहले समयमें बत्तीस, दूसरे समयमें अड़तालीस, तीसरे समयमें साठ, चौथे समयमें बहत्तर, पांचवें समयमें चौरासी, छठे समयमें छयानवें, सातवें समयमें एकसौ आठ और आठवें समयमें एकसौ आठ जीव क्षपकश्रेणी पर चढ़ते हैं, ऐसा जानना चाहिये ॥ ४३ ॥

कालकी अपेक्षा संचित हुए क्षपक जीव संख्यात होते हैं ॥ १२ ॥

पूर्वोक्त आठ समयोंमें संचित हुए संपूर्ण जीवोंको एकत्रित करने पर संपूर्ण जीव छहसौ आठ होते हैं । आगे उसी संख्याके जोड़ करनेकी विधि कहते हैं—आठको गच्छरूपसे स्थापित करके चौतीसको आदि अर्थात् मुख करके और बारहको उत्तर अर्थात् चय करके 'पदमेगेण विहीणं' इत्यादि संकलनसूत्रके नियमानुसार जोड़ देने पर क्षपक जीवोंकी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— $८-१=७$ ,  $७÷२=३\frac{१}{२}$ ,  $३\frac{१}{२} \times १२=४२$ ,  $४२+३४=७६$ ,  $७६ \times ८=६०८$  .

अब यहां इसी विषयमें करणगाथा दी जाती है—

१ गो. जी. ६२८. पं. सं. ७९-८०.

२ स्वकालेन समुदिताः संख्येयाः । स. सि. १, ८. अद्धाए सयपुहुत्तं । पक्कसं. २, २४.

३ प्रतिपु 'जीवे ण' इति पाठः ।



उत्तरदलहयगच्छे पचयदलूणे सगादिवेत्त पुणो ।

पन्निखिय गच्छगुणिदे उवसम-खवगाणं परिमाणं ॥ ४४ ॥

एसा उत्तरपडिवत्ती । एत्थ दस अवणिदे दक्खिणपडिवत्ती हवदि । एसा उव-  
सम-खवगपरुवणगाहा-

तिसदि वदंति केई चउत्तरमत्थपंचयं केई

उवसामगेसु एदं खवगाणं जाण तद्दुगुणं ॥ ४५ ॥

चउत्तरतिणिसयं पमाणमुवसामगाण केई तु ।

तं चेव य पंचूणं भणंति केई तु परिमाणं ॥ ४६ ॥

एगेगुणट्टाणभिह उवसामग-खवगाणं पमाणपरुवणगाहा-

उत्तर अर्थात् प्रचयको आधा करके और उसे गच्छसे गुणित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे प्रचयका आधा घटा देने पर और फिर स्वकीय आदि प्रमाणको जोड़ देने पर उत्पन्न राशिके पुनः गच्छसे गुणित करने पर उपशमक और क्षपकोंका प्रमाण आता है ॥ ४४ ॥

उदाहरण—क्षपकोंकी अपेक्षा आदि ३४, प्रचय १२, गच्छ ८; उपशमकोंकी अपेक्षा आदि १७, प्रचय ६, गच्छ ८;

$१२ \div २ = ६$ ;  $६ \times ८ = ४८$ ;  $४८ - ६ = ४२$ ;  $४२ + ३४ = ७६$ ;  $७६ \times ८ = ६०८$  एक गुणस्थानमें क्षपकोंका प्रमाण ।

$६ \div २ = ३$ ;  $३ \times ८ = २४$ ;  $२४ - ३ = २१$ ;  $२१ + १७ = ३८$ ;  $३८ \times ८ = ३०४$  एक गुणस्थानमें उपशमकोंका प्रमाण ।

विशेषार्थ—यद्यपि यह करणगाथा यहाँ पर उपशमकों और क्षपकोंका प्रमाण लानेके लिये उद्धृत की गई है और उसमें उपशमकों और क्षपकोंके प्रमाण लानेकी प्रतिज्ञा भी की गई है, परंतु जहाँ समान हानि या समान वृद्धि पाई जाती है ऐसी अनेक संख्याओंका जोड़ भी इसी नियमसे आ जाता है ।

यह उत्तरमान्यता है । ६०८ मेंसे १० निकाल देने पर दक्षिणमान्यता होती है । अब आगे उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा देते हैं—

कितने ही आचार्य उपशमक जीवोंका प्रमाण तीनसौ कहते हैं । कितने ही आचार्य तीनसौ चार कहते हैं और कितने ही आचार्य तीनसौ चारमेंसे पांच कम अर्थात् दोसौ निन्यानवे कहते हैं । इसप्रकार यह उपशमक जीवोंका प्रमाण है । क्षपकोंका इससे दूना जानो ॥ ४५ ॥

कितने ही आचार्य उपशमक जीवोंका प्रमाण तीनसौ चार कहते हैं और कितने ही आचार्य पांच कम तीनसौ चार अर्थात् दोसौ निन्यानवे कहते हैं ॥ ४६ ॥

आगे एक एक गुणस्थानमें उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा देते हैं—

एकेकगुणद्वारेण अहसु समएसु संचिदाणं तु ।

अहसय सत्तणउदी उवसम-खवगाण परिमाणं ॥ ४७ ॥

सजोगिकेवली द्रव्यपमाणेण केवडिया; पवेसणेण एको वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण अट्टत्तरसयं ॥ १३ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुब्बं व परूवेदव्वो ।

अद्धं पडुच्च सदसहस्सपुधत्तं ॥ १४ ॥

अद्धमस्सिऊण सदसहस्सपुधत्ताणयणविहाणं बुच्चदे- अट्टसमयाहियछम्मासाणम-  
ब्भंतरे जदि अट्ट सिद्धसमया लब्भंति तो चालीससहस्स-अट्टसय-एक्केतालीसमेत्त-अट्ट-  
समयाहियछमासाब्भंतरे केत्तिया सिद्धसमया लब्भंति चि तेरासिए कदे तिणिणलक्ख-  
छव्वीससहस्स-सत्तसय-अट्टावीसमेत्त-सिद्धसमया लब्भंति । पुणो एदम्हि सिद्धकालम्हि  
संचिदसजोगिजीवाणं पमाणायणं बुच्चदे । तं जहा- छसु सिद्धसमएसु तिणिण तिणिण

एक एक गुणस्थानमें आठ समयमें संचित हुए उपशमक और क्षपक जीवोंका परि-  
माण आठसौ सत्तानवे है ॥ ४७ ॥

सजोगिकेवली जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? प्रवेशसे एक या दो  
अथवा तीन और उत्कृष्टरूपसे एकसौ आठ होते हैं ॥ १३ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहलेके समान कहना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा संपूर्ण सयोगी जिन लक्षपृथक्त्व होते हैं ॥ १४ ॥

सयोगी जिन कालका आश्रय करके लक्षपृथक्त्व कहे हैं, आगे उसी लक्षपृथक्त्वके  
लानेकी विधि कहते हैं—

आठ समय अधिक छह माहके भीतर यदि आठ सिद्ध समय प्राप्त होते हैं तो  
चालीस हजार आठसौ इकतालीस मात्र अर्थात् इतनीवार आठ समय अधिक छह माहके  
भीतर कितने सिद्ध समय प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर तीन लाख छव्वीस हजार  
सातसौ अट्ठाईस सिद्ध समय आते हैं । अब आगे इस सिद्ध कालमें संचित हुए सयोगी जीवोंका  
प्रमाण लानेकी विधि कहते हैं । वह इसप्रकार है—

१ सयोगिकेवलिनः प्रवेशेन एको वा द्वौ वा त्रयो वा । उक्कस्सेणाट्टोत्तरसत्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

२ स्वकालेन समुदिताः सत्तसहस्रपृथक्त्वसंख्याः । स. सि. १, ८. कोट्टिपुट्टं सजोगिजो । पक्खसं. २, २४.

३ सक्षणाष्टकषणमास्यामेकवाष्ट क्षणा यदि । इयतीनां तदा तासां सद्धियोग्या कति क्षणाः ॥ चत्वारिंश-  
त्सहस्राणि षण्मासोऽष्टक्षणाधिकाः । भवन्त्यष्टशतान्येकचत्वारिंशानि सिद्धवत्ताम् ॥ आश्रयन्तः प्रमाणेच्छे विधायान्त-  
स्तयोः फलम् । अन्तेन शुणितं कृत्वा भजनीयं तदादिना ॥ समयानां त्रयोलक्षाः षड्विंशतिसहस्रकाः । अष्टाविंशं  
विबोद्धव्यमपरे शतसप्तकम् ॥ पं. सं. ८६-८९.

जीवा केवलणाणं उप्पाएंति, दोसु समएसु दो दो जीवा जदि केवलणाणं उप्पाएंति, तो अट्टसमयसंचिदसजोगिजिणा वावीस भवंति । अट्टसु सिद्धसमएसु जदि वावीस सजोगिजिणा लब्धंति तो तिण्णिलक्ख-छव्वीससहस्स-सत्तसय-अट्ठावीसमेच-सिद्धसमएसु केचिया सजोगिजिणा लब्धंति चि तेरासिए कए अट्ठलक्ख-अट्ठाणउदिसहस्स-दुरहिय-पंचसदमेत्ता सजोगिजिणा लद्धा हवंति । वुचं च—

अट्ठेव सयसहस्सा अट्ठाणउदी तहा सहस्साइं ।

संखा जोगिजिणाणं पंचसद विउत्तरं जाणं ॥ ४८ ॥

एदीए दिसाए बहुएहि पयारेहि सजोइरासिस्स पमाणमाणेयव्वं । तं जहा-जम्हि पुब्बिल्लसिद्धकालस्स अट्ठमेत्तो सिद्धकालो लब्धइ तम्हि तेरासियमेवमाणेयव्वं । तं जहा— अट्टसु सिद्धसमएसु जदि चउत्तालीसमेत्ता सजोगिजिणा लब्धंति तो एक-लक्ख-तिसट्ठिसहस्स-तिण्णिसय-चउत्तट्ठिमेत्त-सिद्धसमयाणं केचिया सजोगिजिणा लब्धंति चि तइरासिए कदे पुब्बिल्लो चेव सजोगिरासी उप्पज्जदि । जम्हि आउ व्वे पुब्बिल्ल-सिद्धकालस्स चउम्भागमेत्तो सिद्धकालो लब्धइ तम्हि एवं तइरासिअं कायव्वं । अट्टसु सिद्धसमएसु जदि अट्ठरासीदि सजोगिजिणा लब्धंति तो एगासीदिसहस्स-छस्सय-वासीदि-

छह सिद्ध समयोंमें तीन तीन जीव, और दो समयोंमें दो दो जीव यदि केवलज्ञान उत्पन्न करते हैं, तो आठ समयोंमें संचित हुए सयोगी जिन बावीस होते हैं । इसप्रकार यदि आठ सिद्ध समयोंमें बावीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो तीन लाख छव्वीस हजार सातसौ अट्ठाईस सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर आठ लाख अट्ठानवे हजार पांचसौ दो सयोगी जिन प्राप्त हो जाते हैं । कहा भी है—

सयोगी जीवोंकी संख्या आठ लाख अट्ठानवे हजार पांचसौ दो जानो ॥ ४८ ॥

इसी दिशासे अनेक प्रकारसे सयोगी जीवोंकी राशि लाना चाहिये । आगे उसीका स्वर्गीकरण करते हैं—

जहां पर पहलेके सिद्धकालका अर्धमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहां पर इसप्रकार त्रैराशिक लाना चाहिये । वह इसप्रकार है—आठ सिद्ध समयोंमें यदि चवालीस सयोगी जिन प्राप्त होते हैं, तो एक लाख त्रैसठ हजार तीनसौ चौसठ सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर पूर्वोक्त ८९,८५०२ सयोगी जीवोंकी ही राशि आ जाती है । अथवा, जिसमें पहलेके सिद्धकालका चौथा भागमात्र सिद्धकाल प्राप्त होता है वहां पर इसप्रकार त्रैराशिक करना चाहिये । आठ सिद्ध समयोंमें यदि अठासी सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो एकपासी हजार छहसौ ब्यासीमात्र सिद्ध समयोंमें कितने सयोगी जिन प्राप्त होंगे इस-

मेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया सजोगिजिणा लब्धंति चि तेरासिए कए सो चेव रासी लब्धदि' । एवमण्णत्थ वि जाणिऊण वत्तव्वं । जहाक्खादसंजदाणं पमाणवण्णणा गाहा—

अट्टेव सयसहस्सा णवणउदिसहस्स चेव णवयसया ।

सत्ताणउदी य तथा जहक्खादा होंति ओषेण ॥ ४९ ॥

एवं परूविदसव्वं संजदरासिमेगट्टे कदे अट्टकोडीओ णवणउदिलक्खा णवण-  
उदिसहस्सा णवसद सत्ताणउदिमेत्तो होदि ८९९९९९७ । एदम्हादो रासीदो उव-  
सामग-खवगपमाणमवणेयव्वं । तेसि पमाणपरूवणगाहा—

णव चेव सयसहस्सा लब्बीससया य होंति अडसीया ।

परिमाणं णायव्वं उवसम-खवगाणमेदं तु ॥ ५० ॥

एदमवणिय तीहि भागो हायव्वो । लद्धमप्पमत्तरासी हवदि । दुगुणिदे पमत्तरासी

प्रकार त्रैराशिक करने पर बही पूर्वोक्त ८९८५०२ संयोगी जीवराशि ही आ जाती है । इसी-  
प्रकार अन्यत्र भी जानकर कथन करना चाहिये ।

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्ध प्रमाण
८ समय	२२ केवली	समय ३२६७२८	८९८५०२
८ समय	४४ केवली	१६३३६४	८९८५०२
८ समय	८८ केवली	८१६८२	८९८५०२

अब यथाख्यात संयतोंकी संख्याका वर्णन करनेवाली गाथा देते हैं—

सामान्यसे यथाख्यातसंयमी जीव आठ लाख निन्यानवे हजार नौसौ सत्तानवे होते हैं ॥ ४९ ॥

इसप्रकार प्ररूपण की गई संपूर्ण संयत जीवोंकी राशिको एकत्रित करने पर कुल संख्या आठ करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौसौ सत्तानवे ८९९९९९७ होती है । इस राशिमेंसे उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणको निकाल देना चाहिये । उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा इसप्रकार है—

उपशमक और क्षपक जीवोंका परिमाण नौ लाख दो हजार छह सौ अठासी जानना चाहिये ॥ ५० ॥

संयतोंकी संपूर्ण राशिमेंसे इस उपशमक और क्षपक जीवराशिको निकालकर तीनका भाग देना चाहिये । जो तीसरा भाग लब्ध आया उतना अग्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण

हवदि । जुत्तं च—

सत्तादी अट्ठा ण्णवमज्झा य संजदा सव्वे ।

तिगमजिदा विगुणिदापमत्तरासी पमत्ता दुं ॥ ५१ ॥

एसा दक्खिणपडिवत्ती । एसा गाहा ण भदिया ति के वि आहिया जुत्तिबलेण भणंति । का जुत्ती ? बुच्चदे—सव्वतित्थयरहितो पउमप्पहमडारओ बहुसीसपरिवारो तीससहस्साहिय-तिणिगलक्खमेत्तमुणिगणपरिवुदत्तादो । तेसु सत्तर-सएण गुणिदेसु एकसट्ठिलक्खाहियपंचकोडिमत्ता संजदा होति । एदे च पुब्बिल्लगाहाए वुत्तसंजदाणं पमाणं ण पावेति । तदो गाहा ण भदिएत्ति । एत्थ परिहारो बुच्चदे—सव्वोसपिणी-हितो अहमा हुंडोसपिणी । तत्थतणातित्थयरसिस्सपरिवारं जुगमाहप्पेण ओहट्ठिय डहर-भावमापणं धेत्तूण ण गाहासुत्तं दूसिदुं सक्किज्जदि, सेसोसपिणीतित्थयरसु बहुसीस-परिवारुवलंभादो । ण च भरहरावयवासेसु मणुसाण बहुत्तमत्थि, जेणेत्थतणेक्कतित्थयर-

है । इसे दुना करने पर प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण होता है । कहा भी है—

जिस संख्याके आदिमें सात हैं, अन्तमें आठ हैं और मध्यमें छहवार नौ हैं, उतने अर्थात् आठ करोड निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ सत्तास्रवे सर्व संयत हैं । ( इनमेंसे उपशमक और क्षपकाका प्रमाण १०२९८८ निकालकर जो राशि शेष रहे उसमें ) तीनका भाग देने पर २९६९९१०३ अप्रमत्तसंयत होते हैं । और अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणको दोसे गुणा कर देने पर ५९३९८२०६ प्रमत्तसंयत होते हैं ॥ ५१ ॥

यह दक्षिण मान्यता है । यह पूर्वोक्त गाथा ठीक नहीं है ऐसा कितने ही आचार्य युक्तिके बलसे कहते हैं ।

शंका—वह कौनसी युक्ति है ? आगे शंकाकार उसी युक्तिका समर्थन करता है कि संपूर्ण तीर्थंकरोंकी अपेक्षा पद्मप्रभ भट्टारकका शिष्य-परिवार अधिक था, क्योंकि, वे तीन लाख तीस हजार मुनिगणोंसे वेष्टित थे । इस संख्याको एकसौ सत्तरसे गुणा करने पर पांच करोड़ एकसठ लाख संयत होते हैं । परंतु यह संख्या पूर्व गाथामें कहे गये संयतोंके प्रमाणको नहीं प्राप्त होती है, इसलिये पूर्व गाथा ठीक नहीं है ?

समाधान—आगे पूर्व शंकाका परिहार करते हैं कि संपूर्ण अवसर्पिणियोंकी अपेक्षा यह हुंडावसर्पिणी है, इसलिये युगके माहात्म्यसे घटकर न्दस्वभावको प्राप्त हुए हुंडावसर्पिणी कालसंबन्धी तीर्थंकरोंके शिष्य-परिवारको ग्रहण करके गाथासूत्रको दूषित करना शक्य नहीं है, क्योंकि, शेष अवसर्पिणियोंके तीर्थंकरोंके बड़ा शिष्य-परिवार पाया जाता है । दूसरे भरत और ऐरावत क्षेत्रमें मनुष्योंकी अधिक संख्या नहीं पाई जाती है जिससे उन दोनों क्षेत्रसंबन्धी एक तीर्थंकरके संघके प्रमाणसे विदेहसंबन्धी एक तीर्थंकरका संघ समान

गणपमाणेण विदेहेकतित्थयरगणो सरिसो होज्ज। किं तु एत्थतणमणुवेहिंतो विदह-  
मणुस्सा संखेज्जगुणा। तं जहा— सच्चत्थोवा अंतरदीवमणुस्सा। उत्तरकुसुदेवकुसुमणुवा  
संखेज्जगुणा। हरिरम्मयवासेसु मणुआ संखेज्जगुणा। हेमवदहेरणवदमणुआ संखेज्जगुणा।  
भरहेरावदमणुआ संखेज्जगुणा। विदेहे मणुआ संखेज्जगुणा<sup>१</sup> ति। बहुवमणुस्सेसु जेण  
संजदा बहुआ चेव तेणेत्थतणसंजदाणं पमाणं पहाणं कादूण जं दूसणं मणिदं तण्ण दूसणं,  
बुद्धिविहणाहरियमुहविणिग्गयत्तादो।

एत्तो उत्तरपडिवत्तिं वत्तइस्सामो। एत्थ पमत्तसंजदपमाणं चत्तारि कोडीओ  
छासट्टिलक्खा छासट्टिसहस्सा छसद चउसट्टिमेत्तं भवदि। पुत्तं च—

चउसट्टी छच सया छासट्टिसहस्सं चेव परिमाणं।

छासट्टिसयसहस्सा कोडिचउत्तकं पमत्ताणं ॥ ५२ ॥

४६६६६६६४। वे कोडीओ सत्तावीसलक्खा णवणउदिसहस्सा चत्तारिसदं  
अट्टाणउदिमेत्ता अपमत्तसंजदा हवन्ति। उत्तं च—

माना जाय। किन्तु भरत और पेरवत क्षेत्रके मनुष्योंसे विदेह क्षेत्रके मनुष्य संख्यातगुणे  
हैं। उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

अन्तरद्वीपोंके मनुष्य सबसे थोड़े हैं। उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्य उनसे संख्यात-  
गुणे हैं। हरि और रम्यक क्षेत्रोंके मनुष्य उत्तरकुरु और देवकुरुके मनुष्योंसे संख्यातगुणे  
हैं। हेमवत और हेरण्यवत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं।  
भरत और पेरवत क्षेत्रोंके मनुष्य हरि और रम्यकके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। विदेह क्षेत्रके  
मनुष्य भरत और पेरवतके मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं। बहुत मनुष्योंमें क्योंकि संयत  
बहुत ही होंगे इसलिये इस क्षेत्रसंबन्धी संयतोंके प्रमाणको प्रधान करके जो दूषण कहा  
गया है वह दूषण नहीं हो सकता, क्योंकि, वह बुद्धिरहित आचार्योंके मुखसे निकला हुआ  
है। अब आगे उत्तर मान्यताको बतलाते हैं—

उत्तर मान्यताके अनुसार संयतोंमें प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण केवल चार करोड़ छयासठ  
लाख छयासठ हजार छहसौ चौसठ है। कहा भी है—

प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण चार करोड़ छयासठ लाख छयासठ हजार छहसौ चौसठ  
४६६६६६६४ है ॥ ५२ ॥

दो करोड़ सत्ताईस लाख निन्यानवे हजार चारसौ अट्ठानवे अप्रमत्तसंयत जीव हैं।  
कहा भी है—

१ अंतरदीवमणुस्सा थोवा ते कुसु दससु संखेज्जा। ततो संखेज्जगुणा हवन्ति हरिरम्मगेसु वसेसु। नरिसे  
संखेज्जगुणा हेरणवदम्मि हेमवदवरिसे। भरहेरावदवसे संखेज्जगुणा विदेहे य ॥ ति. प. पत्र १६०.

२ प्रतियु 'आवचारिसहस्स' इति पाठः।

वे कोडि सत्तवीसा होंति सहस्सा तहेव णवणउदी ।

चउसद अट्ठाणउदी परिसंखा होदि विदियगुणा ॥ ५३ ॥

अंकदो वि २२७९९४९८ । उवसामग-खवगपमाणपरूवणा पुच्चं व भाणिदव्वा ।  
णवर 'सजोगिकेवली अद्धं पडुच्च संखेज्जा' एदस्स परूवणा अण्णहा हवदि । तं जहा—

अट्ठसमयाहियलमासाणं यदि अट्ठसमयमेत्तो सिद्धकालो लब्भदि तो चत्तारि-  
सहस्स-सत्तसद-एगूणतीसमेत्त-अट्ठसमयाहिय-लम्मासाणं केत्तियो सिद्धकालो लब्भदि चि  
तेरासिए कदे सत्तवीससहस्स-अट्ठसद-वत्तीसमेत्तसिद्धसमया लब्भंति । एदस्मि कालस्मि  
संचिदसजोगिजिणपमाणमाणिज्जदे । तं जहा— अट्ठसु समएसु चोदस चोदस सजोगिजिणा  
होंति चि कट्ठु यदि अट्ठहं समयाणं बारहोत्तरसयमेत्ता सजोगिजिणा लब्भंति तो  
सत्तवीससहस्स-अट्ठसद-वत्तीसमेत्तसिद्धसमयाणं केत्तिया लब्भंति चि तेरासिए कए  
पंचलक्ख-एगूणतीससहस्स-लस्सय-अट्ठेदालीसमेत्ता सजोगिजिणा हवंति । वुत्तं च—

पंचेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव उणतीसा ।

छच्च सया अडयाला जोगिजिणाणं हवदि संखा ॥ ५४ ॥

द्वितीय गुणस्थान अर्थात् अप्रमत्तसंयत जीवोंकी संख्या दो करोड़ सत्ताईस लाख  
निग्यानवे हजार चारसौ अट्ठानवे है ॥ ५३ ॥

अर्कोसे भी २२७९९४९८ अप्रमत्तसंयत जीव हैं । उपशामक और क्षपक जीवोंके  
प्रमाणका प्ररूपण पहलेके समान कहना चाहिये । इतनी विशेषता है कि सयोगिकेवली  
जीव कालकी अपेक्षा संचित हुए संख्यात होते हैं । यहाँ पर केवलियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा  
दूसरे प्रकारसे होती है । वह इसप्रकार है— आठ समय अधिक छह महीनेका यदि आठ समयमात्र  
सिद्धकाल प्राप्त होता है तो चार हजार सातसौ उनतीसमात्र आठ समय अधिक छह  
महीनोंके कितने सिद्धकाल प्राप्त होंगे; इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सेंतीस हजार आठसौ  
बत्तीसमात्र सिद्ध समय प्राप्त होते हैं । अब इस कालमें संचित हुए सयोगी जिनोंका प्रमाण  
लाते हैं । वह इसप्रकार है— आठ समयोंमेंसे प्रत्येक समयमें चौदह चौदह सयोगी जिन  
होते हैं, ऐसा समझकर यदि आठ समयोंके एकसौ बारह सयोगी जिन प्राप्त होते हैं तो  
सेंतीस हजार आठसौ बत्तीस सिद्ध समयोंके कितने सयोगी जीव प्राप्त होंगे, इसप्रकार  
त्रैराशिक करने पर पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस सयोगी जीव प्राप्त होते  
हैं । कहा भी है—

सयोगी जिन जीवोंकी संख्या पांच लाख उनतीस हजार छहसौ अड़तालीस है ॥ ५४ ॥

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि	लब्ध
६ माह ८ समय	८ समय	४७२९	३७८३२ समय
८ समय	११२ केवली	३७८३२ समय	५२९६४८ केवलि

५२९६४८ । एदेण अत्थपदेण अणेगेहि पयारेहि सजोगिरासी आणेयव्वो ।  
उवसामग-खवगपमाणपरूषणगाहा—

पंचेव सयसहस्सा होंति सहस्सा तहेव तेत्तीसा ।

अइसया चोत्तीसा उवसम-खवगाण केवल्लिणो ॥ ५५ ॥

एदे सव्वसंजदे एयट्ठे कदे सत्तर-सदकम्मभूमिगदसव्वरिसओ भवंति । तेसिं  
पमाणं छकोडीओ णवणउइलक्खा णवणउदिसहस्सा णवसय-छण्णउदिमेत्तं हवदि ।  
एदस्स वेतिभागा पमत्तसंजदा हवंति । तिभागो अप्पमत्तादिसेससंजदा हवंति । वुत्तं च—  
छक्कादी छक्कंता छण्णवमग्गा य संजदा सव्वे ।

तिगभजिदा विगगुणिदापमत्तरासी पमत्ता दु ॥ ५६ ॥

६९९९९९९६ । द्व्यपमाणेण अवगदचोइसगुणट्ठाणाणं अप्पणो इच्छिद-इच्छिद-  
रासिस्स एत्तियो एत्तियो भागो होदि त्ति तेसिं भागभागपरूषणा कीरदे । तं जहा- भागादो  
भागो भागभागो । तं भागभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिं सिद्धतेरसगुणट्ठाणमजिदसव्व-

इस पद्धतिके अनुसार दूसरे प्रकारसे भी सयोगी जीवोंकी राशि ले आना चाहिये ।  
अब उपशमक और क्षपक जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करनेवाली गाथा कहते हैं—

चारों उपशमक, पांचों क्षपक और केवली ये तीनों राशियां मिलकर कुल पांच लाख  
तेतीस हजार आठसौ चौतीस हैं ॥ ५५ ॥

विशेषार्थ—ऊपर सयोगिकेवलियोंकी संख्या ५२९६४८ बतला आये हैं । उसमें चारों  
उपशमकोंकी संख्या ११९६ और पांचों क्षपकोंकी संख्या २९९० और मिला देने पर तीनोंकी  
संख्या ५३३८३४ हो जाती है ।

इन सब संयतोंको एकत्रित करने पर एकसौ सत्तर कर्मभूमिगत संपूर्ण ऋषि होते हैं ।  
उन सबका प्रमाण छह करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौसौ छयानवे है । इसका दो  
बेट तीन भाग अर्थात् ४६६६६६४ जीव प्रमत्तसंयत हैं, और तीसरा भाग अर्थात् २३३३३३२  
जीव अप्रमत्तसंयत आदि शेष संयत हैं । कहा भी है—

जिस संख्याके आदिमें छह, अन्तमें छह और मध्यमें छहवार नौ हैं, उतने अर्थात्  
छह करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ छयानवे ६९९९९९९६ जीव संपूर्ण  
संयत हैं । इसमें तीनका भाग देने पर लब्ध आवे उतने अर्थात् २३३३३३३२ जीव अप्रमत्त  
आदि संपूर्ण संयत हैं और इसे दोसे गुणा करने पर जितनी राशि उत्पन्न हो उतने अर्थात्  
४६६६६६६४ जीव प्रमत्तसंयत हैं ॥ ५६ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा जाने हुए चौदहों गुणस्थानोंका प्रमाण अपनी इच्छित राशिके  
प्रमाणका इतनावां इतनावां भाग होता है, इसका ज्ञान करानेके लिये उनकी भागाभागा  
प्ररूपणा करते हैं । वह इसप्रकार है— भागसे होनेवाला भाग भागाभाग है । आगे उसी  
भागाभागको बतलाते हैं—





णवसंजदद्वं संजदासंजदद्व्यपमाणेण कीरमाणे एगरूवस्त असंखेज्जदिभागं भवदि । एवमुप्पाइयसव्वसलागाओ एयट्ठं काऊण संजदासंजद-अवहारकालमोवट्ठिय लद्धेण पलिदोवमे भागे हिंदे तेरसगुणट्ठाणदव्वमागच्छदि । एवं जेसिं जेसिं गुणट्ठाणाणं दव्वान् मेगभागहारेणागमणमिच्छदि तेसिं तेसिं सलागाहि संजदासंजद-अवहारकालमोवट्ठिय पलिदोवमे भागे हिंदे ते ते रासीओ आगच्छति ।

अथवा सासनसम्माइट्ठि-अवहारकालेण संजदासंजद-अवहारकालमोवट्ठिय लद्धेण सासनसम्माइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिण्ण तं चेवोवट्ठिदे

होता है ।

उदाहरण— $12 \div 4 = 3 \times 412 = 1236$  असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य.

छठेसे लेकर चौदहवें गुणस्थानतक नौ संयतोंका द्रव्य संयतासंयतके द्रव्यके प्रमाण-रूपसे करने पर एकरूप जो संयतासंयतका द्रव्य कह आये हैं उसका असंख्यातवां भाग होता है ।

उदाहरण— $2 \div 412 = \frac{1}{206} \times 412 = 2$  नवसंयत द्रव्य.

इसप्रकार पहले उत्पन्न की हुई संपूर्ण शलाकाओंको एकजित करके और उनसे संयतासंयतसंबन्धी अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे पत्योपमके भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती जीवरशिका प्रमाण आ जाता है ।

उदाहरण— $1 + 4 + 4 + 32 + \frac{1}{256} = 44\frac{1}{256}$

$$12 \div 44\frac{1}{256} = \frac{32768}{11521}; \quad 44\frac{1}{256} \div \frac{32768}{11521} = 23042.$$

इसीप्रकार जिन जिन गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण एक भागहारसे लानेकी इच्छा हो उन उन गुणस्थानोंकी शलाकाओंसे संयतासंयतसंबन्धी अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका पत्योपममें भाग देने पर उन उन गुणस्थानोंकी राशियां आ जाती हैं ।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दृष्टि शलाकाराशि ३२;

$$12 \div 32 = 4; \quad 44\frac{1}{256} \div 4 = 11\frac{1}{64} \text{ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य.}$$

अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे एक अधिक उसी गुणाकारसे अपवर्तित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत इन दोनोंका अवहारकाल आ जाता है ।

उदाहरण— $12 \div 32 = 4; \quad 32 \times 4 = 128; \quad 4 + 1 = 5; \quad 128 \div 5 = 25\frac{3}{5}$  सासादन और संयतासंयतका अवहारकाल । इसका भाग पत्योपम  $44\frac{1}{256}$  में देने पर सासादन और संयतासंयत इन दोनों गुणस्थानोंका द्रव्य  $2048 + 412 = 2460$  आ जाता है । इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिये ।

सासण-संजदासंजदाणं अवहारकालो होदि । पुणो तं दो-गुणट्ठाण-अवहारकालं सम्मा-  
मिच्छाइट्ठि-अवहारकालेणोवट्ठिय लद्धेण सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो  
तेणेव गुणगारेण रूवाहिण पुव्वं गुणिद-अवहारकालमोवट्ठिदे तिण्हं गुणट्ठाणमवहार-  
कालो हवदि । पुणो तमवहारकालं असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालेणोवट्ठिय लद्धेण  
असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालं गुणेऊण पुणो तेणेव गुणगारासिणा रूवाहिण पुव्विह्ल-  
गुणिद-अवहारकालमोवट्ठिदे चउण्हं गुणट्ठाणमवहारकालो हवदि । पुणो णव-संजद-  
दव्वेण चउण्हं गुणट्ठाणं दव्वमोवट्ठिय लद्धेण चउण्हं गुणट्ठाणमवहारकालं गुणेऊण  
पुणो तेणेव गुणगारेण रूवाहिण तं चेव गुणिद-अवहारकालमोवट्ठिदे तेरसण्हं गुणट्ठाणा-  
मवहारकालो होदि ।

अनन्तर उन दोनों गुणस्थानोंके अवहारकालको सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवोंके अवहार-  
कालसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे सम्यग्मिथ्यादष्टिके अवहारकालसे गुणित करके  
अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित  
करने पर सासादनसम्यग्दष्टि, सम्यग्मिथ्यादष्टि और संयतासंयत इन तीनों गुणस्थानोंका  
अवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१२८}{५} \div १६ = \frac{१२८}{८०}; \quad \frac{१२८}{८०} \times १६ = \frac{१२८}{५}; \quad \frac{१२८}{८०} + १ = \frac{२०८}{८०};$$

$$\frac{१२८}{५} \div \frac{२०८}{८०} = ०.११ \text{ सा. सम्यग्मि. और संयतासंयतका अवहारकाल ।}$$

अनन्तर इन तीनों गुणस्थानोंसंबन्धी अवहारकालको असंयतसम्यग्दष्टिके अवहार-  
कालसे भाजित करके जो लब्ध आवे उससे असंयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालको गुणित करके  
पुनः एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे पहले गुणित किये हुए अवहारकालके अपवर्तित करने  
पर द्वितीयादि चार गुणस्थानोंका भागहार आ जाता है ।

$$\text{उदाहरण—} ०.११ \div ४ = \frac{१२८}{५२}; \quad \frac{१२८}{५२} \times ४ = \frac{१२८}{१३}; \quad \frac{१२८}{५२} + १ = \frac{१८०}{५२};$$

$$\frac{१२८}{१३} \div \frac{१८०}{५२} = \frac{३८}{२५५} \text{ सासादनादि ४ गुणस्थानोंका अवहारकाल ।}$$

अनन्तर प्रमत्तसंयत आदि नौ संयतोंके द्रव्यसे सासादन आदि चार गुणस्थानोंके  
द्रव्यको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उक्त चार गुणस्थानोंके अवहारकालको गुणित  
करके अनन्तर एक अधिक उसी पूर्वोक्त गुणकारसे उसी गुणित अवहारकालको अपवर्तित  
करने पर सासादनादि तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—नवसंयतराशि २; सासादनादि चार गुणस्थानराशि २३०४०; सासादनादि

$$\text{चार गुणस्थानोंका अवहारकाल } \frac{१२८}{४५}; \quad \frac{२३०४०}{२} = \frac{११५२०}{१};$$

$$\frac{१२८}{४५} \times \frac{११५२०}{१} = \frac{२९४९१२}{९}; \quad \frac{११५२०}{१} + \frac{१}{१} = \frac{११५२१}{१};$$

अथवा संजदासंजद-अवहारकालं विरलेऊण पुणो पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि संजदासंजदद्वयपमाणं पावेदि । तमेगरूवस्सुवरि द्विद-संजदासंजदद्वयं णवसंजदरासिणोवट्टिय लद्धं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवधरिदसंजदासंजदद्वयं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि णवसंजदरासिपमाणं पावेदि । पुणो तं धेत्तूण उवरिम-विरलणाए विदियादि-रूवाणमुवरि द्विदसंजदासंजदद्वयाणमुवरि पक्खिविद्वं जाव हेट्ठिम-विरलणोवरि द्विद-णवसंजदरासी सरिसच्छेदं काऊण पविट्ठो चि । जदि हेट्ठिम-विरलणादो उवरिमविरलणा रूवाहिया हवदि तो एगरूवपरिहाणी हवदि । अध वेरूवाहियदुगुणमेत्ता हवदि तो दोण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि । अध तिरूवाहियतिउणमेत्ता हवदि तो तिण्हं रूवाणं परिहाणी हवदि । एत्थ पुण उवरिमविरलणादो हेट्ठिमविरलणा असंखेज्जगुणा चि एगरूव-असंखेज्जदिभागस्स परिहाणी हवदि । तं जहा, हेट्ठिमविरलण-रूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्धमदि तो उवरिमविरलणाग्नि केवडिय-

$$\frac{२९४९१२}{९} \div \frac{११५२१}{१} = \frac{२९४९१२}{१०३६८९} = \frac{२७१७८}{३४५६३} \text{ सासादन आदि १३ गुण-स्थान राशिका अवहारकाल.}$$

अथवा, संयतासंयतके अवहारकालको विरलित करके अनन्तर उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके एकके ऊपर स्थित उस संयतासंयतके द्रव्यको प्रमत्तादि नौ संयतराशिसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उसके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनमें पहले एकके ऊपर रखे हुए संयतासंयतके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति प्रमत्तादि नौ संयत राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त उस नौ संयत द्रव्यको ग्रहण करके उपरिम विरलनके द्वितीयादि रूपोंके ऊपर स्थित संयतासंयतके द्रव्योंमें तबतक मिलाते जाना चाहिये जबतक अधस्तन विरलनके ऊपर स्थित नौ संयतराशि समान छेद करके प्रविष्ट हो सके । यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक होवे तो एककी हानि होती है । यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन दो अधिक दुगुने होवें तो दोकी हानि होती है । यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन तीन अधिक तिगुना होवे तो तीनकी हानि होती है । यहाँ प्रकृतमें तो उपरिम विरलनसे अधस्तन विरलन असंख्यातगुणा है, इसलिये एकके असंख्यातवें भागकी हानि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो

रूपपरिहाणिं लभामो चि तेरासिए कदे एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । तप्पुवरिमविरलणाए अवणिदे णवसंजदसहियसंजदासंजदाणमवहारकालो होदि ।

पुणो सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सासणसम्माइट्ठिद्ववपमाणं पावदि । पुणो उवरिमविरलणपढमरूवधरिद-सासणसम्माइट्ठिद्ववं णवसंजदसहिदसंजदासंजदद्वेणोवट्ठिय तत्थ लद्धमावलिआए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण उवरिमविरलणाए पढमरूवस्सुवरि ट्ठिदसासणसम्माइट्ठिद्ववं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणट्ठाणरासीओ पावेंति । एत्थ एगरूवधरिददस-गुणट्ठाणरासिपमाणं धेत्तूण उवरिमविरलणमिह सुण्णं मोत्तूण तदणंतररूवस्सुवरि ट्ठिद-सासणद्ववमिह पक्खित्ते एकारसगुणट्ठाणरासीओ सव्वे मिलिदा हवंति । एवं हेट्ठिम-

उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर एकका असंख्यातवां भाग आता है । उसे उपरिम विरलनमेंसे घटा देने पर नौ संयतसहित संयतासंयत राशिका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण—नौ संयतराशि २; संयतासंयत अवहारकाल १२८; संयतासंयत द्रव्य ५१२;

५१२ ५१२ ५१२ ५१२ १२८ वार; अधस्तन विरलन २५६ में १

१ १ १ १ १ १२८ वार; अधिक अर्थात् २५७ स्थान जाकर यदि १ की हानि प्राप्त होती है

५१२ ÷ २ = २५६; तो उपरिम विरलन मात्र १२८

२ २ २ २ २ २ २५६ वार; स्थान जाकर कितनी हानि होगी,

१ १ १ १ १ १ २५६ वार; स्थान जाकर कितनी हानि होगी,

इसप्रकार त्रैराशिकसे ३३६ की हानि प्राप्त हो जाती है । इसे उपरिम विरलन राशि १२८ मेंसे घटा देने पर १२७३३६ आते हैं । यही संयत सहित संयतासंयतके द्रव्यका अवहारकाल है ।

अनन्तर सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एक पर पल्लोपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनके पहले अंकपर रखे हुए सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको प्रमत्तादि नौ संयतोंके द्रव्यसहित संयता-संयतके द्रव्यसे भाजित करके वहां जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत आदि दश गुणस्थानवर्ती जीवोंकी संख्या प्राप्त होती है । यहां अधस्तन विरलनके एक अंकपर रखे हुए दश गुणस्थानकी राशिके प्रमाणको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें शून्य स्थानको ( जिस पहले अंकके ऊपर रखी हुई संख्यामें दश गुणस्थानोंके द्रव्यका भाग दिया है उसे ) छोड़कर उसके अनन्तर अंकपर स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यमें मिला देने पर सब मिल कर सासादन और संयतासंयत आदि अयोगिकेवलीपर्यंत ग्यारह गुणस्थानवर्ती

विरलणमेत्तदसगुणद्वान्दव्वं उवरिमविरलणाए हिदसासणदव्वम्हि गिरंतरं दिण्णे हेड्डिम-  
विरलणमेत्तदसगुणद्वानरासी समप्पदि । एत्थ एगरूवस्स परिहाणी लब्भदि । पुणो  
उवरिमविरलणाए तदणंतररूवोवरि हिदसासणदव्वं हेड्डिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे  
रूवं पडि दसगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि । एदं पि वेत्तूण पुवं व समकरणे कदे पुणो वि  
उवरि एगरूवपरिहाणी लब्भदि । एवं पुणो पुणो कादव्वं जा उवरिमविरलणा सव्वा  
एकारसगुणद्वानअवहारकालमेत्तं पत्ता त्ति । एवं समकरणं करिय परिहीणरूवाणं पमाण-  
माणिज्जे । तं जहा, हेड्डिमविरलणरूवाहियमेत्तद्वानमुवरिमविरलणाए गंतूण जदि  
एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तसव्वरूवेसु केवडियरूवपरिहाणिं लभामो  
त्ति तेरासियं करिय रूवाहियहेड्डिमविरलणाए उवरिमविरलणमोवड्ठिदे आवलियाए  
असंखेज्जदिभागमेत्ताणि अवणिज्जमाणरूवाणि लब्भंति । ताणि उवरिमविरलणाए सरिस-  
च्छेदं काऊण अवणिदे एकारसगुणद्वानाणमवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण  
पलिदोवमे भागे हिदे एकारसगुणद्वानदव्वमागच्छदि ।

जीवराशि होती है। इसप्रकार अधस्तन विरलनमात्र दश गुणस्थानोंके द्रव्यको उपरिम  
विरलनमें स्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यमें मिला देने पर अधस्तन विरलनमात्र दश  
गुणस्थानोंकी जीवराशि समाप्त हो जाती है और यहां एककी हानि प्राप्त होती है। अनन्तर  
उपरिम विरलनमें, जहां तक दश गुणस्थानराशि मिलाई हो उसके, अनन्तरके विरलित  
अंकपरस्थित सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यको अधस्तन विरलनके ऊपर समान खण्ड करके  
देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति संयतासंयत आदि दश गुणस्थानोंकी राशिका प्रमाण  
प्राप्त होता है। इस राशिको भी लेकर पहलेके समान समीकरण करने पर, अर्थात् उपरिम  
विरलनके शून्यस्थानको छोड़कर आगेके स्थानोंमें अधस्तन विरलनमात्र दश गुणस्थानराशिके  
मिला देने पर, फिर भी ऊपर एककी हानि प्राप्त होती है। इसप्रकार जबतक संपूर्ण उपरिम  
विरलन सासादन और संयतासंयतादि दश इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिके  
अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक यही विधि पुनः पुनः करते जाना चाहिये।  
इसप्रकार समीकरण करके हानिको प्राप्त हुए अंकोंका प्रमाण लाते हैं। वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान उपरिम विरलनमें जाकर यदि एक अंककी  
हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र संपूर्ण स्थानोंमें कितने अंकोंकी हानि प्राप्त होगी,  
इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलनके भाजित करने  
पर आवलीके असंख्यतावें भागमात्र अपनेयमान अंक प्राप्त होते हैं। उनको उपरिम  
विरलनमेंसे समच्छेद विधान करके घटा देने पर सासादन और संयतासंयत आदि दश  
इसप्रकार ग्यारह गुणस्थानवर्ती राशिका अवहारकाल प्राप्त होता है। इस अवहारकालसे  
पदयोपमके भाजित करने पर उपर्युक्त ग्यारह गुणस्थानवर्ती जीवराशि आती है।

उदाहरण—सासादन-अव. ३२; द्रव्य २०४८; संयतासंयतादि १० गुणस्थान द्रव्य ५१४;

पुणो सम्मामिच्छाद्द्वि-अवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे  
रूवं पडि सम्मामिच्छाद्द्विट्ठारासिपमाणं पावेदि । पुणो एकारसमुण्हाणरासिणा सम्मा-  
मिच्छाद्द्विट्ठारासिदव्वमोवड्ठिय तत्थ लद्धसंखेज्जरूवाणि विरलेऊण उवरिमविरलणपढम-  
रूवधरिदसम्मामिच्छाद्द्विदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एकारसमुण्हाणदव्वपमाणं  
पावेदि । तं धेत्तूण उवरिमविरलणाए उवरि हिदसम्मामिच्छाद्द्विदव्वस्सुवरि परिवाडीए  
दिण्णे रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्धाणं गंतूण हेट्ठिमविरलणमेत्तरासी सम्पपदि, उवरिम-  
विरलणाए एगरूवपरिहाणी च हवदि । तत्थेगरूवं पडि वारसमुण्हाणमेत्तरासी  
च हवदि । पुणो उवरिमतदंतरएगरूवधरिदसम्मामिच्छाद्द्विदव्वं हेट्ठिमविरलणाए

२०४८ २०४८ २०४८ अधस्तन विरलन ३३५६ में १ और  
१ १ १ ३२ वारः

$$2088 \div 418 = 5 \frac{243}{418}$$

५१४	५१४	५१४	५०६	१ अकका हानि होती है तो उपरम
१	१	१	२५३	विरलनमात्र ३२ स्थान जाकर कितनी
			<u>२५३</u>	हानि होगी, इसप्रकार तैराशिक करने

$54436 \div 29 \frac{983}{1201} = 2562.$ 
पर  $6\frac{1}{2}$  लब्ध आते हैं। इसे उप-  
 रिम विरलन 32 में से घटा देने पर

२५<sup>७४३</sup>/<sub>४२४</sub> रहते हैं। यही उक्त ११ गुणस्थानवर्ती राशिके लानेके लिये अवधारकाल है।

अनन्तर सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पच्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर पूर्वोक्त ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिके सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यको भाजित करके वहाँ जो संख्यात अंक लब्ध आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके पहले अंकके ऊपर रक्खे हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानवर्ती द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। उसको लेकर उपरिम विरलनके ऊपर स्थित सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर परिपाटीसे देने पर उपरिम विरलनके एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर अधस्तन विरलनमात्र राशि समाप्त हो जाती है और उपरिम विरलनमें एक अंककी हानि होती है। तथा उपरिम विरलनमें जहाँ तक अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि दी गई है वहाँ तक प्रत्येक एकके प्रति बारह (सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानवर्ती जीवराशि होती है। अनन्तर उपरिम विरलनमें, जिस स्थान तक ग्यारह गुणस्थानोंकी जीवराशि मिलाई हो उसके, अनन्तरके विरलित एक अंकपर स्थित सम्यग्मिथ्यादृष्टिके

समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एक्कारसगुणट्टाणमेत्तरासी पावदि । तमेकार-  
सगुणट्टाणरासिं सुण्णट्टाणं मोत्तूण उवरि गिरंतंरं दिण्णे रूवं पडि वारसगुण-  
ट्टाणरासी हवदि । हेट्ठिमविरलणाए रूवाहियं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च  
हवदि । एवं पुणो पुणो ताव कायव्वं जाव खयपरिसुद्धा उवरिमविरलणा  
वारसगुणट्टाणद्ववस्स अवहारकालं पत्तात्ति । एत्थ परिहीणरूवाणं पमाणमाणज्जदे ।  
तं जहा, रूवाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तट्टाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सव्विस्से  
उवरिमविरलणाए केवडियरूवपरिहाणि लभामोत्ति तेरासियं काऊण रूवाहियहेट्ठिम-  
विरलणाए सम्मामिच्छाइडि-अवहारकालमोवाट्टिय लद्धं तम्हि चेव अण्णिदे वारसगुण-  
ट्टाणाणं द्ववस्स अवहारकालो हवदि । पुणो तेण अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे  
वारसगुणट्टाणद्ववमाणच्छदि ।

द्रव्यको अधरतन विरलनमें समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति  
ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है । उस  
ग्यारह गुणस्थानसंबन्धी राशिको शून्यस्थानको (जिस अंकके ऊपरकी राशिको अधस्तन  
विरलनमें समान खण्ड करके दी है उस स्थानको) छोड़कर उपरिम विरलनके प्रत्येक  
एकके ऊपर निरन्तर देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बारह (सासादन, मिश्र  
और संयतासंयतादि दश) गुणस्थानसंबन्धी राशि प्राप्त होती है । तथा उपरिम विरलनमें  
एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि होती है । इसप्रकार जबतक  
उपरिम विरलनका प्रमाण हानिरूप स्थानोंसे रहित होकर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी  
द्रव्यके अवहारकालको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । अब  
यहां पर हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एककी हानि  
होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने अंकोंकी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके  
एक अधिक अधस्तन विरलनसे सम्यग्मिथ्यादष्टिके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे  
उसे उसी सम्यग्मिथ्यादष्टिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी  
द्रव्यका अवहारकाल होता है । पुनः इस अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करने पर उपर्युक्त  
बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादष्टि अवहारकाल १६; द्रव्य ४०९६;

४०९६ ४०९६ ४०९६ १६ बार;

$$\frac{4096}{16} = 256$$

$$\frac{256}{16} = 16$$

$$\frac{16}{16} = 1$$

अधस्तन विरलन १६५३३ में  
एक और मिलाकर जो हो  
उतने स्थान जाकर यदि उप-  
रिम विरलनमें १ की हानि होती  
है तो उपरिम विरलनमात्र १६  
स्थान जाकर कितनी हानि  
होगी, इसप्रकार त्रैराशिक  
करने पर ३३३६ लब्ध आवे



पुणो असंजदसम्माइडिअवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि असंजदसम्माइडिरासिपमाणं पावेदि। पुणो वारसगुणद्वानरासिणा असंजदसम्माइडिदव्वमोवट्टिय लद्धमावलिआए असंखेज्जदिभागं हेड्डा विरलेऊण असंजदसम्माइडिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वारसगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि। पुणो उवरिमसुणद्वानं मोत्तूण सेसुवरिमरूवधरिदं असंजदसम्माइडिदव्वस्सुवरि हेड्डिमविरलणाए रूवं पडि डिदवारसगुणद्वानरासिं पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि, हेड्डिमविरलणरूवाहियमेत्तद्वानं गंतूण एगरूवपरिहाणी च लब्धमिदि। पुणो वि तदणंतरएगरूवधरिदं असंजदसम्माइडिदव्वं हेड्डिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे वारसगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि। पुणो तं वेत्तूण उवरिमविरलणाए उवरि डिद-असंजदसम्माइडिदव्वस्सुवरि सुणद्वानं वोलिय पक्खित्ते रूवं पडि तेरसगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि

हैं। इसे उपरिम विरलन १६ मैसे घटा देने पर ९३६३९ आते हैं। यही उक्त १२ गुणस्थानोंका अवहारकाल है। इस अवहारकालका भाग पट्योपम ६५५३६ में देने पर उक्त बारह गुणस्थानोंके द्रव्यका प्रमाण ६६५८ आता है।

अनन्तर असंयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति पट्योपमको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दष्टि राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर पूर्वोक्त बारह (सासादन, मिश्र और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिके प्रमाणको भाजित करके जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर उपरिम विरलनके प्रथम शून्यस्थानको छोड़कर शेष उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्यप्रमाणमें अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह गुणस्थानसंबन्धी द्रव्यको मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तेरह गुणस्थानसंबन्धी (सासादनादि १३) जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। और एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है। पुनः जिस स्थानतक अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त राशि मिलाई हो उसके आगेके एक विरलनके प्रति प्राप्त असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिके प्रमाणको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त बारह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त बारह गुणस्थानसंबन्धी राशिको ग्रहण करके उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको, अर्थात् जिस स्थानकी असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशि अधस्तन विरलनमें दी है उसे, छोड़कर शेष विरलनोंपर स्थित

एगस्वपरिहाणी च लब्धमि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जा उवरिमविरलणा खयपरिसुद्धा तेरसगुणद्वण-अवहारकालमेत्तं पत्ता त्ति । पुणो एत्थ अवणयणस्वपमाणमाणिज्जदे । तं जहा, स्वाहियहेट्ठिमविरलणमेत्तद्वानं गंतूय जदि एगस्वपरिहाणी लब्धमि तो सव्विस्से उवरिमविरलणाए केवडियाणि परिहाणिरूवाणि लभामो त्ति तेरासियं करिय स्वाहिय-हेट्ठिमविरलणाए असंजदसम्माइडि-अवहारकाले ओवडिदे आवलियाए असंखेज्जदिभाग-मेत्ताणि परिहाणिरूवाणि लब्धमि । कुदो गव्वदे ? सव्वगुणद्वणेषु पविट्ठसव्वगुणगार-संवग्गादो असंजदसम्माइडि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो त्ति एदम्हादो परमगुरुवदेसादो ।

असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिमें मिला देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति उपर्युक्त तेरह गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और एककी हानि होती है । इसप्रकार जबतक उपरिम विरलनका प्रमाण, क्षयको प्राप्त हुए स्थानोंसे रहित होकर, उपर्युक्त तेरह गुणस्थानसंबन्धी अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । अब यहाँ हानिको प्राप्त हुए स्थानोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है—

एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एक स्थानकी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितने हानिरूप अंक प्राप्त होंगे, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनके प्रमाणसे असंयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालको भाजित करने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं ।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दष्टि अवहारकाल ४; द्रव्य १६३८४;

१६३८४	१६३८४	१६३८४	१६३८४	अधस्तन विरलन २१५३१ में
१	१	१	१	१ और मिलाकर जो हो उतने
$१६३८४ \div ६६५८ = २५३४$				स्थान जाकर यदि उपरिम
$३३२९$				विरलनमें १ स्थानकी हानि
६६५८	६६५८	३०६८		होती है तो उपरिम विरलन-
१	१	१५३४		मात्र ४ स्थान जाकर कितनी
		३३२९		

हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर १६३८४ हानिरूप स्थानोंका आते हैं । इसे उपरिम विरलन ४ मेंसे घटा देने पर २१५३१ आते हैं । यही उक्त तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल है । इस अवहारकालका भाग पल्लोपम ६५५३६ में देने पर सासादनादि १३ गुणस्थानराशिका प्रमाण २३०४२ होता है ।

शुंका—आवलीके असंख्यातवें भाग हानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ।

समाधान—‘संपूर्ण गुणस्थानोंमें प्राप्त संपूर्ण गुणकारोंके संवर्गसे असंयत-सम्यग्दष्टिका अवहारकाल असंख्यातगुणा है’ इस परम गुरुके उपदेशसे जाना जाता है कि

पुणो सम्मामिच्छाइट्टिपमुहरासिणा असंजदसम्माइट्टिरासिमोवाट्टिय रुवाहियकद-  
रासिस्स असंजदसम्माइट्टिपमुहरासिं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि वारसगुण-  
द्वानरासिपमाणं पावदि। तत्थ बहुभागा असंजदसम्माइट्टिरासिपमाणं होदि। पुणो एकारस-  
गुणद्वानरासिणा सम्मामिच्छाइट्टिरासिमोवाट्टिय लद्धं रुवाहियं विरलेऊण वारसगुणद्वान-  
रासिं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि एकारसगुणद्वानरासिपमाणं पावदि। तत्थ  
बहुभागा सम्मामिच्छाइट्टिरासिपमाणं होदि। पुणो दसगुणद्वारासिणा सासणसम्माइट्टि-

यहां आवलीके असंख्यातवें भाग द्वानिरूप स्थान प्राप्त होते हैं।

पुनः सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानवर्ती राशिसे असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक मिला देने पर जो राशि हो उसके प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर विरलनके प्रत्येक एकके प्रति सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। उसमें बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

$$\text{उदाहरण—} १६३८४ \div ६६५८ = \frac{१५३४}{३३२९} + १ = \frac{१५३४}{३३२९}$$

$$\begin{array}{ccc} ६६५८ & ६६५८ & ६६५८ \\ १ & १ & १ \end{array} \quad \begin{array}{l} ३०६८ \\ १५३४ \\ ३३२९ \end{array} \quad \begin{array}{l} \text{इसमें बहुभाग } १६३८४ \text{ प्रमाण} \\ \text{असंयतसम्यग्दृष्टि राशि है।} \end{array}$$

अनन्तर ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर उसका विरलन करके विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति बारह (सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खंड करके देयरूपसे देने पर विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है। वहां बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है।

$$\text{उदाहरण—} ४०९६ \div २५६२ = \frac{१५३४}{२५६२} + १ = \frac{१५३४}{२५६२}$$

$$\begin{array}{ccc} २५६२ & २५६२ & १५३४ \\ १ & १ & १ \end{array} \quad \begin{array}{l} १५३४ \\ २५६२ \end{array} \quad \begin{array}{l} \text{इसमें बहुभाग } ४०९६ \text{ प्रमाण सम्य-} \\ \text{ग्मिथ्यादृष्टि राशि है।} \end{array}$$

अनन्तर दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे सासादनसम्यग्दृष्टि द्वयको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमें एक और मिलाकर कुल राशिका विरलन

द्वयमोवद्वियं रूवाहियं करिय विरलेऊण एकारसगुणद्वानरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि दसगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुभागा सासणसम्माइड्डिरासिपमाणं होदि । पुणो णवगुणद्वानरासिणा संजदासंजदरासिमोवद्वियं रूवाहियं करिय विरलेऊण दसगुणद्वानरासिं समखंडं करिय दिण्णे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तविरलणरूवं पडि णवगुणद्वानरासिपमाणं पावेदि । तत्थ बहुभागा संजदासंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुभागा अप्पमत्तसंजदरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा सजोगिरासिपमाणं होदि । सेसं संखेज्जभागे कदे तत्थ बहुभागा पंच-खवग-पमाणं होदि । सेसेगभागो चउण्हमुवसाममाणं होदि । एवं भागभागो समत्तो ।

करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति ग्यारह (सासादन और संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर बहुभाग सासादनसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} २०४८ \div ५१४ = ३\frac{२५३}{२५७} + १ = ४\frac{२५३}{२५७}$$

५१४	५१४	५१४	५१४	५०६	यहां पर बहुभाग २०४८ प्रमाण सासादनसम्यग्दष्टि राशि है ।
१	१	१	१	२५३	
				२५७	

अनन्तर नौ (प्रमत्तसंयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिसे संयतासंयत राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे रूपाधिक करके और उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति दश (संयतासंयतादि १०) गुणस्थानसंबन्धी राशिको समान खण्ड करके देयरूपसे देने पर पत्योपमके असंख्यातवं भागमात्र विरलनके प्रति नौ (संयतादि ९) गुणस्थानसंबन्धी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर बहुभाग संयतासंयत जीवराशिका प्रमाण है ।

$$\text{उदाहरण—} ५१२ \div २ = २५६ + १ = २५७$$

२	२	२	२	२	यहां पर बहुभाग ५१२ संयता-संयत राशि है ।
१	१	१	१	१	

शेष राशिके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग प्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेष राशिके संख्यात खण्ड करने पर उनमेंसे बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग सयोगिकेवली जीवराशिका प्रमाण है । शेषके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग पांचों क्षपकोंका प्रमाण है । शेष एक भाग चारों उपशमकोंका प्रमाण है । इसप्रकार भागभाग समाप्त हुआ ।

संपहि अवगदसच्चपमाणस्स सिस्सस्स एत्थेव रासीणमप्पबहुत्तं भणिस्सामो—

अद्वमे अणियोगद्दारे एदं सुच्चगारो भणिस्सदि ति पुणरुत्तदोसो भवदि ति णासंक्कणिज्जं, तस्स पडिबुद्धसिस्सविसयचादो । अप्पडिबुद्धसिस्से अस्सिऊण सदवार-परवणं पि ण दोसकारणं भवदि । तत्थ अप्पावहुत्तं दुविहं, सत्थाणप्पावहुत्तं सच्चपर-त्थाणप्पावहुत्तं चेदि । एत्थ मिच्छाड्डिस्स सत्थाणप्पावहुत्तं णत्थि । किं कारणं ? जेण मिच्छाड्डिस्सिदो धुवरासी अब्बहिओ जादो । तत्थ ताव सासणसम्माड्डिस्स सत्थाण-प्पावहुत्तं वत्तइस्सामो । तं जहा, सच्चत्थोवो अवहारकालो तस्सेव दच्चमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदच्चस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग-अवहारकालो । अधवा गुणगारो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्ग-मूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो । एत्थ पडिभागणिमित्तं दुगुणादिकरणं

अब जिसने संपूर्ण जीवराशिके प्रमाणको जान लिया है ऐसे शिष्यके लिये यहीं पर जीवराशिका अल्पबहुत्व बतलाते हैं—

शंका—स्वकार आठवें अनुयोगद्वारमें इसका कथन करेंगे ही, इसलिये यहां पर उसका कथन करनेसे पुनरुक्त दोष होता है ?

समाधान—ऐसी आशंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, वह पुनरुक्तिदोषविचार प्रतिबुद्ध शिष्यका ही विषय है । किन्तु जो शिष्य अप्रतिबुद्ध है उसकी अपेक्षा सौवार प्ररूपण करना भी दोषका कारण नहीं है ।

अल्पबहुत्व दो प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व ।

ओषप्ररूपणमें मिथ्यादृष्टि जीवराशिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है ।

शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे धुवराशि बड़ी है । अब पहले सासादन-सम्यग्दृष्टि राशिका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सबसे स्तोका है । उसीका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने (सासादनसंबन्धी) द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना (सासादनसंबन्धी) अवहारकाल प्रतिभाग है । अर्थात् अवहारकालका सासादन-सम्यग्दृष्टिसंबन्धी द्रव्यमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसको अवहारकालसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है । अथवा, गुणकार पल्योपमका असंख्यातवां भाग है जो पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है ।

उदाहरण—सासादन द्रव्य २०४८; अवहारकाल ३२; २०४८ ÷ ३२ = ६४ गुणकार;  
प्रतिभाग ३२; पल्योपम ६५५३६; अवहारकालका वर्ग ३२ × ३२ = १०२४  
प्रतिभाग; ६५५३६ ÷ १०२४ = ६४ गुणकार

काद्वयं । तं जहा, वत्तइस्सामो—सगअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा-  
इट्ठिरासी आगच्छदि । विगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्माइट्ठि-  
रासिस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदअवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे सासणसम्मा-  
इट्ठिरासिस्स तिभागो आगच्छदि । एवं ताव दुगुणादिकरणं काद्वयं जाव सासणसम्माइट्ठि-  
अवहारकालस्स अद्वच्छेदणयमेत्तवारा गदा त्ति । तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो ।  
सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालस्स अद्वच्छेदणं विरलेऊण विगं करिय अण्णोण्णभासे  
कदे सासणसम्माइट्ठिरासिस्स अवहारकालो होदि । तेण अवहारकालेण सासणसम्माइट्ठि-  
रासिस्स अवहारकाले गुणिदे गुणगारपडिभागो होदि । सासणसम्माइट्ठिद्ववादो पलि-  
दोवममसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सग-अवहारकालो । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजद-  
सम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं च अप्पाबहुगं वत्तव्वं । पमत्तसंजदादीणं सत्थानप्पाबहुगं  
णत्थि, तेसिमवहारकालाभावादो ।

यहां पर प्रतिभागका प्रमाण निकालनेके लिये द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये ।  
वह जिसप्रकार है आगे उसीको बतलाते हैं—अपने अवहारकालसे पल्योपमको भाजित  
करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (  $६५५३६ \div ३२ = २०४८$  सा. )  
द्विगुणित अवहारकालसे पल्योपमको भाजित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका  
दूसरा भाग आता है (  $६५५३६ \div ६४ = १०२४$  ) । त्रिगुणित अवहारकालसे पल्योपमके भाजित  
करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिका तीसरा भाग आता है (  $६५५३६ \div ९६ = ६८२\frac{२}{३}$  ) ।  
इसप्रकार जबतक सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो  
उतनेवार द्विगुणादिकरण विधि हो जावे तबतक यह विधि करते जाना चाहिये । वहां अब  
अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं—सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकालके अर्ध-  
च्छेदोंको विरलित करके और उसको दो रूप करके परस्पर गुणा करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि  
जीवराशिके अवहारकालका प्रमाण होता है । इस अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टि जीव-  
राशिके अवहारकालको गुणित करने पर गुणकारप्रतिभागका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२; अर्धच्छेद ५;

$$\begin{array}{ccccccccc} २ & २ & २ & २ & २ & २ & २ & २ & २ \\ १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{array} = ३२; ३२ \times ३२ = १०२४ \text{ गुणकार प्रतिभाग.}$$

सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना  
अर्थात् सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल गुणकार है (  $२०४८ \times ३२ = ६५५३६$  पल्योपम ) ।

इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके अल्पबहुत्वका  
कथन करना चाहिये । प्रमत्तसंयत आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि,  
उनका अवहारकाल नहीं है ।

सन्वपरस्थानप्रावहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा- सन्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा ।  
 पंच खवगा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अट्ठइज्जरूवाणि । सजोगिकेवलद्वं  
 संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । को  
 गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज-  
 समया वा । सन्वत्थ हेट्ठिमरासिणोवरिमरासिम्हि भागे हिदे जो भागलद्धो सो गुणगारो ।  
 पमत्तसंजदद्ववादो असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?  
 सग-अवहारकालस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पमत्तसंजदद्वं । सम्मामिच्छाइट्ठि-  
 अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग-अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो ।  
 को पडिभागो ? असंजदसम्माइट्ठि-अवहारकालो । सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो संखेज्ज-

अब सर्वपरस्थान अल्पवहुत्वको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— चारों उपशामक  
 ( उपशम श्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती जीव ) सबसे स्तोक हैं । पांचों क्षपक ( क्षपक श्रेणीके  
 चारों गुणस्थानवर्ती और अयोगिकेवली जीव ) उपशमकोंसे संख्यातगुणे हैं । यहाँ गुणकार  
 क्या है ? ढाई अंक गुणकार है ।

उदाहरण—चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक १२१६; १२१६ × ३ = ३६४० पांचों क्षपक ।

सयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण पांचों क्षपकोंसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?  
 संख्यात समय गुणकार है । अप्रमत्तसंयत सयोगिकेवलियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुण-  
 कार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । प्रमत्तसंयत अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे  
 हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । यहाँ सर्वत्र नीचेकी राशिसे उपरिम राशिसे  
 भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे वह वहाँ गुणकार होता है ।

उदाहरण—सयोगिकेवली ८९८५०२; अप्रमत्त २९६९९१०३; प्रमत्त ५९३९८२०६;

$\frac{४८५३७}{८९८५०२}$  इससे सयोगी राशिको गुणित  
 $२९६९९१०३ \div ८९८५०२ = ३३$  करने पर अप्रमत्त राशि आती है ।

$५९३९८२०६ \div २९६९९१०३ = २$  इस गुणकारसे अप्रमत्त राशिको गुणित  
 करने पर प्रमत्तसंयत राशि आती है ।

प्रमत्तसंयतके द्रव्यसे असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुण-  
 कार क्या है ? अपने अवहारकालका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? प्रमत्त-  
 संयतका द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है ।

उदाहरण—प्रमत्तसंयत ५९३९८२०६ = २; असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ४;  
 $४ \div २ = २$  गुणकार;  $२ \times २ = ४$  अवहारकाल ।

असंयतसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल असंख्यातगुणा  
 है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ?  
 असंयतसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है ।

गुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । को पडिभागो ? सम्मामिच्छाइट्ठि-अवहार-  
कालो । संजदासंजद-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सग-अवहारस्स  
असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालो । तदो संजदासंजद-  
द्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ?  
सग-अवहारकालो । अहवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि पलिदोवमपट-  
मवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सग अवहारकालवग्गो । संजदासंजददव्वस्सुवरि सासण-  
सम्माइट्ठिद्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को  
पडिभागो ? संजदासंजददव्वमवहारकालो । अहवा सासणसम्माइट्ठि-अवहारकालेण

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६;  $१६ \div ४ = ४$  गुणकार;  $४ \times ४ = १६$   
सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संख्यातगुणा  
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय । प्रतिभाग क्या है ? सम्यग्मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल  
प्रतिभाग है ।

उदाहरण—सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ३२;  $३२ \div १६ = २$  गुणकार;  $१६ \times २ = ३२$   
सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल ।

सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतका अवहारकाल असंख्यातगुणा  
है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या  
है ? सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल प्रतिभाग है ।

उदाहरण—संयतासंयत अवहारकाल १२८;  $१२८ \div ३२ = ४$  गुणकार;  $३२ \times ४ = १२८$   
संयतासंयत अवहारकाल ।

संयतासंयतके अवहारकालसे संयतासंयत द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार  
क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना ( संयता-  
संयतका ) अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, पल्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो  
पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने ( संयतासंयतके )  
अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है ।

उदाहरण—संयतासंयत द्रव्य ५१२;  $५१२ \div १२८ = ४$  गुणकार;  $१२८ \times ४ = ५१२$   
संयतासंयत द्रव्य । अथवा,  $१२८ \times १२८ = १६३८४$ ;  $६५५३६ \div १६३८४$   
 $= ४$  गुणकार ।

संयतासंयतके प्रमाणके ऊपर सासादनसम्यग्दृष्टिका द्रव्यप्रमाण संयतासंयतके द्रव्यसे  
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने ( सासादनके ) द्रव्यका असंख्यातवां भाग  
गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? संयतासंयतके द्रव्यप्रमाणका अवहारकाल प्रतिभाग है ।  
अथवा, सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालसे संयतासंयतके अवहारकालको भाजित करने पर



संजदासंजद-अवहारकाले भागे हिदे गुणगारो रासी आगच्छदि । अहवा उवरिमरासि-  
अवहारकालेण हेडिमरासिं गुणेऊण पलिदोवमे भागे हिदे गुणगाररासी आगच्छदि । एत्थ  
विगुणादिकरणं कादव्वं । तं जहा— संजदासंजदरासिपमाणेण पलिदोवमे भागे हिदे  
संजदासंजद-अवहारकालो आगच्छदि । विउणिदसंजदासंजददव्वपमाणेण पलिदोवमे भागे  
हिदे संजदासंजद-अवहारकालस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदसंजदासंजदरासिणा  
पलिदोवमे भागे हिदे तस्सेव अवहारकालस्स तिभागो आगच्छदि । एदेण कमेण णेदव्वं  
जाव संजदासंजदरासिस्स गुणगारो सासणसम्माइड्ढि-अवहारकालमेत्तं पत्तो त्ति । तदा  
सासणसम्माइड्ढि-अवहारकालो संजदासंजद-अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि ।  
एदेण पुव्वुत्तगुणगारो साहेयव्वो । संजदासंजदगुणस्स उक्कस्सकालो संखेज्जाणि  
वस्साणि । सासणसम्माइड्ढिगुणस्स उक्कस्सकालो छ आवलियाओ । एदेसिमुवक्कमण-  
कालादी अप्पणो गुणकालपडिरूवा हवन्ति त्ति सासणसम्माइड्ढिदव्वादो संजदासंजद-  
दव्वेण संखेज्जगुणेण होदव्वमिदि ? ण एस दोसो, जदि वि सासणसम्माइड्ढि-उवक्क-

गुणकार राशिका प्रमाण आता है । अथवा, उपरिम राशिके अवहारकालसे अधस्तन राशिको  
गुणित करके जो लब्ध आवे उससे पव्योपमके भाजित करने पर गुणकार राशि आती है ।

उदाहरण—सासादन द्रव्य २०४८;  $२०४८ \div १२८ = १६$  गुणकार;  $१२८ \times १६ = २०४८$   
सासादन द्रव्यप्रमाण । अथवा,  $१२८ \div ३२ = ४$  गुणकार;  $५१२ \times ४ = २०४८$   
सा. । अथवा,  $५१२ \times ३२ = १६३८४$ ;  $६५५३६ \div १६३८४ = ४$  गुणकार;  
 $५१२ \times ४ = २०४८$  सा. ।

यहां पर द्विगुणादिकरण विधि करना चाहिये । वह इसप्रकार है— संयतासंयत  
राशिके प्रमाणसे पव्योपमके भाजित करने पर संयतासंयतका अवहारकाल आता है  
(  $६५५३६ \div ५१२ = १२८$  ) । द्विगुणित संयतासंयत द्रव्यके प्रमाणसे पव्योपमके भाजित करने  
पर संयतासंयतके अवहारकालका दूसरा भाग आता है (  $६५५३६ \div १०२४ = ६४$  ) । त्रिगुणित  
संयतासंयत राशिके पव्योपमके भाजित करने पर संयतासंयतके अवहारकालका तीसरा भाग  
आता है (  $६५५३६ \div १५३६ = ४२\frac{१}{२}$  ) । इसी क्रमसे तबतक ले जाना चाहिये जबतक  
संयतासंयत राशिका गुणकार सासादनसम्यग्दृष्टिके अवहारकालके प्रमाणको प्राप्त हो जावे ।  
उस समय सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संयतासंयतके अवहारकालका असंख्यतवां  
भाग आता है । इससे पूर्वोक्त गुणकार साथ लेना चाहिये (  $१२८ \div ३२ = ४$  गुणकार ) ।

शंका— संयतासंयत गुणस्थानका उत्कृष्टकाल संख्यत वर्ष है और सासादनसम्यग्दृष्टि  
गुणस्थानका उत्कृष्टकाल छह आवली है । अतः इनके उपक्रमणकाल आदिक अपने अपने  
गुणस्थानके कालके अनुसार होते हैं, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टिके द्रव्यप्रमाणसे संयता-  
संयत द्रव्यप्रमाण संख्यातगुणा होना चाहिये ?

मणकालादो संजदासंजद-उवक्कमणकालो संखेज्जगुणो हवदि तो वि संजदासंजद-दव्वादो सासणसम्माइडिदव्वमसंखेज्जगुणमेव । कुदो ? सम्मत्त-चारित्तविरोहिसासण-गुणपरिणामेहिंतो समयं पडि असंखेज्जगुणाए सेटीए कम्मणिज्जरणहेउभूदसंजमासंजम-परिणामो अइदुल्लहो त्ति काऊण समयं पडि संजमासंजमं पडिवज्जमाणरासीदो समयं पडि सासणगुणं पडिवज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो हवदि त्ति । सासणसम्माइटिरासीदो सम्मा-मिच्छाइडिदव्वं संखेज्जगुणं, सासणसम्मादिट्टि-छाआवलि-अव्वमंतर-उवक्कमणकालादो अंतोमुहुत्तमेत्त-सम्माभिच्छाइडि-उवक्कमणकालस्स संखेज्जगुणत्तादो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया वा । एत्थ वि रासिणा रासिं भागे हिंदे गुणगाररासी आगच्छदि । अव-हारकालेण अवहारकाले भागे हिंदे गुणगाररासी आगच्छदि । उवरिमरासि-अवहारकालेण हेट्टिमरासिं गुणेऊण पलिदोव्वमे भागे हिंदे गुणगाररासी आगच्छदि । सम्माभिच्छाइडि-दव्वस्सुवरि असंजदसम्माइडिदव्वमसंखेज्जगुणं । कुदो ? सम्माभिच्छाइडि-उवक्कमण-

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यद्यपि सासादनसम्यग्दृष्टिके उपक्रमण कालसे संयतासंयतका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है, तो भी संयतासंयत द्रव्यप्रमाणसे सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा ही है, क्योंकि, सम्यक्त्व और चारित्र्यके विरोधी सासादनगुणस्थानसंबन्धी परिणामोंसे प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणी श्रेणीरूपसे कर्मनिर्जराके कारणभूत संयमासंयमरूप परिणाम अत्यन्त दुर्लभ हैं, इसलिये प्रत्येक समयमें संयमासंयमको प्राप्त होनेवाली जीवराशिकी अपेक्षा प्रत्येक समयमें सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशि असंख्यातगुणी है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण संख्यातगुणा है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टिके छह आवलीके भीतर होनेवाले उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्या-दृष्टि गुणस्थानका अन्तर्मुहूर्तप्रमाण उपक्रमण काल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । यहां भी एक राशिका दूसरी राशिमें भाग देने पर गुणकार राशि आ जाती है । अथवा, अवहारकालसे अवहारकालके भाजित करने पर गुणकार राशि आ जाती है । अथवा, उपरिम राशिके अवहारकालसे अधस्तन राशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका पत्योपममें भाग देने पर गुणकार राशि आ जाती है ।

उदाहरण—सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य ४०९६;  $४०९६ \div ३२ = १२८$  गुणकार;  $३२ \times १२८ = ४०९६$  सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य । अथवा,  $४०९६ \div २०४८ = २$  गुणकार;  $२०४८ \times २ = ४०९६$  सम्यग् द्रव्य । अथवा,  $३२ \div १६ = २$  गुणकार;  $२०४८ \times २ = ४०९६$  । अथवा,  $२०४८ \times १६ = ३२७६८$ ;  $६५५३६ \div ३२७६८ = २$  गुणकार;  $२०४८ \times २ = ४०९६$  ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यके ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उपक्रमण कालसे असंख्यात आवलियोंके भीतर होनेवाला असंयत-

कालादो असंखेज्जवालियम्भंतर-असंजदसम्माइडि-उवक्कमणकालस्स असंखेज्जगुणत्तादो । अहवा दोण्हं पि गुणट्ठाणणमुवक्कमणकालमणवेक्खिय असंखेज्जगुणत्तस्स कारणमण्णहा बुच्चदे । तं जहा, समयं पडि सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासीदो वेदगसम्मत्तं पडि-वज्जमाणरासी असंखेज्जगुणो । जेण वेदगसम्माइड्डीणमसंखेज्जदिभागो मिच्छत्तं गच्छदि । तस्स वि असंखेज्जदिभागो सम्मामिच्छत्तं गच्छदि । 'सव्वकालमवड्ढिरासीणं वयाणु-सारिणा आएण होदव्वं' इदि णायादो असंजदसम्माइडिरासीदो णिप्पिडिदमेत्ता चेव अट्ठवीससंतकम्मिया मिच्छाइड्ढिणो वेदगसम्मत्तं पडिवज्जंति । तम्हा सम्मामिच्छा-इड्ढिदव्वादो असंजदसम्माइड्ढिदव्वमसंखेज्जगुणमिदि सिद्धं । एदं वक्खणमेत्थ पधाण-मिदि गेण्हिदव्वं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । एत्थ वि तीहि पयारेहि गुणगारो सोह्यव्वो । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सग-अवहार-

सम्यग्दृष्टिका उपक्रमण काल असंख्यातगुणा है । अथवा, पूर्वोक्त दोनों ही गुणस्थानोंके उपक्रमण कालकी अपेक्षा न करके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यातगुणे हैं, इसका कारण दूसरे प्रकारसे कहते हैं— वह इसप्रकार है— प्रत्येक समयमें सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होनेवाली राशिसे वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होनेवाली राशि असंख्यातगुणी है । तथा जिस कारणसे वेदकसम्यग्दृष्टियोंका असंख्यातवां भाग मिथ्यात्वको प्राप्त होता है और उसका भी असंख्यातवां भाग सम्यग्मिथ्यात्वको प्राप्त होता है । तथा 'सर्वदा अवस्थित राशियोंके व्ययके अनुसार ही आय होना चाहिये' इस न्यायके अनुसार मोहनीयके अट्ठावीस कर्मोंकी सत्ता रखनेवाले जितने जीव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवरशिमेंसे निकलकर मिथ्यात्वको प्राप्त होते हैं उतने ही मिथ्यादृष्टि वेदकसम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, इसलिये सम्यग्मिथ्यादृष्टिके द्रव्यसे असंयतसम्यग्दृष्टिका द्रव्य असंख्यातगुणा है, यह सिद्ध हो जाता है । यह व्याख्यान यहाँ पर प्रधान है ऐसा समझना चाहिये । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । यहाँ पर भी पूर्वोक्त तीनों प्रकारोंसे गुणकार साध लेना चाहिये ।

उदाहरण—असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य १६३८४; १६३८४ ÷ १६ = १०२४ गुणकार;  
 १६ × १०२४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य । अथवा, १६३८४ ÷ ४०९६  
 = ४ गुणकार; ४०९६ × ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य । अथवा,  
 १६ ÷ ४ = ४ गुणकार; ४०९६ × ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य ।  
 अथवा, ४०९६ × ४ = १६३८४; ६५५३६ ÷ १६३८४ = ४ गुणकार;  
 ४०९६ × ४ = १६३८४ असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य ।

असंयतसम्यग्दृष्टिके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना (असंयतसम्यग्दृष्टिका) अवहारकाल गुणकार है ।

उदाहरण—१६३८४ × ४ = ६५५३६ पल्योपम ।

कालो । तस्सुवरि सिद्धान्तगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिर्एहि अणंतगुणो सिद्धान्तम-  
संखेज्जदिभागो । मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिर्एहि वि अणंतगुणो  
सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियाणमणंताभागस्स अणंतिमभागो ।

एवमेवे चोदसगुणद्वानपरूवणा समत्ता ।

द्व्यद्वियमवलंबिय द्विदसिस्साणमणुगगहणद्वं सामण्णेण चोदसगुणद्वानपमाण-  
परूवणं करिय पज्जवट्टियणयमवलंबिय द्वियसिस्साणमणुगगहणद्वमाह—

**आदेसेण गदियाणुवादेण गिरयगईए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी  
द्व्यपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा' ॥ १५ ॥**

आदेसेण पज्जवणयावलंबणेण गुणद्वानाणं पमाणपरूवणं कीरदे । एत्थ इत्थंभाव-  
लक्ष्णो तदियाणिदेसो चि दइच्चो । गदियाणुवादेण । सा च भेदपरूवणा चोदसमगग-  
द्वानाणि अस्सिऊण द्विदा । तेहि अक्रमेण परूवणा ण संभवदीदि अपगदमगगद्वानाणि  
अवणिय पयदमगगद्वानजाणावणद्वं गदिगगहणं । आदेसमस्सिऊण जा गुणद्वानाणं पमाण-

पल्योपमके ऊपर सिद्ध उससे अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे  
अनन्तगुणा या सिद्धोंके असंख्यातवां भाग गुणकार है । सिद्धोंसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे  
हैं । गुणकार क्या है ? अभव्योंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा और भव्यसिद्धोंके  
अनन्त बहुभागोंका अनन्तवां भाग गुणकार है ।

इसप्रकार ओघमें चौदह गुणस्थान प्ररूपणा समाप्त हुई ।

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करके स्थित हुए शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये  
सामान्यसे चौदहों गुणस्थानोंके द्रव्यप्रमाणका प्ररूपण करके अब पर्यायार्थिक नयका  
अवलम्बन करके स्थित शिष्योंका अनुग्रह करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

**आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादे नरकगतिगत नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि  
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १५ ॥**

आदेशसे अर्थात् पर्यायार्थिक नयकी अपेक्षा गुणस्थानोंके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं ।  
यहां 'आदेसेण' इस पदमें तृतीया विभक्तिका निर्देश इत्थंभावलक्षण है, ऐसा समझना  
चाहिये । अब 'गदियाणुवादेण' इस पदका स्पष्टीकरण करते हैं । ऊपर जो भेदप्ररूपणाकी  
प्रतिज्ञा की है वह भेदप्ररूपणा चौदहों मार्गणाओंका आश्रय लेकर स्थित है । परंतु उनके द्वारा  
अक्रमसे अर्थात् युगपत् प्ररूपणा नहीं हो सकती है, इसलिये अविचक्षित मार्गणास्थानोंको  
छोड़कर प्रकृत मार्गणास्थानके ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें गति पदका ग्रहण किया है । आदेशका  
आश्रय करके जो गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा की जाती है वह आचार्य परंपराके द्वारा

१ असंखेज्जा णेरइया । अनु. सूत्र १४१, पृ. १७९.

२ इत्थंयूतलक्षणे (तृतीया) । पाणिनि, २, ३, २०.

परुवणा सा आहरियपरंपराए अणाइणिहणत्तणेण आगदा त्ति जाणावणहं अणुवादग्गहणं ।  
 सेसगदिणिवारणहं णिरयगदिग्गहणं कदं । सेसगदीओ मोत्तूण पुवं णिरयगदी चेव  
 किमहं बुच्चे ? ण, णेरइयदंसणेण समुप्पणसज्झसस्स भवियस्स दसलक्खणे धम्मं णिचल-  
 सरूवेण बुद्धी चिट्ठिदि त्ति काळण पुवं तप्परूवणादो । णेरइयसु त्ति किमहं ? ण, तत्थ-  
 तणखेत्तकालपडिसेहफलत्तादो । मिच्छाइड्डिग्गहणं किमहं ? सेसगुणट्ठाणणियत्तणहं ।  
 दव्वपमाणेणेत्ति किमहं ? खेत्तकालणिवारणहं । केवडिया इदि पुच्छा किंफला ? जिणाण-  
 मत्थकत्तारत्तपदुप्पायणग्गुहण अप्पणो कत्तारत्तपडिसेहफला । एवं गोदमसामिणा पुच्छिदे  
 महावीरभयवत्तेण केवलणणैणावगदतिकालगोयरासेसपयत्थेण असंखेजा इदि तेसिं पमाणं  
 परुविदं । एवमुत्ते संखेजाणंताणं पडिणियत्ती । तं पुण असंखेजमणेयवियर्पं । तं जहा-

अनादिनिधनरूपसे आई हुई है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें अनुवाद पदका ग्रहण किया है । शेष गतियोंका निराकरण करनेके लिये सूत्रमें नरकगति पदका ग्रहण किया है ।

शंका— शेष गतियोंके कथनको छोड़कर पहले नरकगतिका ही वर्णन क्यों किया जा रहा है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नारकियोंके स्वरूपका ज्ञान हो जानेसे जिसे भय उत्पन्न हो गया है ऐसे भव्य जीवको दशलक्षण धर्ममें निश्चलरूपसे बुद्धि स्थिर हो जाती है, ऐसा समझकर पहले नरकगतिका वर्णन किया ।

शंका— सूत्रमें ' णेरइयसु ' यह पद किसलिये दिया गया है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नरकगतिसंबन्धी क्षेत्र और कालका प्रतिषेध करना उक्त पदका फल है ।

शंका— सूत्रमें ' मिच्छाइड्डी ' इस पदका ग्रहण किसलिये किया है ?

समाधान— शेष गुणस्थानोंके निवारणके लिये मिथ्यादृष्टि पदका ग्रहण किया है ।

शंका— सूत्रमें ' द्रव्यप्रमाणसे ' ऐसा पद क्यों दिया है ?

समाधान— क्षेत्र और कालका प्रतिषेध करनेके लिये ' द्रव्यप्रमाणसे ' पदका ग्रहण किया है ।

शंका— कितने हैं ' इस पृच्छाका क्या फल है ?

समाधान— जिनेन्द्रदेव ही अर्थकर्ता हैं, इस बातके प्रतिपादन द्वारा अपने ( भूतबलिके ) कर्तापनका निषेध करना उक्त पृच्छाका फल है । नरकगतिके मिथ्यादृष्टि नारकी कितने हैं, इसप्रकार गौतमस्वामीके द्वारा पुछने पर जिन्होंने केवलज्ञानके द्वारा त्रिकालके विषयभूत समस्त पदार्थोंको जान लिया है, ऐसे भगवान् महावीरने ' असंख्यात हैं ' इसप्रकार नारकियोंके प्रमाणका प्ररूपण किया ।

' नरकमें मिथ्यादृष्टि नारकी असंख्यात हैं ' इसप्रकार कथन करने पर संख्यात और अनन्तकी निवृत्ति हो जाती है । वह असंख्यात अनेकप्रकारका है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—

णामं ठवणा दवियं सस्सद गणणापदेसियमसंखं ।

एयं उभयादेसो विथारो सव्व-भावा य ॥ ५७ ॥

तत्थ णामासंखेज्जयं णाम जीवाजीवमिस्ससरूवेण द्विदअट्ठमंगासंखेजाणं कारण-  
गिरिवेक्खा सण्णा । जं तं ठवणासंखेज्जयं तं कट्टकम्मादिसु सम्भावासम्भावट्ठवणाए ठविदं  
असंखेज्जमिदि । जं तं दव्वासंखेज्जयं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमो गंथो  
सिद्धतो सुदणाणं पवयणमिदि एयट्ठो ।

पूर्वापरविरुद्धादेर्व्यपेतो दोषसंहतेः ।

द्योतकः सर्वभावानामाप्तव्याहृतिरागमः ॥ ५८ ॥

आगमादणो णोआगमो । तत्थ असंखेज्जपाहुडजाणओ अणुवजुत्तो आगमदो  
दव्वासंखेज्जयं । किं कारणं ? खवोवसमविसिट्ठजीवदव्वस्स कथंचि खवोवसमादो अव्व-  
दिरित्तस्स आगमववदेसाविरोहादो । जं तं णोआगमदो दव्वासंखेज्जयं तं ति विहं, जाणु-  
गसरीरदव्वासंखेज्जयं भवियदव्वासंखेज्जयं जाणुगसरीरभवियवदिरित्तदव्वासंखेज्जयं चेदि ।  
तत्थ जं तं जाणुगसरीरदव्वासंखेज्जयं तं असंखेज्जपाहुडजाणुगस्स सरीरं भवियवट्ठमाण-  
समुज्जादत्तणेण तिभेदमावण्णं । कधमणागमस्स सरीरस्स असंखेज्जववएसो ? ण एस दोसो,

नाम, स्थापना, द्रव्य, शाश्वत, गणना, अप्रदेशिक, एक, उभय, विस्तार, सर्व  
और भाव इसप्रकार असंख्यात ग्यारह प्रकारका है ॥ ५७ ॥

उनमेंसे जीव, अजीव और मिश्ररूपसे स्थित असंख्यात पदार्थोंके भेदोंकी कारणके  
बिना असंख्यात ऐसी संज्ञा रखना नाम असंख्यात है । काष्ठकर्मादिकमें साकार और निराकार-  
रूपसे यह असंख्यात है, इसप्रकारकी स्थापना करना स्थापना असंख्यात है । द्रव्य असंख्यात  
आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । आगम, ग्रन्थ, सिद्धान्त, श्रुतज्ञान और प्रवचन,  
ये एकार्थवाची नाम हैं ।

पूर्वापर विरुद्धादि दोषोंके समूहसे रहित और संपूर्ण पदार्थोंके द्योतक आप्तवचनको  
आगम कहते हैं ॥ ५८ ॥

आगमसे अन्यको नोआगम कहते हैं । जो असंख्यातविषयक प्राश्रुतका ज्ञाता है परंतु  
वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित है, उसे आगमद्रव्यासंख्यात कहते हैं, क्योंकि, क्षयोपशम-  
युक्त जीवद्रव्य क्षयोपशमसे कथंचित् अभिन्न है, इसलिये उसे आगम यह संज्ञा देनेमें कोई  
विरोध नहीं आता है ।

नोआगमद्रव्यासंख्यात तीन प्रकारका है, ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात, भव्यद्रव्या-  
संख्यात, और ज्ञायकशरीर तथा भव्य इन दोनोंसे भिन्न तद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात । असंख्यात-  
विषयक शास्त्रको जाननेवालेके भावी, वर्तमान और अतीतरूपसे तीन भेदको प्राप्त हुए शरीरको  
ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात कहते हैं ।

श्रीका—आगमसे भिन्न शरीरको असंख्यात, यह संज्ञा कैसे दी जा सकती है ?

आधारे आधेयवयारदंसणादो । जहा असिसदं धावदि इदि । एत्थ ण घदकुंभदिद्वेतो जुज्जदे, कुंभस्स घदववएसदंसणादो । घदमिदं चिद्विदि त्ति वडुमानकाले घदववएसो कुंभस्स उवलम्भदे ? चे ण, अदीदाणागदकालेसु कुंभस्स घदववएसदंसणादो । जं तं भवियासंखेज्जयं तं भविस्सकाले असंखेज्जपाहुडजाणुगजीवो । ण च एस आगमदो दव्वासंखेज्जयम्हि णिवददि, संपहि एत्थ खवोवसमलक्खणदव्वाव-ओगाभावादो । जं तं तव्वदिरित्तदव्वासंखेज्जयं तं दुविहं, कम्मासंखेज्जयं णोकम्मा-संखेज्जयं चेदि । तत्थ अट्ठ कम्माणि द्विदि पडुच्च कम्मासंखेज्जयं । दीवससुद्धादि णोकम्मासंखेज्जयं । धम्मत्थियं अधम्मत्थियं दव्वपदेसगणणं पडुच्च एससरूवेण अवट्ठिमिदि कट्ठु सस्सदासंखेज्जयं । जं तं गणणासंखेज्जयं तं परियम्मे वुत्तं । जं तं अपदेसासंखेज्जयं तं जोगाविभागे पलिच्छेदे पडुच्च एगो जीवपदेसो । अधवा सुणोयं भंगो, असंखेज्ज-

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आधारमें आधेयका उपचार देखा जाता है । जैसे, सौ तरवारें (सौ तरवारवाले) दौड़ती हैं । तात्पर्य यह है कि सौ तरवारोंके आधारभूत पुरुषोंमें आधेयभूत तरवारोंका उपचार करके जैसे सौ तरवारें दौड़ती हैं यह कहा गया है उसीप्रकार प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये ।

प्रकृतमें घृतकुम्भका दृष्टान्त लागू नहीं होता है, क्योंकि, कुम्भकी घृत संज्ञा व्यथद्धारमें नहीं देखी जाती है ।

शंका—यह घृत रक्खा है, इसप्रकार वर्तमानकालमें कुम्भकी घृत संज्ञा पायी जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अतीत और अनागत कालमें कुम्भकी घृत यह संज्ञा देखी जाती है ।

जो जीव भविष्यकालमें असंख्यातविषयक प्राभृतका जाननेवाला होगा उसे भावि-द्रव्यासंख्यात कहते हैं । इसका आगमद्रव्यासंख्यातमें अन्तर्भाव नहीं हो सकता है, क्योंकि, वर्तमानमें इसमें ( भाविद्रव्यासंख्यातमें ) क्षयोपशमलक्षण द्रव्य उपयोगका अभाव है ।

तद्व्यतिरिक्त द्रव्यासंख्यात दो प्रकारका है, कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात और नोकर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात । उनमें आठों कर्म स्थितिकी अपेक्षा कर्मतद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात हैं । अर्थात् आठों कर्मोंकी जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति असंख्यात समय पड़ती है, इसलिये वे स्थितिकी अपेक्षा असंख्यातरूप हैं । द्वीप और समुद्रादि नोकर्मतद्व्यतिरिक्त-द्रव्यासंख्यात हैं ।

धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय द्रव्यरूप प्रदेशोंकी गणनाके प्रति सर्वदा एकरूपसे अवस्थित हैं, इसलिये वे दोनों द्रव्य शाश्वतासंख्यात हैं । गणनासंख्यातका स्वरूप परिकर्ममें कहा गया है । योगविभागमें जो अविभागप्रतिच्छेद बतलाये हैं, उनकी अपेक्षा जीवका एक प्रदेश अप्रदेशासंख्यात है । अथवा, असंख्यातमें उसका यह भेद शून्यरूप है, क्योंकि, असंख्यात पर्यायोंके आधारभूत अप्रदेशी एक द्रव्यका अभाव है । कुछ आत्माका एक प्रदेश

पञ्जायाणमाहारभूद-अप्पएसएगदव्वाभावादो । ण च एगो जीवपदेसो दव्वं, तस्स जीवदव्वावयवत्तादो । पञ्चवण ए पुण अवलंबिज्जमाणे जीवस्स एगपदेसो वि दव्वं तत्तो वदिरित्तसमुदायाभावादो । जं तं एयासंखेज्जयं तं लोयायासस्स एगदिसा । कुदो ? सेट्ठि-आगारेण लोयस्स एगदिसं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखातीदादो । जं तं उभया-संखेज्जयं तं लोयायासस्स उभयदिसाओ, ताओ पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखा-भावादो । जं तं सव्वासंखेज्जयं तं घणलोगो । कुदो ? घणागारेण लोगं पेक्खमाणे पदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो । जं तं वित्थारासंखेज्जयं तं लोगागासपदं, लोग-पदरागापदेसगणणं पडुच्च संखाभावादो । जं तं भावासंखेज्जयं तं दुविहं आगमदो णोआगमदो य । आगमदो भावासंखेज्जयं असंखेज्जपाहुडजाणगो उवज्जुत्तो । णोआगमदो भावासंखेज्जयं ओहिणाणपरिणदो जीवो । एदेसु असंखेज्जेसु गणणासंखेज्जेण पयंदं । जदि गणणासंखेज्जेण पयंदं तो सेसदसविह-असंखेज्जपरूवणं किमट्ठं कीरदे ? अपगदमवणिय पयदपरूवणट्ठं । वुत्तं च—

द्रव्य तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, एक प्रदेश जीवद्रव्यका अवयव है । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर जीवका एक प्रदेश भी द्रव्य है, क्योंकि, अवयवोंसे भिन्न समुदाय नहीं पाया जाता है ।

लोकाकाशकी एक दिशा अर्थात् एक दिशास्थित प्रदेशपंक्ति एकासंख्यात है, क्योंकि, आकाश प्रदेशोंकी श्रेणीरूपसे लोकाकाशकी एक दिशा देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा उसकी गणना नहीं हो सकती है । लोकाकाशकी उभय दिशाएं अर्थात् दो दिशाओंमें स्थित प्रदेशपंक्ति उभयासंख्यात है, क्योंकि, लोकाकाशके दो ओर देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं । घनलोक सर्वासंख्यात है, क्योंकि, घनरूपसे लोकके देखने पर प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं । प्रतररूप लोकाकाश विस्तारासंख्यात है, क्योंकि, प्रतररूप लोकाकाशके प्रदेशोंकी गणनाकी अपेक्षा वे संख्यातीत हैं ।

भावासंख्यात आगम और नोआगमके भेदसे दो प्रकारका है । असंख्यातविषयक प्राभृतको जाननेवाले और वर्तमानमें उसके उपयोगसे युक्त जीवको आगमभावासंख्यात कहते हैं । अवधिज्ञानसे परिणत जीवको नोआगमभावासंख्यात कहते हैं । इन ग्यारह प्रकारके असंख्यातोंमेंसे प्रकृतमें गणनासंख्यातसे प्रयोजन है ।

शंका — यदि प्रकृतमें गणनासंख्यातसे ही प्रयोजन है तो शेष दश प्रकारके असंख्यातोंका वर्णन क्यों किया गया ?

समाधान—अप्रकृत विषयका निवारण करके प्रकृत विषयका प्ररूपण करनेके लिये, यहां सभी असंख्यातोंका वर्णन किया है । कहा भी है—



अपगयणिवारणं पयदस्स पख्खणाणिमित्तं च ।

संसयविणासणं तच्चट्ठवारणं च ॥ ५९ ॥

वुत्तं ज पुव्वाइरिण्हि—

जल्य जहा जाणेज्जो अवरिमिदं तल्य णिक्खिखे णियमा ।

जल्य बहुवं ण जाणदि चउट्ठवो तल्य णिक्खेवो ॥ ६० ॥ इदि ।

अधवा णिक्खेवविसिट्ठमेदं भणिज्जमाणं वत्तारस्सुप्पत्थोत्थाणं कुज्जा इदि णिक्खेवो कीरेद । तथा चोक्तम्—

प्रमाणनयनिक्षेपैर्योऽर्थो नाभिसमीक्ष्यते ।

युक्तं चायुक्तवद्भाति तस्यायुक्तं च युक्तवत् ॥ ६१ ॥

जं तं गणणासंखेज्जयं तं तिविहं, परिचासंखेज्जयं जुत्तासंखेज्जयं असंखेज्जा-  
संखेज्जयं चेदि वियप्पदे एकेकं तिविहं । तत्थ इमं होदि ति णिच्छओ उप्पाइज्जेद ।

अप्रकृत विषयका निवारण करनेके लिये, प्रकृत विषयका प्ररूपण करनेके लिये, संशयका विनाश करनेके लिये और तत्त्वार्थका निश्चय करनेके लिये यहां सभी असंख्याताओं का कथन किया है ॥ ५९ ॥

पूर्वाचार्योंने भी कहा है—

जहां पदार्थोंके विषयमें यथावस्थित जाने वहां पर नियमसे अपरिमित निक्षेप करना चाहिये । पर जहां पर बहुत न जाने वहां पर चार निक्षेप अवश्य करना चाहिये ॥ ६० ॥

अथवा, निक्षेपके विना वर्ण्यमान विषय कदाचित् वक्ताको उत्पथमें ले जावे, इसलिये सभीका निक्षेप किया है । उसीप्रकार कहा भी है—

प्रमाण, नय और निक्षेपके द्वारा जिसका सूक्ष्म विचार नहीं किया जाता है वह युक्त होते हुए भी कभी अयुक्तसा प्रतीत होता है और अयुक्त होते हुए भी कभी युक्तसा प्रतीत होता है ॥ ६१ ॥

गणनासंख्यात तीन प्रकारका है, परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात और असंख्याता-संख्यात । ये तीनों भी प्रत्येक उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्यके भेदसे तीन तीन प्रकारके हैं । उक्त तीनों असंख्याताओंसे प्रकृतमें यह असंख्यात लिया है, आगे इसीका निश्चय कराते हैं—

१ जं तं असंखेज्जयं तं तिविहं, परिचासंखेज्जयं जुत्तासंखेज्जयमसंखेज्जयं चेदि । जं तं परिचा-  
संखेज्जयं तं तिविहं, जहणपरिचासंखेज्जयं अजहणमणुक्कस्सपरिचासंखेज्जयं उक्कस्सपरिचासंखेज्जयं चेदि । जं तं  
जुत्तासंखेज्जयं तं तिविहं, जहणजुत्तासंखेज्जयं अजहणमणुक्कस्सजुत्तासंखेज्जयं उक्कस्सजुत्तासंखेज्जयं चेदि । जं तं  
असंखेज्जासंखेज्जयं तं तिविहं जहणअसंखेज्जासंखेज्जयं अजहणमणुक्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जयं उक्कस्सअसंखेज्जा-  
संखेज्जयं चेदि । ति. प. पत्त. ५२. संखेज्जमसंखणंतामिदि तिविहं । संखं तिच्छुदु तिविहं पत्तिज्जुत्तं ति दुगवारं ॥  
वि. हा. १३. संखिज्जेगमसंखं पत्तिज्जुत्तानियपयज्जयं तिविहं । क. मं. ४, ७१.

परित्तासंखेज्जयं ण भवदि, जुत्तासंखेज्जयं पि ण भवदि, असंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं, असंखेज्जा इदि बहुवयणणिहेसादो । पाइए दोसु वि बहुवयणोवलंभादो वत्तिमुहेण सव्वेसु असंखेज्जबहुत्तविरोहाभावादो वा अणेयंतिओ हेदुरिदि चेत्तरिहि ' असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ' इत्ति पुरदो मण्णमाणसुत्तादो असंखेज्जा-संखेज्जस्स उवलद्वी हवदि । तं पि तिविहं जहण्णमुक्कस्सं अजहण्णमुक्कस्सासंखेज्जा-संखेज्जयं चेदि । तत्थ वि जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जयं ण भवदि उक्कस्समसंखेज्जा-संखेज्जयं पि ण भवदि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं । कुदो ? ' जम्हि जम्हि असंखेज्जासंखेज्जयं मग्गिज्जदि तम्हि तम्हि अजहण्णमणुक्कस्स-असंखेज्जा-संखेज्जस्सेव गहणं भवदि ' इदि परियम्मवयणादो ।

तं पि अजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयमसंखेज्जवियप्पमिदि इमं होदि त्ति ण जाणिज्जदे ? जहण्ण-असंखेज्जासंखेज्जादो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि

प्रकृतमें परीतासंख्यात विवक्षित नहीं है और युक्तासंख्यात भी नहीं लिया गया है, अतः यहाँ असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, सूत्रमें ' असंखेज्जा ' इस-प्रकार बहुवचनरूप निर्देश किया है ।

शंका—प्रकृतमें द्विवचनके स्थानमें भी बहुवचन पाया जाता है; अथवा, वृत्तिमुखसे सभी असंख्यातोंमें असंख्यातके बहुत्वके स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है, इसलिये प्रकृतमें असंख्यातासंख्यातके ग्रहण करनेके लिये जो ' असंखेज्जा ' यह बहुवचनरूप हेतु दिया है वह अनैकान्तिक है ।

समाधान—यदि ऐसा है तो ' असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ' इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रसे असंख्यातासंख्यातका ग्रहण हो जाता है ।

वह असंख्यातासंख्यात भी तीन प्रकारका है, जघन्य, उत्कृष्ट और अजघन्योत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात । इन तीनोंमें भी प्रकृतमें जघन्य असंख्यातासंख्यात नहीं है और उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात भी नहीं है, किंतु प्रकृतमें अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण है, क्योंकि, ' जहां जहां असंख्यातासंख्यात देखा जाता है वहां वहां अजघन्यानुत्कृष्ट अर्थात् मध्यम असंख्यातासंख्यातका ही ग्रहण होता है, ' ऐसा परिकर्मका वचन है ।

शंका—वह मध्यम असंख्यातासंख्यात भी असंख्यात विकल्परूप है, इसलिये यहां यह भेद लिया है, यह नहीं जाना जाता है ?

समाधान—जघन्य असंख्यातासंख्यातसे पर्योपमके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थान ऊपर जाकर और जघन्य परीतानन्तसे असंख्यात लोकमात्र वर्गस्थान नीचे आकर दोनोंके

वग्गट्टाणाणि उवरि अब्बुस्सरिदूण जहण्णपरित्ताणंतादो असंखेज्जलोगमेत्तवग्गट्टाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण दोण्हमंतरे जिणदिट्ठभावरासी घेत्तवो । अथवा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो असंखेज्जगुणो छदव्वपक्खित्तरासीदो असंखेज्जगुणहीणो । को तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी को वा छदव्वपक्खित्तरासि त्ति वुत्ते वुच्चदे- जहण्णमसंखेज्जासंखेज्जं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णमत्थं करिय पुणो उप्पण्णरासिं दुप्पडिरासिं करिय एगरासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिं दाऊण अण्णोण्णमत्थे कदे तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी हवदि । एसा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । कुदो ? जेणेदस्स वग्गसलागाणं वग्गसलागाओ जहण्णपरित्तासंखेज्जस्स उवरिमवग्गमपावेऊणुप्पण्णाओ पलिदोवमवग्गसलागाणं पुण वग्ग-

मध्यमें जिनेन्द्रदेवने जो राशि देखी है उसका यहां ग्रहण करना चाहिये । अथवा, तीनवार वर्गितसंवर्गित राशिसे असंख्यातगुणी और छह द्रव्यप्राक्षित राशिसे असंख्यातगुणी हीन राशि प्रकृतमें लेना चाहिये ।

शुंका — तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कौनसी है और छह द्रव्यप्राक्षित राशि कौनसी है ? इसप्रकार पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं—

समाधान — जघन्य असंख्यातासंख्यातका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जघन्य असंख्यातासंख्यातको देयरूपसे दे कर उनका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसकी फिरसे दो पंक्तियां करनी चाहिये । उनमेंसे एक राशिका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थित महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करनेसे जो महाराशि उत्पन्न हो, उसकी फिरसे दो पंक्तियां करनी चाहिये । उनमेंसे एकका विरलन करके और उस विरलित राशिके ऊपर दूसरी पंक्तिमें स्थित उत्पन्न हुई महाराशिको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि उत्पन्न होती है । ( पृष्ठ २३ पर तीनवार वर्गितसंवर्गितराशिका बीजगणितसे उदाहरण दिया है उसीप्रकार यहां समझना चाहिये । )

यह तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि पल्योपमके असंख्यातवर्ग भाग है, क्योंकि, इसकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाएं जघन्य परीतासंख्यातके उपरिम वर्गको नहीं प्राप्त होकर,

१ ति. प. पत्र ५२. त्रि. सा. ३८-४१. वित्तिचउपंचमगुणणे कमा सगासंख पदमचउसत्ता । गंता ते रूवजुआ मज्झा रूवूणं शुभ पच्छा ॥ इअ सुत्तुं अणे वग्गिअमिकासि चउत्थयमसंखं । होअ असंखासंखं लहु रूवजुअं तु तं मज्झं ॥ रूवूणमाइमं शुभ तिवागिउं तत्थिमे दसक्खेवे ॥ क. प्र. ४, ७९-८१.

सलागाओ पदरावलियादो उवरि गंतूणुप्पण्णाओ, तम्हा तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गिदरासीदो  
गेरइयमिच्छाइट्ठिरासी असंखेज्जगुणो । को छदव्वपक्खित्तरासी ?

धम्माधम्मा लोयायासा पत्तेयसरीर-एगजीवपदेसा ।

बादरपदिट्ठिदा वि य छप्पेदेऽसंखपक्खेवा' ॥ ६२ ॥

एदाणि छ दव्वाणि पुव्वुत्तरासिम्हि पक्खित्ते छदव्वपक्खित्तरासी होदि । एवं  
विहाणेण भणिदअजहण्णमणुक्कस्सासंखेज्जासंखेज्जयस्स जत्तियाणि रुवाणि तत्तियमेत्तो  
गेरइयमिच्छाइट्ठिरासी होदि । एवं दव्वपमाणं समत्तं ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण' ॥ १६ ॥

किमट्ठं मिच्छाइट्ठिरासी कालेण परुविज्जेदे ? न, असंखेज्जरासी सव्वा णिद्धि

अर्थात् जघन्य परीतासंख्यातके ऊपर और उसके उपरिम वर्गके नीचे उत्पन्न हुई हैं और  
पर्योपमकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए प्रतरावलीके ऊपर जाकर उत्पन्न हुई हैं । इससे  
प्रतीत होता है कि तीनवार वर्णितसंवर्णित असंख्यातासंख्यात राशिसे नारक मिथ्यादृष्टि  
जीवराशि असंख्यातगुणी है ।

शंका—छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि कौनसी है ?

समाधान—धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, लोकाकाश, अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति, एक  
जीवके प्रदेश और बादर प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति ये छह असंख्यात राशियां तीनवार  
वर्णितसंवर्णित राशिमें मिला देना चाहिये ॥ ६२ ॥

इन छह राशियोंको पूर्वांक राशिमें प्रक्षिप्त करने पर छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशि  
होती है ।

इस विधिसे कहे गये मध्यम असंख्यातासंख्यातका जितना प्रमाण हो उतनी नारक  
मिथ्यादृष्टि जीवराशि है ।

इसप्रकार द्रव्यप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

कालकी अपेक्षा नारक मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों  
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत हो जाते हैं ॥ १६ ॥

शंका—नारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका कालकी अपेक्षा किसलिये प्ररूपण किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, संपूर्ण असंख्यात जीवराशि सम्पन्न हो जाती है, इस

१ धम्माधम्मा लोयागासा एगजीवपदेसा वचारे वि लोयागासमेत्ता पत्तेयसरीरवादरपदिट्ठिय एदे । ति. प.  
५२, धम्माधम्मिगिजीवगलोयागासपदेसपत्तेया । तत्ते असंखयणिदा पदिट्ठिदा छप्पि रासीओ ॥ वि. सा. ४२.

२ असंखेज्जाहि उत्सप्पिणीओसप्पिणीहि अवहिरंति कालओ । अल्ल. सू. १४२. पृ. १८४.

त्ति पण्णवण्णट्ठादो । किमइं खेत्तपमाणमइक्कम्म कालपमाणं बुच्छे ? ण एस दोसो, 'जदप्पवण्णणीयं तं पुब्बमेव माणियव्वं' इदि वयणादो । कथं कालादो खेत्तं बहुवण्ण-णिज्जं ? ण, तस्मिं सेदि-जगपदर-विक्खंमसूचिपरुवणाणमत्थितादो । के वि आइरिया जं बहुवं तं सुहुममिदि भणति—

सुहुमो य हवदि कालो ततो सुहुमं खु जायेद खेत्तं ।

अंगुल-असंखभागे हवंति कप्पा असंखज्जा ॥ ६३ ॥

एदं ण घडदे । कुदो ? दव्वादो थूलं खेत्तं छंडिय दव्वस्स परुवणाणहाणुव-वत्तीदो । कथं दव्वादो खेत्तं थूलं ? बुच्छे—

सुहुमं तु हवदि खेत्तं ततो सुहुमं खु जायेद दव्वं ।

दव्वंगुलस्मिं एक्के हवंति खेत्तंगुलाणंता ॥ ६४ ॥

दव्व-खेत्तंगुले परमाणुपदेसा आगासपदेसा च सरिसा त्ति गेदं घडदे ? चे ण,

बातका ज्ञान कराना कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेका प्रयोजन है ।

शंका—क्षेत्रप्रमाणका उल्लंघन करके पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किसलिये किया जा रहा है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, 'जो अल्पवर्णनीय होता है उसका पहले वर्णन करना जाहिये' इस वचनके अनुसार पहले कालप्रमाणका प्ररूपण किया है ।

शंका—कालसे क्षेत्र बहुवर्णनीय कैसे है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, क्षेत्रमें जगश्रेणी, जगप्रतर और विष्कम्भसूचीकी प्ररूपणा पाई जाती है, इसलिये कालसे क्षेत्र बहुवर्णनीय है ।

कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि जो बहुत अर्थात् बहुत प्रदेशोंसे उपचित होता है वह सूक्ष्म होता है । यथा—

काल सूक्ष्म होता है और क्षेत्र उससे भी सूक्ष्म होता है, क्योंकि, एक अंगुलके असंख्यातवें भागमें असंख्यात कल्पकाल आ जाते हैं । अर्थात् एक अंगुलके असंख्यातवें भागके जितने प्रदेश होते हैं असंख्यात कल्पकालके उतने समय होते हैं ॥ ६३ ॥

परंतु उन आचार्योंका यह व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, द्रव्यसे क्षेत्र स्थूल है, इस बातको छोड़कर ही पहले द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा बन सकती है, अन्यथा क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपणके पहले द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा नहीं बन सकती है ।

शंका—द्रव्यसे क्षेत्र स्थूल कैसे है ?

समाधान—क्षेत्र सूक्ष्म होता है और उससे भी सूक्ष्म द्रव्य होता है, क्योंकि, एक द्रव्यांगुलमें (गणनाकी अपेक्षा) अनन्त क्षेत्रांगुल पाये जाते हैं ॥ ६४ ॥

शंका—एक द्रव्यांगुल और एक क्षेत्रांगुलमें परमाणुप्रदेश और आकाश-प्रदेश समान होते हैं, इसलिये पूर्वोक्त व्याख्यान घटित नहीं होता है ?

एकस्मिन् खेत्तुगुले ओगाहे अणंतदन्वंगुलदंसणादो । असंखेज्जासंखेज्जाणं ओसप्पिणि-  
उस्सप्पिणीणं समए सलागभूदे ठवेऊण गेरइयमिच्छाइडिंरासी च ठवेऊण सलागादो एगो  
समओ अवहिरिज्जदि, गेरइयमिच्छाइडिंरासीदो एगो जीवो अवहिरिज्जदि । एवं पुणो  
पुणो अवहिरिज्जमाणे सलागरासी गेरइयमिच्छाइडिं च जुगवं णिडंति । अधवा ओस-  
प्पिणि-उस्सप्पिणीओ दो वि मिलिदाओ कप्पो हवदि, तेण कप्पेण गेरइयमिच्छाइडिं-  
रासिस्मिन् भागे हिंदे जं भागलद्धं तत्तियमेत्ता कप्पा हवंति । एवं कालपमाणं समत्तं ।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेटीओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभाग-  
मेत्ताओ । तासिं सेटीणं विक्खंभसूचीं अंगुलवग्गमूलं विदियवग्ग-  
मूलगुणिदेणं ॥ १७ ॥

समाधान— नहीं, क्योंकि, एक क्षेत्रांगुलमें अवगाहनाकी अपेक्षा अनन्त द्रव्यांगुल  
देखे जाते हैं ।

असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके समय शलाकारूपसे एक  
ओर स्थापित करके और दूसरी ओर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिको स्थापित करके शलाका  
राशिमेंसे एक समय कम करना चाहिये और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे एक जीव कम  
करना चाहिये । इसप्रकार शलाकाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे पुनः पुनः एक  
एक कम करने पर शलाकाराशि और नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि युगपत् समाप्त  
हो जाती हैं ।

अथवा, अपसर्पिणी और उत्सर्पिणी ये दोनों मिलकर एक कल्पकाल होता है । उस  
कल्पका नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उतने कल्पकाल  
नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी गणनामें पाये जाते हैं ।

इसप्रकार कालप्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतारके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण  
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । उन जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूत्र्यंगुलके  
प्रथम वर्गमूलको उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध आवे,  
उतनी है ॥ १७ ॥

विशेषार्थ— खुदाबन्धमें सामान्य नारकियोंके प्रमाण लानेके लिये विष्कंभसूचीका

१ सूचि: एकश्लेषिका पंक्ति: । पञ्चसं. २, १४ स्तो. टी.

२ सामण्या गेरइया वणअंगुलविदियमूलगुणसेटी । गो, जी. १४२. खेत्तओ असंखेज्जाओ सेटीओ पयरस  
असंखिज्जदिभागो तासि णं सेटीणं विक्खंभसूचीं अंगुलपदमवग्गमूलं विइअवग्गमूलपडुवणं । अद्व णं अंगुलविइअवग्ग-  
मूलवणपमाणमेत्ताओ सेटीओ । अनु. सू. १४२. पृ. १८४. पुत्थ (खुदाबन्धे) सामण्यगेरइयाणं वुत्तविक्खंभसूची

संखेज्जाणंताणं गिवारणद्धमसंखेज्जवयणं । असंखेज्जाओ सेटीओ इदि सामण्ण-  
वयणेण सव्वागाससेटीए गहणं किण्ण पावदे ? ण, तस्स-

पड्डो सायर-सूर्ह पदरो य घणंगुलो य जगसेटी ।

लोगपदरो य लोगो अट्ट दु माणां मुणेयव्वा ॥ ६५ ॥

इदि पमाणद्धममंतरे अप्पिदत्तादो । ण च पमाणे परूविज्जमाणे अप्पमाणस्स  
पवेसो अत्थि, अट्ठप्पसंगादो । अधवा 'मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण असंखेज्जा' इदि  
पुण्विज्जवयणादो जाणिज्जेद जहा अणंताए सव्वागाससेटीए गहणं णत्थि ति । जगपदरस्स  
असंखेज्जदिभागो इदि किमट्ठं ? ण, जगपदरस्स संखेज्जदिभागप्पहुडि उवरिमसव्वसंखा-

प्रमाण पूर्वोक्त ही बतलाया है । अब यदि सामान्य नारकियोंकी और मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी  
विष्कंभसूची एक मान ली जाती है तो नरकमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका अभाव प्राप्त  
हो जाता है जो संगत नहीं है । अतएव यहां पर मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी जो विष्कंभसूची  
बतलाई है, यह सामान्य कथन है । विशेषरूपसे विचार करने पर सूच्यंगुलके प्रथम  
वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा कर देने पर जो नारक सामान्य विष्कंभसूची आवे उसे  
किंचित् न्यून कर देने पर मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची होती है ।

संख्यात और अनन्तके निवारण करनेके लिये सूत्रमें 'असंख्यात' यह वचन दिया है ।

शंका—सूत्रमें 'असंख्यात जगश्रेणियां' ऐसा सामान्य वचन दिया है, इसलिये  
उससे संपूर्ण आकाश-श्रेणियोंका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वह श्रेणीप्रमाण—

पत्थ, सागर, सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगश्रेणी, लोकप्रतर और लोक,

इसप्रकार ये आठ उपमाप्रमाण जानना चाहिये ॥ ६५ ॥

इसप्रकार इन आठ प्रमाणोंके भीतर आ जाता है । और जिसका प्रमाणके भीतर  
प्ररूपण किया गया है उसमें अप्रमाणका प्रवेश नहीं हो सकता है, अन्यथा अतिप्रसंग  
दोष आ जायगा ।

अथवा, 'नारक मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात हैं' इस पूर्वोक्त  
वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें संपूर्ण आकाशकी अनन्त जगश्रेणियोंका ग्रहण नहीं है ।

शंका—सूत्रमें 'जगप्रतरका असंख्यातवें भागप्रमाण' यह वचन किसलिये दिया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जगप्रतरके संख्यातवें भागको आदि लेकर उपरिम

चैव णेरइविच्छाइट्ठाणं जीवट्ठाणे परूविदा, कथं तेणेदं पुण विरुद्धदे ? आलावमेदामावादा । अत्थदो पुण भेदो  
अत्थि चैव, सामण्णविससविस्संभसूचीणं समाणचविरोहादो । ×× तस्सा एत्थतणविक्खंभसूची पुण विच्चणवणंगुल-  
विदियवणमूलमेसा ति वेत्तव्वं । धवला (सुद्धावंध) पत्र ५१८, अ.

१ प्रतिपु 'दुव्वा' इति पाठः ।

२ पड्डो सायर सूर्ह पदरो य घणंगुलो य जगसेटी । लोगपदरो य लोगो उवमपमा एवमट्ठविहा ॥ त्रि. सा. १२.

पडिसेहफलत्तादो । किमट्ठं विक्खंभसूई परुविज्जदे ? ण, पदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि सामण्णेण वुत्ते तस्स पमाणं किं संखेज्जा सेठीओ भवदि, किमसंखेज्जा सेठीओ भवदि इदि जादसंदेहस्स सिस्सस्स णिच्छयजणणट्ठं सेठीणं विक्खंभसूईए पमाणं वुत्तं ।

द्वय-खेच-कालपमाणणं सन्वेसिं विक्खंभसूईदो चेव णिच्छओ होदि त्ति काळण ताव विक्खंभसूईपमाणपरुवणं कस्सामो । अंगुलवग्गमूले विक्खंभसूई हवदि । तं किं भूदमिदि वुत्ते विदियवग्गमूलगुणणेण उवलक्खियं । तं कथं जाणिज्जदे ? इत्थंभाव-लक्खणतइयाणिदेसादो । जहा जो जडाहि सो भुज्जदि<sup>१</sup> त्ति । अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते

संपूर्ण संख्याका प्रातिषेध करना सूत्रमें दिये गये उक्त वचनका फल है।

शंका — यहां पर विष्कंभसूचीका प्ररूपण किसलिये किया गया है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, 'प्रतरका असंख्यातवां भाग' ऐसा सामान्यरूपसे कहने पर उसका प्रमाण क्या संख्यात जगश्रेणियां है, अथवा असंख्यात जगश्रेणियां है, इसप्रकार त्रिस शिष्यको संदेह हो गया है उसको निश्चय करानेके लिये जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूचीका प्रमाण कहा है ।

विष्कंभसूचीके कथनसे ही द्रव्यप्रमाण, क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाण, इन सबका निश्चय हो जाता है, ऐसा समझकर पहले विष्कंभसूचीके प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलमें, अर्थात् सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका आश्रय लेकर, विष्कंभसूची होती है। वह सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल किसरूप है, ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके गुणासे उपलक्षित है। अर्थात् सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको उसीके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित कर देने पर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची होती है।

उदाहरण—सूच्यंगुल  $२ \times २$  <sup>३</sup> विष्कंभसूची २; सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल <sup>३</sup> २; सूच्यं-

गुलका द्वितीय वर्गमूल <sup>३</sup> २; <sup>३</sup>  $२ \times २ = २$  विष्कंभसूची ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'विदियवग्गमूलगुणिदेण' सूत्रके इस पदमें आये हुए इत्थंभावलक्षण तृतीया विभक्तिके निर्देशसे यह जाना जाता है कि यहां पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे

१ गुणिदेणेत्ति णेदं तदियाए एगवयणं किं तु सत्तमीए एगवयणेण पटमाए वयणेण वा होद्वयमण्णहा सुत्तद्वयवंधाभावादो । धवला ( खुदाबंध ) पत्र ५१८. अ.

२ इत्थंभूतलक्षणे । २ । ३ । २१ पाणिनि । कंचित्प्रकारं प्राप्तस्य लक्षणे तृतीया स्वात् । जटाभिस्तापसः । जटाक्षयतापस्तत्त्वविशिष्ट इत्यर्थः । वृत्तिः ।



पदरंगुलस्स घणंगुलस्स वा वग्गमूलस्स गहणं कधं णो पावदे ? ण, 'अट्ठरूवं वग्गिज्ज-  
माणे वग्गिज्जमाणे असंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि गंतूण सोहम्मीसाणविकखंभस्सई उपपज्जदि।  
सा सई वग्गिदा णेरइयविकखंभस्सई हवदि। सा सई वग्गिदा भवणवासियविकखंभस्सई  
हवदि। सा सई वग्गिदा घणंगुलो हवदि' चि परियम्मवयणादो णव्वदे घण-पदरंगुलाणं  
वग्गमूलस्स गहणं ण हवदि किंतु सूचिअंगुलवग्गमूलस्सेव गहणं होदि चि, अण्णाहा  
घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अणुप्पत्तीदो। संपहि सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं भागहारं

गुणित प्रथम वर्गमूल लिया है। जैसे, 'जो जटाओंसे युक्त है वह तपस्वी भोजन करता है। यहां  
पर इत्यंभावलक्षण तृतीया निर्देश होनेसे जटाओंवाला यह अर्थ निकल आता है, उसीप्रकार  
प्रकृतमें भी समझ लेना चाहिये।

शुंका—'अंगुलका वर्गमूल' ऐसा सामान्य कथन करने पर उससे प्रतरांगुलके  
वर्गमूल अथवा घनांगुलके वर्गमूलका ग्रहण क्यों नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'आठका उत्तरोत्तर वर्ग करते हुए असंख्यात  
वर्गस्थान जाकर सौधर्म और पेशानसंबन्धी विष्कंभसूची प्राप्त होती है। उसका (सौधर्मद्विक-  
संबन्धी विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर नारक सामान्यसंबन्धी विष्कंभसूची प्राप्त  
होती है। उसका (नारकसंबन्धी विष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग करने पर भवनवासी  
देवासंबन्धी विष्कंभसूची प्राप्त होती है। उसका (भवनवासिविष्कंभसूचीका) उसीसे वर्ग  
करने पर घनांगुल प्राप्त होता है'। इस परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि प्रकृतमें घनांगुल  
और प्रतरांगुलके वर्गमूलका ग्रहण नहीं किया है, किन्तु सूच्यंगुलके वर्गमूलका ही ग्रहण किया  
है। यदि ऐसा न माना जाय तो सामान्य नारक विष्कंभसूचीको जो घनांगुलके द्वितीय  
वर्गमूलप्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है।

विशेषार्थ—ऊपर जो परिकर्मका उद्धरण दिया है उससे स्पष्ट पता लग जाता है  
कि सामान्य नारकविष्कंभसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण है। अब यदि सूत्रमें  
अंगुल सामान्यका उल्लेख होनेसे उससे हम सूच्यंगुलका ग्रहण न करके प्रतरांगुल या  
घनांगुलका ग्रहण करें तो पूर्वोक्त सूत्रके अभिप्रायका परिकर्मके वचनके साथ विरोध आ  
जाता है, क्योंकि, उक्त सूत्रका अर्थ करते हुए, यदि हम घनांगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय  
वर्गमूलसे गुणा करने पर सामान्य नारक विष्कंभसूचीका प्रमाण होता है, ऐसा अर्थ करते हैं  
तो परिकर्मके उक्त वचनके साथ विरोध है ही। अंगुलका अर्थ प्रतरांगुल करने पर भी यही  
आपत्ति आती है। हां, अंगुलका अर्थ सूच्यंगुल ले लिया जाता है तो कोई विरोध नहीं  
आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका द्वितीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो प्रमाण  
आता है वह घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि  
सूत्रमें अंगुलसे सूच्यंगुलका ही ग्रहण करना चाहिये।

अब सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको भागद्वार करके और सूच्यंगुलको भाजक करके

काऊण सूचिअंगुलं विहज्जमाणमिदि कट्टु विक्खंभसूचिपरूवणं वग्गट्ठाणे खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-गिरुत्ति-वियप्पेहि वत्तइस्सामो । तत्थ खंडिदादिचउकं सुगमं । तस्स पमाणं केत्तिर्यं ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलाणि । केण कारणेण ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि । सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स दुभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे दोणिण पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । पुणो पढमवग्गमूलस्स तिभागेण सूचिअंगुले भागे हिदे तिणिण पढमवग्गमूलाणि आगच्छंति । एवं पढमवग्गमूलस्स अखंसेज्जदिभाग-भूदसूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण सूचिअंगुले भागे हिदे

वर्गस्थानमें खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति, और विकल्पके द्वारा विष्कंभसूचीका प्रतिपादन करते हैं । उनमें प्रारंभके खण्डित आदि चारका कथन सुगम है । ( इन चारोंका सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिके सम्बंधमें उदाहरण सहित कथन पृष्ठ ४१ और ४२ में किया है, उसीप्रकार यहां भी समझना चाहिये । )

शंका — विष्कंभसूचीका प्रमाण कितना है ?

समाधान — सूच्यंगुलके असंख्यातवां भाग विष्कंभसूचीका प्रमाण है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण है ।

शंका — किस कारणसे सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण विष्कंभसूची होती है ?

समाधान — सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल आता है  $\left( \frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{2^{\frac{3}{2}}} = 2^{\frac{1}{2}} \right)$  । सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके द्वितीय भागका

सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलके दो प्रथम वर्गमूललब्ध आते हैं  $\left( \frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{2^{\frac{2}{2}}} = 2 \times 2^{\frac{1}{2}} \right)$  । पुनः

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके तीसरे भागका सूच्यंगुलमें भाग देने पर सूच्यंगुलके तीन प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं  $\left( \frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{2^{\frac{3}{2}}} = 2 \times 2^{\frac{1}{2}} \right)$  । इसीप्रकार सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके असं-

ख्यातवें भागरूप सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध

असंख्यज्जाणि सूचिअंगुलपटमवग्गमूलाणि आगच्छन्ति चि ण संदेहो । कारणं गदं ।  
 णिरुत्ति वत्तइस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पटमवग्गमूले भागे हिदे भागलद्धम्हि  
 जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पटमवग्गमूलाणि घेत्तूण विक्खंभमूई हवदि । अधवा  
 विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि रूवाणि तत्तिएहि पटमवग्गमूलेहि विक्खंभमूची होदि चि  
 वत्तव्वं । णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ वेरुवे हेट्ठिमवियप्पं  
 वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदियवग्गमूलेण सूचिअंगुलपटमवग्गमूलमोवट्ठिय लद्धेण पटम-  
 वग्गमूले गुणिदे विक्खंभमूई हवदि । अधवा विदियवग्गमूलेण पटमवग्गमूले गुणिदे

आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं,  
 इसमें संदेह नहीं है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{2^{\frac{2}{3}}}{2^{\frac{1}{3}}} = 2; \quad \frac{2 \times 2^{\frac{2}{3}}}{2^{\frac{1}{3}}} = 2 \quad \text{सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण विष्कंभसूची ।}$$

अब निरुक्तिका कथन करते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके  
 भाजित करने पर भागमें जितनी संख्या लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल ग्रहण करके विष्कंभ-  
 सूची उत्पन्न होती है । अथवा, द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण है उतने प्रथम वर्गमूलोंसे  
 ( द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलोंको जोड़ देने पर ) विष्कंभसूची होती है । इसप्रकार  
 निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{2^{\frac{2}{3}}}{2^{\frac{1}{3}}} = 2 \quad \text{द्वितीय वर्गमूल प्रमाण प्रथम वर्गमूलोंका जोड़, द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणाकर देने पर जितना होता है, उतना ही आता है ।}$$

विकल्प द्वो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमें पहले  
 द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके  
 प्रथम वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित  
 करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण होता है । अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके  
 गुणित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—}\frac{2^{\frac{2}{3}}}{2^{\frac{1}{3}}} = 2; \quad 2 \times 2^{\frac{2}{3}} = 2 \text{ वि. अथवा, } 2 \times 2 = 2 \text{ वि.}$$

विष्कंभसूई हवदि । अद्वरूवे वचइस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे विष्कंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो तमंगुलविदियवग्गमूलेण भागे हिदे विष्कंभसूची आगच्छदि । एत्थ विउणादिकरणं वचइस्सामो । अंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । विगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स दुभागो आगच्छदि । तिगुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलस्स तिभागो आगच्छदि ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका प्रमाण आता है । पुनः उसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—सूच्यंगुलका घन  $\left(\frac{2^{\frac{1}{3}}}{2}\right)^3 = 2$ ; घनांगुलका प्रथम वर्गमूल  $2^{\frac{1}{2}}$  ।

$$\frac{2^{\frac{1}{3}}}{2^{\frac{1}{2}} \times 2^{\frac{1}{2}}} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

अब यहां द्विगुणादिकरण विधिको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है  $\left(\frac{2^{\frac{1}{3}}}{2^{\frac{1}{2}}} = 2 \times 2^{\frac{1}{2}}\right)$  । द्विगुणित

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका दूसरा भाग आता है  $\left(\frac{2^{\frac{1}{3}}}{2^{\frac{1}{2}} \times 2^{\frac{1}{2}}} = \frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{2}\right)$  । त्रिगुणित सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम

वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका तीसरा भाग आता है ।  $\left(\frac{2^{\frac{1}{3}}}{2^{\frac{1}{2}} \times 2^{\frac{1}{2}} \times 2^{\frac{1}{2}}} = \frac{2 \times 2^{\frac{1}{2}}}{2 \times 2}\right)$  ।

एदेण कमेण णेदत्तं जाव स्रचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स गुणगारो विदियवग्गमूलमेत्तं पत्तो त्ति । पुणो तेण स्रचिअंगुलविदियवग्गमूलेण गुणिदपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे विदियवग्गमूलोवाट्टियस्रचिअंगुलो आगच्छदि । सो चेव विक्खंभसूची । घणाघणे वत्त-  
इस्सामो । अंगुलविदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलविदियवग्गमूलं गुणेऊण  
तेण घणाघणविदियवग्गमूले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? घणंगुल-  
विदियवग्गमूलेण घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलपढमवग्गमूलमागच्छदि ।  
पुणो वि स्रचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे स्रचिअंगुलो आग-  
च्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण स्रचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि ।  
एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । एवं हेट्ठिमवियप्पो समत्तो ।

उपरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ

इसप्रकार जबतक सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका गुणकार द्वितीय वर्गमूलके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । पुनः उस सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे भाजित सूर्यगुल आता है, और वही विष्कंभसूची है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2^2}{\frac{2}{2} \times \frac{2}{2}} = \frac{2 \times 2}{\frac{2}{2}} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

अथ घनाघनमें अघस्तन विकल्प बतलते हैं— सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलमें भाग देने पर घनांगुलका प्रथम वर्गमूल आता है । पुनः सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका घनांगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर सूर्यगुल आता है । पुनः सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूर्यगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । इसप्रकार अघस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उदाहरण—सूर्यगुलका घनाघन  $(2^3)^3 = 2^{27}$ ; सूर्यगुलके घनाघनका द्वितीय

$$\text{वर्गमूल } 2 = 2^{\frac{27}{2}}; \frac{2^{\frac{27}{2}}}{2 \times 2 \times 2} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमें

गहिदं वचइस्सामो । विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि । अधवा विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुलं गुणेऊण पदरंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण कारणेण ? सूचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतसु णेदव्वं । एत्थ

पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलका सूच्यंगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूची आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{2 \times 2}{\frac{1}{2}} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशि के अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूची आती है ।

उदाहरण— $\frac{2}{\frac{1}{2}}$  के क अर्धच्छेद होते हैं ।  $\frac{2}{\frac{1}{2}}$  के क अर्धच्छेद किये जायं तो अंतिम राशि  $\frac{2}{\frac{1}{2}}$  होगी । सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलमें  $\frac{2}{\frac{1}{2}}$  है, और सूच्यंगुलमें  $\frac{1}{2}$  है; इसलिये  $2 \times 2 = 2$  के अर्धच्छेद  $\frac{2}{\frac{1}{2}}$  के अर्धच्छेदोंके बराबर करने पर  $2 - \frac{1}{2} = 2$  अर्थात् २ आ जाता है जो विष्कंभसूचीका प्रमाण है ।

अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलमें भाग देने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है, क्योंकि, सूच्यंगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूची आती है । इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{\left(2 \times 2\right)^{\frac{1}{2}}}{\frac{1}{2}} = \frac{2}{\frac{1}{2}} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशि के अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें से

अद्वच्छेदणयमेत्तमेलावणविहाणं जाणिऊण वत्तव्वं । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । विदियवग्ग-  
मूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण घणंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण  
कारणेण ? पदरंगुलेण घणंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । पुणो वि विदियवग्ग-  
मूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि ति कट्ठु  
गुणेऊण भागगहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदण  
कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि । एवं सखेज्जासखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । घणाघणे  
वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलेण पदरंगुलं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणंगुल-  
उवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणाघणे भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । केण

जाना चाहिये । यहां पर समस्त अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण—२ के अर्धच्छेद  $\frac{1}{2}$  होते हैं, अतः इतनीवार २ के अर्धच्छेद करने पर  
 $2 = 2' = 2$  प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे  
प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका  
प्रमाण आता है, क्योंकि, प्रतरांगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः  
सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है ।  
इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका  
ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{\left(\frac{2}{3}\right)^2}{\frac{2}{3} \times 2} = \frac{2^2}{2^1} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

उक्त भागद्वाराके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद  
करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आ जाता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और  
अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये ।

उदाहरण—२ के अर्धच्छेद ३ होते हैं, अतः इतनीवार २ के अर्धच्छेद करने पर  
 $2 = 2' = 2$  प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे  
प्रतरांगुलको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गको  
गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनांगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूचीका

कारणेन ? घण-उपरिमवग्गेण घणाघणे भागे हिदे घणंगुलो आगच्छदि । पुणो वि पदंगुलेण घणंगुले भागे हिदे सूचिअंगुलो आगच्छदि । पुणो वि विदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे विक्खंभसूची आगच्छदि । एवमागच्छदि चि कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि विक्खंभसूची आगच्छदि । गहिदो गदो । सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागेण घणंगुल-पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण 'घणाघणविदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण च विक्खंभसूचिपमाणेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च पुव्वं व वत्तव्वो ।

संपहि णेरइयमिच्छाड्डिरासिस्स भागहारुप्पायणविहिं वत्तइस्सामो । सुत्ते अवुत्तो भागहारो कधमुप्पाइज्जदे ? ण, सुत्तवुत्तविक्खंभसूईदो तदुप्पत्तिसिद्धीदो । तं जहा-

प्रमाण आता है, क्योंकि, घनांगुलके उपरिम वर्गसे घनाघनांगुलके भाजित करने पर घनांगुल आता है । पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर विष्कंभसूची आती है । इसप्रकार विष्कंभसूची आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{(2^3)^3}{2^3 \times 2^3} = \frac{2^9}{2^3 \times 2^3} = \frac{2^9}{2^6} = 2 \text{ विष्कंभसूची.}$$

$$2 \times 2 \times 2^6$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । इसप्रकार गृहीत उपरिम विकल्पका वर्णीन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $2^{11}$  के अर्धच्छेद ११ होते हैं; अतः इतनीवार  $2^{11}$  के अर्धच्छेद करने पर

$$12-11 = 1$$

$2 = 2 = 2$  प्रमाण विष्कंभसूची आ जाती है ।

सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे, घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे और घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण विष्कंभसूचीसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन पहलेके समान करना चाहिये ।

अब नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके भागहारके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—

शंका—भागहारका कथन सूत्रमें नहीं किया है, फिर यहां वह कैसे उत्पन्न किया जा रहा है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सूत्रोक्त विष्कंभसूचीसे उक्त भागहारकी उत्पात्ति बन जाती है । वह इसप्रकार है—

१ प्रतिबु 'पुणो घण-' इति पाठः ।



जगसेठीए जगपदरे भागे हिदे एगसेठी आगच्छदि । जगसेठीदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोष्णि सेठीओ आगच्छंति । जगसेठितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिष्णि सेठीओ आगच्छंति । एवमेगादि-एगुत्तरक्रमेण सेठीए भागहारो बहुवियव्वो जाव णेरइयविकखं-भस्सूचिमेत्तं पत्तो चि । पुणो ताए विकखंभस्सूचीए सेठिमोवट्टिय लद्धेण जगपदरे भागे हिदे विकखंभस्सूचीमेत्तसेठीओ आगच्छंति । एवमण्णत्थ वि विकखंभस्सूईदो अवहारकालो साधेयव्वो । एदेण भागहारेण सेठीए उवरि खंडिदादिवियप्पा वत्तव्वा । तत्थ ताव वग्गट्ठाणे पमाण-कारण-णिरुत्ति-वियप्पेहि अवहारकालं वत्तइस्सामो । तस्स पमाणं केत्थियं ? सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेठिपटमवग्गमूलानि । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सेठिपटमवग्गमूलेण सेठिम्हि भागे हिदे सेठिपटमवग्गमूलो आग-

जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर एक जगश्रेणीका प्रमाण आता है  $(४२९४९६७२९६ ÷ ६५५३६ = ६५५३६)$  । जगश्रेणीके द्वितीय भागका जगप्रतरमें भाग देने पर वो जगश्रेण्यां लब्ध आती हैं  $(४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२)$  । जगश्रेणीके तृतीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन जगश्रेण्यां आती हैं  $(४२९४९६७२९६ ÷ २१८४५१ = १९६६०८)$  । इसप्रकार भागहार बढ़ाते हुए जबतक वह नारक विष्कंभसूचीके प्रमाणको प्राप्त होवे तबतक उसे बढ़ाते जाना चाहिये । अनन्तर उस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे जगप्रतरके भाजित करने पर जितना विष्कंभसूचीका प्रमाण है उतनी जगश्रेण्यां लब्ध आती हैं । इसीप्रकार अन्यत्र भी विष्कंभसूचीसे अवहारकाल साध लेना चाहिये ।

उदाहरण—जगश्रेणी ६५५३६; जगप्रतर ४२९४९६७२९६;  $६५५३६ ÷ २ = ३२७६८$ ;

$४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२$ . नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि.

अब इस भागहारका आश्रय करके जगश्रेणीके ऊपर खण्डित आदि विकल्पका कथन करना चाहिये । उनमेंसे पहले वर्गीस्थानमें प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पके द्वारा अवहारकालका प्रमाण बतलाते हैं—

शंका—सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके लानेके लिये जो भागहार कहा है उसका प्रमाण कितना है ?

समाधान—उक्त भागहारका प्रमाण जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग है, जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—अवहारकाल ३२७६८; जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल २५६;  $३२७६८ ÷ २५६ = १२८$  (यहां १२८ को असंख्यात मान कर उतनेवार प्रथम वर्गमूल २५६ का जोड़ ३२७६८ होता है)

शंका—जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण अवहारकाल किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर

च्छदि। सेढिविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे विदियवग्गमूलस्स जत्तियाणि  
रूवाणि तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। सेढितदियवग्गमूलेण सेढिम्हि  
भागे हिदे सेढिविदिय-तदियवग्गमूलानं अण्णोण्णभागे कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि  
तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति। अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणं  
असंखेज्जिभागमेत्तवग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणं गुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि  
भागे हिदे असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि आगच्छंति चि ण संदेहं कायच्चं।  
कारणं गदं। गिरुत्तिं वत्तइस्सामो। घणं गुलविदियवग्गमूलेण सेढिपढमवग्गमूले भागे  
हिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि। अधवा तेणेव भागहारेण  
सेढिविदियवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदेण तम्हि चेव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि  
तत्तियाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि। अधवा तेणेव भागहारेण सेढितदियवग्गमूले भागे  
हिदे तत्थागदेण तं चेव गुणेऊण तदो तेण विदियवग्गमूले गुणिदे तत्थ जत्तियाणि

जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल आता है (६५५३६ ÷ २५६ = २५६)। जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे  
जगश्रेणीके भाजित करने पर द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण होता है उतने जगश्रेणीके  
प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६ ÷ १६ = ४०९६ = १६ × २५६)। जगश्रेणीके तृतीय  
वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर, श्रेणीके द्वितीय और तृतीय वर्गमूलके परस्पर  
गुणा करने पर वहां जितनी संख्या उत्पन्न हो उतने प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं (६५५३६  
÷ ४ = १६३८४ = १६ × ४ × २५६)। इसी विधिसे पद्मोपमकी वर्गशलाकाओंके असं-  
ख्यातवें भागमात्र वर्गस्थान नीचे जाकर घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित  
करने पर जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं करना चाहिये।  
इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ।

उदाहरण—घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल २; ६५५३६ ÷ २ = ३२७६८ अव.

अब निरुक्तिका कथन करते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम  
वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य  
नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं।

उदाहरण—२५६ ÷ २ = १२८ (इतने प्रथम वर्गमूल अवहारकालमें होते हैं)।

अथवा, उसी घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागहारसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके  
भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलके गुणित कर देने  
पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें  
लब्ध आते हैं।

उदाहरण—१६ ÷ २ = ८; १६ × ८ = १२८.

अथवा, उसी घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलरूप भागहारसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके  
भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके

रूवाणि तत्तियाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि । अणेण विहाणेण असंसेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण घणंगुलविदियवग्गमूलेण तस्सुवरिमवग्गमवहारिय लट्ठेण घणंगुलपढम-वग्गमूलं गुणिय तेण च गुणियरासिणा घणंगुलं गुणयेत्तौ । एदेण कमेण उवरि उवरि अवट्ठिद्वग्गट्ठाणाणि सेटिविदियवग्गमूलंताणि सत्त्वाणि गुणयेत्त्वाणि । तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि हवंति । एवं गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, जगसेटिसमाणवेरूववग्गस्स पढमवग्गमूलं केण वि भागहारेण अवहिरिज्जेते अवहारकालस्स अणुप्पत्तीदो । ण च जगसेटिसमाणवेरूववग्गं अस्सिऊण अवहार-कालुप्पत्ती वोत्तुं सक्किज्जेदे, हेट्ठिम-उवरिमवियप्पेसु गिरुट्ठेसु मज्झिमवियप्पस्स असंभ-वादो । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणसेटिपढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स

तदनन्तर उस लब्धसे द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उतने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें लब्ध आते हैं ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \div २ = २; ४ \times २ = ८; १६ \times ८ = १२८.$$

इसी विधिसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे उसके उपरिम वर्गको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनांगुलको गुणित करना चाहिये । इसी क्रमसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूल पर्यन्त ऊपर ऊपर अवस्थित संपूर्ण वर्गस्थानोंको गुणित करना चाहिये । इसप्रकार गुणा करनेसे वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्या-दृष्टि नारक अवहारकालमें होते हैं । इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \div २ = २; ४ \times २ = ८; १६ \times ८ = १२८.$$

विशेषार्थ—यहां दृष्टांतके स्पष्ट करनेके लिये जो अंकसंदिष्टि ली है उसमें जगश्रेणीका द्वितीय वर्गमूल और घनांगुलका प्रमाण एक पड़ जाता है जो १६ है । अतः निरुक्तिका कथन करते हुए जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलतक ऊपर ऊपर वर्गस्थानोंका उत्तरोत्तर गुणा करते जाना चाहिये । इस कथनके अनुसार अंकसंदिष्टिमें वहाँ तक (१६ तक) गुणा बढ़ानेसे वह संख्या लब्ध आ जाती है जितने जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्यादृष्टि नारक अवहार-कालमें पाये जाते हैं ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे यहां प्रकृतमें द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है, क्योंकि, जगश्रेणीके समान द्विरूप वर्गके प्रथम वर्गमूलको किसी भी भागद्वारेसे अपहत करने पर अवहारकाल नहीं उत्पन्न हो सकता है । यदि जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका आश्रय करके अवहारकालकी उत्पत्ति कही जावे सो भी कहना ठीक नहीं है, क्योंकि, विकल्पके अधस्तन और उपरिम विकल्पसे निरुद्ध हो जाने पर मध्यम विकल्प नहीं बन सकता है । यहां अष्टरूपमें भी अधस्तन विकल्प नहीं पाया जाता है,

बहुचुवलंभादो । अहवा अवहारकालागमणमिच्चभागहारेण गिरुद्धरासीदो हेक्का जं वा तं वा वग्गमूलमोवट्टिय गिरुद्धरासिस्स हेक्किमवग्गमूलाणि एकवारं गुणिदे जत्थ इच्छिदरासी उप्पज्जदि तत्थ वि हेक्किमवियप्पो अत्थि चि भणंताणमभिप्पाएण अट्ठरूवे हेक्किमवियप्पं वत्तइस्सामो । घणं गुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिपढमवग्गमूले भागे हिदे तत्थागदलद्वेण सेट्ठिपढमवग्गमूले गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा तेणेव भागहारेण सेट्ठिविदियवग्गमूलमवहारिय तत्थागदेण लद्वेण तं चेव विदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण पढमवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा घणं गुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठितदियवग्गमूलमवहारिय तत्थ लद्वेण तं चेव तदियवग्गमूलं गुणेऊण तेण विदियवग्गमूलं गुणिय तेण सेट्ठिपढमवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । अणेण विहाणेण पलिदोवमवग्गसलागाणमसंखेज्जदि-भागमेत्तवग्गट्ठाणाणं पुध गिरुंभणं करिय अवहारगुणणकिरियं काऊण अवहारकालो

क्योंकि, विभज्यमान राशि जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे अवहारकालका प्रमाण बहुत अधिक पाया जाता है । अथवा, अवहारकालके लानेके लिये निमित्तभूत भागहारसे निरुद्धराशि जगश्रेणीसे नीचे किसी भी वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे निरुद्धराशिसे अधस्तन वर्गमूलोंको एकवार गुणित करने पर जहां पर इच्छित राशि उत्पन्न होती है वहां पर भी अधस्तन विकल्प पाया जाता है, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले आचार्योंके अभिप्रायसे अष्टरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—

घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित कर देने पर अवहारकालका प्रमाण होता है ।

उदाहरण— $256 \div 2 = 128$ ;  $256 \times 128 = 32768$  अव.

अथवा, उसी भागहारसे अर्थात् घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करके वहां जो लब्ध आवे उससे उसी जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $16 \div 2 = 8$ ;  $16 \times 8 = 128$ ;  $256 \times 128 = 32768$  अव.

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलको भाजित करके वहां जो लब्ध आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $8 \div 2 = 4$ ;  $8 \times 4 = 32$ ;  $256 \times 32 = 8192$  अव.

इसी विधिसे पल्योपमकी वर्गशलकाओंके असंख्यातवें भागमात्र वर्गस्थानोंको पृथक्-रूपसे रोककर और घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण भागहारसे अंतिम आदि स्थानोंको

साधेयव्यो । तत्थ अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणंगुल-  
पढमवग्गमूले भागे हिंदे तत्थागदेण तं चेव घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण  
गुणिदरासिणा घणंगुलं गुणेऊण एवमुवरि उवरि अवट्ठिदाणि वग्गट्ठाणाणि  
सेट्ठिपढमवग्गमूलपच्छिमाणि णिरंतरं गुणेयव्वाणि । एवं गुणिदे णेरइयमिच्छाइट्ठि-  
अवहारकालो होदि । एस अत्थो जदि वि पुव्वं परुविदो तो वि हेट्ठिमवियप्पसंवंधेण  
मंदबुद्धिसिस्साणुग्गहट्ठं पुणरवि परुविदो ।

घणाघणे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेट्ठिपढमवग्गमूलं गुणेऊण  
घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिंदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कथं ? सेट्ठिपढमवग्ग-  
मूलेण घणलोगपढमवग्गमूले भागे हिंदे सेट्ठी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण  
सेट्ठि भागे हिंदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं ।  
अहवा एत्थ दुगुणादिकमेण अवहारकालो साधेयव्यो । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण  
सेट्ठिपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणलोगविदियवग्गमूलमवहारिय तं चेव गुणिदे अवहार-

भाजित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत गुणनक्रिया करके  
अवहारकाल साध लेना चाहिये । उनमेंसे अंतिम विकल्पको बतलाते हैं—

घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर वहां  
आये हुए लब्धसे उसी घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो गुणित राशि आवे उससे  
घनांगुलको गुणित करके पुनः जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलपर्यंत ऊपर उपर स्थित वर्गस्थानोंको  
निरन्तर गुणित करना चाहिये । इसप्रकार पूर्व पूर्व गुणित राशिसे उत्तरोत्तर वर्गस्थानके गुणित  
करते जाने पर नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालका प्रमाण आता है । इस अथेका  
प्ररूपण यद्यपि पहले कर आये हैं तो भी मन्दबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये अधस्तन विकल्पके  
संबन्धसे इसका फिरसे प्ररूपण किया है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जग-  
श्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके प्रथम वर्गमूलके  
भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे घन-  
लोकके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय  
वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहार-  
कालका प्रमाण आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

उदाहरण—घनलोकका प्रथम वर्गमूल  $२५६^३$ ;  $२५६ \times २ = ५१२$ ;  $\frac{२५६^३}{५१२} = ३२७६८$  अव.

अथवा, यहां पर द्विगुणादि क्रमसे अवहारकाल साध लेना चाहिये । अथवा,  
घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे  
घनलोकके द्वितीय वर्गमूलको अपहत करके जो लब्ध आवे उससे उसी घनलोकके द्वितीय

कालो होदि । एवं हेड्डा वि जाणिऊण वत्तव्वं । हेड्डिमवियण्णो गदो ।

उपरिमवियण्णो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं कथं ? सेटिसमाणवेरूववग्गेण तव्वग्गवग्गे भागे हिदे सेटी आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिदे अवहारकालो होदि । एवमागच्छदि त्ति कट्टु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा अवहार-कालो विगुणादिकमेण वड्डावेयव्वो । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदण कदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयसलागा केत्तिया ? घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणयसहियसेटिसमाणवेरूववग्गस्स अद्वच्छेदणयमेत्ता ।

वर्गमूलको गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें भी जानकर कथन करना चाहिये । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उदाहरण—घनलोकका द्वितीय वर्गमूल  $१६\frac{१}{२}$ ;  $२५६ \times २ = ५१२$ ;  $१६\frac{१}{२} + ५१२ = ८$ ;

$१६\frac{१}{२} \times ८ = ३२७६८$  अव.

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका उसी जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गके वर्गमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका उसीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । अवहारकालका प्रमाण इसप्रकार आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । अथवा, द्विगुणाविकरण विधिसे अवहारकाल बड़ा लेना चाहिये ।

उदाहरण— $६५५३६ \times २ = १३१०७२$ ;  $६५५३६ \div १३१०७२ = ३२७६८$  अव.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके  $१६ + १ = १७$  अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

शंका—उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाएँ कितनी होती हैं ?

समाधान—जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलकी अर्धच्छेद शलाकाएँ मिला देने पर उक्त भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—जगश्रेणी समान द्विरूपवर्ग  $६५५३६$  के अर्धच्छेद  $१६$ ; घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल  $२$  के अर्धच्छेद  $१$ ;  $१६ + १ = १७$  अ. ।

उवरि सव्वत्थ चडिदद्धानवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्थरासिणा तिरुवूणेण सेटिसमाणवेरुववग्गस्स अद्धच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्धच्छेदणयपक्खित्तमेत्ता भवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणतेसु वग्गट्ठाणेषु णेयव्वं । वेरुवपरुवणा गदा । अट्ठुत्वे वत्तइस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिंदे अवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदण कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिं गुणेऊण जगपदरे भागे हिंदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगसेटीए जगपदरे भागे हिंदे सेटी आगच्छदि । पुणो वि घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेटिम्हि भागे हिंदे अवहारकालो आगच्छदि । एवसागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागगगहणं कदं । अहवा अवहारकालो विउणादिकरणेण वट्ठुवैयच्चो । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स

ऊपर सर्वत्र जितने वर्गस्थान ऊपर जावें उनकी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे तीन कम करके शेष रह्यो हुई राशिसे जगश्रेणीके समान द्रिरूप वर्गकी अर्धच्छेद शलाकाओंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर जो जोड़ हो उतने विवक्षित भागहारके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये । इसप्रकार द्रिरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब अष्टरूपमें बतलाते हैं—घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण— $६५५३६ \div २ = ३२७६८$  अव.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारका १ अर्धच्छेद है, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकाल आता है ।

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पढ़ले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । अथवा द्विगुणादिकरण विधिसे अवहारकाल बढ़ा लेना चाहिये ।

उदाहरण— $६५५३६ \times २ = १३१०७२$ ;  $४२९४९६७२९६ \div १३१०७२ = ३२७६८$  अव.

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

अद्वच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । एत्थ चडिदद्वानसलामाओ विरलिय विगं करिय अण्णोणञ्भत्थरासिणा रूवणेण जगसेदिअद्वच्छेदणए गुणिय घणंगुल-विदियवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्वच्छेदणया हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतुसु वग्गद्वानेसु गेयव्वं । अद्वरूपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तस्सामो । घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण घणलोगे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदिय-वग्गमूलेण सेढिम्हि भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । अहवा घणंगुलविदियवग्गमूलेण जगपदरं गुणेऊण तेण घणलोगं गुणेऊण घणलोगउवरिमवग्गे भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । केण कारणेण ? घणलोगेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणलोगो आगच्छदि । पुणो वि जगपदरेण घणलोगे भागे हिदे सेढी आगच्छदि । पुणो घणंगुलविदियवग्गमूलेण सेढिम्हि

उदाहरण—उक्त भागहारके  $१६ + १ = १७$  अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशि के अर्धच्छेद करने पर  $३२७६८$  प्रमाण अवहारकालराशि आती है ।

यहां पर जितने स्थान ऊपर गये हों उतनी शलाकाओंका विरलन करके और उक्त राशि के प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमेंसे एक कम करके जोय राशिसे जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको मिला देने पर विवक्षित भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त वर्गस्थानोंमें ले जाना चाहिये । इसप्रकार अग्ररूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, जगप्रतरसे घनलोकके भाजित करने पर जगश्रेणीका प्रमाण आता है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगश्रेणीके भाजित करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार अवहारकाल आता है ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} ६५५३६^२ \times २ = ८५८९९३४५९२; \quad ६५५३६^३ \div ८५८९९३४५९२ = ३२७६८ \text{ अव.}$$

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है, क्योंकि, घनलोकका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनलोक आता है, पुनः जगप्रतरका घनलोकमें भाग देने पर जगश्रेणी आती है, पुनः घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसप्रकार



भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कडु गुणेऊण भागग्गहणं कदे । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि अवहारकालो आगच्छदि । एत्थ भागहारस्स अद्वच्छेदणयसलागाणमाणयणविही वुब्बदे- चडिदद्वाणवग्गसलागाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णमत्थरासिणा तिगुणरूवूणेण सेटिअद्वच्छेदणए गुणिय घणंगुलविदियवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणए पक्खित्ते भागहारस्स अद्वच्छेदणया हवंति । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयव्वं । गहिदपरूवणा गदा । सेटिसमाणवेरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण सेटीए असंखेज्जदिभागेण घणलोगपटमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागेण अवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एवमवहारकालपरूवणा समत्ता ।

एदेण अवहारकालेण जगपदेरे भागे हिदे णेरइयमिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि ।

अवहारकालका प्रमाण आता है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५३६^१}{६५३६^१ \times ६५३६^१ \times २} = ३२७६८ \text{ अव.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी अवहारकालका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ८१ अर्धच्छेद होते हैं अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी ३२७६८ प्रमाण अवहारकालका प्रमाण आता है ।

अब यहाँ भागहारकी अर्धच्छेद शलाकाओंके लानेकी विधि कहते हैं— जितने स्थान ऊपर गये हों उतनी वर्गशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे तीनसे गुणा करके लब्ध राशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उसे जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद मिला देने पर विवक्षित अवहारकालके अर्धच्छेद होते हैं । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें लगा लेना चाहिये । इसप्रकार गृहीतप्ररूपणा समाप्त हुई ।

$$\text{उदाहरण—एक स्थान ऊपर गये इसलिये } २ = २ \times ३ = ६ - १ = ५ \times १६ = ८० + १$$

$$= ८१ \text{ अर्ध.}$$

जगश्रेणीके समान द्विरूपवर्गका जो उपरिम वर्ग हो उसके असंख्यातवें भागरूप, जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप और घनलोकके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये । इसप्रकार अवहारकाल प्ररूपणा समाप्त हुई ।

इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है (  $४२९४९६७२९६ \div ३२७६८ = १३१०७२$  ) । यहाँ पर खण्डित, भाजित,

एत्थ खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदपरूवणाओ पुव्वं व परूवेदव्वाओ । तत्थ पमाणं वत्तइस्सामो । तं जन्धा—जगपदरस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जजाओ सेटीओ । पमाणं गदं । केण कारणेण ? सेटीए जगपदरे भागे हिदे सेटी आगच्छदि । सेटिदुभागेण जगपदरे भागे हिदे दोणिण सेटीओ आगच्छंति । सेटितिभागेण जगपदरे भागे हिदे तिणिण सेटीओ आगच्छंति । एवं गंतूण विक्खंसंभसूचीभजिदसेटीए जगपदरे भागे हिदे असंखेज्जजाओ सेटीओ आगच्छंति चि वुत्तं । कारणं गदं । गिरुत्ति वत्तइस्सामो । सेटीए असंखेज्जदिभागेण सेटिम्हि भागे हिदे तत्थागदाणि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाओ सेटीओ । अहवा विक्खंसंभसूईरूवमेत्ताओ । गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि । कारणं पुव्वं व वत्तव्वं । अट्ठरूवे हेट्ठिमवियप्पं

विरलित और अपहतकी प्ररूपणा पहलेके समान करना चाहिये ( देखो पृष्ठ ४१, ४२ ) । अब नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातवें भाग है जो असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $४२९४९६७२९६ \div ३२७६८ = १३१०७२ =$  असंख्यातरूप २ जगश्रेणियोंके ।

शंका—नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण जो जगप्रतरके असंख्यातवें भाग कहा है वह असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण किस कारणसे है ?

समाधान—जगश्रेणीसे जगप्रतरके भाजित करने पर जगश्रेणी आती है ( $४२९४९६७२९६ \div ६५५३६ = ६५५३६$ ) जगश्रेणीके द्वितीय भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर दो जगश्रेणियां आती हैं ( $४२९४९६७२९६ \div ३२७६८ = १३१०७२$ ) । जगश्रेणीके तीसरे भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर तीन जगश्रेणियां आती हैं ( $४२९४९६७२९६ \div २१८४५३ = १९६६०८$ ) । इसप्रकार उत्तरोत्तर जाकर विष्कंभसूचीसे भाजित जगश्रेणीका जगप्रतरमें भाग देने पर असंख्यात जगश्रेणियां लब्ध आती हैं, ऐसा कहा है । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

उदाहरण— $६५५३६ \div २ = ३२७६८$ ;  $४२९४९६७२९६ \div ३२७६८ = १३१०७२$  बराबर असंख्यात जगश्रेणियोंके ।

अब निरुक्तिका कथन करते हैं—जगश्रेणीके असंख्यातवें भागसे जगश्रेणीके भाजित करने पर वहां जो प्रमाण लब्ध आवे उतनी जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें ली हैं । अथवा, विष्कंभसूचीका जितना प्रमाण है उतनी जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागमें ली हैं । इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

उदाहरण—जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग  $३२७६८$ ;  $६५५३६ \div ३२७६८ = २$  जगश्रेणियां । अथवा, विष्कंभसूची २, अतएव विष्कंभसूची २ प्रमाण जगश्रेणियां ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे पहले

वत्तइस्सामो । सेठीए असंखेज्जदिभागभूदअवहारकालेण सेठिम्हि भागे हिदे तत्थागदेण सेठिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि । अधवा विक्खंभसूचीरूवेहि सेठिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि । अहवा अवहारकालेण सेठिविदियवग्गमूलमवहरिय लद्धेण तं चेव गुणिदे तेण सेठिपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण सेठिम्हि गुणिदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण सेठितदियवग्गमूलमवहरिय लद्धेण तं चेव गुणिय तेण सेठिविदियवग्गमूलं गुणिय तेण पढमवग्गमूलं गुणिय तेण गुणिदरासिणा सेठिम्हि गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि । एवं हेद्वा वि जाणिऊण वत्तव्वं । घणाघणे वत्तइस्सामो ।

अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं— प्रकृतमें द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है । यहां कारणका कथन पढ़लेके समान कहना चाहिये ।

विशेषार्थ—यदि जगश्रेणीके किसी भी वर्गमूलमें अवहारकालका भाग दिया जाता है तो नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि उत्पन्न नहीं हो सकती है, इसलिये यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है यह कहा ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— जगश्रेणीके असंख्यातवें भागभूत अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण आवे उससे जगश्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} ६५५३६ \div ३२७६८ = २; ६५५३६ \times २ = १३१०७२ ।$$

अथवा, विष्कंभसूचीके प्रमाणसे जगश्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} ६५५३६ \times २ = १३१०७२ ।$$

अथवा, अवहारकालके प्रमाणसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके गुणित करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} १६ \div ३२७६८ = \frac{१}{२०४८}; १६ \times \frac{१}{२०४८} = \frac{१}{१२८}; २५६ \times \frac{१}{१२८} = २;$$

$$६५५३६ \times २ = १३१०७२ ।$$

अथवा, अवहारकालके प्रमाणसे जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । इसप्रकार नीचे भी जानकर कथन करना चाहिये ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \div ३२७६८ = \frac{१}{८१९२}; ४ \times \frac{१}{८१९२} = \frac{१}{२०४८}; १६ \times \frac{१}{२०४८} = \frac{१}{१२८};$$

सेढीए असंखेज्झदिभागेण अवहारकालेण सेढिं गुणेऊण तेण घणलोगे भागे हिदे मिच्छा-  
इट्ठिरासी आगच्छदि । तं कथं ? सेढिणा घणलोगे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो  
वि भागहारेण जगपदरे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण  
सेढिं गुणेऊण घणलोगपदमवगमूलमवहरिय तेण तं चेव गुणिदे मिच्छाइट्ठिरासी होदि ।  
एवं हेट्ठा जाणिऊण वचव्वं । हेट्ठिमवियप्पो गदो ।

उपरिमवियप्पो तिबिहो, गहिदे। गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं  
वचइस्तामो । नेरइयमिच्छाइट्ठिरासिअवहारकालेण जगपदरसमाणवेरूववग्गं गुणेऊण तेण  
तच्चगवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । तं कथं ? जगपदरसमाणवेरूव-  
वग्गे तच्चगवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे

$$२५६ \times \frac{१}{१२८} = २, ६५५३६ \times २ = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप  
अवहारकालसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके भाजित करने पर  
नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगश्रेणीसे घनलोकके भाजित करने पर  
जगप्रतर आता है । पुनः भागहारसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीव-  
राशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६^३}{६५५३६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

अथवा, अवहारकालसे जगश्रेणीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनलोकके  
प्रथम वर्गमूलको अपहत करके जो प्रमाण आवे उससे उसी घनलोकके प्रथम वर्गमूलको  
गुणित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । इसीप्रकार नीचेके स्थानोंमें जानकर  
कथन करना चाहिये । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{२५६^३}{६५५३६ \times ३२७६८} = १२८, २५६^३ \times १२८ = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे  
पहले गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहार-  
कालसे जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे उस द्विरूपवर्गके  
वर्गमें भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गका  
उसके वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है, पुनः अवहारकालका जगप्रतरमें  
भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९६७२९६^३}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

भागे हिंदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदण कदे वि मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । एदस्स अद्धच्छेदणया केत्तिया ? अवहारद्धच्छेदणयसिद्धिजगपदरसमाणवेरूववग्गच्छेदणयमेत्ता । उवरि अद्धच्छेदणयमेल-  
वणविहाणं जाणिऊण वत्तच्च । वेरूवपरूवणा गदा । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । अवहारकालेण जगपदरे भागे हिंदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । घणंगुलविदियवग्गमूलद्धच्छेदणएहि ऊणसेदिअद्धच्छेदणयमेत्ते जगपदरस्स अद्धच्छेदण कदे वि मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । अहवा अवहारकालेण जगपदरं गुणेऊण तेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिंदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । तं जहा—जगपदरेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिंदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदरे भागे हिंदे मिच्छाइट्टिरासी आगच्छदि । एदस्स भागहारस्स

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ४७ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

शंका—उक्त भागहारके अर्धच्छेद कितने हैं ?

समाधान—जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गके जितने अर्धच्छेद हों उनमें अवहारकालके अर्धच्छेद मिला देने पर उक्त भागहारके अर्धच्छेदोंका प्रमाण होता है ।

उदाहरण—जगप्रतरसमान द्विरूपवर्ग ४२९४९६७२९६ के अर्धच्छेद ३२, ३२७६८ के १५; अतएव ३२ + १५ = ४७ अ. ।

ऊपरके स्थानोंमें भी अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधि जानकर कहना चाहिये । इसप्रकार द्विरूपप्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब अष्टरूपमें शुद्धीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—४२९४९६७२९६ ÷ ३२७६८ = १३१०७२ सा. ना. मि.

अथवा, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेदोंको जगश्रेणीके अर्धच्छेदोंमेंसे कम करके जो प्रमाण शेष रहे उतनीवार जगप्रतरके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—६५५३६ प्रमाण जगश्रेणीके अर्धच्छेद १६ मेंसे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूल २ के अर्धच्छेद १ कम करने पर १५ शेष रहते हैं, अतः १५ बार ४२९४९६७२९६ प्रमाण जगप्रतरके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

अथवा, अवहारकालसे जगप्रतरको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका जगप्रतरके उपरिम वर्गमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—जगप्रतरका उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगप्रतर आता है । पुनः

अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । एत्थ अद्वच्छेदणयमेलावणविहाणं पुवं व वत्तवं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु गेयवं । अद्वच्छेदणपरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । अवहारकालगुणिदजगपदरउवरिमवग्गेण घणलोगउवरिमवग्गे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । केण कारणेण ? जगपदरउवरिमवग्गेण घणलोगुवरिमवग्गे भागे हिदे जगपदरमागच्छदि । पुणो वि अवहारकालेण जगपदे भागे हिदे मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मिच्छाइट्ठिरासी आगच्छदि । एत्थ अद्वच्छेदणयमेलावणविहाणं पुवं व वत्तवं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु गेयवं । गहिदपरूवणा गदा ।

अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{४२९४९६७२९६}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

इस भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ३२ + १५ = ४७ अर्धच्छेद हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका पहलेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बतलाते हैं—जगप्रतरके उपरिम वर्गको अवहारकालसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है, क्योंकि, जगप्रतरके उपरिम वर्गका घनलोकके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जगप्रतरका प्रमाण आता है । पुनः अवहारकालका जगप्रतरमें भाग देने पर नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{६५५३६}{४२९४९६७२९६ \times ३२७६८} = १३१०७२ \text{ सा. ना. मि.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

उदाहरण—उक्त भागहारके ७९ अर्धच्छेद होते हैं, अतः इतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी विधिका पहलेके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्तस्थानोंमें भी ले जाना चाहिये । इसप्रकार गृहीत उपरिम विकल्प प्ररूपणा समाप्त हुई ।

जगपदरसमाणवेरूववग्गवग्गस्स असंखेज्जदिभागेण जगपदरस्स असंखेज्जदिभागेण  
घणलोगस्स असंखेज्जदिभागेण च गेरइयमिच्छाइड्डिरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो  
च वत्तव्वो । मिच्छाइड्डिरासिपरूवणा समत्ता ।

**सासनसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइडि त्ति दव्वपमाणेण  
केवडिया, ओधं ॥ १८ ॥**

ओघस्मि वुत्ततिग्णिगुणट्टाणरासी सव्वा वि गेरइयाणं तिग्णिगुणट्टाणरासि-  
मेत्ता चेव होदि त्ति वुत्ते सेसगदीसु तिण्हं गुणट्टाणाणमभावो पसज्जदे ? ण एस दोसो,  
गेरइयाणं तिण्हं गुणट्टाणाणं पमाणस्स ओघतिगुणट्टाणपमाणेण पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदि-  
भागत्तं पडि विसेसाभावादो एयत्ताविरोहा । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंघिज्जमाणे भेदो  
दोण्हमत्थि चेव, सेसतिगदितिण्हं गुणट्टाणाणं पमाणपरूवणाणमुवरि उच्चमाणसुत्ताणं

जगप्रतरके समान द्विरूपवर्गका जितना उपरिम वर्ग हो उसके असंख्यातवें भागरूप,  
जगप्रतरके असंख्यातवें भागरूप और घनलोकके असंख्यातवें भागरूप नारक मिथ्यादष्टि  
जीवराशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार मिथ्यादष्टिराशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक  
गुणस्थानमें नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? गुणस्थान प्ररूपणाके  
समान हैं ॥ १८ ॥

शंका—गुणस्थानोंमें कही गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशि संपूर्ण नारकियोंके  
तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिके बराबर ही होती है, ऐसा कहने पर शेष तीन गतियोंमें  
तीनों गुणस्थानोंका अभाव प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, नारकियोंके तीन गुणस्थानसंबन्धी  
जीवराशिके प्रमाणकी सामान्यसे कही गई तीन गुणस्थानसंबन्धी जीवराशिके प्रमाणके साथ  
पत्थोपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति कोई विशेषता नहीं है, इसलिये इन दोनोंको समान  
मान लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने पर दोनोंमें  
भेद है ही । यदि ऐसा न माना जाय तो शेषकी तीन गतिसंबन्धी सासादनादि तीन गुणस्थानोंकी  
जीवराशिके प्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये कहे गये सूत्रोंकी सफलता नहीं बन सकती है । अब

सकलत्तण्णहाणुववत्तीदो । तस्स भेदस्स परूवणहं सासणसम्माइड्डिआदिगुणपडिवण्णाणं अवहारकाले वत्तइस्सामो । तं जहा—

ओघअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालं विरलेऊण पलिदोवमं समखंडं करिय दिण्णे एकेकस्स रूवस्स असंजदसम्माइड्डिद्व्यपमाणं पावेदि । देवगइं मोत्तूण सेसतिगदि-असंजदसम्माइड्डिरासी सामण्णअसंजदसम्माइड्डिरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । ओघअसंजदसम्माइड्डिरासिस्स असंखेज्जा भागा देवाणमसंजदसम्माइड्डिरासी होदि । कुदो ? देवेसु बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाण-मुवलंभादो । देवाणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणाणि काणि चे ? जिणविंविद्धिमहिमादंसण-जाइ-स्सरण-महिद्धिंदादिदंसण-जिणपायमूलधम्मसवणादीणि । तिरिक्खणेइया पुण गरुवपाव-

उक्त भेदके प्ररूपण करनेके लिये सासादनसम्यग्दष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण लानेके लिये अवहारकालोंको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

सामान्यसे कहे गये असंयतसम्यग्दष्टिसंबन्धी अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पल्योपमको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण— १६३८४ १६३८४ १६३८४ १६३८४ एक विरलनके प्रति प्राप्त असं-  
१ १ १ १ यतसम्यग्दष्टि जीवराशि ।

इसमें देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिको छोड़कर शेष तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशि सामान्य असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिके असंख्यातवें भाग-प्रमाण है ।

शंका— शेष तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप लानेके लिये प्रतिभागका प्रमाण क्या है ?

समाधान—आवलीका असंख्यातवां भाग प्रतिभागका प्रमाण है ।

सामान्यसे कही गई असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिका असंख्यात बहुभागप्रमाण देवोंसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशि है, क्योंकि, देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे कारण पाये जाते हैं ।

शंका — देवोंमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके कारण कौनसे हैं ?

समाधान — जिनबिम्बसंबन्धी अतिशयके माहात्म्यका दर्शन, जातिस्मरणका होना, महाचक्रिक इन्द्रादिकका दर्शन और जिनदेवके पादमूलमें धर्मका श्रवण आदि देवोंमें सम्प्रसूतोत्पत्तिके कारण हैं । परंतु तिर्य्यक और नारकी गुरुतर पापोंके भारसे नथे और बंधे होनेसे, अतिशय



भोरण णत्थणद्धत्तादो संकिलिट्ठधरत्तादो' मंदबुद्धित्तादो बहूणं सम्मत्तुप्पत्तिकारणानामभावादो च सम्माइडिणो धोवा हवंति । तदो तिगदिअसंजदसम्माइडिरासिणा उवरिमैगरूवधरिदं ओघासंजदसम्माइडिद्वमवहरिय तत्थागदमावलिपाए असंखेजदिभागं विरलेऊण ओघा-संजदसम्माइडिद्वं समखंडं करिय दिण्णे हेट्टिमविरलणरूवं पडि सेसतिगदिअसंजद-सम्माइडिरासिपमाणं पावदि । तप्पमाणं उवरिमविरलणाए उवरिमरूवं पडि ट्टिदओघा-संजदसम्माइडिद्वम्वि अवणेयव्वं । एवमवणिदे उवरिमविरलणमेत्ता चेव देवअसंजद-सम्माइडिरासीओ तिगदिअसंजदसम्माइडिरासीओ च भवंति । पुणो उवरिमविरलणमेत्त-तिगदिअसंजदसम्माइडिरासि देवअसंजदसम्माइडिरासिपमाणेण कस्सामो । तं जहा —

रूव्वणेहेट्टिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइडिद्वेसु उवरिमविरलणम्वि  
ट्टिदेसु समुदिदेसु एगं देवअसंजदसम्माइडिरासिपमाणं लब्भदि, अवहारकालम्वि एगा

संखिलिष्ठ परिणामी होनेसे, मन्दबुद्धि होनेसे और उनमें सम्यक्त्वकी उत्पत्तिके बहुतसे कारणोंका अभाव होनेसे सम्यग्दृष्टि थोड़ी होती है ।

तदनन्तर उपरिम विरलनके एकके प्रति रक्खी हुई सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीव-राशिको तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे भाजित करके वहां जो आवलीका असंख्यातवां भाग लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । इस प्रमाणको उपरिम विरलनके उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य असंयत-सम्यग्दृष्टि द्रव्यमेंसे निकाल देना चाहिये । इसप्रकार निकाल देने पर उपरिम विरलनमात्र देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियां और तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशियां होती हैं ।

उदाहरण—तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि ४०९६;

४०९६	४०९६	४०९६	४०९६
$१६३८४ \div ४०९६ = ४;$	१	१	१

इस ४०९६ को उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त १६३८४ में घटा देने पर १२२८८ आते हैं । यही देवगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है, और ४०९६ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है ।

अब आगे उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको देव असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिके प्रमाणसे करके बतलाते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित उपरिम विरलनमें स्थित तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यको समुदित कर देने पर एक देव

चेव पक्खेवसलागा । पुणो वि एत्तियमेत्तेसु चेव उवरिमविरलगम्हि तिगादिअसंजद-  
सम्माइड्डिव्वेसु समुदिदेसु देवअसंजदसम्माइड्डिव्वं लब्भदि, अवहारकालम्हि विदिया  
च पक्खेवसलागा । एवं पुणो पुणो कीरमाणे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ  
अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति, हेट्ठिमविरलणादो उवरिमविरलणाए असंखेज्ज-  
गुणत्ता । एदासिमवहारकालपक्खेवसलागाणमेगवारेण आगमणविहिं वत्तइस्सामो ।  
हेट्ठिमविरलणरूवूणमेत्ततिगदिअसंजदसम्माइड्डिव्वेसु जदि एगा अवहारकालपक्खेव-  
सलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमेत्तेसु तिगदिअसंजदसम्माइड्डिव्वेसु केत्तियाओ  
पक्खेवसलागाओ लभामो त्ति रूवूणहेट्ठिमविरलणाए उवरि विरलिदओधअसंजदसम्मा-  
इड्डिस्स अवहारकाले भागे हिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेव-  
सलागाओ लब्भंति । ताओ ओघअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालम्हि पक्खिचे देवअसंजद-  
सम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे देवसम्मामिच्छा-  
इड्डिअवहारकालो होदि, असंजदसम्माइड्डिउवक्कमणकालादो सम्मामिच्छाइड्डिउवक्कमण-  
कालस्स असंखेज्जगुणहीणत्ता । तं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे देवसासनसम्माइड्डिअवहारकालो

असंयतसम्यग्दष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशलाका  
प्राप्त होती है । फिर भी एक कम अधस्तन विरलनमात्र उपरिम विरलनमें स्थित तीन  
गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्यके समुदित कर देने पर देव असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्यका  
प्रमाण प्राप्त होता है और अवहारकालमें दूसरी प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुनः  
पुनः करने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाप्राप्त होती हैं,  
क्योंकि, अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंख्यातगुणा है । अब इन अवहारकाल  
प्रक्षेपशलाकाओंके एकवारमें लानेकी विधिको बतलाते हैं— एक कम अधस्तन विरलनमात्र  
तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्यमें यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है  
तो उपरिम विरलनमात्र अर्थात् उपरिम विरलनगुणित तीनगतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि  
द्रव्योंमें कितनी प्रक्षेपशलाकाप्राप्त होंगी, इसप्रकार ( त्रैराशिक करके ) एक कम अधस्तन  
विरलनका ऊपर विरलित ओघ असंयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालमें भाग देने पर आवलीके  
असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाप्राप्त होती हैं । उन प्रक्षेपशलाकाओंको  
ओघ असंयतसम्यग्दष्टिके अवहारकालमें मिला देने पर देव असंयतसम्यग्दष्टि अवहारकालका  
प्रमाण आता है ।

उदाहरण— एक कम अधस्तन विरलन ३; उपरिम विरलन ४;  $४ \div ३ = \frac{४}{३}$ ;

$$४ + \frac{४}{३} = \frac{१६}{३}; ६५५३६ \div \frac{१६}{३} = १२२८८ \text{ देव असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्य ।}$$

$$१६३८४ - १२२८८ = ४०९६ \text{ तीन गतिसंबन्धी असंयतसम्यग्दष्टि द्रव्य ।}$$

देव असंयतसम्यग्दष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित  
करने पर देव सम्यग्मिथ्यादष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाल होता है, क्योंकि, असंयत-  
सम्यग्दष्टिके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादष्टिका उपक्रमणकाल असंख्यातगुणा हीन है । देव

होदि, तदो संखेज्जगुणहीण-उवक्कमणकालत्तादो । सम्मामिच्छत्तं पडिवज्जमाणरासिस्स संखेज्जदिभागेत्ता उवसमसम्माइडिणो सासणगुणं पडिवज्जंति त्ति वा । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे तिरिक्खसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसंजदअवहारकालो होदि, अपच्चक्खणावरणाणमुदयाभावस्स अइदुल्ल-हत्तादो । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे गेरइयअसंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे गेरइयसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जरूवेहि गुणिदे गेरइयसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदेवमे भागे हिदे अप्पणो दव्वमागच्छदि ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसंबन्धी अवहारकाल प्राप्त होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिके उपक्रमणकालसे सासादनसम्यग्दृष्टिका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा हीन है । अथवा, सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानको प्राप्त होनेवाली जीवराशिके संख्यातवें भागमात्र उपशमसम्यग्दृष्टि जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानको प्राप्त होते हैं, इसलिये भी देव सम्यग्मिथ्यादृष्टिके अवहारकालसे देव सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल संख्यातगुणा है । देव सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच असंयत-सम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यंच संयतासंयतसंबन्धी अवहारकाल होता है, क्योंकि, अप्रत्याख्यानवरण कषायका उदयाभाव अत्यंत दुर्लभ है । तिर्यंच संयतासंयतसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नारक असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । नारक असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर नारक सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । इन उपर्युक्त अवहारकालोंसे पण्योपमके भाजित करने पर अपना अपना द्रव्यका प्रमाण आता है ।

१ ओषासंजदमिसससासणसम्माण भागहारा जे । रूवूणावलियासंखेज्जेणिह भाजिय तत्थ णिविखत्ते ॥ देवाणं अवहारा हंति ×× । गो. जी. ६३४, ६३५.

## एवं पठमाए पुठवीए गेरइयां ॥ १९ ॥

णं पुव्वं सामण्णगेरइयमिच्छाइट्ठिआदिरासिस्स पमाणपरूवणा परूविदा, पठम-  
विदियपुठविआदिविसेसाभावादो । पुणो जदि पुव्वपरूविदसव्वरासी पठमाए पुठवीए  
भवदि तो विदियादिपुठवीसु जीवाभावो पसज्जदं । ण च एवं, 'विदियादि जाव सत्तमाए  
पुठवीए गेरइएसु मिच्छाइट्ठि दव्वपमाणेण केवडियां' इच्चादिसुत्तेहि सह विरोहादो, तम्हा  
सामण्णगेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई पठमपुठविमिच्छाइट्ठिणं विक्खंभसूई ण हवदि । तदो  
सामण्णपरूविदअवहारकालो वि पठमपुठविगेरइयाणं ण भवदि । एवं सेसगुणपडिवण्णाणं  
पि अवहारकालवड्डी वत्तव्वा । तम्हा एवं पठमाए पुठवीए णेयव्वमिदि णेदं घडदे ?  
ण एस दोसो, असंखेज्जेसिट्ठिणेण पदरस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण विदियवग्गमूलगुणिद-  
अंगुलवग्गमूलमेत्तविक्खंभसूचित्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तणेण च पठमपुठवि-

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणके समान पहली पृथिवीमें नारक जीव-  
राशि है ॥ १९ ॥

शंका—पहले सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि आदि जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण किया,  
क्योंकि, सामान्य प्ररूपणमें पहली पृथिवी, दूसरी पृथिवी आदिके विशेषप्ररूपणका अभाव है ।  
किर यदि पहले प्ररूपण की हुई संपूर्ण जीवराशि पहली पृथिवीमें ही होती है तो द्वितीयादि  
पृथिवियोंमें जीवोंका अभाव प्राप्त होता है । परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर  
'दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक मिथ्यादृष्टि नारकी द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने  
हैं' इत्यादि सूत्रोंके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध प्राप्त होता है । इसलिये सामान्य नारक  
मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची नहीं हो  
सकती है । और इसीलिये सामान्यसे कहा गया अवहारकाल भी प्रथम पृथिवीके नारकियोंका  
अवहारकाल नहीं हो सकता है । इसीप्रकार प्रथम पृथिवीके शेष गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका  
भी अवहारकालकी वृद्धिका कथन करना चाहिये । इसलिये इसीप्रकार पहली पृथिवीमें ले  
जाना चाहिये यह सूत्रार्थ घटित नहीं होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, असंख्यात जगत्त्रेणियोंकी अपेक्षा,  
जगत्प्रतरके असंख्यातवें भागकी अपेक्षा सूक्ष्मगुलके द्वितीय वर्गमूलसे गुणित प्रथम वर्गमूल-  
प्रमाण विष्कंभसूचीकी अपेक्षा और पल्योपमके असंख्यातवें भागकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीसंख्या

१ नरकगतौ प्रथमायां पृथिव्यां नारका मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः त्रेणयः प्रतरासंख्येयमागप्रमिताः । ब. सि.  
१, ८. हेट्ठिमल्लपुठवीणं रासिविहीणो दु सव्वरासी दु । पठमावणिग्गिह रासी गेरइयाणं तु णिदिट्ठो । गो. जी. १५४.  
सेदीएक्केक्कपएसइयसूईणमंगुलप्पमिं । वम्माए XX । पञ्चसं. २, १७. अहवंगुलप्पएस समुल्लुणिया उ नेरइय-  
सूई । पञ्चसं. २, १९. भवणवासीणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ । इमीसे रयणप्पमाए पुठवीए नेरइया असंखेज्जगुणा ।  
पञ्चसं. २, १६ स्तो. टी. ( महादण्डक ).

परूवणाए सामण्णेरइयपरूवणादो विसेसाभावादो । पुणो पज्जवडियणए अवलंबिज्जमाणे विसेसो अत्थि चैव, अण्णहा विदियादिपुढवीसु जीवाभावप्पसंगादो । तं विसेसं वत्त-  
इस्सामो । तं जहा— पढमपुढविणेरइयाणं दव्व-कालपमाणेसु भण्णमाणेसु ओघदव्व-काल-  
पमाणाणि चैव असंखेज्जदिभागहीणाणि हवंति । तहा खेत्तपमाणं पि ओघखेत्तपमाणादो  
असंखेज्जदिभागूणं भवदि । तं कथं जाणिज्जेदं ? ‘विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए  
णेरइया खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो’ इदि पुरदो वुच्चमाणमुत्तादो णव्वदे जहा  
ओघणेरइयमिच्छाहडिदव्वादो पढमपुढविणेरइयमिच्छाहडिदव्वं सेढीए असंखेज्जदिभागेण  
हीणमिदि । एदं सुत्तमवलंबिय पढमपुढविणेरइयमिच्छाहडिदं विक्खंभसूई उप्पाइस्सामो ।  
तं जहा— ओघणेरइयमिच्छाहडिरासीदो एगसेट्ठिअवणयणं पडि जदि विक्खंभसूचिम्हि  
एगसलागाए अवणयणं लब्भदि तो किंचूणवारसवग्गमूलभजिदसेट्ठिम्हि किं लभामो त्ति  
सेढीए फलगुणिदिच्छामोवड्ठिदे किंचूणवारसवग्गमूलभजिदं गरूपमागच्छदि । एदं

प्ररूपणामें सामान्य नारकियोंकी प्ररूपणासे कोई विशेषता नहीं है । परंतु पर्यायार्थिक नयका  
अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणासे प्रथम पृथिवीसंबन्धी प्ररूपणामें विशेषता है ही । यदि  
ऐसा न माना जाय तो द्वितीयादि पृथिवियोंमें जीवोंके अभावका प्रसंग आ जायगा । आगे  
उसी विशेषताको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

पहली पृथिवीके नारकियोंके द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाणका कथन करने पर  
सामान्यसे कहे गये द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणको असंख्यातवें भाग न्यून कर देने पर  
पहली पृथिवीके नारकियोंका द्रव्य और कालकी अपेक्षा प्रमाण होता है । उसीप्रकार पहली  
पृथिवीके नारकियोंका क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण भी सामान्यसे कहे गये क्षेत्रप्रमाणसे असंख्यातवां  
भाग न्यून है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — ‘दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक नारकी जीव द्रव्यप्रमाणकी  
अपेक्षा कितने हैं ? जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग हैं’ इसप्रकार आगे कहे जानेवाले सूत्रसे  
जाना जाता है कि नारक सामान्य मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यप्रमाणसे पहली पृथिवीके नारक  
मिथ्यादृष्टि जीवोंका द्रव्यप्रमाण जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग हीन है ।

अब आगे इस द्वितीयादि पृथिवियोंके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रका अवलंबन  
लेकर पहली पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची उत्पन्न करते हैं । वह इसप्रकार  
है— जब कि सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमेंसे एक जगश्रेणी कम करने पर विष्कंभ-  
सूचीमें एक शलाका कम होती है, तो कुछ कम अपने बारहवें वर्गमूलसे भाजित जगश्रेणीमें  
कितना प्रमाण प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके इच्छराशि अपने कुछ कम बारहवें वर्ग-  
मूलसे भाजित जगश्रेणीको फलराशि एकसे गुणित करके जगश्रेणीसे अपवर्तित करने पर, एकमें  
जगश्रेणीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उतना आता है ।

सामण्णेरइयमिच्छाइडिबिक्खंभसूचिम्हि अवणिदे पढमपुढविणेइयमिच्छाइडिरासिस्स विक्खंभसूई होदि'। एदीए विक्खंभसूईए जगसेदिम्हि भागे हिदे पढमपुढविणेइय-मिच्छाइडिअवहारकालो होदि ।

उदाहरण—बारहवां वर्गमूल ४; किंचित् ऊन बारहवां वर्गमूल  $\frac{१२८}{६३}$ ;

$$६५५३६ \div \frac{१२८}{६३} = ३२२५६; ३२२५६ \times १ = ३२२५६;$$

$$३२२५६ \div ६५५३६ = \frac{६३}{१२८} = १ \div \frac{१२८}{६३};$$

इस किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूलभाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि राशिकी विष्कंभसूची होती है। इस विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके भाजित करने पर प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवधारकाल होता है।

उदाहरण—२ -  $\frac{६३}{१२८} = \frac{१९३}{१२८}; \frac{६५५३६}{१} \div \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३};$  प्र. पृ. मि. अव.।

विशेषार्थ—जगश्रेणीके बारहवें, दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलका जगश्रेणीमें भाग देने पर क्रमसे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका द्रव्य आता है। और इन छहों नरकोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका जितना प्रमाण हो उसे सामान्य मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। पहले सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण बतलाते समय उनकी विष्कंभसूची घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण बतलाई है, अर्थात् घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतनी जगश्रेणियोंको एकत्रित करने पर उनके प्रदेशप्रमाण सामान्य मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है। अब यदि प्रथम नरकके नारकियोंके प्रमाण लानेके लिये विष्कंभसूची लाना हो तो द्वितीयादि नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंके प्रमाणमें जगश्रेणीका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सामान्य विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरककी विष्कंभसूची आ जाती है। उदाहरणार्थ—दूसरे नरकका १६३८४, तीसरेका ८१९२, चौथेका ४०९६, पांचवेंका २०४८, छठेका १०२४ और सातवेंका ५१२ द्रव्य मान लेने पर इनमें जगश्रेणी ६५५३६ का भाग देने पर क्रमसे  $\frac{३}{४}, \frac{३}{४}, \frac{३}{४}, \frac{३}{४}, \frac{३}{४}$  और  $\frac{३}{४}$  आता है, जिनका जोड़  $\frac{३}{४}$  होता है। इसे सामान्य विष्कंभसूची २ मेंसे घटा देने पर  $\frac{३}{४}$  प्रमाण प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूची होती है। इसी व्यवस्थाको ध्यानमें रखकर ऊपर यह कहा गया है कि किंचित् ऊन बारहवें वर्गमूल भाजित एकरूपको सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर प्रथम नरकके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका प्रमाण

१ तन्हा पुट्टिबिक्खंभसूची (सासण्णेरइयविक्खंभसूची) एगस्वरस अंसखेज्जदिमाणेण्णा पदम-पुढविणेइयय विक्खंभसूची होदि । धवला; पन्. ५१८ अ.

अहवा अवरेण पयारेण अवहारकालो उप्पाइज्जेदं । तं जहा- सामण्यअवहारकालं विरलेऊण रुवं पडि जगपदरं समखंडं करिय दिण्णे एकैकस्स रुवस्स सामण्णणेरइय- मिच्छाइडिरासिपमाणं पावेदि । पुणो तत्थ एगरुवधरिदसामण्णणेरइयमिच्छाइडिरासिभिह छपुढविमिच्छाइडिरासिणा भागे हिदे किंचूणवारसवग्गमूलगुणिदसामण्णणेरइयमिच्छा- इट्ठिविक्खंभसूची आगच्छदि । एदं पुव्वाविरलणाए हेट्ठा विरालिय उवरि एगरुवधरिद- सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रुवं पडि छपुढविमिच्छाइडिरासि- पमाणं पावेदि । तं उवरिमविरलणाए ट्ठिदसामण्णणेरइयमिच्छाइडिरासिभिह पुध पुध अवणिदे उवरिमविरलणमेचा पढमपुढविमिच्छाइडिरासीओ भवंति । छपुढविमिच्छाइडि- रासीओ वि तावदिया चेव ।

लानेके लिये विष्कंभसूची होती है । यहाँ किंचित ऊन बारहवें वर्गमूलसे द्वितीयादि नरकोंके मिथ्यादृष्टि राशिका सम्मिलित अवहारकाल अभिप्रेत है ।

अथवा, दूसरे प्रकारसे प्रथम पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं । वह इसप्रकार है— सामान्य अवहारकालका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगप्रतरको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः उस विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिमें द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भाग देने पर कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी विष्कंभसूची आती है । इसे पूर्व विरलनके नीचे विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति द्वितीयादि छह पृथिवीसंबन्धी नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आ जाता है । उसे उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमेंसे पृथक् पृथक् निकाल देने पर उपरिम विरलनका जितना प्रमाण है उतनी प्रथम पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियां होती हैं । द्वितीयादि छह पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशियां भी उतनी ही होती हैं ।

उदाहरण—छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि राशि ३२२५६:

$$\begin{array}{ccc} १३१०७२ & १३१०७२ & ३२७६८ \text{ बार,} \\ १ & १ & \end{array}$$

$$१३१०७२ \div ३२२५६ = \frac{२५६}{६३} = २ \times \frac{१२८}{६३};$$

$$\begin{array}{ccccccc} ३२२५६ & ३२२५६ & ३२२५६ & ३२२५६ & २०४८ & \text{इस ३२२५६ को उप-} \\ १ & १ & १ & १ & ४ & \text{रिम विरलनके प्रत्येक} \\ & & & & ६३ & \text{एकके प्रति प्राप्त} \end{array}$$

१३१०७२ मेंसे घटा देने पर ९८८१६ प्रमाण प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं और शेष ३२२५६ प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि द्रव्य राशियां होती हैं ।



पुणो उवरिमविरलणमेत्तच्छप्पुढविमिच्छाइड्डिद्वं पढमपुढविमिच्छाइड्डिद्ववपमाणेण कस्सामो । तं जहा—रूवूणहेट्टिमविरलणमेत्तच्छप्पुढविद्वेसु उवरिमविरलणमिह समुदिदेसु पढमपुढविमिच्छाइड्डिपमाणं होदि । तत्थ एणा अवहारकालसलागा लब्भइ । पुणो वि उवरिमविरलणमिह तत्तिएसु चेव छप्पुढविद्वेसु समुदिदेसु अवरेणं पढमपुढविमिच्छा-इड्डिपमाणं होदि, विदिया च अवहारकालपक्खेवसलागा लब्भइ । एवं पुणो पुणो कीरमाणे रूवूणहेट्टिमविरलणादो उवरिमविरलणा असंखेज्जगुणा चि कडु सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ लब्भंति । तासिमेगवारेणाणयण-विही वुच्चे । तं जहा—रूवूणहेट्टिमविरलणमेत्तच्छप्पुढविद्वेस्स जदि एणा अवहारकाल-पक्खेवसलागा लब्भदि, तो सामण्णेरइयमिच्छाइड्डिअवहारकालमेत्तच्छप्पुढविमिच्छा-इड्डिद्वस्स केत्तियाओ लभामो चि सरित्तमवणिय रूवूणहेट्टिमविरलणाए सामण्ण-अवहारकालमिह भागे हिदे अवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति । ताओ सरित्तजेदं काळण सामण्णेरइयमिच्छाइड्डिअवहारकालमिह 'पक्खित्ते' पढमपुढविमिच्छाइड्डिअवहार-

अब उपरिम विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यको प्रथम पृथिवीगत मिथ्या-दृष्टि द्रव्यप्रमाणरूप करते हैं । उसका स्पर्धीकरण इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक कम अधस्तन विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और वहां एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । पुनः उपरिम विरलनमें उतने ही अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनमात्र छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित करने पर दूसरीवार प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरी अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर एक कम अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असेख्यातगुणा है, इसलिये जगत्त्रेणिके असेख्यातवै भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्प प्राप्त होती हैं । आगे उन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंकी एकवार लानेकी विधिको बतलते हैं । वह इसप्रकार है—

एक कम अधस्तन विरलनमात्र अर्थात् एक कम अधस्तन विरलनगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक अवहारकालगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रति कितनी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्प प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिकमें सदृशका अपनयन करके एक कम अधस्तन विरलनसे सामान्य अवहारकालको भाजित करने पर अवहारकाल प्रक्षेपशलाकार्प आ जाती हैं । इनको समान छेद करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर प्रथम पृथिवीसंबन्धी नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल



कालो होदि । एदाओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ सामण्णणेरइयमिच्छाइड्ढिअवहार-  
कालमेच्छपुढविमिच्छाइड्ढिदव्वमस्सिऊण उप्पण्णाओ ।

पुणो एदाओ चेव अवहारकालपक्खेवसलागाओ विक्खंभस्सुचिम्हि अवणयणरूव-  
पमाणं च पुढविं पुढविं पडि एत्तियं एत्तियं होदि त्ति परूविज्जदे । तत्थ ताव विक्खंभ-  
सुचिम्हि अवणिज्जमाणरूवाणं पमाणं वुच्चदे । तं जहा- एगसेट्ठिअवणयणं पडि जदि  
सामण्णणेरइयविक्खंभस्सुचिम्हि एगरूवस्स अवणयणं लब्भदि तो विदियपुढविदव्वस्स  
अवणयणं पडि किं लभामो त्ति सरिसमवणिय सेट्ठिवारसवग्गमूलेण एगरूवं खंडिदे  
विदियपुढविमस्सिऊण विक्खंभस्सुचिम्हि अवणयणपमाणमागच्छदि । तं च एदं १६ । एवं  
सेसपुढवीणं पि तेरासियकमेण विक्खंभस्सुचिम्हि अवणिज्जमाणरूवपमाणमाणेयव्वं । तेसिं

होता है । ये अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं सामान्य नारक मिथ्यावादि अवहारकालमात्र अर्थात्  
सामान्य नारक मिथ्यावादि अवहारकालगुणित छह पृथिवीगत मिथ्यावादि द्रव्यका आश्रय  
लेकर उत्पन्न हुई हैं ।

उदाहरण—उपरिम विरलन ३२७६८; अधस्तन विरलन  $\frac{२५६}{६३}$ ;

$$\frac{२५६}{६३} - १ = \frac{१९३}{६३}; ३२७६८ \div \frac{१९३}{६३} = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ अव. प्रक्षेपशलाकाएं ।}$$

$$३२७६८ + \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{८३८६०८}{१९३} \text{ घ. पृ. अव. ।}$$

अब प्रत्येक पृथिवीके प्रति अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंका प्रमाण और विक्खंभस्सुचिमें  
अपनयनरूप संख्याका प्रमाण इतना इतना होता है, इसका प्ररूपण करते हैं । उसमें भी पहले  
विक्खंभस्सुचिमें अपनीयमान संख्याका प्रमाण कहते हैं । वह इसप्रकार है—एक जगश्रेणीके  
अपनयनके प्रति यदि सामान्य नारक विक्खंभस्सुचिमें एक संख्या कम होती है तो द्वितीय  
पृथिवीके द्रव्यके घटानेके प्रति कितनी संख्या प्राप्त होगी, इसप्रकार सदृशका अपनयन करके  
(अर्थात् दूसरी पृथिवीके द्रव्यको जगश्रेणीसे अपनयन करके अर्थात् भाजित करके) जग-  
श्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे एकको खंडित करने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके विक्खंभस्सुचिमें  
अपनयनरूप संख्याका प्रमाण आ जाता है । वह यह १६ है ।

उदाहरण— $१ \times १६३८४ = १६३८४$ ;  $१६३८४ \div ६५५३६ = \frac{१}{४}$  अपनयनरूप ।

$$\text{अथवा, } १ \div ४ = \frac{१}{४} \left( २ - \frac{१}{४} = \frac{७}{४} \right)$$

इसीप्रकार शेष पृथिवियोंका भी त्रैराशिक क्रमसे विक्खंभस्सुचिमें अपनीयमान  
संख्याका प्रमाण ले आना चाहिये । प्रत्येक पृथिवीके प्रति उन अपनीयमान संख्याओंका

पमाणं सेदिदसम-अट्ट-छट्ट-तदिय-विदियवग्गमूलेहि पुथ पुथ एगरुवं खंडिदे तत्थ एगभागं होदि । विदियादिपुटवीणं एदे अवहारकाला होंति चि कथं णव्वदे ?

वारस दस अट्टेव य मूला छत्तिय दुगं च' गिरएसु ।

एकारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु ॥ ६६ ॥

एदम्हादो आरिसादो णव्वदे । तेसिमंकट्टवणा एसा  $\frac{१}{२}$   $\frac{१}{३}$   $\frac{१}{४}$   $\frac{१}{५}$   $\frac{१}{६}$  । सेदिवारस-

प्रमाण क्रमसे जगश्रेणीके दशवें, आठवें, छठवें, तीसरे और दूसरे वर्गमूलोंसे पृथक् पृथक् एक संख्याको खंडित करने पर वहां जो एक भाग लब्ध आवे उतना होता है।

उदाहरण—दशवां वर्गमूल ८; आठवां वर्गमूल १६; छठा वर्गमूल ३२; तीसरा वर्ग-

मूल ६४; दूसरा वर्गमूल १२८;  $१ \div ८ = \frac{१}{८}$  तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा ।

$१ \div १६ = \frac{१}{१६}$  चौथी पृथिवीकी अपेक्षा ।  $१ \div ३२ = \frac{१}{३२}$  पांचवी पृथिवीकी

अपेक्षा ।  $१ \div ६४ = \frac{१}{६४}$  छठी पृथिवीकी अपेक्षा ।  $१ \div १२८ = \frac{१}{१२८}$

सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा अपनीयमान संख्याका प्रमाण ।

शंका—जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल, दशवां वर्गमूल आदि ये सब द्वितीयादि पृथिवियोंके अवहारकाल होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—नरकमें द्वितीयादि पृथिवीसंबन्धी द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका बारहवां, दशवां, आठवां, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल क्रमसे अवहारकाल होता है। तथा देवोंमें ( सानत्कुमार आदि पांच कल्पयुगलोंका प्रमाण लानेके लिये ) जगश्रेणीका ग्यारहवां, नौवां, सातवां, पांचवां और चौथा वर्गमूल क्रमसे अवहारकाल होता है ॥ ६६ ॥

इस आर्ष वचनसे जाना जाता है कि उपर्युक्त वर्गमूल द्वितीयादि पृथिवियोंके द्रव्य लानेके लिये अवहारकाल होते हैं ।

उन अपनीयमान अंकोंकी स्थापना क्रमसे  $\frac{१}{२}$ ,  $\frac{१}{३}$ ,  $\frac{१}{४}$ ,  $\frac{१}{५}$ ,  $\frac{१}{६}$  इसप्रकार है ।

विशेषार्थ—यहां पर जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूल आदिका ज्ञान करानेके लिये हरके

१ प्रतिपु ' दुपंच ' इति पाठः ।

२ सणक्कुमार जाव सदरसहरसारकप्पवासियदेवा सत्तमपुटवीमंगो । कुदो ? सेदीए अट्टक्खेजभागत्तणेण पुदेसिं ततो मेदाभावादो । विसेसदो पुण मेदो अत्थि, सेदीए एकारस-णवम-सत्तम-पंचम-चउत्थवग्गमूलणं जहाकमेण सेदीभागहाराणमेत्थुवलमादो । थवला. पत्र ५२२. अ । सीधर्मद्वये किंचिदूना वनायुलत्ततीयमूलजगश्रेणिः । सनत्कुमार-द्रव्यादिपंचयुगमेषु किंचिदूना क्रमशो निजैकादशम-नवम-सप्तम-पंचम चतुर्थमूलमजगश्रेणिः । ऊनता चात्र हाराविका ज्ञेया । गो. जी., जी. प्र., टी ६४१.

स्थानमें अंकरूपसे १२, १० आदि संख्याओंका ग्रहण किया है। तथा अंशके स्थानमें १ अंक ग्रहण करके यह बतलाया है कि १ में बारहवें आदि वर्गमूलोंका भाग देनेसे सामान्य विष्कंभ-स्त्रीमें अपनीयमान संख्या आ जाती है। पर इससे यहां बारहवें वर्गमूलका प्रमाण १२ और दशवें वर्गमूलका प्रमाण १० आदि नहीं लेना चाहिये। ये १२, १० आदि अंक तो केवल अनुरूप संख्याओंके द्वारा उक्त वर्गमूलोंका ज्ञान करानेके लिये संकेतमात्र हैं। इसीप्रकार इसी प्रकरणमें प्रकृत विषयके स्पष्ट करनेके लिये अंकसंदष्टिकी अपेक्षा जगश्रेणीका प्रमाण ६५५३६ लिया है, उसके भी ये १२, १० आदि अंक बारहवें और दशवें आदि वर्गमूल नहीं हैं, जो द्वितीयादि पृथिवियोंके अंकसंदष्टिकी अपेक्षा दिये गये अवहारकालोंसे स्पष्ट समझमें आ जाता है। यद्यपि ६५५३६ के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्गमूलको छोड़कर शेष सभी वर्गमूल करणीगत होते हैं, फिर भी वीरसेनस्वामीने वर्गमूलोंके परस्परके तारतम्यको ग्रहण न करके द्वितीयादि नरकोंमें नारक जीवोंकी उत्तरोत्तर हीन संख्याका परिज्ञान करानेके लिये बारहवें वर्गमूलके स्थानमें ४, दशवेंके स्थानमें ८, आठवेंके स्थानमें १६, छठवेंके स्थानमें ३२, तीसरेके स्थानमें ६४ और दूसरेके स्थानमें १२८ लिया है। इस प्रकरणमें उदाहरण देकर जीवराशि आदिकी जो संख्या निकाली है वह पूर्वोक्त आधार पर ही निकाली गई है। इससे बारहवें वर्गमूल आदिमें परस्पर जितना तारतम्य है वह उक्त संकेतरूप संख्याओंमें नहीं रहता है, और इसलिये कहीं कहीं दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें अन्तर प्रतीत होता है। जैसे, अगे चलकर छठी और सातवीं पृथिवीका मिला हुआ जो भागहार निकाला है उस प्रकरणमें उपरिम विरलन भी जगश्रेणीका तृतीय वर्गमूलप्रमाण है और अधस्तन विरलन भी उतना ही है। पर वर्गमूलोंके उक्त संख्याओंके अनुसार वहां उपरिम विरलन ६४ प्रमाण और अधस्तन विरलन २ संख्याप्रमाण ही आता है, क्योंकि, अंकोंके द्वारा मानी हुई सातवीं पृथिवीकी जीवराशि ५१२ रूप प्रमाणका छठी पृथिवीके द्रव्य १०२४ में भाग देने पर २ ही लब्ध आते हैं। वर्गमूलोंमें परस्पर जो तारतम्य है वह इन संकेतोंमें नहीं रहनेसे ही यहां दृष्टान्त और दार्ष्टान्तमें इसप्रकारका वैषम्य दिखाई देता है। पर यदि हम वर्गमूलोंके तारतम्यको लेकर अंकसंदष्टि जमावें तो मुख्यार्थसे दृष्टान्तमें कोई अन्तर नहीं पड़ सकता है। फिर भी दृष्टान्त एकेदेश होता है इसी न्यायके अनुसार ही यहां अंकसंदष्टिसे दार्ष्टान्तको समझना चाहिये। इससे जहां कहीं दृष्टान्तसे दार्ष्टान्तका साम्य नहीं मिलता होगा वहां दृष्टान्तमें ग्रहण किये गये अंकोंमें अपेक्षित तारतम्यका अभाव ही कारण है, दार्ष्टान्तमें कोई दोष नहीं। यह बात निम्नकोष्ठकसे अतिशीघ्र समझमें आ जायगी—

६५५३६ के वर्गमूल	बारहवां	दशावां	आठवां	छठा	तीसरा	दूसरा	विष्कंभस्त्री
धवलाकार द्वारा माने गये संकेतांक	१२८	६४	३२	१६	८	४	२
६५५३६ = २ <sup>१६</sup> के निश्चित वर्गमूल	३६६	६६	१६	६	२ <sup>१</sup>	२ <sup>४</sup>	बारहवें वर्गमूलसे नीचे जाकर
	२	२	२	२	२	२	

वर्गमूलभजिदएगरूवं विक्खंभसूचिम्हि अवाणिय सेटिं गुणिदे विदियपुढविद्वेण विणा सेसल्लपुढविद्वेवमागच्छदि । पुणो ताए चेव ऊणविक्खंभसूचीए जगसेटिम्हि भागे हिदे विदियपुढविदिरित्तल्लपुढविमिच्छाइट्ठिद्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तस्मिं चेव ल्लपुढविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेटिदसमवग्गमूलेण खंडिय तत्थ एगखंडमवणीए विदिय-तदियपुढविदिरित्तसेसपंचपुढविमिच्छाइट्ठिद्वस्स विक्खंभसूची होदि । पुणो ताए चेव विक्खंभसूचीए जगसेटिम्हि भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइट्ठिद्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तस्मिं चेव पंचपुढविक्खंभसूचिम्हि एगरूवं सेटिअदमवग्गमूलेण खंडिय एगखंडमवणीदे विदिय-तदिय-चउत्थपुढविदिरित्तचारिपुढविमिच्छाइट्ठिद्वस्स विक्खं-भसूई होदि । पुणो ताए विक्खंभसूईए जगसेटिम्हि भागे हिदे चउत्थं पुढवीणं मिच्छा-

जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे एक संख्याको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे विष्कंभसूचीमेंसे घटाकर शेष प्रमाणसे जगश्रेणीके गुणित करने पर द्वितीय पृथिवीगत द्रव्यके विना शेष छह पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है । तथा उसी ऊन विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीको भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण— $१ \div ४ = \frac{१}{४}$ ;  $२ - \frac{१}{४} = \frac{७}{४}$ ;  $६५५३६ \times \frac{७}{४} = ११४६८८$  दूसरी पृथिवीके द्रव्यके

विना शेष छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य ।  $६५५३६ \div \frac{७}{४} = \frac{२६२१४४}{७}$

दूसरी पृथिवीके अवहारकालके विना शेष छह पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त उसी छह पृथिवीसंबन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी और तीसरी पृथिवीके विना शेष पांच पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती है । पुनः उसी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके भाजित करने पर ( दूसरी और तीसरीके विना ) पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $१ \div ८ = \frac{१}{८}$ ;  $\frac{७}{४} - \frac{१}{८} = \frac{१३}{८}$  दूसरी और तीसरीके विना शेष पांच

पृथिवियोंकी विष्कंभसूची ।  $६५५३६ \div \frac{१३}{८} = \frac{५२४२८८}{१३}$  दूसरी और तीसरीके

विना शेष पांच पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके जो एक खण्ड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त उसी पांच पृथिवीसंबन्धी विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी, तीसरी और चौथी पृथिवीको छोड़कर शेष चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती

इन्द्रिद्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो तम्मि चेव चउपुटविमिच्छाइन्द्रिद्वस्स विक्खंमसूचिम्मि एगरूवं सेट्ठिद्वग्गमूलेण खंडिऊण तत्थ एगखंडमवणिदे विदिय-तदिय-चउत्थ-पंचम-पुटविवरित्तसेसतिपुटविमिच्छाइन्द्रिद्वस्स विक्खंमसूई होदि । पुणो ताए विक्खंमसूईए जगसेट्ठिम्मि भागे हिदे तिपुटविमिच्छाइन्द्रिद्वस्स अवहारकालो होदि । पुणो सेट्ठि-तदियवग्गमूलेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगं खंडं तिण्हं पुटवीणं विक्खंमसूचिम्मि अवणिदे पढम-सत्तमपुटवीणं मिच्छाइन्द्रिद्वस्स विक्खंमसूई आगच्छदि । पुणो ताए विक्खंमसूईए जगसेट्ठिम्मि भागे हिदे पढम-सत्तमपुटवीणं मिच्छाइन्द्रिद्वस्स अवहारकालो आगच्छदि ।

है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पूर्वोक्त चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $1 \div 16 = \frac{1}{16}$ ;  $\frac{12}{16} - \frac{1}{16} = \frac{11}{16}$  दूसरी, तीसरी और चौथी पृथिवीके

विना शेष चार पृथिवियोंकी विष्कंभसूची ।  $64 \times 36 \div \frac{11}{16} = \frac{1088 \times 36}{11}$

पूर्वोक्त चार पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके छठे वर्गमूलसे एक रूपको खण्डित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे उन्हीं पूर्वोक्त चार पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवी पृथिवीको छोड़कर शेष तीन पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पूर्वोक्त तीन पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल होता है ।

उदाहरण— $1 \div 32 = \frac{1}{32}$ ;  $\frac{24}{32} - \frac{1}{32} = \frac{23}{32}$  पहली, छठी और सातवीं पृथिवी-

संबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची ।  $64 \times 36 \div \frac{23}{32} = \frac{209 \times 36}{23}$  पूर्वोक्त

तीन पृथिवियोंका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलसे एक रूपको खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची आती है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जगश्रेणीमें भाग देने पर पहली और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण— $1 \div 64 = \frac{1}{64}$ ;  $\frac{48}{64} - \frac{1}{64} = \frac{47}{64}$  पहली और सातवीं पृथिवीकी मिथ्या-

दृष्टि विष्कंभसूची ।  $64 \times 36 \div \frac{47}{64} = \frac{399 \times 36}{47}$  पहली और सातवीं

पुणो दोपुठविक्खंभसूचिम्हि सेठिविदियवग्गमूलेण एगरूवं खंडिय तत्थ एगखंड-  
मवणिदे पढमपुठविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स विक्खंभसूची होदि । पुणो ताए विक्खंभसूचीए  
जगसेठिम्हि भागे हिदे वि पढमपुठविमिच्छाइट्ठिदव्वस्स अवहारकालो आगच्छदि ।

पुणो संपहि सामण्णअवहारकालमेत्तछप्पुठविदव्वमस्सिउण पुठविं पडि अवहार-  
कालपक्खेवसलागाओ आणिज्जंति । तत्थ ताव विदियपुठविमिच्छाइट्ठिदव्वेण पढमपुठवि-  
मिच्छाइट्ठिदव्वमवहारिय लद्धमेत्तेसु विदियपुठविमिच्छाइट्ठिदव्वेसु सामण्णअवहारकालमेत्त-  
विदियपुठविदव्वम्मि समुदिदेसु एगं पढमपुठविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं लब्भइ, एगा  
अवहारकालपक्खेवसलागा । पुणो वि एत्तियमेत्तेसु विदियपुठविमिच्छाइट्ठिदव्वेसु समु-  
दिदेसु पढमपुठविमिच्छाइट्ठिदव्वपमाणं लब्भइ, विदिया अवहारकालपक्खेवसलागा च ।  
एवं पुणो पुणो कीरमाणे सेठीए असंखेज्जभागमेत्ताओ अवहारकालपक्खेवसलागाओ

### पृथिवीका अवहारकाल ।

अनन्तर जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे एकरूपको खंडित करके वहां जो एक खंड  
लब्ध आवे उसे पूर्वाक्त दो पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीमेंसे घटा देने पर पहली  
पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी विष्कंभसूची होती है । अनन्तर उस विष्कंभसूचीका जग-  
श्रेणीमें भाग देने पर पहली पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} 1 \div 120 = \frac{1}{120}; \quad \frac{97}{64} - \frac{1}{120} = \frac{1193}{120} \quad \text{पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि}$$

$$\text{विष्कंभसूची । } 64536 \div \frac{1193}{120} = \frac{6204600}{1193} \quad \text{पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि}$$

अवहारकाल ।

अब सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है उतनीवार छह पृथिवियोंके द्रव्यका  
आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिवीके प्रति प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं लाते हैं । उनमें पहले दूसरी  
पृथिवीका आश्रय लेकर उत्पन्न हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंका कथन करते हैं । वह  
इसप्रकार है—दूसरी पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पहली पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि  
द्रव्यको अपहृत करके जो लब्ध आवे तन्मात्र स्थानों पर स्थापित दूसरी पृथिवीसंबन्धी  
मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सामान्य अवहारकालमात्र ( सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है  
उतनी बार स्थापित ) दूसरी पृथिवीसंबन्धी द्रव्यमेंसे समुदित करने पर पहलीवार प्रथम  
पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है, और अवहारकालमें एक प्रक्षेपशलाका  
उत्पन्न होती है । फिर भी इतनेमात्र दूसरी पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके समुदित कर देने  
पर दूसरीवार प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है, और अवहार-  
कालमें दूसरी प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है । इसीप्रकार पुनः पुनः करने पर जगश्रेणीके

लब्धमिति । तं जहा— सेटिवारसवग्गमूलगुणितपठमपुढविविक्खं भस्सचिमेत्तद्वाणं गंतूणं जदि एगा अवहारकालपक्खेवसलागा लब्धमिदि तो सामण्णअवहारकालमिह केत्तिआओ लभामो त्ति पठमपुढविविक्खं भस्सचिगुणिदसेटिवारसवग्गमूलेण सामण्णअवहारकालमिह भागे हिदे विदियपुढविदव्वमस्सिउणुप्पण्णपक्खेवसलागाओ सव्वाओ आगच्छंति । एदाओ पुथ सामण्णअवहारकालस्स पक्खे विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तविदियपुढविदव्वे समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पठमपुढविमिच्छाड्ढिदव्वपमाणं होऊण पावदि । एवं चेव सामण्णअवहारकालमेत्ततदियादिपंचपुढविदव्वानि आस्सिउण तासिं तासिं पुढवीणं

असंख्यातवें भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होती हैं । जैसे— जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीको गुणित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके प्रथम पृथिवी-संबन्धी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे गुणित जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर दूसरी पृथिवीका आश्रय करके उत्पन्न हुई संपूर्ण प्रक्षेप शलाकाएं आ जाती हैं ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{३२}; \frac{३२७६८}{१} \div \frac{१९३}{३२} = \frac{१०४८५७६}{१९३} \quad \text{दूसरी पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं ।

इन अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाओंको पृथक् रूपसे सामान्य अवहारकालके पासमें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण हो उतनीवार स्थापित दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

उदाहरण—ऊपर जो ५४३३२१६ प्रक्षेप अवहारकाल आया है उसका विरलन करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित द्वितीय पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यको देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्य प्राप्त होता है, जो सामान्य अवहारकालगुणित द्वितीय पृथिवीके द्रव्यमें उक्त प्रक्षेप अवहारकालका भाग देने पर भी आ जाता है । यथा—

$$३२७६८ \times १६३८४ = ५३६८७०९१२; \quad ५३६८७०९१२ \div \frac{१०४८५७६}{१९३}$$

$$= ९८८१६ \text{ प्र. पृ. मि. द्रव्य.}$$

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् जितना सामान्य अवहारकालका प्रमाण हो उतनीवार तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका आश्रय लेकर उन उन

पक्खेवअवहारकालसलागाओ आपेयच्चाओ । णवरि विसेसो सेट्ठिदसमवग्गमूलगुणिद-  
पढमपुढविक्खिखंभसूईए सामण्णअवहारकालम्हि भागे हिदे तदियपुढविअवहारकाल-  
पक्खेवसलागाओ आगच्छंति । एदाओ पुव्विल्लदोण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्ण-  
अवहारकालमेत्ततदियपुढविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविदव्वपमाणं  
पावदि । पढमपुढविक्खिखंभसूचिगुणिदसेट्ठिअट्टमवग्गमूलणे सामण्णअवहारकालम्हि भागे  
हिदे चउत्थपुढविअवहारकालपक्खेवसलागाओ आगच्छंति । ताओ वि पुव्विल्लतिण्हं  
विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तचउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं समखंडं

पृथिवियोंकी अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं ले आना चाहिये । केवल इतनी विशेषता है कि  
जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलसे प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीको गुणित करके जो  
लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर तीसरी पृथिवीका आश्रय करके  
अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं ।

$$\text{उदाहरण—} ८ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{१६}; ३२७६८ \div \frac{१९३}{१६} = \frac{५२४२८८}{१९३} \text{ तीसरी पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्र. अ. श. ।

इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त दोनों विरलनोंके पासमें विरलित करके  
और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अव-  
हारकाल गुणित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर  
विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीसेबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण  
प्राप्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \times ८१९२ = २६८४३५४५६;$$

$$२६८४३५४५६ \div \frac{५२४२८८}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. म. द्रव्य.}$$

प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके अष्टम वर्गमूलको गुणित करके  
जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न  
हुई अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं ।

$$\text{उदाहरण—} १६ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{८}; ३२७६८ \div \frac{१९३}{८} = \frac{२६२१४४}{१९३} \text{ चौथी पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं ।

चौथी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त  
तीन विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य  
अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको  
समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके



करिय दिण्णे रूवं पडि एदं पढमपुढविद्ववपमाणं होदि । पुणो पढमपुढविविक्खंभसूचि-  
गुणिदसेदिछट्टमवगमूलेण सामण्णअवहारकालमिह भागे हिदे पंचमपुढविपक्खेवअवहार-  
कालो आगच्छदि । तं पुव्विच्छपंचण्हं विरलणाणं पस्से विरलिय सामण्णअवहारकालमेत्तपंचम-  
पुढविद्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइट्ठिद्वं पावदि । पुणो पढम-  
पुढविविक्खंभसूचिगुणिदसेदित्तियवगमूलेण सामण्णअवहारकालमिह भागे हिदे छट्टपुढवि-  
पक्खेवअवहारकालो आगच्छदि । एदं पि पुव्विच्छपंचण्हं विरलणाणं पासे विरलिय सामण्णअव-

मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \times ४०९६ = १३४२१७७२८;$$

$$१३४२१७७२८ \div \frac{२६२१४४}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पु. मि. द्रव्य.}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके छठे वर्गमूलको गुणित करके  
जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर पांचवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न  
हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं आती हैं ।

$$\text{उदाहरण—} ३२ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{४}; \quad ३२७६८ \div \frac{१९३}{४} = \frac{१३१०७२}{१९३} \text{ पांचवी पृथिवीका}$$

आश्रय करके उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारशलाकाएं ।

पांचवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई उन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त  
चारों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य  
अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित पांचवी पृथिवीके द्रव्यको समान खंड  
करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि  
द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \times २०४८ = ६७१०८८६४;$$

$$६७१०८८६४ \div \frac{१३१०७२}{१९३} = ९८८१६ \text{ प्र. पु. मि. द्रव्य.}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके  
जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न  
हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं आती हैं ।

$$\text{उदाहरण—} ६४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{२}; \quad ३२७६८ \div \frac{१९३}{२} = \frac{६५५३६}{१९३} \text{ छठी पृथिवीके}$$

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं ।

छठी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाओंको पूर्वोक्त  
पांच विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य  
अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको

हारकालमेतच्छुद्धपुढविद्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि एदं पि पढमपुढविमिच्छाइड्डि-  
द्वयपमाणेण पावदि। पुणो पढमपुढविमिच्छाइड्डिविखंभसूचिगुणिदसेडिविदियवग्गमूलेण  
सामण्णअवहारकालमिह भागे हिदे सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालो आगच्छदि। तं  
पुञ्चिच्छल्लहं विरलणाणं पासे विरालिय सामण्णअवहारकालमेतत्तमपुढविमिच्छाइड्डिद्वं  
समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि पढमपुढविमिच्छाइड्डिद्वयपमाणेण पावदि। एदाओ सत्त  
वि विरलणाओ धेत्तूण पढमपुढविमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि।

तेसिं सत्तहं पि अवहारकालाणं मेलावणविहाणं वुच्चेदि। तं जहा- सत्तमपुढवि-  
पक्खेवअवहारकालो सगपमाणेण एक्को हवदि। सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण  
छट्ठपुढविपक्खेवअवहारकालो सेडितदियवग्गमूलमेत्तो हवदि। पंचमपुढविपक्खेवअवहार-

समान खंड करके देयरूपसे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके  
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

उदाहरण— $३२७६८ \times १०२४ = ३३५५४४३२$ ;

$$\frac{३३५५४४३२}{१९३} = १८८१६ \text{ प्र. मि. द्र.}$$

अनन्तर प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके दूसरे वर्गमूलको  
गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सामान्य अवहारकालमें भाग देने पर सातवीं पृथिवीके  
आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्ण आती हैं।

उदाहरण— $१२८ \times \frac{१९३}{१२८} = १९३$ ;  $३२७६८ \div १९३ = \frac{३२७६८}{१९३}$  सातवीं पृथिवीके

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्ण।

सातवीं पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई इन प्रक्षेप अवहारकाल शलाकार्णोंको पूर्वोक्त  
छहों विरलनोंके पासमें विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर सामान्य  
अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकाल गुणित सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको  
समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रथम पृथिवीके  
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

उदाहरण— $३२७६८ \times ५१२ = १६७७७२१६$ ;

$$\frac{१६७७७२१६}{१९३} = १८८१६ \text{ प्र. मि. द्र.}$$

इन सातों विरलनोंको ग्रहण करके भी प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहार-  
काल होता है। आगे उन्हीं सातों अवहारकालोंके मिलानकी विधिका कथन करते हैं। वह  
इसप्रकार है—

सातवीं पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुआ प्रक्षेप अवहारकाल अपने प्रमाणसे एक है  
( $\frac{३२७६८}{१९३} = १$  पिंडरूप) सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा छठी पृथिवीकी

कालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण सेहितदियवग्गमूलमादिं काऊण जाव  
 छट्ठमवग्गमूलो ति चउण्हं वग्गणं अण्णोण्णभासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि । चउत्थ-  
 पुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेहितदियवग्गमूलमादिं  
 काऊण जाव अट्ठमवग्गमूलो ति ताव छण्हं वग्गणं अण्णोण्णभासेणुप्पण्णरासिमेत्तो  
 हवदि । तदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारपमाणेण सेहितदिय-  
 वग्गमूलमादिं काऊण जाव दसमवग्गमूलो ति ताव अट्ठहं वग्गणं अण्णोण्णभासेणु-  
 प्पण्णरासिमेत्तो हवदि । विदियपुढविपक्खेवअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहार-  
 पमाणेण सेहितदियवग्गमूलप्पहुडि दसण्हं वग्गणमण्णोण्णभासेणुप्पण्णरासिमेत्तो हवदि ।  
 सामण्णअवहारकालो सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालपमाणेण पढमपुढविपक्खेवअवहार-  
 गुणिदसेट्ठिविदियवग्गमूलमेत्तो हवदि । पुणो एदाओ सव्वसलागाओ एगडं करिय  
 सत्तमपुढविपक्खेवअवहारकालं गुणिदि पढमपुढविमिच्छाड्ढिअवहारकालो होदि ।

अवहारकाल जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र होता है (  $१५३३ = २$  ) पांचवीं पृथिवीका प्रक्षेप  
 अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे  
 लेकर छठे वर्गमूलपर्यन्त चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है  
 (  $१३१०३३ = ४$  ) चौथी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहार-  
 कालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठवें वर्गमूलपर्यन्त छह वर्गोंके परस्पर  
 गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है (  $२६६६६४ = ८$  ) । तीसरी पृथिवीका प्रक्षेप  
 अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे  
 लेकर दशवें वर्गमूलपर्यन्त आठ वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है  
 (  $५३३३८८ = १६$  ) । दूसरी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल सातवीं पृथिवीके प्रक्षेपरूप  
 अवहारकालकी अपेक्षा जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर दश वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे  
 जो राशि उत्पन्न हो तन्मात्र है (  $१०४८५०६ = ३२$  ) । सामान्य अवहारकाल सातवीं पृथिवीके  
 प्रक्षेपरूप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कम्भसूचीसे  
 जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना है (  $१२८ \times १३३ = १९३$  ) ।

अनन्तर इन सर्व शलाकाओंको एकत्रित करके उससे सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अवहार-  
 कालके गुणित करने पर पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} १ + २ + ४ + ८ + १६ + ३२ + १९३ = २५६$$

$$\frac{३२७६८}{१९३} \times २५६ = \frac{८३८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि. अव.}$$

अहवा ताहि चैव सलागाहि समुदिदाहि पढमपुढविसामणविकखंभसूचीहि  
अणोण्णम्भत्थाहि गुणिदसेढिविदियवग्गमूलमोवाट्टिय सेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढवि-  
मिच्छाडिअवहारकालो आगच्छदि । अहवा छण्हं पुढवीणं सत्तमपुढविपक्खेवअवहार-  
कालपमाणेण कयसव्वसलागाहि सेढिविदियवग्गमूलमोवाट्टिय अणोण्णम्भत्थपढमपुढवि-  
सामण्णेणेरइयविकखंभसूईहि गुणिय जगपेढिम्हि भागे हिदे सव्वत्थुप्पणपक्खेवअवहार-  
कालो आगच्छदि । तेण सव्वत्थुप्पणअवहारकालेण सामण्णेणेरइयअवहारकालम्हि भागे  
हिदे जं भागलद्धं तेण सामण्णेणेरइयविकखंभसूई गुणिदे पुणो तं रासिं तेणेव गुणगारेण,  
रूवाहिणोवट्टिय जगसेढिम्हि भागे हिदे पढमपुढविअवहारकालो आगच्छदि ।

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची और सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि  
विष्कंभसूची इन दोनोंके परस्पर गुणा करनेसे जो लब्ध आवे उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्ग-  
मूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे एकत्रित की हुई पूर्वाक्त शलाकाओंसे अपवर्तित  
करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि जीव-  
राशिसंबन्धी अवहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times २ = \frac{१९३}{६४}; \quad १२८ \times \frac{१९३}{६४} = ३८६३८६ \div २५६ = \frac{१९३}{१२८},$$

$$६५५३६ \div \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि. अ.}$$

अथवा, सातवीं पृथिवीके प्रक्षेप अवहारकालके प्रमाणकी अपेक्षा छह पृथिवियोंके  
आश्रयसे उत्पन्न हुए प्रक्षेप अवहारकालकी जो सर्व शलाकाएँ की गईं उनसे जगश्रेणीके  
द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसको प्रथम पृथिवी और सामान्य  
नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचियोंके परस्पर गुणा करनेसे उत्पन्न हुई राशिसे गुणित  
करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर सर्वत्र उत्पन्न हुए प्रक्षेप अवहारकालका  
प्रमाण आता है । सर्वत्र उत्पन्न हुए उस प्रक्षेप अवहारसे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंके  
अवहारकालके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उससे सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी  
विष्कंभसूचीके गुणित करने पर अनन्तर उस गुणित राशिको एक अधिक उसी पूर्वाक्त गुण-  
कारसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर प्रथम पृथिवीका  
मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल आता है ।

$$\text{उदाहरण—} १२८ \div ६३ = \frac{१२८}{६३}; \quad २ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{३८६}{१२८}; \quad \frac{१२८}{६३} \times \frac{३८६}{१२८} = \frac{३८६}{६३}$$

$$\frac{६५५३६}{१} \div \frac{३८६}{६३} = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्रक्षेप अवहारकाल ।}$$

$$३२७६८ \div \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{१९३}{६३}; \quad २ \times \frac{१९३}{६३} = \frac{३८६}{६३}; \quad १ + \frac{१९३}{६३} = \frac{२५६}{६३};$$

अहवा पढमपुढविक्खंभसूईए सामण्णेरइयविक्खंभसूइमोवड्ढिदे एगरूवमेग-  
रूवस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि । तस्स एगरूवासंखेज्जदिभागस्स को पडिभागो ?  
किंचूणसेटिवारसवग्गमूलगुणिदपढमपुढविक्खंभसूची पडिभागो । पुणो एदाओ दो  
रासीओ पुध मज्जे ढुविय तेरासियं कायव्वं । तं जहा— सामण्णेरइयरासिम्हि जदि  
एगरूवं एगरूवस्स असंखेज्जदिभागो च पढमपुढविमिच्छाइट्ठिरासिम्हि अवहारकालो लब्भदि तो  
सामण्णेरइयअवहारकालमेत्तसामण्णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि किं लभामो त्ति सरिस-  
मवणिय सामण्णेरइयमिच्छाइट्ठिरासिम्हि अवहारकालेण एगरूवमेगरूवस्स असंखेज्जदिभागं गुणिदे  
पढमपुढविमिच्छाइट्ठिरासिम्हि अवहारकालो आगच्छदि ।

$$\frac{३८६}{६३} \div \frac{२५६}{६३} = \frac{३८६}{२५६}; \quad \frac{६५३६}{२५६} \div \frac{३८६}{२५६} = \frac{८३८६०८}{१९३} \text{ प्र. पु. मि. अव.}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि  
विष्कंभसूचीके अपवर्तित करने पर एक और एकका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है ।

$$\text{उदाहरण—} २ \div \frac{१९३}{१२८} = \frac{२५६}{१९३} = १ \frac{६३}{१९३}$$

शंका—उस एकके असंख्यातवें भागके लानेके लिये प्रतिभाग क्या है ?

समाधान—जगज्जणीके कुछ कम बारहवें वर्गमूलसे गुणित प्रथम पृथिवीकी मिथ्या-  
दृष्टि विष्कंभसूची एकके असंख्यातवें भागके लानेके प्रतिभाग है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{१९३}{१२८} \times \frac{१२८}{६३} = \frac{१९३}{६३} \text{ प्रतिभाग ।}$$

अनन्तर इन दो राशियोंको पृथक्पृथक् स्थापित करके त्रैराशिक करना  
चाहिये । वह इसप्रकार है— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें प्रथम पृथिवीसंख्यी मिथ्या-  
दृष्टि जीवोंका अवहारकाल यदि एक और एकका असंख्यातवां भाग प्राप्त होता है तो सामान्य  
नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित  
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशिमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार सदृश राशि अंश और  
हररूप सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अपनयन करके सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि  
अवहारकालसे एक और एकके असंख्यातवें भागको गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके  
मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण—यहां १३१०७२ प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि राशि प्रमाणराशि है,  $\frac{३५३}{६३}$   
फलराशि है और सामान्य अवहारकाल ३२७६८ गुणित सामान्य नारक राशि १३१०७२  
इच्छाराशि है । इसलिये इच्छाराशि और फलराशिका गुणा करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाण  
राशिका भाग देने पर प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आ जाता है । यथा—

$$\frac{३२७६८ \times १३१०७२ \times २५६}{१३१०७२ \times १९३} = \frac{८३८६०८}{१९३} \text{ प्र. पु. मि. अ-}$$

अहवा पढमपुढविमिच्छाड्डिअवहारकालो अण्णेण पयारेण आणिज्जे । तं जहा-  
 छट्टमपुढविअवहारकालं विरलेऊण एकेकस्स रुवस्स जगसेहिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं  
 पडि छट्टमपुढविमिच्छाड्डिद्वं पावदि । पुणो तत्थ एगरूवधरिंदछट्टपुढविद्वं सत्तम-  
 पुढविद्वेण भागे हिदे सेदितदियवग्गमूलमागच्छदि । तं विरलेऊण छट्टपुढविद्वं  
 समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तमपुढविद्वं पावदि । तं कमेण उवरिमविरलण-  
 छट्टमपुढविद्वस्सुवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण दिण्णे रूवं पडि छट्ट-सत्तमपुढविद्वपमाणं  
 पावदि हेट्टिमविरलणरूवाहियमेत्तट्ठाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लभदि । पुणो  
 उवरिमअणंतरछट्टपुढविद्वं हेट्टिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सत्तम-  
 पुढविद्वपमाणं पावदि । तं धेत्तूण उवरि सुण्णट्ठाणं मोत्तूण छट्टमपुढविद्वस्सुवरि दिण्णे  
 हेट्टिमविरलणमेत्तरूवं पडि छट्ट-सत्तमपुढविद्वपमाणं होदि हेट्टिमविरलणरूवाहिय-

हर और अंशरूप सदृशका अपनयन करने पर उक्त उद्धारणका निम्नरूप होता है—

$$\frac{२५६}{१९३} \times ३२७६८ = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि. अ.}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल दूसरे प्रकारसे लाते हैं। वह इसप्रकार है—छठवीं पृथिवीके अवहारकालको विरलित करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। अनन्तर वहां एक विरलनके प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको सातवीं पृथिवीके द्रव्यसे भाजित करने पर जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल लब्ध आता है। आगे उस लब्ध राशिका विरलन करके और विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति छठवीं पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीका द्रव्य प्राप्त होता है। उस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त सातवीं पृथिवीके द्रव्यको उपरिम विरलनमें छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर शून्य स्थानको ( उपरिम विरलनके जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे ) छोड़कर क्रमसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एक अधिक अधस्तन विरलनमान स्थान जाकर एककी हानि प्राप्त होती है। पुनः उपरिम विरलनके अनन्तर स्थान ( जहां तक सातवीं पृथिवीका द्रव्य दिया है उसके आगेके स्थान ) के प्रति प्राप्त छठवीं पृथिवीके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। उसे लेकर उपरिम विरलनमें शून्यस्थानको ( जिस स्थानका द्रव्य अधस्तन विरलनमें दिया है उसे ) छोड़कर छठवीं पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देने पर उपरिम विरलनके अधस्तन विरलनमान स्थानोंके प्रति छठवीं और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और उपरिम विरलनमें एक अधिक

मेचद्वाणं गंतूण एगरूवस्स परिहाणी च लब्भदि । एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिम-  
विरलणा परिसमचेत्ति । एत्थ पुणं हेट्ठिम-उवरिमविरलणाओ सरिसाओ त्ति एगमवि रूवं  
ण परिहायदि । पुणो एत्थ एत्थियं परिहायदि त्ति बुच्चदे । तं जहा- हेट्ठिमविरलण  
रूवाहियमेचद्वाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि किं  
परिहाणि लभामो त्ति रूवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलेण सेट्ठितदियवग्गमूले भागे हिदे एग-  
रूवस्स असंखेज्जभागा आगच्छंति त्ति किंचूणेगरूवं सरिसच्छेदं काऊण तदियवग्ग-  
मूलम्हि अवणिदे सेट्ठिविदियवग्गमूलं रूवाहियसेट्ठितदियवग्गमूलेण भजिदएगभागो  
छट्ठ-सत्तमपुटद्वीमिच्छाहट्ठिदव्वाणं भागहारो होदि । तेण जगसेट्ठिहि भागे हिदे छट्ठ-  
सत्तमपुटविमिच्छाहट्ठिदव्वं होदि ।

पुणो सेट्ठिछट्ठमवग्गमूलं विरलिय जगसेट्ठिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि

अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एककी हानि होती है । इसप्रकार जब तक उपरिम  
विरलन समाप्त होवे तब तक पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये । परंतु यहां अधस्तन  
और उपरिम विरलन समान हैं, इसलिये एक भी विरलनोंकी हानि नहीं होती है । फिर भी  
यहां इतनी हानि होती है आगे उसीको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है-उपरिम विरलनमें एक  
अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम  
विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय  
वर्गमूलसे जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलके भाजित करने पर एकके असंख्यात बहुभाग प्राप्त  
होते हैं, इसलिये कुछ कम एकको समान छेद करके तृतीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर  
जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे भाजित करके जो एक  
भाग लब्ध आवे वह छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भागहार होता है । उक्त  
भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका  
प्रमाण होता है ।

उदाहरण—१०२४ १०२४

$$\begin{array}{r} 1 \\ 1024 \div 412 = 2 \\ 412 \\ 1 \end{array} \quad \begin{array}{r} 1 \\ 1 \\ 48 \text{ बार} \\ 412 \\ 1 \end{array}$$

$$44436 \div \frac{126}{3} = 14326$$

यदि १ अधिक अधस्तन विरलनमात्र अर्थात्  
३ स्थान जाकर उपरिम विरलनमें एककी  
हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विर-  
लनोंमें कितने विरलनोंकी हानि प्राप्त होगी,  
इसप्रकार त्रैराशिक करने पर २१३ की हानि  
प्राप्त होती है । इसे उपरिम विरलन ६४ मेंसे घटा देने पर ४२ $\frac{३}{४}$  आते हैं । इसका जग-  
श्रेणीमें भाग देने पर १०२४ $\times$ १२=१५३६ प्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगश्रेणीके छठे वर्गमूलको विरलित करके और विरलित राशिके प्रत्येक

पंचमपुटविमिच्छाऽद्दिद्वयपमाणं पावेदि । पुणो छट्ट-सत्तमपुटविमिच्छाऽद्दिद्वेहि पंचम-  
पुटविमिच्छाऽद्दिद्वयमिह भागे हिदे सेदितदियवग्गमूलादीणं हेट्टा चउण्हं वग्गाणं  
अण्णोण्णभासेणुप्पणरासिं रूवाहियसेदितदियवग्गमूलेण खंडियखंडमागच्छदि । पुणो  
वि तं विरलेऊण उवरिमविरलणेगरूवधरिदपंचमपुटविदव्वं समखंडं करिय दिण्णे रूवं  
पडि छट्ट-सत्तमपुटविमिच्छाऽद्दिद्वयपमाणं पावेदि । पुणो तमुवरिमविरलणमिह सुण्णट्टाणं  
मोत्तूण पंचमपुटविमिच्छाऽद्दिद्वयस्सुवरि परिवाडीए पक्खित्ते हेट्टिमविरलणमेत्तउवरिम-  
विरलणरूवेसु पंचम-छट्ट-सत्तमपुटविमिच्छाऽद्दिद्वयपमाणं पावेदि एगरूवपरिहाणी च  
लब्भदि । पुणो तदणंतरउवरिमरूवोवरिद्विदपंचमपुटविमिच्छाऽद्दिद्वयं हेट्टिमविरलणाए  
समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि छट्ट-सत्तमपुटविमिच्छाऽद्दिद्वयं पावेदि । पुणो तमु-  
वरिमविरलणाए सुण्णट्टाणं मोत्तूण हेट्टिमविरलणमेत्तपंचमपुटविमिच्छाऽद्दिद्वयमिह पक्खित्ते  
रूवं पडि पंचम-छट्ट-सत्तमपुटविमिच्छाऽद्दिद्वयं पावेदि विदियरूवपरिहाणी च लब्भदि ।  
एवं पुणो पुणो कायव्वं जाव उवरिमविरलणा परिसमत्तेत्ति । एत्थ परिहीणरूवपमाण-

एकके ऊपर जगश्रेणीको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें भाग देने पर, जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर नचिके चार वर्गोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसे जगश्रेणीके एक अधिक तृतीय वर्गमूलसे खंडित करने पर एक खंड आता है । पुनः उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त पांचवीं पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनमें उस शून्यस्थानको ( जिसके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें बांटा है उसे ) छोड़कर पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त करने पर अधस्तन विरलनप्रमाण उपरिम विरलनके अंकों पर पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और एककी हानि प्राप्त होती है । पुनः तदनन्तर उपरिम विरलनके एक अंक पर स्थित पांचवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके ऊपर समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उपरिम विरलनमें उस शून्यस्थानको ( जिसके द्रव्यको अधस्तन विरलनमें बांटा है उसे ) छोड़कर अधस्तन विरलनप्रमाण छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यको पांचवीं पृथिवीके द्रव्यमें मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति पांचवीं, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है और दूसरे अंककी हानि भी प्राप्त होती है । इसप्रकार जबतक उपरिम विरलन समाप्त होवे तबतक पुनः पुनः करना चाहिये । अब यहां पर हानिरूप विरलनोंका प्रमाण लते हैं । वह इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन



माणिजदे । तं जहा— हेड्डिमविरलणरूवाहियमेचद्व्याणं गंतुण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणम्हि केवडियरूवपरिहाणिं लभामो चि रूवाहियहेड्डिमविरलणाए जग-  
सेडिछट्टवग्गमूलमोवडिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे सेडिविदियवग्गमूलं तदियदिचउण्हं  
वग्गणमण्णोणम्भासेणुप्पणरासिम्हि रूवाहियसेडितदियवग्गमूलं पम्बिखविय अवहिद-  
एगभागो तिण्हं पुढवीणं अवहारकालो होदि । तेण जगसेडिम्हि भागे हिदे पंचमादि-  
तिण्हं हेड्डिमपुढवीणं मिच्छाहिट्ठिदव्वमामच्छदि ।

पुणो जगसेडिम्हि अट्टमवग्गमूलं विरलेऊग जगसेडिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं  
पडि चउत्थपुढविमिच्छाहिट्ठिदव्वं पावेदि । पुणो चउत्थपुढविमिच्छाहिट्ठिदव्वं पंचमादि-  
हेड्डिमतिपुढविमिच्छाहिट्ठिदव्वेहि ओवडिय लद्धं हेड्डा विरलिय चउत्थपुढविदव्वं उवरिम-  
विरलणाए पढमरूवोवरि हिदं समखंडं करिय दिण्णे पंचमादिहेड्डिमतिपुढविमिच्छाहिट्ठि-

विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनोंमें  
कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जग-  
श्रेणीके छठे वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे उसी जगश्रेणीके छठे वर्गमूलमेंसे  
घटा देने पर जो आता है वह जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूल आदि चार वर्गोंके परस्पर गुणा  
करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उसमें एक अधिक तृतीय वर्गमूलको मिलाकर जो जोड़ आवे  
उससे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको भाजित करने पर जो एक भाग लब्ध आवे उतना होता  
है और यही पूर्वोक्त तीन पृथिवियोंका अवहारकाल है । उक्त अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित  
करने पर पांचवीं आदि तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—२०४८ २०४८

१ १ ३२ वार;

$$२०४८ \div १५३६ = \frac{४}{३}$$

$$\begin{array}{r} १५३६ \\ १ \end{array} \quad \begin{array}{r} ५१२ \\ १ \\ ३ \end{array}$$

$$६५५३६ \div \frac{१२८}{७} = ३५८४$$

अधस्तन विरलन १ $\frac{१}{३}$  में १ जोड़कर २ $\frac{१}{३}$  होते  
हैं । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विर-  
लनमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम  
विरलनमें कितनी हानि होगी, इसप्रकार  
त्रैराशिक करने पर  $\frac{४}{३}$  हानिरूप अंक आते  
हैं । इसे उपरिम विरलन ३२ मेंसे घटा देने  
पर १३ $\frac{१}{३}$  आते हैं । इसका जगश्रेणीमें भाग  
पर ३५८४ प्रमाण पांचवीं आदि तीन पृथि-  
वियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके  
प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति  
चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि  
द्रव्यको पांचवीं आदि नीचेके तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो लब्ध  
आवे उसे नीचे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके उपर उपरिम  
विरलनके प्रथम एक पर स्थित चौथी पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर

द्वयं पावेदि । एत्थ पुव्वं व समकरणं कादच्चं । एत्थ परिहीणरूपाणं पमाणमाणिज्जदे । तं जहा- हेट्टिमविरलणरूपाहियमेत्तद्वाणं गंतूणं जदि उवरिमविरलणमिह एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिमविरलणमिह केवडियरूवपरिहाणिं लभामो चि रूपाहियहेट्टिमविरलणाए जगसेट्ठिअट्टमवग्गमूलमोवाट्टिय लद्धं तमिह चेव अवाणिदे चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमपुढवीणं सत्तमपुढविमिच्छाइट्टिसलागाहि जगसेट्ठिविदियवग्गमूलमोवाट्टिय चउत्थपुढविआदिहेट्टिम-मिच्छाइट्टिद्वयस्स अवहारकालो होदि । तेण जगसेट्ठिमिह भागे हिदे चउण्हं पुढवीणं मिच्छाइट्टिद्वयमागच्छदि ।

पुणो जगसेट्ठिसमवग्गमूलं विरलेऊण जगसेट्ठिं समखंडं करिय दिण्णे रूपं पडि

प्रत्येक एक पर पांचवी आदि नीचेकी तीन पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । यहां पर समीकरण पहलेके समान कर लेना चाहिये । अब यहां पर हानिरूप अंकोंका प्रमाण लाते हैं । वह इसप्रकार है— उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जग-श्रेणीके आठवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे उसी जगश्रेणीके आठवें वर्गमूल-मेंसे घटा देने पर जो आता है वह चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई मिथ्यादृष्टि शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आता है उतना होता है । और यही चौथी आदि नीचेकी चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल है । उक्त अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर चार पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—४०९६ ४०९६

१ १ १६ वार

$४०९६ \div ३५८४ = \frac{८}{७}$

३५८४ ५१२

१ १  
७

$६५५३६ \div \frac{१२८}{१५} = ७६८०$

अधस्तन विरलन  $१\frac{६}{७}$  में १ जोड़ने पर  $२\frac{६}{७}$  होते हैं । यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलन १६ में कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर  $१\frac{६}{७}$  हानिरूप अंक आते हैं । इसे उपरिम विरलन १६ मेंसे घटा देने पर  $१\frac{३६}{७}$  होता है जो सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा की गई चौथी आदि चार

पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शलाकाओं  $१ + २ + ४ + ८ = १५$  से जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूल १२८ को अपवर्तित करने पर जितना आता है उतनेके बराबर होता है । इससे ६५५३६ प्रमाण जगश्रेणीके भाजित करने पर ७६८० प्रमाण चौथी आदि चार पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

अनन्तर जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जगश्रेणीको समान खंड करके वयूरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति

तदियपुढविमिच्छाइट्टिद्ववपमाणं पावेदि । पुणो तं तदियपुढविमिच्छाइट्टिद्ववं हेट्टिमचउत्थ-  
पुढविमिच्छाइट्टिद्ववेण ओवट्टिय लद्धं विरलेऊण तदियपुढविद्ववमुवरिमविरलणपढम-  
रूवोवरि ट्टिदं वेतूण समखंडं करिय दिण्णे चउत्थपुढविमिच्छाइट्टिद्ववं रूवं पडि पावेदि ।  
पुणो एदं उवरिमविरलणट्टिदतदियपुढविद्ववमिह दाऊण पुवं व समकरणं करिय परि-  
हाणिरूवाणि आणेयव्वाणि । तं जहा— हेट्टिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एग-  
रूवपरिहाणी लब्धमिदं तो उवरिमविरलणमिह केवडियरूवपरिहाणि पेच्छामो त्ति रूवाहिय-  
हेट्टिमविरलणाए सेट्टिसमवगामूलमोवट्टिय लद्धं तमिह चेव सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे  
तदियादिपंचपुढविमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । तस्स पमाणं केत्तियं ? तदियादि-  
पंचपुढवीणं सत्तमपुढविद्ववस्स सलागाहि सेट्टिविदियवगमूलमिह ओवट्टिदे जं लद्धं

तीसरी पृथिवीके मिथ्यादष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः उस तीसरी पृथिवीके मिथ्यादष्टि द्रव्यको नीचेकी चार पृथिवियोंके मिथ्यादष्टि द्रव्यके प्रमाणसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका विरलन करके उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके ऊपर उपरिम विरलनके प्रथम अंकके ऊपर स्थित तीसरी पृथिवीके मिथ्यादष्टि द्रव्यको ग्रहण करके और समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति चौथी आदि चार पृथिवियोंके मिथ्यादष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः इस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त तीसरी पृथिवीके द्रव्यके ऊपर देकर पहलेके समान समीकरण करके हानिरूप विरलन अंक ले आना चाहिये। जैसे—उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलन-मात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनसे जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे समान खेद करके जगश्रेणीके उसी दशवें वर्गमूलमेंसे अपनयन करने पर तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादष्टि द्रव्यका अवहार-काल होता है।

उदाहरण—८१९२ ८१९२

$$\begin{array}{r} 1 \quad 1 \quad 4 \text{ बार;} \\ 8192 \div 640 = \frac{128}{16} \\ 640 \quad 412 \\ 1 \quad 1 \\ \hline 16 \end{array}$$

अधस्तन विरलन  $2^{\frac{1}{2}}$  में १ मिला देने पर  $2^{\frac{1}{2}}$  होते हैं। यदि इतने स्थान जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमात्र ८ स्थान जाने पर कितनी हानि होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करने पर  $2^{\frac{1}{2}}$  की हानि आ जाती है। इसे

उपरिम विरलन ८ मेंसे घटा देने पर  $2^{\frac{1}{2}}$  शेष रहते हैं।

शंका—तृतीयादि पांच पृथिवियोंके उक्त भागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—तृतीयादि पांच पृथिवियोंकी सातवीं पृथिवीके मिथ्यादष्टि द्रव्यको अपेक्षा की गई शालाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके अपवर्तित करने पर जितना लब्ध आवे

तत्तियमेत्तं । तेण जगसेटिस्मिह भागे हिदे पंचपुढविमिच्छाइडिद्ववमागच्छदि । पुणो सेटिवारसवग्गमूलं विरलेऊण जगसेटिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि विदियपुढविमिच्छाइडिद्ववं पावेदि । हेटिमपंचपुढविद्ववेण तमोवडिय लद्धं विरलिय उवरिमविरलण-पढमरूवोवरि डिद्विविदियपुढविमिच्छाइडिद्ववं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तदियादि-पंचपुढविमिच्छाइडिद्ववं पावेदि । तमुवरिमविरलणोवरि डिद्विविदियपुढविमिच्छाइडिद्वव-स्सुवरि पक्खिविय समकरणं करिय परिहाणिरूवाणि आणेरव्वाणि । तेसिं पमाणमेग-वारेणाणिज्जे । तं जहा-रूवाहियहेटिमविरलणमेत्तद्वानं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्धमदि तो उवरिमविरलणमिह केवडियरूवपरिहाणिं पेच्छामो त्ति रूवाहियहेटिम विरलणाए सेडिवारसवग्गमूलमोवडिय लद्धं तमिह चेव सरिसच्छेदं काऊण अवणिदे

तन्मात्र उक्त भागहारका प्रमाण है । उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर तृतीयादि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

$$\text{उदाहरण—} १६ + ८ + ४ + २ + १ = ३१; \quad १२८ \div ३१ = \frac{१२८}{३१};$$

$$६५५३६ \div \frac{१२८}{३१} = १५८७२ \text{ तृतीयादि पांच पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य ।}$$

अनन्तर जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगश्रेणीको समान खण्ड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । अनन्तर उस दूसरी पृथिवीके द्रव्यको नीचेकी तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उपरिम विरलनके प्रथम अंक पर स्थित दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड करके दे देने पर अधस्तन विरलनराशिके प्रत्येक एकके प्रति तीसरी आदि पांच पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है । पुनः इस अधस्तन विरलनके प्रति प्राप्त द्रव्यको उपरिम विरलनके प्रति प्राप्त दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर प्राक्षिप्त करके पहलेके समान समीकरण करके हानिरूप अंक ले आना चाहिये । आगे उन्हीं हानिरूप अंकोंका एकवारमें प्रमाण लाते हैं । जैसे—

उपरिम विरलनमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक अधिक अधस्तन विरलनके प्रमाणसे जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे समान छेद करके उसी जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलमेंसे घटा देने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल प्राप्त होता है ।

विदियादिछप्पुढविअवहारकालो होदि । तस्स पमाणं केत्थियं ? विदियादिछप्पुढवीणं सत्तम-  
पुढविमिच्छाइड्डिसलागाहि जगसेट्ठिविदियवग्गमूलमवहिदएगभागे हवदि । तेण जगसेट्ठिम्हि  
भागे हिदे छप्पुढविमिच्छाइड्डिदव्वमागच्छदि । तं जगसेट्ठिणा खंडेऊणेगखंडं सामण्णेरइय-  
विकखंभल्लचिम्हि अवणिय सेसेण जगसेट्ठिम्हि भागे हिदे पढमपुढविअवहारकालो आग-  
च्छदि । अहवा पुव्वमाणिदछप्पुढविदव्वेण सामण्णेरइयअवहारकालं गुणेऊण तम्हि

उदाहरण—१६३८४ १६३८४

१ १ ४ बार

$$१६३८४ \div १५८७२ = \frac{३२}{३१}$$

१५८७२ ५१२

१ १ ३१

अधस्तन विरलन १३ $\frac{१}{३}$  में १ मिला देने

पर २ $\frac{१}{३}$  होता है । यदि इतने स्थान  
जाकर उपरिम विरलनमें १ की हानि होती  
है तो उपरिम विरलनमात्र ४ स्थान जाकर  
कितनी हानि प्राप्त होगी ? इसप्रकार वैराशिक  
करने पर १ $\frac{३१}{३१}$  हानिरूप अंक आ जाते हैं ।

इसे उपरिम विरलन ४ में से घटा देने पर १ $\frac{३१}{३१}$  प्रमाण द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहार-  
काल होता है ।

शंका—द्वितीयादि छह पृथिवियोंके उक्त भागहारका प्रमाण कितना है ?

समाधान—सातवीं पृथिवीके मिथ्यादष्टि द्रव्यकी अपेक्षा की गई द्वितीयादि छह  
पृथिवियोंकी मिथ्यादष्टि शलाकाओंसे जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर जो एक  
भाग लब्ध आता है उतना द्वितीयादि छह पृथिवियोंका अवहारकाल है । उक्त भागहारसे  
जगश्रेणीके भाजित करने पर द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

उदाहरण—३२ + १६ + ८ + ४ + २ + १ = ६३; १२८ ÷ ६३ =  $\frac{१२८}{६३}$  द्वितीयादि छह

पृथिवियोंका अवहारकाल ।

$६५५३६ \div \frac{१२८}{६३} = ३२२५६$  द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मिथ्यादष्टि द्रव्य ।

उक्त छह पृथिवियोंके मिथ्यादष्टि द्रव्यको जगश्रेणीसे खण्डित करके जो एक खण्ड  
लब्ध आवे उसे सामान्य नारक मिथ्यादष्टि विष्कंभसूत्रोंमें से घटा कर जो शेष रहे उससे  
जगश्रेणीको भाजित करने पर पहली पृथिवीके मिथ्यादष्टि द्रव्यका अवहारकाल आता है ।

उदाहरण—३२२५६ ÷ ६५५३६ =  $\frac{६३}{१२८}$ ; २ -  $\frac{६३}{१२८} = \frac{१९३}{१२८}$

$६५५३६ \div \frac{१९३}{१२८} = \frac{८३८८६०८}{१९३}$  प्र. पु. मि. अव.

अथवा, पहले लाये हुए छह पृथिवियोंके मिथ्यादष्टि द्रव्यके प्रमाणसे सामान्य  
मिथ्यादष्टि नारकियोंके अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें पहली पृथिवीके



रूवं लब्धमिदं चि । पुणो ताणि तिणिण रूवाणि धेत्तूण उवरिमविरलणपंचरूवोवरि द्विद-  
पंचसु सोलसेसु परिवाडीए पक्खित्ते रूवं पडि एक्कणवीसरूवाणि हवंति । पुणो सत्तम-  
रूवं तिणिण भागे करिय तेसिं तिभागणं सोलसरूवाणि समखंडं करिय दिण्णे एकेकस्स  
तिभागस्स सतिभागपंचरूवाणि पावेंति । पुणो एगरूवतिभागधरिदसतिभागं पंचरूवं  
तत्थेव द्विविय सेस-वे-तिभागे अप्पणो धरिदरासिसहिदं पुध द्विविय पुणो सट्ठणद्विद-  
एगरूवतिभागेण धरिदसतिभागपंचरूवेसु हेट्ठिमविरलणाए तिभागरूवोवरि द्विद-एगरूवं  
पक्खित्ते तत्थ सतिभाग-छ-रूवाणि हवंति, एत्थ एगरूवपरिहाणी लद्धा । पुणो  
तदणंतररूवधरिद-सोलसरूवाणि हेट्ठिमविरलणाए समखंडं करिय दिण्णे पुवं व रूवं  
पडि तिणिण तिणिण रूवाणि पावेंति । पुणो तत्थ सकलपंचरूवोवरि द्विद-तिणिण रूवाणि  
धेत्तूण सुण्णट्ठाणं वंचिय उवरिमविरलण-पंचरूवोवरि द्विद-पंचसु सोलसेसु परिवाडीए  
पक्खित्तेसु रूवं पडि एगूणवीसरूवाणि हवंति । पुणो पुवंमाणेऊण पुध द्विविद-वे-

$$१६ \div ३ = ५ \frac{१}{३}; \quad \begin{array}{ccccc} ३ & ३ & ३ & ३ & ३ \\ १ & १ & १ & १ & १ \end{array} \frac{१}{३}$$

पुनः नीचेके विरलनके प्रति प्राप्त उन तीन तीन अंकोंको लेकर उपरिम विरलनके  
(द्वितीयादि) पांच विरलन अंकों पर स्थित पांच सोलह अंकोंके ऊपर परिपाटी क्रमसे  
दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त होते हैं । पुनः सप्तम विरलनरूप एक  
अंकके तीन भाग करके उन तीन भागोंके ऊपर सोलहको समान खंड करके देयरूपसे दे देने  
पर प्रत्येक एक त्रिभागके प्रति एक त्रिभागसहित पांच अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर एक  
त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच अंकोंको वहाँ पर रखकर और शेष  
दो त्रिभागोंको अपने ऊपर रखी हुई राशिके साथ अलग स्थापित करके अनन्तर अपने  
स्थान पर स्थित एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच अंकोंमें अधस्तन विरलनके  
एक त्रिभागके ऊपर स्थित एकको मिला देने पर वहाँ एक त्रिभागसहित छह अंक आ  
जाते हैं । इसप्रकार यहाँ एक विरलन अंककी हानि प्राप्त हुई । पुनः उसके अर्थात् सातवें  
विरलनके अनन्तर एक विरलन अंक पर स्थित सोलहको अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति  
समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर पहलेके समान अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति  
तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं । अनन्तर वहाँ पूर्णक पांच विरलनरूप अंकोंके ऊपर स्थित  
तीन संख्याको ग्रहण करके शून्यस्थानको (जिस आठवें स्थानके १६ को अधस्तन विरलनमें  
घांटा है उसे) छोड़कर उपरिम विरलनके पांच विरलन अंकोंके ऊपर स्थित पांच सोलह  
अंकोंके ऊपर क्रमसे प्रक्षिप्त कर देने पर उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस अंक प्राप्त  
होते हैं । अनन्तर पहले लाकर अलग स्थापित दो त्रिभागोंमेंसे एक त्रिभागके ऊपर रखके हुए

तिभागेसु एगतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण तदणंतरखेचं द्विविय' एगरूवति-  
भागधरिदएगरूवं तत्थ पक्खित्ते एत्थ वि सतिभाग-छ-रूवाणि हवंति, विदियरूव-  
परिहाणी च लब्धमिदि। पुणो तदणंतररूवोवरि द्विद-सोलसरूवाणि घेत्तूण हेट्टिमविरलणाए  
समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि तिण्णि तिण्णि रूवाणि पावेंति। तत्थ वेरूवधरिद-  
तिण्णि रूवाणि घेत्तूण तदणंतरवेरूवधरिदसोलसरूवेसु पक्खित्तेसु एगूणवीसरूवाणि  
हवंति। ताणं दोण्हं रूवाणमंते पुव्वमवणिदएगरूवतिभागधरिदसतिभागपंचरूवमाणेऊण  
द्विविय तत्थ हेट्टिमविरलणाए एगरूवतिभागोवरिद्विदएगरूवं पक्खित्ते सतिभाग-छ-रूवाणि  
हवंति। सेसाणि तिण्णिरूवधरिदणवरूवाणि तहा चेव अवचिट्ठेते। तेसि विरलणरूवमुपा-

एक त्रिभागसहित पांच अंकोंको लाकर पहले रखे हुए एक त्रिभागसहित छह के अनन्तर  
स्थापित करके और उसमें अधस्तन विरलनके एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एकको मिला देने  
पर यहां भी एक त्रिभागसहित छह अंक हो जाते हैं और दूसरे विरलन अंककी हानि प्राप्त  
होती है। पुनः उसके ( जहांतक उपरिम विरलनमें तीन अंक दिये गये हैं उसके ) अनन्तरके  
विरलन अंकके ऊपर स्थित सोलह संख्याको ग्रहण करके और अधस्तन विरलनके  
प्रत्येक एकके प्रति समान खंड करके दे देने पर अधस्तन विरलनके प्रत्येक एकके प्रति  
तीन तीन अंक प्राप्त होते हैं। उनमेंसे दो विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन अंकोंको ग्रहण करके  
उन्हें उपरिम विरलनमें पहले जहांतक तीन अंक दिये जा चुके हैं उसके अनन्तरके दो उपरिम  
विरलनोंके प्रति प्राप्त सोलह संख्यामें मिला देने पर प्रत्येक एकके प्रति उन्नीस संख्या प्राप्त  
होती है। तथा पहले निकाले हुए एक त्रिभागके प्रति प्राप्त एक त्रिभागसहित पांच संख्याको  
उन दो अंकोंके अन्तमें लाकर स्थापित करके उसमें अधस्तन विरलनके एक त्रिभागके प्रति  
प्राप्त एक संख्याको मिला देने पर एक त्रिभागसहित छह होते हैं। अधस्तन विरलनके शेष  
तीन अंकोंके प्रति प्राप्त नौ अंक उसीप्रकार स्थित रहते हैं।

उदाहरण—

$$\begin{array}{cccccccccccccccc}
 & ३ & ३ & ३ & ३ & ३ & & ३ & ३ & ३ & ३ & ३ & & ३ & ३ \\
 \times & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & * & \times & १६ & १६ & १६ & १६ & १६ & \times & १६ & १६ \\
 & १ & १ & १ & १ & १ & & १ & १ & १ & १ & १ & १ & & १ & १ \\
 \hline
 ५\frac{१}{३} + १ = ६\frac{१}{३} & ५\frac{१}{३} + १ = ६\frac{१}{३} & ५\frac{१}{३} + १ = ६\frac{१}{३} = १९
 \end{array}$$

यहां सातवें विरलनके तीन भाग किये और उस पर १६ को बांटा तब  $५\frac{१}{३}$  प्राप्त  
हुआ। अनन्तर अधस्तन विरलनके  $\frac{१}{३}$  के प्रति प्राप्त एक जोड़ा तब  $६\frac{१}{३}$  हुआ।

तीसरीवार अधस्तन विरलन  $\frac{१}{३}$  १ १ १ १ १ १ ३ ३ ३ = ९ शेष रहे।

(जिन अंकों पर  $\times$  ऐसा चिन्ह है उनका द्रव्य अधस्तन विरलनमें बांटा गया है। तथा  
जिस पर  $*$  ऐसा चिन्ह है उसके तीन भाग करके उसका द्रव्य उन तीनों भागोंमें बांटा है।)



इज्जदे । तं जहा—एगूणवीसरूपाणं जदि एगं विरलणरूवं लब्भदे तो णवण्हं रूपाणं किं लभामो त्ति एगूणवीसहि फलगुणिदिच्छाए भागे हिदे एगरूवं' एगूणवीस खंडाणि काऊण तत्थ णव खंडाणि आगच्छंति । अवणिदसेसाणि रूपाणि एगट्ठे कदे तेरहरूपाणि एगरूवं एगूणवीसखंडाणि कदे णव खंडाणि च हवंति । संपहि परिहाणि रूपाणि आणिज्जंते । तं जहा—हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो सतिभागतिण्हं रूपाणं किं लभामो त्ति फलगुणिदइच्छहि पमाणेण भागे हिदे एगरूवं एगूणवीसखंडाणि कदे तत्थ दस खंडाणि लब्भंति । पुव्वलद्ध-दो-रूपाणि तत्थ पविस्सुत्ते परिहारि रूपाणि हवंति । अहवा सव्वहीणरूपाणि एगवारिणाणिज्जंते । तं जहा—हेट्ठिमविरलणरूवाहियमेत्तद्धाणं गंतूण जदि एगरूवपरिहाणी लब्भदि तो उवरिम-

अब उन अवशिष्ट नौ अंकोंका विरलन कितना होगा यह उत्पन्न करके बतलाते हैं । यह इसप्रकार है—उत्तीस अंकोंके प्रति यदि एक विरलन प्राप्त होता है तो नौ अंकोंके प्रति कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि नौको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि उत्तीसका भाग देने पर एकके उत्तीस खंड करके उनमेंसे ९ खंड लब्ध आते हैं । इसप्रकार उपरिम विरलनमेंसे जितनी संख्या घट जाती है उससे शेष रहे हुए सभी अंकोंको एकत्रित करने पर पूर्णक तेरह और एक अंकके उत्तीस खंड करके उनमेंसे नौ खंड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि १९; फलराशि १; इच्छाराशि ९;

$$९ \times १ = ९; ९ \div १९ = \frac{९}{१९} \text{ नौके प्रति विरलनरूपका प्रमाण ।}$$

$$१९ - २\frac{१९}{१९} = १२\frac{१९}{१९} \text{ कुल विरलनरूप अंकोंका प्रमाण ।}$$

अब हानिरूप अंक लाते हैं । जैसे—एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो एक त्रिभागसहित तीन विरलनस्थानोंके प्रति क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि एक त्रिभागसहित तीन विरलनको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशि एक अधिक अधस्तन विरलनका भाग देने पर एकके उत्तीस खंड करने पर उनमें दश खंड लब्ध आते हैं । पुनः पहले लब्ध आवे हुए दोको उसमें मिला देने पर संपूर्ण हानिरूप अंक हो जाते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि  $\frac{१०}{३}$ ; फलराशि १; इच्छाराशि  $\frac{१०}{३}$ ;

$$\frac{१०}{३} \times १ = \frac{१०}{३}; \frac{१०}{३} \div \frac{१०}{३} = \frac{१०}{३}; \frac{१०}{३} + २ = २\frac{१०}{३} \text{ हानि अंक ।}$$

अथवा, संपूर्ण हानिरूप विरलनस्थान एकवारमें लाते हैं । जैसे—एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एककी हानि प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें

विरलणमिह किं लभामो त्ति रूवाहियहेट्टिमविरलणाए फलगुणिदिच्छाए भागे हिदाए सच्चपरिहीणरूवाणि आगच्छन्ति । ताणि उवरिमविरलणरूवेसु अवणिदे अवहारकालो होदि । एवं सच्चत्थ समकरणविहाणं जाणिऊण वत्तच्चं ।

संपहि रासिपरिहाणिविहाणं वत्तइस्सामो । तं जहा—तत्थ ताव तिण्हं रूवाणं परिहाणि उच्चदे—उवरिमविरलणरूवधरिदसोलसरूवेसु हेट्टिमविरलणाए सगलेगरूवधरिद-तिणिण रूवाणि रूवं पडि अवणिय पुध द्वेयच्चाणि । संपहि उवरिमविरलणमेत्ततिणिण रूवाणि अवणिदसेसपमाणेण कस्सामो । तं जहा—उवरिमविरलणचउरूवधरिदतिणिण तिणिण रूवाणि एगट्ठं करिय पुणो पंचमरूवधरिदतिण्हं रूवाणं तिमाणं धेत्तूण तत्थ पक्खित्ते अवणिदसेसपमाणं होदि । हेट्टिमविरलणाए अंते एगरूवं विरलिय अणंतरूपणण

कितनी हानि प्राप्त होगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि सोलहको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र इच्छाराशिका भाग देने पर संपूर्ण हानिरूप विरलनस्थान आ जाते हैं । इन्हें उपरिम विरलनकी संख्यामेंसे घटा देने पर अवहारकालका प्रमाण आता है । इसीप्रकार सर्वत्र समीकरण विधानको जानकर कथन करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि ६३; फलराशि १; इच्छाराशि १६.

$$१६ \times १ = १६ \quad १६ \div \frac{१९}{३} = २ \frac{१०}{१९} \text{ हानिरूप अंक ।}$$

$$१६ - २ \frac{१०}{१९} = १३ \frac{९}{१९} \text{ अवहारकाल ।}$$

अब राशिके हानिरूप विधानको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है—उस विषयमें तीन अंकोंकी हानिका कथन किया जाता है—उपरिम विरलनके प्रत्येक विरलनके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे अधस्तन विरलनके सकल एक विरलनके प्रति प्राप्त तीन संख्याको घटा कर पृथक् स्थापित कर देना चाहिये । अब उपरिम विरलनमात्र अर्थात् सोलहवार स्थापित तीन तीन अंकोंको, उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सोलहमेंसे तीन घटा देने पर जो शेष रहता है, उसके प्रमाणसे करते हैं । जैसे—उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन अंकोंको एकत्रित करके पुनः पांचवें विरलनके ऊपर रखे हुए तीनके त्रिभागको ग्रहण करके मिला देने पर सोलहमेंसे तीनको घटा कर जो शेष रहता है उसका प्रमाण होता है । इस अभी उदपन्न हुए तीनको घटा कर शेष रहे हुए प्रमाणको अधस्तन विरलनके अन्तमें एकका विरलन करके उसके ऊपर दे देना चाहिये । पुनः उपरिम विरलनके चार विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको

अवणिदसेसरूवपमाणं दादव्वं । पुणो उवरिमविरलणमिह चउरूवधरिदतिणि तिणि  
रूवाणि एगइं करिय पुव्वद्विदवेतिभागाभिहं एगं तिभागं वेत्तूण पक्खित्ते एदमवि  
अवणिदसेसपमाणं होदि । एदस्स कारणेण पुव्वविरलिदएगरूवस्स पासे अवरेमेगरूवं  
विरलिय तस्सुवरि सो संपहि बुप्पणअवणिदसेसरासी दादव्वो । पुणो वि उवरिम-  
विरलणचउरूवधरिदतिणि तिणि रूवाणि मेलाविय पुध डुविय तिभागं तत्थ पक्खित्ते  
एदमवि अवणिदसेसपमाणं होदि । एदस्स कारणेण पुव्वविरलिददोणहं रूवाणं पासे अण्णेगं  
रूवं विरलिय तस्सुवरि सो रासी ठवेयव्वो । पुणो अवसेसाणि तिरूवधरिदतिणि तिणि  
रूवाणि णव भवंति । एदाणं विरलणरूवाणं पमाणमुप्पाइज्जदे । रूवूणहेडिमविरलणमेत्त-  
द्वाणं गंतूण जदि एगअवहारपक्खेवरूवं लब्भदि तो तिणहं रूवाणं किं लभामो ति रूवूण-

एकचित्त करके पहले अलग स्थापित हुए तीनके दो विभागोंमेंसे एक विभागको ग्रहण करके  
मिला देने पर यह भी तीनको घटाकर जो शेष रहे उसका प्रमाण होता है । इसलिये पहले  
विरलन किये हुए एक विरलनके पासमें दूसरे एकको विरलित करके उसके ऊपर यह अभी  
उत्पन्न हुए तीनको घटाकर शेष रही राशि दे देना चाहिये । फिर भी उपरिम विरलनके चार  
विरलनोंके प्रति प्राप्त तीन तीन संख्याको मिला कर अलग स्थापित करके तीनका विभाग  
उसमें मिला देने पर यह भी तीन घटा कर शेष रही राशिका प्रमाण होता है । इसलिये पहले  
विरलन किये हुए दो विरलनोंके पासमें और एकका विरलन करके उसके ऊपर यह राशि  
स्थापित कर देना चाहिये । पुनः उपरिम विरलनके अवशिष्ट तीन विरलनोंके प्रति प्राप्त  
अवशेष तीन तीन अंक मिल कर नौ होते हैं ।

उदाहरण—उपरिम विरलनके प्रत्येक १६ मेंसे ३ निकाल देने पर १३ रहते हैं । यथा—

१३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३ १३  
१ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १

अब १६ जगह जो ३ हैं उनको १३ रूप करनेके लिये इसप्रकार जोड़ो—

३+३+३+३+१=१३; ३+३+३+३+१=१३; ३+३+३+३+१=१३;  
३+३+३=९

इसप्रकार उपरिम विरलनके १६ स्थानोंमें ये ३ और मिला देने पर कुल १९ स्थान  
होते हैं जिनमें प्रत्येक पर १३ प्राप्त हैं । बाकी ९ रहते हैं जिसके लिये ११ विरलन प्राप्त  
होगा । इसप्रकार १९ $\frac{१}{३}$  कुल विरलन अंक आते हैं । २५६ में भाग देकर १३ लब्ध लानेके  
लिये यही १९ $\frac{१}{३}$  भागहार है ।

अब इन तीन विरलनके प्रति प्राप्त नौ अंकोंका विरलन प्रमाण उत्पन्न करते हैं—एक  
कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारप्रक्षेपशालाका उत्पन्न होती है तो तीनके

हेट्टिमविरलणाए तिणिण रूवाणि ओवट्टिदे एगरूवं तेरहखंडाणि कदे तत्थ णव खंडाणि हवंति । एदं पुच्चिच्छतिण्हं रूवाणं पासे विरलिय एदस्सुवरि णव रूवाणि दाद्ववाणि । अहवा सव्वपक्खेवरूवाणि एगवारेण आणिज्जंते । तं जहा— रूवूणहेट्टिमविरलणमेत्तद्वाणं गंतूणं यदि एगा अवहारपक्खेवसलागा लब्भदि तो उवरिमविरलणमिह केसियाओ अवहारपक्खेवसलागाओ लभामो त्ति पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए सव्वाओ पक्खेवसलागाओ लब्भंति । एदाओ उवरिमविरलणमिह पक्खित्ते इच्छिदअवहारकालो होदि । एवं सव्वत्थ रासिपरिहाणिमिह जाणिऊण समकरणं कायव्वं ।

अहवा सामण्यअवहारकालं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स जगपदरं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सामण्यणेइयमिच्छाइट्टिदव्वं पावेदि । तत्थ एगरूवधरिदसामण्यणेइय-

प्रति क्या प्राप्त होगा, इसप्रकार त्रैराशिक करके एक कम अधस्तन विरलनसे तीनको अपवर्तित करने पर एकके तेरह खंड करने पर उनमेंसे नौ खण्ड लब्ध आते हैं । इसे पूर्वोक्त तीन विरलन अंकोंके पासमें विरलित करके इसके ऊपर नौ अंक दे देना चाहिये ।

उदाहरण— $५\frac{१}{३} - १ = ४\frac{१}{३}$  प्रमाणराशि; १ फलराशि; ३ इच्छाराशि ।

$३ \times १ = ३ \div \frac{१३}{३} = \frac{९}{१३}$  तीन विरलनोंके प्रति तीन तीन रूपसे दिये हुए ९ अंकोंका अवहारकाल ।

अथवा, संपूर्ण प्रक्षेपरूप अवहारकालको एकवारमें लाते हैं । जैसे— एक कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर यदि एक अवहारकाल प्रक्षेपशलाका प्राप्त होती है तो उपरिम विरलनमें कितनी प्रक्षेपशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके फलराशि एकसे इच्छाराशि उपरिम विरलनको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें एक कम अधस्तन विरलन मात्र प्रमाणराशिका भाग देने पर संपूर्ण अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं आ जाती हैं । इनको उपरिम विरलनमें मिला देने पर इच्छित अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सर्वत्र राशिकी हानिमें जानकर समीकरण करना चाहिये ।

उदाहरण—प्रमाणराशि  $४\frac{१}{३}$ ; फलराशि १; इच्छाराशि १६;

$१६ \times १ = १६; १६ \div \frac{१३}{३} = \frac{४८}{१३}$  प्रक्षेप अवहारकाल ।

$१६ + \frac{४८}{१३} = १९\frac{९}{१३}$  इच्छित अवहारकाल ।

अथवा, सामान्य अवहारकालका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति जगप्रतरको समान खंड करके देने पर प्रत्येक एकके प्रति सामान्य नारक मिथ्यादाष्टि जीवराशि प्राप्त होती है ।

मिच्छाद्द्विद्वं सत्तमपुढविमिच्छाद्द्विद्वपमाणेण कस्सामो । तं जहा—सेट्ठिविदियवग्ग-  
मूलमज्जिदजगसेढीए जदि एकं सत्तमपुढविमिच्छाद्द्विद्वपमाणं लब्भदि तो सामण्ण-  
णेरइयमिच्छाद्द्विद्वपमिह केत्तियं लभामो ति फलेण इच्छं गुणिय पमाणेण भागे हिदे  
विकखं भल्लचिगुणिदेसेट्ठिविदियवग्गमूलमेत्ताणि सत्तमपुढविमिच्छाद्द्विद्वखंडाणि आग-  
च्छंति । एवं सामण्णणेरइयअवहारकालरूवाणमुवरि द्विद्वसामण्णणेरइयरासी पत्तेयं पत्तेयं  
सत्तमपुढविमिच्छाद्द्विद्वपमाणेण कायव्वो । पुणो तत्थ एगरूवधरिदखंडेषु सत्तम-  
पुढविमिच्छाद्द्विद्वपमाणं एगखंडपमाणं होदि । छट्ठपुढविमिच्छाद्द्विद्वं सेट्ठितदिय-  
वग्गमूलमेत्तखंडाणि धेत्तूण भवदि । पुणो पंचमपुढविमिच्छाद्द्विद्वं सेट्ठितदियवग्ग-  
मूलादिचउवग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि धेत्तूण हवदि ।

उदाहरण—१३१०७२ १३१०७२ सा. ना. मि. रा.  
१ १ ३२७६८ वार.

अब एक चिरलनके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सातवीं पृथिवीके  
मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे करके बतलाते हैं । जैसे— जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलका जग-  
श्रेणीमें भाग देने पर यदि एकवार सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है तो  
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें कितना प्राप्त होगा, इसप्रकार वैराशिक करके फलराशिसे  
इच्छाराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसमें प्रमाणराशिका भाग देने पर जगश्रेणीके  
द्वितीय वर्गमूलको विष्कंभसूचीसे गुणित करके जो लब्ध आवे उतने सातवीं पृथिवीके मिथ्या-  
दृष्टि द्रव्यके खंड होते हैं ।

उदाहरण—प्रमाणराशि  $\frac{६५५३६}{१२८}$ ; फलराशि १; इच्छाराशि १३१०७२;

$$१३१०७२ \times १ = १३१०७२; १३१०७२ \div \frac{६५५३६}{१२८} = २५६ = १२ \times २१ खंड.$$

इसीप्रकार सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवधारकालकी संख्याके ऊपर स्थित प्रत्येक  
सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिको सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे  
कर लेना चाहिये । परंतु वहां पर एक चिरलनके प्रति प्राप्त खंडोंमें सातवीं पृथिवीके  
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण एक खंड प्रमाण होता है । छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य  
जगश्रेणीके तृतीय वर्गमूलमात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है । पुनः पांचवीं  
पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर चार वर्गमूलोंके परस्पर गुणा  
करने पर वहां जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है ।

चउत्थपुढविमिच्छाइद्विद्वं सेदितदियवग्गमूलादिछव्वग्गमूलाणि गुणिदे तत्थ जत्ति-  
याणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि । तदियपुढविमिच्छाइद्विद्वं सेदितदिय-  
वग्गमूलादिअद्वग्गमूलाणि अण्णोणं गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि  
घेत्तूण पावदि । विदियपुढविमिच्छाइद्विद्वं तदियवग्गमूलादिसवग्गमूलाणि अण्णोण-  
व्भत्थाणि कदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियमेत्तखंडाणि घेत्तूण हवदि । पुणो एदाओ  
छपुढविमिच्छाइद्विखंडसलागाओ विवखंभसूचीगुणिदसेदिविदियवग्गमूलादो सोधिदे  
पढमपुढविमिच्छाइद्विखंडपमाणसलागा हवंति । एवं सामण्णअवहारकालमेत्तसामण्ण-  
णेरइयमिच्छाइद्विद्वं खंडसलागाओ पुध पुध करिय दरिसेदव्वाओ । पुणो एवं  
ठविय पढमपुढविअवहारकालो उप्पाइज्जदे । तं जहा— पढमपुढविमिच्छाइद्विखंडसलागा-

चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर छह वर्गमूलोंके परस्पर  
गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण उत्पन्न होवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर  
होता है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर आठ वर्ग-  
मूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं पृथिवीके द्रव्य-  
खंडोंको लेकर प्राप्त होता है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे  
लेकर दश वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर वहां जितना प्रमाण आवे तन्मात्र सातवीं  
पृथिवीके द्रव्य-खंडोंको लेकर होता है ।

उदाहरण—सामान्य अवहारकालके एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य राशि १३१०७२  
के सातवीं पृथिवीके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा खंड करने पर २५६ खंड हुए । उनमेंसे एक खंड प्रमाण  
सातवीं पृथिवीका द्रव्य है । दो खण्ड प्रमाण छठीका, चार खण्ड प्रमाण पांचवीका, आठ  
खण्ड प्रमाण चौथीका, १६ खण्ड प्रमाण तीसरीका और बत्तीस खण्ड प्रमाण दूसरीका द्रव्य  
है । इसप्रकार ये खण्डशलाकाएं ६३ होती हैं । यदि वर्गमूलोंके अपेक्षित तारतम्यसे  
खण्डशलाकाएं की जायं तो जो मूलमें कहा है तदनुसार खण्डशलाकाएं आवेंगी ।

पुनः इन छह पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि खण्डशलाकाओंको विष्कंभसूची गुणित  
जगश्रेणीके द्वितीय वर्गमूलमेंसे घटा देने पर प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि द्रव्यके  
खंडोंका जितना प्रमाण हो उतनी खंड शलाकाएं लब्ध आती हैं ।

उदाहरण— $128 \times 2 = 256$ ;  $256 - 63 = 193$ ;

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालमात्र अर्थात् सामान्य अवहारकालगुणित सामान्य  
नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें खण्डशलाकाएं पृथक् पृथक् निकाल करके दिखलाना चाहिये । पुनः  
इसप्रकार खण्डशलाकाएं स्थापित करके प्रथम पृथिवीका अवहारकाल उत्पन्न करते हैं । वह  
इसप्रकार है—प्रथम पृथिवीसंबन्धी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे यदि एक अवहारकालशलाका

हितो जदि एगा अवहारकालसलागा लब्धमदि तो सामण्यअवहारकालमेत्तसामण्यणेइय-  
खंडसलागाणं किं लभामो चि पमाणेण इच्छाए ओवट्टिदाए पढमपुढविमिच्छाइट्टि-  
अवहारकालो होदि । अहवा पढमपुढविमिच्छाइट्टिखंडसलागाहि सामण्यअवहारकाल-  
मोवट्टिय लद्धेण छपुढविखंडसलागा गुणिदे पक्खेवअवहारकालो होदि । अहवा लद्धं  
छप्पट्टिरासिं काऊण छण्हं पुढवीणं सग-सगखंडसलागाहि गुणिदे सग-सगपक्खेवअव-

प्राप्त होती है तो सामान्य अवहारकालमात्र नारक मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंकी कितनी  
खंडशलाकाएं प्राप्त होंगी, इसप्रकार त्रैराशिक करके प्रमाणराशि प्रथम पृथिवीसंबन्धी खण्ड-  
शलाकाओंसे इच्छाराशि सामान्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालगुणित सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि  
खण्डशलाकाओंको अपवर्तित करने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका अवहारकाल  
होता है।

$$\text{उदाहरण—प्रमाणराशि } १९३; \text{ फलराशि } १; \text{ इच्छाराशि } ३२७६८ \times २५६;$$

$$\frac{३२७६८ \times २५६}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. मि. अ.}$$

अथवा, प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि  
अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि खंड-  
शलाकाओंके गुणित करने पर प्रक्षेप अवहारकाल होता है।

$$\text{उदाहरण—} ३२७६८ \div १९३ = \frac{३२७६८}{१९३}; \frac{३२७६८}{१९३} \times ६३ = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्र. अ. का.}$$

अथवा, प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाओंसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि  
अवहारकालको अपवर्तित करके जो लब्ध आया उसकी छह प्रतिराशियां करके छह पृथिवियोंकी  
अपनी अपनी शलाकाओंसे गुणित करने पर अपना अपना प्रक्षेप अवहारकाल होता है।

$$\begin{array}{ll} \text{उदाहरण—} \frac{३२७६८}{१९३} \times १ = \frac{३२७६८}{१९३} & \text{सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ \frac{३२७६८}{१९३} \times २ = \frac{६५५३६}{१९३} & \text{छठी पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ \frac{३२७६८}{१९३} \times ४ = \frac{१३१०७२}{१९३} & \text{पांचवीं पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ \frac{३२७६८}{१९३} \times ८ = \frac{२६२१४४}{१९३} & \text{चौथी पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ \frac{३२७६८}{१९३} \times १६ = \frac{५२४२८८}{१९३} & \text{तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा,} \\ \frac{३२७६८}{१९३} \times ३२ = \frac{१०४८५७६}{१९३} & \text{दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा प्र. अवहारकाल.} \end{array}$$

हारकालो होदि । एवं विहाणेणुपण्णपक्खेवअवहारकालं सामण्णअवहारकालमिह पक्खित्ते पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एदमत्थपदमवहारिय अण्णत्थ वि डहररासिपमाणेण महल्लरासीओ कारुण पक्खेवअवहारकालो साधेयव्वो । एत्थ गिरयगईए संदिट्ठी- ६५५३६ एदं जगसेट्ठिपमाणं । एदं पि जगपदरपमाणं ४२९४९६७३९६ । सामण्णणेर- इयमिच्छाइट्ठिविक्खंमसूई 'एसा २ । सामण्णअवहारकालो ३२७६८ । दव्वं १३१०७२ । पक्खेवअवहारकालो २०६४३८४ । पढमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ८३८६०८ । लद्धपमाणं ९८८१६ । विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ४, दव्वं १६३८४ । तदिय- पुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो (८, दव्वं ८१९२ । चउत्थपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो)' १६, दव्वं ४०९६ । पंचमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ३२, दव्वं २०४८ । छट्ठम- पुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो ६४, दव्वं १०२४ । सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो

इस विधिसे जो प्रक्षेप अवहारकाल उत्पन्न हो उसे सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

$$\text{उदाहरण—} \frac{३२७६८}{१९३} + \frac{६५५३६}{१९३} + \frac{१३१०७२}{१९३} + \frac{२६२१४४}{१९३} + \frac{५२४२८८}{१९३} + \frac{१०४८५७६}{१९३} \\ = \frac{२०६४३८४}{१९३} \text{ प्र. अ. का.}$$

$$३२७६८ + \frac{२०६४३८४}{१९३} = \frac{८३८६०८}{१९३} \text{ प्र. पृ. का. अव.}$$

इसप्रकार इस अर्थपदका अवधारण करके अन्यत्र भी बड़ी राशिको छोटी राशिके प्रमाणसे करके प्रक्षेप अवहारकाल साध लेना चाहिये । अब यहां नरकगतिकी संदृष्टि दी जाती है—

६५५३६ जगज्जेणीका प्रमाण है । ४२९४९६७३९६ यह जगप्रतरका प्रमाण है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विक्खंमसूचीका प्रमाण २ है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण ३२७६८ है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य १३१०७२ है । प्रक्षेप अवहारकाल २०६४३८४ है । प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्यसंबन्धी अवहारकाल ८३८६०८ है । प्रथम पृथिवीमें लब्धराशि मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण ९८८१६ है । दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ४ और द्रव्य १६३८४ है । तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ८ और द्रव्य ८१९२ है । चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १६ और द्रव्य ४०९६ है । पांचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ३२ और द्रव्य २०४८ है । छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल ६४ और द्रव्य १०२४ है । सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल १२८ और



१२८, दव्वं ५१२' । विदियादिछप्पुहविमिच्छाड्डिदव्वसमूहो ३२२५६ ।

विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दव्व-  
पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ २० ॥

एदस्स सुत्तस्स आदेसोघदव्वपरूवयसुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ २१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स आदेसोघकालप्रमाणपरूवयसुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं ।  
एदाओ दव्वकालपरूवणाओ थूलाओ । कुदो ? सोदारारणं णिणयाणुप्पयाणादो । दव्व-  
परूवणादो कालपरूवणा सुहुमा, असंखेज्जासंखेज्जासंखाविसेसिददव्वणिरूवणादो । इदाणि  
दव्वकालपरूवणाहिंतो सुहुमखेत्तपरूवणट्ठं सुत्तमाह —

द्रव्य ५१२ है । दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका  
समूह ३२२५६ है ।

दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि  
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ २० ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके  
समान इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये ।

कालप्रमाणकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीके  
नारक मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा  
अपहृत होते हैं ॥ २१ ॥

आदेशसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके  
समान इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये । यहाँ यह जो द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा और  
कालप्रमाणकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणा की है  
वह स्थूल है, क्योंकि, श्रोताओंको इस प्ररूपणासे निर्णय नहीं हो सकता है । फिर भी द्रव्य  
प्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म है, क्योंकि, कालप्ररूपणाके द्वारा असंख्यातासंख्यात संख्या  
विशिष्ट द्रव्यका प्ररूपण किया गया है । अब द्रव्य और काल इन दोनों ही प्ररूपणाओंसे सूक्ष्म  
क्षेत्रप्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

‘खेत्तेण सेढीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेढीए आयामो  
असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ पढमादियाणं सेढिवग्गमूलाणं  
संखेज्जाणं अण्णोण्णवभासेणं ॥ २२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो बुच्चेदं । तं जहा—द्वयकालप्रमाणसुत्तेहि विदियादि-  
छप्पुदविमिच्छाद्विजीवाणं प्रमाणं परुविदमसंखेज्जमिदि । तं च असंखेज्जं पल्ल-सायरंगुल-  
जगसेढि-पदर-लोगादिभेदेण अण्येयवियप्पमिदि इमं होदि चि ण जाणिज्जेदं, तदो सेढि-  
जगपदरादिउवरिमसंखाणियत्तावण्डमिदमाह ‘सेढीए असंखेज्जदिभागो’ चि । सेढीए  
असंखेज्जदिभागो वि पल्ल-सायर-रूपंगुलादिभेदेण अण्येयवियप्पो चि द्दुअंगुलादि-  
हेट्ठिमवियप्पण्डिसेहट्ठं ‘तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ’ चि बुत्तं ।  
सेढीए असंखेज्जदिभागो चि पुरिसलिंगणिहेसो तिस्से चि त्थीलिंगणिहेसो, तदो दोण्हं

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वितीयादि छह पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि  
जीव जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । उस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागकी जो  
श्रेणी है उसका आयाम असंख्यात कोटि योजन है, जिस असंख्यात कोटि योजनका  
प्रमाण, जगश्रेणीके संख्यात प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितना प्रमाण  
उत्पन्न हो, उतना है ॥ २२ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । यह इसप्रकार है—द्रव्यप्रमाण और कालप्रमाणके  
प्ररूपण करनेवाले सूत्रोंद्वारा द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण ‘असं-  
ख्यात है’ ऐसा कह आये हैं । परंतु यह असंख्यात पल्ल, सागर, अंगुल, जगश्रेणी, जगप्रतर  
और लोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये इनमेंसे यहां यह असंख्यात लिया गया  
है, यह कुछ नहीं जाना जाता है । अतः जगश्रेणी और जगप्रतर आदि उपरिम संख्याका  
नियंत्रण अर्थात् निवारण करनेके लिये ‘द्वितीयादि छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि नारकी  
जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग हैं’ यह कहा । जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग भी पल्ल, सागर,  
कल्प और अंगुल आदिके भेदसे अनेक प्रकारका है, इसलिये सूत्र्यंगुल आदि अधस्तन  
विकल्पोंका निषेध करनेके लिये ‘उस श्रेणीका आयाम असंख्यात कोटि योजन है’ यह कहा ।

शंका—‘सेढीए असंखेज्जदिभागो’ इसमें पुल्लिङ्ग निर्देश है और ‘तिस्से’ यह

१ द्वितीयादिष्व सप्तम्या मिथ्यादृष्टयः श्रेण्यसंख्येयमागप्रमिताः । स चासंख्येयमागः असंख्येया योजन  
कोट्यः । स. सि. १, ८. विदियादिवारदसअड्ठचिदुणिजपदहिंदा सेढी । गो. जी. १५३. सेढिअसंखेज्जं सो  
सेसासु जहोत्तरं तह य । पच्चसं. २, १३.

२ प्रतिष्ठं ‘अन्मासो’ इति पाठः । किंतु पुरतः टीकायां ‘अन्मासेणेचि’ लभ्यते ।

समाणमहियरणं णत्थि चि सुत्तमिदमसंबद्धमिदि ? ण एस दोसो, तिस्से सेठीए असंखे-  
ज्जदिभागस्स सेठीए वा आयामो चि णेवं वत्तच्चं, मिण्णाहियरणत्ता विससणस्स फला-  
भावादो च । किंतु सेठीए असंखेज्जदिभागस्स जा सेठी पंती तिस्से सेठीए आयामो चि  
वत्तच्चमिदि । असंखेज्जाओ जोयणकौडीओ वि पदरंगुल-घर्णगुलादिभेदेण असंखेज्ज-  
वियप्पाओ चि सेठिपढमवग्गमूलादिहेड्डिमसंखापडिसेहट्टं 'पढमादियाणं सेठिवग्गमूलानं  
संखेज्जाणं अण्णोण्णम्भासेण' चि वुत्तं । तत्थ सेठिपढमवग्गमूलमादिं काऊण हेट्टा वारसण्हं  
वग्गमूलानं अण्णोण्णम्भासो विदियपुढविणेरइयमिच्छाइड्ढिद्ववपमाणं होदि । तं चेव  
आदिं करिय हेट्टा दसण्हं वग्गमूलानं अण्णोण्णम्भासे कदे तदियपुढविमिच्छाइड्ढिद्वव-  
पमाणं हवदि । तं चेव आदिं करिय अट्ठण्हं वग्गमूलानं संवग्गो चउत्थपुढविमिच्छाइड्ढि-  
द्ववपमाणं हवदि । छण्हं सेठिवग्गमूलानं संवग्गो पंचमपुढविद्ववं होदि । तिण्हं संवग्गो  
छड्डमपुढविद्ववं होदि । दोण्हं संवग्गो सत्तमपुढविद्ववं होदि । एचियाणं वग्गमूलानं

छीलिंग निर्देश है । अतः इन दोनों पदोंका समान अधिकरण नहीं है, इसलिये यह पूर्वोक्त  
सूत्र असंबद्ध है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, यहां पर 'तिस्से सेठीए' इस पदका  
श्रेणीके असंख्यातवें भागका आयाम अथवा जगश्रेणीका आयाम ऐसा अर्थ नहीं करना चाहिये,  
क्योंकि, इससे मिन्धाधिकरणत्व प्राप्त हो जाता है और विशेषणको कोई सार्थकता नहीं रहती  
है । किंतु प्रकृतमें 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागकी जो श्रेणी अर्थात् पंक्ति है उस श्रेणीका  
आयाम' ऐसा अर्थ करना चाहिये । असंख्यात कोटि योजन भी प्रतरांगुल और घनांगुल  
आदिके भेदसे असंख्यात प्रकारका है, इसलिये जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूल, द्वितीय वर्गमूल  
आदि नीचेकी संख्याका प्रतिषेध करनेके लिये सूत्रमें 'जगश्रेणीके प्रथमादि संख्यात वर्गमूलोंके  
परस्पर गुणा करनेसे' इतना पद कहा है । उनमेंसे यहां जगश्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर  
नीचेके बारह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जितनी संख्या उत्पन्न हो उतना दूसरी पृथिवीके  
नारक मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण है । तथा जगश्रेणीके उसी पहले वर्गमूलसे लेकर दश  
वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर तीसरी पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है ।  
तथा जगश्रेणीके उसी प्रथम वर्गमूलसे लेकर आठ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर जो  
राशि आवे उतना चौथी पृथिवीके नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगश्रेणीके  
प्रथमादि छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना पांचवी पृथिवीके  
मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा जगश्रेणीके प्रथमादि तीन वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे  
जो राशि उत्पन्न हो उतना छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण है । तथा पहले और  
दूसरे वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि  
द्रव्यका प्रमाण है ।

शंका — इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्या-

संवर्गं कदे विदियादिपुढविमिच्छाइट्टीणं द्व्यपमाणं होदि चि कथं जाणिज्जदे ? आह-  
रियपरंपरागय-अविरुद्धोवदेसादो जाणिज्जदि ।

वारस दस अट्ठेव य मूला छत्तिय दुगं चं गिरएसु ।

एक्कारस णव सत्त य पण य चउक्कं च देवेसु ॥ ६७ ॥

एदासिं अवहारकालपरुवयगाहासुत्तादो वा परियम्मपमाणादो वा जाणिज्जदे ।

एदासिं पुढवीणं द्व्यमाहप्पजाणावण्डुं किंचि अत्थपरुवणं कस्सामो । तं जहा-  
विदियपुढविमिच्छाइट्टिद्वं तदियपुढविमिच्छाइट्टिद्ववादो ताव उप्पाइज्जदे । वारस-

दृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—आचार्य परंपरासे आये हुए अविरुद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करने पर द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है। अथवा—

नारकियोंमें द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका बारहवां, दशवां, आठवां, छठा, तीसरा और दूसरा वर्गमूल अवहारकाल है और देवोंमें सानत्कुमार आदि पांच कल्पयुगलोंका द्रव्य लानेके लिये जगश्रेणीका ग्यारहवां, नौवां, सातवां, पांचवां और चौथा वर्गमूल अवहारकाल है ॥ ६७ ॥

इन अवहारकालोंके प्ररूपण करनेवाले इस गाथा सूत्रसे जाना जाता है। अथवा, परिकर्मके वचनसे जाना जाता है कि जगश्रेणीके प्रथमादि इतने इतने वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे द्वितीयादि पृथिवियोंका द्रव्य आता है।

विशेषार्थ—एक वर्गात्मक राशिके प्रथम आदि जितने वर्गमूल होंगे उनमेंसे जिस वर्गमूलका उक्त वर्गात्मक राशिमें भाग देनेसे जो लब्ध आयगा वह, जिस वर्गमूलका भाग दिया उस वर्गमूलतक प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी, उतना ही होगा। उदाहरणार्थ ६५५३६ में उसके चौथे वर्गमूल २ का भाग देनेसे ३२७६८ लब्ध आते हैं। अब यदि प्रथमादि चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा किया तो भी ३२७६८ प्रमाण ही राशि उत्पन्न होगी। ६५५३६ का पहला वर्गमूल २५६, दूसरा १६, तीसरा ४ और चौथा २ है। अब इनके परस्पर गुणा करनेसे  $२५६ \times १६ \times ४ \times २ = ३२७६८$  ही आते हैं। पर नरकोंमें जो अंकसंघट्टिकी अपेक्षा राशिवां बतलाई हैं उनके निकालनेमें कल्पित वर्गमूल लिये गये हैं, इसलिये ही वहां यह नियम नहीं घटाया जा सकता है।

अब इन पृथिवियोंके द्रव्यके महत्त्वका ज्ञान करानेके लिये किंचित् अर्थप्ररूपणा करते हैं। वह इसप्रकार है—उसमें भी पहले दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको तीसरी पृथिवीके

१ प्रतिषु ' दु पंच ' इति पाठः । इयं गाथा पूर्वमपि ६६ क्रमाङ्केनागता ।

२ तत्तो ( देवेषु ) एगार-णव-सग-पण-चउणियमूलमाजिदा सेदी । गो. जी. १६२.

वग्गमूलेण एकारसवग्गमूलं गुणिय तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि गुणिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । तस्स गुणगारस्स अट्ठच्छेदणयमेत्तवारं तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं दुगुणिदे' विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । अहवा गुणगारट्ठच्छेदणयसलगाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णभत्थरासिणा तदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वम्हि गुणिदे विदियपुढविमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । जहा तीहि पयारेहि तदियपुढविदव्वादो विदियपुढविदव्वमुप्पाइदं तहा सेसचउपुढविदव्वेहिंतो तीहि तीहि पयारेहि विदियपुढविदव्वमुप्पादिदव्वं । एवमुप्पादिदे पण्णारस भंगा लद्धा भवंति ।

मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे उत्पन्न करते हैं— जगध्रेणीके बारहवें वर्गमूलसे जगध्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है । अथवा, उक्त गुणकारके ( बारहवें वर्गमूलसे ग्यारहवें वर्गमूलको गुणा करनेसे जो लब्ध आया उसके ) जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके द्विगुणित करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है । अथवा, उक्त गुणकारकी अर्धच्छेद शलाकाओंका विरलन करके और उनको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित कर देने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण होता है । यहाँ जिसप्रकार उक्त तीन प्रकारसे तीसरी पृथिवीके द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न किया है, उसीप्रकार चौथी आदि शेष चार पृथिवियोंके द्रव्यसे उक्त तीन तीन प्रकारसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न कर लेना चाहिये । इसप्रकार उत्पन्न करने पर पंद्रह भंग प्राप्त होते हैं ।

विशेषार्थ— चौथी पृथिवीकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय जगध्रेणीके नौवें वर्गमूलसे बारहवें वर्गमूलतक चार वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे चौथी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है । पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा जगध्रेणीके सातवें वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक छह वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पांचवी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है । छठी पृथिवीकी अपेक्षा जगध्रेणीके चौथे वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक नौ वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छठी पृथिवीके द्रव्यको गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है । सातवी पृथिवीकी अपेक्षा जगध्रेणीके तीसरे वर्गमूलसे लेकर बारहवें वर्गमूलतक द्वादश वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सातवी पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है । गुणकार राशिसे अर्धच्छेदोंका विरलनादि करते समय

संपहि पढमपुढविमिच्छाइट्टिदव्वादो विदियपुढविमिच्छाइट्टिदव्वस्स उप्पादण-  
विहाणं उच्चदे- पढमपुढविमिच्छांभसूचिगुणिदसेट्टिवारसवग्गमूलेण पढमपुढविमिच्छाइट्टि-  
दव्वम्हि भागे हिदे विदियपुढविमिच्छाइट्टिदव्वमागच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदण-  
यमेत्ते पढमपुढविदव्वस्स अद्वच्छेदणए कदे वि विदियपुढविमिच्छाइट्टिदव्वमागच्छदि ।  
सेट्टिवारसवग्गमूलस्स अद्वच्छेदणाओ पढमपुढविमिच्छांभसूचीअद्वच्छेदणयसहिदाओ  
विरालिय विगं करिय अण्णोणवमत्थरासिणा पढमपुढविमिच्छाइट्टिदव्वम्हि भागे हिदे  
विदियपुढविमिच्छाइट्टिदव्वमागच्छदि । एदे तिणिण भंगा पुव्विहण्णारसभंगेसु पक्खित्ते  
विदियपुढवीए अट्टारस भंगा हवन्ति । एवं सव्वाप्तिं पुढवीणं पत्तेगं पत्तेगं अट्टारस भंगा  
उप्पाएदव्वा । सव्वभंगसमासो सदं छव्वीसुत्तरं' ।

भी जहाँ जितने वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो राशि लाई गई हो उसी राशिके  
अर्धच्छेदोंका विरलन करके और उस विरलित राशिको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे  
जो लब्ध आवे उससे उस उस पृथिवीके द्रव्यको गुणित करना चाहिये । अथवा, इसी क्रमसे  
अर्धच्छेद लाकर उतनीवार उस उस पृथिवीके द्रव्यको द्विगुणित करना चाहिये । इसप्रकार  
करनेसे दूसरी पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अब पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके उत्पन्न  
करनेकी विधि बतलाते हैं— पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे जगश्रेणीके बारहवें  
वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित  
करने पर दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

$$\text{उदाहरण—} ४ \times \frac{१९३}{१२८} = \frac{१९३}{३२}; १८८१६ \div \frac{१९३}{३२} = १६३८४ \text{ द्वि. पु. मि. द्र.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार भज्यमान राशि प्रथम पृथिवीके  
द्रव्यके अर्धच्छेद करने पर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है ।

अथवा, जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलके अर्धच्छेदोंमें पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि  
विष्कंभसूचीके अर्धच्छेद मिला देने पर जितना योग हो उतनी राशिका विरलन करके और  
उसे दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि  
द्रव्यके भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है । इन तीन  
भंगोंको पूर्वोक्त पन्द्रह भंगोंमें मिला देने पर दूसरी पृथिवीके अठारह भंग होते हैं । इसीप्रकार  
सभी पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके अठारह अठारह भंग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन सब  
भंगोंका जोड़ एकसौ छव्वीस होता है ।

विशेषार्थ—प्रथमादि पृथिवियोंके द्रव्यकी अपेक्षा दूसरी पृथिवीका द्रव्य किसप्रकार

आता है, इसका थोडासा विवेचन मूलमें ही किया है। और वहां यह भी कहा है कि इसीप्रकार तृतीयादि पृथिवियोंके द्रव्यके उत्पन्न करनेसे कुल १२६ भंग होते हैं। उनमेंसे जिन १८ भंगोंसे दूसरी पृथिवीका द्रव्य आता है उन १८ भंगोंको १२६ मेंसे कम कर देने पर शेष १०८ भंग रहते हैं। इसलिये आगे उन्हीं १०८ भंगोंका स्पष्टीकरण किया जाता है। द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य उत्पन्न करते समय दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा बारहवें वर्गमूलसे, तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा दशवें वर्गमूलसे, चौथी पृथिवीकी अपेक्षा आठवें वर्गमूलसे, पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठे वर्गमूलसे, छठी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरे वर्गमूलसे और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा दूसरे वर्गमूलसे पहले नरककी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे द्वितीयादि पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके पृथक् पृथक् गुणित करने पर क्रमशः द्वितीयादि पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका द्रव्य आता है। पहली पृथिवीके द्रव्यकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे पृथक् पृथक् दशवें, आठवें, छठे, तीसरे और दूसरे वर्गमूलको गुणित करके जो जो लब्ध आवे उस उससे पहली पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर पहली पृथिवीकी अपेक्षा क्रमशः तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य होता है। दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय बारहवें और बारहवें वर्गमूलका, चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवेंसे लेकर बारहवें तक चार वर्गमूलोंका, पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर बारहवें तक छह वर्गमूलोंका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर बारहवें तक नौ वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर बारहवें तक दश वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि आवे उस उसका भाग दूसरी पृथिवीके द्रव्यमें देने पर क्रमशः दूसरी पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी, चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। तीसरी पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय नौवें और दशवें वर्गमूलका, पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवेंसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका, छठीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर दशवें तक सात वर्गमूलोंका और सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर दशवें तक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे तीसरी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय सातवें और आठवें वर्गमूलका, छठी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथेसे लेकर आठवें तक पांच वर्गमूलोंका, सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर आठवें तक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य उत्पन्न होता है। पांचवी पृथिवीकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य लाते समय चौथे, पांचवे और छठे वर्गमूलका तथा सातवीं



पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरेसे लेकर छठे तक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे पांचवी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी पृथिवीकी अपेक्षा सातवीं पृथिवीका द्रव्य लाते समय तीसरे वर्गमूलसे छठी पृथिवीके द्रव्यके भाजित करने पर सातवीं पृथिवीका द्रव्य आता है। चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य लाते समय चौथीकी अपेक्षा नौवें और दशवें वर्गमूलका, पांचवीकी अपेक्षा सातवेंसे लेकर दशवें तक चार वर्गमूलोंका, छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर दशवेंतक सात वर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर दशवेंतक आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेसे जो जो राशि उत्पन्न हो उस उससे चौथी, पांचवी, छठी और सातवींके द्रव्यके गुणित कर देने पर क्रमशः चौथी, पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा तीसरी पृथिवीका द्रव्य आता है। पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका द्रव्य लाते समय पांचवीकी अपेक्षा सातवें और आठवें वर्गमूलोंका, छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर आठवें तक, पांच वर्गमूलोंका, सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर आठवेंतक छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीके द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः पांचवी, छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका द्रव्य लाते समय छठीकी अपेक्षा चौथेसे लेकर छठेतक तीन वर्गमूलोंका और सातवींकी अपेक्षा तीसरेसे लेकर छठेतक चार वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो जो राशि आवे उस उससे छठी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके गुणित करने पर क्रमशः छठी और सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा पांचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। तथा सातवीं पृथिवीके द्रव्यको तीसरे वर्गमूलसे गुणित करने पर सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी अपेक्षा छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है। पहले जहां ऊपरकी पृथिवियोंसे नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो भागहार कह आवे हैं उस उसके अर्धच्छेद करके तत्प्रमाण भाज्य राशिके आधे आधे करने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। अथवा, अर्धच्छेदप्रमाण दो रखकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसका भाज्य राशिमें भाग देने पर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। उसीप्रकार नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य लाते समय जहां जो गुणकार हो उसके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनीवार गुण्य राशिके दूने दूने करने पर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है। अथवा उक्त अर्धच्छेदप्रमाण दो रखकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि हो उससे गुण्य राशिके गुणित कर देने पर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है। इसप्रकार ये कुल भंग १०८ हुए इनमें दूसरी पृथिवीके १८ भंग मिला देने पर सातों पृथिवियोंके द्रव्य निकालनेके १२६ भंग होते हैं।



सासणसम्माइडिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइडि ति ओयं ॥ २३ ॥

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागचं पडि विसेसामावादो विदियादिपुडविगुणपडि-  
वण्णाणं परूवणा ओघमिदि बुत्ता दव्वड्डियसिस्साणुग्गहट्ठं । पज्जवड्डियणए पुण अव-  
लंविज्जमाणे विसेसो अत्थि चैव, अण्णहा एगपुडविगुणपडिवण्णाणं सत्तपमाणानवत्था  
च दुप्पडिसेज्जा पसज्जदे । तं गुणपडिवण्णजीवविसेसं पुव्वाइरियाणमविरुद्धोवएसेण  
आइरियपरंपरागदेण वत्तइस्सामो । तं जहा— पुव्वमुप्पाइयसामण्णणेरइय असंजदसम्माइडि-  
अवहारकालमावल्याए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तमिह चैव पक्खित्ते पटम-

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक  
गुणस्थानमें द्वितीयादि लह पृथिवियोंमेंसे प्रत्येक पृथिवीके नारकी जीव सामान्य  
प्ररूपणके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ २३ ॥

विशेषार्थ— इस सूत्रमें 'दव्वपमाणेण केवडिया' अर्थात् द्रव्यप्रमाणसे कितने हैं? ऐसा  
पृच्छावाक्य नहीं पाया जाता जिससे सूत्रसंख्या २ की टीकामें जो उक्त पृच्छावाक्यका फल  
स्वकर्तृत्वनिराकरणपूर्वक आप्तकर्तृत्वप्रतिपादन बतलाया है उसकी यहां आकांक्षा रह जाती  
है । तथापि सूत्र सदैव संक्षेपार्थ हुआ करते हैं और उनमें यह सार्वत्रिक नियम है कि 'स्वेप्पवट्ठं  
पदं सूत्रान्तरादनुवर्तनीयं सर्वत्र' अर्थात् जो अपेक्षित पद प्रस्तुत सूत्रमें न पाया जाय उसकी  
अन्य सूत्रोंसे अनुवृत्ति सदैव कर लेना चाहिये । इसप्रकार प्रस्तुत सूत्रमें भी उक्त पृच्छा-  
पदकी अनुवृत्ति हो जाती है । अगे भी जहां कहीं उक्त पद न पाया जाय वहां इसी नियमका  
अधिकार समझ लेना चाहिये ।

द्वितीयादि गुणस्थानोंकी सामान्य संख्या और द्वितीयादि पृथिवियोंमें गुणस्थान-  
प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या, ये राशियां पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वके प्रति समान हैं, इसलिये  
द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा रखनेवाले शिष्योंके अनुग्रहके लिये द्वितीयादि पृथिवियोंके गुणस्थान-  
प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या सामान्य प्ररूपणके समान है, ऐसा कहा । पर्यायार्थिक नयका  
अधलंबन करने पर तो गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य नारकी जीवोंकी संख्या और द्वितीयादि  
पृथिवियोंके गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी संख्या, इन दोनोंमें विशेष है ही । यदि ऐसा नहीं माना  
जाय तो एक पृथिवीके गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या और सातों पृथिवियोंके गुणस्थान  
प्रतिपन्न जीवोंकी संख्या एकसी हो जायगी जिसके निषेधके दुष्पर होनेका प्रसंग आ जाता है ।  
अब गुणस्थान प्रतिपन्न जीवोंके उस विशेषकी आचार्य-परंपरासे आये हुए पूर्वोक्तार्थोंके अवि-  
रुद्ध उपदेशके अनुसार बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

सामान्य नारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल जो पहले उत्पन्न करके बतला  
आये हैं, उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवि उसे उसी नारक  
सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें ही मिला देने पर प्रथम पृथिवीके असंयत-

पुढविअसंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे पढमपुढविअसंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जइहिं गुणिदे सासण-सम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे विदियाए असंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे' सम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जइहिं गुणिदे सासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि चिअवहारकाला परिवाडीए उप्पाएदन्वा । एदेहि अवहारकालेहि पल्लिदोवमस्सुवरि खंडिदादीण ओघमंगो ।

भागाभागं द्व्यपमाणविसयणिणायजणणट्ठं वचइस्सामो । सच्चजीवरासिस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा तिरिक्खा होंति । सेसस्स अणंतेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा सिद्धा होंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा देवा होंति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा गेरइया होंति । सेसेगभागो मणुसा हवंति । पुणो गेरइयरासिस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमपुढवि-

सम्यग्दष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है । उस पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर प्रथम पृथिवीके सम्यग्मिथ्या-दष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है । उस पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादष्टिसंबन्धी अवहार-कालको संख्यातसे गुणित करने पर प्रथम नरकका सासादनसम्यग्दष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । पहले नरकके सासादनसम्यग्दष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका असंयतसम्यग्दष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीका सम्यग्मिथ्यादष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । उस दूसरी पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर दूसरी पृथिवीके सासा-दनसम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक अवहारकाल परिपाटी-क्रमसे उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन अवहारकालोंके द्वारा पल्लोपमके ऊपर खंडित आदिकका कथन सामान्य प्ररूपणाके समान है ।

अब द्व्यपमाणविषयक निर्णयका ज्ञान करानेके लिये भागाभागकों बतलाते हैं—संपूर्ण जीवराशिके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभाग तिर्यक् होते हैं । शेष एक भागके अनन्त भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सिद्ध होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण देव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण नारकी होते हैं । शेष एक भागप्रमाण मनुष्य होते हैं । पुनः नारक जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्यादष्टि जीव

मिच्छाद्वी ह्येति । सेसस्स असंखेज्जेसु खंडेसु कदेसु तत्थ बहुभागा विदियपुढवि-  
मिच्छाद्वी ह्येति । एवं तदिय-चउत्थ-पंचम-छुड-सत्तमपुढवीणं अच्चासोहेण भागभागे  
कायव्वो । पुणो सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढमाए पुढवीए  
असंजदसम्माइट्ठिणो हवन्ति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा पढम-  
पुढविसम्माभिच्छाद्विणो हवन्ति । सेसस्स संखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा  
पढमपुढविसासणसम्माइट्ठिणो हवन्ति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा  
विदियपुढविअसंजदसम्माइट्ठिणो हवन्ति । सेसस्स असंखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुखंडा  
तत्थतणसम्माभिच्छाद्विणो हवन्ति । सेसस्स संखेज्जेसु भागेसु कदेसु तत्थ बहुभागा  
तत्थतणसासणसम्माइट्ठिणो हवन्ति । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति गुणपडिवण्णाणं  
भागाभागो कायव्वो । एवं भागाभागो समत्तो ।

अप्पावहुगं ति विहं, सत्थाणं परत्थाणं सच्चपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणप्पा-  
वहुगं खुव्वे । सच्चत्थोवा सामण्णेरइयमिच्छाद्विक्खंभसूची । अवहारकालो असंखेज्ज-  
गुणो । को गुणगारो ? अवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगविकखंभ-

होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके  
मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी, चौथी, पांचवी छठी और सातवीं पृथिवीकी  
जीवराशिका सावधानीसे भागाभाग कर लेना चाहिये । पुनः सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके  
अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पड़ली  
पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे  
बहुभागप्रमाण पड़ली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग  
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पड़ली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक  
भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टि  
जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात भाग करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी  
पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग करने पर उनमेंसे  
बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीके  
लेकर सातवीं पृथिवीतक गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका भागाभाग करना चाहिये ।

इसप्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व-  
परस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— सामान्य  
नारक मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची सबसे स्तोक है । सामान्य नारक मिथ्या-  
दृष्टियोंका अवहारकाल सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार

सूची । अहवा सेटीए असंखेज्जदिभागो, असंखेज्जाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगविकखंभसूचीवग्गो घणंगुलपढमवग्गमूलं वा । सेटी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकखंभसूई । द्ववमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विकखंभसूई । पदरंमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेटी । सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिणमोघसत्थाणभंगो । एवं चेव पढमाए पुढवीए । विद्याए पुढवीए सन्वत्थोवो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो । तस्सेव द्ववम-संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगद्ववस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सग-अवहारकालो । अहवा सेटीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो सेटिएक्कारसवग्गमूलं वा । सेटी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सेटिवारसवग्गमूलं । पदरो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेटी । लोगो

क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंभसूची प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, घनांगुलका प्रथम वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है ? गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । सामान्य नारक सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्य-गिमिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें स्वस्थान अल्पबहुत्व है । दूसरी पृथिवीमें मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका ( बारहवें वर्गमूलका ) वर्ग अथवा जगश्रेणीका ग्यारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल गुणकार है । जगश्रेणीसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है । गुणकार

असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । सासणसम्माइडि-सम्माभिच्छाइडि-असंजदसम्मा-इट्ठीणमोवसत्थाणभंगो । तदियादि जाव सत्तमपुढवि चि एवं चेव सत्थाणप्पावहुगं वत्तवं । णवरि अप्पप्पणो अवहारकाले जाणिऊण भाणिदवं ।

परत्थाणप्पावहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइडिअवहारकालो । एवं जाव पलिदोवमो चि णेदवं । पलिदोवमादो उवरि सामण्णगेरइयमिच्छाइडि-विक्खंभसई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । अहवा स्रचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जजाणि स्रचिअंगुलपढमवग्ग-मूलाणि । को पडिभागो ? पलिदोवमगुणिदसइअंगुलविदियवग्गमूलं । उवरि सत्थाणभंगो । एवं चेव पढमाए पुढवीए । विदियाए पुढवीए सव्वत्थोवो असंजदसम्माइडिअवहार-कालो । एवं जाव पलिदोवमो चि णेदवं । तदो मिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । उवरि सत्थाणभंगो । एवं तदियादि जाव सत्तमपुढवि चि परत्थाणप्पावहुगं वत्तवं । णवरि

क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । दूसरी पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन इसीप्रकार करना चाहिये । विशेष यह है कि प्रत्येक पृथिवीका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अपने अपने अवहारकालको जानकर उसका कथन करना चाहिये ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोके है । उससे सम्यग्मिथ्यादृष्टिका, उससे सासादनसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल, इसप्रकार अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपम तक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, सूर्यगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूर्यगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपमसे सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूलके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है । इस विष्कंभसूचीके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार पहली पृथिवीमें परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

दूसरी पृथिवीमें असंयतसम्यग्दृष्टिका अवहारकाल सबसे स्तोके है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर अल्पबहुत्व कहते हुए पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुण है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इसीप्रकार तीसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इतना

अप्पप्पणो अवहारकाले जाणिऊण वत्तच्च ।

सर्वपरस्थानप्पावहुगं वत्तइस्सामो । सच्चत्थोवो पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठि-  
अवहारकालो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलि-  
याए असंखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ?  
संखेज्जा समया । तदो विदियपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को  
गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।  
सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं जाव सत्तमाए पुढवीए सासणसम्माइट्ठि-  
अवहारकालो त्ति णेयव्वो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । सम्मामिच्छाइट्ठिदव्वं संखेज्ज-  
गुणं । असंजदसम्माइट्ठिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।  
एवं पडिलोमिण णेदव्वं जाव पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं पत्तमिदि । तदो पलि-  
दोवममसंखेज्जगुणं । तदो पढमपुढविणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभइइ असंखेज्जगुणा ।  
सामण्णणेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभइइ विसेसाहिया । तदो विदियपुढविमिच्छाइट्ठिअवहार-

विशेष है कि अपना अपना अवहारकाल जानकर ही कथन करना चाहिये ।

अब सर्व परस्थान अप्पवहुत्वको बतलाते हैं—पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका  
अवहारकाल सबसे स्तोक है । उससे पहली पृथिवीके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल  
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । सम्यग्मिथ्या-  
दृष्टियोंके अवहारकालसे पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा  
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पहली पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके  
अवहारकालसे दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार  
क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । दूसरी पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके  
अवहारकालसे वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्या-  
दृष्टियोंके अवहारकालसे वहींके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है ।  
इसीप्रकार सातवीं पृथिवीतक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालतक ले जाना चाहिये ।  
सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है ।  
सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे वहींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । सम्य-  
ग्मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे वहींके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार  
क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसीप्रकार उत्तरोत्तर प्रतिलोम पद्धतिसे  
जब पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होवे तब तक ले जाना चाहिये ।  
पहली पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पच्योपम असंख्यातगुणा है । पच्योपमसे  
पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । उक्त विष्कंभसूचीसे  
सामान्य मिथ्यादृष्टि नारकियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । सामान्य मिथ्यादृष्टि  
नारकियोंकी विष्कंभसूचीसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा

कालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । तस्स को पडिभागो ? घणंगुलविदियवग्गमूलं । तदियपुदविमिच्छा-  
इट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो  
असंखेज्जाणि एक्कारसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सेट्ठिवारसवग्गमूलं । चउत्थपुदवि-  
मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-  
भागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? दसमवग्गमूलं । पंचमपुदवि-  
मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? छट्ठवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-  
भागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि । तस्स को पडिभागो ? अट्ठमवग्गमूलं । छट्ठ-  
पुदविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलस्स असं-  
खेज्जदिभागो असंखेज्जाणि चउत्थवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? छट्ठवग्गमूलं ।  
सत्तमपुदविमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलं ।  
तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेट्ठिपदमवग्गमूलं । छट्ठपुदविमिच्छाइट्ठिदव्वं

है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है। उसका प्रतिभाग क्या है ? घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल प्रतिभाग है। दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि-योंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है। प्रति-भाग क्या है ? जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है। तीसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अव-हारकालसे चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात नौवें वर्गमूल-प्रमाण है। प्रतिभाग क्या है ? दशवां वर्गमूल प्रतिभाग है। चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पांचवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग है जो असंख्यात सातवें वर्गमूल-प्रमाण है। उसका प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका आठवा वर्गमूल प्रतिभाग है। पांचवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे छठी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यात-गुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है। जो जगश्रेणीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल प्रतिभाग है। छठवां पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है। सातवीं पृथिवीके अवहारकालसे उसीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है। सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे छठवीं पृथिवीका



असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? तदियवग्गमूलं । पंचमपुढविमिच्छाइड्ढिद्वचं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? चउत्थ-पंचम-छट्ठवग्गाणि अण्णोणगुणिदाणि । अहवा सेह्मित्तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेह्मित्तचउत्थवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? छट्ठमवग्गमूलं । चउत्थपुढविमिच्छाइड्ढिद्वचमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अण्णोणगुणिदसेहिसत्तम-अट्ठम-वग्गमूलाणि । अहवा छट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सत्तमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? अट्ठमवग्गमूलं । तदियपुढविमिच्छाइड्ढिद्वचमसंखेज्जगुणं । को गुण-गारो ? अण्णोणगुणिदसेहिट्ठिम-दसमवग्गमूलाणि । अहवा अट्ठमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-भागो असंखेज्जाणि णवमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? दसमवग्गमूलं । विदियपुढवि-मिच्छाइड्ढिद्वचमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अण्णोणगुणमत्तयेकारस-वारसवग्गमूलाणि । अहवा दसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि एकारसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? वारसवग्गमूलं । सामण्णेरइयमिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को

मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा वर्गमूल गुणकार है । छठवेंके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पांचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके चौथे, पांचवे और छठवे वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके तीसरे वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात चौथे वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका छठा वर्गमूल प्रतिभाग है । पांचवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे चौथी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके सातवें और आठवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके छठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात सप्तम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका आठवां वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके नौवें और दशवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उतना गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके आठवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात नौवें वर्गमूल प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका दशवां वर्गमूल प्रतिभाग है । तीसरीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके ग्यारहवें और बारहवें वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो तत्प्रमाण गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके दशवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात ग्यारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? जगश्रेणीका बारहवां वर्गमूल प्रतिभाग है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारकियोंका मिथ्यादृष्टि



गुणगारो ? वारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? घणंगुलविदियवग्गमूलं । पढमपुढविमिच्छाइड्डिववहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णववहारकालस्स असंखेज्जदिभागभूदपक्खेवववहारकालमेत्तेण । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइड्डिविक्खंमसई । पढमपुढविमिच्छाइड्डिद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पढमपुढविमिच्छाइड्डिविक्खंमसई । सामण्ण-णेरइयमिच्छाइड्डिद्वं विसेसाहिंयं । केत्तियमेत्तेण ? सामण्णणेरइयमिच्छाइड्डिद्वम-संखेज्जभागभूदविदियादिहपुढविमिच्छाइड्डिद्वमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । एवं णिरयगई समत्ता ।

अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल प्रतिभाग है । सामान्य नारकियोंके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे पहली पृथिवीके नारकियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य अवहारकालके असंख्यातवें भागरूप प्रक्षेप अवहारकालरूप विशेषसे अधिक है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहली पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके असंख्यातवें भागरूप दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक छह पृथिवियोंके मिथ्यादृष्टियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्रसे विशेष अधिक है । सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यात गुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है ।

विशेषार्थ—सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय ऊपर गुणस्थानप्रतिपक्ष असंयतसम्पग्दृष्टि आदि सामान्य नारकियोंका अल्पबहुत्व नहीं कहा गया है । यदि इनके

१ प्रतिपु \* सेठी असंखेज्जगुणगारो ? इति पाठः ।

२ दिसाश्रुवापुणं सव्वत्थोवा अहे सत्तापुडवीनेरइया पुरच्छिमपक्वत्थिमउत्तरेणं, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणेहिंतो अहे सत्तापुडवीनेरइहिंतो छट्ठीए तमाए पुडवीए नेरइया पुरच्छिमपक्वत्थिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिजेहिंतो तमाए पुडवीनेरइहिंतो पंचमाए धूमप्पमाए पुडवीए नेरइया पुरच्छिमपक्वत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिजेहिंतो धूमप्पमापुडवीनेरइहिंतो चउत्थीए पंकप्पमाए पुडवीए नेरइया पुरच्छिमपक्वत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिजेहिंतो पंकप्पमापुडवीनेरइहिंतो तइयाए बाळयप्पमाए पुडवीए नेरइया पुरच्छिमपक्वत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिजेहिंतो

तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदा-  
संजदा ति ओघं ॥ २४ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो उच्चदे । तं जहा— अणंतत्तणेण तिरिक्खगदिमिच्छाइट्ठिणं ओघमिच्छाइट्ठिजीवेहिंतो विसेसाभावाद्दो तिरिक्खगइमिच्छाइट्ठिणं द्वय-खेत्त-काले अस्सि-ऊण जा ओघमिच्छाइट्ठिपरूवणा सा सव्वा संभवदि । गुणपडिवण्णाणं पि असंखेज्जत्तणेण ओघपडिवण्णेहि समाणाणं जा ओघपडिवण्णपरूवणा सा सव्वा संभवदि । तम्हा द्वय-ट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे तिरिक्खोघस्स परूवणा ओघववेदसं लभ्भे । पज्जंविट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे पुण ओघपरूवणा ण भवदि, तिरिक्खगइवदिरित्तित्तिगदीणमत्थित्तस्स-

अल्पबहुत्वको मिलाकर कथन किया जाता तो प्रारंभमें जो प्रथम नरकके असंयतसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल सबसे स्तोक कहा है उसके स्थानमें 'नारक सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है और इससे विशेष अधिक प्रथम पृथिवीके असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है, इत्यादि कहा जाता । पर यहां पर इस सब कथनको टीका-कारने क्यों छोड़ दिया है, यह बतलाना कठिन है ।

इसप्रकार नरकगतिका वर्णन समाप्त हुआ ।

तिर्यच गतिका आश्रय करके तिर्यचोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती तिर्यच सामान्य प्ररूपणके समान हैं ॥ २४ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है—तिर्यचगतिके मिथ्यादृष्टियोंमें ओघ मिथ्यादृष्टि जीवोंसे अनन्तत्वकी अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है, इसलिये द्रव्य, क्षेत्र और कालप्रमाणका आश्रय करके जो ओघ मिथ्यादृष्टियोंकी प्ररूपणा है वह संपूर्ण तिर्यच मिथ्या-दृष्टि जीवोंके संभव है । उसीप्रकार गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यच भी असंख्यातत्वकी अपेक्षा सामान्य गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके समान हैं, इसलिये गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य जीवोंकी जो प्ररूपणा है वह संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यचोंके संभव है । अतएव द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य तिर्यचोंकी प्ररूपणा ओघ व्यपदेशको प्राप्त होती है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर सामान्य प्ररूपणा तिर्यचोंके नहीं पाई जाती है, क्योंकि, यदि ऐसा नहीं माना जाय तो तिर्यच गतिके अतिरिक्त शेष तीन गतियोंका अस्तित्व ही नहीं

वालयप्पमापुदवीनेरइएहिंतो दोच्चाए सक्कप्पमाए पुदवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिछेहिंतो सक्कप्पमापुदवीनेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पमाए पुदवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चत्थिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । प्र. सू. ३, १. पृ. ३४८-३५०.

१ तिर्यगतौ तिरश्चां मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः । सासादनसम्यग्दृष्टयः संयतासंयतान्ताः पर्योपमासंख्येय-मागप्रमिताः । स. सि. १, ८. संसारी × × तिगदिहीणया × × सामण्णा × × तेरिक्खा । गो. जी. १५५.

णहाणुववत्तीदो । तदो पज्जवद्वियणए अवलंबिज्जमाणे ओघपरूवणादो तिरिक्खगदिपरू-  
वणाए णाणसं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिस्सुवरि सगुणपडिवण्णसिद्धतिगदिरासिं पक्खि-  
विय पुणो तेसिं चैव वगं तिरिक्खमिच्छाइट्ठिरासिमज्जिदं च पक्खिचै तिरिक्खमिच्छा-  
इट्ठीणं धुवरासी होदि । एसो मिच्छाइट्ठिपरूवणमिह विसेसो ? गुणपडिवण्णपरूवणाए विसेसं  
वत्तइस्सामो । तं जहा— देवसासणसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभागेण  
गुणिदे तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । सो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण  
गुणिदे तिरिक्खसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । सो संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्मा-  
इट्ठिअवहारकालो होदि । सो आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तिरिक्खअसंजदासंजद-  
अवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिवोवमे भागे हिदे तिरिक्खगदिगुणपडिवण्णाणं  
रासीओ हवंति । एसो गुणपडिवण्णपरूवणाए विसेसो, पत्थि अण्णमिह कम्मि वि ।

बन सकता है । अतः पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर ओघ प्ररूपणासे तिर्यच गतिकी  
प्ररूपणामें भेद है । आगे इसी बातको बतलाते हैं—

संपूर्ण जीवराशिमें गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धराशिको  
मिलाकर पुनः गुणस्थानप्रतिपन्न तीन गतिसंबन्धी जीवराशि और सिद्धराशिके वर्गको तिर्यच  
मिथ्यादष्टि जीवराशिसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे भी पूर्वोक्त राशिमें मिला देने  
पर तिर्यच मिथ्यादष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है । तिर्यच मिथ्यादष्टियोंकी प्ररूपणामें इतना  
विशेष है ।

विशेषार्थ—यहां पर ध्रुवराशिरूपसे जो तिर्यच मिथ्यादष्टि जीवराशिके उत्पन्न  
करनेके लिये भागहार उत्पन्न करके बतलाया है, इसका भाग संपूर्ण जीवराशिके उपरि  
वर्गमें देनेसे तिर्यच मिथ्यादष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है ।

अब आगे गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणामें विशेषताको बतलाते हैं । वह  
इसप्रकार है— देव सासादनसम्यग्दष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे  
गुणित करने पर तिर्यच असंयतसम्यग्दष्टि जीवोंका अवहारकाल होता है । तिर्यच असंयत-  
सम्यग्दष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यच  
सम्यग्मिथ्यादष्टियोंका अवहारकाल होता है । तिर्यच सम्यग्मिथ्यादष्टियोंके अवहारकालको  
संख्यातसे गुणित करने पर तिर्यच सासादनसम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल होता है । तिर्यच  
सासादनसम्यग्दष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तिर्यच  
संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे पथ्योपमके भाजित करने पर  
गुणस्थानप्रतिपन्न तिर्यचोंकी राशियां होती हैं । यही गुणस्थानप्रतिपन्न प्ररूपणाकी विशेषता  
है । अन्य कथनमें कहीं भी कोई विशेषता नहीं है ।

संपहि अणंतरासीसु द्व्यपरूवणादो कालपरूवणा सुहुमा भवदु णाम, तत्थ अणंतणंतस्स पुव्वमणुवलद्धस्स उवलद्धीदो अदीदकालादो अणंतगुणत्तुवलंभादो च । ण कालपरूवणादो खेत्तपरूवणा सुहुमा, अधिगोवलद्धीए अणिमित्तत्तादो । तदो परूवण-परिवाडी ण घडदे इदि ? ण, अणंतलोममेत्ताणं एगलोगम्मि अवगासो अत्थि त्ति विसेसुवलंभादो कालादो खेत्तस्स सुहुमत्तं पडि विरोहाभावादो ।

पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइटी द्व्यपमाणेण केवडिया, असं-  
खेज्जा ॥ २५ ॥

एदस्स सुत्तस्स णिरओधद्व्यपरूवणासुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं । एवं कए द्व्यपरूवणा गदा भवदि ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ २६ ॥

शंका—अनन्तप्रमाण राशियोंमें द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म रही भाव्यो, क्योंकि, कालप्ररूपणामें पहले नहीं उपलब्ध हुए अनन्तानन्तकी उपलब्धि पाई जाती है, और अतीतकालसे अनन्तगुणत्व पाया जाता है । परंतु कालप्ररूपणासे क्षेत्रप्ररूपणा सूक्ष्म नहीं हो सकती है, क्योंकि, क्षेत्रप्ररूपणामें अधिक उपलब्धिका कोई निमित्त नहीं पाया जाता है । इसलिये द्रव्यप्ररूपणाके अनन्तर कालप्ररूपणा और कालप्ररूपणाके अनन्तर क्षेत्रप्ररूपणा, इसप्रकार प्ररूपणाकी परिपाटी नहीं बन सकती है ?

समाधान—नहीं, अनन्त लोकमात्र द्रव्योंका एक लोकमें अवकाश पाया जाता है, इसप्रकारकी विशेषताकी उपलब्धि होनेसे कालकी अपेक्षा क्षेत्र सूक्ष्म है, इसमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?  
असंख्यात हैं ॥ २५ ॥

सामान्य नारकियोंके द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान ही इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये ( देखो सूत्र १५ ) । इसप्रकार व्याख्यान करने पर द्रव्यप्रमाणकी प्ररूपणा समाप्त होती है ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ २६ ॥

एदस्स सुत्तस्स वि दोहि पयारेहि अवदारं परूविय गिरओधकालपरूवणा-  
सुत्तस्सेव वक्खाणं कायव्वं । एत्थ मिच्छाइड्डिणिदेसो किमट्ठं ण कदो ? ण, अणंतरादीद-  
सुत्तादो मिच्छाइड्डि चि अणुवट्ठमाणत्तादो ।

अध सिया असंखेज्जासंखेज्जासु ओसप्पिणि-उत्तसप्पिणीसु अदिकंतासु तिरिक्ख-  
गईए पंचिदियतिरिक्खणं वोच्छेदो हवदि, पंचिदियतिरिक्खइदीए उवरि तत्थ  
अवट्ठाणाभावादो चि ? ण एस दोसो, एइंदिय-विगलंदिएहिंतो देव-णेरइय-मणुस्सेहिंतो च  
पंचिदियतिरिक्खेसुप्पज्जमाणजीवसंभवादो । आयविरहिय-सव्वयरासीए वोच्छेदो हवदि ।  
एसा पुण सच्चया आयसहिया चेदि ण वोच्छिज्जदे । सम्मामिच्छाइड्डिरासीव किं ण  
भवदीदि चेण्ण, तत्थ गुणट्ठिदिकालादो अंतरकालस्स बहुनुवलंभादो । ण च एत्थ  
पंचिदियतिरिक्खेसु भवट्ठिदिकालादो विरहकालस्स बहुत्तणमत्थि, अंतरकालस्स अंतो-

इस सूत्रका भी दोनों प्रकारसे अवतारका प्ररूपण करके सामान्य नारकियोंके काल  
प्रमाणकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके समान व्याख्यान करना चाहिये  
( देखो सूत्र १६ ) ।

शंका—इस सूत्रमें मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अनन्तर पूर्ववर्ती सूत्रसे 'मिथ्यादृष्टि' इस पदकी अनुवृत्ति  
चली आ रही है ।

शंका—कदाचित् असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्तसर्पिणियोंके निकल  
जाने पर तिर्यचगतिके पंचेन्द्रिय तिर्यचोंका विच्छेद हो जायगा, क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यचकी  
स्थितिके ऊपर तिर्यचगतिमें उनका अवस्थान नहीं रह सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, पंचेन्द्रियों और विकलेन्द्रियोंमेंसे तथा  
देव, नारकी और मनुष्योंमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव संभव हैं । जो राशि  
व्ययसहित और आयरहित होती है उसका ही सर्वथा विच्छेद होता है । परंतु यह पंचेन्द्रिय  
तिर्यच मिथ्यादृष्टि राशि तो व्यय और आय इन दोनों सहित है, इसलिये इसका विच्छेद नहीं  
होता है

शंका—जिसप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि कदाचित् विच्छिन्न हो जाती है, उसीप्रकार  
यह राशि भी क्यों नहीं होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहां पर गुणस्थानके कालसे अन्तरकाल बढ़ा है, इसलिये  
सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिका कदाचित् विच्छेद हो जाता है । परंतु यहां पंचेन्द्रिय तिर्यचोंमें  
अवस्थितिके कालसे विरहकाल बढ़ा नहीं है, क्योंकि, आगममें पंचेन्द्रिय तिर्यचोंके अन्तर-

मुहुत्तुवणसादो । भवट्टिदिकालस्स' सादिरेयतिणिणपलिदोवमोवदेसादो । 'णाणाजीवं पडुच्च  
सव्वद्धा' च्चि सुत्तादो वा विरहाभावो णव्वदे । एवं कालपरूवणा गदा ।

**खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देव-  
अवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणकालेण ॥ २७ ॥**

असिद्धेण देवअवहारकालेण कथं पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो साहि-  
ज्जदे ? ण एस दोसो, अणाइणिहणस्स आगमस्स असिद्धत्ताणुववत्तीदो । अणवगमो  
असिद्धत्तणमिदि चे ण, वक्खणादो तदवगमसिद्धीदो । संपहि वेसय-छप्पणंगुलवग्ग-  
मावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि ।  
अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण वेसय-छप्पणमेत्तसुच्चिअंगुलेसु भागे हिदेसु  
तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा पुव्विल्ल-  
मावलियाए असंखेज्जदिभागं वग्गेऊण पण्हिसहस्स-पंचसय-छत्तीसमेत्तपदरंगुलेसु भागे

कालका अन्तर्मुहूर्तमात्र उपदेश पाया जाता है; और भवस्थिति कालका कुछ अधिक तीन  
पर्योपमका उपदेश दिया है । इसलिये पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि राशिका विच्छेद नहीं  
होता है । अथवा, 'नाना जीवोंकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव सर्व काल रहते हैं'  
इस सूत्रसे भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका विरहाभाव जाना जाता है । इसप्रकार काल-  
परूपणा समाप्त हुई ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे  
असंख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ २७ ॥

शंका — देवोंका प्रमाण लानेके लिये जो अवहारकाल कहा है वह असिद्ध है,  
इसलिये असिद्ध देव अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल कैसे  
साधा जाता है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है; क्योंकि, अनादिनिधन आगम असिद्ध नहीं  
हो सकता है ।

शंका — आगमका ज्ञान नहीं होना ही आगमका असिद्धत्व है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, व्याख्यानसे आगमके ज्ञानकी सिद्धि हो जाती है ।

अब बतलाते हैं कि दोसौ छप्पन सूच्यंगुलेक वर्गको आवलीके असंख्यातवें भागसे  
भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, आवलीके  
असंख्यातवें भागसे दोसौ छप्पन सूच्यंगुलोंके भाजित करने पर वहाँ जो लब्ध आवे उसका वर्ग  
कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल होता है । अथवा, पहले स्थापित  
आवलीके असंख्यातवें भागको वर्गित करके जो प्रमाण आवे उससे पैंसठ हजार पांचसौ

हिदेसु पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि<sup>१</sup> । अहवा पण्णट्ठिसहस्स-पंच-  
सय-च्छत्तीसरूवोवड्ठिदआवलियाए असंखेज्जदिभागस्त वग्गेण पदरंगुले भागे हिदे पंचि-  
दियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि ।

एत्थ खंडिदिविहि वत्तइस्सामो । तं जहा- पदरंगुले असंखेज्जे  
खंडे कए एयं खंडं पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि ।  
खंडिदं गदं । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे पंचि-  
दियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । भाजिदं गदं । आवलियाए असंखेज्जदिभागं  
विलेज्जण एकेकस्स रूवस्स पदरंगुलं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगखंडं पंचिदियतिरिक्ख-  
मिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । विरलिदं गदं । तमवहारकालं सलागभूदं ठवेज्जण  
पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालपमाणेण पदरंगुलादो अवहिरीज्जदि सलागाहितो  
एगरूवमवणिज्जदि । एवं पुणो पुणो अवणिज्जमाणे सलागाओ पदरंगुलं च जुगवं  
णिट्ठिदं<sup>२</sup> । तत्थ आदीए वा अंते वा मज्जे वा एगवारमवहिदपमाणं पंचिदियतिरिक्ख-

छत्तीसमात्र प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल  
होता है । अथवा, पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीससे आवलीके असंख्यातवें भागके वर्गको  
अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच  
मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल आता है । अथ यहां खंडित आदिककी विधिको बतलाते  
हैं । यह इसप्रकार है—

प्रतरांगुलके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच  
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार खंडितका वर्णन समाप्त हुआ । आवलीके  
असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल  
होता है । इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ । आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित  
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलको समान खंड करके देयरूपसे  
दे देने पर उनमेंसे एक विरलनके प्रति प्राप्त एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि  
अवहारकाल होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ । उस आवलीके असंख्यातवें  
भागरूप अवहारकालको शलाकारूपसे स्थापित करके अनन्तर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि  
अवहारकालके प्रमाणको प्रतरांगुलमेंसे घटा देना चाहिये । एकवार घटाया इसलिये शलाका-  
राशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः प्रतरांगुलमेंसे आवलीके असंख्यातवें  
भागको और शलाकाराशिमेंसे एकको उत्तरोत्तर कम करते जानेपर शलाकाराशि और  
प्रतरांगुल एक साथ समाप्त होते हैं । यहां पर आदिमें अथवा मध्यमें अथवा अन्तमें एकवार  
जितना प्रमाण घटाया उतना पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार

१ अत्रो 'होदि', आत्रो 'होदि आगच्छदि' इति पाठः ।

२ अत्रिडु 'णिट्ठिदं' इति पाठः ।



मिच्छाद्विअवहारकालो होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागे असंखेज्जाणि स्रचिअंगुलाणि । पमाणं गदं । केण कारणेण ? स्रचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिदे स्रचिअंगुलमागच्छदि । स्रचिअंगुलपढमवग्गमूलेण पदरंगुले भागे हिदे स्रचिअंगुल-पढमवग्गमूलमिह जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि स्रचिअंगुलाणि लब्धंति । एवमसंखेज्जाणि वग्गट्ठाणाणि हेट्ठा ओसरिऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि स्रचिअंगुलाणि आगच्छंति । कारणं गदं । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण स्रचिअंगुले भागे हिदे लद्धमि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि स्रचिअंगुलाणि । अहवा आवलियाए असंखेज्जदिभागेण स्रचिअंगुलपढमवग्गमूलमवहरिय लद्धेण स्रचिअंगुल-पढमवग्गमूलं चैव गुणिदे तत्थ जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि स्रचिअंगुलाणि पंचिदिय-तिरिक्खमिच्छाद्विअवहारकालो होदि । एवं गतूण आवलियाए असंखेज्जदिभागेण आवलियाए भागे हिदाए लद्धेण आवलियं गुणियं तदो पदरावलियं गुणिय एवं जाव स्रचिअंगुलपढमवग्गमूलं ति गिरंतरं सयलवग्गाणं अण्णोणम्भत्थे कदे तत्थ जत्तियाणि

अपहृतका कथन समाप्त हुआ । उस पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरांगुलके असंख्यातवें भाग है जो असंख्यात सूर्यगुलप्रमाण होता है । इसप्रकार प्रमाणका वर्णन समाप्त हुआ ।

शंका — पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण असंख्यात सूर्यगुल किस कारणसे है ?

समाधान — सूर्यगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर एक सूर्यगुलका प्रमाण आता है । सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका जितना प्रमाण हो उतने सूर्यगुल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर असंख्यात सूर्यगुल लब्ध आते हैं । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

आवलीके असंख्यातवें भागसे सूर्यगुलके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूर्यगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । अथवा, आवलीके असंख्यातवें भागसे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूर्यगुलप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल है । इसीप्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे आवलीको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे प्रतरावलीको गुणित करके इसीप्रकार सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलपर्यंत संपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे उतने सूर्यगुल आते हैं और यही पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल



रूवाणि तत्तियाणि सूचिअंगुलाणि हवंति । गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्टिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्टिमवियप्पं वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागणे सूचिअंगुले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा तेणेव भागहारेण सूचिअंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणेऊण तेण सूचिअंगुले गुणिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एवमसंखेज्जाणि वग्गट्टाणाणि हेट्टा ओसरिऊण आवलियाए असंखेज्जदिभागणे आवलियाए भागे हिदाए जं लद्धं तेण तं चेव गुणिय तस्सुवरिमवग्गं गुणिय एवं जाव सूचिअंगुलेचि गिरंतरं सच्चवग्गाणं अणोण्णत्तासे कए पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । वेरूवे हेट्टिमवियप्पो गदो । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागणे गुणिदसूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं जहा—सूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । घणाघणे हेट्टिमवियप्पं वत्तइस्सामो । आवलियाए

हे । इसप्रकार निरुक्तिका वर्णन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—आवलीके अंशख्यातवें भागसे सूर्यगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसी सूर्यगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । अथवा, उसी आवलीके अंशख्यातवें भागरूप भागहारसे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूर्यगुलके गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसीप्रकार अंशख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर आवलीके अंशख्यातवें भागसे आवलीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसी आवलीको गुणित करके पुनः उस गुणित राशिसे उस आवलीके उपरिम वर्गको गुणित करके इसीप्रकार गुणित करते हुए सूर्यगुलपर्यंत संपूर्ण वर्गोंके निरन्तर परस्पर गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार द्विरूपमें अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—आवलीके अंशख्यातवें भागसे सूर्यगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—सूर्यगुलका घनांगुलमें भाग देने पर प्रतरांगुल आता है । पुनः आवलीके अंशख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यक् मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है ।

असंखेज्जदिभागेण गुणिदसूचिअंगुलेण घणंगुलपढमवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणाघणंगुल-  
पढमवग्गमूले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं जहा-  
घणंगुलपढमवग्गमूलेण घणाघणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे घणंगुलमागच्छदि । पुणो  
सूचिअंगुलेण घणंगुले भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदि-  
भाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं  
हेट्ठिमवियप्पो गदो ।

उवरिमवियप्पो तिबिहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ वेरूवे  
गहिदं वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभागेण पदरंगुलं भागे हिदे पंचिदिय-  
तिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अट्ठच्छेदणयमेचे  
रासिस्स छेदणए कदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एसो मज्झिम-  
वियप्पो, एदमवेक्खिय हेट्ठिम-उवरिमववएससंभवादो । एसो उवयारेण उवरिमवियप्पो

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे सूर्य-  
गुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध  
आवे उससे घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि  
अवहारकाल होता है । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके प्रथम वर्गमूलसे  
घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर घनांगुलका प्रमाण आता है । पुनः सूर्यगुलसे  
घनांगुलके भाजित करने पर प्रतरांगुलका प्रमाण आता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे  
प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इसप्रकार  
अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत, और गृहीतगुणकार । उनमेंसे  
द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके  
भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने  
अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच  
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । वास्तवमें यह मध्यम विकल्प है और इसीकी अपेक्षा करके  
ही अधस्तन और उपरिम संज्ञा संभव है, इसलिये उपचारसे यह उपरिम विकल्प कहा  
जाता है ।

विशेषार्थ— विवक्षित भाजकका किसी विवक्षित भाज्यमें भाग देनेसे जो लब्ध आता है  
वही लब्ध जब उस विवक्षित भाज्य और भाजकसे नीचेकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला  
जाता है, तब वह अधस्तन विकल्प कहलाता है और जब वही लब्ध उस विवक्षित भाज्य और  
भाजकसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला जाता है, तब उसे उपरिम विकल्प कहते  
हैं । इस नियमके अनुसार प्रकृतमें भाजक आवलीका असंख्यातवां भाग और भाज्य प्रतरांगुल,  
इन दोनोंसे नीचेकी संख्याओंका आश्रय लेकर जब पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

त्ति बुद्धदे । संपहि अणुवयारेण उवरिमवियप्पं वत्तइस्सामो । तं जहा—आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदपदरंगुलेण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छा-इट्ठिअवहारकालो होदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एत्थ अद्धच्छेदणयमेलावणविहाणं चितिय वत्तच्चं । एवं संखेज्जासंखेज्जाणंतेसु णेयच्चं । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं जहा—पदरंगुलउवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलभागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण-पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो भागच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठि-

लाया जायगा, तब इस प्रक्रियाको अधस्तन विकल्प कहेंगे; और जब उक्त दोनों संख्याओंसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर उक्त अवहारकाल लाया जायगा, तब उसे उपरिम विकल्प कहेंगे । आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको भाजित करके पंचेन्द्रिय तिर्यंच अवहारकालके लानेकी जो प्रक्रिया है वही वास्तवमें अधस्तन या उपरिम विकल्प नहीं कहीं जा सकती है, क्योंकि, अधस्तन और उपरिम विकल्पके निश्चित करनेके लिये यहां वही आधार है । अतः वास्तवमें वह मध्यम विकल्प ही है, उपरिम नहीं ।

अब अनुपचारसे उपरिम विकल्पको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भूयमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण होता है । यहां पर अर्धच्छेदोंके मिलानेकी बिधिकी विचार कर कथन करना चाहिये । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त-स्थानोंमें भी ले जाना चाहिये ।

अब अष्टरूपमें उपरिम विकल्प बतलाते हैं—आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । वह इसप्रकार है—प्रतरांगुलके उपरिम वर्गसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुल आता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भूयमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

अवहारकालो आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेजाणंतेसु पेयव्वं । घणाघणे वत्तइस्तामो । आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणाघणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा— घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलउवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलमागच्छदि । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरंगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते राभिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । पदरंगुलस्स घणंगुलस्स घणाघणंगुलपढमवग्गमूलस्स चामंखेज्जदिभागेण पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो वत्तव्वो । एदेण अवहारकालेण जगपेढिम्हि भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिविक्खंभस्सई आगच्छदि । जहा णेरइयमिच्छाइट्ठिअवहारकालस्स खंडिदादिपरूवणा कदा तहा एदिस्मे विक्खंभस्सईए खंडिदादिपरूवणा कायव्वा । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिद्व्यमागच्छदि । एत्थ खंडिद-

आता है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्तस्थानोंमें ले जाना चाहिये ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प बनलाते हैं— आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके उपरिम वर्गसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुल आता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण आता है । प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन (पहलेके समान) करना चाहिये । इस अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है । पहले जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके खंडित आदिककी प्ररूपणा कर आये हैं, उसीप्रकार इस विष्कंभसूचीके खंडित आदिकका प्ररूपण करना चाहिये ।

पूर्वोक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि

भाजिद-विरलिद-अवहिद-पमाण-कारण-गिरुत्ति-वियप्पा जहा गेरइयमिच्छाहिट्ठिदव्वपरू-  
वणाए परूविदा तहा परूवेयव्वा ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति तिरि-  
क्खोघं ॥ २८ ॥

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खोघगुणपडिवण्णपमाणपरूवणसुत्तस्स वक्खाणं कंद  
तहा कायव्वं । तिरिक्खेसु पंचिदिए सोत्तूण अणत्थ गुणपडिवण्णजीवाणं संभवाभावादो ।  
एवं पंचिदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता ।

संपहि पज्जत्तणामकम्मोदयपंचिदियतिरिक्खपमाणपरूवणं हवदि —

पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइटी दव्वपमाणेण केवडिया,  
असंखेज्जा ॥ २९ ॥

एत्थ पंचिदियगहणं एइदिय-विगलिदियबुदासट्ठं । तिरिक्खणिहेसो देव-गेरइय-  
मणुसबुदासट्ठो । पज्जत्तणिहेसो अपज्जत्तबुदासट्ठो । मिच्छाइट्ठिणिहेसेण सेसगुणद्वान-

द्रव्यका प्रमाण आता है । खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत, प्रमाण, कारण, निरुक्ति  
और विकल्पका प्ररूपण जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यकी प्ररूपणाके समय कर  
आये हैं उसीप्रकार यहाँ पर उन सबका प्ररूपण करना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक पंचेन्द्रिय  
तिर्यंच प्रत्येक गुणस्थानमें सामान्य तिर्यंचोंके समान पत्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ २८ ॥

जिसप्रकार सामान्य तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले  
सूत्रका व्याख्यान कर आये हैं उसीप्रकार इस सूत्रका व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि,  
तिर्यंचोंमें पंचेन्द्रिय जीवोंको छोड़कर दूसरे तिर्यंचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव संभव नहीं हैं ।  
इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब जिनके पर्याप्त नामकर्मका उदय पाया जाता है ऐसे पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके  
प्रमाणका प्ररूपण करते हैं—

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?  
असंख्यात हैं ॥ २९ ॥

सूत्रमें एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके निराकरण करनेके लिये पंचेन्द्रिय पदका ग्रहण  
किया है । देव, नारकी और मनुष्योंके निराकरण करनेके लिये तिर्यंच पदका निर्देश किया है ।  
अपर्याप्त जीवोंके निराकरण करनेके लिये पर्याप्त पदका निर्देश किया है । सूत्रमें मिथ्यादृष्टि

बुदासो कदो हवदि । द्व्यपमाणेणेत्ति णिद्देसेण खेत्त-कालबुदासो कदो हवदि । केवडिया इदि पुच्छासुत्तणिद्देसेण छदुमत्थाणं कत्तारत्तमवणिदं हवदि । असंखेज्जा इदि णिद्देसेण संखेज्जाणंताणं बुदासो कदो । किमट्ठं द्व्यपमाणमेव पढमं परूविज्जदि ? ण एस दोसो, अदीवंधूलत्तादो द्व्यपरूवणा पढमं परूविज्जदे । कधमेदिस्से थूलत्तणं ? असंखेज्जमेत्त-विसेसिदजीवोवलंभणिमित्तादो । खेत्त-कालेहिंदो द्व्यं थोवेत्ति वा पुवं परूविज्जदे । द्व्यथोवत्तणं कधं जाणिज्जदे ? 'वड्डीदु जीव-पोग्गल-कालागासा अणंतगुणा' एदम्हादो गाहासुत्तादो णव्वदे । सेसपरूवणा जहा णेरइयमिच्छाइद्विद्व्यपमाणपरूवणसुत्तसस उत्ता तथा वत्तव्वा ।

**असंखेजासंखेजाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३० ॥**

पदके निर्देशसे शेष गुणस्थानोंका निराकरण हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा' इसप्रकारके निर्देशसे क्षेत्र और कालप्रमाणका निराकरण हो जाता है । 'कितने हैं' इसप्रकार पृच्छारूप सूत्रके निर्देशसे छद्मस्थकतृकत्वका निराकरण हो जाता है । 'असंख्यात हैं' इसप्रकारके निर्देशसे संख्यात और अनन्तका निराकरण हो जाता है ।

शंका—पहले द्रव्यप्रमाणका ही प्ररूपण क्यों किया जा रहा है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्ररूपणा अतीव स्थूल है, इसलिये उसका पहले प्ररूपण किया जाता है ।

शंका—यह द्रव्यप्ररूपणा स्थूल कैसे है ?

समाधान—क्योंकि, यह द्रव्यप्ररूपणा केवल असंख्यात विशेषणसे युक्त जीवोंके ग्रहण करनेमें निमित्त है, इसलिये स्थूल है ।

अथवा, क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोका है, इसलिये उक्त दोनों प्ररूपणाओंके पहले द्रव्यप्ररूपणाका कथन किया जाता है ।

शंका—क्षेत्र और कालसे द्रव्य स्तोका है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'वृद्धिकी अपेक्षा जीव, पुद्गल, काल और आकाश उत्तरोत्तर अनन्तगुणे हैं' इस गाथासूत्रसे जाना जाता है कि काल और क्षेत्रसे द्रव्य स्तोका है ।

शेष प्ररूपणा जिसप्रकार नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणके प्ररूपण करनेवाले सूत्रकी कह आये हैं उसप्रकार कहना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३० ॥

१ प्रतिपु 'अदीद' इति पाठः ।

एत्थ असंखेज्जासंखेज्जाणिहेसो सेस-असंखेज्जाणं बुदासट्ठो । ओसप्पिणि-उस्स-प्पिणीणिहेसो कप्पमाणपरूवणट्ठो । कालेणेत्ति णिहेसो खेत्तादिणियत्तणट्ठो । कथं दच्च-परूवणादो कालपरूवणा सुहुमा ? असंखेज्जासंखेज्जोवलंभणिमित्तादो पल्ल-सायर-कप्पाण-सुवरिमसंस्वाविसेसिदजीवोवलंभणिमित्तादो च । संपहि सुहुमदरपरूवणइं सुत्तमाह—

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि  
देवअवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३१ ॥

एत्थ पदरगहणेण जगपदरस्स गहणं, ण पदरंगुलस्स, 'देवअवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण' इदि वयणणहाणुववत्तीदो । देवाणमवहारकाले संखेज्जखेहि भागे हिदे जो भागलट्ठो सो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो होदि । तं कथं जाणिजेदं ? संविग्गगीदत्थ-आहिरियाणमविरुद्धवयणादो णव्वेदं । एसो पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छा-इट्ठीणमवहारकालो होदि । अहवा संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे लट्ठे वग्गिदे

शेष असंख्यातोंके निराकरण करनेके लिये यहाँ सूत्रमें असंख्यातासंख्यात पदका ग्रहण किया है । कल्पके प्रमाणके प्ररूपण करनेके लिये अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी पदका ग्रहण किया है । क्षेत्रादि प्रमाणोंके निराकरण करनेके लिये 'कालकी अपेक्षा' इस पदका ग्रहण किया है ।

शंका—द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म कैसे है ?

समाधान—असंख्यातासंख्यातके ग्रहण करनेका निमित्त कालप्ररूपणा है । अथवा, कालप्ररूपणा पश्य, सागर और कल्पसे ऊपरकी संख्यासे विशिष्ट जीवोंके ग्रहण करानेमें निमित्त है, इसलिये द्रव्यप्ररूपणासे कालप्ररूपणा सूक्ष्म है ।

अब अत्यंत सूक्ष्मप्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियों द्वारा देव अवहारकालसे संख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३१ ॥

यहाँ सूत्रमें प्रतर पदके ग्रहण करनेसे जगप्रतरका ग्रहण किया है, प्रतरांगुलका नहीं, क्योंकि, यदि ऐसा न माना जाय तो 'देव अवहारकालकी अपेक्षा संख्यातगुणे हीन कालसे' यह बचन नहीं बन सकता है । देवोंके अवहारकालमें संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे वह प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग होता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—संविश होकर जिन्होंने पदार्थोंका निरूपण किया है ऐसे आचार्योंके अविरुद्ध उपदेशसे जाना जाता है कि देवोंके अवहारकालमें संख्यातका भाग देने पर प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग लब्ध आता है । और यही पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल है । अथवा, संख्यातसे सूत्र्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसका वर्ग कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता



पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । अहवा तप्पाओग्गसंखेज्जरूवे वग्गिऊण पदरंगुले भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि । एदस्स खंडिदादओ जाणिय भाणियव्वा । एदेण अवहारकालेण जगपदेरे भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठि-  
दव्वपरूवणा गदा ।

**सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ ३२ ॥**

एदस्स सुत्तस्स जहा तिरिक्खगुणपडिवण्णाणं सुत्तस्स वक्ख्वाणं कदं तहा कायव्वं, विसेसाभावादो । एवं पंचिंदियतिरिक्खपरूवणा समत्ता ।

**पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केव-  
डिया, असंखेज्जा ॥ ३३ ॥**

एत्थ पंचिंदियणिदेसो सेसिंदियबुदासट्ठो । तिरिक्खणिदेसो सेसगदिबुदासट्ठो । जोणिणीणिदेसो पुरिस-णवुंसयलिंगबुदासट्ठो । मिच्छाइट्ठिणिदेसो सेसगुणपडिवण्णबुदासट्ठो ।

हे । अथवा, तद्योग्य संख्यातका वर्ग करके और उस वर्गित राशिका प्रतरांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालके खंडित आदिको समझकर कथन करना चाहिये ।

इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य होता है । इनप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी द्रव्यप्ररूपणा समाप्त हुई ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३२ ॥

जिसप्रकार तिर्यचोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका व्याख्यान कर आये हैं, उसीप्रकार इस सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये, क्योंकि, उस सूत्रके व्याख्यानसे इस सूत्रके व्याख्यानमें कोई विशेषता नहीं है । इसप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यच प्ररूपणा समाप्त हुई ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ३३ ॥

सूत्रमें पंचेन्द्रिय पदका निर्देश शेष इन्द्रियोंके निवारण करनेके लिये किया है । तिर्यच पदका निर्देश शेष गतियोंके निवारण करनेके लिये किया है । योनिमती पदका निर्देश पुरुषलिंग और नपुंसकलिंगके निवारण करनेके लिये किया है । मिथ्यादृष्टि पदका निर्देश



केवडिया इदि पुच्छाणिदेसो सुत्तस्स पमाणपडिवायणट्ठो । असंखेज्जा इदि णिदेसो संखेज्जाणंतारणं पडिसेहफलो । सेसं पुच्चं व परूवेदव्वं ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ३४ ॥

एत्थ पुच्चसुत्तादो मिच्छाइट्ठि त्ति अणुवट्ठावेयव्वं, अण्णहा सुत्तत्थाणुववत्तादो । सेसं पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिकालपरूवणसुत्तमिह वुत्तविहाणेण वत्तव्वं ।

खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खजोगिणिमिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो संखेज्जगुणेण कालेण ॥ ३५ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं कीरदे । तं जहा— तिणिणसयसहस्स-चउवीससहस्स-कोडिरूवेहि देवअवहारकालं गुणिदे तदो संखेज्जगुणो पंचिदियतिरिक्खजोगिणिमिच्छा-इट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा छज्जोयणसदमंगुलं काऊण वगिदे इगवीसकोडाकोडि-सयाणि तेवीसकोडाकोडीओ छत्तीसकोडिसयसहस्साणि चउत्तट्ठिकोडिसहस्साणि पदर-गुलाणि पंचिदियतिरिक्खजोगिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा इगवीसकोडा-

शेष गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके निवारण करनेके लिये किया है । 'कितने हैं' इसप्रकार पृच्छारूप पदका निर्देश सूत्रकी प्रमाणताके प्रतिपादन करनेके लिये किया है । 'असंख्यात' इस पदके निर्देश करनेका फल संख्यात और अनन्तका प्रतिषेध करना है । शेष व्याख्यान पहलेके समान करना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव असंख्याता-संख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३४ ॥

यहां पहलेके सूत्रसे मिथ्यादृष्टि इस पदकी अनुवृत्ति कर लेना चाहिये, अन्यथा सूत्रार्थ नहीं बन सकता है । शेष कथन पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणका कालकी अपेक्षा प्ररूपण करनेवाले सूत्रके अनुसार करना चाहिये ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे संख्यातगुणे अवहारकालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३५ ॥

आगे इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं । वद इसप्रकार है— तीन लाख चौवीस हजार करोड़ संख्यासे देवोंके अवहारकालके गुणित करने पर जो लब्ध आवे उससे भी संख्यातगुणा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकाल है । अथवा, छहसौ योजनके अंगुल करके घर्ष करने पर एकवीससौ कोड़ाकोड़ी, तेवीस कोड़ाकोड़ी, छत्तीस कोड़ी लाख और चौसठ कोड़ी हजार प्रतरांगुल प्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता

कोडिसद-तेवीसकोडाकोडि-छत्तीसकोडिलक्ख-चउसट्टिकोडिसहस्ररूवेहि पदरंगुलमोवडे-  
ऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाद्विजोणिणीअवहारकालो होदि ।  
एदं केसिंचि आइरियवक्खाणं पंचिदियतिरिक्खमिच्छाद्विजोणिणीअवहारकालपडिबद्धं ण  
घडदे । कुदो ? पुरदो वाणवेंतरदेवाणं तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तअवहारकालो होदि  
त्ति वक्खाणदंसणादो । इदं वक्खाणं असच्चं वाणवेंतरअवहारकालपमाणवक्खाणं सच्चमिदि  
कथं जाणिज्जे ? णत्थि एत्थ अम्हाणमेयंतो, किंतु दोण्हं वक्खाणाणं मज्जे एकेण  
वक्खाणेण असच्चेण होंदव्वं । अह्वा दोणिण वि वक्खाणाणि असच्चाणि, एसा अम्हाणं  
पइज्जा । कथमेदं जाणिज्जे ? ‘ पंचिदियतिरिक्खजोणिणीहिंतो वाणवेंतरदेवा संखेअगुणा,

है । अथवा इकवीससौ कोड़ाकोड़ी, तेवीस कोड़ाकोड़ी, छत्तीस कोड़ी लाख, और चौसठ  
कोड़ी हजार प्रमाण संख्यासे प्रतरांगुलको अपघर्तित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके  
उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

विशेषार्थ—एक योजनके चार कोस, एक कोसके दो हजार धनुष, एक धनुषके  
चार हाथ और एक हाथके चौबीस अंगुल होते हैं,\* इसलिये एक योजनके अंगुल करने पर  
 $१ \times ४ \times २००० \times ४ \times २४ = ७६८०००$  प्रमाण अंगुल आते हैं । ७६८००० को ६०० से गुणा  
कर देने पर ६०० योजनके ४६,०८,००००० प्रमाण अंगुल हो जाते हैं । ४६०८००००० संख्यातका  
वर्ग कर लेने पर २१,२३,३६,६४,००००००००० प्रमाण प्रतरांगुल होते हैं । इनका भाग  
जरप्रतरमें देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंके अवहारकालसे संबन्ध रखनेवाला यह कितने ही  
आचार्योंका व्याख्यान घटित नहीं होता है, क्योंकि, तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र व्यंतर  
देवोंका अवहारकाल होता है, ऐसा आगे व्याख्यान देखा जाता है ।

शंका—यह पूर्वोक्त पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंके अवहारकालका व्याख्यान असत्य  
है और वाणव्यंतर देवोंके अवहारकालके प्रमाणका व्याख्यान सत्य है, यह कैसे जाना जाता है?

समाधान—इस विषयमें पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतीसंबन्धी अवहारकालका व्याख्यान  
असत्य ही है और व्यन्तर देवोंके अवहारकालका व्याख्यान सत्य ही है, ऐसा कुछ हमारा  
एकान्त मत नहीं है, किंतु हमारा इतना ही कहना है कि उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे कोई एक  
व्याख्यान असत्य होना चाहिये । अथवा, उक्त दोनों ही व्याख्यान असत्य हैं, यह हमारी  
प्रतिज्ञा है ।

शंका—उक्त दोनों व्याख्यान असत्य हैं, अथवा, उक्त दोनों व्याख्यानोंमेंसे एक

\* छहिं अंगुलेहि वादो वेवादेहिं विहत्थिणामा य । दोणिण विहत्थो इत्थो वेहत्थेहिं हवे रिक्क ॥ नेरिक्कहिं  
दंडो दंडसमा जगधणूणि सुसलं वा । तस्स तहा पाळी दोदंडसहससयं कोसं ॥ चउकोसेहिं जोयण  $\times \times$  ।  
ति. प. पत्र ५ ।

तत्त्वेव देवीओ संखेजगुणाओ ' एदम्हादो खुदाबन्धसुचादो जाणिजदे । ण च सुत्तम-  
प्पमाणं काऊण वक्खाणं पमाणमिदि वोत्तुं सक्किजदे, अहप्पसंगादो । ण च एक्केकस्स  
देवस्स एका चेव देवी होदि त्ति जुत्ती अत्थि, भवणादियणं भूओदेवीणमागमेणो-  
वलंभादो देवेहिंतो देवीओ वत्तीसगुणाओ' त्ति वक्खाणदंसणादो च । तम्हा जदि  
वाणवेंतरदेवअवहारकालो तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमेत्तो त्ति णिच्चओ अत्थि तो  
जोणिणीअवहारकालमुप्पायणट्ठं तिण्णिजोयणसदअंगुलवग्गमिह वत्तीसोत्तरसदपहुडि जिण-  
दिट्ठमावो गुणगारो पवेसेयव्वो । अध जोणिणीअवहारकालो छज्जोयणसदअंगुलवग्गमेत्तो  
त्ति णिणओ अत्थि तो वाणवेंतरअवहारकालमुप्पायणट्ठं छज्जोयणसदअंगुलवग्गमेत्तो वत्तीस-  
पहुडि जिणदिट्ठमावसंखेज्जरूवेहि ओवट्ठेयव्वं । अहवा उभयत्थ वि पदरंगुलस्स तप्पा-  
ओग्गो गुणगारो दादव्वो ।

एत्थ खंडिदादिविहिं वचइस्सामो । तं जहा— पदरंगुलउवरिमवग्गे पदरंगुलस्स  
व्याख्यान तो असत्य है ही, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — ' पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमितियोंसे वाणव्यन्तर देव संख्यातगुणे हैं और  
उनकी देवियां वाणव्यन्तर देवोंसे संख्यातगुणी हैं' इस खुदाबन्धके सूत्रसे उक्त अभिप्राय जाना  
जाता है । सूत्रको अप्रमाण करके उक्त व्याख्यान प्रमाण है, ऐसा तो कहा नहीं जा सकता है,  
अन्यथा, अतिप्रसंग दोष आ जायगा । यदि एक एक देवके एक एक ही देवी होती है, यह युक्ति  
ही जाय सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, भवनवासी आदि देवोंके बहुतसी देवियोंका आगममें उप-  
देश पाया जाता है । और 'देवोंसे देवियां वत्तीसगुणी होती हैं' ऐसा व्याख्यान भी देखा जाता  
है । इसलिये वाणव्यन्तरदेवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अवहारकालके उत्पन्न करनेके लिये तीनसौ  
निश्चय है तो पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमितियोंके अवहारकालके उत्पन्न करनेके लिये तीनसौ  
योजनके अंगुलोंके वर्गमें जो राशि जिनदेवने देखी हो तदनुसार वत्तीस अधिक सौ आदि  
रूप गुणकारका प्रवेश कराना चाहिये । अथवा, ' पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमितियोंका अवहारकाल  
छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र है ' यदि ऐसा निश्चय है तो वाणव्यन्तर देवोंका अवहार-  
काल उत्पन्न करनेके लिये तेतीस आदि जो संख्या जिनेन्द्रदेवने देखी हो उससे छहसौ योजनोंके  
अंगुलोंके वर्गको अपवर्तित करना चाहिये । अथवा, वाणव्यन्तर और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती,  
इन दोनोंके अवहारकालोंके लिये दोनों स्थानोंमें भी प्रतरांगुलके उसके योग्य गुणकार दे  
देना चाहिये ।

अब यहां खंडित आदिककी विधिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— प्रतरांगुलके  
उपरिम वर्गके प्रतरांगुलके संख्यातवें भागमात्र खंड करने पर उनमेंसे एक खंड प्रमाण

१ प्रतिपु ' अणादियादीणं ' इति पाठः ।

२ इतिपुतिसे वत्तीस देवी । गो. जी. २७८.

३ प्रतिपु ' तिण्णिजोयण ' इति पाठः ।

संखेज्जदिभागमेचखंडे कए तत्थेयखंडं पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । खंडिदं गदं । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । भाजिदं गदं । पदरंगुलस्स-संखेज्जदिभागं विरलेऊण एकेकस्स रूवस्स पदरंगुलस्सुवरिमवग्गं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडं पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । विरलिदं गदं । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठवेऊण पदरंगुलउवरिमवग्गादो पंचिदियतिरिक्ख-जोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालपमाणमवणिय सलागादो एगरूवमवणेयच्चं । एवं पुणो पुणो अवहिरिज्जमाणे पदरंगुलउवरिमवग्गो सलागाओ च जुगवं णिट्ठिदाओ । तत्थ आदीए अंते मज्जे वा एयवारमवहिदपमाणं पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअवहार-कालो होदि । अवहिदं गदं । तस्स पमाणं पदरंगुलउवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो संखेज्जजाणि पदरंगुलाणि । तं जहा—पदरंगुलेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुल-मागच्छदि । पदरंगुलस्स दुभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे दोणिण पदरंगुलाणि आगच्छति । पदरंगुलस्स तिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे तिणिण पदरंगुलाणि

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार खंडितका वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार भाजितका वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंडमात्र पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसप्रकार विरलितका वर्णन समाप्त हुआ । प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको शलाकारूप स्थापित करके प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल घटा देना चाहिये । एकवार घटाया, इसलिये शलाकाराशिमैंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमेंसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि-योंका अवहारकाल और शलाकाराशिमैंसे एक पुनः पुनः घटाते जाने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग और शलाकाएं एकसाथ समाप्त हो जाती हैं । वहां आदिमें, अन्तमें अथवा मध्यमें एकवार जितना प्रमाण घटाया जाय उतना पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अव-हारकाल होता है । इसप्रकार अपहृतका वर्णन समाप्त हुआ । उस पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण प्रतरांगुलके उपरिम वर्गका असंख्यातवां भाग है जो संख्यात प्रतरांगुलप्रमाण है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—प्रतरांगुलका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर एक प्रतरांगुल आता है । प्रतरांगुलके दूसरे भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरांगुल लब्ध आते हैं । प्रतरांगुलके तीसरे भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरांगुल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार क्रमसे आगे जाकर

आगच्छन्ति । एवं क्रमेण गंतूण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलुवरिमवग्गे भागे हिंदे संखेज्जजाणि पदरंगुलाणि आगच्छन्ति । पमाण-कारणाणि गदाणि । तस्स का गिरुत्ती ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिंदे लद्धम्हि जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पदरंगुलाणि हवन्ति । गिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुले भागे हिंदे लद्धेण तं चेव गुणिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, विहज्जमाणरासीदो हेट्ठिमपदरंगुलं पेक्खिय पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठि-अवहारकालस्स बहुत्तुवलंभादो । ण च थोवरासिमवहरिय तत्तो बहुवरासी उप्पादेदुं सक्किज्जे, विरोहा' । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलं गुणेऊण पदरंगुलघणे भागे हिंदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तं जहा-पदरंगुलेण पदरंगुलघणे भागे हिंदे पदरंगुलउवरिमवग्गे आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिंदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठि-

प्रतरांगुलके संख्यातवें भागका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संख्यात प्रतरांगुल लब्ध आते हैं । इसप्रकार प्रमाण और कारणका वर्णन समाप्त हुआ ।

शंका— इसकी क्या निश्चिती है ?

समाधान— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर लब्धमें जो प्रमाण आवे उतने प्रतरांगुल योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं । इसप्रकार निश्चितिका कथन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उससे उसीके अर्थात् प्रतरांगुलके गुणित कर देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि, भज्यमान राशिकी अपेक्षा अधस्तन प्रतरांगुलको देखते हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल बहुत बड़ा है । कुछ स्तोक राशिको अपहृत करके उससे बड़ी राशि नहीं उत्पन्न की जा सकती है, क्योंकि, ऐसा माननेमें विरोध आता है ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके घनके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—प्रतरांगुलसे प्रतरांगुलके घनके भाजित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच

१ प्रतिशु 'विरोहमावादो' इति पाठः ।

अवहारकालो आगच्छदि । अट्टवरूवणा गदा । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलं गुणेऊण तेण पदरंगुलघणस्स पढमवग्गमूलं गुणिय घणाघणगुले भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा—घणंगुलेण घणाघणंगुले भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलेण घणंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । हेट्ठिमवियप्पो गदो ।

गहिदादिभेएण उवरिमवियप्पो तिविहो । तत्थ वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अट्ठच्छेदण्यमेत्ते रासिस्स अट्ठच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एसो मज्झिमवियप्पो उवरिमवियप्पणिणयज्जणणट्ठं संभावितो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-

योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अष्टरूप प्ररूपणा समाप्त हुई ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—घनांगुलसे घनाघनांगुलके भाजित करने पर घनांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलसे घनांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इसप्रकार अधस्तन विकल्प समाप्त हुआ ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका निर्णय करानेके लिये बतलाया गया है । प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । इसीप्रकार

मिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । एवमुवरि जाणिऊण वत्तव्वं ।

अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गस्सु-  
वरिमवग्गं गुणेऊण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्ख-  
जोणिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । तं जहा- पदरंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण  
घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो  
पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-  
मिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागद्धारस्स अट्ठच्छेदणयमेत्ते रासिस्स  
अट्ठच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालो आगच्छदि ।  
घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गस्सु-  
वरिमवग्गं गुणेऊण तेण घणंगुलउवरिमवग्गस्स तच्चवग्गवग्गं गुणेऊण घणाघणंगुलउव-  
रिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टिअवहारकालो आग-  
च्छदि । तं जहा- घणंगुलउवरिमवग्गस्स तच्चवग्गवग्गेण घणाघणंगुलउवरिमवग्गस्सु-  
वरिमवग्गे भागे हिदे घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलउवरिम-

ऊपर जानकर भी कथन करना चाहिये ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम चिकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें  
भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनां-  
गुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि  
अवहारकाल आता है । उसका रूपरीकरण इसप्रकार है— प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम  
वर्गका घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरांगुलका उपरिम वर्ग आता  
है । पुनः प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय  
तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उक्त भागद्धारके जितने अर्थच्छेद हों  
उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्थच्छेद करने पर भी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती  
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम चिकल्पको बतलाते हैं— प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे  
प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके उपरिम  
वर्गके वर्गके वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनाघनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम  
वर्गमें भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । उसका  
रूपरीकरण इसप्रकार है— घनांगुलके उपरिम वर्गके वर्गके वर्गका घनाघनांगुलके उपरिम  
वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर घनांगुलके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । पुनः



वग्गस्सुवरिमवग्गेण घणंगुलउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरंगुलउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण पदरंगुलउवरिमवग्गे भागे हिदे पंचि-  
दियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदण्य-  
मेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणए कदे वि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालो  
आगच्छदि । एवमुवरि जाणिऊण णेयव्वं । पदरंगुलउवरिमवग्गस्स घणंगुलउवरिमवग्गस्स  
घणाघणंगुलस्स च असंखेज्जदिभाएण पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिअवहारकालेण  
गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च सहियच्चो । एदेण अवहारकालेण जगमेदिमिह भागे  
हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई आगच्छदि । तेणेव जगपदरे भागे  
हिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्ठिद्ववमागच्छदि ।

**सासणसम्माइट्ठिपहुडि जाव संजदासंजदा ति ओघं ॥३६॥**

द्ववट्ठियणयमस्सिऊण ओघपरूवणा हवदि । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिऊमाणे  
तिरिक्खोघपरूवणाए पंचिदियतिरिक्खपज्जचोघपरूवणाए वा पंचिदियतिरिक्खजोणिणी-  
गुणपडिवणपरूवणा समाणा ण हवदि, तिबेदरासीदो इत्थिवेदेगरासिस्स समाणत्ताणुव-

प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गका घनांगुलके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने  
पर प्रतरंगुलका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरंगुलके संख्यातवें भागसे प्रतरंगुलके  
उपरिम वर्गके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता  
है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद् हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद् करने पर  
भी पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । इसीप्रकार ऊपर जानकर  
ले जाना चाहिये । प्रतरंगुलके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके उपरिम वर्गके  
असंख्यातवें भागरूप और घनाघनांगुलके असंख्यातवें भागरूप पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती  
मिथ्यादृष्टि अवहारकालके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारको साथ लेना चाहिये । इस  
अवहारकालसे जगश्रेणीके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती मिथ्यादृष्टि विष्कंभ-  
सूची आती है । और उसी अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच  
योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुण-  
स्थानमें पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती जीव तिर्यच-सामान्य प्ररूपणाके समान पर्योपमके  
असंख्यातवें भाग हैं ॥ ३६ ॥

द्रव्यार्थिक नयका आश्रय लेकर सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय  
तिर्यच योनिमती जीवोंकी प्ररूपणा तिर्यच सामान्य प्ररूपणाके समान है । परंतु  
पर्यायार्थिक नयका अवलम्ब करने पर तिर्यच सामान्य प्ररूपणा अथवा पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त  
सामान्य प्ररूपणाके समान पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंकी प्ररूपणा  
नहीं होती है, क्योंकि, तीन वेदवाली राशिसे एक खीवेदी जीवराशिकी समानता नहीं बन



वत्तीए, तम्हा विसेसेण होदव्वं । तं विसेसं पुब्बाइरियाविरुद्धोवएसेण वचइस्सामो । तं जहा— पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदि-  
भाएण गुणिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलि-  
याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसम्माभिच्छाइट्ठिअवहारकालो  
होदि । तं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे तत्थेव सातणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तमावलियाए  
असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि  
खंडिदादओ ओघमंगो । पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तेसु पुरिसवेदासंजदसम्माइट्ठिरासीदो  
तत्थेव इत्थिवेदासंजदसम्माइट्ठिरासी किमट्ठमसंखेज्जगुणहीणा ? पुरिसवेदादो सुट्ठु अप्प-  
सत्थित्थिवेदाएण पउरं दंसणमोहणीयखओवसमाभावादो । जदि एवं तो तत्थतणइत्थि-  
वेदअसंजदसम्माइट्ठिरासीदो तत्तो अप्पसत्थतणपुंसगवेदअसंजदसम्माइट्ठिरासिस्स असं-  
खेज्जगुणहीणत्तं पसज्जदे ? भवदु णाम अविरुद्धत्तादो । पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तत्तिवेद-  
सम्माभिच्छाइट्ठिरासीदो पंचिदियतिरिक्खजोणिणीअसंजदसम्माइट्ठिरासी किं समो किं

सकती है । इसलिये सामान्य प्ररूपणासे यह प्ररूपणा विशेष होना चाहिये । अगे उस  
विशेषको पूर्व आचार्योंके अविरुद्ध उपदेशके अनुसार बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—  
पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आंचलीके असंख्यातवें  
भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल होता है ।  
उसे आंचलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती सम्यग्मिथ्या-  
दृष्टि अवहारकाल होता है । उसे संख्यातसे गुणित करने पर वहाँ पंचेन्द्रिय तिर्यच  
योनिमतिर्योमें सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उसे आंचलीके असंख्यातवें भागसे  
गुणित करने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती संयतासंयत अवहारकाल होता है । इन अवहार-  
कालोंके द्वारा खंडित आदिकका कथन सामान्य तिर्यचोंके खंडित आदिकके कथनके समान है ।

शुंका— पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्तोंमें पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे  
वहाँ पर स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि असंख्यातगुणी हीन किस कारणसे है ?

समाधान— पुरुषवेदकी अपेक्षा अप्रशस्त स्त्रीवेदके उदयके साथ प्रचुररूपसे दर्शन-  
मोहनीयके श्रयोपशमका अभाव है ।

शुंका— यदि ऐसा है तो उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यचोंमें स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव-  
राशिसे स्त्रीवेदियोंसे भी अप्रशस्त नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे असंख्यातगुणी  
हीनता प्राप्त हो जाती है ?

समाधान— स्त्रीवेदियोंसे नपुंसकवेदियोंके असंख्यातगुणी हीनता प्राप्त होती है  
तो हीनता, क्योंकि, ऐसा स्वीकार कर लेनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त तीनों वेदवाली सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे पंचेन्द्रिय तिर्यच  
योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि क्या समान है, या संख्यातगुणी है, या असंख्यातगुणी

संखेज्जगुणो किमसंखेज्जगुणो किं संखेज्जगुणहीणो किमसंखेज्जगुणहीणो किं विसेसा-  
हिओ विसेसहीणो वा ति त्थि संपहियकाले उवएसो ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असं-  
खेज्जा ॥ ३७ ॥

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहिरंति  
कालेण ॥ ३८ ॥

एदाणि दोष्णि वि सुत्ताणि सुगमाणि । किंतु एत्थ अपज्जत्ता इदि वुत्ते  
अपज्जत्तणामकम्मोदयपंचिंदियतिरिक्खा धेत्तव्वा । पज्जत्तणामकम्मस्स उदए अपज्जत्तो  
वि पज्जत्तो चेव, णोकम्मणिव्वत्तिअवेक्खाभावादो ।

खेत्तेण पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहार-  
कालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ॥ ३९ ॥

पण्हिसहस्स-पंचसय-छत्तीसपदरंगुलमेत्तदेवअवहारकालमावलिआए असंखेज्जदि-  
भाएण भागे हिदे पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो होदि । अवसेसा खंडिदादि-  
वियप्पा पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाद्वीणिं व भाणेदव्वा ।

है, या संख्यातगुणी हीन है, या असंख्यातगुणी हीन है, या विशेषाधिक है, या विशेष हीन  
है, इत्यादिरूपसे इस कालमें कोई उपदेश नहीं पाया जाता है ।

पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात  
हैं ॥ ३७ ॥

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों  
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ३८ ॥

ये दोनों भी सूत्र सुगम हैं । किंतु यहां पर अपर्याप्त ऐसा कथन करने पर अपर्याप्त  
नामकर्मके उदयसे युक्त पंचेन्द्रिय तिर्यचोंका ग्रहण करना चाहिये । तथा जिसके पर्याप्त  
नामकर्मका उदय है वह (शरीर पर्याप्तिके पूर्ण होने तक) अपर्याप्त होता हुआ भी पर्याप्त ही  
है, क्योंकि, यहां पर नोकर्मकी निवृत्तिकी अपेक्षा नहीं है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्तोंके द्वारा देवोंके अवहारकालसे असं-  
ख्यातगुणे हीन कालसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ३९ ॥

पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीस प्रतरांगुलमात्र देवोंके अवहारकालमें आवलीके असंख्या-  
तवें भागका भाग देने पर पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त अवहारकाल होता है । अशिश्व संदित  
आदि विकल्पोंका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टियोंके संदित आदिके कथनके समान  
करना चाहिये ।

भागामागं वचइस्सामो । तिरिक्खरासिमणंतखंडे कदे तत्थ बहुखंडा एइंदिय-  
वियलिंदिया होति । सेसं संखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खलद्विअपज्जा  
होति । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जचमिच्छादिद्वी होति ।  
सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइद्वी होति ।  
सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदअसंजदसम्माइद्विद्वं होदि ।  
सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसम्मामिच्छाइद्विद्वं होदि ।  
सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खतिवेदसासणसम्माइद्विद्वं होदि ।  
सेसेगखंडा संजदासंजदा होति ।

अप्पाबहुअं तिबिहं सत्थाणं परत्थाणं सब्बपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणे भण-  
माणे तिरिक्खमिच्छाइद्वीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो धुवरासिस्स बहुचुवलंभादो ।  
सासणादीणं सत्थाणमोवं । पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइद्वीणं सत्थाणप्पाबहुअं वुच्चेदि ।  
सब्बत्वोवो पंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइद्विअवहारकालो । तस्सेव विक्खंभइइ असंखेज्जगुणा ।  
को गुणगारो ? सगविक्खंभइइए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— तिर्थच राशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे  
बहुखंडप्रमाण एकेन्द्रिय और विक्खलेन्द्रिय जीव हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्थच लब्धपर्याप्तक जीव हैं । शेषके संख्यात खंड करने  
पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्थच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेषके असंख्यात  
खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्थच योनिमती मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेषके  
असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्थच तीन वेदवाले असंयतसम्यग्दृष्टि-  
योंका द्रव्य है । शेषके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्थच तीन  
वेदवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य है । शेषके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग  
पंचेन्द्रिय तिर्थच तीन वेदवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । शेष एक खंडप्रमाण  
पंचेन्द्रिय तिर्थच तीन वेदवाले संयतसंयत हैं ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और  
सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करने पर तिर्थच मिथ्या-  
दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, तिर्थच मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे  
धुवराशिका प्रमाण बड़ा है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य  
प्ररूपणाके समान है । अब पंचेन्द्रिय तिर्थच मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व बतलाते  
हैं— पंचेन्द्रिय तिर्थच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सबसे थोड़ा है । उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्थच  
मिथ्यादृष्टियोंकी विक्खंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्खंभसूचीका  
असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा,

अहवा सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेठिपढमवग्गमूलाणि । को पडि-  
भागो ? सगअवहारकालवग्गो । अहवा असंखेज्जाणि घणं गुलाणि । केचियमेत्ताणि ?  
सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सग-  
अवहारकालो । द्व्यमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंमसूहं । पदरमसंखेज्जगुणं ।  
को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । एवं  
चेव पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठीणं पि । नवरि जम्हि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदि-  
भागमेत्ताणि घणांगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति  
वत्तव्वं । एवं चेव पंचिदियतिरिक्खजोगिणीमिच्छाइट्ठीणं हि । नवरि जम्हि सूचि-  
अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वुत्तं तम्हि संखेज्जसूचिअंगुलमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं ।  
पंचिदियतिरिक्खापज्जत्तसत्थाणप्पावहुगं पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिसत्थाणमंगो ।  
पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिदियतिरिक्खजोगिणीगुणपडिवण्णाणं सत्थाणं तिरिक्खगुण-  
पडिवण्णसत्थाणमंगो ।

परत्थाणे पयदं । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालादो जाव पलिदोवमेत्ति

जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण  
है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, असंख्यात घनांगुल  
गुणकार है । वे कितने हैं ? सूर्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र हैं । विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी  
असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे पंचेन्द्रिय  
तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार  
है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?  
अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?  
जगश्रेणी गुणकार है । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान  
अल्पबहुत्व कहना चाहिये । पर इतना विशेष है कि जहां पर सूर्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र  
घनांगुल होते हैं ऐसा कहा है वहां पर सूर्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा  
कहना चाहिये । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका भी स्वस्थान  
अल्पबहुत्व होता है । इतना विशेष है कि जहां पर सूर्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल होते  
हैं ऐसा कहा है वहां पर संख्यात सूर्यंगुलमात्र घनांगुल होते हैं ऐसा कहना चाहिये । पंचेन्द्रिय  
तिर्यंच अपर्याप्तोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान  
अल्पबहुत्वके समान है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती गुणस्थान-  
प्रतिपक्ष जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व तिर्यंच गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके  
समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे

ओघपरत्थाणभंगो । तदो मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । को गुणगारो ? तिरिक्ख-  
मिच्छाइट्ठिणुंसगसंखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खेसु असंजदस्स अवहारकालादो जाव  
पलिदोवमेत्ति ओघपरत्थाणभंगो । तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को  
गुणगारो ? पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि स्रचिअंगुलाणि स्रचिअंगुलस्स  
असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? असंखेज्जाणि पलिदोवमाणि । उवरि सत्थाण-  
भंगो । एवं पंचिदियतिरिक्खपज्जत्ताणं पि वत्तवं । णवरि जम्हि असंखेज्जाणि  
पलिदोवमाणि चि बुत्तं तम्हि संखेज्जाणि पलिदोवमाणि चि वत्तवं । एवं जोणिणीणं  
पि । णवरि जम्हि संखेज्जाणि पलिदोवमाणि चि बुत्तं तम्हि पलिदोवमस्स संखेज्जदि-  
भागो । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तपरत्थाणं सगसत्थाणतुल्लं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं जाव  
पलिदोवमेत्ति गेयवं । तदो पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।  
को गुणगारो । पुव्वभणिदो । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ  
केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदएयखंडमेत्तेण । पंचिदियतिरिक्ख-

लेकर पल्योपमतक ओघ परस्थान अल्पबहुत्वके कथनके समान कथन जानना चाहिये ।  
पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? तिर्यंच मिथ्यादृष्टि ननुसक-  
वेदियोंका संख्यातत्वां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें असंयतोंके अवहारकालसे लेकर  
पल्योपमतक ओघ परस्थानके कथनके समान कथन जानना चाहिये । पल्योपमसे मिथ्यादृष्टि  
अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? प्रतरांगुलका असंख्यातत्वां भाग गुणकार  
है जो सूर्यगुलके असंख्यातत्वे भागमात्र असंख्यात सूर्यगुलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या  
है ? असंख्यात पल्योपमोंका प्रमाण प्रतिभाग है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान  
कथन जानना चाहिये । इसीप्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तोंके अल्पबहुत्वका भी कथन करना  
चाहिये । इतना विशेष है कि जहां पर असंख्यात पल्योपम हैं ऐसा कहा है वहां पर संख्यात  
पल्योपम हैं ऐसा कथन करना चाहिये । इसीप्रकार योनिमतियोंके अल्पबहुत्वका भी कथन  
करना चाहिये । इतना विशेष है कि जहां पर संख्यात पल्योपम हैं ऐसा कहा है वहां पर  
पल्योपमका संख्यातत्वां भाग है ऐसा कथन करना चाहिये । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका  
परस्थान अल्पबहुत्व अपने स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है— असंयतसम्यग्दृष्टियोंका  
अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे  
पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पूर्व कथित  
प्रतरांगुलका असंख्यातत्वां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे  
पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितने मात्र विशेषसे अधिक है ?  
पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातत्वे भागसे खंडित करके

पज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खजोगिणीमिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुव्वभणिदो । पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइडिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइडिविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण विसेसो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । पंचिदियतिरिक्खजोगिणीमिच्छाइडिद्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइडिपज्जत्तद्वयं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तद्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जभागो । पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइडि-

जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है ? गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । उन्हीं पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करने पर जितना लब्ध आवे तन्मात्र अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे जगध्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगध्रेणीसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि पर्याप्तोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य

द्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागेखंडिदमेत्तेण । पदरम-  
संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ?  
सेदी । तिरिक्खमिच्छाइडिदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो  
सिद्धेहि वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स असंखेज्जदिभागो ।

मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइदी दव्वपमाणेण केवडिया,  
असंखेज्जा ॥ ४० ॥

एत्थ मणुसगइगहणेण सेसगइपडिसेहो कदो । मणुस्सेसु चि वयणेण तत्थ ड्ढि-  
सेसजीवादिदव्वपडिसेहो कओ । मिच्छाइडि चि वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो ।  
खेत्त-कालपमाणबुदासट्ठं दव्वगहणं । सुत्तस्स पमाणपरूवणट्ठं केवडियगहणं । संखेज्जाणंताणं  
बुदासट्ठं असंखेज्जगहणं । अइधूलपरूवणं परूविय सुहुमट्ठपरूवणट्ठं उत्तरसुत्तं भणदि—

विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंके द्रव्यको आचलीके  
असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्रसे अधिक है ।  
पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?  
पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है ।  
गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । लोकसे तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य अनन्तगुणा है । गुणकार  
क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा या भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त  
बहुभागोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।

मनुष्यगतिप्रतिपन्न मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्य प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?  
असंख्यात हैं ॥ ४० ॥

इस सूत्रमें 'मनुष्यगति' इस पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध कर दिया  
गया है । 'मनुष्योंमें' इसप्रकारके वचनसे वहां पर स्थित शेष जीवादि द्रव्योंका प्रतिषेध  
कर दिया है । 'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे शेष गुणस्थानोंका प्रतिषेध कर दिया है । क्षेत्रप्रमाण  
और कालप्रमाणका निराकरण करनेके लिये द्रव्य पदका ग्रहण किया है । सूत्रकी प्रमाणताका  
प्ररूपण करनेके लिये 'कितने हैं' इस पदका ग्रहण किया है । संख्यात और अनन्तका  
निराकरण करनेके लिये असंख्यात पदका ग्रहण किया है । अब अतिस्थूल प्ररूपणाका प्ररूपण  
करके सूक्ष्म प्ररूपणाका प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

१ प्रतिषु '—भाए' इति पाठः ।

२ असंखिज्जा मणुस्सा । अणु. सू. १४१ पृ. १७९.



असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति-  
कालेण ॥ ४१ ॥

द्व्यपमाणमवेक्खिय कालपमाणस्स महचोवलंभादो असंखेज्जासंखेज्जदिओस-  
प्पिणि-उस्सप्पिणिविसेससंखापरूवणादो वा कालपमाणस्स सुहुमत्तणं वत्तव्वं । सेसपरूवणा  
पुव्वं व परूवेयव्वा ।

खेत्तेण सेटीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेटीए आयामो  
असंखेज्जदिजोयणकोडीओ । मणुसमिच्छाहट्ठाहि रूवा पक्खित्तएहि  
सेटी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेणं ॥ ४२ ॥

सेटीए असंखेज्जदिभागो इदि सामण्यवयणेण संखेज्जजोयणप्पहुडि हेट्ठिमसंखा-  
वियप्पाणं सव्वेसिं गहणे संपत्ते तप्पडिसेहट्ठं असंखेज्जजोयणकोडीओं चि बुत्तं । तिस्से  
सेटीए असंखेज्जदिभागस्स सेटीए पंतीए आयामो दीहत्तणमिदि संबंधेयव्वं । असंखेज्जदि-

कालकी अपेक्षा मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों  
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ४१ ॥

द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कालप्रमाणकी महत्ता पाई जानेके कारण अथवा, कालप्रमाण  
असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीरूप विशेष संख्याका प्ररूपण करनेवाला होनेसे  
उसकी (कालप्रमाणकी) सूक्ष्मताका कथन करना चाहिये । शेष प्ररूपणका कथन पहलेके  
समान करना चाहिये ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव-  
राशि है । उस श्रेणीका आयाम (अर्थात् जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका  
आयाम) असंख्यात करोड़ योजन है । सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलको सूर्यगुलके  
तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक  
(अर्थात् एकाधिक तेरह गुणस्थानवर्ती राशिसे अधिक) मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिसे द्वारा  
जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ४२ ॥

स्वप्नमें 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण' इसप्रकार सामान्य चचन देनेसे संख्यात  
योजन आदि अधस्तन संपूर्ण संख्याका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके  
लिये 'असंख्यात करोड़ योजन' पदका ग्रहण किया । स्वप्नमें अथि हुए 'उस श्रेणीका आयाम'  
इस पदसे उस श्रेणीके असंख्यातवें भागकी पंक्तिका आयाम अर्थात् दीर्घता देखा संबन्ध

१ मनुष्यगतौ मनुष्या मिथ्यादृष्टयः श्रेण्यसंख्येयभागप्रमिताः । स चासंख्येयभागः असंख्येया योजन-  
कीदृशः । स. सि. १, ८. सेटी एवं अंगुलवादिमतदियपदमाजिदेण्णा । सामण्यमणुसरासी । गो. जी. १५७.  
उपकोसपप मणुया सेटी रूवाहिया अवहरंति । तद्वयमूलाहट्ठि अंगुलमूलप्पसेहि । पञ्च. १, २५.



जोयणकोडीओ चि वयणे पदरंगुल-वर्णगुलादीणं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्टं अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेणेत्ति' वयणं । अंगुलवग्गमूलमिदि वुत्ते सच्चिअंगुलपढमवग्गमूलं गहेयच्चं । तदियवग्गमूलमिदि वुत्ते सच्चिअंगुलतदियवग्गमूलस्स गहणं । कुदो ? सच्चिअंगुलसहचारादो अणुवट्ठणादो वा । सच्चिअंगुलतदियवग्गमूलेण तस्सेव पढमवग्गमूलं गुणिदे मणुसमिच्छाइट्ठीण अवहारकालो होदि । अहवा सच्चिअंगुलविदियवग्गमूलेण तदियवग्गमूलं गुणिय सच्चिअंगुले भागे हिदे मणुसमिच्छाइट्ठीअवहारकालो आगच्छदि । तस्स खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण वचच्चाणि । तस्स पमाणं सच्चिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सच्चिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । तं जहा-सच्चिअंगुलपढमवग्गमूलेण सच्चिअंगुले भागे हिदे पढमवग्गमूलमेव लभामहे । विदियवग्गमूलेण सच्चिअंगुले भागे हिदे विदियवग्गमूलमिह जत्तियाणि रूवाणि तत्तियाणि पढमवग्गमूलाणि लभंति । विदिय-तदियवग्गमूलमणोणवमत्थं करिय सच्चिअंगुले भागे हिदे असंखेज्जाणि सच्चिअंगुलपढमवग्गमूलाणि लभंति चि ण संदेहो । तस्स निरुत्ती तदियवग्गमूलेण

करना चाहिये । 'असंख्यात करोडु योजन' इसप्रकारका वचन रहने पर प्रतरांगुल और घनांगुल आदिका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उसका प्रतिषेध करनेके लिये सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल तृतीय वर्गमूलसे गुणित' इसप्रकारका वचन दिया है । यहां पर 'अंगुलका वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका ग्रहण करना चाहिये । 'तृतीय वर्गमूल' ऐसा कथन करने पर उससे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलका ग्रहण करना चाहिये । क्योंकि, यहां पर सूच्यंगुलका साहचर्य संबन्ध है । अथवा, ऊपरसे उसीकी अनुवृत्ति है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे उसी सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । अथवा, सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका सूच्यंगुलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आता है । इस अवहारकालके खंडित, भाजित, विरलित और अपहृतको जानकर उनका कथन करना चाहिये । उस मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालका प्रमाण सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागप्रमाण है जो सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल ही प्राप्त होता है । सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलमें जितनी संख्या हो उतने सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं । इसीप्रकार सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूल लब्ध आते हैं, इसमें संदेह नहीं । उसी मनुष्य मिथ्यादृष्टि

विदियवग्गमूले भागे हिदे लद्धस्स जच्चियाणि रूवाणि तच्चियाणि पढमवग्गमूलाणि ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वत्तइस्सामो । विदिय-तदियवग्गमूले अण्णोण्णगुणे करिय पढमवग्गमूले भागे हिदे लद्धेण तं चेव गुणिदे अवहारकालो होदि । अहवा वेरूवे हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, सूचिअंगुल-पढमवग्गमूलादो अवहारकालस्स बहुत्तादो । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । सूचिअंगुलविदिय-वग्गमूलगुणितदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूलं गुणेऊण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो होदि । तं जहा—सूचिअंगुलपढमवग्गमूलेण घणंगुलपढमवग्गमूले भागे हिदे सूचिअंगुलमागच्छदि । विदियवग्गमूलगुणितदियवग्गमूलेण सूचिअंगुले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । विदियवग्गमूलगुणितदियवग्गमूलेण अंगुलवग्गमूलं गुणेऊण तेण घणंगुलविदियवग्गमूलं गुणिय घणाघणंगुलविदियवग्गमूले भागे हिदे अवहारकालो आगच्छदि । तं जहा—घणंगुलविदियवग्गमूलेण घणाघणंगुल-

अवहारकालकी निरुक्ति इसप्रकार है—सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर लब्ध राशिका जितना प्रमाण हो उतने सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—सूच्यंगुलके दूसरे और तीसरे वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर जो लब्ध आया उससे उसी सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलके गुणित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । अथवा, यहां द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प नहीं बनता है, क्योंकि, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल बहुत बड़ा है ।

अब अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके लब्ध राशिका घनांगुलके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । जैसे, सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर सूच्यंगुल आता है । पुनः सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्प बतलाते हैं—सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलसे सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलको गुणित करके आई हुई लब्ध राशिसे घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । जैसे, घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलसे घनाघनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके भाजित करने पर

विदियवर्गमूलें भागे हिंदे घणंगुलपढमवर्गमूलमागच्छदि । पुणो स्रचिअंगुलपढम-  
वर्गमूलेण ( घणंगुलपढमवर्गमूलें ) भागे हिंदे स्रचिअंगुलमागच्छदि । पुणो अणोण-  
गुणिद्विदिय-तदियवर्गमूलेण ( स्रचिअंगुलें ) भागे हिंदे अवहारकालो आगच्छदि ।

गहिदादिभेएण उवरिमवियप्पो तिविहो । तत्थ गहिंदं वत्तइस्सामो । तेणेव  
भागहारेण स्रचिअंगुलं गुणिय पदरंगुले भागे हिंदे मणुसमिच्छाइडिअवहार-  
कालो आगच्छदि । तं जहा- स्रचिअंगुलेण पदरंगुले भागे हिंदे स्रचिअंगुल-  
मागच्छदि । पुणो पुच्चभागहारेण स्रचिअंगुले भागे हिंदे अवहारकालो आगच्छदि ।  
अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । स्रचिअंगुलविदिय-तदियवर्गमूलं अणोणं गुणिय तेण पदरंगुलं  
गुणिय घणंगुले भागे हिंदे मणुस्सअवहारकालो आगच्छदि । एसो मज्झिमवियप्पे किण  
पददि त्ति वुत्ते ण, स्रचिअंगुलादो अहियरासिमवलंबिय उप्पाइज्जमाणे उवरिमवियप्पत्तं  
पडि विरोहाभावादो । घणाघणे वत्तइस्सामो । विदिय-तदियवर्गमूलेहि पदरंगुलं गुणिय  
तेण घणंगुलउवरिमवर्गं गुणिय तेण घणाघणंगुले भागे हिंदे मणुसमिच्छाइडिअवहारकालो

घनांगुलका प्रथम वर्गमूल आता है । पुनः सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे घनांगुलके प्रथम  
वर्गमूलके भाजित करने पर सूर्यगुल आता है । पुनः सूर्यगुलके दूसरे और तीसरे वर्ग-  
मूलका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे सूर्यगुलके भाजित करने पर मनुष्य  
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे गृहीत उपरिम  
विकल्पको बतलाते हैं— उसी भागद्वारसे अर्थात् सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूल गुणित तृतीय  
वर्गमूलसे सूर्यगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलके भाजित करने पर  
मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । जैसे, सूर्यगुलसे प्रतरांगुलके भाजित करने पर  
सूर्यगुल आता है । पुनः पूर्वोक्त भागद्वारसे अर्थात् सूर्यगुलके द्वितीय वर्गमूल गुणित तृतीय  
वर्गमूलसे सूर्यगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— सूर्यगुलके दूसरे और तीसरे  
वर्गमूलको परस्पर गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरांगुलको गुणित करके आई हुई  
लब्ध राशिसे घनांगुलके भाजित करने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है ।

शंका— प्रस्तुत विकल्प मध्यम विकल्पमें समाविष्ट क्यों नहीं होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सूर्यगुलसे बड़ी राशिका अवलम्बन करके मनुष्य मिथ्या-  
दृष्टि अवहारकालके उत्पन्न करने पर इसे उपरिम विकल्पके होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— परस्पर गुणित सूर्यगुलके  
दूसरे और तीसरे वर्गमूलसे प्रतरांगुलको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे घनांगुलके  
उपरिम वर्गको गुणित करके लब्ध राशिका घनाघनांगुलमें भाग देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि अव-

आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते घणाघर्णगुलस्स अद्वच्छेदणए कदे वि मणुसमिच्छाद्विअवहारकालो आगच्छदि । सच्चिअंगुल-घर्णगुलपदमवगमूल-घणाघर्णगुल-विदियवगममूलणं असंखेज्जदिभाएण भागहारेण गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च सहेयव्वो । एदेण भागहारेण जगसेठिमिह भागे हिदे रूवाहिओ मणुसरासी आगच्छदि । तं कथं जाणिज्जदि चि वुत्ते 'मणुसगईए मणुसेदि रूवं पक्खित्तएहि सेठी अवहिरदि अंगुलवगममूलं तदियवगममूलगुणिदेण' इदि खुहावंधसुत्तादो । एत्थ रासी दुविहा भवदि, ओजं जुम्मं चेदि । ओजं दुविहं, तेजो जं कलिओजं चेदि । तं जहा—जम्हि रासिमिह चदुहि अवहिरिज्जमाणे तिणिणं ट्ठांति सो तेजो जं । चदुहि अवहिरिज्जमाणे जम्हि एगं ट्ठादि तं कलिओजं । जुम्मं दुविहं, कदजुम्मं बादरजुम्मं चेदि । तं जहा—चदुहि अवहिरिज्जमाणे जम्हि रासिमिह चचारि ट्ठांति तं कदजुम्मं । जम्हि रासिमिह दोणिणं ट्ठांति तं बादरजुम्मं । जम्हा मणुसरासी तेजो जं तम्हा लद्धमिह कदजुम्ममिह एगरूवमवणेयव्वं । अवसेसिद-

हारकाल आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशि घना-घनांगुलके अर्धच्छेद करने पर भी मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है । सूर्यगुलके असंख्यातवें भागरूप, घनांगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप और घनाघर्णांगुलके द्वितीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागरूप भागहारसे गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारकी साथ लेना चाहिये ।

उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर एक अधिक मनुष्यराशि आती है । यह कैसे जाना जाता है, ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि 'मनुष्यगतिमें सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलसे सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकाराशि करके एक अधिक मनुष्य जीवोंके द्वारा जगश्रेणीं अपहृत होती है, अर्थात् एक अधिक मनुष्यराशिकी जगश्रेणीमेंसे घटाते जाना चाहिये और शलाकाराशिमेंसे उत्तरोत्तर एक कम करते जाना चाहिये । इसप्रकार करनेसे शलाकाराशिसे साथ जगश्रेणी समाप्त हो जाती है' । इस सुहाय्यके सूत्रसे जाना जाता है कि उक्त भागहारसे जगश्रेणीके अपहृत करने पर एक अधिक मनुष्य राशि लब्ध आती है ।

राशि दो प्रकारकी है, ओजराशि और युग्मराशि । उनमेंसे ओजराशि दो प्रकारकी है, तेजो जं और कलिओज । आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं—जिस राशिकी बारसे भाजित करने पर तीन शेष रहते हैं वह तेजो जराशि है । जिस राशिकी बारसे भाजित करने पर एक शेष रहता है वह कलिओजराशि है । युग्मराशि दो प्रकारकी है, कृतयुग्म और बाह्ययुग्म । आगे उसी युग्मराशिसे भेदोंका स्पष्टीकरण करते हैं—जिस राशिकी बारसे भाजित करने पर बार शेष रहते हैं अर्थात् जिसमें चारका पूरा भाग जाता है वह कृतयुग्म-राशि है । तथा बारसे भाजित करने पर जिस राशिमें दो शेष रहते हैं वह बाह्ययुग्मराशि है । प्रकृतमें क्योंकि मनुष्यराशि तेजो जरूप है, इसलिये जगश्रेणीमें सूर्यगुलके प्रथम

मणुसरासिपरूवणादो जुत्तं खुदाबंघमिह भागलद्धादो एयरूवस्स अवणयणं, एत्थ पुण जीवद्वान्मिह मिच्छत्तविसेसिदजीवपमाणपरूवणे कीरमाणे रूवाहियतेरसगुणद्वान्मेषेण अवणयणरासिणा होदव्वमिदि । तं कथं जाणिज्जेद ? ' मणुसमिच्छाइट्ठीहि रूवा पक्खि-  
त्तएहि सेट्ठी अवहिरिज्जदि ' ति सुत्तमिह रूवा इदि बहुवयणणिदेसादो । अहवा रूवपक्खि-  
त्तएहि ति बहुवीहिसमासेण लक्खणविसेसेण कयपुव्वणिवाएण अवणिदव्वहुवयणादो  
बहुचोवलद्धी होज्ज । रूवं पक्खित्तएहि ति एगवयणमपि कहिं दिस्सदे तो वि ण दोसो,  
बहूणं जीवाणं जादिदुवारेण एयत्तदंसणादो । का एत्थ जाई णाम ? चेदणादिसमाण-  
परिणामो । तदो भागलद्धादो रूवाहियतेरसगुणद्वान्पमाणे अवणिदे मणुसमिच्छाइट्ठी-

और तृतीय वर्गमूलके गुणनफलरूप भागहारका भाग देनेसे जो राशि लब्ध आयगी वह  
कृतयुग्मरूप होनेसे उसमेंसे एक कम कर देना चाहिये ।

खुदाबंघमें मिथ्यादृष्टि इत्यादि विशेषणसे रहित सामान्य मनुष्यराशिका प्ररूपण  
होनेसे वहां पर सूर्यगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलोंके परस्पर गुणफलरूप भागहारका  
जगश्रेणीमें भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसमेंसे एक संख्याका कम करना युक्त है । परंतु  
यहां जीवस्थानमें तो मिथ्यात्व विशेषणसे युक्त जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण किया गया  
है, अतएव मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि लानेके लिये उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर  
जो लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि अपनयनराशि होना चाहिये ।  
शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'रूपाधिक मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा जगश्रेणी अपहृत  
होती है ' इस सूत्रमें 'रूपा' यह बहुवचन निर्देश पाया जाता है, जिससे जाना जाता है कि  
यहां पर उक्त भागहारसे जगश्रेणीके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसमेंसे एक अधिक  
तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशि अपनयनराशि है । अथवा, 'रूवपक्खित्तएहि' इस पदमें नियम-  
विशेषसे जिसमें पूर्वनिपात हो गया है ऐसा बहुव्रीहि समास होनेके कारण रूप पदके बहु-  
वचनसे रहित होनेके कारण भी उससे बहुत्वकी उपलब्धि हो जाती है । कहीं पर 'रूवं  
पक्खित्तएहि' इसप्रकार एकवचन भी कहीं देखा जाता है, तो भी कोई दोष नहीं आता है, क्योंकि,  
बहुत जीवोंका जातिद्वारा एकत्व देखनेमें आता है ।

शंका—यहां पर जातिसे क्या अर्थ अभिप्रेत है ?

समाधान—यहां पर चेतना आदि समान परिणाम जातिसे अभिप्रेत है ।

इसलिये उक्त भागहारका जगश्रेणीमें भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे उसमेंसे एक  
अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिके प्रमाणके कम कर देने पर मनुष्य मिथ्यादृष्टि

१ ' जालास्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम् ' १. २, ५८. पाणिनि । एकोऽप्यर्थो वा बहुत्ववद  
मपि । इति ।

रासी होदि चि सिद्धं । एदस्स खंडिदादओ विदियपुढविमिच्छाइट्ठणिं जहा बुत्ता तहा वत्तवा । णवरि एत्थ अंगुलवग्गमूलेण तदियवग्गमूलं गुणिदे अवहारकालो होदि । सव्वत्थ रूवाहियेत्तरसगुणट्ठाणपमाणमवणेयव्वं ।

**सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति दन्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ४३ ॥**

एत्थ पहुडिसहो आदिसहत्थे वट्ठदे । तेण सासणसम्माइट्ठिमादिं करिय जाव संजदासंजदा एदसु गुणट्ठाणेषु मणुसरासी संखेज्जा चेव होदि चि जं बुत्तं होदि । संखेज्जा इदि सामणेण बुत्ते वावण्णकोडिमेत्ता सासणसम्माइट्ठिणो हवन्ति । तत्तो दुगुणा सम्मामिच्छाइट्ठिणो हवन्ति । सत्तस्यकोडिमेत्ता असंजदसम्माइट्ठिणो हवन्ति । संजदा-

जीवराशिका प्रमाण होता है, यह सिद्ध हो गया ।

**विशेषार्थ—**सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलका परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका जगश्रेणीमें भाग देने पर एक अधिक सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है । अतएव लब्धमें एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण हाता है । परंतु प्रकृतमें मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशि लाना है, अतएव उक्त सामान्य मनुष्यराशिमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशिके प्रमाणको और कम कर देना चाहिये, तब मिथ्यादृष्टि मनुष्यराशिका प्रमाण होगा ।

जिसप्रकार दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिका कथन कर आये हैं उसीप्रकार इस मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवराशिके खंडित आदिकका कथन करना चाहिये । इतना विशेष है, कि यहां पर सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे तृतीय वर्गमूलके गुणित करने पर अवहारकालका प्रमाण होता है । तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण लानेके लिये सर्वत्र एक अधिक तेरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण घटा देना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४३ ॥

यहां पर प्रभृति शब्द आदि शब्दके अर्थमें आया है, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टिसे प्रारंभ करके संयतासंयत गुणस्थानतक इन चार गुणस्थानोंमें प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात ही होती है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदि चार गुणस्थानोंमेंसे प्रत्येक गुणस्थानवर्ती मनुष्यराशि संख्यात है, ऐसा सामान्यरूपसे कथन करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य बावन करोड़ है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे दूने हैं । असेयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सातसौ करोड़ प्रमाण हैं । संयतासंयतोंका प्रमाण तेरह

१ सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयः संयतासंयतात्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

२ प्रतिपु अतः परं ' तत्तो दुगुणा सम्माइट्ठिणो हवन्ति ' इत्यधिकः पाठः ।

संज्ञासंग्रहम् पमाणं तेरहकोडीओ। के वि आइरिया सासनसम्माइड्ढीणं पमाणं पण्णारस कोडीओ हवन्ति सम्मामिच्छाइड्ढिपमाणं तत्तो दुगुणमिदि भणन्ति। पुण्विल्लपमाणमेत्थ वेत्तव्वं। किं कारणं? आइरियपरंपरागदादो। वुत्तं च—

तेरह कोडी देसे बावणं सासणे तु गेयव्वा।

मिस्से वि य तद्दुगुणा असंजदे सत्तकोडिसया' ॥ ६८ ॥

अहवा—

तेरह कोडी देसे पण्णासं सासणे सुणेयव्वा।

मिस्से वि य तद्दुगुणा असंजदे सत्तकोडिसया ॥ ६९ ॥

**पमत्तसंजदप्पहाडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओधं ॥ ४४ ॥**

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परुविदो त्ति इह ण वुच्चे। कुदो? मणुसगदि-  
वदिरित्तसेसगईसु पमत्तादिगुणट्ठाणाणमसंभवादो। मणुपेसु पमत्तादीणं ओषपरुवणा चेव।

करोड़ है। कितने ही आचार्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका प्रमाण पचास करोड़ कहते हैं।  
संस्तमिथ्यादृष्टि मनुष्योंका प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे दुना कहते हैं। परंतु  
यहां पर पूर्वोक्त प्रमाणका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, पूर्वोक्त प्रमाण आचार्य परंपरासे  
आया हुआ है। कहा भी है—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें बावन करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे  
दूने और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य जानना चाहिये ॥ ६८ ॥

अथवा—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें पचास करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे  
दूने और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य जानना चाहिये ॥ ६९ ॥

**प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें  
मनुष्य सामान्य प्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ ४४ ॥**

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये हैं, इसलिये यहां नहीं कहा जाता है, क्योंकि, मनुष्य-  
गतिको छोड़कर शेष तीन गतियोंमें प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानोंका होना असंभव है। अतः  
मनुष्योंमें प्रमत्तसंयत आदिका प्रमाणप्ररूपण सामान्य प्ररूपणाके समान ही है।

१ गो. जी. ६४२. स. वि. १, ८, टि.।

२ प्रतिपु 'तद्वणा' इति पाठः।

३ प्रमत्तादीनां सामान्योक्ता संख्या। स. वि. १, ८.



मणुसपज्जत्तेसु मिच्छाद्वी दव्वपमाणेण केवडिया, कोडा-  
कोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेड्डो छण्हं वग्गाण-  
मुवरि सत्तण्हं वग्गाणं हेड्डो ॥ ४५ ॥

छट्टवग्गस्स उवरि सत्तमवग्गस्स हेड्डो चि वुत्ते अत्थवत्ती ण जादेत्ति अत्थवत्ती-  
करण्हं कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेड्डो चि वुत्तं । एदस्स मणुस-  
पज्जत्तमिच्छाद्विरासिस्स पमाणपरूवणमाहरियोवएत्तेण वुच्चदे । वेरूवस्स पंचमवग्गेण  
छट्टमवग्गं गुणिदे मणुसपज्जत्तरासी होदि । सत्तमवग्गे सत्तेज्जखंडे कए एगखंडे  
मणुसपज्जत्तरासी होदि । खंडिदं गदं । पंचमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे मणुसपज्जत्त-  
रासी होदि । भाजिदं गदं । विरलिदं अवहिदं च चितिय वत्तत्वं । पमाणं सत्तमवग्गस्स

मनुष्य पर्याप्तोमं मिथ्यादृष्टि मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?  
कोडाकोडाकोडिके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडिके नीचे छह वर्गोंके ऊपर और सात  
वर्गोंके नीचे अर्थात् छठवें और सातवें वर्गके बीचकी संख्याप्रमाण मनुष्यपर्याप्त  
होते हैं ॥ ४५ ॥

' छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके नीचे ' ऐसा कहने पर अर्थकी प्रतिपत्ति नहीं  
होती है, इसलिये अर्थकी प्रतिपत्ति करनेके लिये 'कोडाकोडाकोडिके ऊपर और कोडाकोडाकोडा-  
कोडिके नीचे ' ऐसा कहा । अब इस मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिके प्रमाणका प्ररूपण  
अन्य आध्यायोंके उपदेशानुसार कहते हैं—

द्विरूपके पांचवें वर्गसे उसीके छठवें वर्गके गुणित करने पर मनुष्य पर्याप्त राशि  
होती है । द्विरूपके सातवें वर्गके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण मनुष्य पर्याप्त  
राशि होती है । इसप्रकार खंडितका कथन समाप्त हुआ । द्विरूपके पांचवें वर्गसे उसीके  
सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्य पर्याप्त राशि होती है । इसप्रकार भाजितका वर्णन  
समाप्त हुआ । इसीप्रकार विचार कर विरलित और अपहृतका कथन कर लेना चाहिये । मनुष्य

१ एकं दस सयं सहरसं दससहरं लवणं दहलवणं कोडिं दहकोडिं कोडिसयं कोडिसहरसं दसकोडिसहरसं  
कोडिलवणं दहकोडिलवणं कोडाकोडी दहकोडाकोडी कोडाकोडिसयं कोडाकोडिसहरसं दहकोडाकोडिसहरसं कोडा-  
कोडिलवणं दहकोडाकोडिलवणं कोडाकोडिकोडी दहकोडाकोडिकोडी कोडाकोडिकोडिसयं कोडाकोडिकोडिसहरसं  
दहकोडाकोडिकोडिसहरसं कोडाकोडिकोडिलवणं दहकोडाकोडिकोडिलवणं कोडाकोडिकोडिकोडा इत्यादि कवाचनप्रकारः ।  
लो. म. सर्ग ७, पत्र १०८.

२ सामण्यमणुसरासी पंचमकदिव्यपमसा पुण्या ॥ गो. जी. १५७. सर्वज्ञानं मनुष्याणामथ नानं निरूप्यते ।  
एकोनविंशता वैस्ते मिता जवन्त्यतोऽपि हि ॥ लो. म. सर्ग ७, पत्र १०७. संस्था च तेषां जवन्त्यतोऽपि पंचमवर्ग-  
श्रुतिप्रवृत्त्यवस्था प्रवृत्त्या ॥—अयं च साक्षिको न विदं कथानो न कोटाकोट्यादिप्रकरणे प्रमाणं कथमपि सत्यम् ।  
×× एव च राशिः पूर्वस्मिन्मिथ्यामलपदादूर्ध्वं चतुर्थमलपदस्यावस्थादित्युपपन्नैते । पत्रसं. २, २१ टीका.



संखेजदिभागो संखेजजाणि छट्टवग्गाणि । तं जहा- छट्टमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे  
छट्टवग्गो आगच्छदि । पंचमवग्गेण सत्तमवग्गे भागे हिदे संखेजा छट्टवग्गा आगच्छंति ।  
कारणं गंदं । गिरुत्ती वियप्पो य चित्ति य वत्तव्वो । एदम्हादो मणुसपज्जत्तरासीदो—

तेरस कोडी देसे वावण्णं सासणे मुण्येव्वा ।

मिस्से वि य तद्दुग्गा असंजदे सत्तकोडिसया ॥ ७० ॥

एदीए गाहाए वुत्तगुणपडिवण्णरासीओ एयत्तं करिय पमत्तादि-णव-संजदरासिं  
च तत्थेव पक्खिविय अवणिदे मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्टिरासी होदि ।

पंचमवग्गं चट्टुहि रूवेहि गुणिदे दुवेदमणुसपज्जत्तव्रवहारकाओ होदि । तेण सत्तम-  
वग्गे भागे हिदे मणुसपज्जत्तदुवेदरासी आगच्छदि । मणुसपज्जत्ता वायालवग्गस्स वण-

पर्याप्त मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण द्विरूपके सातवें वर्गका संख्यातवां भाग है जो संख्यात छठवें  
वर्गप्रमाण है । आगे उसीका स्पर्धीकरण करते हैं— द्विरूपके छठवें वर्गका उसीके सातवें वर्गमें  
भाग देने पर छठवां वर्ग आता है । पांचवें वर्गसे सातवें वर्गके भाजित करने पर संख्यात छठवें  
वर्ग आते हैं । इसप्रकार कारणका वर्णन समाप्त हुआ । निरुक्ति और विकल्पका विचार कर  
कथन करना चाहिये । इस मनुष्य पर्याप्त राशि में से—

संयतासंयतमें तेरह करोड़, सासादनमें बावन करोड़, मिश्रमें सासादनके प्रमाणसे  
द्वि और असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें सातसौ करोड़ मनुष्य होते हैं ॥ ७० ॥

इस गायिका द्वारा कही गई गुणस्थानप्रतिपक्ष राशिको एकत्रित करके और प्रमत्त-  
संयत आदि नौ संयतराशिको उसी पूर्वोक्त एकत्र की हुई राशिमें मिलाकर जो जोड़ हो उसके  
घटा देने पर मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है ।

द्विरूपके पांचवें वर्गको चारसे गुणित करने पर दो वेदवाले मनुष्य पर्याप्तोंका  
अवहारकाल होता है । उस अवहारकालसे सातवें वर्गके भाजित करने पर मनुष्य पर्याप्त दो  
वेदवाले जीवोंकी राशि आती है ।

विशेषार्थ—किसी भी विवक्षित वर्गात्मक राशिको चारसे गुणित करके लब्धका उस  
वर्गात्मक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस विवक्षित वर्ग राशिके घनका  
चौथा भाग लब्ध आता है । तदनुसार प्रकृतमें द्विरूपके पांचवें वर्गको चारसे गुणित करके  
उसका सातवां वर्गराशिमें भाग देने पर पांचवें वर्गके घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशिका  
चौथा भाग लब्ध आता है । स्त्रीविद्योंको छोड़कर द्विवेदी मनुष्योंका यही प्रमाण है ।

१ प्रतिषु 'अट्टवग्गा' इति पाठः ।

२ चउ अट्ट पंच सत्तु णव य पंचट्ट तिद य अट्ट णवा पि चउकट्टणहारं ऊ लळ पंचट्ट दुग लळ  
पळका । णम सत्त गयण अट्ट णव एक्क पळत्तरासिपरिमाणं ॥ १९८०७०४०६२८५६६०८४३९८३८५९८७५८४.  
ति. प. १९० णव.

मेत्ता चि जं वक्खणे भणिदं जुत्तीए जोइज्जमाणे तं ण घडदे, 'कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेड्डो' चि सुत्तेण सह विरोधत्तादो । तं कथं जाणिज्जदे ? एगुणतीसट्ठणेसु द्विदवायालवगगघणस्स एगुणत्तीसट्ठणेहिंतो ऊणचविरोहादो । किं च जदि वायालवगगघणमेत्तो मणुसपज्जचरासी होज्ज तो माणुसखेत्ते ६१९७०८४६६६८१६-४१६२००००००००० ।\*

गयणट्ठ-गय-कसाया चउसट्ठि-मियंक-वसु-खरा-दग्वा ।

छायाल-वसु-णमाचल-पयत्थ-चंदो रिदू कमसो ॥ ७१ ॥

‘मनुष्य पर्याप्त जीवराशि बादालके घनमात्र है’ यह जो ऊपर व्याख्यान करते समय कह आये हैं, युक्तिले विचार करने पर वह कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, ‘कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके नीचे मनुष्य पर्याप्त राशि है’ इस सूत्रके साथ उक्त कथनका विरोध आता है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—क्योंकि, उनतीस स्थानोंमें स्थित बादालरूप वर्गके घनको उनतीस स्थानोंसे कम अंकरूप माननेमें विरोध आता है ।

विशेषार्थ—ऊपर सूत्रद्वारा पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके नीचे बीचकी कोई संख्या बतलाई जा चुकी है । जब कि एक अंकके ऊपर २१ शून्य रखनेसे बाईस अंकप्रमाण कोड़ाकोड़ाकोड़ी होती है और एक अंकके ऊपर २८ शून्य रखनेसे उनतीस अंकप्रमाण कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ी होती है, तब यह निश्चित हो जाता है कि सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रमाण उनतीस अंकके नीचे और बावीस अंकके ऊपर बीचकी कोई संख्या होना चाहिये । अब यदि द्विरूपके पाँचवें वर्गके घनप्रमाण पर्याप्त मनुष्य राशि मानी जाय तो पूर्वोक्त सूत्रके कथनके साथ इस कथनका विरोध आ जाता है, क्योंकि द्विरूपके पाँचवें वर्गके घनका प्रमाण उनतीस अंकप्रमाण होते हुए भी कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके प्रमाणके ऊपर है, इसलिये द्विरूपके पाँचवें वर्गके घनका प्रमाण उनतीस अंकसे नीचेकी संख्या नहीं हो सकती है । पर सूत्रानुसार पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण उनतीस अंकसे नीचेकी संख्या विवक्षित है, इसलिये ‘पंचमकदिघणसमा पुण्णा’ इत्यादि रूपसे जो पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण पाया जाता है, वह सूत्रानुसार नहीं है, ऐसा प्रतीत होता है ।

दूसरे, यदि बादालरूप वर्गके घनप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि होवे तो वह राशि मनुष्य-क्षेत्रमें ६१९७०८४६६६८१६४१६२०००००००० अर्थात्—

क्रमशः आठ शून्य, नय अर्थात् दस, कपाय अर्थात् सोलह, चौसठ, सृगांक अर्थात् एक,

\* प्रतिष्ठु अद्यानां शून्यानां प्राक् ‘६२’ इति स्थाने केवलं ‘१’ इति पाठः ।

एनियमेत्तपदरंगुलेण सम्माएज्ज । मणुसखेत्तपदरंगुले आणिज्जमाणे—

सत्त णव सुण्ण पंच छह णव चटु एक्कं च पंच सुण्णं च ।

जंबूदीवस्सेदं गणितफलं होदि णादव्वा ॥ ७२ ॥

७९०५६९४१५० एदस्मि तेरसंगुलं च किंचूणअद्धंगुलं च पक्खिविय आणे-  
यव्वं । किंचूणपमाणं—

सत्तसहस्सडसीदेहि खंडिदे पंचवण्णखंडाणि ।

अद्धंगुलस्स हीणं करेह अद्धंगुलं गियदं ॥ ७३ ॥

ई ७३६६ एदाणि जंबूदीवपदरजोयणाणि माणुसखेत्तजंबूदीवसलागाहि दो-समुद्द-  
सलागूणाहि गुणिय पदरंगुलाणि कायव्वाणि ।

आठ, ऋर अर्थात् छह, द्रव्य अर्थात् छह, छयालीस, आठ, शून्य, अचल अर्थात् सात, पदार्थ  
अर्थात् नौ, चन्द्र अर्थात् एक, और ऋतु अर्थात् छह,— ॥ ७१ ॥

इतने प्रतरांगुलोंके द्वारा समा जाना चाहिये । मनुष्यक्षेत्रमें प्रतरांगुलोंके लाने पर—

सात, नौ, शून्य, पांच, छह, नौ, चार, एक, पांच, शून्य, अर्थात् सात अरब नव्वे  
करोड़ छप्पन लाख चौरानव्वे हजार एक सौ पचास योजन, यह जम्बूद्वीपका गणितफल अर्थात्  
क्षेत्रफल है, ऐसा जानना चाहिये ॥ ७२ ॥

७९०५६९४१५० इस संख्यामें तेरह अंगुल और कुछ कम आधा अंगुल मिलाकर  
मनुष्य क्षेत्रके प्रतरांगुल ले आना चाहिये । आधे अंगुलमें कुछ कमका प्रमाण—

अर्धांगुलके पचवन खंडोंको अर्थात् ५<sup>५</sup> को सात हजार अठासीसे खंडित अर्थात्  
भाजित करने पर जो लब्ध आवे उतना हीन अर्धांगुल निश्चित करना चाहिये ॥ ७३ ॥

$$\text{यथा } \frac{1}{2} \times \frac{55}{7000}$$

$$\text{उदाहरण— } \frac{1}{2} - \left( \frac{1}{2} \text{ का } \frac{55}{7000} \right) = \frac{1}{2} - \frac{55}{14000} = \frac{7000 - 55}{14000} = \frac{6945}{14000} \text{ हीन अर्धांगुल.}$$

जम्बूद्वीपसंबन्धी इन प्रतर योजनोंको लवण और कालोद समुद्रकी शलाकाओंसे  
न्यून मनुष्यक्षेत्रकी जम्बूद्वीप प्रमाणसे की गई शलाकाओंके द्वारा गुणित करके पुनः प्रतरांगुल  
कर लेना चाहिये ।

१ जम्बूद्वीपस्य गणितपदं वक्ष्येऽथ तत्त्वतः ॥ ३५ ॥ शतानि सप्तकोट्यानां नवतिः कोटयः पराः ।  
लक्षाणि सप्तपंचाशत् षट्सहस्रोनितानि च ॥ ३६ ॥ सार्द्धं शतं योजनानां पादोनक्रोशयामलम् । षट्षि पंचदश च  
सार्द्धं कद्वयं तथा ॥ ३७ ॥ अंकतोऽपि यो. ७९०५६९४१५० को. १ धनुः १५१५ कर २ अं. १२ लो. प्र. सर्ग  
१५, पत्र. १६५.

**विशेषार्थ—**यद्यपि 'विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिओ होदि' अर्थात् किसी वृत्त क्षेत्रकी परिधि लानेके लिये पहले उस क्षेत्रका जितना विस्तार हो उसका वर्ग कर ले। अनन्तर उस वर्गित राशिको दशसे गुणित करके उसका वर्गमूल निकाल ले। इसप्रकार जो वर्गमूलका प्रमाण होगा वही उस गोल क्षेत्रकी परिधिका प्रमाण होगा। इस नियमके अनुसार एक लाख विस्तारवाले जम्बूद्वीपकी परिधिका प्रमाण तीन लाख सोलह हजार दोसौ सत्ताईस योजन, तीन कोस, एकसौ अट्ठाईस धनुष और साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिक आता है। परंतु धवलकाकारने साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ अधिकके स्थानमें साढ़े तेरह अंगुलसे कुछ कम ग्रहण किया है। उन्होंने कुछ कमका प्रमाण  $\frac{1}{2}$  मेंसे  $\frac{1}{2} \times \frac{5}{16}$  कम बतलाया प्रतीत होता है। यद्यपि इसका निश्चित कारण प्रतीत नहीं होता है, फिर भी इसे ग्रहण करके उक्त परिधिके प्रमाणके ऊपरसे जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल लानेके लिये 'वासचउत्थाहदो दु खेतफलं' अर्थात् परिधिके प्रमाणको व्यासकी चौथाईरूप प्रमाणसे गुणित कर देने पर क्षेत्रफलका प्रमाण होता है, इस नियमके अनुसार पच्चीस हजारसे गुणित कर देने पर जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल आ जाता है। यहां सर्व क्षेत्रफल योजनोंमें लानेके लिये यथायोग्य प्रक्रिया कर लेना चाहिये। अब यहां पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलको छोड़कर जम्बूद्वीप, घातकीखंडद्वीप और पुष्करार्धद्वीपका सम्मिलित क्षेत्रफल लाना है, अतएव 'बाहिरसूरिवग्गं' इत्यादि करणसूत्रसे दार्द्र द्वीपके जम्बूद्वीपप्रमाण खंड लाने पर वे १३२९ होते हैं। इनसे उपर्युक्त क्षेत्रफलके गुणित करने पर दो समुद्रोंके क्षेत्रफलके बिना दार्द्र द्वीपका क्षेत्रफल योजनोंमें आता है। इसके प्रतरांगुल बनानेके लिये एक योजनके चार कोस, एक कोसके दो हजार धनुष, एक धनुषके चार हाथ और एक हाथके चौबीस अंगुलोंके वर्गसे गुणा कर देना चाहिये, क्योंकि, पूर्वोक्त राशि वर्गात्मक है अतएव वर्गात्मक राशिके गुणकार और भागद्वारा भी वर्गात्मक ही होना चाहिये। इस प्रक्रियासे दो समुद्रोंके क्षेत्रफलके बिना दार्द्र द्वीपका क्षेत्रफल प्रमाणप्रतरांगुलोंमें आ जाता है। आगे गणितद्वारा उसीका स्पष्टीकरण किया गया है। यहां धवलकाके उपलब्ध पाठमें जो संशोधनकी कल्पना पावटिप्पणमें व्यक्त की गई है, उसीके अनुसार अर्थ किया गया है क्योंकि मूलकी अंकसंख्या की सार्थकता तभी सिद्ध होती है जो कि निम्न उदाहरणसे स्पष्ट है—

**उदाहरण—**३१६२२७ यो., ३ को., १२८ ध., और कुछ कम  $१३\frac{1}{2}$  अंगुल जो भी धव-

लके अनुसार  $\frac{२७}{२} - \frac{१}{२} \times \frac{५५}{७०८८}$  अंगुल होते हैं। यह जम्बूद्वीपकी परिधि है।

जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल लानेके लिये उपर्युक्त प्रमाणमें जम्बूद्वीपके व्यासके चतुर्थांश अर्थात् पच्चीस हजारसे गुणा करना चाहिये जिससे जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल आया—

$$\frac{८६०७०६२०३७२४५०२२५}{१०८८७१६८} \text{ प्रतर योजन}$$

७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ एचियमेचमणुसपज्जत्तरासिम्ह<sup>१</sup> संखेज्जपदरंगुलेहि गुणिदे माणुसखेत्तादो संखेज्जगुणचप्पसंगा । माणुसलोग-  
खेत्तफलपमाणपदरंगुलेसु संखेज्जस्सेहंगुलमेत्तोगाहणो मणुसपज्जत्तरासी सम्मादि चि  
णासंकणिज्जं, सव्वुकस्सोगाहणमणुसपज्जत्तरासिम्ह संखेज्जपमाणपदरंगुलमेत्तोगाहण-  
गुणगारमुहवित्थारुवलंभादो । सव्वट्टसिद्धिदेवाणं पि मणुसपज्जत्तरासीदो संखेज्जगुणाणं  
ण सव्वट्टसिद्धिविमाणे जंबूदीवमाणे ओगाहो अत्थि, तत्तो संखेज्जगुणोगाहणाणं  
तत्थावट्ठाणविरोहादो । तम्हा मणुसपज्जत्तरासी एयकोडाकोडाकोडीओ सादिरैया  
त्ति वेत्तव्वा ।

इसे दो समुद्रोंके बिना दार्इद्वीपकी जम्बूद्वीपप्रमाण की गई खंडशालाकाओं अर्थात्  
१३२९ से गुणित कर देने पर दो समुद्रोंके बिना दार्इद्वीपका क्षेत्रफल आया—

$\frac{११४३८७८५४४७४९८६३४९०२५}{१०८८७१६८}$  प्रमाण प्रतर योजन

इसके प्रमाणप्रतरांगुल बनानेके लिये पूर्वोक्त मापके प्रमाणानुसार  $४' \times २०००' \times ४' \times २४'$   
से गुणित करने पर इष्ट क्षेत्रफल आया—

$६१९७०८४६६८१६४१६२००००००००$  प्रमाण प्रतर अंगुल.

अब यदि ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ इतनी मनुष्य पर्याप्त  
राशिकी संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणा किया जाय तो उस प्रमाणको मनुष्य क्षेत्रसे संख्यातगुणका  
प्रसंग आ जायगा । यदि कोई ऐसी आशंका करे कि मनुष्यलोकका क्षेत्रफल जो प्रमाण  
प्रतरांगुलोंसे लाया गया है उसमें संख्यात उत्सेधांगुलमात्र अवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त  
राशि समा जायगी, तो ठीक नहीं है, क्योंकि, सबसे उत्कृष्ट अवगाहनासे युक्त मनुष्य पर्याप्त  
राशिमें संख्यात प्रमाण-प्रतरांगुलमात्र अवगाहनाके गुणकारका मुख विस्तार पाया जाता है ।  
उसीप्रकार मनुष्य पर्याप्त राशिसे संख्यातगुणे सर्वार्थसिद्धिके देवोंकी भी जम्बूद्वीपप्रमाण  
सर्वार्थसिद्धिके विमानमें अवगाहना नहीं बन सकती है, क्योंकि, सर्वार्थसिद्धि विमानके क्षेत्र  
फलसे संख्यातगुणी अवगाहनासे युक्त देवोंका वहां पर अवस्थान माननेमें विरोध आता है ।  
इसलिये मनुष्य पर्याप्त राशि एक कोड़ाकोड़ासे अधिक है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

विशेषार्थ—मनुष्योंका निवास क्षेत्र दार्इ द्वीप है, जिसका व्यास पैंतालीस लाख  
योजन है । इसका क्षेत्रफल  $१६००९०३०६५४६०१२\frac{१}{२}$  योजनप्रमाण होता है । इसके प्रतरांगुल  
 $९४४२५१०४९६८१९४३४०००००००००$  होते हैं, परंतु दार्इ द्वीपके क्षेत्रफलमेंसे दो समुद्रोंका

१ तलजीवमधूगविमलं धूमसिंहागाविचोरमयमेरु । तटहरिखससा हंति हु माणुसपज्जत्तसंखंका ॥ गो. जी.  
१५८. छ ति ति ख पण नव तिग चउ पण तिग नव पंच सग तिग चउरो । छ दु चउ इग पण दु छ इग अउ  
दु दु नव सग जइह नरा ॥ लो. प्र. सर्ग ७. पत्र १०८.

सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति द्व्यपमाणेण  
केवडिया, संखेज्जा ॥ ४६ ॥

क्षेत्रफल घटा देने पर शेष क्षेत्रफल ६१९७०८४६६६८१६४१६२०००००००० प्रतरांगुलप्रमाण रहता है, क्योंकि, दोनों समुद्रोंमें अन्तर्द्वीपज मनुष्य होते हुए भी उनका प्रमाण अत्यल्प होनेसे उनके क्षेत्रफलकी यहां विवक्षा नहीं की गई है। एक मनुष्यका निवास क्षेत्र संख्यात प्रतरांगुल-प्रमाण है, इसलिये ऊपर जो प्रतरांगुलोंकी संख्या बतलाई है मनुष्यराशि उससे कम ही होना चाहिये। पर मनुष्यराशिको २९ अंकप्रमाण मान लेने पर २५ अंकप्रमाण क्षेत्रफलवाले क्षेत्रमें उनका रहना किसी प्रकार भी संभव नहीं है। कारण कि ढाई ठीपका क्षेत्रफल २५ अंकप्रमाण ही है। कदाचित् यह कहा जाय कि ऊपर जो २५ अंक प्रतरांगुल-प्रमाण क्षेत्रफल कहा है वह प्रमाणांगुलकी अपेक्षा कहा गया है। यदि इसके उत्सेधांगुल कर लिये जाय तो इसमें २९ अंकप्रमाण मनुष्यराशि समा जायगी, सो भी बात नहीं है, क्योंकि, उत्कृष्ट अवगाहनाकी अपेक्षा २९ अंकप्रमाण मनुष्यराशिका उक्त क्षेत्रमें समा जाना अशक्य है। आकाशकी अवगाहनाकी विचित्रतासे यह कोई दोष नहीं रहता है, ऐसा कहना भी युक्तियुक्त नहीं है, क्योंकि, अवगाह्यमान पदार्थोंका संयोगरूप अन्योन्य प्रवेशरूप संबन्ध ही अल्प क्षेत्रमें बहुत पदार्थोंके अधिष्ठानके लिये कारण है। परन्तु मनुष्योंमें परस्पर इसप्रकारका संबन्ध गर्भादि अवस्थाको छोड़कर प्रायः नहीं पाया जाता है, इसलिये सूत्रमें जो कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीसे नीचेकी और कोड़ाकोड़ाकोड़ीसे ऊपरकी संख्या मनुष्योंका प्रमाण कहा है वही युक्तियुक्त है। दूसरे यदि उनतीस अंकप्रमाण मनुष्यराशि मान ली जाय, तो मनुष्यनियोंसे तिगुने अथवा, सातगुने जो सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण कहा है वह नहीं बन सकता है, क्योंकि, एक लाख योजनप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके विमानमें इतने देवोंका रहना अशक्य है। इसका कारण यह है कि एक लाख योजनके क्षेत्रफलके उत्सेधरूप प्रतरांगुल करने पर भी उनका प्रमाण अट्ठाईस अंकप्रमाण आता है और सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण मनुष्यराशिको २९ अंकप्रमाण मान लेने पर ३० अंकप्रमाण होता है। यह तो निश्चित है कि एक देव संख्यात प्रतरांगुलोंमें रहता है, परन्तु यहां क्षेत्रफलके प्रतरांगुल देवोंके प्रमाणसे कम हैं, इसलिये ३० अंकप्रमाण देवोंका २८ अंकप्रमाण क्षेत्रफलवाले क्षेत्रमें रहना किसी प्रकार भी संभव नहीं है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि सूत्रमें पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण जो कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ीके नीचे और कोड़ाकोड़ाकोड़ीके ऊपर कहा है वही ठीक है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-स्थानमें पर्याप्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४६ ॥

१ एतन्मनुष्याणां संख्यातगुणत्वेऽपि आकाशस्यावगाहकमित्तैर्विभक्त्यस्वीतिर्न कर्तव्या ।  
गी. जी. १५९ टीका.

एदम्हि सुत्तम्हि मणुसोधे जं चउण्हं गुणट्ठाणणं पमाणं वुत्तं तं चेव पमाणं वत्तव्वं, संगहिदत्तिवेदत्तणेण पज्जत्तभावेण च दोण्हं विसेसाभावादो ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगकेवलि ति ओधं ॥ ४७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं परुविदो ति ण वुच्चदे ।

मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया ? कोडाकोडा-  
कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हेट्टदो छण्हं वग्गाणसुवरि  
सत्तण्हं वग्गाणं हेट्टदो ॥ ४८ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणं मणुसपज्जत्तसुत्तवक्खाणेण तुळं । णवरि पंचमवग्गस्स  
तिभागे पंचमवग्गम्हि चेव पक्खित्ते मणुसिणीणमवहारकालो होदि । तेण सत्तमवग्गे  
भागे हिदे मणुसणीणं दव्वमामाच्छदि' । लट्ठादो सगतेरसगुणट्ठाणपमाणे अवणिदे मणु-  
सिणीमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।

सामान्य मनुष्य राशिका प्रमाण कहते समय सासादनादि चार गुणस्थानवर्ती राशिका  
जो प्रमाण कह आये हैं, इस सूत्रका व्याख्यान करते समय उसी प्रमाणका व्याख्यान करना  
चाहिये, क्योंकि, संगृहीत त्रिवेदत्वकी अपेक्षा और पर्याप्तपनेकी अपेक्षा उक्त दोनों राशियोंमें  
कोई विशेषता नहीं है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें  
पर्याप्त मनुष्य सामान्य प्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ ४७ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले कह आये हैं, इसलिये यहां नहीं कहा जाता है ।

मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? कोडाकोडा-  
कोडीके ऊपर और कोडाकोडाकोडाकोडीके नीचे छठवें वर्गके ऊपर और सातवें वर्गके  
नीचे मध्यकी संख्याप्रमाण हैं ॥ ४८ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान मनुष्य पर्याप्तकी संख्याके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रके व्याख्यानके  
तुल्य है । इतनी विशेषता है कि पांचवें वर्गके त्रिभागको पांचवें वर्गमें प्रक्षिप्त कर देने पर  
मनुष्यनियोंके प्रमाण लानेके लिये अवहारकाल होता है । उस अवहारकालसे सातवें वर्गके  
भाजित करने पर मनुष्यनियोंके द्रव्यका प्रमाण आता है । इसप्रकार जो मनुष्यनियोंकी संख्या  
लब्ध आवे उसमेंसे अपने तेरह गुणस्थानके प्रमाणके घटा देने पर मनुष्यनी मिथ्यादृष्टियोंका  
प्रमाण होता है ।

१ दो पण सग दुग छणव सग पण इमि पंच गवा एकं । तिय पण दुग अड छप्पण अट्ठु एक दुगमेकं ।  
इमि दुग चउ णव पंच य मणुसिणीरासिस्स परिमाणं । ५९४२१२१८८५६९८२५३१९५१५७९६२७५२ ।  
पं. १६० पत्र. पज्जत्तमणुस्साणं तिचउत्थो साणसीण परिमाणं ॥ गो. जी. १५९.



मणुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति  
द्व्यपमाणेण केवडिया ? संखेज्जा ॥ ४९ ॥

मणुस्सोवे वुत्तासाणादीणं संखेज्जदिभागो सासणादीणं गुणपडिवण्णाणं पमाणं मणुसिणीसु हवदि । कुदो ? अप्पसत्थवेदोदण सह पउरं सम्मईसणलंभाभावादो । तं कथं जाणिज्जे ? 'सव्वत्थोवा णवुंसयवेदअसंजदसम्मादिट्ठिणो । इत्थिवेदअसंजदसम्मा-इट्ठिणो असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पाबहुअ-सुत्तादो कारणस्स थोवत्तणं जाणिज्जे । तदो सासणसम्माइट्ठिआदीणं पि थोवत्तणं सिद्धं

विशेषार्थ — किसी भी विवक्षित वर्गमें उसीके विभाग को जोड़कर उसका उसके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर उस विवक्षित वर्गके घनका तीन चतुर्थांश लब्ध आता है । तदनुसार पांचवें वर्गमें उसीका विभाग जोड़कर सातवें वर्गमें भाग देने पर पांचवें वर्गके घनरूप मनुष्य राशिका तीन चतुर्थांश लब्ध आता है । यही मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण है । इसमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवर्ती राशिका प्रमाण घटा देने पर मिथ्यादृष्टि स्त्रियोंका प्रमाण होता है, यह जो मूलमें कहा है इससे प्रतीत होता है कि उपर्युक्त प्रमाण स्त्रियोंका भाववेदकी प्रधानतासे कहा गया है । यदि यह प्रमाण द्रव्यस्त्रियोंका होता तो मूलमें 'इसमेंसे सासादनादि तेरह गुणस्थानराशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि मनुष्य योनिमतियोंका प्रमाण होता है' ऐसा न कह कर केवल इतना ही कहा जाता कि इस प्रमाणमेंसे सासादनादि चार गुणस्थानवर्ती राशिका प्रमाण घटाने पर मिथ्यादृष्टि योनिमतियोंका प्रमाण होता है । परंतु गोस्मटसारकी टीकामें यह प्रमाण द्रव्यवेदकी अपेक्षा बतलाया है ।

मनुष्यनियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ४९ ॥

सामान्य मनुष्योंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी जो संख्या कही गई है उसके संख्यातवें भाग मनुष्यनियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण है, क्योंकि, अप्रशस्त वेदके उदयके साथ प्रचुर जीवोंको सम्यग्दर्शनका लाभ नहीं होता है ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — 'नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोका हैं । स्त्रीवेदी असं-यतसम्यग्दृष्टि जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । और पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि उनसे असंख्यात-गुणे हैं ।' इस अल्पबहुत्वके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रसे स्त्रीवेदियोंके अल्प होनेके कारणका स्तोकापना जाना जाता है । और इससे सासादनसम्यग्दृष्टि आदिकके भी स्तोकापना सिद्ध हो



हवदि । णवरि एत्तिंयं तेसिं पमाणमिदि ण णव्वदे, संपहि उवएसभावादे ।

**मणुसअपज्जता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा ॥ ५० ॥**

एत्थ णिव्वत्ति-अपज्जेत्ते मोत्तूण लद्धि-अपज्जत्ताणं गहणं कायव्वं । कुदो ? एत्थ गुणपडिक्खणपमाणपरूवणाभावणहाणुववत्तीदो । सामण्णेण अवगद-असंखेज्जसविसेसपरूवणद्वुत्तरसुत्तमाह—

**असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ५१ ॥**

एदस्स सुत्तस्स अत्थो पुव्वं बहुसो परूविदो त्ति पुणो ण वुच्चदे पुणरुत्तभएण ।

खेत्तेण सेढीए असंखेज्जादिभागो । तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ । मणुस-अपज्जत्तेहि रूवा पक्खित्तोहि सेढिमवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ॥ ५२ ॥ इदि एदं वयणं ण घडदे, फलाभावा । संते संभवे वियहिचारे च विसेसणमत्थवंतं

जाता है । परंतु इतनी विशेषता है कि उन सासादनसम्यग्दाधि आदि योनिमित्तियोंका प्रमाण इतना है, यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस कालमें इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

लब्धपर्याप्त मनुष्य द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ५० ॥

यहां पर निर्वृत्यपर्याप्तकोंको ग्रहण न करके लब्धपर्याप्तकोंका ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणके प्ररूपणका अभाव अन्यथा बन नहीं सकता है ।

अपर्याप्त मनुष्य राशि असंख्यातरूप है यह बात सामान्यरूपसे तो जान ली, पर विशेषरूपसे उसका ज्ञान नहीं हुआ, अतः उस असंख्यातके विशेषरूपसे प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा लब्धपर्याप्त मनुष्य असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५१ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले अनेकवार कह आये हैं, अतः पुनरुक्त दोषके भयसे पुनः नहीं कहते हैं ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगश्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण लब्धपर्याप्त मनुष्य हैं । उस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम असंख्यात करोड़ योजन है । सूच्यंगुलके तृतीय वर्गमूल गुणित प्रथम वर्गमूलको शलाकारूपसे स्थापित करके रूपाधिक लब्धपर्याप्तक मनुष्योंके द्वारा जगश्रेणी अपहृत होती है ॥ ५२ ॥

शंका—यह सूत्र-वचन श्रुत नहीं होता है, क्योंकि, इस वचनका कोई फल नहीं

भवदि । एत्थ पुण संभवो णेव इदि । परिहारो बुच्चदे । सुत्तेण विणा सेठी असंखेज्ज-  
जोयणकोडिपमाणो होदि त्ति ण जाणिज्जे, तदो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेट्ठिपमाण-  
मिदि जाणावणट्ठमिदं वयणं । परियम्मादो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेठीए पमाण-  
मवगदमिदि चे ण, एदस्स सुत्तस्स बलेण परियम्मपवुत्तीदो । अहवा सेठीए असंखेज्जदि-  
भागो वि सेठी बुच्चदे, अवयविणामस्स अवयवे पवुत्तिदंसणादो । जहा गामेगदेसे दद्वे  
गामो दद्व इदि । अहवा एवं संबंधो कायव्वो । तिस्से सेठीए असंखेज्जदिभागस्स आयामो  
दीहत्तणं असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ होदि त्ति । अपज्जत्तएहि रुवपक्खित्तएहि रुवा  
पक्खित्तएहि रुवं पक्खित्तएहि त्ति तिसु वि पादेसु रुवाहियपज्जत्तरासी पक्खिविदव्वो ।  
पुणो लद्धम्हि रुवाहियमणुसपज्जत्तरासिमवणिदे मणुस्सापज्जत्ता होंति । अंगुलवग्गमूलं  
च तं तदियवग्गमूलमुणिदं च अंगुलवग्गमूलतदियवग्गमूलमुणिदं तेण सलागभूदेण सेठी  
अवहिरिज्जदि त्ति जं वुत्तं होदि ।

है । व्यभिचारकी संभावना होने पर ही विशेषण फलवाला होता है । परंतु यहां पर तो उसकी संभावना ही नहीं है ?

समाधान—आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं । सूत्रके बिना 'जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणी असंख्यात करोड़ योजनप्रमाण है' यह नहीं जाना जाता है, अतः जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका प्रमाण असंख्यात करोड़ योजन है, इसका ज्ञान करानेके लिये उक्त वचन दिया है ।

शंका—जगश्रेणीके असंख्यातवें भागरूप श्रेणीका आयाम असंख्यात करोड़ योजन है, यह परिकर्मसे जाना जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इस सूत्रके बलसे परिकर्मकी प्रवृत्ति हुई है ।

अथवा, जगश्रेणीके असंख्यातवें भागको भी श्रेणी कहते हैं, क्योंकि, अवयवोंके नामकी अवयवमें प्रवृत्ति देखी जाती है । जैसे, ग्रामके एक भागके दग्ध होने पर ग्राम जल गया ऐसा कहा जाता है । अथवा, इसप्रकारका संबन्ध कर लेना चाहिये कि उस श्रेणीके असंख्यातवें भागका आयाम अर्थात् लंबाई असंख्यात करोड़ योजन है । 'अपज्जत्तएहि रुवपक्खित्तएहि रुवा पक्खित्तएहि रुवं पक्खित्तएहि' इन तीनों भी स्थानोंमें किसी भी वचनसे रूपाधिक पर्याप्त मनुष्य राशिका प्रक्षेप करना चाहिये । पुनः लब्धमेंसे रूपाधिक पर्याप्त मनुष्य राशिके घटा देने पर लब्धपर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण होता है । सूर्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे शलाकारूप उस राशिसे जगश्रेणी अपहत होती है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

विशेषार्थ—सामान्य मनुष्यराशिके प्रमाणमेंसे पर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण घटा देने पर लब्धपर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण शेष रहता है । सूर्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उससे जगश्रेणीको माजित करके लब्ध

भागाभागं वचस्सामो । मणुसरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुस-अपज्जता  
होति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसिणीमिच्छाइड्डी होति । सेसं संखेज्जखंडे  
कए तत्थ बहुखंडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइड्डी होति । ( सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा  
असंजदसम्माइट्ठिणो होति । ) सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होति ।  
सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होति । सेसं संखेज्जखंडे कए तत्थ  
बहुखंडा संजदासंजदा होति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होति ।  
सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा होति । उवरि ओर्य ।

अप्पाबहुगं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सच्चपरत्थाणं चेदि । तत्थ सत्थाणं  
वचस्सामो । सच्चत्थोवो मणुसमिच्छाइड्डीअवहारकालो । तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । के  
गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा  
सेटीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहार-

राशिमैंसे एक कम कर देने पर सामान्य मनुष्यराशिका प्रमाण आता है और इसमेंसे पर्याप्त  
मनुष्यराशिका प्रमाण घटा देने पर लब्धपर्याप्त मनुष्यराशिका प्रमाण आता है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— मनुष्यराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे  
बहुभागप्रमाण अपर्याप्त मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे  
बहुभागप्रमाण मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड  
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड  
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात भाग  
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सात्तादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात  
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण संयतासंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड  
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने  
पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अप्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । इसके ऊपर सामान्य प्ररूपणाके समान  
भागाभाग जानना चाहिये ।

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्व  
परस्थान अल्पबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— मनुष्य मिथ्यादृष्टि  
अवहारकाल सबसे स्तोकर है । उन्हीं मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण अवहारकालसे  
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग  
क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है  
जो जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग  
क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग

कालवग्गो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जजाणि सूचिअंगुलाणि । केचिय-  
मेत्ताणि ? विदियवग्गमूलमेत्ताणि । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणमारो ? सगअवहारकालो ।  
एवं मणुसपज्जत्ताणं पि सत्थाणप्पावहुगं वत्तव्वं । सासणादीणं सत्थाणं णत्थि ।  
मणुसपज्जत्त-मणुसिणीणं पि णत्थि सत्थाणप्पावहुगं ।

परत्थाणे पयदं—सव्वत्थोवा चत्तारि उवसाग्गो । पंच खवगा संखेज्जगुणा ।  
सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ।  
संजदासंजदा संखेज्जगुणा । सासणसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा ।  
असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । तदो मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को  
गुणमारो ? सगअवहारकालस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? असंजदसम्माइट्ठिणो ।  
तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणमारो ? पुव्वभणिदो । सेढी असंखेज्जगुणा । को  
गुणमारो ? पुव्वं भणिदो । मणुसपज्जत्तेसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसाग्गो । पंच खवगा  
संखेज्जगुणा । एवं जाव असंजदसम्माइट्ठि चि । तदो मिच्छाइट्ठिद्वयं संखेज्जगुणं । को

गुणकार है जो प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है । असंख्यात  
सूच्यंगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है । मनुष्यमिथ्यादृष्टि द्रव्यसे  
जगध्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । इसीप्रकार  
मनुष्य लब्धपर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये । सासादनसम्यग्दृष्टि  
आदि गुणस्थानवर्ती मनुष्योंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है । उसीप्रकार पर्याप्त मनुष्य  
और मनुष्यनिर्योका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है ।

अब परस्थान अल्पबहुत्वका आश्रय लेकर प्रकृत विषयका वर्णन करते हैं—चारों  
गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे स्तोका हैं । पाँचों गुणस्थानवर्ती क्षपक संख्यातगुणे हैं । सयो-  
गिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं ।  
प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । संयतासंयत मनुष्य प्रमत्तसंयतोंसे  
संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयत मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सम्य-  
गिमिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य  
सम्यगिमिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे मनुष्य  
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका  
संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंका प्रमाण प्रतिभाग  
है । उन्हीं मिथ्यादृष्टि मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या  
है ? पहले कह आये है । मनुष्य मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे जगध्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार  
क्या है ? पहले कह आये है । मनुष्य पर्याप्तकोंमें चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक सबसे थोड़े  
हैं । पाँचों गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार उत्तरोत्तर  
असंयतसम्यग्दृष्टि तक अल्पबहुत्व समझना चाहिये । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके प्रमाणसे

गुणगारो ? संखेज्जा समया । एवं चेव मणुसिणीसु वि परत्थाणं वत्तव्वं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं- सव्वत्थोवा अजोगिकेवल्लिणे । चत्तारि उवसामगा संखेज्ज-  
गुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा  
संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदासंजदा संखेज्जगुणा । सासणसम्मा-  
इट्ठिणो संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा ।  
मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुसिणीमिच्छाइट्ठिणो संखेज्जगुणा । मणुस-  
अपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । मणुसअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । उवरि जाव  
लोमो त्ति ताव जाणिऊण वत्तव्वं । मणुसिणीगुणपडिवण्णाणं पमाणमेत्तियमिदि णावहारिदं,  
तम्हा सव्वपरत्थाणप्पावहुए तेसिं परूवणा ण कदा ।

एवं मणुसगई समत्ता ।

देवगईए देवेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असं-  
खेज्जा ॥ ५३ ॥

मिथ्यादृष्टि पर्याप्त मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय  
गुणकार है । इसीप्रकार मनुष्यनियोंमें भी परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्वका कथन प्रकृत है- अयोगिकेवली मनुष्य सबसे स्तोत्र  
हैं । चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानवर्ती क्षपक  
उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत मनुष्य  
सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत मनुष्य अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । संयतासंयत  
मनुष्य प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयतोंसे संख्यातगुणे  
हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य  
सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे  
संख्यातगुणे हैं । मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव पर्याप्त मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य अपर्याप्त  
अवहारकाल मनुष्यनी मिथ्यादृष्टियोंसे असंख्यातगुणा है । मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य उन्हींके  
अवहारकालसे असंख्यात गुणा है । इसके ऊपर लोक तक जानकर अल्पबहुत्वका कथन करना  
चाहिये । गुणस्थानप्रतिपन्न मनुष्यनियोंका प्रमाण इतना है, यह निश्चित नहीं है, इसलिये सर्व  
परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते समय गुणस्थानप्रतिपन्न उनके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की ।

इसप्रकार मनुष्यगतिका कथन समाप्त हुआ ।

देवगतिप्रतिपन्न देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?  
असंख्यात हैं ॥ ५३ ॥

एत्थ देवगइगहणेण सेसगइपडिसेहो कदो हवदि । देवेसु चि वयणेण तत्थ  
द्विदद्वपडिसेहो कदो हवदि । मिच्छाइद्वि चि वयणेण सेसगुणट्ठाणपडिसेहो कदो हवदि ।  
द्वयपमाणेणेचि वयणेण खेत्तादिपडिसेहो कदो हवदि । केवडिया इदि वयणेण सुत्तस्स  
पमाणत्तं सूचिदं हवदि । असंखेज्जा इदि वयणेण संखेज्जाणंताणं पडिणियत्ती कदो हवदि ।

किमसंखेज्जं णाम ? जो रासी एगेगरूवे अवणिज्जमाणे णिट्ठादि सो असंखेज्जो ।  
जो पुण ण सम्पप्प सो रासी अणंतो । यदि एवं तो वयसहिदसक्खयअद्वपोग्गलपरियट्ठ-  
कालो वि असंखेज्जो जायदे ? होदु णाम । कथं पुणो तस्स अद्वपोग्गलपरियट्ठस्स  
अणंतववएसो ? इदि चे ण, तस्स उवयारणिबंधणत्तादो । तं जहा— अणंतस्स केवलणानस्स  
विसयत्तादो अद्वपोग्गलपरियट्ठकालो वि अणंतो होदि । केवलणानविसयत्तं पडि  
विसेसाभावा सव्वसंखाणामणंतत्तणं जायदे ? चे ण, ओहिणानविसयवदिरित्तसंखाणे  
अणणविसयत्तणेण तदुवयारपवुत्तीदो । अहवा जं संखाणं पंचिदियविसओ तं संखेज्जं

सूत्रमें देवगति पदके ग्रहण करनेसे शेष गतियोंका प्रतिषेध हो जाता है । 'देवोंमें'  
ऐसा वचन देनेसे देवलोकेमें स्थित अन्य द्रव्योंका प्रतिषेध हो जाता है ।  
'मिथ्यादृष्टि' इस वचनसे अन्य गुणस्थानोंका प्रतिषेध हो जाता है । 'द्रव्यप्रमाणकी  
अपेक्षा' इस वचनसे क्षेत्र आदि प्रमाणोंका प्रतिषेध हो जाता है । 'कितने हैं' इस वचनसे  
सूत्रकी प्रमाणता सूचित हो जाती है । 'असंख्यात हैं' इस वचनसे संख्यात और अनन्त  
संख्याकी निवृत्ति हो जाती है ।

शंका— असंख्यात किसे कहते हैं, अर्थात् अनन्तसे असंख्यातमें क्या भेद है ?

समाधान— एक एक संख्याके घटाते जाने पर जो राशि समाप्त हो जाती है वह  
असंख्यात है और जो राशि समाप्त नहीं होती है वह अनन्त है ।

शंका— यदि ऐसा है तो व्ययसहित होनेसे नाशकी प्राप्ति होनेवाला अर्धपुद्गल  
परिवर्तन काल भी असंख्यातरूप हो जायगा ?

समाधान— हो जाओ ।

शंका— तो फिर उस अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको अनन्त संज्ञा कैसे दी गई है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अर्धपुद्गल परिवर्तनरूप कालको जो अनन्त संज्ञा दी गई  
है वह उपचारनिमित्तक है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं— अनन्तरूप केवलज्ञानका  
विषय होनेसे अर्धपुद्गल परिवर्तनकाल भी अनन्त है, ऐसा कहा जाता है ।

शंका— केवलज्ञानके विषयत्वके प्रति कोई विशेषता न होनेसे सभी संख्याओंको  
अनन्तत्व प्राप्त हो जायगा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, जो संख्याएं अवधिज्ञानका विषय हो सकती हैं उनसे  
अतिरिक्त ऊपरकी संख्याएं केवलज्ञानको छोड़कर दूसरे और किसी भी ज्ञानका विषय नहीं हो  
सकती हैं, अतएव ऐसी संख्याओंमें अनन्तरत्वके उपचारकी प्रवृत्ति हो जाती है । अथवा, जो  
संख्या पांचों इन्द्रियोंका विषय है वह संख्यात है । उसके ऊपर जो संख्या अवधिज्ञानका विषय

णाम । तदो उवरि जमोहिणाणविसओ तमसंखेज्जं णाम । तदो उवरि जं केवलणाणस्सेव विसओ तमणंतं णाम । संपहि सुहुमदरपरुवणट्ठमुत्तरसुत्तमाह—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ५४ ॥

णादत्थमिदं सुत्तं ।

खेत्तेण पदरस्स वेळप्पणंगुलसयवग्गपडिभागेण ॥ ५५ ॥

देवमिच्छाद्वि ति अणुवट्ठदे । अंगुलमिदि बुत्ते एत्थ स्रचिअंगुलं घेत्तव्वं । सद-

हे वह असंख्यात है । उसके ऊपर जो केवलज्ञानके विषयभाव को ही प्राप्त होती है वह अनन्त है ।

अब अतिसूक्ष्म प्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्स-  
र्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५४ ॥

इस सूत्रका अर्थ पहले बतलाया जा चुका है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके दोसौ छप्पन अंगुलोंके वर्गरूप प्रतिभागसे देव मिथ्या-  
दृष्टि राशि आती है, अर्थात् दोसौ छप्पन स्रच्यंगुलके वर्गरूप भागहारका जगप्रतरमें  
भाग देने पर देव मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ॥ ५५ ॥

विशेषार्थ—यद्यपि दोसौ छप्पन स्रच्यंगुलोंके वर्गका भाग जगप्रतरमें देनेसे ज्योतिषी  
देवोंकी संख्या आती है, फिर भी व्यन्तर आदि शेष देवोंका प्रमाण ज्योतिषी देवोंके संख्यातवें  
भागमात्र है, इसलिये यहां पर द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा संपूर्ण देवराशिका प्रमाण पूर्वोक्त  
कहा है । विशेषरूपसे विचार करने पर तो दोसौ छप्पन स्रच्यंगुलोंके वर्गका जगप्रतरमें भाग  
 देने पर जो लब्ध आवे उससे कुछ अधिक संपूर्ण देवोंका प्रमाण है, ऐसा समझना चाहिये ।  
 साथ ही यह भी ध्यानमें रखना चाहिये कि यहां जीवट्टाणमें चौदह मार्गणाओंमें मिथ्यादृष्टि  
 आदि गुणस्थानोंकी अपेक्षा पृथक् पृथक् संख्या बतलाई है । इसलिये उस उस मार्गणामें  
 सामान्य संख्याके प्रमाणसे मिथ्यादृष्टिके प्रमाणको कुछ कम कहना चाहिये था । परंतु ऐसा  
 न कह कर सामान्य संख्याका प्रमाण ही यहां प्रायः कर मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण कहा है  
 सो यह कथन भी द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षासे ही सर्वत्र समझना चाहिये । विशेषरूपसे  
 विचार करने पर तो सामान्य संख्याके प्रमाणमेंसे गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके प्रमाणको घटा  
 देने पर ही मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण होगा ।

यहां पर देव मिथ्यादृष्टि पदकी अनुवृत्ति हुई है । सूत्रमें 'अंगुल' ऐसा सामान्य पद



सदो वेण्हं विसेसणं हवदि, ण छप्पणस्स। वेहि विसेसिदछप्पणसदस्स गहणं पसज्जदि त्ति ण च एवं, अणिट्ठादो। पडिभागो भागहारो। तदो वेसयछप्पणं गुलवगेण जगपदरे खंडिदे तत्थ एगखंडेण तुल्ला देवमिच्छाइट्ठी होति त्ति जं वुचं होदि। पण्हिसहस्स-पंचसय-छत्तीसपदरं गुलाणि भागहारं कट्ठु जगपदरस्सुवरि खंडिदादो पंचिदियतिरिक्ख-जोणिणीमिच्छाइट्ठीणं वत्तव्वा।

**सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठीणं ओवं**

॥ ५६ ॥

एदेसिं देवगुणपडिवण्णाणं परूवणा सामण्णेण ओघगुणपडिवण्णद्ववमाण-परूवणमणुहरदि त्ति ओघेणेत्ति भणिदं। पज्जवट्ठियणए अवलंविज्जमाणे अत्थि विसेसो, अण्णहा सेसमइगुणपडिवण्णाणमभावप्पसंगा। तं विसेसं वत्तइस्सामो। तं जहा—आवलियाए असंखेज्जदिमाएण ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं खंडेऊण लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते देवअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि। तमावलियाए असं-

कहने पर यहां उससे सूच्यगुलका ग्रहण करना चाहिये। शत शब्द दोका विशेषण है, छप्पनका नहीं। यदि कोई कहे कि दो विशिष्ट छप्पनसौका ग्रहण हो जाना चाहिये सो बात नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानना इष्ट नहीं है। प्रतिभागका अर्थ भागहार है, अतः यह अभिप्राय हुआ कि दोसौ छप्पन सूच्यगुलोंके वर्गसे जगप्रतरके खंडित करने पर उनमेंसे एक खंडके बराबर देव मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं। पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीस प्रतरांगुलोंको भागहार करके जगप्रतरके ऊपर खंडित आदिको पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके खंडित आदिकके समान कहना चाहिये।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यमिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य देवोंका द्रव्यप्रमाण ओघ प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ ५६ ॥

इन गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी संख्या-प्ररूपणा सामान्यरूपसे गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य जीवोंकी संख्या-प्ररूपणाका अनुकरण करती है, अतएव 'ओघसे' ऐसा कहा है। पर्या-यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो विशेषता है ही, अन्यथा शेष गतिसंबन्धी गुणस्थान-प्रतिपन्न जीवोंके अभावका प्रसंग आ जाता है। आगे उसी विशेषताको बतलाते हैं। वह इसप्रकार है—

आवलीके असंख्यातवें भागसे सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सामान्य असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर देव असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है। उस देव असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको



खेजदिभाएण गुणिदे देवसम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । तं संखेज्जखेहि गुणिदे देवसासणसम्मामिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पल्लिवमस्सुवरि खंडि-  
दादओ पुव्वं व वत्तव्वा ।

भवणवासियदेवेसु मिच्छाइट्टी दव्वपमाणेण केवडिया, असं-  
खेज्जा' ॥ ५७ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि' ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ५८ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो चेव ।

खेतेण असंखेज्जाओ सेठीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो । तेसिं  
सेठीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण' ॥ ५९ ॥

एदस्स अइसुहुमट्टसुत्तस्स विवरणं वुच्चदे । असंखेज्जासंखेज्जमणेयवियप्यं । तत्थ

भावलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर देव सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । उस देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर देव सासा-  
वनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंके द्वारा पल्लोपमके ऊपर खंडित  
आदिकका कथन पहलेके समान कहना चाहिये ।

भवनवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असं-  
ख्यात हैं ॥ ५७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि भवनवासी देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों  
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ५८ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यात जगश्रेणीप्रमाण हैं जो  
असंख्यात जगश्रेणियां जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । उन असंख्यात जग-  
श्रेणियोंकी विष्कंभसूची, सूच्यंगुलको सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध  
आवे, उतनी है ॥ ५९ ॥

अत्यन्त सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका विवरण लिखा जाता है—

१ असंखेज्जा असुरकुमारा जाव असंखेज्जा धणियकुमारा । अट्ट. द्वा. सू. १४१, पृ. १७९.

२ प्रतिपु 'संखेज्जासंखेज्जाहि' इति पाठः ।

३ अंगुलपदमपदं ×× सेदिसंयुणं ×× । मन्वणे ×× देवाणं इति परिमाणं । गो. जी. १६५.

असंखेज्जाओ सेटीओ इदि वुत्तं जगपदरमाइं काऊण उवारिम-असंखेज्जासंखेज्जवियप्प-  
पडिसेहट्ठं । पदरस्स असंखेज्जदिभागो वि अणेयवियप्पो इदि कट्ठु तं णिण्णयट्ठं  
सेटीणं विक्खंभसूई उत्ता । तस्से पमाणं वुच्चदे । अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदं भवणवासिय-  
मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई हवदि त्ति संबंधेयव्वं । घणंगुलपढमवग्गमूलमिदि जं वुत्तं होदि ।  
अंगुलवग्गमूलगुणिदेणेत्ति तइयाणिहेसो कथं वडदे ? पढमाविहत्तीए अट्ठे एसो तइया-  
णिहेसो दट्ठवो । अणत्थ ण एवं दिस्सदीदि चे ण, 'वेळ्ळप्पणंगुलसदवग्गपडिभागेण'  
इच्चादिसु सुत्तेसुवलंभा । अहवा णिमित्ते एसा तइयाविहत्ती दट्ठवा । अंगुलवग्गमूल-  
गुणणकारणेण जमुप्पणंगुलं सा विक्खंभसूई होदि त्ति जं वुत्तं होदि । एदाए विक्खंभ-  
सूईए जगसेट्ठिं गुणिदे भवणवासियमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि ।

**सासणसम्माइट्ठि-सम्माभिच्छाइट्ठि--असंजदसम्माइट्ठिपरूवणा  
आवं ॥ ६० ॥**

असंख्यातासंख्यात अनेक प्रकारका है, इसलिये जगप्रतरको आदि करके उपरिम असंख्याता-  
संख्यातके विकल्पोंका प्रतिषेध करनेके लिये भवनवासी मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण असंख्यात  
जगश्रेणिप्रमाण कहा है । वह जगप्रतरका असंख्यातवां भाग भी अनेक प्रकारका है ऐसा  
समझकर उसका निर्णय करनेके लिये उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची कही । आगे  
उस विष्कंभसूचीका प्रमाण कहते हैं—सूर्यंगुलको सूर्यंगुलके प्रथम वर्गमूलसे गुणित करके  
जो लब्ध आवे इतनी भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची है, ऐसा इस कथनका संबन्ध  
करना चाहिये । जो विष्कंभसूची घनांगुलके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है, यह इस कथनका  
अभिप्राय है ।

शंका—'अंगुलवग्गमूलगुणिदेण' इसप्रकार यहाँ तृतीया विभक्तिका निर्देश कैसे  
बन सकता है ?

समाधान—प्रथमा विभक्तिके अर्थमें यह तृतीया विभक्तिका निर्देश जानना चाहिये ।

शंका—दूसरी जगह ऐसा नहीं देखा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, 'वेळ्ळप्पणंगुलसदवग्गपडिभागेण' इत्यादिक सूत्रोंमें  
प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति देखी जाती है । अथवा निमित्तरूप अर्थमें यह तृतीया  
विभक्ति जानना चाहिये । जिससे यह अभिप्राय हुआ कि अंगुलके वर्गमूलके गुणनकारणसे  
जो अंगुल उत्पन्न हो तत्प्रमाण भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची है । इस विष्कंभसूचीसे  
जगश्रेणीके गुणित करने पर भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासी  
जीवोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके समान है ॥ ६० ॥

द्ववद्वियणए अवलंबिज्जमाणे ओवेण सह एगत्तदंसणादो । पज्जवद्वियणए अव-  
लंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो तं पुरदो भणिस्सामो ।

वाणवेंतरदेवेषु मिच्छाद्वी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा  
॥ ६१ ॥

एदस्स थूलत्थस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ६२ ॥

एदस्स वि सुहुमत्थसुत्तस्स अत्थो णव्वदे ।

खेतेण पदरस्स संखेज्जजोयणसदवग्गपाडिभाएणं ॥ ६३ ॥

एदस्स अइसुहुमद्वपरूवणद्वमागदसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । पदरस्सेदि विहज्जमाण-  
रासिणिहेसो । संखेज्जजोयणसदवग्गपाडिभाएणेत्ति लद्धणिहेसो । पदरस्स संखेज्जजोयण-

द्रव्यार्थिक नयका अवलम्ब करने पर ओघ प्ररूपणके साथ गुणस्थानप्रतिपन्न भवन-  
वासी प्ररूपणाकी एकता अर्थात् समानता देखी जाती है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन  
करने पर तो उक्त दोनों प्ररूपणाओंमें विशेषता है ही । उस विशेषताको अगि बतलावेंगे ।

वानव्यन्तर देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात  
हैं ॥ ६१ ॥

स्थूल अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा वानव्यन्तर देव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और  
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६२ ॥

सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेवाले इस सूत्रका भी अर्थ हात है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा जगप्रतरके संख्यातसौ योजनोंके वर्गरूप प्रतिभागसे वानव्यन्तर  
मिथ्यादृष्टि राशि आती है, अर्थात् संख्यातसौ योजनोंके वर्गरूप भागहारका जगप्रतरमें  
भाग देने पर जो लब्ध आवे उतने वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव हैं ॥ ६३ ॥

अति सूक्ष्म अर्थका प्रतिपादन करनेके लिये आये हुए इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—  
सूत्रमें 'पदरस्स' इस पदसे अपह्रियमाण राशिका निर्देश किया है । 'संखेज्जजोयणसदवग्ग-  
पाडिभाएण' इस पदसे भागहार राशिके प्रतिपादनपूर्वक लब्ध राशिका निर्देश किया है ।

१ असंखिज्जा वाणमंतरा । अनु. द्वा. सू. १४१ पत्र १७९.

२ तिप्पिसयजोयणाणं X X । कदिहिदपदरं वेत्तपरिमाणं ॥ गो. जी. १६०. संखेज्जजोयणाणं सूरपपुसेहि  
माहओ पयो । वंतराहोहिं होरह एव एकेकमेएण ॥ पञ्चत्त. २, १४.

सयवग्गपडिभागो वाणवेंतरमिच्छाइट्टिद्ववपमाणं होदि । पडिभागो इदि किं वुचं हवदि ? संखेज्जजोयणसयवग्गमेत्तजगपदरस्स भागेसु एगभागो पडिभागो णाम । पडिभागसदो भागहारम्मि वट्टमाणो कज्जे कारणोवयारेण लट्ठम्मि वट्टदि त्ति घेत्तव्वं । एत्थ पढमाए विहत्तीए अट्ठे तदिया दट्ठव्वा । अहवा एस णिहेसो पढमाविहत्ती चेव जहा हवदि तहा साहेयव्वो । संखेज्जजोयणेत्ति वुत्ते तिण्णिजोयणसयमंगुलं काऊण वग्गिदे जो उत्पज्जदि रासी सो घेत्तव्वो । तस्स पमाणं पंच कोडाकोडिसयाणि तीसकोडा-कोडीओ चउरासीदिकोडिसयसहस्साणि सोलसकोडिसहस्साणि च भवदि । जदि जोणिणीणमवहारकालो तप्पाओग्गसंखेज्जरूवगुणिदछज्जोयणसयमंगुलवग्गमेत्तो हवदि तो वाणवेंतरमिच्छाइट्टीणं पि अवहारकालो एत्तियपदंगुलमेत्तो हवदि । अध जदि पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइट्टीणमवहारकालो छज्जोयणसयमंगुलवग्गमेत्तो चेव तो वाणवेंतरमिच्छाइट्टिअवहारकालेण<sup>१</sup> तिण्णिजोयणसयमंगुलवग्गस्स संखेज्जदिभाएण होदव्वं, अण्णहा अप्पावहुगुत्तेण सह विरोहादो । एदेण अवहारकालेण जगपदे भागे हिदे

इसका यह तात्पर्य हुआ कि जगप्रतरमें संख्यातसौ योजनोंके वर्गका भाग देने पर जो प्रतिभाग आवे उतना वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण है ।

शंका — प्रतिभाग इस पदसे यहां क्या कहा गया है ?

समाधान — संख्यातसौ योजनोंके वर्गका जितना प्रमाण हो उतने जगप्रतरके भाग करने पर उनमेंसे एक भागरूप प्रतिभाग है । अर्थात् प्रतिभाग शब्दसे यहां लब्धरूप अर्थ लिया गया है । यद्यपि प्रतिभाग शब्द भागहाररूप अर्थमें रहता है तो भी कार्यमें कारणके उपचारसे यहां लब्धमें उसका ग्रहण करना चाहिये ।

यहां प्रथमा विभक्तिके अर्थमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । अथवा, ‘-पडिभापण’ यह निर्वेश प्रथमा विभक्तिरूप जिसप्रकार होवे उसप्रकार सिद्ध कर लेना चाहिये । सूत्रमें ‘संख्यात योजन’ ऐसा कहने पर तीनसौ योजनोंके अंगुल करके वर्गित करने पर जो राशि उत्पन्न हो वह राशि लेना चाहिये । उन अंगुलोंका प्रमाण पांचसौ कोड़ाकोड़ी, तीस कोड़ाकोड़ी, औरासी लाख कोड़ी और सोलह हजार कोड़ी ५३०८४१६०००००००००००० है । यदि तिर्यक् योनिमतियोंका अवहारकाल तद्योग्य संख्यात गुणित छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्गमात्र हो तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल इतने अर्थात् तीनसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गरूप प्रतरांगुलप्रमाण हो सकता है । और यदि पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंके वर्गमात्र ही है तो वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके किये गये अंगुलोंके वर्गके संख्यातवें भाग होना चाहिये, अन्यथा अल्पबहुत्वके सूत्रके साथ इस कथनका विरोध आता है ।

वाणवेंतरमिच्छाद्विपमाणमागच्छदि ।

सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाद्वि-असंजदसम्माइट्ठि ओघं  
॥ ६४ ॥

द्ववद्वियणए अवलंविज्जमाणे केण वि अंसेण विसेसाभावादो ओघत्तमिदि  
वुच्चेद । पज्जवद्वियणए अवलंविज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं विसेसं पुरदो भणिस्सामो ।

उक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आता है ।

विशेषार्थ—वाणव्यन्तर देवोंका अवहारकाल तीनसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्ग है और पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमतियोंका अवहारकाल छहसौ योजनोंके अंगुलोंका वर्ग है । तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुल ५३०८४१६००००००००० होते हैं और छहसौ योजनोंके प्रतरांगुल २१२३३६६४००००००००० होते हैं । किसी विवक्षित राशिके वर्गसे उस राशिसे दूनी राशिका वर्ग चौगुना होता है । जैसे ४ के वर्ग १६ से, ४ के दूने ८ का वर्ग ६४ चौगुना है । तथा किसी एक भूज्यमें ८ के वर्ग ६४ का भाग देनेसे जो लब्ध आयगा, ४ के वर्ग १६ का भाग देनेसे पूर्वोक्त लब्धसे चौगुना ही लब्ध आयगा । इसीप्रकार यहाँ तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंसे छहसौ योजनोंके प्रतरांगुल चौगुने होते हैं, अतएव छहसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका जगप्रतरमें भाग देनेसे तिर्यच योनिमतियोंका जितना प्रमाण लब्ध आयगा, उससे, तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका उसी जगप्रतरमें भाग देने पर वाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण, चौगुना ही लब्ध आता है । परं अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारमें तिर्यच योनिमतियोंसे वाणव्यन्तर देव संख्यातगुणे कहे हैं और उन्हींकी देवीयां देवोंसे संख्यातगुणी कही हैं । देवगतिमें निष्ठुष्ट देवके भी बर्त्तास देवीयां होती हैं । इसप्रकार आगमानुसार तिर्यच योनिमतियोंके प्रमाणसे वाणव्यन्तर देवोंका प्रमाण १ + ३२ = ३३ गुणेसे अधिक ही होना चाहिये पर पूर्वोक्त भागहारके अनुसार चौगुना ही आता है । इससे प्रतीत होता है कि उक्त दोनों भागहारोंमेंसे कोई एक भागहार असत्य है । यदि वाणव्यन्तरोंका भागहार सत्य है ऐसा मान लिया जाता है तो योनिमतियोंका भागहार छहसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंसे संख्यातगुणा होना चाहिये और यदि तिर्यच योनिमतियोंका भागहार सत्य मान लिया जाय तो वाणव्यन्तरोंका भागहार तीनसौ योजनोंके प्रतरांगुलोंका संख्यातर्वा भाग होना चाहिये ।

सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वाणव्यन्तर देव सामान्य प्ररूपणाके समान पत्योपमके असंख्यातर्वे भाग हैं ॥ ६४ ॥

प्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर किसी भी प्रकारसे गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणा और गुणप्रतिपन्न वाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणामें विशेषता न होनेसे गुणस्थानप्रतिपन्न वाणव्यन्तरोंकी प्ररूपणा गुणस्थानप्रतिपन्न सामान्य प्ररूपणाके समान कही । पर्यवार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो विशेषता है ही । उस विशेषताका कथन आगे करेंगे ।

किमट्ठं सव्वत्थ दव्वट्ठिय-पज्जवट्ठियणयइयमवलंबिय परूवणा कीरदे ? ण एस दोसो, संगह-वित्थररुचिस चाणुगहवावदत्तादो । अण्णहा असमाणदापसंगादो ।

**जोइसियदेवा देवगईणं भंगो ॥ ६५ ॥**

देवगईणमिदि बहुवयणणिहेसो ण घडदे, एकाए देवगईए बहुत्ताभावादो इदि ? ण एस दोसो, संगहिदाणेयत्ते<sup>१</sup> एयत्ते बहुत्ताविरोहादो । जोइसियदेवा इदि गुणा-विसिद्धदेवग्गहणादो जोइसियदेवेसु चदुण्हं गुणट्ठाणाणं पमाणपरूवणा ओषपरूवणाए तुल्ला । एसो दव्वट्ठियणयमवलंबिय णिहेसो कओ । पज्जवट्ठियणए अवलंबिज्जमाणे अत्थि विसेसो । तं जहा—तत्थ ताव मिच्छाइट्ठीसु विसेसो वुच्चे । वाणवेंतरादिसेससव्वे देवा जोइसियदेवाणं संखेज्जदिभागमेत्ता हवंति । तेहि सामण्णदेवरासिमोवट्ठिदे संखेज्ज-

**शंका**—सर्वत्र द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक इन दो नयोंका अवलम्बन करके प्रमाण-प्ररूपणा क्यों की जा रही है ?

**समाधान**—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, संग्रहरुचि और विस्तररुचि शिष्योंके अनुग्रहके लिये इन दोनों नयोंका व्यापार हुआ है । यदि ऐसा नहीं माना जाय तो असमानताका प्रसंग आ जाता है ।

देवगतिप्रतिपन्न सामान्य देवोंकी संख्या जितनी कही है ज्योतिषी देव उतने हैं ॥ ६५ ॥

**शंका**—सूत्रमें आये हुए 'देवगईण' यह बहुवचन निर्देश घटित नहीं होता है, क्योंकि, देवगति एक है, अतः उसे बहुत्व प्राप्त नहीं हो सकता है ?

**समाधान**—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, जिसमें बहुत्व संगृहीत है ऐसे एकत्वमें बहुत्वके रहनेमें विरोध नहीं आता है ।

'जोइसियदेवा' इसप्रकार मिथ्यादृष्टि आदि गुणोंकी विशेषतासे रहित सामान्य ज्योतिषी देवोंका ग्रहण करनेसे ज्योतिषी देवोंमें चारों गुणस्थानोंकी संख्या-प्ररूपणा सामान्य देवगतिसंबन्धी संख्या-प्ररूपणाके समान है, ऐसा सिद्ध होता है । यह कथन द्रव्यार्थिक नयका आश्रय लेकर किया है । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर विशेषता है ही । वह इसप्रकार है । उसमें भी पहले मिथ्यादृष्टियोंमें विशेषताको बतलाते हैं—वाणव्यन्तर आदि शेष संपूर्ण देव ज्योतिषी देवोंके संख्यातवें भाग हैं । उनसे सामान्य देवराशिके अपवर्तित करने पर

१ असंखिज्जा जोइसिआ । अट्ठ. द्वा. १४१ सू. १७९ पत्र. XX वेसदकपण्णअंशुलणं च । कदिहि-पदं XX जोइसियणं च परिमाणं ॥ गो. जी. १६०. कण्णवदोसयंशुलदूरपणं भाओ पयरो । जोइसिएहि हीरह सट्ठाणे त्थीय संखयुणा । पवसं. २, १५.

२ प्रतिपु 'संगहिदो गेयत्ते' इति पाठः ।

३ प्रतिपु 'परूवणदिबोच' इति पाठः ।

रूपाणि आगच्छन्ति । ताणि विरलिय दब्बमिच्छाइट्ठिरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि वाणवेंतरप्पमुहमिच्छाइट्ठिरासी पावेदि । तमुवरिरूवधरिदसामण्णदेवमिच्छाइट्ठिरासिंहि अवणिदे जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिरासी होदि । एवं समकरणं करिय रूवूणहेट्ठिम-विरलणाए देवअवहारकाले भागे हिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो आगच्छदि । तं देव-अवहारकालंहि पक्खिख्खे जोइसियदेवमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । सेसं देवमिच्छा-इट्ठिभंगो । सासणादिगुणट्ठाणगदविसेसं पुरदो वत्तइस्सामो ।

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दब्बपमाणेण केव-  
डिया, असंखेज्जा ॥ ६६ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो अवगदो चि पुणो ण बुच्चदे ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ६७ ॥

एदस्स सुत्तस्सत्थो सुगमो चेय । सत्त्वत्थ सुहुम-सुहुमदर-सुहुमतमभेएण तिविहा  
परुवणा किमट्ठं परुविज्जदे ? ण एस दोसो, तिच्च-मंद-मीज्झमसत्ताणुगहट्ठत्तादो । अण्णहा

संख्यात लब्ध आते हैं । उनका (संख्यातका) विरलन करके सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिको समान खंड करके दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति वाणव्यन्तर आदि मिथ्यादृष्टि देवराशि प्राप्त होती है । उसे उपरिम एकके प्रति प्राप्त सामान्य देव मिथ्यादृष्टि राशिमेंसे घटा देने पर ज्योतिषी मिथ्यादृष्टिराशि आती है । इसप्रकार समीकरण करके एक कम अधस्तन विरलनसे देव अवहारकालके भाजित करने पर प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग लब्ध आता है । उसे देव अवहारकालमें मिला देने पर ज्योतिषी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । दोष कथन देव मिथ्यादृष्टि प्ररूपणके समान है । सासादन आदि गुणस्थानगत विशेषताको भागे बतलायेंगे ।

सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ६६ ॥

इस सूत्रका अर्थ अवगत है, इसलिये फिरसे नहीं कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यात-संख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ६७ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम ही है ।

शुंका—सब जगह सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतमके भेदसे तीन प्रकारकी प्ररूपणा किसलिये कही जा रही है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, तीव्र बुद्धिवाले, मंद बुद्धिवाले और मध्यम बुद्धिवाले जीवोंके अनुग्रहके लिये तीन प्रकारकी प्ररूपणा कही है । यदि ऐसा न माना जाय तो



जिणाणं सव्वसत्तसमाणत्तविरोहो । ण पुणरुत्तदोसो वि जिणवयणे संभवइ, मंदबुद्धि-  
सत्ताणुग्गइदुदा एदस्स साफल्लादो ।

खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पदरस्स असंखेज्जदिभागो ।  
तासिं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूल-  
गुणिदेण ॥ ६८ ॥

पदरस्स असंखेज्जदिभागो इदि णिहेसो जगपदरादिउवरिमवियप्पणियत्तावणट्ठो ।  
असंखेज्जाओ सेढीओ इदि णिहेसो जगसेढीदो हेट्ठिमअसंखेज्जासंखेज्जवियप्पणियत्ता-  
वणट्ठो । तासिं सेढीणं पमाणपरिच्छेदं काउं अंगुलविदियवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण  
इदि विक्खंभसूई वुत्ता । गुणिदेणेत्ति पढमाणिहेसो दट्ठव्वो । स्रचिअंगुलविदियवग्गमूलं  
तदियवग्गमूलेण गुणिदं सोहम्मीसाणमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई होइ । अहवा स्रचिअंगुल-  
तदियवग्गमूलेण पढमवग्गमूले भागे हिदे सोहम्मीसाणदेवमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई होदि ।  
एदिस्से विक्खंभसूईए खंडिदादओ जहा णेरइयविक्खंभसूईए तहा वत्तव्वा ।

जिनदेव सर्व जीवोंमें समान परिणामी होते हैं इस कथनमें विरोध आ जायगा । जिनवचनमें  
पुनरुक्त दोष भी संभव नहीं है, क्योंकि, जिनवचन मंदबुद्धि शिष्योंका भी अनुग्रह करनेवाला  
होनेसे पुनः पुनः कथन करनेकी सफलता है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देव असंख्यात  
जगश्रेणीप्रमाण हैं जो असंख्यात जगश्रेणियोंका प्रमाण जगप्रतरके असंख्यातवें भाग  
है । उन असंख्यात जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची, स्रच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय  
वर्गमूलसे गुणा करने पर जितना लब्ध आवे, उतनी है ॥ ६८ ॥

सूत्रमें 'जगप्रतरका असंख्यातवां भाग' यह निर्देश जगप्रतर आदि उपरिम विक्ल्पोंके  
निराकरण करनेके लिये दिया है । 'असंख्यात जगश्रेणियां' इसप्रकारका निर्देश जगश्रेणीसे  
नीचेके असंख्यातासंख्यात विक्ल्पोंकी निवृत्तिके लिये दिया है । उन श्रेणियोंके प्रमाणका  
ज्ञान करानेके लिये स्रच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको उसीके तृतीय वर्गमूलसे गुणा करने पर जो  
लब्ध आवे उतनी उन श्रेणियोंकी विष्कंभसूची कही । 'गुणिदेण' यह पद प्रथमा विभक्तिरूप  
ज्ञानना चाहिये, जिससे यह तात्पर्य हुआ कि स्रच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे  
गुणित करने पर जो लब्ध आवे उतनी सौधर्म और ऐशान कल्पवासी मिथ्यादृष्टि देवोंकी  
विष्कंभसूची होती है । अथवा, स्रच्यंगुलके तृतीय वर्गमूलसे प्रथम वर्गमूलके भाजित करने  
पर सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची होती है । ऊपर जिसप्रकार  
नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके खंडित आदिकका कथन कर आये हैं उसीप्रकार इस विष्कंभ-  
सूचीके खंडित आदिकका कथन करना चाहिये ।



संपहि खुदाबंधेण सामण्णेण जीवपमाणपरूवण जाओ विक्खंभसूईओ  
 णेरइय-सोहम्मीसाण-भवनवासियदेवाणं वुत्ताओ ताओ चेव विक्खंभसूईओ एत्थ  
 वि जीवट्टाणे मिच्छाइट्ठिपरूवणाए अण्णुणाहियाओ वुत्ताओ । तं जहा-  
 अंगुलस्स वग्गमूलं विदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा खुदाबंधे णेरइयविक्खंभ-  
 सूई उत्ता । तासिं सेटीणं विक्खंभसूई अंगुलं अंगुलवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा  
 भवनवासियविक्खंभसूई खुदाबंधे उत्ता । तासिं सेटीणं विक्खंभसूई अंगुलविदियवग्गमूलं  
 तदियवग्गमूलगुणिदेण इदि एसा सोहम्मीसाणदेवविक्खंभसूई खुदाबंधे वुत्ता । एत्थ वि  
 णेरइय-भवनवासिय-सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठिणं विक्खंभसूईओ एदाओ चेव वुत्ताओ ।  
 एदं च ण घड्दे, सामण्णविसेसपरूवणाणमेगत्तविरोहादो । तम्हा एत्थ वुत्तविक्खंभसूईहि  
 ऊणियाहि खुदाबंधवुत्तविक्खंभसूईहि वा अधियाहि होदव्वमिदि चोदगो मणदि । एत्थ  
 परिहारो वुच्चदे । जीवट्टाणवुत्तविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ खुदाबंधमिह वुत्तविक्खंभसूईओ

शंका—सामान्यसे जीवराशिके प्रमाणका प्ररूपण करनेवाले खुदाबंधके द्वारा  
 नारकी, सौधर्म-पेशान और भवनवासी देवोंकी जो विष्कंभसूचियां कही हैं, न्यूनता और  
 अधिकतासे रहित वे ही विष्कंभसूचियां यहां जीवट्टाणमें भी नारकी, सौधर्म-पेशान और  
 भवनवासी देवोंसंबन्धी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणमें कहीं हैं । आगे इसी विषयका  
 स्पष्टीकरण करते हैं—सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर  
 जितना लब्ध आवे उतनी खुदाबंधमें सामान्य नारकियोंकी विष्कंभसूची कही है । भवन-  
 वासियोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगश्रेणियां बतलाई हैं उन जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची  
 सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जितना लब्ध आवे उतनी है,  
 यह भवनवासियोंकी विष्कंभसूची खुदाबंधमें कही है । सौधर्म और पेशान कल्पवासी  
 देवोंके प्रमाणरूपसे जो असंख्यात जगश्रेणियां बतलाई हैं उन जगश्रेणियोंकी विष्कंभसूची,  
 सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलको तृतीय वर्गमूलसे गुणित करके जो लब्ध आवे, उतनी है,  
 यह सौधर्म और पेशान कल्पवासी देवोंकी विष्कंभसूची खुदाबंधमें कही है । यहां जीवट्टाणमें  
 भी नारकी, भवनवासी और सौधर्म-पेशान मिथ्यादृष्टि जीवोंकी विष्कंभसूचियां ये ही  
 (खुदाबंधमें कही हुई) कही हैं । परंतु यह कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, सामान्य  
 प्ररूपणा और विशेष प्ररूपणा इन दोनोंको एक माननेमें विरोध आता है । अतएव जीवट्टाणमें  
 जो विष्कंभसूचियां कही गई हैं वे खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियोंसे न्यून होनी चाहिये  
 या खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां यहां जीवट्टाणमें कही गई विष्कंभसूचियोंसे अधिक  
 होनी चाहिये, ऐसा शंकाकारका कहना है ?

समाधान—आगे इस शंकाका परिहार करते हैं—जीवट्टाणमें जो विष्कंभसूचियां  
 कही गई हैं वे संपूर्ण हैं और खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां जीवट्टाणमें कही गई  
 विष्कंभसूचियोंसे साधिक हैं ।

साधियाओ । तं कथं जाणिज्जेद ? अण्णहा वग्गट्ठाणे हेट्ठिम-उवरिमवियप्पाणुववत्तीदो । खुदाबंधमिह वुत्तविकखंभस्सईओ संपुण्णाओ किण्ण होंति त्ति चे ण, तहाविधगुरूवदेसा-भावा । अहवा एत्थ वुत्तविकखंभस्सईओ देस्सणाओ खुदाबंधमिह वुत्तविकखंभस्सईओ संपुण्णाओ । कुदो ? अट्ठरूवे वग्गिज्जमाणे सोहम्मीसाणविकखंभस्सच्चिं पावदि, सा सहं वग्गिदा णेरइयविकखंभस्सई पावदि, सा सहं वग्गिदा भवणवासियविकखंभस्सच्चिं पावदि त्ति परियम्मे वग्गसमुट्ठिसामण्णविकखंभस्सच्चिपादादो खुदाबंधे वि घणधारुप्पण्ण-विकखंभस्सईणं पादोवलंभादो वा । जीवट्ठाणमिच्छाइट्ठिविकखंभस्सच्चिपादो वि खुदाबंध-सामण्णविकखंभस्सच्चिपादेण समाणो उवलंभदे चे ण, द्वयट्ठियणयदो समाणतुवलंभा । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंविज्जमाणे णियमेण तत्थ अत्थि विसेसो । खुदाबंधुवसंहार-जीवट्ठाणस्स मिच्छाइट्ठिविकखंभस्सईए सामणविकखंभस्सच्चिसमाणाच्चविरोहा । एवं खुदा-बंधमिह वुत्तसव्वअवहारकाला जीवट्ठाणे सादिरया वत्तव्वा । एदं वक्खानमेत्थ पधाणमिदि गेण्हदव्वं ण पुव्विहं ।

शंका — यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान — यदि ऐसा न माना जाय तो वर्गस्थानमें अधस्तन और उपरिम विकल्प नहीं बन सकता है ।

शंका — खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां संपूर्ण क्यों नहीं होती हैं ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, इसप्रकारका गुरुका उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अथवा, यहां जीवट्ठाणमें कही गई विष्कंभसूचियां कुछ कम हैं और खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां संपूर्ण हैं, क्योंकि, अष्टरूपके उत्तरोत्तर वर्ग करने पर सौधर्म और पेशान देवोंकी विष्कंभसूचीका प्रमाण प्राप्त होता है । उसका ( सौधर्मवृत्तिकसंबन्धी विष्कंभसूचीका ) उसीसे वर्ग करने पर नारक विष्कंभसूची प्राप्त होती है । उसका ( नारक विष्कंभसूचीका ) उसीसे वर्ग करने पर भवनवासी देवोंकी विष्कंभसूची प्राप्त होती है, इसप्रकार परिकर्ममें वर्गस्थान प्रकरणमें कही गई सामान्य विष्कंभसूचियोंके अभिप्रायसे अथवा खुदाबंधमें भी घनधारामें उत्पन्न हुई विष्कंभसूचियोंके अभिप्रायके पाये जानेसे यह जाना जाता है कि खुदाबंधमें कही गई विष्कंभसूचियां संपूर्ण हैं ।

शंका — जीवट्ठाणमें कहे गये मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचियोंके अभिप्रायसे खुदा-बंधमें कहा गया सामान्य विष्कंभसूचियोंका अभिप्राय समान पाया जाता है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, इन दोनों कथनोंमें द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा समानता पाई जाती है । पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो नियमसे उन दोनों कथनोंमें विशेषता है ही, क्योंकि, खुदाबंधके उपसंहाररूपसे जीवट्ठाणमें कही गई मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचियोंसे सामान्य विष्कंभसूचियोंके समान माननेमें विरोध आता है । इसीप्रकार खुदाबंधमें कहे गये संपूर्ण अवहारकाल जीवट्ठाणमें कुछ अधिक जान लेना चाहिये । यह व्याख्यान यहां पर प्रधान है, इसलिये इसका ग्रहण करना चाहिये, पहलेके व्याख्यानका नहीं ।

**सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि ओघं**  
॥ ६९ ॥

सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए इदि च दुवयणमणुवड्ठे । एसा दब्ब-  
ट्ठियणयमस्सिऊण परूवणा उत्ता । पज्जवट्ठियणयमस्सिऊण एदेसिं परूवणं  
पुरदो भणिस्सामो ।

**सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार-सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा**  
**सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं भंगो ॥ ७० ॥**

एत्थ जहा इदि वुत्ते तं जहा इदि एदस्स अत्थो ण वत्तव्वो किं तु उवमत्थे जहा  
सदो घेत्तव्वो । जहा सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणं पमाणं परूविदं तथा सणक्कुमारादि-  
देवाणं पमाणं परूवेदव्वं । णवरि आइरियपरंपरागदोवदेसेण विसेसपरूवणं कस्सामो ।  
तं जहा—

सणक्कुमार-माहिंदे जगसेढीए भागहारो सेढीए हेहा एक्कारसवग्गमूलं । वम्ह-वम्हो-  
त्तरकप्पे णवमवग्गमूलं । लांतव-कापिट्ठकप्पे सत्तमवग्गमूलं । सुक्क-महासुक्ककप्पे पंचमवग्ग-

सासादनसम्यग्दट्ठि, सम्यग्मिध्यादट्ठि और असंयतसम्यग्दट्ठि सौधर्म-ऐशान  
कल्पवासी देव सामान्य प्ररूपणाके समान पत्थोपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ ६९ ॥

‘सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु देवगईए’ इन दो शब्दोंकी यहां अनुवृत्ति होती है ।  
यहां द्रव्यार्थिक नयका आश्रय करके यह प्ररूपणा कही है । पर्यार्थिक नयका आश्रय करके  
इतकी प्ररूपणा आगे कहेंगे ।

जिसप्रकार सातवीं पृथिवीमें नारकियोंकी प्ररूपणा कही गई है उसीप्रकार  
सनत्कुमारसे लेकर शतार और सहस्रार तक कल्पवासी देवोंमें मिध्यादट्ठि देवोंकी  
प्ररूपणा है ॥ ७० ॥

स्वयं ‘जहा’ इसप्रकार कहने पर ‘तं जहा’ इसका अर्थ नहीं कहना चाहिये, किंतु  
यहां उपमारूप अर्थमें ‘जहा’ शब्दका ग्रहण करना चाहिये । इससे यह अभिप्राय हुआ कि  
जिसप्रकार सातवीं पृथिवीमें नारकियोंका प्रमाण कहा गया है उसीप्रकार सानत्कुमार आदि  
देवोंके प्रमाणका कथन करना चाहिये । अब आगे आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशके  
अनुसार विशेष प्ररूपणा करते हैं । वह इसप्रकार है—

सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीके नीचे ग्यारहवां वर्ग-  
मूल है । ब्रह्मा और ब्रह्मोत्तर कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका नौवां वर्गमूल है । लांतव और  
कापिट्ठ कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका सातवां वर्गमूल है । सुक्क और महासुक्क कल्पमें

मूलं । सदार-सहस्सारकप्पे चउत्थवग्गमूलं भागहारो हवदि । सासणदीणं पमाणपरूवणा वि सत्तमपुढविपरूवणाए समाणा । विसेसपरूवणं पुरदो वत्तइस्सामो ।

आणद-पाणद जाव णवगेवेज्जविमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठि-  
प्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदो-  
वमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहु-  
त्तेण ॥ ७१ ॥

मुहुत्तसदो कालवाची चेव, तेण पुध कालग्गहणं ण कदं । दव्वपमाणपरूवणाए चेव अत्थणिच्छओ जादो त्ति एत्थ खेत्त-कालेहि परूवणा ण कदा । ' पलिदोवमस्स असं-  
खेज्जदिभागो ' इदि सामण्णेण बुत्ते दव्वपमाणेण सुट्ठु णिच्छओ ण जादो त्ति तत्थ  
णिच्छयउप्पायणट्ठं ' एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ' त्ति भागहारपरूवणा विहज्ज-  
माणपरूवणा च कदा । एत्थ आहिरिओवएसमस्सिऊण विसेसवक्खाणं पुरदो भणिस्सामो ।

अणुहिस जाव अवगाइदविमाणवासियदेवेसु असंजदसम्माइट्ठि  
दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि  
पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ॥ ७२ ॥

जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका पांचवां वर्गमूल है । शतार और सहस्रार कल्पमें जगश्रेणीका भागहार जगश्रेणीका चौथा वर्गमूल है । सानत्कुमारसे लेकर सहस्रारतक सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती देवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा भी सातवां पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणाके समान है । विशेष प्ररूपणाको आगे बतलावेंगे ।

आनत और प्राणतसे लेकर नौ ग्रैवेयक तक विमानवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्य-प्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीव-राशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७१ ॥

मुहूर्त शब्द कालवाची ही है, इसलिये सूत्रमें पृथक् रूपसे काल पदका ग्रहण नहीं किया । प्रकृतमें द्रव्यप्रमाणके प्ररूपण करनेसे ही अर्थात् निश्चय हो जाता है, इसलिये यहाँ पर क्षेत्रप्रमाण और कालप्रमाणके द्वारा प्ररूपणा नहीं की । ' पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ' इसप्रकार सामान्यसे कहने पर द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा अच्छी तरह निश्चय नहीं हो पाता है, इसलिये इस विषयमें निश्चयके उत्पन्न करानेके लिये ' इन जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ' इसप्रकार भागहारप्ररूपणा और विप्रज्यमाणराशिकी प्ररूपणा की । इस विषयमें आचार्योंके उपदेशका आश्रय करके विशेष व्याख्यान आगे कहेंगे ।

अनुदिश विमानसे लेकर अपराजित विमानतक उनमें रहनेवाले असंयतसम्य-

एत्थ असंजदसम्माइड्ढिद्वपरूवणं सेसगुणद्वाणाणं तत्थाभावं सूचेदि । ण च संतं ण परूवेति जिणा, तेसिमजिणत्तप्पसंगादो । एत्थ आइरिओवएसेण सव्वदेवगुण-पडिववणाणं विसेसपरूवणं भणिससामो । तं जहा- देवअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकाल-मावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडं तम्हि चेव पक्खिचे सोहम्मीसाण-असंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्माभिच्छाड्ढिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो । तम्हि संखेजरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणकालभेदादो उभयगुणं पडिवज्जमाणरासिविसेसदो वा । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सण-क्कुमार-माहिदअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । कुदो ? सुहक्कम्माहियजीववहुत्ता-भावादो । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सारो ति । तस्स सासणसम्माइड्ढिअवहारकाल-मावलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे जोइसियदेवअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि ।

गृष्टि देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं । इन उपर्युक्त जीवराशियोंके द्वारा अन्तर्गृहर्तसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ ७२ ॥

इन अनुदिश आदि विमानोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिकी प्ररूपणा वहां पर शेष गुणस्थानोंके अभावको सूचित करती है । यदि कोई कहे कि यहां पर शेष गुणस्थानोंके प्रमाणकी प्ररूपणा नहीं की होगी सो बात नहीं है, क्योंकि, जिनदेख विद्यमान अर्थात् प्ररूपण नहीं करते हैं ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर उन्हें अजिनपनेका प्रसंग आ जाता है । अब यहां आचार्योंके उपदेशानुसार संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी विशेष प्ररूपणाको कहते हैं । वह इसप्रकार है— देव असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको उसी देव असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्दृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर सौधर्म और ऐशानसंबन्धी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उपक्रमण कालसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंके उपक्रमण कालमें भेद है । अथवा, उक्त दोनों गुणस्थानोंको प्राप्त होनेवाली राशियोंमें विशेषता है । सौधर्म और ऐशान सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सानकुमार और माहेंद्र असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, ऊपर शुभ कर्मोंकी बहुलता होनेसे बहुत जीव नहीं पाये जाते हैं । इसीप्रकार शतार सहस्रार रूपतक ले जाना चाहिये । उन शतार-सहस्रार रूपके सासादनसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर ज्योतिषी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि,

कुदो ? तत्थ वोग्गाहिदादिमिच्छत्तेण सह उप्पण्णदेवेसु जिणसासणपडिक्कूलेसु बहूणं सम्मत्तं पडिवज्जमाणजीवाणमसंभवादो । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । एत्थ कारणं पुवं व वत्तवं । एवं वाणवेंतर-भवणवासियदेवेसु णेयवं । कुदो ? मिच्छत्तोच्छाइदिट्ठीसु भूओसम्मईसणुप्पत्तिसंभवाभावादो । भवणवासिय-सासणसम्माइडिअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद-पाणदअसंजद सम्माइडिअवहारकालो होदि । कुदो ? सुहकम्माणं दीहाऊणं बहूणमसंभवा । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदअसंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । कारणं उवरिम-उवरिमकप्पेसु उप्पज्जमाणसुहकम्माहियदीहाउवजीवेहिंतो हेडिमहेडिमकप्पेसु थोवपुणेण डहरभवट्ठिदीसु उप्पज्जमाणजीवाणं बहुत्तोवलंभादो । होंता वि असंखेज्जगुणा चेय । कारणं सब्बीजीभूदमणुसपज्जत्तरासिम्हि संखेज्जत्तुवलंभादो । एवं णेयवं जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइडिअवहारकालो चि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आणद-

वहां पर व्युद्ग्राहित आदि मिथ्यात्वके साथ उत्पन्न हुए और जिन शासनके प्रतिकूल देवोंमें सम्यक्त्वकी प्राप्ति होनेवाले बहुत जीवोंका अभाव है । उन असंयतसम्यग्दृष्टि ज्योतिषी देवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टि ज्योतिषियोंका अवहारकाल होता है । यहां पर उत्तरोत्तर संख्याद्धानि या अवहारकालकी वृद्धिके कारणका कथन पहलेके समान कर लेना चाहिये । इसीप्रकार वाणव्यन्तर और भवनवासी देवोंमें क्रमसे अवहारकाल ले जाना चाहिये, क्योंकि, जिनकी दृष्टि मिथ्यात्वसे आच्छादित है उनमें बहुत सम्यग्दृष्टियोंकी उत्पत्ति संभव नहीं है । भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आनत और प्राणतकल्पके असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, शुभ कर्मवाले दीर्घायु जीव बहुत नहीं होते हैं । इस असंयतसम्यग्दृष्टिसंबन्धी अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युत कल्पवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपरिम उपरिम कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले शुभ कर्मोंकी अधिकतासे दीर्घायुवाले जीवोंसे नीचे नीचेके कल्पोंमें स्तोत्र पुण्यसे स्तोत्र भवस्थितिमें उत्पन्न होनेवाले जीव अधिक पाये जाते हैं । नीचे नीचे अधिक जीव होते हुए भी वे असंख्यातगुणे ही होते हैं, क्योंकि, बारहवें कल्पसे लेकर ऊपरके कल्पोंमें जीव मनुष्य राशिसे आकर ही उत्पन्न होते हैं । इसलिये ऊपरके कल्पोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके लिये मनुष्यराशि बीजीभूत है और मनुष्य राशि संख्यात ही होती है, अतः ऊपर ऊपरके कल्पोंसे नीचेके कल्पोंमें जीव असंख्यातगुणे हैं । यही क्रम उपरिम उपरिम प्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके असंयत-सम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका



पाणदमिच्छाद्विअवहारकालो होदि । कुदो ? जिणलिंगं घेत्तण दव्वसंजमेण द्विदसंजदणं वट्ठणं मणुसेसु अणुवलंभादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदमिच्छाद्विअवहारकालो होदि । एत्थ कारणं पुवं व वत्तवं । एवं गेयवं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जमिच्छाद्विअवहारकालो ति । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे णवाणुहिसअसंजदसम्माद्विअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे अणुत्तरविजय-वहजयंत-जंयत-अवराहद-विमाणवासियअसंजदसम्माद्विअवहारकालो होदि । तमावलि याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आणद-पाणदसम्माद्विअवहारकालो होदि । कुदो ? उवक्कमणजीवाणं थोवत्तादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदसम्माद्विअवहारकालो होदि । एवं गेयवं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसम्माद्विअवहारकालो ति । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आणद-पाणदसासणसम्माद्विअवहारकालो होदि । कुदो ? थोवुवक्कमणकालत्तादो । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे आरणच्चुदसासणसम्माद्विअवहारकालो होदि । एवं गेयवं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माद्विअवहारकालो ति । एदेहि अवहारकालेहि खंडि-

अवहारकाल होता है, क्योंकि, जिनलिंगको स्वीकार करके द्रव्यसंयमके साथ स्थित हुए बहुतसे संयत्ताका मनुष्योंमें सद्भाव नहीं पाया जाता है । आनत और प्राणतसंबन्धी मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । यहाँ कारण पहलेके समान कहना चाहिये, अर्थात् जिनलिंगको स्वीकार करके द्रव्यसंयमके साथ बहुतसे मनुष्य नहीं होते हैं, इसलिये आरण और अच्युतमें कम मिथ्यादृष्टि पाये जाते हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकाल तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर नौ अनुदिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलोंके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, यहाँ पर सम्यग्मिथ्यात्वके साथ उत्पन्न होनेवाले जीव थोड़े हैं । आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टिसंबन्धी अवहारकालतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, सासादनसम्यग्दृष्टियोंका उपक्रमणकाल स्तोका है । आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम

१. वेवाणं अवत्ता होति असंखेण ताणि अवहरिय । तथेव य पक्खिचे सोहमीसाणं अवहा ।। सोहम्म-

दादओ जाणिय वचच्चा । सव्वदेवगुणपडिवण्णाणं ओघमंगो इदि भणिय आणदादि-  
उवरिमगुणपडिवण्णाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ' एदेहि पलिदोवममवहिरदि  
अंतोमुहुत्तेण ' इदि विसेसिय किमट्ठं वुच्चदे ? एवं भणंतस्स अहिप्पाओ परुविज्जदे ।  
तं जहा— ओघमंगो इच्चेदेण आणद्वत्तादो सुत्तमिदमणत्थयं । अणत्थयं च जाणावयं  
होदि । किमेदेण जाणाविज्जदि ? सोहम्मअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो आवलियाए  
असंखेज्जदिभागो । तत्थतणखइयसम्माइट्ठिणमवहारकालो संखेज्जावलियमेत्तो । एदे दो  
वि अवहारकाले मोत्तूण अवसेसगुणपडिवण्णाणं सव्वे अवहारकाला असंखेज्जावलियेत्ता  
विउलत्तवाइणो अंतोमुहुत्तसहेण वुच्चंति त्ति जाणाविदं, तदो पाणत्थयमिदं सुचं ।

प्रेवेयकके सासादनसम्यग्दष्टि अवहारकालतक ले जाना चाहिये । इन अवहारकालोंके द्वारा  
संज्ञित आदिकका कथन जान कर करना चाहिये ।

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान है ऐसा कथन  
करके ' गुणस्थानप्रतिपन्न इन आनत आदि देवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पश्योपम अपहृत  
होता है ' इतनेसे विशेषित करके गुणस्थानप्रतिपन्न आनतादि देवोंका प्रमाण पश्योपमके  
असंख्यातवर्ग भागप्रमाण किसलिये कहा । आगे ऐसा कथन करनेवालेके अभिप्रायका प्ररूपण  
करते हैं । वह इसप्रकार है—

सर्व गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंका प्रमाण ' सामान्य प्ररूपणाके समान है ' इतनेमात्रसे  
संबन्धित होनेके कारण यह सूत्र अनर्थक है, फिर भी जो सूत्र अनर्थक होता है वह किसी  
स्वतन्त्र नियमका श्रापक होता है ।

शंका—इससे क्या श्रापन होता है ?

समाधान—सौधर्म असंयतसम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल आचलीके असंख्यातवर्ग भाग  
है । वहाँके क्षायिक सम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल संख्यात आचलीमात्र है । इन दो अवहार-  
कालोंको छोड़कर शेष गुणस्थानप्रतिपन्नोके संपूर्ण अवहारकाल असंख्यात आचलीमात्र हैं,  
अवहारकालकी विपुलताको माननेवाले आचार्य अन्तर्मुहूर्त शब्दसे ऐसा कहते हैं, यह इस  
सूत्रसे श्रापित होता है, इसलिये यह सूत्र अनर्थक नहीं है ।

साणहारमसंखेण य संखरूवसंगुणिदे । उवरि असंजदमिस्सय-साणसम्माण अवहारा ॥ सोहम्मादीसां जेतिसि-  
मवण-तिरिय पुट्ठोसु । अवरिद-मिस्से संखं संखांसखगुण साण्णे देवे ॥ परमभरासाणहारा आणदसम्माण आणप्पहुदि ।  
अतिमनेवेस्संत सम्माणमसंखसंखगुणहारा ॥ तच्चो ताणुसाणं बामाणमसुदिसाणं विजयादि । सम्माणं संखगुणो  
आणदमिस्से असंखगुणो । तच्चो संखेज्जगुणो साणसम्माणं हीदि संखगुणो । उपट्ठाणे कम्मसो पणप्परसत्तकवद्द-  
संदिट्ठो ॥ गो. जी. १६५-१७०.



सर्ववृत्तसिद्धिविमानवासियदेवा द्रव्यप्रमाणेण केवडिया,  
संखेज्जा ॥ ७३ ॥

मणुसिणीरासीदो तिउणमेचा हवंति ।

भागभाग वचइस्सामो । सर्वदेवरासिमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा जोइ-  
सियदेवमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा वाणवेंतरमिच्छाइट्ठी  
होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणमिच्छाइट्ठी होंति । एवं जाव  
सदार-सहस्सारमिच्छाइट्ठी चि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा सोहम्मीसाणअसंजद-  
सम्माइट्ठी होंति । सेस संखेज्जखंडे कए बहुभागा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसम-  
संखेज्जखंडे कए बहुभागा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं सणक्कुमार-माहिंदप्पहुडि  
जाव सहस्सरो चि णेयव्वं । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवनवासिएत्ति णेयव्वं । पुणो  
सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसस्स  
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं

सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥७३॥

सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव मनुष्यनियोंके प्रमाणसे तिगुणे हैं ।

आगे भागाभागको बतलाते हैं— सर्व देवराशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे  
बहु भागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभाग वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार शतार और  
सहस्रार कल्पके मिथ्यादृष्टि देवों तक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टि  
प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण  
सौधर्म और पेशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड  
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वहाँके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात  
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण वहाँके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार  
सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पले लेकर सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । सहस्रार कल्पसे  
आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासी देवों तक यही क्रम ले जाना चाहिये । पुनः  
भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात  
खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके  
संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं ।

जाबुवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदमिच्छा-  
इट्ठिणो होंति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिणो होंति । एवं  
णेयव्वं जाबुवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । सेसस्स संखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुदिस-  
असंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेससंखेज्जखंडे कए बहुभागा अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-  
अवराइदअसंदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आणद-पाणदसम्मा-  
मिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुदसम्माभिच्छाइट्ठिणो  
होंति । एवं णेयव्वं जाबुवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा  
आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुभागा आरणच्चुद-  
सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जाबुवरिममज्झिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठि त्ति ।  
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा उवरिमउवरिमगेवज्जसासणसम्माइट्ठिणो होंति । एय-  
खंडं सब्बट्ठसिद्धिअसंजदसम्माइट्ठी होंति । एवं भागाभागं समत्तं ।

इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयक तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके असं-  
यतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर  
बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने  
पर उनमेंसे बहुभाग आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम  
प्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके मिथ्यादृष्टिप्रमाणके अनन्तर  
जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुदिशके  
असंयतसम्यग्दृष्टि होते हैं । शेषके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग विजय, वैजयन्त,  
जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानोंके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेषके  
संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक  
भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्या-  
दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयक तक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम  
प्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने  
पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके  
संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव  
हैं । इसीप्रकार उपरिम मध्यम प्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना  
चाहिये । उपरिम मध्यम प्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग  
शेष रहे उसके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम प्रैवेयकके  
सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक खंडप्रमाण सर्वार्थसिद्धिके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । इस-  
प्रकार भागाभाग समाप्त हुआ ।

अप्पावहुअं तिविहं, सत्थाणं परत्थाणं सच्चपरत्थाणं चेदि । सत्थाणे पयदं । सच्चत्थोवो देवमिच्छाहिट्ठिअवहारकालो । विक्खंभस्सई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभस्सई असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? अवहारकालवग्गो । अहवा असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्थियमेत्ताणि ? पण्णडिसहस्स-पंचसय-छत्तीसवग्गसच्चिअंगुलमेत्ताणि । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दच्चमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभस्सई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । सासणादीणं मूलोषभंगो । एवं जोइसिय-वाणवैतराणं पि णेयव्वं । भवणवासियाणं सत्थाणे सच्चत्थोवा मिच्छाहिट्ठि-विक्खंभस्सई । अवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? विक्खंभस्सई । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो । विक्खंभस्सचिवग्गो । अहवा घणंगुलं । सेढी

अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अल्पबहुत्व, परस्थान अल्पबहुत्व और सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व । इनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयका निरूपण करते हैं- देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहाकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा, असंख्यात घनांगुल गुणकार है । वे कितने हैं ? पैंसठ हजार पांचसौ छत्तीसके वर्गरूप सूच्यंगुलप्रमाण हैं । देव विष्कंभसूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगश्रेणीसे मिथ्यादृष्टि देवोंका प्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे घनलोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । देव सासा-दनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य प्ररूपणाके समान है । इसीप्रकार ज्योतिषी और वाणज्यन्तरोका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व ले जाना चाहिये । भवनवासियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वमें सबसे स्तोक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची है । उससे अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है प्रतिभाग क्या है ? विष्कंभसूची प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका वर्ग प्रतिभाग है । अथवा घनांगुल गुणकार है । जगश्रेणी अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या

असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकखंभसूई । द्ववमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । सासणादीणं मूलोधमंगो । सोहम्मादि जाव उवरिमगेवज्जो चि सत्थाणप्पावहुगं जाणिय गेयव्वं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं गेयव्वं जाव पलिदोवमो चि । तदो उवरि मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जजाणि स्रचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । उवरि सत्थाणभंगो । भवणवासियाणं सव्वत्थोवो असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । एवं गेयव्वं जाव पलिदोवमो चि । तदो उवरि भवणवासियमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविकखंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमो । अहवा पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो । असंखेज्जजाणि स्रचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? स्रचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलिदोवमो । उवरि

है ? अपनी विक्कंभसूची गुणकार है । उन्हींका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? विक्कंभसूची गुणकार है । द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । सासादनसम्यग्दष्टि आदिका मूलोधके समान स्वस्थान अल्पबहुत्व है । सौधर्मसे लेकर उपरिम प्रैवेयकतक स्वस्थान अल्पबहुत्व जान कर ले जाना चाहिये ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है—असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूर्यगुलप्रमाण है । असंख्यात सूर्यगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूर्यगुलका असंख्यातवां भाग उनका प्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपमका संख्यातवां भाग प्रतिभाग है । इसके ऊपर अपने स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । भवनवासियोंके परस्थानका कथन करने पर असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमके ऊपर भवनवासी मिथ्यादृष्टि विक्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विक्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है, जो असंख्यात सूर्यगुल-प्रमाण है । वे कितने हैं ? सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं । प्रतिभाग क्या है ? पल्योपम प्रतिभाग है । इसके ऊपर वाणव्यन्तरोंसे लेकर उपरिम उपरिम प्रैवेयकतक अपने

सगसत्थाणंभंगो (वाणवेंतरादि जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो चि।) उवरि परत्थाणं गत्थि, तत्थ सेसगुणट्ठाणाणमभावादो। सव्वट्ठे सत्थाणं पि गत्थि एगपदत्थादो।

सव्वपरत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा सव्वट्ठसिद्धि विमाणवासियदेवा। सोहम्मीसाण- असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदि- भागस्स संखेज्जदिभागो। को पडिभागो? सव्वट्ठसिद्धिदेवसम्मादिट्ठि चि। तत्थेव सम्मा- मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो। तदो सणक्कुमार-महिंदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो। एवं गेयव्वं जाव सदर- सहस्सारेत्ति। तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवनवासियाणं पि कमेण गेयव्वं। भवनवासिय-

स्वस्थानके समान है। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकके ऊपर परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वहां पर शेष गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं। सर्वार्थसिद्धिमें एक पदार्थ होनेसे स्वस्थान अल्पबहुत्व भी नहीं है।

विशेषार्थ—प्रतियोंमें देवोंके स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके पाठ गड़बड़ और कुछ छूट हुए प्रतीत होते हैं। बहुत कुछ विचारके पश्चात् दूसरे प्रकरणोंके अल्पबहुत्वके विभागानुसार यहां भी उन्हें व्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है। प्रतियोंमें पहले सामान्य देवोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व कहकर अनन्तर इसी प्रकार वाणव्यन्तर और ज्योतिषियोंका है, ऐसा कहा है। तदनन्तर भवनवासियोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व कह कर सौधर्मादि उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक स्वस्थान अल्पबहुत्वको समझकर लगा लेनेकी सूचना की है। अनन्तर अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण और सर्वार्थसिद्धिमें दोनोंके अभावका कारण बतलाया है।

इन अल्पबहुत्वोंको व्यवस्थित कर देने पर भी सौधर्मादि उपरिम उपरिम ग्रैवेयकतक परस्थानकी कोई व्यवस्था नहीं पाई जाती है। अनुदिशादिमें परस्थानके अभावका कारण बतलाया है, पर स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है। इसे देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि यहां कुछ पाठ भी छूट गया है।

अब सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं—सर्वार्थसिद्धि विमान-वासी देव सबसे स्तोक हैं। उनसे सौधर्म और पेशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग, गुणकार है। प्रतिभाग क्या है? सर्वार्थसिद्धिके सम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है। वहाँ पर सम्यगिमध्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। सम्यगिमध्यादृष्टियोंके अवहारकालसे सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है। सौधर्म और पेशान कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये। शतार और सहस्रार कल्पके आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासियोंका भी क्रमसे ले जाना चाहिये।

सासणाण अवहारकालादो आणद-पाणदअसंजदसम्माइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदअसंजदसम्माइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइडिअवहारकालो ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाइडिअवहार-कालो संखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदमिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तदो अणुदिसअसंजदसम्माइडिअवहारकालो संखेज्ज-गुणो । तदो अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइडिअवहारकालो संखेज्ज-ज्जगुणो । तदो आणद-पाणदसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुदसम्मामिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव उवरिमउवरिम-गेवज्जो ति । तदो आणद-पाणदसासणसम्माइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तदो आरणच्चुद-सासणसम्माइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो ति । तदो उवरि तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । उवरिममज्झिमसासणसम्माइडिद्वयं संखेज्जगुणं । तदो उवरिमहेट्ठिमसासणसम्माइडिद्वयं संखेज्जगुणं । एवं गेयव्वं

भवनवासी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । उससे आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहार-कालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे अनु-दिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इससे विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यात-गुणा है । इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इससे आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसी-प्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । तदनन्तर उपरिम उपरिम प्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालके ऊपर उसी उपरिम उपरिम प्रैवेयकका सासादनसम्यग्दृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । इससे उपरिम मध्यम प्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । इससे उपरिम अधस्तन प्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमरूपसे जबतक सौधर्म और पेशान कल्पके असंयत-



अवहारकालपडिलोमेण जाव सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइडिद्वं पत्तं ति । तदो पलि-  
दोवममसंखेज्जगुणं । तदो उवरि सोहम्मीसाणविक्खंसंभसूची असंखेज्जगुणा । को  
गुणगारो ? सगविक्खंसंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमपडिभागो ।  
अहवा स्रुचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलाणि ।  
केत्तियमेत्ताणि ? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पलि-  
दोवमपडिभागो । भवणवासियमिच्छाइडिद्विविक्खंसंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ?  
पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि स्रुचिअंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ?  
तदियवग्गमूलमेत्ताणि । को पडिभागो ? सोहम्मीसाणमिच्छाइडिद्विविक्खंसंभसूई व ।  
मिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? स्रुचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो  
संखेज्जाणि स्रुचिअंगुलपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवणवासियमिच्छाइडि-  
विक्खंसंभसूई पडिभागो । जोइसियदेवमिच्छाइडिअवहारकालो विसेसाइओ । केवडिओ  
विसेसो ? पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो । वाणवैतरमिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।  
को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सणक्कुमार-मार्हिंदमिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।

सम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य प्राप्त होवे तबतक ले जाना चाहिये । सौधर्म और पेशान कल्पके  
असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पद्योपम असंख्यातगुणा है । पद्योपमके ऊपर सौधर्म और  
पेशान कल्पकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी  
विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पद्योपम प्रतिभाग है ।  
अथवा, सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूर्यगुलके असंख्यात  
द्वितीय वर्गमूलप्रमाण है । सूर्यगुलके उन असंख्यात द्वितीय वर्गमूलका प्रमाण कितना  
है ? तीसरे वर्गमूलके असंख्यातवां भाग है । प्रतिभाग क्या है ? पद्योपम प्रतिभाग है । सौधर्म  
और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची  
असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? प्रतरांगुलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात  
सूर्यगुलप्रमाण है । उन असंख्यात सूर्यगुलोंका प्रमाण कितना है ? तृतीय वर्गमूलमात्र  
है । प्रतिभाग क्या है ? सौधर्म और पेशान कल्पकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीके  
प्रतिभागेके समान प्रतिभाग है । सामान्य देव मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है ।  
गुणकार क्या है ? सूर्यगुलके असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूर्यगुलके संख्यात प्रथम  
वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची प्रतिभाग  
है । इस देव मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी देवोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल  
विशेष अधिक है । कितना विशेष है ? प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग विशेष है । ज्योतिषियोंके  
मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे वाणव्यन्तरोंके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है ।  
गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे  
सानक्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार

को गुणगारो ? सेटिएकारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि वारसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिअवहारकालो पडिभागो । तस्सुवरि वग्ग-वग्गोत्तर-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेटिणवमवग्गमूलस्स असंखे-ज्जदिभागो असंखेज्जाणि दसमवग्गमूलाणि । लांतव-काविट्टमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सत्तमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि अट्ठम-वग्गमूलाणि । सुक-महासुकमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पंचमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि छट्ठमवग्गमूलाणि । सदार-सहससार-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पंचमवग्गमूलं । तदो सदार-सहससारद्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगदव्वस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालपडिभागो । एवं णेयव्वं पडिलोभेण जाव सणक्कुमार माहिंदमिच्छा-इट्ठिदव्वमिदि । तस्सुवरि वाणवेंतरमिच्छाइट्ठिविक्खंमसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? तस्सेव विक्खंमसूईए असंखेज्जदिभागो एकारसवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि

क्या है ? जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतिभाग है । सानत्कुमार और माहेन्द्रके मिथ्यादृष्टि अवहारकालके ऊपर ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके नौवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात दशम वर्गमूलप्रमाण है । ब्रह्मद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे लान्तव और कापिष्ठके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके सातवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात आठवें वर्गमूलप्रमाण है । लान्तवद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शुक्र और महाशुक्रके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके पांचवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात छठवें वर्गमूलप्रमाण है । शुक्रद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका पांचवां वर्गमूल गुणकार है । शतारद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे शतार और सहस्रारका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपने द्रव्यका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । इसप्रकार प्रतिलोभकसे सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये । सानत्कुमारद्विकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? उन्हीं वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । अथवा, जगश्रेणीके ग्यारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके



वारसवग्गमूलाणि वा । को पडिभागो ? सणक्कुमार-मार्हिदमिच्छाइट्टिद्ववपडिभागो । जोइसियमिच्छाइट्टिविक्खंभस्सई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देव-मिच्छाइट्टिविक्खंभस्सई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण । भवणवासिमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । सोहन्मीसाणमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभस्सई । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभस्सई । भवणवासियमिच्छाइट्टिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पुव्वं भणिदो । वाणवेंतरमिच्छाइट्टिदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? भवण-वासिविक्खंभस्सच्चिगुणिसगअवहारकालपडिभागो । जोइसियमिच्छाइट्टिदव्वं संखेज्ज-गुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देवमिच्छाइट्टिदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवखंडिदएयखंडमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो

असंख्यात बारहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? सानत्कुमार और मार्हेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण प्रतिभाग है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे ज्योतिषियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे देव मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीको संख्यातसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे उन्हीं सौधर्म कल्पके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं । भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पहले कह आये हैं जो जगश्रेणीके असंख्यातवें भाग है । जिस जगश्रेणीके असंख्यातवें भागका प्रमाण जगश्रेणीके अस्ख्यात प्रथम वर्गमूल है । प्रतिभाग क्या है ? भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे अपने अवहारकालको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है । वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्रसे अधिक है ? संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके खंडित करने पर उनमेंसे एक खंड-

असंखेज्जगुणो ? को गुणगारो ? सेढी ।

चउगहभागाभागं वत्तइस्सामो । तं जहा-सब्बजीवरासिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखंडा एइंदिय-विगलंदिया होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसम-संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा जोइसियमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा भवणवासियमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पढमपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मसाणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुस-अपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा विदियपुढविमिच्छाइट्ठी होंति । सेसम-संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सणक्कुमार-माहिंदमिच्छाइट्ठी होंति । एवं तदियपुढवि-बम्ह-बम्होत्तर-चउत्थपुढवि-लांतवकाविट्ठ-पंचमपुढवि-सुक्कमहासुक्क-सदारसहस्सार-छट्ठपुढवि-सत्तमपुढविमिच्छाइट्ठि ति पेयव्वं । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सोहम्मसाणअसंजद-

मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अवहारेकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जग-श्रेणी गुणकार है ।

अब चतुर्गतिसंबन्धी भागाभागको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यच अपर्याप्त हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्या-दृष्टि हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण मनुष्य अपर्याप्त हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकी हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार तीसरी पृथिवी, ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लांतव और कापिष्ठ, पांचवी पृथिवी, शुक्र और महाशुक्र, शतार और सहस्रार, छठवी पृथिवी और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण आनेके अनन्तर शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुखंडप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण है । शेष एक भागके

सम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तस्सेव सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो होंति । एवं गेयव्वं जाव सदार सहस्सरो ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवणवासिय-तिरिक्ख-पढमादि जाव सत्तमपुढवि ति गेयव्वं । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । एवं गेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जअसंजदसम्माइट्ठि ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणद-मिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदमिच्छाइट्ठी होंति । एवं गेयव्वं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जमिच्छाइट्ठि ति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणु-दिसअसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणुत्तरविजय-वइ-जयंत-जयंत-अवराइदअसंजदसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आणद-पाणदसम्मामिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरणच्चुदसम्मामिच्छाइट्ठी होंति । एवं गेयव्वं जाव उवरिमुवरिमगेवज्जसम्मामिच्छाइट्ठि ति । सेसं संखेज्जखंडे कए

संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उर्द्धा सौधर्म और पेशान कल्पके सम्यग्मिथ्या-दृष्टि जीवोंका प्रमाण है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सौधर्म और पेशान कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इसप्रकार शतार और सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये । इसके आगे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर, भवनवासी, तिर्थच और प्रथमादि सातों पृथिवियोंतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग-प्रमाण आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आणत और प्राणतके मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण आरण और अच्युत कल्पके मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण अनुदिशके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण विजय, वैजयंत, जयन्त और अपराजित इन चार अनुत्तरोंके असंयतसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देव हैं । इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके प्रमाणके अनन्तर शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे

बहुखंडा आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा आरण-  
चुदसासणसम्माइट्ठी होंति । एवं णेयच्चं जाव उवरिममज्झिमसासणेति । सेसमसंखेज्जखंडे  
कए बहुखंडा उवरिमउवरिमसासणसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा  
सव्वट्ठसिद्धि विमानवासियदेवा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसिणीमिच्छाइट्ठी  
होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे  
कए बहुखंडा मणुसअसंजदसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मा-  
मिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठी होंति । सेसं संखेज्ज-  
खंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा  
होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अपमत्तसंजदा होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए  
बहुखंडा सजोगिति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्हं खवगा । सेसं  
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउण्हमुवसामगा । सेसेगखंडं अजोगिकेवली होंति । एवं  
चउगइभागाभागा समत्तं ।

एत्तो चउगइअप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा । सव्वत्थोवो अजोगिकेवलिरासी ।

बहुभागप्रमाण आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड  
करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टि देव हैं । इसीप्रकार  
उपरिम मध्यम त्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका प्रमाण आनेतक ले जाना चाहिये । शेष  
एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण उपरिम उपरिम त्रैवेयकके सासा-  
दनसम्यग्दृष्टि देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सर्वार्थ-  
सिद्धि विमानवासी देव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण  
मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण  
मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे  
बहुभागप्रमाण मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण संयतासंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण अप्रमत्तसंयत मनुष्य हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण सयोगिकेवली जिन हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानके क्षपक हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
उनमेंसे बहुभागप्रमाण चारों गुणस्थानोंके उपशामक हैं । शेष एक खंडप्रमाण अयोगि-  
केवली जिन हैं ।

इसप्रकार चारों गतिसंबन्धी भागाभाग समाप्त हुआ ।

अब इसके आगे चारों गतिसंबन्धी अष्टपबहुत्वको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—

चउण्हसुवसाग्गा संखेज्जगुणा । चउण्हं खवग्गा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । मणुससंजदासंजदा संखेज्जगुणा । मणुससासणा संखेज्जगुणा । सम्मामिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठी संखेज्जगुणा । मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । मणुसिणीमिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा । सव्वट्ठसिद्धि-विमाणवासियदेवा तित्ठणा सत्तगुणा वा । सोहम्मीसाणअसंजदसम्माइट्ठिवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सव्वट्ठसिद्धिदेवपडिभागो । सम्मामिच्छाइट्ठिवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? अवलियाए असंखेज्जदिभागो । सासणसम्माइट्ठिवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव सदार-सहस्सरो त्ति । तदो जोइसिय-वाणवेंतर-भवनवासियदेवि त्ति णेयव्वं । तदो तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठि अवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिवहारकालो संखेज्जगुणो ।

अयोगिकेवली जीवराशि सबसे स्तोक है । इससे चारों गुणस्थानोंके उपशामक संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यागुणे हैं । सयोगिकेवली क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । मनुष्य संयतासंयत प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्य संयतासंयत मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । मिथ्यादृष्टि मनुष्यनी पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्योंसे संख्यातगुणे हैं । सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव मिथ्यादृष्टि मनुष्यनियोंसे तिगुणे अथवा सातगुणे हैं । सौधर्म और पेशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सर्वार्थसिद्धिके देवोंसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । सौधर्म और पेशान कल्पके देवोंका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल उन्हींके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार शतार और सहस्रार कल्पक ले जाना चाहिये । शतार और सहस्रार कल्पके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी, वाणव्यन्तर और भवनवासी देवियों तक ले जाना चाहिये । भवनवासी देवियोंके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे तिर्थचोंका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा

संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदो पढमपुढविअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्माभिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं णेयव्वं विदियादि जाव सत्तमपुढवि त्ति । तदो आणद-पाणदअसंजद-सम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । आरणच्चुदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तदो आणद-पाणदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । आरणच्चुदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं णेयव्वं जाव उवरिमउवरिमगेवज्जो त्ति । तदो अणुदिसअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । अणुत्तरविजय-वइजयंत-जयंत-अपराजिद-असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । तदो आणद-पाणदसम्माभिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । आरणच्चुदसम्माभिच्छाइट्ठिअवहारकालो

है । इससे उन्हींका संयतासंयत अवहारकाल असंख्यातगुणा है । तिर्यक् संयतासंयतोंके अवहारकालसे प्रथम पृथिवीके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे उन्हींका सासादन-सम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा है । इसीप्रकार दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक ले जाना चाहिये । सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे आनत और प्राणतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे अनुदिशके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । अनुदिशोंके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित इन अनुत्तरवासी देवोंका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आनत और प्राणतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार



संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं गेयच्चं जाव उवरिमउवरिमगेवजो चि । तदो आणद-पाणदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । आरणच्चुदसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एवं गेयच्चं जाव उवरिमउवरिमगेवजो चि । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । उवरिममज्झिमसासण-सम्माइट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण गेयच्चं जाव सोहम्मीसाणअसंजद-सम्माइट्ठिदव्वं चि । तदो पल्लिदोवमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । सोहम्मी-साणविकखंभसूई असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सव्विअंगुलपटमवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-भागो असंखेज्जाणि विदियवग्गमूलणि । केत्तियमेत्ताणि ? तदियवग्गमूलस्स असंखेज्जदि-भागमेत्ताणि । को पडिभागो ? पल्लिदोवमपडिभागो । मणुसअपज्जत्तअवहारकालो असं-खेज्जगुणो । को गुणगारो ? सव्विअंगुलविदियवग्गमूलं । गेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सव्विअंगुलतदियवग्गमूलं । भवणवासियमिच्छाइट्ठि-विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? गेरइयमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूई । पंचिदिय-

उपरिम उपरिम प्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके सम्यग्मिथ्या-दृष्टियोंके अवहारकालसे आनत और प्राणतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे आरण और अच्युतके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार उपरिम उपरिम प्रैवेयकतक ले जाना चाहिये । उपरिम उपरिम प्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे उन्हींका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है । इससे उपरिम मध्यम प्रैवेयकके सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहार-कालके प्रतिलोम क्रमसे जब सौधर्म और पेशान कल्पके असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य आवे तबतक ले जाना चाहिये । सौधर्मद्विकके असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्यसे पल्लोपम असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । पल्लोपमसे सौधर्म और पेशान-कल्पके मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो सूर्यगुलके असंख्यात द्वितीय वर्गप्रमाण है । वे असंख्यात द्वितीय वर्गमूल कितने हैं ? सूर्यगुलके तृतीय वर्गमूलके असंख्यातवें भागमात्र हैं । प्रतिभाग क्या है ? पल्लोपम प्रतिभाग है । सौधर्मद्विककी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूचीसे मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुलका द्वितीय वर्ग-मूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्त अवहारकालसे नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभ-सूचीसे भवनवासियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? नारक

तिरिक्खमिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? स्रच्चिअंगुलपटमवग्ग-  
मूलस्स असंखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तिय-  
मेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तेण । पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तमिच्छा-  
इडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदि-  
भागो । देवमिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । जेइ-  
सियमिच्छाइडिअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जरूवेहिं खंडिदएयखंड-  
मेत्तेण । वाणवेंतरमिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्जसमया ।  
पंचिदियतिरिक्खजोणिणीमिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । को गुणगारो ? संखेज्ज-  
समया । विदियपुढविमिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? वारहवग्ग-  
मूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेजाणि तेरसवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? जोणिणीअव-

मिथ्यादष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । भवनवासी मिथ्यादष्टि विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय  
तिर्यंच मिथ्यादष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूत्र्यंगुलके प्रथम  
वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादष्टि अवहारकालसे  
पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ?  
आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादष्टियोंके अवहारकालको खंडित करके  
जो एक भाग लब्ध अथे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त अवहारकालसे  
पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?  
आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त  
अवहारकालसे देव मिथ्यादष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?  
संख्यात समय गुणकार है । देव मिथ्यादष्टि अवहारकालसे ज्योतिषी मिथ्यादष्टियोंका  
अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? देव मिथ्यादष्टियोंके  
अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध अथे तन्मात्र विशेषसे अधिक  
है । ज्योतिषी मिथ्यादष्टियोंके अवहारकालसे वाणव्यन्तर मिथ्यादष्टियोंका अवहारकाल  
संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाणव्यन्तर मिथ्यादष्टियोंके  
अवहारकालसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादष्टियोंका अवहारकाल संख्यातगुणा  
है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । तिर्यंच योनिमती मिथ्यादष्टियोंके अव-  
हारकालसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार  
क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके  
असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? योनिमतियोंका अवहारकाल प्रतिभाग



हारकालपडिभागो । तदो सणक्कुमारमाहिंद-तदियपुढवि-ब्रम्हब्रम्होत्तर-चउत्थपुढवि-लांतव-काविट्ट-पंचमपुढवि-सुकमहासुक-सदारसहस्सार-छट्ट-सत्तमपुढवीणं मिच्छाइट्टिअवहारकालो कमेण असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेदितवारसमेकारसम-दसम-णवम-अट्टम-सत्तम-छट्टम-पंचम-चउत्थ-तदियवग्गमूलणि जहाकमेण गुणगारा । तदो सत्तमपुढविअवहारकालस्सुवरि तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? पढमवग्गमूलं । तदो छट्टपुढवि-सदारसहस्सार-सुक-महासुक-पंचमपुढवि-लांतवकाविट्ट-चउत्थपुढवि-ब्रम्हवम्होत्तर-तइयपुढवि-सणक्कुमारमाहिंद-विदियपुढवीणं मिच्छाइट्टिदव्वं कमेण असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेदितदिय-चउत्थ-पंचम-छट्ट-सत्तम-अट्टम-णवम-दसम-एकारसम-वारसमवग्गमूलणि जहाकमेण गुणगारा ? तदो विदियपुढविमिच्छाइट्टिदव्वस्सुवरि पंचिंदियतिरिक्खजोणिणिमिच्छाइट्टिविक्खंभइ असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? वारसमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जणि तेरसवग्गमूलणि । वाणवेंतरमिच्छाइट्टिविक्खंभइ संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । जोइसियमिच्छाइट्टिविक्खंभइ संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देवमिच्छाइट्टिविक्खंभइ विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? संखेज्जसमय-

है । दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे सानत्कुमार-माहेन्द्र, तीसरी पृथिवी, ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, चौथी पृथिवी, लांतव-कापिष्ठ, पांचवीं पृथिवी, शुक-महाशुक, शतार-सदस्सार छठवीं और सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल क्रमसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका बारहवां, ग्यारहवां, दशवां, नौवां, आठवां, सातवां, छठा, पांचवां, चौथा तीसरा वर्गमूल क्रमसे गुणकार है । तदनन्तर सातवीं पृथिवीके अवहारकालके ऊपर उसीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका प्रथम वर्गमूल गुणकार है । इससे छठी पृथिवी, शतार-सदस्सार, शुक-महाशुक, पांचवी पृथिवी, लांतव-कापिष्ठ, चौथी पृथिवी, ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, तीसरी पृथिवी, सानत्कुमार-माहेन्द्र और दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य क्रमसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका तीसरा, चौथा, पांचवां, छठा, सातवां, आठवां, नौवां, दशवां, ग्यारहवां और बारहवां वर्गमूल क्रमसे गुणकार हैं । अनन्तर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके ऊपर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमयी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीके बारहवें वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात तेरहवें वर्गमूलप्रमाण है । इससे बाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे देव मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है । संख्यात समयोंसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीको अंकित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इससे पंचेन्द्रिय

खंडिदएयखंडमेत्तेण । पंचिदियतिरिखपज्जत्तमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पंचिदियतिरिखअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिदियतिरिखमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई विसंसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदएयखंडमेत्तेण । भवणवासियमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो । पढमपुढविमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? गेरइयविक्खंभसूई । मणुसअपज्जत्तद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सूचिअंगुलतदियवग्गमूलं । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सूचिअंगुलविदियवग्गमूलं । सेढी अमंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । सोहम्मीसाणमिच्छाइट्टिद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पढमपुढविमिच्छाइट्टिद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सोहम्मीसाणविक्खंभसूई । भवणवासियमिच्छाइट्टिद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? गेरइयमिच्छाइट्टिविक्खंभसूई । पंचिदियतिरिखजोणिणीमिच्छाइट्टिद्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखे-

तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची संख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इससे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । इससे पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इससे भवनवासियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुलका तृतीय वर्गमूल गुणकार है । मनुष्य अपर्याप्तोंके द्रव्यसे सौधर्म और पेशानके मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सूर्यगुलका द्वितीय वर्गमूल गुणकार है । सौधर्मद्विकके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? विष्कंभसूची गुणकार है । जगश्रेणीसे सौधर्म और पेशानके मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । सौधर्मद्विकके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? सौधर्म और पेशानकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे भवनवासी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? नारकियोंकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची गुणकार है । भवनवासी मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टि द्रव्य

ज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलानि । को पडिभागो ? असंखेज्जाणि घणंगुलानि पडिभागो । केत्थियमेत्ताणि ? संखेज्जवृद्धपढमवग्गमूलमेत्ताणि । वाणवेंतरमिच्छाहट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । जेइसियमिच्छाहट्ठिदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । देवमिच्छाहट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्थियमेत्तेण ? संखेज्जरूवरखंडिदमेत्तेण । पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तदव्वं संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पंचिदिय-तिरिक्खपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचि-दियतिरिक्खमिच्छाहट्ठिदव्वं विसेसाहियं । केत्थियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाग-खंडिदमेत्तेण । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगअवहारकालो । लोगमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सेठी । सिद्धा अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? लोगपडिभागो । एइदिय-विगलंदिया अणंत-गुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धेहि वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स

असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात घनांगुल प्रतिभाग है । उन असंख्यात घनांगुलोंका प्रमाण कितना है ? सूर्यगुलके संख्यात प्रथम वर्गमूलोंका जितना प्रमाण हो उतना है । पंचेन्द्रिय तीर्थच योनिमती मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । वाण-व्यन्तर मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? संख्यातसे ज्योतिषी मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । देव मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तीर्थच पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य संख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । तीर्थच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तीर्थच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्य असंख्यात-गुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय तीर्थच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे पंचेन्द्रिय तीर्थच मिथ्यादृष्टि द्रव्य विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवां भागसे पंचेन्द्रिय तीर्थच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यको खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । पंचेन्द्रिय तीर्थच मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जंगश्रेणी गुणकार है । लोकसे सिद्ध अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? लोक प्रतिभाग है । सिद्धोंसे पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीव अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, जीवराशिके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा और भव्यसिद्ध जीवोंके अनन्त-

वि अणंतगुणो भवसिद्धियजीवाणमणंताभागस्स अणंतिमभागो । को पडिभागो ? सिद्धपडि-  
भागो । एवं चदुगदिअप्पावहुगं समत्तं ।

एवं गइमगणा समत्ता ।

**इंदियाणुवादेण एइंदिया वादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता द्व-  
पमाणेण केवडिया ? अणंता' ॥ ७४ ॥**

एत्थ एइंदियगहणेण सेसिंदियाणं पडिसेहो कदो भवदि । सुहुमपडिसेहइं वादर-  
गहणं । वादरपडिसेहफलो सुहुमणिहेसो । अपज्जत्तपडिसेहफलो पज्जत्तणिहेसो । पज्जत्त-  
पडिसेहफलो अपज्जत्तणिहेसो । एइंदिया वादरेइंदिया सुहुमेइंदिया पज्जत्ता अपज्जत्ता च  
एदे णव वि रासीओ द्ववपमाणेण केवडिया इदि पुच्छिदं होदि । किमटं सव्वत्थ पण्हपुच्चं  
परिमाणं वुच्चे ? ण एस दोसो, मंदबुद्धिसिस्साणुगहणइत्तादो । अणंता इदि परिमाणणिहेसो  
संखेज्ज-असंखेअपरिमाणपडिसेहफलो । सेसं जहा मूलोघसुत्ते वुत्तं तहा वत्तच्चं ।

बहुभागोंका अनन्तवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? सिद्धराशि प्रतिभाग है । इसप्रकार  
चारों गतिसंबन्धी अवयवहुत्व समाप्त हुआ ।

इसप्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई ।

इन्द्रिय मार्गणाके अनुवादसे एकेन्द्रिय, एकेन्द्रिय पर्याप्त, एकेन्द्रिय  
अपर्याप्त, वादर एकेन्द्रिय, वादर एकेन्द्रिय पर्याप्त, वादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त, सूक्ष्म  
एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी  
अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ ७४ ॥

इस सूत्रमें एकेन्द्रिय पदके ग्रहण करनेसे शेषेन्द्रिय जीवोंका निषेध किया है । सूक्ष्म  
जीवोंका प्रतिषेध करनेके लिये वादर पदका ग्रहण किया है । वादर जीवोंका निषेध करनेके  
लिये सूक्ष्म पदका ग्रहण किया है । अपर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये पर्याप्त पदका  
ग्रहण किया है । और पर्याप्त जीवोंका निषेध करनेके लिये अपर्याप्त पदका ग्रहण किया  
है । एकेन्द्रिय जीव, वादर एकेन्द्रिय जीव और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव ये तीन राशियां तथा  
ये तीनों पर्याप्त और तीनों अपर्याप्त, इसप्रकार कुल नौ जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा  
कितनी हैं, यहां ऐसा पृच्छनेका अभिप्राय है ।

शंका—सर्वत्र प्रश्नपूर्वक परिमाण (संख्या) किसलिये कहा जाता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, मन्वबुद्धि शिष्योंके अनुग्रहके लिये  
पेसा कहा गया है ।

संख्यात और असंख्यातका निषेध करनेके लिये सूत्रमें अनन्तरूप परिमाणका निर्देश

१ एकेन्द्रिया मियाहधो ज्ञानान्ताः । स. सि. १, ८. तसहीणो संसारी एयक्खा ताण संख्या भागा ।  
पुण्णार्ण परिमाणं संखेज्जदिमं अपुण्णार्ण ॥ गो. जी. १७६.

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिंरंति कालेण  
॥ ७५ ॥

अदीदकालो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिपमाणेण कीरमाणो अणंतोसप्पिणि-उस्सप्पिणि-पमाणं होदि । तेण तारिसेण वि अदीदकालेण एदे णव वि राशीओ ण अवहिरिज्जंति । एइंदिएहिंतो एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता जीवा तसकाइएसुप्पज्जंति । तसकाइया वि एगजीवमाइं काऊण जा उक्कस्सेण पदरस्स असंखे-ज्जदिभागमेत्ता एइंदिएसुप्पज्जंति । वादेइंदिया विसयं पडि अणंता सुहुमेइंदिएसुप्पज्जंति । सुहुमेइंदिया वि तत्तिया चेव वादेइंदिएसुप्पज्जंति । एवं चेव सव्वेसिं पज्जत्ताण मपज्जत्ताणं च वत्तव्वं । तदो सरिसाय-व्वयत्तादो एदेसिं णवण्हं रासीणं वोच्छेदो तिसु वि कालेसु णत्थि चि अणुचसिद्धीदो एदं सुत्तं णादेरदव्वमिदि । एत्थ परिहारो बुब्बदे । तं जहा—एदेसिं णवण्हं रासीणं जदि आय-व्वया सरिसा हवंति तो एदं सुत्तं णादेरदव्वं भवदि । किं तु आयादो वओ अब्भहिओ । कुदो ? तत्तो णिप्फदिऊण तसेसुप्पज्जिय सप्पमत्तं धेत्तूण किया है । शेष कथन जिसप्रकार मूलोघ सूत्रमें कह आये हैं उसप्रकार जानना चाहिये ।

कालप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रिय जीव आदि नौ राशियां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती हैं ॥ ७५ ॥

अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर अनन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीप्रमाण अतीत काल होता है । इसप्रकारके भी उस अतीत कालके द्वारा ये नौ राशियां अपहृत नहीं होती हैं ।

शंका—एकेन्द्रियोंमेंसे एक जीवको आदि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव त्रसकायिकोंमें उत्पन्न होते हैं और त्रसकायिक भी एक जीवको आदि करके उत्कृष्टरूपसे जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । विषयकी अपेक्षा अनन्त बादर एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं और सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव भी उत्तने ही बादर एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं । इसीप्रकार सभी पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंका भी कथन करना चाहिये । इसप्रकार समान आय और व्यय होनेसे इन नौ राशियोंका विच्छेद तीनों भी कालोंमें नहीं होता है, इसलिये यह कथन अनुक्तसिद्ध होनेसे यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं है ?

समाधान—आगे पूर्वोक्त कथनका परिहार किया जाता है । वह इसप्रकार है—इन पूर्वोक्त नौ राशियोंका आय और व्यय यदि समान हो तो यह सूत्र ग्रहण करने योग्य नहीं होवे; किन्तु इन राशियोंका आयसे व्यय अधिक है, क्योंकि, पूर्वोक्त नौ राशियोंमेंसे निकल कर और श्रवणमें उत्पन्न होकर तथा सस्यकत्वको ग्रहण करके जिन संसारी जीवोंने एकेन्द्रिय-

विणासिदएहंदिप-वीहंदिप-तीहंदिप-चउरिदिप-असण्णिपंचिदिप-गेरइय-तिरिक्ख-भवणवासिय-  
वाणवेंतर-जोहसिय-इत्थि-णावुंसय-हय-गय-गंधव्व-णागादि-संसारिजीवाणं पुणो तेसु पवेसा-  
भावादो । तदो एदे णव वि रासीओ वयसहिया णिच्छएण हवन्ति । एवं हि वए संते  
वि एदे णव वि रासीओ ण वोच्छेज्जंति' सरागसरूवेण द्विदअदीदकालत्तादो । सव्व-  
जीवरासीदो अदीदकाले अणंतगुणे संते अदीदकालेण सव्वजीवा अवहिरिज्जंति । ण च एवं,  
तथा अणुवलंभादो । जं तेण कालेण सव्वजीवाणं वोच्छेदो किण्ण होदि चि भणिदे ण,  
अभव्वपडिवक्खवोच्छेदे अभव्वत्तस्स विधिणासप्पसंगादो । सेसं ववखाणं जहा ओघकाल-  
सुत्तमिह भणिदं तथा वत्तव्वं ।

**खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ७६ ॥**

एदस्स सुत्तस्स वक्खाणे भण्णमाणे जहा मूलोघखेत्तसुत्तस्स भणिदं तथा भणिदव्वं ।  
णवरि एत्थ धुवरासी एवमुप्पाएदव्वो । तं जहा— वेहंदिप-तेहंदिप-चउरिदिप-पंचिदिप-

हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंखीपंचेन्द्रिय, नारकी, तिर्यक्, भवनवासी, वाणव्यन्तर,  
ज्योतिषी, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, घोड़ा, हाथी, गंधर्व और नाग आदि पर्यायोंका नाश  
कर दिया है वे पुनः उन पर्यायोंमें प्रवेश नहीं करते हैं, इसलिये ये नौ राशियां नियमसे  
व्ययसहित हैं । इसप्रकार इन नौ राशियोंके व्ययसहित होने पर भी ये नौ राशियां कभी भी  
विच्छिन्न नहीं होती हैं, क्योंकि, अतीतकालसे वे अपने सरागस्वरूपसे स्थित हैं । यदि  
संपूर्ण जीवराशिसे अतीतकाल अनन्तगुणा होता तो अतीतकालसे संपूर्ण जीवराशि अपहृत  
होती; परंतु ऐसा तो है नहीं, क्योंकि, इसप्रकारकी उपलब्धि नहीं होती है ।

शुका—उस अतीत कालके द्वारा संपूर्ण जीवराशिका विच्छेद क्यों नहीं होता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, अभव्यराशकी प्रतिपक्षभूत अव्यराशिका विच्छेद मान  
लेने पर अभव्यत्वकी सत्ताके नाशका प्रसंग आ जाता है ।

शेष व्याख्यान ओघप्ररूपणके कालसूत्रमें जिसप्रकार कर आये हैं उसप्रकार उसका  
कथन करना चाहिये ।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा पूर्वोक्त एकेन्द्रियादि नौ जीवराशियां अनन्तानन्त लोकप्रमाण  
हैं ॥ ७६ ॥

इस सूत्रका व्याख्यान करने पर जिसप्रकार मूलोघ प्ररूपणके समय क्षेत्रसूत्रका  
अर्थ कह आये हैं उसप्रकार कथन करना चाहिये । परंतु यहां पर धुवराशि इसप्रकार उत्पन्न  
करना चाहिये । यह इसप्रकार है—

हीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय जीवोंकी राशिका संपूर्ण जीव

१ प्रतिषु 'वोच्छेज्जतो' इति पाठः ।



अणिदियाणं रासिं सच्चजीवरासिस्सुवरि पक्खिविय तस्स चैव वग्गं एइंदियभाजिदं तत्थेव पक्खित्ते एइंदियधुवरासी होदि । तं संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्मिह चैव पक्खित्ते एइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि । एइंदियधुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे एइंदियअपज्जत्तधुवरासी होदि । पुणे एइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण गुणिदे वादेइंदियधुवरासी होदि । तमसंखेज्जलोएण गुणिदे वादेइंदियपज्जत्ताणं धुवरासी होदि । तमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्मिह चैव पक्खित्ते वादेइंदियअपज्जत्ताणं धुवरासी होदि । सामण्णेइंदियधुवरासिमसंखेज्जलोएण भागे हिदे लद्धं तम्मिह चैव पक्खित्ते सुहुमेइंदियधुवरासी होदि । तम्मिह संखेज्जरूवेहि भागे हिदे लद्धं तम्मिह चैव पक्खित्ते सुहुमेइंदियपज्जत्तधुवरासी होदि । सामण्णसुहुमेइंदियधुवरासिं संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुहुमेइंदियअपज्जत्तधुवरासी होदि । सगसगधुवरासीहि सच्चजीवरासिउवरिमवग्गे खंडिदादओ ओघमिच्छाइट्ठिणं व वत्तव्वा । णवरि पमाणं षण्णमाणे एइंदियाणं ओघमंगो । एइंदियपज्जत्ता सच्चजीवरासिस्स संखेज्जा भागा । तेसिं चैव अपज्जत्ताणं पमाणं सच्चजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो । वादेइंदियाणं

राशिमें ऊपर प्रक्षिप्त करके और उन्हीं द्वीन्द्रियादि जीवोंके प्रमाणके वर्गको एकेन्द्रिय जीवराशिसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त राशिमें प्रक्षिप्त करने पर एकेन्द्रिय जीवराशिसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पूर्वोक्त ध्रुवराशिमें मिला देने पर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी ध्रुवराशिको संख्यातसे गुणित करने पर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । पुनः एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी ध्रुवराशिको असंख्यात लोकसे गुणा करने पर बादर एकेन्द्रिय जीवसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इसे असंख्यात लोकसे गुणित करने पर बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इसमें असंख्यात लोकका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । सामान्य एकेन्द्रियसंबन्धी ध्रुवराशिमें असंख्यात लोकका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसको उसीमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । इसे संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी सूक्ष्म एकेन्द्रिय ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रियसंबन्धी ध्रुवराशिको संख्यातसे गुणित करने पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तसंबन्धी ध्रुवराशि होती है । इन अपनी अपनी ध्रुवराशियोंके द्वारा संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गके ऊपर खंडित आदिकका कथन ओघ मिथ्यादिष्टियोंके खंडित आदिकके कथनके समान करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि प्रमाणका कथन करते समय एकेन्द्रियोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणके समान कहना चाहिये । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संपूर्ण जीवराशिके संख्यात बहुभागप्रमाण हैं । उन्हीं एकेन्द्रिय अपर्याप्तका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके संख्यातवें भाग हैं । बादर एकेन्द्रिय तथा बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त

तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पमाणं सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागो । सुहुमेहंदिपमा सव्व-  
जीवरासिस्स असंखेज्जा भागा । सुहुमेहंदिपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जा भागा ।  
सुहुमेहंदिपज्जत्ता सव्वजीवरासिस्स संखेज्जदिभागो । कारणमेहंदिपाणं ताव वुच्चे ।  
सेसिंदियाणिदिहं सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं विरलेज्जण एकेकस्स रूवस्स  
सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेयखंडं सेसिंदियाणिदिपा च होति । सेसवहुखंडा  
एहंदिपा हवंति । सेसिंदियाणिदिप-एहंदिपापज्जत्तेहि य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे लद्धं  
संखेज्जरूवाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ वहुखंडा एहंदिपज्जत्ता  
होति । एहंदिपअपज्जत्तेहि चेव सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लभंति ।  
ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ एगखंडं एहंदिपअपज्जत्ता  
होति । सेसिंदिय-अणिंदिय-बादरेंहंदिहं य सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसं-  
खेज्जदिलेगरासिं विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ वहुखंडा सुहुमेहंदिपा  
होति । वि-त्ति-चहु-पंचाणिदिप-बादरेंहंदियसहिदसुहुमेहंदिअपज्जत्तएहि सव्वजीवरासिम्हि

और अपर्याप्तोंका प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके असंख्यातवें भाग है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव संपूर्ण  
जीवराशिके असंख्यात बहुभागप्रमाण हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके  
संख्यात बहुभागप्रमाण हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सर्व जीवराशिके संख्यातवें भाग हैं ।  
अब एकेन्द्रियोंके प्रमाणका कारण कहते हैं- शेषेन्द्रिय अर्थात् द्वीन्द्रियादि जीव और अनिन्द्रिय  
जीव इनके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको विरलित  
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके दे देने  
पर उनमेंसे एक खंडप्रमाण द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले और अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण  
होता है । शेष बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय जीव हैं । द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय  
और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर जो संख्यात  
लब्ध आवे उसका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको  
समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव होते  
हैं । एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंके प्रमाणसे भी सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात लब्ध  
आते हैं । उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको  
समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंडप्रमाण एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं ।  
द्वीन्द्रियादि शेष इन्द्रियवाले, अनिन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीव-  
राशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित  
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके  
देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव होते हैं । द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय,  
चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, अनिन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय जीवोंसे युक्त सूक्ष्म एकेन्द्रिय  
अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर संख्यात लब्ध आते हैं । उसका



भागे हिदे संखेज्जरूपाणि आमच्छंति । ताणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता हंति । सुहुमेइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूपाणि विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ-  
गखंडं सुहुमेइंदियअपज्जत्ता हंति । वादेरइंदिएहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्जलोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं वादेर-  
इंदिया हंति । वादेरइंदियअपज्जत्तेहि सव्वजीवरासिम्हि भागे हिदे तत्थ लद्धअसंखेज्ज-  
लोगे विरलिय सव्वजीवरासिं समखंडं करिय दिण्णे तत्थेगरूवधरिदं वादेरइंदियअपज्जत्ता  
हंति । एवं वादेरइंदियपज्जत्ताणं पि वचत्वं । एसा चेव गिरुत्ती हवदि । कुदो ? एत्थ  
कारणादो गिरुत्तीए भेदाणुवलंभादो ।

वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्व-  
पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा' ॥ ७७ ॥

विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव प्राप्त होते हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो संख्यात अंक लब्ध आवें उनका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक खंड प्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोक लब्ध आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय जीव होते हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहां जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहां एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं । इसीप्रकार बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये । और यही निरुक्ति है, क्योंकि, यहां पर कारणसे निरुक्तिमें भेद नहीं पाया जाता है ।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ७७ ॥

बहूणं वेईदियादीणं तस्सेवेति एगत्रयणणिदेसो कथं घडे ? ण एस दोसो, बहूणं पि जादीए एयत्तविरोहाभावादो । एत्थ अपज्जत्तवयणेण अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदजीवा धेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्ति-अपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तवयणेण गहणप्पसंगादो । एवं पज्जत्ता इदि वुत्ते पज्जत्तणाम-कम्मोदयसहिदजीवा धेत्तव्वा । अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्तिअपज्जत्ताणं गहणाणुववत्तीदो । वि-ति-चउत्तिदि ए ति वुत्ते वेईदिय-तीईदिय-चउत्तिदियजादिणामकम्मोदय-सहिदजीवाणं गहणं । वेणिणं ईदियाणि जेसिं ते वेईदिया इदि धेप्पमाणे को दोसो ? चे ण, अपज्जत्तकाले वट्टमाणजीवाणमिदियाभावेण तेसिमगहणप्पसंगादो । खओवसमो ईदियं ण दव्विदियमिदियमिदि चे ण, सजोगिकेवल्लिस्स पणट्ठखओवसमस्स अणिदियत्तप्पसंगादो । होदु ? चे ण, सुत्तस्स पंचिदियत्तपदुप्पायणादो । कम्मि तं सुत्तमिदि चे एत्थेव । तं

शंका—इन्द्रियादिक जीव बहुत हैं, अतएव उनके लिये 'तस्सेव' इसप्रकार एक वचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बहुतके भी जातिसे एकत्वके प्रति कोई विरोध नहीं आता है ।

यहां सूत्रमें अपर्याप्त पदसे अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका भी अपर्याप्त इस वचनसे ग्रहण प्राप्त हो जायगा । इसीप्रकार पर्याप्त ऐसा कहने पर पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होगा । इन्द्रिय, इन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय, ऐसा कहने पर इन्द्रिय जाति, इन्द्रिय जाति और चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये ।

शंका—'जिन जीवोंके दो इन्द्रियां पाई जाती हैं वे इन्द्रिय जीव हैं' ऐसा ग्रहण करनेमें क्या दोष आता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उपर्युक्त अर्थके ग्रहण करने पर अपर्याप्त कालमें विद्यमान जीवोंके इन्द्रियां नहीं पाई जानेसे उनके नहीं ग्रहण होनेका प्रसंग प्राप्त हो जायगा ।

शंका—क्षयोपशमको इन्द्रिय कहते हैं, द्रव्येन्द्रियको इन्द्रिय नहीं कहते हैं, इसलिये अपर्याप्त कालमें द्रव्येन्द्रियोंके नहीं रहने पर भी इन्द्रियादि पदोंके द्वारा उन जीवोंका ग्रहण हो जायगा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यदि इन्द्रियका अर्थ क्षयोपशम किया जाय तो जिनका क्षयोपशम नष्ट हो गया है ऐसे सयोगिकेवलीको अनिन्द्रियपनेका प्रसंग आ जाता है ।

शंका—आ जने दो ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, सूत्र सयोगिकेवलीको पंचेन्द्रियरूपसे प्रतिपादन करता है ।

जहा— पंचिदिया सासणसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि चि दव्वपमाणेण केवडिया, ओघमिदि ।

सुहुमद्वपरूवणट्टं सुत्तमाह—

असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥७८॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो चि ण वुच्चे । एदाओ रासीओ सव्वकालमायाणु-  
रूववयसहिदाओ चि ण वोच्छेदमुवहुक्कंते तदे अंसंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि  
अवहिरंति चि कथमेदं घडदे ? सच्चं, ण वोच्छिज्जंति चेव किं तु एदासिमाएण विणा जदि  
वओ चेव भवदि तो निच्छएण वोच्छिज्जंति । अण्णहा अंसंखेज्जात्ताणुववत्तादे । एदस्स-  
त्थस्स अववोहणट्टं अवहिरंति चि वुत्तं ।

शंका— वह सूत्र कहाँ पर है ?

समाधान— यहाँ आगे है । यथा— 'पंचेन्द्रिय जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे  
लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणके  
समान पांचवें गुणस्थानतक पत्योपमके असंख्यातवें भाग और छठवेंसे संख्यात हैं ।

अब सूक्ष्म अर्थका प्ररूपण करनेके लिये सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त  
और अपर्याप्त जीव असंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत  
होते हैं ॥ ७८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

शंका— ये द्वीन्द्रियादि सर्व जीवराशियां सर्व काल आयके अनुरूप व्ययसे युक्त  
हैं, इसलिये यदि विच्छेदको प्राप्त नहीं होती है तो 'असंख्यात अवसर्पिणियों और  
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होती हैं, यह कथन कैसे घटित हो सकता है ?

समाधान— यह सत्य है कि उपर्युक्त द्वीन्द्रियादिक जीवराशियां विच्छिन्न नहीं  
होती हैं, किन्तु इन राशियोंका आयके विना यदि व्यय ही होता तो निश्चयसे विच्छिन्न हो  
जाती । यदि ऐसा न माना जाय तो 'द्वीन्द्रियादि राशियां असंख्यात हैं' यह कथन नहीं बन  
सकता है । इसी अर्थका ज्ञान करनेके लिये 'अवहिरंति' ऐसा कहा ।

विशेषार्थ— यहाँ सूत्रमें 'असंखेज्जाहि' पाठ है, किन्तु अर्थसंदर्भकी दृष्टिसे  
वहाँ 'असंखेज्जासंखेज्जादि' ऐसा पाठ प्रतीत होता है । खुदाबंध खंडके इसी प्रकरणमें इन्हीं  
जीवोंकी सामान्य संख्या बतलाते हुए यह सूत्र पाया जाता है— 'असंखेज्जासंखेज्जाहि  
ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।' किन्तु यहाँ टीकमें भी 'असंखेज्जाहि' पद  
होनेसे उसी पाठकी रक्षा की गई ।

खेत्तेण वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदर-  
मवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि भागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदि  
भागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागवग्गपडिभाएण ॥ ७९ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो बुच्चदे । तं जहा— 'जहा उद्देसो तथा णिद्देसो' चि णायादो  
पुव्वुहिद्ववि-ति-चउरिंदियाणं पमाणं पुव्वुहिद्वमेव भवदि । मज्झिहं मज्झिहं समुहिद्वपज्जत्ताणं  
भवदि । अंतिहं पि अंतुहिद्वं तेसिमपज्जत्ताणं हवदि । एदेहि सामण्णविगल्लिदिहं तेसिं  
चेव पज्जत्तेहि विगल्लिदियअपज्जत्तएहि जगपदरमवहिरदि । अंगुलस्स सूचिअंगुलस्स  
असंखेज्जदिभागो सूचिअंगुलमावलिआए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेयभागो । तस्स वग्गो  
तारिसेण अवरेण गुणिदरासी पडिभागो अवहारकालो । एवं चेव अपज्जत्तसुत्तं पि  
विवरेणव्वं । एवं चेव पज्जत्तसुत्तं पि वक्खणायव्वं । णवरि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभाए

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके  
असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है । तथा उन्हींके पर्याप्त  
और अपर्याप्त जीवोंके द्वारा क्रमशः सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे  
और सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता  
है ॥ ७९ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है— 'उद्देशके अनुसार निर्वेश किया  
जाता है' इस न्यायके अनुसार सर्व प्रथम कहे गये द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय  
जीवोंका प्रमाण सर्व प्रथम कहा गया ही है । मध्यमें कह गये पर्याप्तोंका प्रमाण मध्यमें कहा  
गया है । और अन्तमें कहा गया प्रमाण भी अन्तमें कहे गये उन्हींके अपर्याप्तकोंका है । इनके  
द्वारा अर्थात् सामान्य विकलत्रयोंके द्वारा, उन्हींके पर्याप्तकोंके द्वारा और विकलेन्द्रिय  
अपर्याप्तकोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है । यहाँ पर अंगुलसे तात्पर्य सूच्यंगुलका और  
उसके असंख्यातवें भागसे तात्पर्य सूच्यंगुलको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके  
जो एक भाग लब्ध आवे उससे है । उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग इसका यह  
तात्पर्य हुआ कि उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागको तत्प्रमाण दूसरी राशिसे गुणित कर  
दो । ऐसा करने पर जो राशि उत्पन्न होगी वह यहाँ पर प्रतिभाग अर्थात् अवहारकाल है ।  
इसीप्रकार अपर्याप्त-सूत्रका भी स्पष्टीकरण करना चाहिये और इसीप्रकार पर्याप्त-सूत्रका भी  
व्याख्यान करना चाहिये । इतना विशेष है कि सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गित करने पर

१ द्वीन्द्रियात्रीन्द्रियाद्वचतुरिन्द्रिया असंख्येयाः क्षेत्रयः प्रतरासंख्येयमागप्रमिताः । स. सि. १, ८ पज्जत्ता-  
पज्जत्ता वितिचउ ×× अवहरति । अंगुलसंख × पणसमइयं पुदो पवरं ॥ पणसं. २, १२.

वमिगे पज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तेण पडिभाएण । पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगलंदियअपज्जचेहि जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जग-पदरं समप्पदि । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगलंदियपज्जचेहि जग-पदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदरं समप्पदि चि जं वुत्तं होदि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा<sup>१</sup> ॥ ८० ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो चि ण वुच्चेदे ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ ८१ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो चि ण वुच्चेदे ।

खेत्तेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरिदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभाग-वग्गपडिभाएण<sup>२</sup> ॥ ८२ ॥

पर्याप्तोका अवहारकाल होता है । इस प्रतिभागसे । प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागको शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय अपर्याप्तोंके द्वारा जगप्रतरके पुनः पुनः अपहृत करने पर अर्थात् घटने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है । तथा प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्वारा जगप्रतरके पुनः पुनः अपहृत करने पर शलाकाओंके साथ जगप्रतर समाप्त होता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है ।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८० ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसापिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८१ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा सूक्ष्मगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और सूक्ष्मगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८२ ॥

१ × × मणुस्सादिगा समेदा जे । छगवारमसंखेज्जा ॥ गो. जी. १७५.

२ पंचेन्द्रियेषु मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेण्यः प्रतरासंख्येयमागप्रमिताः । स. सि. १, ८, प्रतिषु 'संखे. ज्जदिमायपविभाएण' इति पाठः ।

‘जहा उदेसो तहा णिदेसो’ त्ति णायादो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागस्स वग्गो पंचिदियाणं जगपदरस्स पडिभागो होदि । स्रुचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागस्स वग्गो जग-पदरस्स पडिभागो होदि पंचिदियपज्जत्ताणं । पडिभागो भागहारो त्ति एयद्धो । विगल्लि-दियसुत्तेण सह पंचिदियसुत्तं किमिदि ण वुत्तं ? ण एस दोसो, उवरिमगुणपडिवण्णसुत्तस्स पंचिदियत्ताणुवट्ठावणट्ठादो पुध पंचिदियसुत्तं वुच्चे । तत्थ द्वियपंचिदियणिदेसो किमिदि णाणुवट्ठाविज्जदे ? ण, एगजोगणिट्ठाणमेगदेसस्स अणुवट्ठाणाभावादो ।

संपहि उवरि वुच्चमाणअप्पावट्ठगअणियोगहारसुत्तवलेण पुच्चाइरिओवएसवलेण च एदेण सुत्तेण स्रुचिद्विगल-सयल्लिदियाणमवहारकालविसेसे भणिस्सामो । तं जहा—आवलियाए असंखेज्जदिभाएण स्रुचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे वेईदियाणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खिस्से वेईदिय-अपज्जत्तअवहारकालो होदि । तं आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव

‘उदेशके अनुसार निर्देश होता है’ इस न्यायके अनुसार अंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग पंचेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है, और सूर्यगुलके संख्यातवें भागका वर्ग पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगप्रतरका प्रतिभाग है । प्रतिभाग और भागहार ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं ।

शंका—विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आगे कहे जानेवाले गुणप्रतिपक्ष जीवोंके सूत्रमें पंचेन्द्रियत्वकी अनुवृत्ति करनेके लिये पृथक् रूपसे पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र कहा ।

शंका—विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके एकत्र कर देने पर वहां स्थित पंचेन्द्रिय पदके निर्देशकी अनुवृत्ति क्यों नहीं होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक योगरूपसे निर्दिष्ट अनेक पदोंमेंसे एक देशकी अनुवृत्ति नहीं होती है ।

अब आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके सूत्रके बलसे और पूर्वोक्तार्थोंके उपदेशके बलसे इस सूत्रके द्वारा सूचित विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय जीवोंके अवहारकाल विशेषोंको कहते हैं । वे इसप्रकार हैं—आवलीके असंख्यातवें भागसे सूर्यगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको वर्गित करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है । द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रियोंके अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित

पक्षिखत्ते तेहंदियअवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चैव आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे जं लद्धं तं तम्हि चैव पक्षिखत्ते तेहंदियअपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । एवं चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्ताणं जहाकमेण आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण खंडिदियखंडेण अवहारकाला अब्भहिया कायच्चा । तदे पंचिंदियअपज्जत्त-अवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो तेहंदिय-पज्जत्ताणं अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्षिखत्ते वेहंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्षिखत्ते पंचिंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तम्हि आव-लियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्षिखत्ते चउरिंदियपज्जत्तअवहार-कालो होदि । एत्थ सच्चत्थ रासिबिसेसेण रासिमोवट्टविय लद्धं रुवणं करिय भागहार-भूदआवलियाए असंखेज्जदिभागो उप्पाएदच्चो । एदेहि अवहारकालेहि पुध पुध जगपदरे भागे हिदे अप्पपणो दच्चपमाणाणि भवन्ति । एत्थ खंडिदादओ जाणिऊण वत्तच्चा ।

करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है । पुनः इस त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको क्रमसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उत्तरोत्तर एक एक भागसे अधिक करना चाहिये । अनन्तर पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । यहां सर्वत्र राशि विशेषसे राशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके भागहाररूप आवलीका असंख्यातवें भाग उत्पन्न कर लेना चाहिये । इन अवहारकालोंसे पृथक् पृथक् जगप्रतरके भाजित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है । यहां पर खंडित आदिकका कथन समझ कर करना चाहिये ।



सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि ति ओघं ॥८३॥

पहुडिसदो किरियाविसेसणं । सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि आइं करिणत्ति । एत्थ पुव्व-  
सुत्तादो पंचिदिय इदि अनुवट्ठेदं । तेण सव्वे गुणपडिवण्णा पंचिदिया चेव । सजोगि-  
अजोगिकेवलीणं पणट्ठासेसिंदियाणं पंचिदियववएसो कधं घडदे ? ण, पंचिदियजादिणाम-  
कम्मोदयमवेक्खिय तेसिं पंचिदियववएसोदो । एदेसिं पमाणपरूवणा मूलेघपरूवणाए तुल्ला ।  
कुदो ? पंचिदियवदिरित्तजादीसु गुणपडिवण्णाभावादो ।

पंचिदियअपज्जत्ता द्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८४ ॥

एदस्स सुत्तस्स सुगमो अत्थो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि अवहिंरंति कालेण  
॥ ८५ ॥

एदस्स वि अत्थो सुगमो ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक  
गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान पर्योपमके  
असंख्यतवें भाग हैं ॥ ८३ ॥

यहां पर प्रभृति शब्द क्रियाविशेषण है । जिससे सासादनसम्यग्दृष्टि प्रभृतिका अर्थ  
सासादनसम्यग्दृष्टिको आदि लेकर होता है । यहां पर पूर्व सूत्रसे पंचेन्द्रिय पदकी अनुवृत्ति होती  
है, इसलिये संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न जीव पंचेन्द्रिय ही होते हैं, यह अभिप्राय निकल आता है ।

शंका—सयोगिकेवली और अयोगिकेवलीयोंके संपूर्ण इन्द्रियां नष्ट हो गई हैं, अतएव  
उनके पंचेन्द्रिय यह संज्ञा कैसे घटित होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी अपेक्षा सयोगिकेवली और  
अयोगिकेवलीयोंके पंचेन्द्रिय संज्ञा बन जाती है ।

इन गुणस्थानप्रतिपन्न पंचेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा मूलेघ प्ररूपणाके समान  
है, क्योंकि, पंचेन्द्रियजातिको छोड़कर दूसरी जातियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव नहीं  
पाये जाते हैं ।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८४ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है ।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों  
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८५ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम है ।



खेतेण पंचिंदियअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखे-  
ज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ ८६ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेव । एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि पंचिंदियअपज्जत्तपडि-  
वद्दाणि विगल्लिंदियापज्जत्तसुत्तं व पंचिंदियमिच्छाहडिसुत्तमिह चेव किण्ण वुत्ताणि ति  
वुत्ते ण, पंचिंदियअपज्जत्तेसु गुणपडिवण्णाभावपरूवणद्वत्तादो पुथ सुत्तारंभस्स । अपज्जत्त-  
काले वि पंचिंदिएसु गुणपडिवण्णा अत्थि वेउव्विय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगेसु  
सम्मत्त-णाण-दंसणोवलंभादो । इदि चे, होदु णाम णिव्वत्ति पडि अपज्जत्तएसु गुणपडि-  
वण्णाणमत्थित्तं, अपज्जत्तणांमकम्मोदएण सह गुणाणं अवट्ठाणविरोहा ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिं सखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिय-  
पज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जलोगमेत्तखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता होंति ।  
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वादरेइंदियअपज्जत्ता होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्वारा स्रच्यंगुलके असंख्यातवें  
भागके वगैरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ८६ ॥

यह सूत्र भी सुगम ही है । ये पूर्वोक्त तीनों भी सूत्र पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके  
प्रमाणसे प्रतिबद्ध हैं ।

शंका—जिसप्रकार विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र स्वतन्त्र न  
होकर विकलेन्द्रिय और उनके पर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ ही निबद्ध है,  
उसीप्रकार पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंमें ही, पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके  
प्रमाणके प्रतिपादक सूत्र निबद्ध करके क्यों नहीं कहे ?

समाधान—ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रिय  
अपर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंका पृथक् रूपसे आरंभ पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें  
गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अभावके प्ररूपण करनेके लिये किया है ।

शंका—अपर्याप्त कालमें भी पंचेन्द्रियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव होते हैं, क्योंकि,  
वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कर्मणकाययोगमें सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान तथा दर्शनकी  
उपलब्धि पाई जाती है ?

समाधान—यदि ऐसा है तो निर्वृत्तिकी अपेक्षा अपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न  
जीवोंका सद्भाव रहा आवे, परंतु अपर्याप्त नामकर्मके उदयके साथ सम्यग्दर्शन आदि  
गुणोंका सद्भाव माननेमें विरोध आता है ।

अब भागाभागकी बतलाते हैं—सर्व जीववाराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे  
बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात लोकप्रमाण खंड  
करते पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात  
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त

बादवेईदियपज्जत्ता होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अण्णदिया होंति । सेसरासीदो पलिदोवमअसंखेज्जदिभागमवणेऊण सेसरासिमावल्याए असंखेज्जदिभाए ऊणेगखंडं पि पुणो पुव ड्विय सेसबहुभागे वेत्तूण चत्तारि सरिसपुंजे काऊण ठवेयव्वा । पुणो आव-  
ल्याए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण अवणिदएगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खिखत्ते वेईदिया होंति । पुणो आवल्याए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण दिण्ण-  
सेसेगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुभागे विदियपुंजे पक्खिखत्ते तेईदिया होंति । पुव-  
विरलणादो संपहि विरलणा किं सरिसा, किमधिया, किमूणा ति पुच्छिदे णत्थि एत्थ उवएसो । पुणो वि तप्पाओग्गमावल्याए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण सेसेगखंडं समखंडं  
करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे तदियपुंजे पक्खिखत्ते चउरिंदिया होंति । सेसेगखंडं चउत्थपुंजे  
पक्खिखत्ते पंचिंदियमिच्छाड्ढी होति । वेईदियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेईदिय-  
अपज्जत्ता होंति । सेसेगखंडं तेसिं पज्जत्ता होंति । तेईदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं पि  
एवं चेव वत्तव्वं । पुव्वमवणिदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागरासिमसंखेज्जखंडे कए

खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त  
खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अनिन्द्रिय जीव हैं । शेष राशिमेंसे पद्योपमके असंख्यातवें  
भागको घटा कर जो राशि अवशिष्ट रहे उसके आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण खंड करके बहु-  
भागमेंसे एक भागको भी पुनः पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको लेकर चार समान पुंज करके  
स्थापित कर देना चाहिये । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके उस विरलित  
राशिके प्रत्येक एकके ऊपर निकाल कर पृथक् रखे हुए एक खंडको समान खंड करके देयरूपसे  
दे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें प्रक्षिप्त करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण  
होता है । पुनः आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके  
ऊपर प्रथम पुंजमें देनेसे शेष रहे हुए एक भागको समान खंड करके देयरूपसे देनेके पश्चात्  
उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है ।

पूर्व विरलनसे यह दूसरा विरलन क्या समान है, क्या अधिक है, या क्या न्यून है ?  
पेसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि इस विषयमें उपदेश नहीं पाया जाता है ।  
फिर भी तद्योग्य आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके  
प्रत्येक एकके ऊपर शेष एक खंडको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेके अनन्तर उनमेंसे  
बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक खंडको  
चौथे पुंजमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है । द्वीन्द्रिय जीवराशिके  
असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं । त्रीन्द्रिय, चतुरि-  
न्द्रिय और पंचेन्द्रियोंका भी इसीप्रकार कथन करना चाहिये । पहले घटा कर पृथक् रखी

बहुभागा असंजदसम्माइड्डी होंति । एवं गेयव्वं जाव अजोगिकवलि चि । अहवा एइ-  
दियाणं भागाभागो एवं वा वचव्वो । सव्वेइंदियरासी अद्धद्वेण छेत्तव्वो जाव बादरेइंदिय-  
रासी अवचिड्ढिदो चि । तत्थ लद्धअद्धच्छेदणयसलागा विरलेऊण विगं काऊण अण्णोण्ण-  
व्भासे कदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी उप्पज्जदि । एस रासिं विरलेऊण एकैकस्स रूवस्स  
सव्वमेइंदियरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बादरेइंदियाणं पमाणं पावेदि । तत्थ  
बहुखंडा सुहुमेइंदिया एयखंडं बादरेइंदिया । पुणो सुहुमेइंदियरासी अद्धद्वेण छिदिदव्वो  
जाव सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी अवचिड्ढिदो चि । तत्थ अद्धच्छेदणए विरलिय विगं करिय  
अण्णोण्णव्भासकरणेणुप्पण्णसंखेज्जरासिं विरलेऊण एकैकस्स रूवस्स सुहुमेइंदियरासिं समखंडं  
करिय दिण्णे रूवं पडि सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी पावुणदि । तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिय-  
पज्जत्ता एयखंडं तेसिमपज्जत्ता होंति । एवं बादरेइंदियाणं पि वचव्वं । एत्थ संदिड्डी । तं  
जहा— एइंदियरासी वेछप्पण्णसदमेत्तो २५६ । सुहुमेइंदियरासी चालीसव्वमहियेवसयमेत्तो

हुई पत्थोपमके असंख्यातवें भागरूप राशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण  
असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इसीप्रकार अयोगिकेवलियोंके प्रमाण आनेतक ले जाना  
चाहिये । अथवा, एकेन्द्रियोंके भागाभागको इसप्रकार भी कहना चाहिये— बादर एकेन्द्रिय  
राशि प्राप्त होने तक एकेन्द्रिय राशिको आधी आधी करते जाना चाहिये । इसप्रकार  
अर्धार्ध करनेसे जितनी अर्धच्छेद शलाकाएं प्राप्त होवें उनका विरलन करके और उस राशिके  
प्रत्येक अंकको दोरूप करके परस्पर गुणा करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न  
होती है । इस राशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति  
सर्व एकेन्द्रिय राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके  
प्रति बादर एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है । वहां बहुभागप्रमाण  
सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव और एक भागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय जीव हैं । पुनः  
सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होने तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवराशिको अर्धार्धरूपसे  
छेदित करना चाहिये । ऐसा करनेसे वहां जितने अर्धच्छेद प्राप्त हों उनका विरलन  
करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो  
असंख्यात राशि उत्पन्न होवे उसका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक एकके प्रति  
सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक  
एकके प्रति सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होती है । वहां पर बहुभागप्रमाण सूक्ष्म  
एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि है और एक भागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि है । इसीप्रकार  
बादर एकेन्द्रियोंका भी कथन करना चाहिये । यहां पर संदृष्टि देते हैं । वह इसप्रकार है—

एकेन्द्रिय जीवराशि दोसौ छप्पन २५६ है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशि दोसौ चालीस  
२४० है । बादर एकेन्द्रियराशि सोलह १६ है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तराशि एकसौ अस्सी

२४०। बादरेइंदियरासी सोलसमेचो १६। सुहुमेइंदियपज्जचरासी असीदिसयमेचो १८०। तेसिमपज्जत्ता सट्ठी ६० हवंति। बादरेइंदियअपज्जत्ता वारस १२ हवंति। तेसि पज्जत्ता चत्तारि ४।

संपहि वेइंदियपज्जचरासीदो वेइंदिय-तेइंदियरासीणं विसेसो किं सरिसो किमहिओ हीणो वा इदि बुत्ते असंखेज्जगुणो हवदि। तं जहा। बुच्चदे- तेइंदिय-चउरिंदियरासीणं विसेसादो वेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो असंखेज्जगुणो। तं कथं जाणिज्जे? आहरिओव-देसादो भागाभागहि परुविदवक्खाणादो य जाणिज्जे। तेइंदिय-चउरिंदियरासिविसेसो पुण तेइंदियपज्जचरासीदो बहुगो। तं कथं णव्वदे? तेइंदियअपज्जचरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो चि बुच्चअप्पावहुगसुत्तादो। तेइंदियपज्जचरासीदो पुण वेइंदियपज्जचरासी विसेसहीणो। तं कथं णव्वदे? एदं पि अप्पावहुगसुत्तादो चेव णव्वदे। तदो जाणिज्जे जहा वेइंदियपज्जचरासीदो विसेसहि यतीइंदियपज्जचरासीदो बहुदरतीइंदिय-चउरिंदिय-

है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तराशि साठ ६० है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि बारह १२ है और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि चार ४ है।

अब द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशियोंका विशेष अर्थात् अन्तर क्या समान है, क्या अधिक है या हीन है? ऐसा पूछने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है ऐसा समझना चाहिये। वह इसप्रकार है। आगे उसीको कहते हैं— त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय जीवराशिका विशेष असंख्यातगुणा है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— आचार्योंके उपदेशसे और भागाभागमें प्ररूपण किये गये व्याख्यानसे जाना जाता है।

द्वीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे अधिक है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— त्रीन्द्रिय अपर्याप्त राशिके प्रमाणसे चतुरिन्द्रिय राशि विशेष हीन है ऐसा अल्पबहुत्वके सूत्रमें कहा है, अतएव उससे जाना जाता है।

त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिका प्रमाण विशेष हीन है।

शंका— यह कैसे जाना जाता है?

समाधान— यह भी अल्पबहुत्वके सूत्रसे ही जाना जाता है।

इसलिये जाना जाता है कि जिसप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तराशि विशेष अधिक है और इससे द्वीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष बढ़ा है। त्रीन्द्रिय

रासिविसेसादो असंखेज्जगुणो वेइदिय-तेइदियरासिविसेसो वेइदियपज्जचेहिंतो असंखेज्ज-  
गुणो त्ति ।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाण-परत्थाण-सव्वपरत्थाणभेएण । एत्थ ताव सत्थाण-  
प्पाबहुअं वुचदे । सव्वत्थोवा वादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ।  
को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । वादरेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?  
सगपज्जत्तपक्खित्तमेत्तेण । सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता । तेसिं पज्जत्ता संखेज्ज-  
गुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?  
सगअपज्जत्तमेत्तेण । सव्वत्थोवा वेइंदियअवहारकालो । विक्खंभइइ असंखेज्जगुणा । को  
गुणगारो ? सगविक्खंभइइए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो ।  
अहवा सेदीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेट्ठिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ?  
सगअवहारकालवग्गो । सो वि असंखेज्जाणि घणंगुलाणि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदि-  
भागमेत्ताणि । सेदी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को  
गुणगारो ? विक्खंभइइ । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्ज-

और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है  
इसीप्रकार त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है ।

स्वस्थान, परस्थान और सब परस्थानके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे  
यहां पर पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक  
हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुण हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात  
लोक गुणकार है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक  
हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? अपनी पर्याप्त राशिको प्रक्षिप्त करने रूप विशेषसे  
अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव  
उनसे संख्यातगुण हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव  
सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म  
एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । द्वीन्द्रियोंका  
अवहारकाल सबसे स्तोक है । अवहारकालसे विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार  
क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना  
अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके  
असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग  
है । वह प्रतिभाग भी सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात घनांगुलप्रमाण है । विष्कंभ-  
सूचीसे जगश्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है ।  
जगश्रेणीसे त्रीन्द्रियोंका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची  
गुणकार है । द्वीन्द्रियोंके द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना  
अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी

गुणो । को गुणगारो ? सेठी । एवं वेहंदिद्यअपज्जत्ताणं पि वत्तवं । एवं पज्जत्ताणं पि ।  
णवरि जम्हिह सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि घणंगुलाणि चि वुत्तं तम्हि सूचि-  
अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि चि वत्तवं । ति-चटु-पंचिंदियाणं तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं  
पि जहाकमेण वेहंदिद्य-वेहंदिद्यपज्जत्तापज्जत्ताणं भंगो । सासणादीणं मूलोघसत्थानभंगो ।

परत्थाणे पयदं । तत्थ ताव एहंदिद्यपरत्थाणं वुचदे- सव्वत्थोवा बादरेहंदिद्या ।  
सुहुमेहंदिद्या असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणा वि असं-  
खेज्जा लोगा । एवं चेव विदियवियप्पो । णवरि एहंदिद्या विसेसाहिया । अहवा  
सव्वत्थोवा बादरेहंदिद्यपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा  
लोगा । सुहुमेहंदिद्यअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं  
छेयणा वि असंखेज्जा लोगा । सुहुमेहंदिद्यपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज-  
समया । चउत्थो वियप्पो एवं चेव । णवरि एहंदिद्या विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरे-  
हंदिद्यसाहिदिसुहुमेहंदिद्यअपज्जत्तमेत्तेण । सव्वत्थोवा बादरेहंदिद्यपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता

गुणकार है । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका भी अल्पबहुत्व कहना चाहिये । इसीप्रकार  
द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका भी कहना चाहिये । इतना विशेष है कि जहां पर सूक्ष्मगुलके  
असंख्यातवें भागमात्र घनांगुल कहे हैं वहां पर सूक्ष्मगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल  
कहना चाहिये । त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तथा इन्होंके पर्याप्त और अपर्याप्त  
जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन यथाक्रमसे द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और द्वीन्द्रिय  
अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इन्द्रियमार्गणामें सासादन-  
सम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । उनमेंसे पहले एकेन्द्रियोंके परस्थान अल्प-  
बहुत्वका कथन करते हैं— बादर एकेन्द्रिय जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव  
इनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद भी असं-  
ख्यात लोक हैं । इसीप्रकार दूसरा विकल्प है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे  
एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एके-  
न्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात  
लोक गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंसे असंख्यतगुणे हैं ।  
गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोकप्रमाण हैं । सूक्ष्म  
एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात  
समय गुणकार है । चौथा विकल्प भी इसीप्रकार है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके  
प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय  
अपर्याप्तकोंके प्रमाणमें बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणको मिला देने पर जो प्रमाण हो तन्मात्र  
विशेषसे अधिक हैं । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव



असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरेइंदिया विसेसाहिया । को विसेसो ? पुव्वं भणिदो । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । को विसेसो ? पुव्वं भणिदो । छट्ठो वियप्पो एवं चेव । नवरि एइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियमेत्तेण । अहवा सच्चत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरेइंदिया विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदिय-

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । विशेषका प्रमाण कितना है ? पहले कहा जा चुका है अर्थात् बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है विशेषका प्रमाण उतना है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । विशेष क्या है ? पहले कहा जा चुका है, अर्थात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है उतना विशेष है । छठा विकल्प इसीप्रकार है । इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । अथवा, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव इनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव एकेन्द्रियअपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रियजीव एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय

पज्जत्तविरहिदसुहुमेहंदियापज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अट्ठमो वियप्पो । णवरि एहंदिया विसेसाहिया । सव्वत्थेवो वेहंदियअवहारकालो । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहियो । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तेण । पज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेटिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि । वेहंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । वेहंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? वेहंदियअवहारकालो । वेहंदियपज्जत्तदन्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई ।

पर्याप्तकोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसीप्रकार आठवां विकल्प है । इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींके अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल पूर्वोक्त अवहारकालसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगध्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगध्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है जो असंख्यात घनांगुलप्रमाण है । असंख्यात घनांगुल कितने हैं ? सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूची द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है । उस विशेषका कितना प्रमाण है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेष समझना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूचीसे जगध्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका द्रव्य जगध्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी (द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी)



तस्सेव अपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । वेईदियदव्वं विसेसाहिंयं । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदसगअपज्जत्तमेत्तो । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? वेईदियअवहारकालो । लेणो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । एवं तीईदिय-चउरिंदियाणं । एवं पंचिंदियाणं पि । णवरि अजोगिभगवत्तमाई काऊण वत्तव्वं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवमजोगिकेवल्लिदव्वं । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवल्लिदव्वं संखेज्जगुणं । अप्पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । असंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि पलिदोवमं ति ओघं । तदो वेईदियअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स संखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? पलिदोवमं । अहवा पदरं-गुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि स्रुचिअंगुलाणि । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदपलिदोवमं । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ ।

विष्कमसूची गुणकार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है । जगप्रतर द्वीन्द्रिय जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । इसीप्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व है । तथा इसीप्रकार पंचेन्द्रिय जीवोंका भी परस्थान अल्पबहुत्व है । इतना विशेष है कि पंचेन्द्रिय जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अयोगी भगवान्को आवि करके उसका कथन करना चाहिये ।

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको कहते हैं— अयोगिकेवल्लियोंका द्रव्यप्रमाण सबसे स्तोक है । चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेवल्लियोंसे संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवल्लियोंका द्रव्यप्रमाण क्षपकोंसे संख्यातगुणा है । अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण सयोगियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है । प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है । असंयतोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर पश्योपम तक ओघके समान है । पश्योपमसे द्वीन्द्रियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणाकर क्या है ? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? पश्योपम प्रतिभाग है । अथवा, प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पश्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे इतना प्रतिभाग है । उन्हीं द्वीन्द्रियोंके अपर्याप्तक जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रियोंके

केचित्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । एवं तेहंदिय-तेहंदियअपज्जत्त-  
चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्ताणं अवहारकाला कमेण विसेसा-  
हिया । तदो तीहंदियपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए  
असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । वेहंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केचित्तिय-  
मेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदतीहंदियपज्जत्तअवहारकालमेत्तो विसेसो ।  
पंचिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसो । चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । तस्सेव  
विकखंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? पुवं भणिदो । पंचिंदियपज्जत्तविकखंभसूई  
विसेसाहिया । वेहंदियपज्जत्तविकखंभसूई विसेसाहिओ । तेहंदियपज्जत्तविकखंभसूई विसे-  
साहिया । पंचिंदियअपज्जत्तविकखंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए  
असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । पंचिंदियविकखंभसूई विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ?  
आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तविकखंभसूचिमेत्तेण । एवं णेयच्चं

अवहारकालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें  
भागसे इन्द्रियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष  
अधिक है । इसीप्रकार त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त,  
पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल भी क्रमसे विशेष अधिक हैं । पंचेन्द्रिय  
अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार  
क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके  
अवहारकालसे इन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष  
अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको खंडित करके  
जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है । इन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय  
पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे चतुरिन्द्रिय  
पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे उर्द्धाकी  
विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? पहले कहा जा चुका है । चतुरिन्द्रिय  
पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय  
पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे इन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । इन्द्रिय  
पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय  
पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार  
क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी  
विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे  
अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभ-

जाव चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-वेइंदियअपज्जत्त-वेइंदियाणं वि-  
क्खंभसूईओ त्ति । सेठी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? वीइंदियअवहारकालो । चउरिं-  
दियपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पंचिंदियपज्जत्तदव्वं विसे-  
साहियं । वेइंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । तेइंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । पंचिंदिय-  
अपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचिंदिय-  
दव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्त-  
दव्वमेत्तेण । एवं चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-वेइंदियअपज्जत्त-  
वेइंदियाणं दव्वणि जहाकमेण विसेसाहियाणि । तदो पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ?  
वेइंदियअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । अण्णिदिया अणंतगुणा ।  
को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धान्मसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ?  
लोगो । वादेइंदियपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो, सिद्धेहि

सूचीको खंडित करके जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसी-  
प्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय,  
अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूची आनेतक ले जाना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी  
विष्कंभसूचीसे जगध्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल  
गुणकार है । जगध्रेणीसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार  
क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय पर्याप्त  
जीवोंका द्रव्य विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष  
अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्त  
द्रव्यसे पंचेन्द्रियोंका अपर्याप्त द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असं-  
ख्यातवां भाग गुणकार है । पंचेन्द्रिय अपर्याप्त द्रव्यसे पंचेन्द्रिय द्रव्य विशेष अधिक  
है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्त-  
द्रव्यको खंडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय  
अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय  
जीवोंका द्रव्यप्रमाण यथाक्रमसे विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असंख्यात-  
गुणा है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । जगप्रतरसे लोक  
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगध्रेणी गुणकार है । लोकसे अनिन्द्रिय जीवोंका  
प्रमाण अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्ध जीवोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका  
असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? लोकका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर  
एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका प्रमाण अनिन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ?  
अभव्यसिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, जीवराशिके प्रथम वर्गमूलसे भी

वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स वि अणंतगुणो सच्चजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागस्स अण-  
तिमभागो । को पडिभागो ? अणिदिया । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरेइंदिया  
विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया ।  
सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमेइंदिया विसे-  
साहिया । एइंदिया विसेसाहिया ।

एवं इंदियमगणा समत्ता ।

कायानुवादेण पुढविकाइया आजकाइया तेइउकाया वाउकाइया  
बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया  
बादरवणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया  
सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता-  
पज्जत्ता द्व्यपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा लोगा ॥ ८७ ॥

अनन्तगुणा और सर्व जीवराशिके असंख्यातवें भागका अनन्तवां भाग गुणकार है ।  
प्रतिभाग क्या है ? अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके  
प्रमाणसे उन्हींके अपर्याप्तक जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष  
अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे एकेन्द्रिय  
अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे  
एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । इनसे  
एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई ।

कायानुवादसे पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक जीव  
तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक, बादर वायुकायिक,  
बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पांच बादरसंबन्धी अपर्याप्त जीव,  
सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक जीव तथा  
इन्हीं चार सूक्ष्मसंबन्धी पर्याप्त जीव और अपर्याप्त जीव, ये सब प्रत्येक द्व्यपमाणकी  
अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात लोकप्रमाण हैं ॥ ८७ ॥

१ कायानुवादेन पृथिवीकायिका अप्कायिकास्तेजःकायिका वायुकायिका असंखेयलोकः । स. सि. २, ८,  
आउडुरासिवारं लोगे अण्णोणसंशुणे तेज । भू-जल-वाक अहिया पडिभागो असंखलोगो दु ॥ गो. जी. २०४.  
अपदिट्ठिदपत्तेया असंखलोगप्पमाणया होति । तत्तो पदिट्ठिदा पुण असंखलोगेण संगणिदा ॥ गो. जी. २०५. असंख्या  
सेसा । पंचसं. १, ९. पत्तेयपज्जवणकाइयाउ पयरे इरंति लोगसं । अंयुलअसंखमाणेण माहयं मुदगतंयू । आबलिवग्गो  
अन्तरावली य गुणोओ दु मायरा तेज । वाज य लोगसंखं सेवतिगमसंखिया लोगा ॥ पंचसं. २, १०-११. असंखिक्का

एत्थ पुढवी काओ सरीरं जेसिं ते पुढवीकाया चि ण वत्तव्वं, विग्गहगईए वट्ठ-  
माणं जीवाणमकाइत्तप्पसंगादो । पुणो कथं वुच्चदे ? पुढविकाइयणामकम्मोदयवतो  
जीवा पुढविकाइया चि वुच्चंति । पुढविकाइयणामकम्मं ण कहिं वि वुत्तमिदि चे ण, तस्स  
एइंदियजादिणामकम्मतब्भूदत्तादो । एवं सदि कम्माणं संखाणियमो सुत्तसिद्धो ण घडदि  
त्ति वुत्ते वुच्चदे । ण सुत्ते कम्माणि अट्टेव अट्टेदालसयमेवेत्ति, संखंतरपडिसेहविधायय-  
एवकाराभावादो । पुणो केत्तियाणि कम्माणि हंति ? हय-गय-विय-फुल्लंधुव-सलह-मक्कु-  
णुहेहि-गोमिदादीणि जेत्तियाणि कम्मफलाणि लोणे उवलब्भंते कम्माणि वि तत्तियाणि  
चेव । एवं सेसकाइयाणं पि वत्तव्वं । बादरणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ  
बादरा । थूलसरीराणं जीवाणं बादरत्तं किण्ण वुच्चदे ? ण, बादरइंदियओगाहणादो

यहां पर पृथिवी है काय अर्थात् शरीर जिनके उन्हें पृथिवीकाय जीव कहते हैं,  
ऐसा नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, पृथिवीकायका ऐसा अर्थ करने पर बिग्रहगतिमें विद्यमान  
जीवोंके अकायित्वका अर्थात् पृथिवीकायित्वके अभावका प्रसंग आ जाता है ।

शंका—तो फिर पृथिवीकायिकका अर्थ कैसा कहना चाहिये ?

समाधान—पृथिवीकाय नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंको पृथिवीकायिक कहते  
हैं, इसप्रकार पृथिवीकायिक शब्दका अर्थ करना चाहिये ।

शंका—पृथिवीकायिक नामकर्म कहीं भी अर्थात् कर्मके भेदोंमें नहीं कहा गया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पृथिवीकाय नामका कर्म एकेन्द्रिय नामक नामकर्मके  
प्रतिर अन्तर्भूत है ।

शंका—यदि ऐसा है तो सूत्रसिद्ध कर्मोंकी संख्याका नियम नहीं रह सकता है ?

समाधान—ऐसा प्रश्न करने पर आचार्य कहते हैं कि सूत्रमें कर्म आठ ही अथवा  
एकसौ अड़तालीस ही नहीं कहे हैं, क्योंकि, आठ या एकसौ अड़तालीस संख्याको छोड़कर  
दूसरी संख्याओंका प्रतिषेध करनेवाला 'एव' ऐसा पद सूत्रमें नहीं पाया जाता है ।

शंका—तो फिर कर्म कितने हैं ?

समाधान—लोकमें षोड़ा, द्वाथी, वृक ( भेड़िया ) भ्रमर, शलभ, मत्कुण, उद्देहिका  
( कीमक ), गोमी और इन्द्र आदि रूपसे जितने कर्मोंके फल पाये जाते हैं, कर्म भी उतने  
ही होते हैं ।

इसीप्रकार शेष कायिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये । उनमें बादर  
नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव बादर कहलाते हैं ।

शंका—स्थूल शरीरवाले जीवोंको बादर क्यों नहीं कहा जाता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वेदनक्षेत्रविधानसे बादर एकेन्द्रियोंकी अवगाहनासे  
पुढवीकाइया जव अरुंखिआ बाउकाइया । अ. सू. १४१, पत्र १७९.

सुहुमेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणादो बहुत्तोवलंभा । तदो पडिहम्ममाणसरीरो बादरो । अण्णेहि पोग्गलेहि अपडिहम्ममाणसरीरो जीवो सुहुमो चि धेत्तव्वं । एकमेकं प्रति प्रत्येकम्, प्रत्येकं शरीरं येषां ते प्रत्येकशरीराः । एत्थ पत्तेयसरीरिण्हिसो साहारणसरीरवणप्फइकाइयपडिसेहफले । पुढविकाइयादओ जीवा पत्तेयसरीरा चेव । तेसिं पत्तेयववएसो सुत्ते किण्ण कदो ? तत्थ पत्तेयसरीरस्स संभवो चेव असंभवो णत्थि चि ण तेण ते विसेसिज्जंते 'सति संभवे व्यभिचारे च विशेषणमर्थवद्भवति' इति न्यायात् । सुहुम-  
णामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ जीवा सुहुमा हवति । थोवसरीरोगाहणाए वट्टमाणा जीवा सुहुमा चि ण धेप्पति, सुहुमेइंदियओगाहणादो बादेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्त-  
विहाणसुत्तादो थोवत्तुवलंभा । अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ अपज्जत्ता चि धेत्तव्वा णाणिप्पणसरीरा, पज्जत्तणामकम्मोदयअणिप्पणसरीराणं पि गहणप्पसंगादो । तहा पज्जत्तणामकम्मोदयवैतो जीवा पज्जत्ता । अण्णहा णिप्पणसरीरजीवाणमेव गहणप्प-

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंकी अवगाहना बड़ी पारी जाती है, इसलिये स्थूल शरीरवाले जीवोंको बादर नहीं कह सकते हैं । अतः जिनका शरीर प्रतिघातयुक्त है वे बादर हैं और अन्य पुद्गलोंसे प्रतिघातरहित जिनका शरीर है वे सूक्ष्म जीव हैं, यह अर्थ यहां पर बादर और सूक्ष्म शब्दसे लेना चाहिये ।

एक एक जीवके प्रति जो शरीर होता है उसे प्रत्येक कहते हैं । जिन जीवोंका प्रत्येकशरीर होता है वे प्रत्येकशरीर जीव हैं । यहां सूत्रमें 'प्रत्येकशरीर' पदका निर्देश साधारणशरीर वनस्पतिकायिकके प्रतिषेधके लिये किया है । पृथिवीकायिक आदि जीव प्रत्येकशरीर ही होते हैं ।

शंका—सूत्रमें पृथिवीकायिक आदि जीवोंको प्रत्येक संज्ञा क्यों नहीं दी गई है ?

समाधान—उन पृथिवीकायिक आदि जीवोंमें प्रत्येक शरीरका संभव ही है असंभव नहीं है, इसलिये प्रत्येक पदसे उन्हें विशेषित नहीं किया गया है, क्योंकि, व्यभिचारके होने पर, अथवा उसकी संभावना होने पर, दिया गया विशेषण सार्थक होता है, ऐसा न्याय है ।

सूक्ष्म नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव सूक्ष्म होते हैं । यहां शरीरकी स्तोक अवगाहनमें विद्यमान जीव सूक्ष्म होते हैं, ऐसा अर्थ नहीं लिया गया है, क्योंकि वेदनाक्षेत्रविधानके सूत्रसे सूक्ष्म एकेन्द्रियोंकी अवगाहनाकी अपेक्षा बादर एकेन्द्रियोंकी अवगाहना भी स्तोक पारी जाती है । अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त बादर पृथिवीकायिक आदि जीव अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहां पर लेना चाहिये । किंतु जिनका शरीर अभी निष्पन्न नहीं हुआ अर्थात् जिनकी शरीर-पर्याप्ति पूर्ण नहीं हुई है वे अपर्याप्त हैं, ऐसा अर्थ यहां नहीं लेना चाहिये, क्योंकि, ऐसा अर्थ लेने पर पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए भी जिनका शरीर पूर्ण नहीं हुआ है अपर्याप्त पदसे उनके भी ग्रहणका प्रसंग आ जाता है । उसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीव पर्याप्त हैं, प्रकृतमें पर्याप्त पदसे ऐसा अर्थ लेना चाहिये, अन्यथा जिन जीवोंका शरीर निष्पन्न हो चुका है पर्याप्त पदसे उनका ही ग्रहण होगा ।



संगा । बादर-सुहुमज्जिवेसु पंच-चउम्भेएसु तस्सेवेत्ति एगवयणणिदेसो कथं घडदे ? ण, तेसिं जादीए एगत्तसंभवादे ।

एथ चोदगो भणदि । विग्गहगईए वडुमाणवणप्फइकाइया किं पत्तेयसरीरा आहो साहारणसरीरा इदि ? किं चातः ? ण पत्तेयसरीरा, कम्मइयकायजोगे वडुमाणवणप्फइकाइया अणता चि कट्ठु वणप्फइकाइयपत्तेयसरीराणमणंतत्तप्पसंगा । ण च एवं सुत्ते, तेसिं असंखेज्जलोगमेत्तपमाणपदुप्पायणादे । ण ते साहारणसरीरा वि, तत्थ—

साहारणमाहरो साहारणमाणपाणगहणं च ।

साहारणजीवाणं साहारणलक्खणं भणिदं ॥ ७४ ॥

इचादिगाहाहि उत्तसाहारणलक्खणाणुवलंभादे । ण च पत्तेय-साहारणसरीरवदिरिचा वणप्फइकाइया अत्थि, तहाविहोवएसभावादे । तस्मात्प्रत्येकं शरीरं देहो येषां ते प्रत्येक-शरीरा इत्येतन्न घटत इति ?

शंका — बादर जीव पांच प्रकारके और सूक्ष्म जीव चार प्रकारके होते हैं, अतः सूत्रमें 'तस्सेव' इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उन पांच प्रकारके बादर और चार प्रकारके सूक्ष्म जीवोंके जातिकी अपेक्षा एकत्व संभव है, इसलिये एकवचन निर्देश करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

शंका—यहां पर शंकाकार कहता है कि विग्रहगतिसमें विद्यमान वनस्पतिकायिक जीव क्या प्रत्येकशरीर हैं या साधारणशरीर हैं ? यदि इस प्रश्नका फल पूछा जाय तो यह है कि वे जीव इन दोनों विकल्पोंमेंसे प्रत्येकशरीर तो हो नहीं सकते, क्योंकि, कर्मणकाययोगमें रहने-वाले वनस्पतिकायिक जीव अनन्त होनेसे वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंके अनन्तत्वका प्रसंग था जाता है । परंतु सूत्रमें ऐसा है नहीं, क्योंकि, सूत्रमें वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका असंख्यात लोकमात्र प्रमाण कहा है । उसीप्रकार वे जीव साधारणशरीर भी नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, वहां पर—

साधारण जीवोंका साधारण ही तो आहार होता है और साधारण दशासोऽच्छासका ग्रहण होता है । इसप्रकार आगममें साधारण जीवोंका साधारण लक्षण कहा है ॥ ७४ ॥

इत्यादि गाथाओंके द्वारा कहा गया साधारण जीवोंका लक्षण नहीं पाया जाता है । और प्रत्येकशरीर तथा साधारणशरीर इन दोनोंसे व्यतिरिक्त वनस्पतिकायिक जीव पाये नहीं जाते हैं, क्योंकि, इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है । इसलिये 'जिनका देह प्रत्येक है वे प्रत्येकशरीर हैं' यह कथन घटित नहीं होता है ?

१ प्रतिपु 'संखेज्ज' इति पाठः ।

२ गो. जी. १९२.

एत्थ परिहारो बुचदे । जेण जीवेण एकेण चेव एकसरीरद्विएण सह-दुःखमणुभ-  
वेदव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो जीवो पत्तेयसरीरो । जेण जीवेण एगसरीरद्वियवह्महि जीवेहि  
सह कम्मफलमणुभवेयव्वमिदि कम्ममुवज्जिदं सो साहारणसरीरो । ण च अच्छिण्णाउअस्स  
तव्ववएसो, तत्र प्रत्यासत्तेरभावात् । विग्गहगईए पुण पच्चासत्ती अत्थि चि हवदि एसो  
ववएसो तम्हा ण पुव्वुत्तदोसस्स संभवो । अहवा पत्तेयसरीरणामकम्मोदयवंतो वणप्फइ-  
काइया पत्तेयसरीरा । साहारणणामकम्मोदयवंतो साहारणसरीरा चि वचव्वं । सरीरगहिद-  
पढमसमए दोण्हं सरीरणमेगदरस्स उदओ हवदीदि विग्गहगईए वट्टमाणजीवाणं पत्तेय-  
साहारणसरीरववएसो ण पावदि चि बुत्ते, ण एस दोसो, तत्थ वि पच्चासत्ती अत्थि चि  
उवयोरण तेसिं पत्तेय-साहारणसरीरववएससंभवादो । विग्गहगईए वट्टमाणणंतजीवाणं  
साहारणकम्मोदयपरवसाणमण्णोण्णाणुगयत्तणेण एयत्तमुवगयएससरीरम्मि वट्टमाणत्तादो वा

समाधान — यहां पर उपर्युक्त शंकाका परिहार करते हैं । जिस जीवने एक शरीरमें  
स्थित होकर अकेले ही सुख दुःखके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है वह जीव  
प्रत्येकशरीर है । तथा जिस जीवने एक शरीरमें स्थित बहुत जीवोंके साथ सुख-दुःखरूप  
कर्मफलके अनुभव करने योग्य कर्म उपार्जित किया है, वह जीव साधारणशरीर है । परंतु  
जिसकी आयु छिन्न नहीं हुई है, अर्थात् जो जीव अपनी पर्यायको छोड़कर प्रत्येक व साधारण  
पर्यायमें उत्पन्न नहीं हुआ है उस जीवके इसप्रकारका व्यपदेश नहीं हो सकता है, क्योंकि, वहां  
पर प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है । विग्रहगतिमें तो प्रत्यासत्ति पाई जाती है, इसलिये वहां पर  
यह व्यपदेश होता है, अतएव यहां पूर्वोक्त दोष संभव नहीं है । अथवा, प्रत्येकशरीर नाम-  
कर्मके उदयसे युक्त वनस्पतिकायिक जीव प्रत्येकशरीर हैं और साधारण नामकर्मके उदयसे  
युक्त वनस्पतिकायिक जीव साधारणशरीर हैं, ऐसा कथन करना चाहिये ।

शंका — शरीर ग्रहण होनेके प्रथम समयमें दोनों शरीरोंमेंसे किसी एकका उदय होता  
है, इसलिये विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनोंमेंसे  
कोई भी संज्ञा नहीं प्राप्त होती है ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, विग्रहगतिमें भी प्रत्यासत्ति पाई जाती  
है, इसलिये उपचारसे उन जीवोंके प्रत्येकशरीर अथवा, साधारणशरीर संज्ञा संभव है ।  
अथवा, साधारण नामकर्मके उदयके आधीन हुए और विग्रहगतिमें विद्यमान हुए अनन्त जीव  
परस्पर अनुगत होनेसे एकत्वको प्राप्त हुए एक शरीरमें रहते हैं, इसलिये वे प्रत्येकशरीर  
नहीं हैं ।

विशेषार्थ — वर्तमान आयुके समाप्त होने पर वर्तमान शरीरको छोड़कर उत्तर  
शरीरके ग्रहण करनेके लिये जो गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं । यहां विग्रहका अर्थ-  
शरीर है, इसलिये विग्रह अर्थात् शरीरके लिये जो गति होती है उसे विग्रहगति कहते हैं ।  
इसके श्रुगति, पाणिमुक्तागति, लगलिकागति और गोमूत्रिकागति इसप्रकार चार भेद हैं ।



ण ते पत्तेयसरीरा । एदे छव्वीसरासीओ दव्वपमाणेण असंखेज्जलोगमेत्ता हवंति । एत्थ विसेस-  
पटुप्पायणोच्चायाभावादे । काल-खेचेहि परूवणा ण कदा ।

संपहि सुत्ताविरुद्धेणाइरियपरंपरागदोवएसेण तेउकाइयरासिउप्पायणविहाणं वत्त-  
इस्सामो । तं जहा—एगं घणलोगं सलागभूदं ठविय अवरेगं घणलोगं विरलिय एकेकस्स  
रूवस्स एकेकं घणलोगं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं ।  
ताथे एका अण्णोण्णगुणगरसलागा लद्धा हवदि । तस्सुप्पणरासिस्स पलिदोवमस्स

इनमेंसे प्रथम गतिको छोड़कर दोष तीन गतियां विग्रह अर्थात् मोड़ेरूप हैं । जब वनस्पति-  
कायिक जीव पेसी मोड़ैवाली गतिसे न्यूतन शरीरको ग्रहण करता है तब उसके एक, दो या  
तीन समयतक साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय नहीं होता है, क्योंकि, प्रत्येक या  
साधारण नामकर्मका उदय शरीर ग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर होता है । इसी  
अभिप्रायको ध्यानमें रखकर शंकाकारने यह शंका की है कि जबतक वनस्पतिकायिक जीव  
विग्रहगतिमें रहता है तबतक उसके उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी भी कर्मका उदय नहीं पाया  
जाता है, इसलिये उसकी साधारणशरीर और प्रत्येकशरीर इन दोनोंमें किसी भी भेदमें गणना  
नहीं हो सकती है । इस शंकाका समाधान दो प्रकारसे किया गया है । एक तो यह कि यद्यपि  
विग्रह अर्थात् मोड़ैवाली गतिमें उक्त दोनों कर्मोंमेंसे किसी कर्मका उदय नहीं पाया जाता है,  
यह ठीक है; फिर भी प्रत्यासत्तिसे पेसे जीवको भी प्रत्येक या साधारण कह सकते हैं । अर्थात्  
पेसा जीव एक दो या तीन समयके अनन्तर ही प्रत्येक या साधारण नामकर्मके उदयसे युक्त  
होनेवाला है, अतएव उपचारसे उसे प्रत्येक या साधारण कहनेमें कोई आपत्ति नहीं है । दूसरे  
विग्रहका अर्थ मोड़ा न लेकर शरीर ले लेने पर इषुगतिकी अपेक्षा विग्रहगतिमें अर्थात् न्यूतन  
शरीरके ग्रहण करनेके लिये होनेवाली गतिमें साधारण या प्रत्येक नामकर्मका उदय पाया ही  
जाता है, क्योंकि, इषुगतिसे उत्पन्न होनेवाला जीव आहारक ही होता है ।

ये पूर्वोक्त छव्वीस जीवराशियां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात लोकप्रमाण हैं । यहां  
पर विशेषरूपसे प्रतिपादन करनेका कोई उपाय नहीं पाया जाता है, इसलिये काल और  
क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा इन छव्वीस जीवराशियोंकी प्ररूपणा नहीं की ।

अब सूक्ष्माविकृद् आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशके अनुसार तेजस्कायिक जीव-  
राशिके प्रमाणके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं । यह इसप्रकार है—एक घनलोकको  
शलाकारूपसे स्थापित करके और दूसरे घनलोकको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक  
एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर और परस्पर वर्णितसंवर्णित करके शलाकाराशिमेंसे  
एक कम कर देना चाहिये । तब एक अन्योन्य गुणकार शलाका प्राप्त होती है । परस्पर

१ का गुणकारशलाका ? विरलितराशिमार्गतसर्वदेयराश्यां । गुणितवाररूपा जी. जी. पु. २८३, (पर्याप्ति  
व्यवहार)

असंखेज्जदिभागमेत्तवग्गसलागा हवंति । तस्सद्वच्छेदणयसलागा असंखेज्जा लोगा । रासी वि असंखेज्जलोगमेत्तो जादे । पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलेज्ज तत्थ एकेकस्स रूवस्स उट्ठिदमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अव्वरं रूवमवणेयव्वं । ताथे अण्णोण्णगुणगारसलागा दोण्णि । वग्गसलागा अद्वच्छेदणयसलागा रासी च असंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण पेदव्वं जाव लोगमेत्तसलागरासी समत्तो ति । ताथे अण्णोण्णगुणगारसलागपमाणं लोगो । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदमहारासिं विरलेज्ज तं चेव सलागभूदं ठविय विरलिय-एक्केकस्स रूवस्स उप्पण्णमहारासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरूवमवणेयव्वं । ताथे अण्णोण्णगुणगारसलागा लोभो रूवाहिओ । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । पुणो उप्पण्णरासिं विरलिय रूवं पडि उप्पण्णरासिमेव दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो अण्णेगरूवमवणेयव्वं । तदो अण्णोण्णगुणगारसलागाओ लोगो दुरूवाहिओ । सेसतिगमसंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण

वर्गितसंवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई उस राशिकी वर्गशलाकाएं पस्थोपमके असंख्यातवें भागमान होती हैं, उस उत्पन्न राशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यातलोकप्रमाण होती हैं और वह उत्पन्न राशि भी असंख्यात लोकप्रमाण होती है। पुनः इस उत्पन्न हुई महाराशिकी विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिकी शेषरूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीबार एक कम करना चाहिये। तब अन्योन्य गुणकार शलाकाएं दो होती हैं और वर्गशलाकाएं अर्धच्छेदशलाकाएं, तथा उत्पन्नराशि असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। इसीप्रकार लोकप्रमाण शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये। तब अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण लोक होगा और शेष तीन राशियां अर्थात् उस समय उत्पन्न हुई महाराशि और उसकी वर्गशलाकाएं तथा अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यात लोकप्रमाण होंगी। पुनः इसप्रकार उत्पन्न हुई महाराशिकी विरलित करके और इसी राशिकी शलाकारूपसे स्थापित करके विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको देयरूपसे देकर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये। तब अन्योन्य गुणकार शलाकाएं एक अधिक लोकप्रमाण होती हैं। शेष तीनों राशियां अर्थात् उत्पन्न हुई महाराशि, वर्गशलाकाएं और अर्धच्छेदशलाकाएं असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं। पुनः उत्पन्न हुई महाराशिकी विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति उसी उत्पन्न हुई महाराशिकी देकर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे दूसरीबार एक घटा देना चाहिये। उस समय अन्योन्य गुणकार शलाकाएं दो अधिक लोकप्रमाण होती हैं। शेष तीनों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण

दुरुवृणुकस्ससंखेज्जमेचलोगसलागासु दुरुवाहियलोगम्हि पविट्ठासु चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा हवन्ति । एवं गेयव्वं जाव विदियवारद्विदसलागरासी समत्तो त्ति । ताधे वि चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदरासिं सलागभूदं ठविय अवरेगमुट्ठिदमहारासिपमाणं विरलेऊण उट्ठिदमहारासिपमाणमेव रुवं पडि दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगं रुवमवणेयव्वं । ताधे चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा । एवमेदेण कमेण गेदव्वं जाव तदियवारं ठवियसलागरासी समत्तो त्ति । ताधे चत्तारि वि असंखेज्जा लोगा । पुणो उट्ठिदमहारासिं तिप्पडिरासिं काऊण तत्थेगं सलागभूदं ठविय अण्णेगरासिं विरलेऊण तत्थ एक्केक्कस्स रुवस्स एगरासिपमाणं दाऊण वग्गिदसंवग्गिदं करिय सलागरासीदो एगरुवमवणेयव्वं । एवं पुणो पुणो करिय गेयव्वं जाव अदिककंतअण्णोण्णगुणगारसलागाहि ऊणचउत्थवारद्विद-अण्णोण्णगुणगारसलागरासी समत्तो त्ति । ताधे तेउकाइयरासी उट्ठिदो हवदि । तस्स

होती हैं । इसप्रकार इसी क्रमसे दो कम उत्कृष्ट संख्यातमात्र लोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शलाकाओंके दो अधिक लोकप्रमाण अन्योन्य गुणकार शलाकाओंमें प्रविष्ट होने पर चारों राशियां भी असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । इसीप्रकार दूसरीवार स्थापित शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । तब भी चारों भी राशियां असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । पुनः अन्तमें उत्पन्न हुई महाराशिको शलाकारूपसे स्थापित करके और दूसरी उसी उत्पन्न हुई महाराशिके प्रमाणको विरलित करके और उत्पन्न हुई उसी महाराशिके प्रमाणको विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति देयरूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । तब भी चारों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण होती हैं । इसीप्रकार तीसरीवार स्थापित शलाकाराशि समाप्त होनेतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये । तब भी चारों राशियां असंख्यात लोकप्रमाण हैं । पुनः अन्तमें इस उत्पन्न हुई महाराशिको तीन प्रतिराशिरूप करके उनमेंसे एक राशिको शलाकारूपसे स्थापित करके, दूसरी एक राशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति एक राशिके प्रमाणको देयरूपसे देकर परस्पर वर्गितसंवर्गित करके शलाकाराशिमेंसे एक कम कर देना चाहिये । इसप्रकार पुनः पुनः करके तब तक ले जाना चाहिये जब तक कि अतिक्रान्त शलाकाओंसे अर्थात् पढ़ली दूसरी और तीसरीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाओंसे न्यून चौथीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि समाप्त होती है । तब तेजस्कायिक

१ एवं प्रथम-द्वितीय-तृतीयवारस्थापितशलाकाराशिन्यूनचतुर्थवारस्थापितशलाकाराशिपरिसमाप्तौ सत्ता तत्रोत्पन्नमहाराशिः तेजस्कायिकजीवराशेः प्रमाणं भवति । गो. जी. जी.प्र. टी. २०४. पुनःतत्रोत्पन्नमहाराशिः प्राक्कृतप्रतिके कृत्वा अतीतगुणकारशलाकाराशित्रयहीनोऽयं चतुर्थवारस्थापितशलाकाराशिनिष्ठाप्यते । गो. जी., जी. प्र., टी. पृ. २८४. ( पर्याप्ति अधिकार ).

२ ति. प. पत्र १८२.

गो. जी. पृ. २८२-२८४.

गुणगारसलागा चउत्थवारं द्विविदसलागरासिपमाणं होदि ।

के वि आइरिया सलागरासिस्स अद्वे गदे तेउक्काइयरासी उप्पज्जदि चि भणंति । के वि तं गेच्छंति । कुदो ? अद्दुट्टरासिसमुदायस्स वग्गसमुट्ठिदत्ताभावादो । तेउक्काइय-अण्णोण्णगुणगारसलागा वग्गसमुट्ठिदा चि कथं जाणिज्जे ? परियम्मवयणादो । के वि आइरिया एवं भणंति । जहा— एसो रासी तेउक्काइयरासिस्स गुणगारसलागपमाणं ण भवदि । पुणो को होदि चि बुत्ते बुच्चदे— गुणेजमाणस्स लोगस्स गुणगारसरूवेण पवेसमाणलोमाणं जाओ सलागाओ ताओ तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागा बुच्चंति । एदाओ वग्गसमुट्ठिदाओ ण पुविह्लओ चि । तम्हा अद्दुट्टगुणगारसलागोवएसो विरुज्जेदो, एसो ण विरुज्जेदो इदि । एवं पि ण घडेदो । कुदो ? लोगद्वल्लेयणएहिं तेउक्काइयरासिस्स अद्वच्छेदणए भागे हिदे जं लद्धं तं विरलिय एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाउणण्णोण्णवत्थे कदे तेउक्काइय-रासी उप्पज्जदि । हेट्ठिह्लविरलिदरासी वि तेउक्काइयअण्णोण्णगुणगारसलागपमाणं भवदि ।

राशि उत्पन्न होती है । उस तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकार चौथीवार स्थापित अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिप्रमाण है ।

कितने ही आचार्य चौथीवार स्थापित शलाकाराशिके आधे प्रमाणके व्यतीत होने पर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है, ऐसा कहते हैं । परंतु कितने ही आचार्य इस कथनको नहीं मानते हैं, क्योंकि, साढ़े तीनवार राशिका समुदाय वर्गधारामें उत्पन्न नहीं है ।

शंका—यह ठीक है कि द्वाद्वार (साढ़े तीनवार) राशिका समुदाय वर्गोत्पन्न नहीं है, पर तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकार वर्गधारामें उत्पन्न हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—उक्त आचार्योंके मतमें यह बात परिकर्मके वचनसे जानी जाती है ।

कितने ही आचार्य इसप्रकार कहते हैं कि यह पूर्वोक्त राशि (द्वाद्वार राशि) तेजस्कायिक राशिकी गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप नहीं है । फिर कौनसी राशि तेजस्कायिक राशिकी गुणकार शलाकाराशिके प्रमाणरूप है, ऐसा पूछने पर वे कहते हैं कि गुण्यमान लोकके गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलाकारें हों उतनी तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकारें कही जाती हैं । ये अन्योन्य गुणकार शलाकारें वर्गमें उत्पन्न हुई हैं पहलेकी अर्थात् साढ़े तीनवार राशिरूप नहीं, इसलिये द्वाद्वार राशिप्रमाण गुणकार-शलाकारोंका उपदेश विरोधको प्राप्त होता है, यह उपदेश नहीं ।

परंतु इसप्रकारका कथन भी घटित नहीं होता है, क्योंकि, लोकके अर्धच्छेदोंसे तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करने पर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती है और अधस्तन विरलित राशि भी तेजस्कायिक राशिकी

णवरि अण्णोण्णगुणगरसलागा तेउकाइयरासिवग्गसलागाहिंतो असंखेज्जगुणत्तं पत्ताओ । कुदो ? तेउकाइयरासिस्स अद्दच्छेदणयसलागापढमवग्गमूलादो असंखेज्जगुणत्तादो । ण च एदमिच्छिज्जदे । कुदो ? तेउकाइयरासिवग्गसलागादो तस्स असंखेज्जगुणहीणत्तादो । तं कथं णव्वदे ? परियम्मवयणादो । तं जहा— तेउकाइयरासिस्स अण्णोण्णगुणगरसलागा वग्गिज्जमाणा वणिगज्जमाणा असंखेज्जे लोगे वग्गे हेट्ठादो उवरिमसंखेज्जगुणं गंतूण तेउकाइयरासिस्स वग्गसलागं पावदि चि । एस विरलिदरासी ण वग्गसमुट्ठिदो वि । कुदो ? लोगद्दछेदणयच्छिण्णंतेउकाइयरासिस्स अद्दच्छेदणयमेत्तत्तादो । विरलिद—दिण्णमाणरासीणं समाणत्तणेण तेउकाइयरासिस्स घणाघणधारासमुप्पणत्तणेण च तेउकाइयरासिस्स अद्दच्छेदणयसलागाओ ण वग्गसमुट्ठिदाओ चि ? ण एदं, इट्ठत्तादो । ण च परियम्मेण सहविरोहो, तस्स तदुद्देसपदुप्पायणे वावारादो । एत्थ पुण अड्डुड्डवारमेत्ताओ चेव तेउका-

अन्योन्य गुणकार शलाकाओंके प्रमाणरूप होती है । पर इस मतमें इतना विशेष है कि अन्योन्य गुणकार शलाकाएं तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं, क्योंकि, इसप्रकार जो अन्योन्य गुणकार शलाकाएं उत्पन्न होती हैं वे तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंके प्रथम वर्गमूलसे असंख्यातगुणी हो जाती हैं । लेकिन यह इष्ट नहीं है, क्योंकि, तेजस्कायिक राशिकी वर्गशलाकाओंसे अन्योन्य गुणकार शलाकाराशि असंख्यातगुणी हीन है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—परिकर्मके वचनसे जाना जाता है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको उत्तरोत्तर वर्गित करते हुए असंख्यात लोकप्रमाण अर्थात् अधस्तन वर्गोंसे ऊपर असंख्यातगुणे जाकर तेजस्कायिकराशिकी वर्गशलाकाएं प्राप्त होती हैं ।

दूसरे यह विरलित राशि, अर्थात् गुणकाररूपसे प्रवेशको प्राप्त होनेवाले लोकोंकी जितनी शलाकाएं हों वह राशि, वर्गसमुत्पन्न भी नहीं है, क्योंकि, वह लोकके अर्धच्छेदोंसे छिन्न तेजस्कायिक राशिसे अर्धच्छेदप्रमाण है ।

शंका—विरलितराशि और देयराशि समान होनेसे और तेजस्कायिकराशि घनाघनधारामें उत्पन्न हुई होनेसे तेजस्कायिकराशिकी अर्धच्छेदशलाकाएं भी तो वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं ।

समाधान—पर यह कोई बात नहीं है, क्योंकि, यह बात हमें इष्ट है । और इसतरह परिकर्मके साथ भी विरोध नहीं आता है, क्योंकि, परिकर्मका उसके उद्देशमात्रके प्रतिपादन करनेमें व्यापार होता है । यहां पर तो केवल तेजस्कायिकराशिकी साढ़े तीन राशिधार अन्वोन्य

इयरसिअण्णोगुणगारसलागाओ चि घेत्तव्वं, आइरियपरांपरागओवएसत्तादो । ण च वग्गसमुट्ठिदत्तं गुणगारसलागाणं णत्थि चि अद्दुव्वएसो ण भद्दओ, अद्दुव्वएसणहाणुव-  
वत्तीदो चेव तदवग्गसमुट्ठिदत्तस्स अवग्गमादो । ण परियम्मदो वग्गत्तसिद्धी, तस्स तेउका-  
इयअद्दच्छेदणएहि अणेयंतियत्तादो ।

अहवा तेउक्काइयरसिस्स अण्णोगुणगारसलागाओ सलागभूदाओ द्विउज्ज

गुणकार शलाकाएं होती हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये । क्योंकि, आचार्य परंपरासे इसी-  
प्रकारका उपदेश आ रहा है । गुणकार शलाकाएं वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं, इसलिये साढ़े  
तीनवारका उपदेश ठीक नहीं है, सो बात भी नहीं है, क्योंकि, साढ़े तीनवारका उपदेश  
अन्यथा बन नहीं सकता है, इसीसे गुणकार शलाकाएं वर्गसमुत्पन्न नहीं हैं, यह बात जानी  
जाती है । परिकर्मसे इनके वर्गत्वकी भी सिद्धि नहीं होती है, क्योंकि, इसका तेजस्कायिक  
राशिके अर्धच्छेदोंके साथ अनेकान्त है ।

विशेषार्थ—यहां पर तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकारशलाकाएं कितनी हैं, इस  
विषयमें आचार्य परंपरासे आये हुए मतके अतिरिक्त दो और मतोंका उल्लेख किया गया  
है । घनलोकको लेकर विरलन, देय और शलाकाक्रमसे तीसरीवार शलाकाराशिके समाप्त  
होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसमेंसे पहली, दूसरी और तीसरी शलाकाराशिके घटा देने  
पर शेष राशिको शलाका मान कर साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका प्रमाण  
आ जाता है । यह मत आचार्य-परंपरासे आया हुआ होनेसे प्रमाण है । दूसरा मत यह है कि  
तीसरीवार शलाकाराशिके समाप्त होने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसके आधे प्रमाणको  
शलाकारूपसे स्थापित करना चाहिये तब जाकर साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शला-  
काओंका प्रमाण होता है । पर कितने ही आचार्य इस मतका विरोध करते हैं । उनके  
मतसे यह साढ़े तीन राशिवार अन्योन्य गुणकार शलाकाराशिका उपदेश वर्गसमुत्पन्न  
नहीं है, इसलिये प्रमाणभूत नहीं है । तेजस्कायिक राशिकी अन्योन्य गुणकार शला-  
काएं वर्गोत्पन्न हैं इस मतकी पुष्टि वे आचार्य परिकर्मके आधारसे करते हैं ।  
कितने ही आचार्य ऐसा कथन करते हैं कि जितने लोकप्रमाणराशिके प्रत्येक एक पर  
लोकको स्थापित करके परस्पर गुणित करनेसे तेजस्कायिकराशि उत्पन्न होती है उतने  
लोकप्रमाणराशि तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाएं होती हैं । इन्हें वे वर्गसमुत्पन्न  
भी मानते हैं । पर धीरेसेनखामने दूसरे मतके समान इस मतको भी प्रमाणभूत नहीं माना  
है, क्योंकि, इसप्रकार अन्योन्य गुणकार शलाकाओंका जो प्रमाण प्राप्त होता है वह  
तेजस्कायिकराशिकी वर्गशलाकाराशिसे असंख्यातगुणा हो जाता है । पर क्रमानुसार अन्योन्य  
गुणकार शलाकाराशिसे वर्गशलाकाराशि असंख्यातगुणी होनी चाहिये ।

अथवा, तेजस्कायिकराशिकी अन्योन्य गुणकार शलाकाओंको शलाकारूपसे स्थापित



तदुत्पत्तिणिमित्ररासीणं वग्गिदसंवग्गिदे काऊण तेउकाइयरासी उप्पाएदच्चा । तेउकाइयरासि भागहारं काऊण तस्सुवरिमवग्गं विहज्जमाणरासिं करिय खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण वत्तच्चाणि । तस्स पमाणसुवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो । कारणं, तेउकाइयरासिणा उवरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी चैव आगच्छदि त्ति । एत्थ संदेहा-भावा णिरुत्ती ण वत्तच्चा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । एत्थ हेट्ठिमवियप्पो णत्थि, तेउकाइयरासिस्स विहज्जमाणरासिपटमवग्गमूलमेत्तत्तादो । उवरिमवियप्पो तिविहो, गहिदो गहिदगहिदो गहिदगुणगारो चेदि । तत्थ गहिदं वत्तइस्सामो । तेउकाइयरासिणा उवरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणये कदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । अहवा तेउकाइयरासिणा तस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउकाइयरासी आगच्छदि । तस्सद्वच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्वच्छेदणये कदे वि तेउकाइयरासी आगच्छदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । तेउकाइयरासिणा तेउकाइयउवरिमवग्गसमाणअट्ठरूववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण-

करके और उसकी उत्पत्तिकी निमित्तभूत राशियोंको वर्गितसंवर्गित करके तेजस्कायिकराशि उपपन्न कर लेना चाहिये । तेजस्कायिकराशिको भागहार करके और उसके उपरिम वर्गको भज्यमानराशि करके खंडित, भाजित, विरलित और अपहतका जानकर कथन करना चाहिये । उसका प्रमाण तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गका असंख्यातवां भाग है । इसका कारण यह है कि तेजस्कायिकराशिसे उसके उपरिम वर्गके भाजित करने पर तेजस्कायिक जीवराशि ही आती है । यहां पर संदेह नहीं होनेसे निश्चितिके कथनकी आवश्यकता नहीं है ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । परंतु यहां पर अधस्तन विकल्प नहीं पाया जाता है, क्योंकि, तेजस्कायिकराशि भज्यमान राशिके प्रथम वर्गमूलप्रमाण है ।

उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है, गृहीत, गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकार । उनमेंसे गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—तेजस्कायिक राशिसे उसके उपरिम वर्गके भाजित करने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशि आती है । अथवा, तेजस्कायिक राशिके प्रमाणसे उसके उपरिम वर्गको गुणित करके लब्ध राशिका उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है ।

अब अष्टरूपमें उपरिम विकल्पको बतलाते हैं—तेजस्कायिक राशिसे तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध अथवा उसका तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गमें भाग देने

तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउक्काइयरासी अगच्छदि । घणाघगे<sup>१</sup> वत्तइस्सामो । तेउक्काइयरासिणा तेउक्काइयरासिउवरिमवग्गसमाणअद्धरुववग्गं गुणेऊग तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गसमाणवेरुववग्गं गुणेऊण तस्सुवरिमवग्गं मोत्तूण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे तेउक्काइयरासी आगच्छदि । तस्स भागहारस्स अद्धच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अद्धच्छेदणए कदे वि तेउक्काइयरासी अवचिद्धदे । विहज्जमाणवग्गाणं असंखेज्जदिभाएण गहिद-गहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो । एवं तेउक्काइयपरुवणा समत्ता ।

तेउक्काइयरासिमसंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुढविकाइयरासी होदि । तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते आउकाइयरासी होदि । तम्हि असंखेज्जलोगेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वाउकाइयरासी होदि । एदेसिं तिणं रासीणं अवहारकालस्सुप्पायण-

पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है ।

अब घनाघनमें उपरिम विकल्पको बतलाने हैं— तेजस्कायिक राशिसे तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके समान घनके उपरिम वर्गको गुणित करके पुनः तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गके समान द्विरूपके वर्गको गुणित करके तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको छोड़कर उसके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी तेजस्कायिक राशिका प्रमाण आता है । विभज्यमान वर्गोंके असंख्यातवें भागरूप तेजस्कायिक राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये । इसप्रकार तेजस्कायिक जीवराशिकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

तेजस्कायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिके प्रमाणमें प्रक्षिप्त करने पर पृथिवीकायिक राशिका प्रमाण होता है । इस पृथिवीकायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिमें मिला देने पर अण्कायिक राशिका प्रमाण होता है । इस अण्कायिक राशिको असंख्यात लोकोंके प्रमाणसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अण्कायिक राशिमें मिला देने पर वायुकायिक राशिका प्रमाण होता है ।

अब इन तीनों राशियोंके अवहारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाने



विहाणं उच्यते । तं जहा— तेउक्काइयरासिं पुढविकाइयरासिं सोहिय सेसेण तेउक्काइयरासिं भागे हिदे असंखेज्जलोगरासी आगच्छदि । तेण रुवाहिण तेउक्काइयरासिमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे पुढविकाइयअवहारकालो होदि । पुणो पुढविकाइयरासिं आउकाइयरासिं सोहिय सेसेण पुढविकाइयरासिं भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी आगच्छदि । तेण रुवाहिण पुढविकाइयअवहारकालमोवट्टिय लद्धं तम्हि चेव अवणिदे आउक्काइयअवहारकालो होदि । पुणो आउक्काइयरासिं वाउकाइयरासिं सोहिय तत्थावसिद्धरासिणा आउकाइयरासिं भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी लब्धमि । तेण रुवाहिण आउकाइयअवहारकाले भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे वाउकाइयअवहारकालो होदि । एत्थुवउज्जंती गाहा—

रासिविसेसेणवहिरासिं य जं हिथे<sup>१</sup> समुवळं ।

रूवूणहिणवहिरारो ऊणाहिओ तेण ॥ ७५ ॥

हैं । वद इसप्रकार है— तेजस्कायिक राशिको पृथिवीकायिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे तेजस्कायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि आती है । एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाणराशिसे तेजस्कायिक राशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी तेजस्कायिक राशिमेंसे घटा देने पर पृथिवीकायिक राशिसंबन्धी अवहारकाल होता है । पुनः पृथिवीकायिक राशिको जलकायिक राशिमेंसे घटा कर जो शेष रहे उससे पृथिवीकायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाणराशि आती है । एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी पृथिवीकायिक राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर जलकायिक राशिसंबन्धी अवहारकाल होता है । पुनः अप्कायिक राशिको वायुकायिक राशिमेंसे घटा कर वहां जो राशि अवशिष्ट रहे उससे अप्कायिक राशिके भाजित करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आती है । एक अधिक उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे अप्कायिक राशिके अवहारकालके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अप्कायिक राशिके अवहारकालमेंसे घटा देने पर वायुकायिक राशिसंबन्धी अवहारकाल होता है । यहां पर उपयुक्त गाथा दी जाती है—

राशिविशेषसे राशिके भाजित करने पर जो भाग लब्ध आवे उसमेंसे यदि एक कम करके शेष राशिसे भागद्वारा भाजित किया जाय तो उस लब्धको उसी भागद्वारमें मिला देवे और यदि लब्ध राशिमें एक अधिक करके उससे भागद्वारा भाजित किया जाय तो भागद्वारके भाजित करने पर जो लब्ध राशि आवे उसे भागद्वारमेंसे घटा देना चाहिये ॥ ७५ ॥

एसा किरिया इंदिय-कसाय जोगमग्गणासु विसेसाहियरासीणं विसेसहीणरासीणं च णिरवयवा कायन्त्रा । एदे पुव्वुत्ते चत्तारि अवहारकाले विरलिय तेउक्काइयरासिस्सुवरिम-वर्गं चउण्हं विरलणाणं पुथ पुथ समखंडं करिय दिण्णे अप्पण्णो रासिपमाणं पावेदि । पुणो सगसगवादरजीवेहिं सगसगविरलणाए एगरूवोवरि द्विदसगसगरासिस्मिह भागे हिदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी आगच्छदि । तेण रूवूणेण सगसगवहारकालेसु ओवद्विदेसु लद्धं तस्मि चैव पक्खित्ते सगसगसुहुमाणं अवहारकाला भवंति । पुणो एदे चत्तारि वि सुहुम-जीववहारकाले पुथ पुथ विरलिय तेउक्काइयरासिस्सुवरिमवर्गं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सगसगसुहुमपमाणं पावेदि । पुणो सगसगविरलणाए एगरूवोवरि द्विदसुहुमरासिं सगसगसुहुमअपज्जत्तएहिं भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहिं रूवूणेहि सगसगसुहुम-अवहारकाले ओवद्विय लद्धं तस्मि चैव पक्खित्ते सगसगसुहुमपज्जत्ताणमवहारकाला भवंति । पुवं भागलद्धसंखेज्जरूवेहिं सगसगसुहुमजीववहारकालेसु गुणिदेसु सगसग-सुहुमअपज्जत्तवहारकाला भवंति । चउण्हं बादराणं पुव्वुप्पादिदेहिं असंखेज्जलोगमेत्त-

इन्द्रिय, कषाय और योग इन तीन मार्गणाओंमें विशेष अधिक राशियोंके और विशेष हीन राशियोंके संबन्धमें संपूर्ण रूपसे यह क्रिया करना चाहिये। पूर्वोक्त इन चारों अवहारकालोंको विरलित करके और तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको चारों विरलनोंके ऊपर पृथक् पृथक् समान खंड करके दे देने पर अपनी अपनी राशिका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपनी अपनी वादरायिक जीवराशिके प्रमाणका अपने अपने विरलनके एक अंकके ऊपर स्थित अपनी अपनी राशिके प्रमाणमें भाग देने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि प्राप्त होती है। एक कम उस असंख्यात लोकप्रमाण राशिसे अपने अपने अवहारकालोंके भाजित करने पर जो जो लब्ध आवे उसे उसी अपने अपने अवहारकालमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके प्रमाण लानेके लिये अवहारकाल होते हैं। पुनः सूक्ष्म जीवसंख्या हीन चारों भी अवहारकालोंको पृथक् पृथक् विरलित करके और उन विरलनोंके प्रत्येक एकके ऊपर तेजस्कायिक राशिके उपरिम वर्गको समान खंड करके दे देने पर विरलनोंके प्रत्येक एकके प्रति अपने अपने सूक्ष्म जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है। पुनः अपने अपने विरलनके एक विरलन-अंकके ऊपर स्थित सूक्ष्म जीवराशिके प्रमाणको अपनी अपनी सूक्ष्म अपर्याप्त जीवराशिके प्रमाणसे भाजित करने पर वहां जो संख्यात लब्ध अवै उनमेंसे एक कम करके शेष राशिसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उन्हीं अवहारकालोंमें मिला देने पर अपने अपने सूक्ष्म पर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। पहले भाग देने पर जो संख्यात लब्ध आवे थे उनसे अपने अपने सूक्ष्म जीवोंके अवहारकालोंके गुणित करने पर अपने अपने सूक्ष्म अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल होते हैं। चारों वादरोंके

गुणगारेहिं सगसगसामणअवहारकालेसु गुणिदेसु सगसगवादराणमवहारकाला भवंति ।

पुणो सुत्ताविरुद्धेण आहरिओवएसेण सुत्तं व पमाणभूदेण बादराणमद्वच्छेदणए वत्तइस्सामो । तं जहा— एगसागरोवमादो एगं पलिदोवमं धेत्तूण तमावलियाए असंखेज्जिदि-भागेण खंडिय तत्थेगखंडं पुथ द्रविय सेसवहुभागे तम्हि चेव पक्खित्ते बादरतेउक्काइय-अद्वच्छेदणयसलागा हवंति । जं पुथ द्रविदेयखंडं तं पुणो वि आवलियाए असंखेज्जिदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडे पुच्चरासिं दुप्पडिरासिं काऊण पक्खित्ते बादरवणप्फइ-पत्तयसरीराणं अद्वच्छेदणयसलागा हवंति । एवं बादरणिगोदपदिट्ठिदि-बादरपुदवि-बादर-आऊणं च वत्तच्च । अंतं अवणिदएगखंडं बादरआउक्काइयअद्वच्छेदणयसलागासु पक्खित्ते बादरवाउक्काइयअद्वच्छेदणयसलागा सायरोवममेत्ता जादा । बादरतेउक्काइयअद्वच्छेदणए विरलिय विंगं करिय अण्णोण्णमत्थे कदे बादरतेउक्काइयरासी उत्पज्जिदि । अहवा घणलोयेल्लेयणएहिं बादरतेउक्काइयअद्वच्छेदणएसु ओवट्ठिदेसु लद्धं विरलेऊण रुवं पडि

जो पहले असंख्यात लोकप्रमाण गुणकार उत्पन्न किये थे उनसे अपने अपने सामान्य अवहार-कालोंके गुणित करने पर अपने अपने बादर जीवोंके अवहारकाल होते हैं ।

अब आगे सूत्रके समान प्रमाणभूत सूत्राविरुद्ध आचार्योंके उपदेशके अनुसार बादर जीवोंके अर्धच्छेद बतलाते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— एक सागरोपममेंसे एक पल्योपमको ग्रहण करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो एक भाग लब्ध आवे उसे पृथक् स्थापित करके शेष बहुभागको उसी राशिमें अर्थात् पल्यकम सागरमें मिला देने पर बादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेद शलाकाएं होती हैं । जो एक भाग पृथक् स्थापित किया था उसे फिर भी आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहां जो एक भाग लब्ध आया उसे घटा कर अवशेष बहुभागको पूर्वांश अर्थात् बादर तेजस्कायिक राशिसे अर्धच्छेदोंकी दो प्रतिराशियां करके और उनमेंसे एकमें मिला देने पर बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाएं होती हैं । इसीप्रकार बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक और बादर अप्कायिक जीवराशिसे अर्धच्छेदोंका कथन करना चाहिये । अन्तमें अपनीत एक खंडको बादर अप्कायिक जीवोंकी अर्धच्छेद शलाकाओंमें मिला देने पर सागरोपमप्रमाण बादर वायुकायिक जीवोंकी अर्धच्छेदशलाकाएं हो जाती हैं ।

बादर तेजस्कायिक राशिकी अर्धच्छेदशलाकाओंका विरलन करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर तेजस्कायिक राशिसे अर्धच्छेदोंके

घणलोगं दाऊण अण्णोण्णभन्त्ये कए वादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा बादर-  
तेउअद्धच्छेदणए बादरवणप्फइपत्तेयसरीरद्वछेदणएहिंतो सोहिय अवसेसरासिं विरलिय विगं  
करिय अण्णोण्णभन्त्यरासिणा बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे वादरतेउकाइय-  
रासी उप्पज्जदि । अहवा बादरवणप्फइपत्तेयरासिस्स अहियद्वच्छेयणयमेत्ते' अद्धच्छे-  
यणए कए वादरतेउकाइयरासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोगछेदणएहि अहियद्वछेदणएसु  
ओवडिदेसु तत्थ लद्धं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स घणलोगं दाऊण अण्णोण्णभन्त्ये कए  
जो रासी तेण बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिम्हि भागे हिदे बादरतेउकाइयरासी होदि ।  
एवं बादरणिगोदपदिट्ठिद-वादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरवाउकाइयाणं अप्पप्पणो  
अद्धच्छेदणएहिंतो वादरतेउकाइयरासी उप्पादेदव्वा । एवं बादरतेउकाइयरासिस्स  
सत्तारसविहा परूवणा कदा ।

भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक  
एकके प्रति घनलोकको देकर परस्पर गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न  
होती है । अथवा, बादर तेजस्कायिक राशिके अर्धच्छेदोंको बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर  
जीवोंके अर्धच्छेदोंमेंसे घटाकर जो राशि शेष रहे उसे विरलित करके और उस विरलित  
राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर  
वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवोंकी राशिके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न  
होती है । अथवा, बादर वनस्पति प्रत्येकराशिके जितने अधिक अर्धच्छेद हों उतनीवार बादर  
वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न होती  
है । अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर वहां जो लब्ध  
आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे  
देकर परस्पर गुणित करने पर जो राशि आवे उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवरराशिके  
भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक राशि आती है । इसीप्रकार बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर  
पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक जीवोंके अपने अपने अर्धच्छेदोंसे  
बादर तेजस्कायिक राशि उत्पन्न कर लेना चाहिये । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक राशिकी  
सन्नह प्रकारकी प्ररूपणा की ।

विशेषार्थ—ऊपर पांच प्रकारसे तेजस्कायिक जीवरराशि उत्पन्न करके बतला आये  
हैं । प्रथमवार तेजस्कायिक जीवरराशिके अर्धच्छेदोंका और दूसरीवार घनलोकके अर्धच्छेदोंका  
आश्रय लेकर तेजस्कायिक जीवरराशि उत्पन्न की गई है । अन्तिम तीन प्रकारसे तेजस्कायिक  
जीवरराशिके उत्पन्न करनेमें बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवरराशिके अर्धच्छेदोंकी मुख्यता

बादरवणप्फइकइयपत्तेयसरीररासिस्स अद्वच्छेदणए विरलेऊण विगं करिय अण्णो-  
ण्णम्भत्थे कदे बादरवणप्फदिपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । अहवा घणलोगेच्छेदणएहिं  
बादरवणप्फइपत्तेगसरीरअद्वच्छेयणएसु ओवट्टिदेसु लद्धं विरलेऊण रुवं पडि घणलोगं  
दाऊण अण्णोण्णम्भत्थे कए बादरवणप्फइपत्तेयसरीररासी उप्पज्जदि । बादरेतेकाइय-  
रासीदे बादरवणप्फदिपत्तेगसरीररासिमुप्पाइज्जमाणे अहियद्वच्छेयणमेत्ते' बादरेतेकाइय-  
रासिस्स दुउणगुणगारे कए बादरवणप्फइपत्तेगसरीररासी उप्पज्जदि । अहवा अब्भहिय-

है । बादर तेजस्कायिक राशिसे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशि बड़ी है, अतएव तेजस्कायिक राशिसे अर्धच्छेदोंसे इस राशिसे जितने अधिक अर्धच्छेद हैं, उतनीवार दो रखकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिसे भाजित कर देने पर, अथवा जितने अर्धच्छेद अधिक हैं उतनीवार बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिसे अर्धित करने पर, बादर तेजस्कायिक जीव राशि उत्पन्न होती है । बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर राशिसे अर्धच्छेदोंका आश्रय करके बादर तेजस्कायिक राशिसे उत्पन्न करनेके दो प्रकार तो थे हुए । तीसरे प्रकारमें घनलोकके अर्धच्छेदोंका आश्रय और ले लिया जाता है । अर्थात् घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीव राशिसे बादर तेजस्कायिक राशिसे अर्धच्छेदोंसे अधिक अर्धच्छेदोंके भाजित कर देने पर जो लब्ध आवे उतनीवार घनलोकके परस्पर गुणित करने पर आई हुई राशिका बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर जीवराशिमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न होती है । इन्हीं तीनों प्रकारोंसे बादर निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक राशिसे अर्धच्छेदोंका आश्रय लेकर तेजस्कायिक राशिसे उत्पन्न करने पर बारह प्रकारसे तेजस्कायिक राशिका प्रमाण उत्पन्न होता है । इन बारह भेदोंमें पूर्वोक्त पांच भेदोंके मिला देने पर तेजस्कायिक राशिकी प्ररूपणा सत्रह प्रकारसे हो जाती है ।

बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशिसे अर्धच्छेदोंको विरलित करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणित करने पर बादर वनस्पति-कायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, घनलोकके अर्धच्छेदोंसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिसे अर्धच्छेदोंके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिसे प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । बादर तेजस्कायिक राशिसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिसे उत्पन्न करने पर अधिक अर्धच्छेदप्रमाण बादर तेजस्कायिक राशिसे दुगुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि उत्पन्न होती है । अथवा, अधिक अर्धच्छेदोंको विरलित करके और

छेयणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णम्भत्थकदरासिणा वादरतेउकाइयरासिं गुणिदे वादरवणप्फदिपत्तेगसरीररासी होइ । अहवा अहियच्छेयणए घणलोगछेयणएहि ओवट्टिय लद्धं विरलेऊण रूवं पडि घणलोगे दाऊण अण्णोण्णम्भत्थकदरासिणा वादरतेउकाइयरासिं गुणिदे वादरवणप्फइपत्तेगसरीररासी होदि । वादरणिगोदपदिट्ठिद-वादरपुढविकाइय-वादर-आउकाइय-वादरवाउकाइएहिंते वादरवणप्फइपत्तेयसरीररासिमुप्पाइज्जमाणे जहा तेउका-इयरासी उप्पाइदो तहा उप्पादेदव्वा । वादरणिगोदपदिट्ठिद-वादरपुढविकाइय-वादरआउ-काइय-वादरवाउकाइयाणं च एवं चेव सत्तारसविहा परूवणा परूवेदव्वा । पत्तेग-साधारणसरीरवदिरितो वादरणिगोदपदिट्ठिदरासी ण जाणिज्जदि ति बुत्ते सच्चं, तेहिं वदिरितो वणप्फइकाइएमु जीवरासी णत्थि चेव, किं तु पत्तेयसरीरा दुविहा भवन्ति वादरणिगोदजीवाणं

उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दोरूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर तेजस्कायिक राशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है । अथवा, अधिक अर्धच्छेदोंको घनलोकके अर्धच्छेदोंसे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति घनलोकको देयरूपसे देकर परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे बादर तेजस्कायिक जीव-राशिके गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवराशि होती है । बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अण्कायिक और बादर वायुकायिक जीवराशिके प्रमाणसे बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर राशिके उत्पन्न करने पर जिसप्रकार इन राशियोंसे तेजस्कायिक जीवराशि उत्पन्न की गई उसीप्रकार उत्पन्न करना चाहिये । बादर निगोदप्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अण्कायिक और बादर वायुकायिक जीवराशिका इसीप्रकार सत्रह सत्रह प्रकारकी प्ररूपणासे प्ररूपण करना चाहिये ।

विशेषार्थ—जहाँ बड़ी राशिका आश्रय लेकर छोटी राशि उत्पन्न की जावे वहाँ पर छोटी राशिके अर्धच्छेदोंसे बड़ी राशिके अर्धच्छेद जितने अधिक हों उतनीवार बड़ी राशिके आधे आधे करने पर, अथवा, उतने अर्धच्छेदप्रमाण दोके परस्पर गुणित करनेसे जो लब्ध आवे उसका बड़ी राशिमें भाग देने पर छोटी राशि आती है । तथा जहाँ छोटी राशिका आश्रय लेकर बड़ी राशि उत्पन्न की जावे वहाँ अधिक अर्धच्छेदप्रमाण छोटी राशिके द्विगुणित करने पर, अथवा, उतने अर्धच्छेदप्रमाण दोके परस्पर गुणित करनेसे जो राशि उत्पन्न हो उससे छोटी राशिके गुणित कर देने पर बड़ी राशि आ जाती है । शेष कथन स्पष्ट ही है । इसप्रकार तेजस्कायिक राशिकी सत्रह प्रकारकी प्ररूपणाके समान प्ररूपणा करनेसे उपर्युक्त प्रत्येक राशिकी प्ररूपणा सत्रह सत्रह प्रकारकी हो जाती है ।

शंका—प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर, इन दोनों जीवराशियोंको छोड़कर बादर-निगोद प्रतिष्ठित जीवराशि क्या है, यह नहीं मालूम पड़ता है ?

समाधान—यह सत्य है कि उक्त दोनों राशियोंके अतिरिक्त वनस्पतिकायिकोंमें और कोई जीवराशि नहीं है, किन्तु प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके हैं, एक

जोणीभूदसरीरा तच्चिवरीदसरीरा चेदि । तत्थ जे बादरणिगोदाणं जोणीभूदसरीरपत्तेग-  
सरीरजीवा ते बादरणिगोदपदिद्धिदा भणंति । के ते ? मूलयद्धु-भल्लय-सूरण-गलोई-लोणेसरप-  
भादओ । उत्तं च—

बीजे जोणीभूदे जीवो वक्कमइ सो व अण्णो वा ।

जे वि य मूलादीया ते पत्तेया पढमदार<sup>१</sup> ॥ ७६ ॥

सुत्ते बादरवणप्फदिपत्तेयसरीराणमेव गहणं कदं, (ण तब्भेदाणं)? ण<sup>२</sup>,  
बादरवणप्फदिकाइयपत्तेयसरीरजीवसु चेव तेसिमंतवभावादा । एदेसिं बादरपज्जत्ताणं परू-  
वमाणण परूवणइमुत्तरसुत्तमाह—

**बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर-  
पज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥ ८८ ॥**

एदस्स सुत्तस्स अथो सुगमो चि ण बुच्चदे । असंखेज्जा इदि सामणवयणेण

तो बादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर और दूसरे उनसे विपरीत शरीरवाले अर्थात्  
बादरनिगोद जीवोंके अयोनिभूत प्रत्येकशरीर जीव । उनमेंसे जो बादरनिगोद जीवोंके  
योनिभूतशरीर प्रत्येकशरीर जीव हैं उन्हें बादरनिगोद प्रतिष्ठित कहते हैं ।

शंका—वे बादरनिगोद जीवोंके योनिभूत प्रत्येकशरीर जीव कौन हैं ?

समाधान—मूली, अदरक (!) भल्लक (भद्रक), सूरण, गलोई (गुडची या गुरवेल)

लोकेश्वरप्रभा ? आदि बादरनिगोद प्रतिष्ठित हैं । कहा भी है—

योनिभूत बीजमें वही जीव उत्पन्न होता है, अथवा दूसरा कोई जीव उत्पन्न होता है ।  
वह और जितने भी मूली आदिक सप्रतिष्ठितप्रत्येक हैं वे प्रथम अवस्थामें प्रत्येक ही हैं ॥७६॥

शंका—सूत्रमें बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका ही ग्रहण किया है, उनके  
भेदोंका क्यों नहीं किया ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंमें ही उनका  
अन्तर्भाव हो जाता है ।

अब इन बादर पर्याप्तोंकी प्ररूपणाके प्ररूपण करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर  
पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ८८ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं । सूत्रमें 'असंख्यात हैं' ऐसा

१ आ. प्रती 'सलोई' इति पाठः ।

२ गो. जी. १८७. बीपु जीणिभूद जीवी वक्कमइ सो व अओ वा । जोडवि य मूले जीवी सोडवि य पत्ते  
पदमयाए ॥ प्रकापणा १, ४५, गो. ५१, पृ. २१९.

३. प्रतिपु 'गहणं कंधं ण' इति पाठः । ४. प्रतिपु 'बादरआउकाइय' इति पाठः नास्ति ।



गवण्हमसंखेज्जाणं गहणं पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहड्डमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ८९ ॥

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो चेव । एदेण अवगद-असंखेज्जासंखेज्जस्स विसेसेण  
तल्लद्विणिमित्तमुत्तरसुत्तमाह—

खेत्तेण वादरपुढविकाइय-वादरआउकाइय-वादरवणफइकाइय-  
पत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग-  
पडिभागेण ॥ ९० ॥

एत्थ अंगुलमिदि उत्ते पमाणंगुलं वेत्तव्वं । तस्स असंखेज्जदिभागस्स जो वग्गो  
तेण पडिभागेण भागहोरेण । एत्थ णिमित्ते तइया दड्ढवा । एदेण अवहारकालेण वादर-  
पुढविपज्जत्तादीहि जगपदरमवहिरदि सि जं वुत्तं होदि ।

सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त वादर अप्कायिक पर्याप्त और  
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और  
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ८९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम ही है । यद्यपि इस सूत्रसे असंख्यातासंख्यात अवगत हो  
गया, फिर भी उसकी विशेषरूपसे प्राप्ति करानेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, वादर अप्कायिक पर्याप्त और  
वादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके द्वारा सूत्र्यंगुलके असंख्यातवें भागके  
वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ ९० ॥

यहां सूत्रमें अंगुल ऐसा कहने पर प्रमाणांगुलका ग्रहण करना चाहिये । उस  
प्रमाणांगुलके असंख्यातवें भागका जो वर्ग तद्रूप प्रतिभागसे अर्थात् भागहारसे । यहाँ निमित्तमें  
तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । इस अवहारकालसे वादर पृथिवीकायिक पर्याप्त आदि  
जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

विशेषार्थ—उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुलके भेदसे अंगुल तीन प्रकारका  
है । आठ यवका एक उत्सेधांगुल होता है । पांचसौ उत्सेधांगुलोंका एक प्रमाणांगुल होता है ।

१ पल्लासंखेज्जवहिरपदरंगुलमाजिदे जगण्वदरे । जलसूणिपवादरया पुण्णा आकीलअसंखमजिदकमा ॥  
गो. जी. १०९.



एत्थ सुत्तस्सचिदमाहरिओवएसेण भागहारणं विससं भणिस्सामो । तं जहा-  
पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण स्सचिअंगुलमवहरिय लद्धं वणिग्गे वादरआउकाइयपज्जत्त-  
अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वादरपुठविकाइय-  
पज्जत्तअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वादरणिगोद-  
पदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वादर-  
वणफदिपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालो होदि । कारणं, सगरासिबहुत्तणिबंधणत्ता । एदेसि-  
मवहारकालाणं खंडिदादीणं पंचिदियतिरिक्खमंगो । णवरि पदरंगुलभागहारो एत्थ पलि-  
दोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि अवहारकालेहि जगपदरे भागे हिदे सगसगदव्वपमाण-  
भागच्छदि ।

वादरतेउपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा । असंखेज्जा-  
वलियवग्गो आवलियघणस्स अंतो ॥ ९१ ॥

अपने अपने अंगुलको आत्मांगुल कहते हैं । इनमेंसे यहां प्रमाणांगुलरूप सूच्यंगुलका ही ग्रहण  
किया गया है, क्योंकि, ड्रोप आदिकी गणनामें यही अंगुल लिया गया है । इसीप्रकार द्रव्य-  
प्रमाणाङ्गुलममें जहां अंगुलका संबंध आया है वहां इसी अंगुलका अभिप्राय जानना चाहिये ।

अब यहां पर आचार्योंके उपदेशानुसार सूत्रसे सूचित भागहारोंके विशेषको कहते हैं ।  
यह इसप्रकार है— पद्योपमके असंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलको भाजित करके जो लब्ध आवे  
उसके वागित करने पर बादर अप्कायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस  
बादर अप्कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित  
करने पर बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस बादर पृथिवी-  
कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर  
बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । इस बादर निगोदप्रतिष्ठित  
पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर  
वनस्पति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है । यहां अवहारकालोंके उत्तरोत्तर  
अधिक होनेका कारण यह है कि पूर्व पूर्ववर्ती अपनी अपनी राशि बहुत बहुत पाई जाती  
है । इन अवहारकालोंके खंडित आदिकका कथन पंचेन्द्रिय तिर्यचके खंडित आदिकके क्रयनके  
समान करना चाहिये । इतना विशेष है कि वहां पर प्रतरांगुल भागहार है और यहां पर  
पद्योपमका असंख्यातवां भाग भागहार है । इन अवहारकालोंसे जगप्रतरके भाजित करने पर  
अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है ।

बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात  
हैं । यह असंख्यातरूप प्रमाण असंख्यात आवलियोंके वर्गरूप है जो आवलीके घनके  
भीतर आता है ॥ ९१ ॥

१ विदावलिगोणमसंखं संखं च तेउवाऊणं । पज्जत्ताणं पमाणं... ॥ गी. जी. २१०, आवलिवग्गो अतरा-  
वलीय गुणिओ हू माया तेज । पञ्चसं. २, ११.

असंखेज्जा इदि सामण्णेण उत्ते णवविहस्स असंखेज्जस्स गहणं पसत्तं तप्पडिसे-  
हट्ठं असंखेज्जावलियवग्गो त्ति णिद्दसो कदो। असंखेज्जावलियवग्गो त्ति वयणेण  
घणावलियादीणमुवरिमाणं गहणे पत्ते तप्पडिसेहट्ठमावलियघणस्स अंतो इदि णिद्दसो कदो।  
घणावलियाए अब्भंतरे चेव बादरतेउपज्जत्तरासी होदि त्ति उत्तं भवदि। आहरियपरं-  
परागओवएसेण बादरतेउपज्जत्तरासिस्स अवहारकालं भणिस्सामो। तं जहा—आवलियाए  
असंखेज्जदिभाएण पदरावलियमवहारिय लद्धेण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादर-  
तेउकाइयपज्जत्तरासी होदि। एत्थ खंडिद-भाजिद-विरलिद-अवहिदाणि जाणिऊण भणिऊण  
भाणिदव्वाणि। तस्स पमाणं उच्चदे। पदरावलियउवरिमवग्गस्स असंखेज्जदिभागो असंखे-  
ज्जाओ पदरावलियाओ। तं जहा—पदरावलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरावलियं  
आगच्छदि। तिस्से दुभागेण भागे हिदे दोणि, तिणिभागेण भागे हिदे तिणि, एवं

सूत्रमें 'असंख्यात' हैं' इसप्रकार सामान्यरूपसे कथन करने पर नौ प्रकारके असं-  
ख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होता है, अतः उनके प्रतिषेध करनेके लिये 'वह असंख्यातरूप प्रमाण  
असंख्यात आवलियोंके वर्गीरूप है' ऐसा निर्देश किया है। 'असंख्यात आवलियोंके वर्गीरूप है'  
इस वचनसे घनावली आदि उपरिम संख्याओंके ग्रहणके प्राप्त होने पर उसके प्रतिषेध करनेके  
लिये 'आवलीके घनके भीतर है' इसप्रकारका निर्देश किया। इसका अभिप्राय यह हुआ कि  
बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि घनावलीके भीतर ही है। अब आचार्य परंपरासे आये हुए  
उपदेशके अनुसार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका अवहारकाल कहते हैं। वह इसप्रकार  
है—आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरा-  
वलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है। यहाँ पर  
खंडित, भाजित, विरलित और अपहृतोंको जानकर, कहकर, कहलवाना चाहिये।

विशेषार्थ—यद्यपि ऊपर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके अवहारकाल लानेकी  
प्रतिज्ञा की गई है और अन्तमें बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कितना है यह  
बतलाया है। फिर भी इससे ऊपरकी प्रतिज्ञामें कोई विसंगति नहीं आती है, क्योंकि,  
'आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे' इस कथनके  
द्वारा बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिके अवहारकालका कथन हो जाता है।

आगे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण कहते हैं। प्रतरावलीके उपरिम  
वर्गका असंख्यातवां भाग बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण है, जो प्रतरावलीके  
उपरिम वर्गका असंख्यातवां भाग असंख्यात प्रतरावलीप्रमाण है। आगे इसीका स्पष्टीकरण  
करते हैं—प्रतरावलीका उसीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर प्रतरावलीका प्रमाण आता है।  
प्रतरावलीके द्वितीय भागका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर दो प्रतरावलियां लब्ध

गंतुण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपदरावलियाए तदुवरिमवग्गे भागे हिदे असंखेज्जाओ पदरावलियाओ लब्धंति । कारणं गदं । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियाए ओवड्डिदाए तत्थ जत्तियाणि रुवाणि तत्तियाओ पदरावलियाओ हवंति । णिरुत्ती गदा ।

वियप्पो दुविहो, हेट्ठिमवियप्पो उवरिमवियप्पो चेदि । तत्थ हेट्ठिमवियप्पं वेरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियमोवड्डिय लद्धेण तं चेव पदरावलियं गुणिदे बादरेतेउपज्जचरासी होदि । अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय पदरावलियघणे भागे हिदे बादरेतेउपज्जचरासी होदि । तं जहा—पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण तम्हि भागे हिदे बादरेतेउपज्जचरासी होदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियं गुणिय तेण पदरावलियघणपटमवग्गमूलं गुणिय पदरावलियघणाघणपटमवग्गमूले भागे हिदे बादर-

आती हैं । प्रतरावलीके तृतीय भागका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर तीन प्रतरावल्यां लब्ध आती हैं । इसप्रकार नीचे जाकर आवलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको खंडित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके उपरिम वर्गमें भाग देने पर असंख्यात प्रतरावल्यां लब्ध आती हैं । इसप्रकार कारणका कथन समाप्त हुआ । प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके भाजित करने पर वहां जितना प्रमाण लब्ध आवे तत्प्रमाण प्रतरावल्यां बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है । इसप्रकार निरुक्तिका कथन समाप्त हुआ ।

विकल्प दो प्रकारका है, अधस्तन विकल्प और उपरिम विकल्प । उनमेंसे द्विरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको भाजित करके जो लब्ध आवे उससे उसी प्रतरावलीको गुणित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवराशि होती है ।

अब अधरूपमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं । प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है ।

अब घनाघनमें अधस्तन विकल्पको बतलाते हैं—प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके प्रथम वर्गमूलको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलमें भाग देने पर बादर

तेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा— पदरावलियघणपढमवग्गमूलेण घणाघणपढमवग्गमूले भागे हिदे पदरावलियघणो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए पदरावलियघणे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो पदरावलियाए असंखेज्जदिभागेण तम्हि भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि<sup>१</sup> ।

उवरिमवियप्पो तिविहो गहिदादिभेएण । वेरूवे गहिदं वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । अहवा पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गं गुणेऊण तदुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । ( एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अट्ठच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अट्ठच्छेदणए कदे वि बादरतेउकाइयपज्जत्तरासी आगच्छदि । ) अट्ठरूवे वत्तइस्सामो । पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी होदि । तं जहा— पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गो आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियाए असंखेज्जदिभाएण

तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके प्रथम वर्गमूलसे प्रतरावलीके घनाघनके प्रथम वर्गमूलके भाजित करने पर प्रतरावलीका घन आता है । पुनः प्रतरावलीसे प्रतरावलीके घनके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे उसी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

गृहीत आदिके भेदसे उपरिम विकल्प तीन प्रकारका है । उनमेंसे द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । अथवा, प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । इसप्रकार भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त अज्यमान राशिके अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

अब अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उसका घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि होती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता

<sup>१</sup> प्रतिपु 'त्ति गुणेऊण भागग्गहणं कदं' इत्यधिकः पाठः ।

पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे; बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अट्ठच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अट्ठच्छेदणए कदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । घणाघणे वत्तइस्सामो । पदरावलिआए असंखेज्जदि-भागेण पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गं गुणेऊण तेण गुणिदरासिणा घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । तं जहा— पदरावलियघणउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण घणाघणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे घणावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण आगच्छदि । पुणो वि पदरावलियउवरिमवग्गस्सुवरिमवग्गेण तम्हि भागे हिदे पदरावलियउवरिमवग्गे आगच्छदि । पुणो वि पदरावलिआए असंखेज्जदिभाएण पदरावलियउवरिमवग्गे भागे हिदे बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवमागच्छदि त्ति कट्ठु गुणेऊण भागग्गहणं कदं । तस्स भागहारस्स अट्ठच्छेदणयमेत्ते रासिस्स अट्ठच्छेदणए कदे वि बादरतेउपज्जत्तरासी आगच्छदि । एवं संखेज्जासंखेज्जाणतेसु णेयव्वं । पदरावलियउवरिमवग्गस्स घणावलियउवरिमवग्गस्स घणाघणा (-वलियउवरिमवग्गस्स) च असंखेज्जदि-

है । पुनः प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है ।

अब घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्पको बतलाते हैं— प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो लब्ध आवे उससे प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गको गुणित करके जो गुणित राशि लब्ध आवे उससे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— प्रतरावलीके घनके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनाघनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर घनावलीके उपरिम वर्गका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गसे घनावलीके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गके भाजित करने पर प्रतरावलीका उपरिम वर्ग आता है । फिर भी प्रतरावलीके असंख्यातवें भागसे प्रतरावलीके उपरिम वर्गके भाजित करने पर बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसप्रकार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है, ऐसा समझकर पहले गुणा करके अनन्तर भागका ग्रहण किया । उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हों उतनीवार उक्त भज्यमान राशिसे अर्धच्छेद करने पर भी बादर तेजस्कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसीप्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त स्थानोंमें ले जाना चाहिये । प्रतरावलीके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप, घनावलीके उपरिम वर्गके

भाएण बादरतेउपज्जत्तरासिणा गहिदगहिदो गहिदगुणगारो च वत्तव्वो। एत्थ सुत्तगाहा-  
आवळियाए वगो आवळियासंखमागगुणिदो दु ।

तम्हा घणस्स अंतो बादरपज्जत्ततेऊणं ॥ ७७ ॥

**बादरवाउकाइयपज्जत्ता द्वपमणेण केवडिया, असंखेज्जा ॥९२॥**

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो । असंखेज्जा इदि सामणवयणेण णवविहासंखेज्जस्स  
गहणे पत्ते अणिच्छिदासंखेज्जपडिसेहट्टमुत्तरसुत्तमाह—

**असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ९३ ॥**

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो णिक्खेवादीहि पुच्चं व परुवेदव्वो । एदम्हादो सुत्तादो  
सेसअट्टविहअसंखेज्जस्स पडिसेहे जादे वि अजहण्णाणुक्कस्स असंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि-  
उस्सप्पिणीओ घणलोगादिभेएण अणयवियप्पाओ तदो तप्पडिसेहट्टमुत्तरसुत्तं भणदि—

**खेत्तेण असंखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स संखेज्जदिभागो ॥९४॥**

असंख्यातवें भागरूप और घनाघनावलीके उपरिम वर्गके असंख्यातवें भागरूप बादर तेज-  
स्कायिक पर्याप्त राशिके द्वारा गृहीतगृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिये ।  
यहां सूत्रगाथा दी जाती है—

चूंकि आवलीके असंख्यातवें भागसे आवलीके वर्गको गुणित कर देने पर बादर  
तेजस्कायिक पर्याप्त राशिका प्रमाण होता है, इसलिये वह प्रमाण घनावलीके  
भीतर है ॥ ७७ ॥

बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात  
हैं ॥ ९२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । सूत्रमें ' असंख्यात हैं ' ऐसा सामान्य वचन देनेसे नौ  
प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होने पर अनिच्छित असंख्यातोंका प्रतिषेध करनेके लिये  
आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसं-  
सर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ९३ ॥

निक्षेप आदिके द्वारा इस सूत्रके भी अर्थका पहलेके समान प्ररूपण करना चाहिये । इस  
सूत्रसे शेष आठ प्रकारके असंख्यातोंके प्रतिषेध हो जाने पर भी अजघन्यानुत्कृष्ट असंख्याता-  
संख्यात अवसर्पिणियां और उत्सर्पिणियां घनलोक आदिके भेदसे अनेक प्रकारकी हैं, इसलिये  
उनका प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यात जगप्रतरप्रमाण हैं,

असंखेजाणि चि णिदेसो जगपदरादिहेट्ठिमअसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलो । घण-  
लोगादिउवरिमसंखेज्जासंखेज्जपडिसेहट्ठं लोगस्स संखेज्जदिभागवयणं । खेत्तेण इदि  
वयणे तइया दट्ठवा । सेसं सुगमं । संखेज्जरूवेहि घणलोगे भागे हिदे बादरवाउपज्जत्त-  
दब्बमागच्छदि चि वुत्तं होदि । एत्थ गाहा—

जगसेटीए वग्गो जगसेटीसंखभागगुणिदो दु ।

तम्हा घणलोगांते बादरपज्जत्तवाऊणं ॥ ७८ ॥

वणफइकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता  
दव्वपमाणेण केवडिया, अणंता ॥ ९५ ॥

वनस्पतिः कायः शरीरं येषां ते वनस्पतिकायाः, वनस्पतिकाया एव वनस्पति-

जो असंख्यात जगप्रतरप्रमाण लोकके संख्यातवें भाग है ॥ ९४ ॥

सूत्रमें 'असंख्यात' यह वचन जगप्रतर आदि अधस्तन असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेधके लिये दिया है । घनलोक आदि उपरिम असंख्यातासंख्यातके प्रतिषेध करनेके लिये 'लोकके संख्यातवें भागप्रमाण' यह वचन दिया है । 'खेत्तेण' इस पदमें तृतीया विभक्ति जानना चाहिये । शेष कथन सुगम है । संख्यातसे घनलोकके भाजित करने पर बादर वायु-  
कायिक पर्याप्त जीवोंका द्रव्य आता है, यह इस कथनका तात्पर्य है । यहां गाथा दी जाती है—  
चूंकि जगश्रेणीके वर्गको जगश्रेणीके संख्यातवें भागसे गुणित करने पर बादर वायु-  
कायिक पर्याप्त राशि आती है । इसलिये उक्त प्रमाण घनलोकके भीतर आता है ॥ ७८ ॥

वनस्पतिकायिक जीव, निगोद जीव, वनस्पतिकायिक बादर जीव, वनस्पति-  
कायिक सूक्ष्म जीव, वनस्पतिकायिक बादर पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक बादर अपर्याप्त  
जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म पर्याप्त जीव, वनस्पतिकायिक सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, निगोद  
बादर जीव, निगोद सूक्ष्म जीव, निगोद बादर पर्याप्त जीव, निगोद बादर अपर्याप्त  
जीव, निगोद सूक्ष्म पर्याप्त जीव और निगोद सूक्ष्म अपर्याप्त जीव, प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी  
अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ ९५ ॥

वनस्पति ही काय अर्थात् शरीर जिन जीवोंके होता है वे वनस्पतिकाय कहलाते हैं ।

१ तसरासिपुदविआदिचउक्कपत्तेयहीणसंसारी । साहारणजीवाणं परिमाणं होदि जिणदिट्ठे ॥ संगसण-  
असंखमागो बादरकायाण होदि परिमाणं । सेसा सुहुमपमाणं पडिमागो पुव्वणिदिट्ठो ॥ सुहुमेस संखमागं संखामागा  
अपुण्णगा इदरा । जस्सि अपुण्णद्वावो पुणद्वा संखयुणिदकमा ॥ गो. जी. २०६-२०८. साहारणबादरेस असंख  
भाग असंखमागो । पुण्णणमपुण्णणं परिमाणं होदि अणुकमसो ॥ गो. जी. २११. साहारणण सेया चउरो  
अणंता ॥ एक्कसं. २, ९.



कायिकाः । एवं सदि विग्गहर्गई वट्टमाणाणं वणप्फइकाइयत्तं ण पावेदि ? चे, ण एस दोसो, वणप्फइकाइयसंबंधेण सुह-दुक्खाणुहवणणिमित्तकम्मेणेयत्तमुवगयजीवाणमुवयरेण वणप्फइकाइयत्ताविरोहा । वणप्फइणामकम्मोदया जीवा विग्गहर्गई वट्टमाणा वि वणप्फ-इकाइया भवन्ति । जेसिमणंताणंतजीवाणमेक्कं चेव सरीरं भवदि साधारणरूपेण ते णिगोदजीवा भणन्ति । संखेज्जासंखेज्जपडिसहफलो अणंतणिदेसो । सेसं सुगमं । अणंता इदि सामण्णवयणेण णवविहस्स अणंतस्स गहणे पत्ते अविवक्खिखदस्स अट्ठविहाणंतस्स पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

तथा वनस्पतिकाय ही वनस्पतिकायिक कहलाते हैं ।

शंका—यदि ऐसा है तो विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंको वनस्पतिकायिकपना नहीं प्राप्त होता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वनस्पतिकायके संबन्धसे सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मके साथ एकत्वको प्राप्त हुए जीवोंके उपचारसे विग्रहगतिमें वनस्पतिकायिक कहनेमें कोई विरोध नहीं आता है । जिन जीवोंके वनस्पति नामकर्मका उदय पाया जाता है वे विग्रहगतिमें रहते हुए भी वनस्पतिकायिक कहे जाते हैं ।

विशेषार्थ—यहां पर शंकाकारका यह अभिप्राय है कि जो जीव विग्रहगतिमें रहते हैं उनके एक, दो या तीन समयतक नोकर्म वर्गणाओंका ग्रहण नहीं होता है, इसलिये उन्हें उस समय वनस्पतिकायिक आदि नहीं कह सकते हैं । इस शंकाका समाधान यह है कि विग्रह-गतिके प्रथम समयसे ही जीवोंके स्थावरकाय या असंकाय नामकर्मका उदय हो जाता है । स्थावरकायके पृथिवीकायिक आदि पांच अवान्तर भेद हैं और सामान्य अपने विशेषोंको छोड़कर स्वतंत्र नहीं पाया जाता है, इसलिये पृथिवी जीवके पृथिवीकाय, वनस्पति जीवके वनस्पतिकाय नामकर्मका उदय विग्रहगतिके प्रथम समयसे ही हो जाता है, यह सिद्ध हुआ । अब यदि एक, दो या तीन समयतक उसके नोकर्म वर्गणाओंका ग्रहण नहीं भी होता है, तो भी वह जीव उस उस पर्यायमें सुख और दुःखके अनुभव करनेमें निमित्तभूत कर्मोंके साथ एकत्वको प्राप्त हो चुका है, इसलिये उसे उपचारसे वनस्पतिकायिक आदि कहना किसीको प्राप्त नहीं होता है ।

जिन अनन्तानन्त जीवोंका साधारणरूपसे एक ही शरीर होता है उन्हें विगोद जीव कहते हैं । सूत्रमें संख्यात और असंख्यातका प्रतिषेध करनेके लिये 'अनन्त' पदका निर्देश किया है । शेष कथन सुगम है । सूत्रमें 'अनन्त' है 'ऐसा सामान्य सचन देनेसे नौ प्रकारके अनन्तोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर अविवक्षित आठ प्रकारके अनन्तोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—



अणंताणंताहि ओसापिणि-उस्सपिणीहि ण अवहिरंति कालेण  
॥ ९६ ॥

जदि पुव्वरासीणमणंताणंतचावोहणट्टमागदमिदं सुत्तं, तो ण अवहिरंति कालेणेत्ति वयणं गिरत्थयमिदि चे, ण एस दोसो, उभयकज्जसाहणट्टचादो । पुव्वरासीणमणंताणंतत्तं च संते वि वए अणंतेण वि अदीदकालेण असमंत्ति च पटुप्पादेदि त्ति । अवसेसं सुगमं ।

खेत्तेण अणंताणंता लोगा ॥ ९७ ॥

अदीदकाले ओसपिणि-उस्सपिणीपमाणेण कीरमाणे ण अणंताणंताओ ओसपिणि-उस्सपिणीओ भवंति । एदाहि अणंताणंताहि ओसपिणि-उस्सपिणीहि पुव्वुत्तचोदस-जीवरासीओ ण अवहिरंति त्ति भणंतेण पुव्विल्लसुत्तेण एदाणं रासीणमणंताणंतचमदीद-कालादो बहुत्तं च जाणाविदं । संपहि इमेण सुत्तेण को अपुव्वो अत्थो जाणाविदो जेणेदस्स सुत्तस्स पारंभो सफलो होज्ज ? बुब्बदे—एदाणं रासीणमदीदकालादो बहुत्तमेत्तं पुव्विल्ल-सुत्तेण जाणाविदं, ण तस्स विसेसो । एदेण पुण सुत्तेण तेसिं रासीणमदीदकालादो अणंत-

कालकी अपेक्षा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होती हैं ॥ ९६ ॥

शंका—यदि पूर्वोक्त जीवराशियोंके अनन्तानन्तत्वके ज्ञान करानेके लिये यह सूत्र आया है तो 'ण अवहिरंति कालेण' यह वचन निरर्थक है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उभय कार्योंके साधन करनेके लिये उक्त वचन दिया है । उक्त पद एक तो पूर्वोक्त राशियोंके अनन्तानन्तत्वका और दूसरे उनमेंसे प्रत्येक राशिके व्यय होने पर भी अनन्त अतीत कालके द्वारा भी वे समाप्त नहीं होती हैं, इसका प्रतिपादन करता है । शेष कथन सुगम है ।

वे चौदह जीवराशियां क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ ९७ ॥

शंका—अतीत कालको अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीके प्रमाणसे करने पर वे अवसर्पिणियां और उत्सर्पिणियां अनन्तानन्त नहीं होती हैं, ऐसी अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा पूर्वोक्त चौदह जीवराशियां अपहृत नहीं होती हैं, इसप्रकार प्रतिपादन करनेवाले इसके पहले सूत्रसे इन चौदह राशियोंके अनन्तानन्तत्वका और अतीतकालसे बहुत्वका ज्ञान हो जाता है । परंतु इस समय कहे गये इस सूत्रसे कौनसा अपूर्व अर्थ जाना जाता है, जिससे इस सूत्रका प्रारंभ सफल होवे ?

समाधान—पूर्व अतीत सूत्रने इन चौदह राशियोंका अतीत कालसे बहुत्वका ज्ञान करा दिया, किन्तु उसकी विशेषताका ज्ञान नहीं कराया । परंतु यह सूत्र उन राशियोंका अतीत कालसे अनन्तगुणत्वका ज्ञान कराता है । आगे उसीका स्पष्टीकरण करते हैं—पूर्व सूत्रमें

गुणत्वं जाणाविज्जदे । तं जहा—पुच्छिच्छसुत्ते गुणिज्जमाणरासी कप्पो, एत्थ पुण तदो असंखेज्जगुणो लोगो चि वुत्तो । कप्पस्स गुणगारासीदो वणलोगगुणगारो अणत्तगुणो । कुदो ? एदस्स सुत्तस्स अवयवभूदसोलसवडियअप्पावहुगवयणादो जाणिज्जदे । तम्हा सफलो एस सुत्तारंभो चि धेत्तव्वं ।

संपहि एत्थ धुवरासी उप्पाइज्जदे । तं जहा—पुढविकाइय-आउकाइय-तेउकाइयवाउ-काइय-तसकाइए अकाइए च, एदेसिं चैव पमाणं वर्गं वणप्फइयकाइयभाजिदं च सव्वजीव-रासिम्हि पक्खिच्चे वणप्फइकाइयधुवरासी होदि । वणप्फइकाइयवदिरित्तसेसरासिणा<sup>१</sup> सव्वजीव-रासिमोवट्टिय लद्धरूवणेण भजिदसव्वजीवरासिं तम्हि चैव पक्खिच्चे वणप्फइकाइयधुवरासी होदि चि वुत्तं भवदि । एदेण धुवरासिणा सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे वणप्फइ-काइयरासी आगच्छदि । वणप्फइकाइयधुवरासिमसंखेज्जलोगेण खंडिदेयखंडं तम्हि चैव पक्खिच्चे सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासी होदि । एदेण पुवुत्तअसंखेज्जलोगवणप्फिकाइय-धुवरासिभागहारेण रूवाहिणेण वणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे धादरवणप्फइकाइयधुवरासी

गुण्यमान राशि कल्प कही गई है, परंतु इस सूत्रमें कल्पसे असंख्यातगुणा लोक गुण्यमान राशि कहा गया है । तथा कल्पकी गुणकार राशिसे घनलोकका गुणकार अनन्तगुणा है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—इस सूत्रके अवयवभूत सोलहप्रतिक अल्पबहुत्वके वचनसे यह जाना जाता है ।

इसलिये इस सूत्रका आरंभ सफल है, ऐसा यहां ग्रहण करना चाहिये ।

अब यहां धुवराशि उत्पन्न की जाती है । उसका स्पर्धीकरण इसप्रकार है—पृथिवी-कायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वसकायिक और अकायिक, इन जीवराशियोंके प्रमाणको तथा वनस्पतिकायिक जीवराशिसे प्रमाणसे भाजित उक्त राशियोंके प्रमाणके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक धुवराशि होती है । वनस्पतिकायिक जीवराशिको छोड़कर शेष राशिसे द्वारा सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सर्व जीवराशिको भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी सर्व जीवराशिमें मिला देने पर वनस्पतिकायिक जीवराशिकी धुवराशि होती है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है । इस धुवराशिसे सर्व जीवराशिसे उपरिम वर्गके भाजित करने पर वनस्पतिकायिक जीवराशि आती है । वनस्पतिकायिक धुवराशिको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी वनस्पतिकायिक धुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवराशिकी धुवराशि होती है । ऊपर जो असंख्यात लोकप्रमाण वनस्पतिकायिक धुवराशिका भागहार कह आये हैं उसमें एक मिला कर जो प्रमाण हो उससे वनस्पतिकायिक धुवराशिसे गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक धुवराशि होती है । पुनः

१ प्रतिशु 'सेवरासी' इति पाठः ।

होदि । पुणो सुहुमवणप्फइअपज्जत्तरासिणा<sup>१</sup> सुहुमवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । पुणो पुधइवियपुव्विच्छसंखेज्जरूवेहि रूवणेहि सुहुमवणप्फइकाइयधुवरासिं खंडिय तत्थेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तएहि बादरवणप्फइकाइयरासिम्हि भागे हिदे लद्धं असंखेज्जलोगं दुप्पडिरासिं काऊण तत्थेगेण बादरवणप्फइकाइयधुवरासिं गुणिदे बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । पुध इवियरासिणा रूवणेण बादरवणप्फइकाइयधुवरासिं खंडिय तत्थेयखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तधुवरासी होदि । एवं चेव णिगेदाणं पि धुवरासी उप्पदेदव्वो । णवर पत्तेयसरीहि सह सत्त पक्खेवरासीओ भवंति । सेसविहीणं वणप्फइकाइयमंगो ।

तसकाइय-तसकाइयअपज्जत्तएसु मिच्छादट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,  
असंखेजा<sup>२</sup> ॥ ९८ ॥

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवराशिसे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवराशिसे भाजित करने पर वहां जो लब्ध आवे उसकी दो प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक प्रतिराशिसे द्वारा सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिसे गुणित करने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । पुनः पृथक् स्थापित पूर्वोक्त प्रतिराशिसे संख्यात प्रमाणमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिसे खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी सूक्ष्म वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त राशिसे प्रमाणसे बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त राशिसे भाजित करने पर जो असंख्यात लोक लब्ध आवें उनकी दो प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक प्रतिराशिसे बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिसे गुणित करने पर बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीवराशिकी ध्रुवराशि होती है । पुनः पृथक् स्थापित प्रतिराशिमेंसे एक कम करके जो शेष रहे उससे बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिसे खंडित करके वहां जो एक खंड लब्ध आवे उसे उसी बादर वनस्पतिकायिक ध्रुवराशिमें मिला देने पर बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । इसीप्रकार निगोद जीवोंकी भी ध्रुवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिये । इतना विशेष है कि प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिकोंके साथ सात प्रक्षेपराशियां होती हैं । शेष विधि वनस्पतिकायिकके कथनके समान है ।

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ ९८ ॥

१ प्रतिपु 'अपज्जत्तरासि' इति पाठः ।

२ त्रसकायिकसंख्या पक्षेऽन्यथेव । स. सि. १, ८.

एदस्स सुचस्स अत्थो अपइं परूविदो चि ण वुच्चे । असंखेज्जा इदि सामण्ण-  
वयणेण णवण्हमसंखेज्जाणं गहणे संपत्ते अविवक्खिदे अवणिय विवक्खियपरूवणद्वयुत्तर-  
सुचं भणदि ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति  
कालेण ॥ ९९ ॥

एदस्स वि अत्थो बहुसो उच्चो चि ण उच्चे । तं च असंखेज्जासंखेज्जयमणेय-  
वियप्पमिदि तस्स विसेसपरूवणद्वयुत्तरसुचं भणदि—

खेत्तेण तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मिच्छाद्वीहि पदरमवहिरदि  
अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण अंगुलस्स संखेज्जदिभाग-  
वग्गपडिभाएण ॥ १०० ॥

एदेण सुत्तेण जगपदरादो जगसेढीदो च उवरिम-हेट्ठिमसंखेज्जवियप्पा अवणिदा  
भवति । 'अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण' इमेण वयणेण जगपदरस्स अंतवभूद-

इस सूत्रका अर्थ कईवार कह चुके हैं, इसलिये यहां नहीं कहते हैं । 'सूत्रमें असं-  
ख्यात है' इस सामान्य वचनके देनेसे नौ ही प्रकारके असंख्यातोंके ग्रहणके प्राप्त होने पर  
अविवक्षित असंख्यातोंका अपनयन करके विवक्षित असंख्यातके प्ररूपण करनेके लिये  
आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात  
अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ ९९ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ अनेकवार कहा जा चुका है, इसलिये नहीं कहते हैं । वह  
असंख्यातासंख्यात अनेक प्रकारका है, इसलिये उसके विशेषके प्ररूपण करनेके लिये आगेका  
सूत्र कहते हैं—

क्षेत्रकी अपेक्षा त्रसकायिकोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें  
भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और त्रसकायिक पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा  
सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०० ॥

इस सूत्रसे जगप्रतर और जगश्रेणीसे ऊपर और नीचेके असंख्यात विकल्प अपनीत  
होते हैं । 'अंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे' इस वचनसे जगप्रतरके अन्तर्भूत

१ प्रतिषु 'असंखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'असंखेज्जदिभागपडिभागेण' इति पाठः ।

सेसवियप्पा पडिसिद्धा त्ति दट्ठ्वा । जगपदरं कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं पदरंगुलं पि कदजुम्मं वग्गसमुट्ठिदं चेव । तेसिं ट्ठुविदसव्वभागहारा वि वग्गसमुट्ठिदा कदजुम्मं चेदि जाणावणट्ठमंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गवयणं । अण्णहा तस्स फलाणुवलंभादो । पदरंगुलस्स असंखेज्जदिमाणेण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागेण च जगपदरे भागे हिदे जहाकमेण तसकाइया तसकाइयपज्जत्ता च भवंति त्ति वुत्तं भवदि ।

**सासणसम्माइट्ठिण्हुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥१०१॥**

एत्थ तसकाइय-तसकाइयपज्जत्ता इदि पुव्वसुत्तादो अणुवट्ठदे । कुदो ? उवरि पुघ अपज्जत्तसुत्तारंभण्णहाणुवत्तीदो । सेसं सुगमं ।

**तसकाइयअपज्जत्ता पंचिंदियअपज्जत्ताण भंगो ॥ १०२ ॥**

शेष विकल्प प्रतिषिद्ध हो जाते हैं, पेसा समझना चाहिये । जगप्रतर कृतयुग्म संख्यारूप और वर्गसमुत्थित है । प्रतरांगुल भी कृतयुग्म संख्यारूप और वर्गसमुत्थित है । उसीप्रकार उनके स्थापित भागद्वार भी वर्गसमुत्थित और कृतयुग्मरूप हैं, इसका ज्ञान करानेके लिये 'अंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग' यह वचन दिया, अन्यथा उसकी दूसरी कोई सफलता नहीं पाई जाती है । प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागसे और प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे जगप्रतरके भाजित करने पर यथाक्रमसे त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव होते हैं, यह इस सूत्रका अभिप्राय है ।

सासादनसम्यग्दष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १०१ ॥

इस सूत्रमें 'त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त' इस वचनकी पूर्व सूत्रसे अनुवृत्ति होती है, क्योंकि, आगेके लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणके प्रतिपादन करनेवाले सूत्रका आरंभ पृथक् रूपसे अन्यथा बन नहीं सकता था । शेष कथन सुगम है ।

विशेषार्थ—हूँकि आगे त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके प्रमाणका प्रतिपादन करनेवाला सूत्र पृथक् रूपसे रचा गया है, इससे प्रतीत होता है कि पूर्वोक्त सूत्रमें 'त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त' पदकी अनुवृत्ति अपने पूर्ववर्ती सूत्रसे हुई है । इस कथनका तात्पर्य यह है कि यद्यपि सामान्य त्रसकायिक जीवोंमें लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंका अन्तर्भाव हो जाता है फिर भी लब्ध्यपर्याप्तक जीव गुणस्थानप्रतिपन्न नहीं होते हैं, अर्थात् मिथ्यादष्टि ही होते हैं । अतएव इस विषयका ज्ञान करानेके लिये त्रसकायिकोंके प्रमाणके अनन्तर बीचमें सासादनसम्यग्दष्टि आदि गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका प्रमाण कह कर अनन्तर लब्ध्यपर्याप्त त्रसकायिकोंका प्रमाण कहा ।

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका प्रमाण पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके प्रमाणके समान है ॥ १०२ ॥

वेहंदिय-तेहंदिय-चउरंदिय-पंचिंदिय-अपज्जत्तजीवे' एगट्ठे कदे तसकाइयअपज्जत्ता हवंति । कथं तेसिं परूवणा पंचिंदियअपज्जत्तपरूवणाए समाणा भवदि ? ण एस दोसो, उभयत्थ पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं पेक्खिऊण तहोवएसादो । अत्थदो पुणो तेसिं विसेसो गणहरेहि वि ण वारिज्जदे ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुम-णिगोदजीवपज्जत्ता हंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सुहुमणिगोदअपज्जत्ता हंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदअपज्जत्ता हंति । सेसं अणंतखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदपज्जत्ता हंति । सेसे अणंतखंडे कए बहुखंडा अकाइया हंति । सेसरासीदो असंखेज्जलोगपमाणमवणेऊण पुध ठविय पुणो सेसरासिमसंखेज्जलोएण खंडिय एयखंडमवणेऊण तं पि पुध ठविय पुणो सेसरासिं चत्तारि समपुंजे काऊण अवणिदएयखंडं असंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते सुहुमवाउकाइया हंति । सेसेगखंडमसंखेज्जलोगेण खंडिय तत्थ बहुखंडा

शंका—जब कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तकोंको एकत्र करने पर त्रसकायिक लब्धपर्याप्त जीव होते हैं, तब फिर त्रसकायिक लब्धपर्याप्त-कोंकी प्ररूपणा पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तोंकी प्ररूपणाके समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उभयत्र अर्थात् पंचेन्द्रिय लब्धपर्याप्तक और त्रसकायिक लब्धपर्याप्तक, इन दोनोंका प्रमाण छानेके लिये प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागरूप भागहारको देखकर इस प्रकारका उपदेश दिया । अर्थकी अपेक्षा जो उन दोनोंकी प्ररूपणामें विशेष है उसका गणधर भी निवारण नहीं कर सकते हैं ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर निगोद अपर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर निगोद पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अकायिक जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण राशिमेंसे असंख्यात लोकप्रमाण राशिको निकालकर पृथक् स्थापित करके पुनः शेष राशिको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके जो एक खंड आवे उसे निकालकर और उसे भी पृथक् स्थापित करके पुनः जो शेष बहुभाग राशि है उसके चार समान पुंज करके निकाले हुए पृथक् स्थापित एक खंडको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंका प्रमाण होता है । शेष एक खंडको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित

विदियपुंजे पक्खिखे सुहुमआउकाइया होंति । सेसेयखंडमसंखेज्जलोएण खंडिय बहुखंडा तदियपुंजे पक्खिखे सुहुमपुढविकाइया होंति । सेसेयखंडं चउत्थपुंजे पक्खिखे सुहुम-तेउकाइया होंति । सग-सगरासिं सखेज्जखंडे कदे तत्थ बहुखंडा अप्पण्णो पज्जत्ता होंति । एयखंडं तेसिमपज्जत्ता । पुव्वमवणिदमसंखेज्जलोगरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवाउअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरआउकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरपुढविअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरणिगोदपदिट्ठिदा<sup>१</sup> अपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादर-वणप्फदिकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरतेउकाइयअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरवाउकाइयपज्जत्ता होंति । बादरआउकाइय-बादरपुढविकाइय-बादरणिगोदपदिट्ठिद-बादरवणप्फदपत्तेगसरीरपज्जत्ताणमेवं चेव णेयव्वं । तदा सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तसकाइयअपज्जत्ता<sup>१</sup> होंति । सेसमसंखेज्जखंडे

करके उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म अण्कायिक जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः शेष एक भागको असंख्यात लोकप्रमाणसे खंडित करके उनमेंसे बहुभागको तीसरे पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः शेष एक खंडको चौथे पुंजमें मिला देने पर सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवोंका प्रमाण होता है । इन चारों राशियोंमेंसे अपनी अपनी राशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण अपने अपने पर्याप्त जीवोंका प्रमाण होता है और एक भागप्रमाण उन उनके अपर्याप्त जीव होते हैं । पुनः पहले निकाल कर पृथक् स्थापित की हुई असंख्यात लोकप्रमाण राशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर वायुकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर अण्कायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर निगोद-प्रतिष्ठित वनस्पति अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर-वायुकायिक पर्याप्त जीव होते हैं । आगे बादर अण्कायिक, बादर पृथिवीकायिक, बादर निगोदप्रतिष्ठित और बादर वनस्पति प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका भागाभाग इसीप्रकार ले जाना चाहिये । बादर प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंके प्रमाणके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके

१ गो. जी. २०७.

२ प्रतिपु 'बादरणिगोदकाइया' इति पाठः ।

३ अतो 'तसकाइयअसंजदा' ; आ मतो 'तसकाइयअसंज्जा' ; क मतो 'तसकाइयअसं.' इति पाठः ।



कए बहुखंडा तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठी होंति । सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसमाइट्ठिणो होंति । एवं णेयव्वं जाव संजदासंजदा त्ति । सेसे असंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरतेउकाइयपज्जत्ता होंति । सेसे संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । एवं णेयव्वं जाव अजोगिकेवलि त्ति ।

अप्पाबहुगं तिबिहं, सत्थाणं परत्थाणं सव्वपरत्थाणं चेदि । सत्थाणे पयंदं । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिं पज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । एवं आउकाइय-तेउकाइय-वाउकाइयाणं च सत्थाणं वत्तव्वं । सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता । तेसिं

असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक अपर्याप्त जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असंयतसंयग्दृष्टि जीव होते हैं । इसीप्रकार संयतासंयतोका प्रमाण आने तक भागा-भागका कथन ले जाना चाहिये । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग-प्रमाण बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण प्रमत्तसंयत जीव हैं । इसीप्रकार अयोगिकेवलियोंके प्रमाण आनेतक भागा-भागका कथन करना चाहिये ।

अक्षयबहुत्व तीन प्रकारका है, स्वस्थान अक्षयबहुत्व, परस्थान अक्षयबहुत्व और सर्व परस्थान अक्षयबहुत्व । उनमेंसे स्वस्थान अक्षयबहुत्वमें प्रकृत विषयको बतलाते हैं— बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार अस्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंका भी स्वस्थान अक्षयबहुत्व कहना चाहिये । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक



पज्जत्ता संखेज्जगुणा। को गुणगारो? संखेज्जा समया। सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवे तसकाइयअवहारकालो। विक्खंमसूई असंखेज्जगुणा। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सगअवहारकालो। दव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? विक्खंमसूई। पदमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सगअवहारकालो। लोगा असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? सेढी। एवं बादरवप्फइपज्जत्त-पत्तेयसरीरपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त-बादरपुढवि-पज्जत्त-बादरआउपज्जत्त-तसकाइयपज्जत्तमिच्छाइट्ठि-तसकाइयअपज्जत्ताणं च वत्तव्वं। सास-णादीणमोवसत्थाणभंगो। एवं सत्थाणप्पावहुगं समत्तं।

परत्थाणे पयदं। सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया। सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया। सुहुमपुढविकाइया असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। पुढविकाइया विसेसाहिया। सव्वत्थोवा बादरपुढविपज्जत्ता। तस्सेव अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा। सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? असंखेज्जा लोगा।

अपर्याप्तोसे संख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म वनस्पति-कायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोसे विशेष अधिक हैं। त्रसकायिक जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। जग-श्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? अपना अवहारकाल गुणकार है। त्रसकायिक जीवोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी विष्कंभ-सूची गुणकार है। जगप्रतर त्रसकायिक जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपनी अवहारकाल गुणकार है। लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? जगश्रेणी गुणकार है। इसीप्रकार बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, प्रत्येकशरीर पर्याप्त, बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त, बादर अप्कायिक पर्याप्त, त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि और त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। कायमारीणमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है। इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— बादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। अथवा, बादर पृथिवीकायिक जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म पृथिवी-कायिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं। अथवा, बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं। गुण-कार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवी-कायिक अपर्याप्तोसे असंख्यातगुणे हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म

सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । एवं चउत्थो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता । असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चेव छट्ठो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइयपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । पुढविकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । केत्तिय-

[illegible]

मेत्तेण ? बादरपुढविकाइयपज्जत्तपरिहीणसुहुमपुढविकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अड्डमो वियप्पो । णवरि पुढविकाइया विसेसाहिया । एगुत्तरवड्ढिकमेण' एत्तिया चेव अप्पावहुग-वियप्पा । अवहारकाल-विक्खंभसूई-सेटि-पदर-लोणे कमेण पवेसिय अप्पावहुगे कीरमाणे वि वियप्पा लब्भंति चि ? ण, ताणं कमप्पवेसस्स कारणाभावा । पुढविकाइयरासिस्स संगहमेयपदुप्पायणट्ठं पुढविकाइयरासिस्स कमेण भेदो कीरदे । ण च अवहारकालादिसु कमेण पवेसिज्जमाणेसु पुढविकाइयरासी भिज्जे । तदो एत्तिया चेव एगुत्तरवड्ढिवियप्पा होति चि ड्ढिदं । अंतिमवियप्पं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवो बादरपुढविकाइयपज्जत्तअव-हारकालो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेठीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेटिपढमवगमूलाणि । को पडिभागो । अवहारकालवगो । सेठी असंखेज्ज-गुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई ।

उत्तने प्रमाणसे अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने प्रमाणसे अधिक हैं ? बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे हीन सूक्ष्म पृथिवी-कायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण रहे उत्तनेसे अधिक हैं । इसप्रकार आठवां विकल्प है । इतनी विशेषता है कि पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे अरबहुत्वके इतने ही विकल्प होते हैं ।

शुंका — अवहारकाल, विष्कंभसूची, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक इनको क्रमसे प्रविष्ट करके अल्पबहुत्व करने पर भी विकल्प प्राप्त होते हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इन अवहारकाल आदिकके क्रमप्रवेशका कोई कारण नहीं है । संग्रहरूप पृथिवीकायिक राशिके भेदोंके प्रतिपादन करनेके लिये पृथिवीकायिक राशिका क्रमसे भेद किया है । परंतु अवहारकालादिकके क्रमसे प्रविश्यमान होने पर पृथिवीकायिक राशि भेदको प्राप्त नहीं होती है । इसलिये एकोत्तर वृद्धिके क्रमसे विकल्प इतने ही होते हैं, यह बात निश्चित हो जाती है ।

अब अन्तिम विकल्पको बतलाते हैं— बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यात-गुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगश्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगश्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । उन्हींका ( बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका ) द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । जगप्रतर

पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेठी । बादरपुढविकाइयअपज्जत्तद्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइयअपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । पुढविकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । पुढविकाइया विसेसाहिया । एवं चाउ-तेउ-वाउणं परत्थाणं जाणि-ऊण वत्तव्वं ।

बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहार-काल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगश्रेणी गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर पृथिवीकायिक जीव बादर पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव बादर पृथिवीकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । पृथिवीकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । पृथिवीकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । इसीप्रकार अण्कायिक, तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वका समझकर कथन करना चाहिये ।

पृथिवीकायिक जीवोंके पकोत्तर वृद्धिक्रमसे भेदोंके अल्पबहुत्वके क्रमका बतलानेवाला कौटुक.

बा. पृ.	बा. पृ.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.	बा. पृ. प.
स्. पृ.	स्. पृ.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अप.	बा. पृ. अ.	बा. पृ. अ.
	पृ. सा.	स्. पृ. अप.	स्. पृ. अप.	बा. पृ.	बा. पृ.	बा. पृ.	बा. पृ.
		स्. पृ. प.	स्. पृ. प.	स्. पृ. अप.	स्. पृ. अप.	स्. पृ. अ.	स्. पृ. अ.
			पृ. सा.	स्. पृ. प.	स्. पृ. प.	पृ. अ.	पृ. अ.
				स्. पृ.	स्. पृ.	स्. पृ. प.	स्. पृ. प.
					पृ. सा.	पृ. प.	पृ. प.
						स्. पृ.	स्. पृ. सा.

संपहि वणप्फइपरत्थाणप्पावहुगं वत्तइस्सामो । सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइया । सुहुमवणप्फइकाइया असंखेज्जगुणा । एवं विदियं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जलोगा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्ज-समया । एवं चउत्थं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादर-वणप्फइपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइया विसे-साहिया । केत्थियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्थियमेत्तेण ? सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवं छइं पि । णवरि वणप्फइकाइया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरवणप्फइ-

अब वनस्पतिकायिक जीवोंके परस्थान अवपबहुत्वको बतलते हैं— बादर वनस्पति-कायिक जीव सबसे स्तोक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार दूसरा विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । इसीप्रकार चौथा विकल्प भी है । इतनी विशेष-ता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसीप्रकार छठवां विकल्प भी है । इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सबके स्तोक हैं । बादर

काइयपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइया विसेसा-  
हिया । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसा-  
हिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइय-  
पज्जत्ता संखेज्जगुणा । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइ-  
काइयपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइ-  
काइयपज्जत्तविरहिदसुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्तमेत्तेण । एवमट्ठमं पि । णवरि वणप्फइ-  
काइया विसेसाहिया ।

वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर  
वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर  
वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक  
अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक  
अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त  
जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म  
वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर  
वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पति-  
कायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ?  
बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे रहित सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंका  
जितना प्रमाण रहे तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसीप्रकार आठवां विकल्प भी है । इसमें  
इतनी विशेषता है कि वनस्पतिकायिक जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं ।

वनस्पतिकायिक जीवोंके एकोत्तर वृद्धिक्रमसे भेदोंके अल्पबहुत्वके क्रमका बतलानेवाला कोष्ठक:

बा. व.	बा. व.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.	बा. व. प.
सू. व.	सू. व.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.	बा. व. अ.
	व.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	बा. व.	बा. व.	बा. व.	बा. व.
		सू. व. प.	सू. व. प.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.
			व.	सू. व. प.	सू. व. प.	व. अ.	व. अ.
				सू. व.	सू. व.	सू. व. प.	सू. व. प.
					व.	व. प.	व. प.
						सू. व.	सू. व.
							व.

संपदि एदेसु णवपदेसु णिगोदछपदाणि पविसिय पण्णारसपदअप्पावहुगं वत्त-  
इत्सामो । सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया ।  
केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तेण' पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तेण ।  
उवरि अट्ठपदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइय-  
पज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा  
लोमा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइय-  
पत्तेयसरीरअपज्जत्तअसंखेज्जलोगमेत्तेण । उवरि सत्तपदाणि पुव्वं व । अहवा सव्वत्थोवा  
बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता ।  
असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया ।  
केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तेणूणवादारणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । बादर-  
वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण । उवरि

अब इन पूर्वोक्त नौ स्थानोंमें निगोदसंबन्धी छह स्थानोंका प्रवेश कराके पन्द्रह  
स्थानोंमें अरुणहृत्त्वको बतलाते हैं— बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोको है । बादर  
वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव बादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितने अधिक हैं ?  
बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त, जो कि जगप्रतरके असंख्यातवें भाग हैं, तन्मात्र विशेषसे  
आधिक हैं । इसके ऊपर आठ स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादरनिगोद पर्याप्त जीव  
सबसे स्तोको है । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद  
अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असं-  
ख्यात लोक गुणकार है । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे  
विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर  
अपर्याप्त, जो कि असंख्यात लोकप्रमाण हैं, तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर सात  
स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोको हैं । बादर वन-  
स्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद अपर्याप्त जीव बादर वन-  
स्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद  
अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे  
विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर  
अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून बादरनिगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे  
अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र  
विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र



छप्पदाणि पुवं व । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवण-  
प्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइय-  
अपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? असंखेज्जलोमत्तपत्तेयसरीरमेत्तेण । उवरि  
चत्तारि पदाणि पुवं व । अहवा सव्वत्थोवा बादरणिगोदपज्जत्ता । बादरवणप्फइकाइय-  
पज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता  
विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइ-  
काइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता  
विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपज्जत्ता विसेसाहिया ।

विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर छह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोके हैं । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव उनसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादरनिगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर जीवोंसे विशेष अधिक हैं । इसके ऊपर चार स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादरनिगोद पर्याप्त जीव सबसे स्तोके हैं । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव बादरनिगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादरनिगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादरनिगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोदोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पति-  
कायिकोंसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेषसे अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे



केचित्तिमेतेषां ? बादरणिगोदपञ्जत्तमेतेषां । वणप्फइकाइयपञ्जत्ता विसेसाहिया । केचित्ति-  
मेतेषां ? पत्तेयसरीरपञ्जत्तमेतेषां । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । वणप्फइकाइया  
विसेसाहिया । अहवा सव्वस्थोवा बादरणिगोदपञ्जत्ता । बादरवणप्फइकाइयपञ्जत्ता विसे-  
साहिया । बादरणिगोदपञ्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरवणप्फइकाइयपञ्जत्ता विसेसाहिया ।  
बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइय-  
पञ्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदपञ्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइकाइयपञ्जत्ता विसे-  
साहिया । सुहुमवणप्फइकाइयपञ्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोदपञ्जत्ता विसेसाहिया ।  
वणप्फइकाइयपञ्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया । णिगोदा विसे-  
साहिया । केचित्तिमेतेषां ? बादरणिगोदमेतेषां । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केचित्तिमेतेषां ?  
पत्तेयसरीरवणप्फइकाइयमेतेषां ।

अधिक हैं ? बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं ।  
वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे  
अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म  
वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक  
जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं । अथवा, बादर निगोद पर्याप्त जीव  
सबसे श्रेष्ठ हैं । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव इनसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद  
अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पतिकायिक  
अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद जीव बादर  
वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोदोंसे  
विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिकोंसे  
असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष  
अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म  
वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । निगोद पर्याप्त  
जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव  
निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक  
पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिकोंसे विशेष अधिक हैं ।  
कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोदोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे  
अधिक हैं । वनस्पतिकायिक जीव निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे  
अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं ।

संपहि बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्त-बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्त-बादरवण-  
प्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्त-बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर-बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्त-  
बादरणिगोदपदिट्ठिदा एदाणि छप्पदाणि पुत्तिवृत्तपण्णारसपदेसु पक्खेविय एकावीसपद-  
अप्पाबहुगं वत्तइस्सामो । तं जहा— सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर-  
पज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपज्जत्तदव्वमणंतगुणं । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदि-

पूर्वोक्त नौ राशियोंमें निगोदकी छह राशियां मिला देने पर अल्पबहुत्वके

क्रमको बतलानेवाला कोष्ठक.

वा. नि. प.	वा. नि. प.	वा. नि. प.	वा. नि. प.	वा. नि. प.	वा. नि. प.
वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.	वा. व. प.
वा. व. अ.	वा. नि. अ.	वा. नि. अ.	वा. नि. अ.	वा. नि. अ.	वा. नि. अ.
वा. व.	वा. व. अ.	वा. व. अ.	वा. व. अ.	वा. व. अ.	वा. व. अ.
सू. व. अ.	वा. व.	वा. नि.	वा. नि.	वा. नि.	वा. नि.
व. अ.	सू. व. अ.	वा. व.	वा. व.	वा. व.	वा. व.
सू. व. प.	व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.	सू. व. अ.
व. प.	सू. व. प.	व. अ.	नि. अ.	नि. अ.	नि. अ.
सू. व.	व. प.	सू. व. प.	व. अ.	व. अ.	व. अ.
व.	सू. व.	व. प.	सू. व. प.	सू. व. प.	सू. व. प.
	व.	सू. व.	व. प.	नि. प.	नि. प.
		व.	सू. व.	व. प.	व. प.
			व.	सू. व.	सू. व.
				व.	नि.
					व.

अथ बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त, बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त और बादर निगोदप्रतिष्ठित, इन छह स्थानोंको पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें मिलाकर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है— बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोद पर्याप्तोंका द्रव्य उससे अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग

भागो । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वयं पडिभागो । उवरि चोदसपदाणि पुच्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वयं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तद्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । उवरि पणारस्स पदाणि पुच्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वयं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तद्वयमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वयमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तद्वयपडिभागो । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरविसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो । असंखेज्जलोगमेत्तपत्तेयसरीरद्वयपडिभागो । उवरि चोदस पदाणि पुच्वं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तद्वयं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तद्वयमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइ-

क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्यप्रमाण प्रतिभाग है । इसके ऊपर चौदह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? जगप्रतरके असंख्यातवें भागमात्र बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य प्रतिभाग है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोद पर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येकशरीर द्रव्य प्रतिभाग है । इसके ऊपर चौदह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य इससे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर

१ क-अप्रत्योः असंखेज्जा लोगा । को पडिभागो ? पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तवादरणिगोपदिट्ठिदपज्जत्तद्वयं पडिभागो' इत्याधिकः पाठः ।

२ अ-कप्रत्योः ' को गुणगारो.....द्रव्यपडिभागो ' इति-पाठः नास्ति ।

काइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? असंखेजा लोगा । उवरि पण्णारस पदाणि पुवं व । अहवा सव्वत्थोवं बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वं । बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । बादरणिगोदपदिट्ठिदअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदिट्ठिदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तमेत्तेण । उवरिमपण्णारस पदाणि पुवं व ।

अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद प्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं । अथवा, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त द्रव्य सबसे स्तोक है । बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्य उससे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्य बादर निगोद प्रतिष्ठित पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे असंख्यातगुणा है । बादर निगोदप्रतिष्ठित जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं ।

विशेषार्थ—ऊपर दिये हुए तीन कोष्ठक और आगे दिये हुए निम्न कोष्ठकसे इस बातका ज्ञान अच्छे प्रकारसे हो जाता है कि प्रथम स्थानसे दूसरेमें और तीसरे आदिसे चौथे आदिमें क्या अन्तर है । यद्यपि इन कोष्ठकोंमें परस्पर अल्पबहुत्वकी विशेषता नहीं बतलाई है, तो भी इनसे अल्पबहुत्वका क्रम अवश्य ही समझमें आ जाता है । विशेषताका ज्ञान मूलसे किया जा सकता है । वनस्पतिके पहले कोष्ठकमें नौ भेदोंकी मुख्यतासे, दूसरेमें उन नौ भेदोंमें ६ और मिलाकर पन्द्रह भेदोंकी मुख्यतासे और निम्न तीसरे कोष्ठकमें उपर्युक्त पन्द्रह भेदोंमें छह भेद और मिलाकर इक्कीस भेदोंकी मुख्यतासे अल्पबहुत्व बतलाया है । जहां 'ऊपर सात स्थान पहलेके समान हैं, पन्द्रह स्थान पहलेके समान हैं' इत्यादि कहा है उसका यह अभिप्राय है कि प्रारंभके जितने स्थानोंमें विशेषता कहनी थी वह कह दी । आगे अन्तके सात या पन्द्रह आदि स्थान पहलेके कहे हुए जोड़ लेना चाहिये ।

संपहि बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तअवहारकालो बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपजत्त-  
अवहारकालो तस्सेव विक्खंभसूई बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तविक्खंभसूई सेढी जगपदर-लोगा  
इदि सत्त पदाणि एकावीसपदेसु पक्खिविय अट्ठावीसपदप्पावहुगं वत्तइस्सामो ।

पूर्वोक्त पन्द्रह स्थानोंमें छह स्थान जोड़कर इक्कीस स्थानोंमें अल्पबहुत्वके  
क्रमका ज्ञान करनेवाला कोष्टक.

बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.	बा. व. प्र. प.
बा. नि. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.	बा. नि. प्रति. प.
वा. व. प.	बा. नि. प.	बा. व. प्र. अ.	बा. व. प्र. अ.	बा. व. प्र. अ.
बा. नि. अ.	बा. व. प.	बा. व. प्र.	बा. व. प्र.	बा. व. प्र.
बा. व. अ.	बा. नि. अ.	बा. नि. प.	बा. नि. प्रति. अ.	बा. नि. प्रति. अ.
बा. नि.	बा. व. अ.	बा. व. प.	बा. नि. प.	बा. नि. प्रति.
बा. व.	बा. नि.	बा. नि. अ.	बा. व. प.	बा. नि. प.
सू. व. अ.	बा. व.	बा. व. अ.	बा. नि. अ.	बा. व. प.
नि. अ.	सू. व. अ.	बा. नि.	बा. व. अ.	बा. नि. अ.
व. अ.	नि. अ.	बा. व.	बा. नि.	बा. व. अ.
सू. व. प.	व. अ.	सू. व. अ.	बा. व.	बा. नि.
नि. प.	सू. व. प.	नि. अ.	सू. व. अ.	बा. व.
व. प.	नि. प.	व. अ.	नि. अ.	सू. व. अ.
सू. व.	व. प.	सू. व. प.	व. अ.	नि. अ.
नि.	सू. व.	नि. प.	सू. व. प.	व. अ.
व.	नि.	व. प.	नि. प.	सू. व. प.
	व.	सू. व.	व. प.	नि. प.
		नि.	सू. व.	व. प.
		व.	नि.	सू. व.
			व.	नि.
				व.

अब बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल, बादर वनस्पतिकायिक  
प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका अवहारकाल, उसीकी विष्कंभसूची, बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी  
विष्कंभसूची, जगश्रेणी, जगप्रतर और लोक, इन सात स्थानोंको पूर्वोक्त इक्कीस स्थानोंमें  
मिलाकर अट्ठाईस स्थानोंमें अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— यहाँ ये सातों स्थान एकसाथ मिला

एदाणि सत्त वि पदाणि एकवारेण पविसिदव्वाणि । कुदो ? कमप्पवेसकारणा-  
भावा । रासिसंगहभेदपदुप्पायणहुं कमेण पवेसो कीरेदे । ण च एत्थ रासिभेदो  
अत्थि, पत्तभिज्जमाणभेदपज्जत्तादो । सव्वत्थोवो वादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तअवहार-  
कालो । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो ? को गुणगारो ?  
आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव विक्खंभइ असंखेज्जगुणा । वादरणिगोदपदि-  
द्विदपज्जत्तविक्खंभइ असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।  
सेठी असंखेज्जगुणा । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । वादरणिगोद-  
पदिद्विदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पदरम-  
संखेज्जगुणं । को गुणगारो ? वादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो ।  
को गुणगारो ? सेठी । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को  
गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ?  
तस्सेव वादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । वादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्ता असं-  
खेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । वादरणिगोदपदिद्विदा विसेसाहिया ।

देना चाहिये । क्योंकि, उनके क्रमसे मिलानेका कोई कारण नहीं है । संप्रद्वरूप राशियोंके भेदके  
प्रतिपादन करनेके लिये क्रमसे राशि मिलाई जाती है । परंतु यहां पर तो राशिमें कोई भेद  
पाया नहीं जाता है, क्योंकि, मिश्रमान राशियोंमें जितने भेद प्राप्त थे उतने भेद किये जा चुके  
हैं । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका अवहारकाल सबसे स्तोका है । बादर वनस्पतिकायिक  
प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका अवहारकाल पूर्वोक्त अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या  
है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उन्हीं बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर  
पर्याप्तोंकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंकी  
विष्कंभसूची पूर्वोक्त विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीका  
असंख्यातवां भाग गुणकार है । जगध्रेणी उक्त विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर  
वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य जगध्रेणीसे असंख्यातगुणा है । बादर निगोद-  
प्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यात-  
गुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । जगप्रतर बादर निगोद-  
प्रतिष्ठित पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? बादर निगोदप्रतिष्ठित  
पर्याप्तोंका अवहारकाल गुणकार है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?  
जगध्रेणी गुणकार है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका द्रव्य लोकसे असंख्यात-  
गुणा है । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक-  
शरीर जीव बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र  
विशेषसे अधिक हैं ? उन्हींके पर्याप्तोंका अर्थात् बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका  
जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्त जीव बादर  
वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंसे असंख्यातगुण हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक

केचित्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? सगरासिस्स असंखेज्जदिभागो । तस्स को पडिभागो ? बादरणिगोदपदिट्ठिदा पडिभागो । बादरवणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइय-पत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरवणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइय-पत्तेयसरीरअपज्जत्तमेत्तेण । बादरणिगोदा विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? पत्तेयसरीर-अपज्जत्तेणूणबादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । बादरवणप्फइकाइया विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरमेत्तेण । सुहुमवणप्फइकाइयअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । गिगोदअपज्जत्ता विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदअपज्जत्त-मेत्तेण । वणप्फइकाइयअपज्जत्ता विसेसाहिया । केचित्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेय-

गुणकार है । बादर निगोदप्रतिष्ठित जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोद पर्याप्त जीव बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । गुणकार क्या है ? अपनी राशिका असंख्यातवां भाग गुणकार है । उसका प्रतिभाग क्या है ? बादर निगोदप्रतिष्ठित जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव बादर निगोद पर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्तोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक जीवोंसे असंख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोद अपर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पति-कायिक प्रत्येकशरीर अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म



सरीरअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फदिकाइयपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । णिगोदपज्जा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदपज्जत्तमेत्तेण । वणप्फइकाइयपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फदिपत्तेयसरीरपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमवणप्फदिकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फदिपज्जत्तेण सुहुमवणप्फदिअपज्जत्तमेत्तेण । णिगोदा विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरणिगोदमेत्तेण । वणप्फइकाइया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीरमेत्तेण । एवं वणप्फइकाइयपरत्थाणप्पावहुगं समत्तं । तसकाइयपरत्थाणस्स पंचिदियपरत्थाणभंगो । एवं परत्थाणप्पावहुगं समत्तं ।

सच्चपरत्थाणप्पावहुगं वत्तइस्सामो । सच्चत्थोवा अजोगिकेवली । चत्तारि उव-  
सामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा ।  
अपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तापमत्तरासीहिंतो बादरवाउ-  
पज्जत्तअवहारकालो किमहिओ उणो चि ण जणिज्जदे । कुदो ? संपहि उवएसामावादो ।

वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव वनस्पतिकायिक अपर्याप्तोंसे संख्यातगुणे हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोद पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिक पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पति पर्याप्तोंके प्रमाणसे न्यून सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्तोंका जितना प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । निगोद जीव सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर निगोद जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । वनस्पतिकायिक जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीवोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं । इसप्रकार वनस्पतिकायिक जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ । वनस्पतिकायिक जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं—अयोगिकेवली जीव सभसे थोड़े हैं । चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेवलीयोंसे संख्यातगुणे हैं । चारों गुणस्थानोंके शेषक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव शेषकोंसे संख्यातगुणे हैं । अग्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलीयोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अग्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत और अग्रमत्तसंयत जीवराशिसे बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल क्या अधिक है, या कम, यह नहीं जाना जाता है, क्योंकि, इस समय इस प्रकारका



तदो असंजदसम्माइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं जाणिऊण पेयव्वं जाव संजदा-  
संजदअवहारकालो चि । तदो बादरेतेउपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । तदो संजदासंजददव्वम-  
संखेज्जगुणं । एवं जाणिऊण पेदव्वं जाव पलिदोवमो चि । तदो बादरआउपज्जत्त-  
अवहारकालो असंखेज्जगुणो । बादरपुढविपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को  
गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरणिगोदपदिद्विदपज्जत्तअवहारकालो  
असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । बादरवणप्फइकाइय-  
पचेयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो ।  
तसकाइयमिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? पलिदोवमस्स असंखे-  
ज्जदिभागो । तसकाइयअपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए  
असंखेज्जदिभाएण खंडिदेगखंडेण । तसकाइयपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को  
गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । तदो तसकाइयपज्जत्त-

उपदेश नहीं पाया जाता है । बादर वायुकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे असंयतसम्यग्दृष्टि-  
योंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार समझकर संयतासंयतोंके अवहारकालतक  
ले जाना चाहिये । संयतासंयतोंके अवहारकालसे बादर तेजस्कायिक पर्याप्त असंख्यातगुणे  
हैं । इससे संयतासंयतोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार जानकर पर्योपमतक ले  
जाना चाहिये । पर्योपमसे बादर अण्कायिक जीवोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । बादर  
पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर अण्कायिक पर्याप्त जीवोंके अवहारकालसे  
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । बादर  
निगोदप्रतिष्ठित प्रत्येक जीवोंका अवहारकाल बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे  
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । बादर  
वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंके  
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है ।  
त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके  
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? पर्योपमका असंख्यातवां भाग गुणकार  
है । त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल त्रसकायिक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे  
विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवां भागसे त्रसकायिक  
मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे  
अधिक है । त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल त्रसकायिक अपर्याप्तोंके अवहारकालसे  
असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवां भागका संख्यातवां भाग  
गुणकार है । त्रसकायिक पर्याप्तोंके अवहारकालसे त्रसकायिक पर्याप्तोंकी विष्कम्बस्वी

विक्रमं भस्मई असंखेज्जगुणा । तसकाइयअपज्जत्तविक्रमं भस्मई असंखेज्जगुणा । तसकाइय-  
विक्रमं भस्मई विसेसाहिया । बादरवणफइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तविक्रमं भस्मई असंखेज्जगुणा ।  
बादरणिगोदपदिट्ठिदपज्जत्तविक्रमं भस्मई असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइयपज्जत्तविक्रमं भ-  
स्मई असंखेज्जगुणा । बादरआउकाइयपज्जत्तविक्रमं भस्मई असंखेज्जगुणा । बादर-  
वाउकाइयपज्जत्तविक्रमं भस्मई असंखेज्जगुणा । सेटी संखेज्जगुणा । तसकाइय-  
पज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । तसकाइयअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । तसकाइयदव्वं विसे-  
साहियं । बादरवणफइकाइयपत्तेयसरीरपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरणिगोदपदि-  
ट्ठिदपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । ( बादरपुढविकाइयपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । ) बादरआउ-  
पज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । बादरवाउपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । लोगो  
संखेज्जगुणो । तदो बादरतेउअपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । बादरतेउदव्वं विसेसाहियं ।

असंख्यातगुणी है । त्रसकायिक अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची त्रसकायिक पर्याप्तोंकी  
विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । त्रसकायिक जीवोंकी विष्कंभसूची त्रसकायिक अपर्याप्तोंकी  
विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है । बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्त जीवोंकी  
विष्कंभसूची त्रसकायिकोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त  
जीवोंकी विष्कंभसूची बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे  
असंख्यातगुणी है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची बादर निगोदप्रतिष्ठित  
पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर अण्कायिक पर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची  
बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । बादर वायुकायिक पर्याप्तोंकी  
विष्कंभसूची बादर अण्कायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणी बादर  
वायुकायिक पर्याप्तोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । त्रसकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगश्रेणीसे  
असंख्यातगुणा है । त्रसकायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य त्रसकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा  
है । त्रसकायिकोंका द्रव्य त्रसकायिक अपर्याप्तोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । बादर  
वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंका द्रव्य त्रसकायिकोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर  
निगोदप्रतिष्ठित पर्याप्तोंका द्रव्य बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तोंके द्रव्यसे  
असंख्यातगुणा है । बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर निगोदप्रतिष्ठितोंसे अ-  
संख्यातगुणा है । बादर अण्कायिक पर्याप्तोंका द्रव्य बादर पृथिवीकायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे  
असंख्यातगुणा है । जगप्रतर बादर अण्कायिक पर्याप्तोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । बादर  
वायुकायिक पर्याप्तोंका द्रव्य जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । लोक बादर वायुकायिक  
पर्याप्तोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । लोकसे बादर तेजस्कायिक अपर्याप्तोंका द्रव्य  
असंख्यातगुणा है । बादर तेजस्कायिकोंका द्रव्य बादर तेजस्कायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष



विसेसाहिया । सुहुमवाउपज्जत्ता विसेसाहिया । वाउपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमतेउ-  
काइया विसेसाहिया । तेउकाइया विसेसाहिया । सुहुमपुडविकाइया विसेसाहिया । पुडवि-  
काइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । आउकाइया विसेसाहिया । सुहुम-  
वाउकाइया विसेसाहिया । वाउकाइया विसेसाहिया । अक्राइया अगंतगुणा । बादरणिगोद-  
पज्जत्ता<sup>१</sup> अणंतगुणा । बादरवणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदअपज्जत्ता असंखेज्ज-  
गुणा । बादरवणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया । बादरणिगोदा विसेसाहिया । बादरवणप्फइ-  
काइया विसेसाहिया<sup>२</sup> । सुहुमवणप्फइअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । णिगोदअपज्जत्ता विसे-  
साहिया । वणप्फइअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइपज्जत्ता संखेज्जगुणा । णिगोद-  
पज्जत्ता विसेसाहिया । वणप्फइपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमवणप्फइकाइया विसेसाहिया ।

सूक्ष्म अण्कायिक पर्याप्त जीव पृथिवीकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । अण्कायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म अण्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त जीव अण्कायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वायुकायिक पर्याप्त जीव सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म तेजस्कायिक जीव वायुकायिक पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । तेजस्कायिक जीव सूक्ष्म तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीव तेजस्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । पृथिवीकायिक जीव सूक्ष्म पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म अण्कायिक जीव पृथिवीकायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । अण्कायिक जीव सूक्ष्म अण्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वायुकायिक जीव अण्कायिक द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वायुकायिक जीव सूक्ष्म वायुकायिक जीव द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । अण्कायिक जीव वायुकायिक द्रव्यसे अनन्तगुणे हैं । बादर निगोद पर्याप्त जीव अण्कायिक जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । बादर वनस्पति पर्याप्त जीव बादर निगोद पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद अपर्याप्त जीव बादर वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे असंख्यातगुणे हैं । बादर वनस्पति अपर्याप्त जीव बादर निगोद अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । बादर निगोद जीव बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । बादर वनस्पतिकायिक जीव बादर निगोद द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीव बादर वनस्पतिकायिक द्रव्यसे असंख्यातगुणे हैं । निगोद अपर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वनस्पति अपर्याप्त जीव निगोद अपर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त जीव वनस्पति अपर्याप्त द्रव्यसे संख्यातगुणे हैं । निगोद पर्याप्त जीव सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक पर्याप्त जीव निगोद पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म वनस्पति

१ प्रतिपु 'अपज्ज०' इति पाठः ।

२ आ-कप्रत्योः 'सुहुमवणप्फइ० विसे०' इति अधिकः पाठः ।

णिगोदा विसेसाहिया । वणप्फइकाइया विसेसाहिया ।

एवं कायमग्णा समत्ता ।

**जोगाणुवादेण पंचमणजोगिं-तिण्णिवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्व-  
पमाणेण केवडिया ? देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ १०३ ॥**

एत्थ तिण्हं चेव वचिजोगाणं संगहो किमट्ठो कदो ? ण एस दोसो । कुदो ? वचिजोग-असच्चमोसवचिजोगेहि सह एदेसिं तिण्हं वचिजोगाणं दव्वालावं पडि समाणत्ता-  
भावादो । समाणालावाणमेगजोगो भवदि, ण भिण्णालावाणं । देवाणं जाणि दव्व-काल-खेत्त-  
पमाणणि पुव्वं परूविदाणि तेसिं संखेज्जदिभागो एदेसिमट्ठुण्हं रासीणं पमाणं हेदि ।  
कुदो ? जदो एदे अट्ठ वि जोगा सण्णीणं चेव भवंति, णो असण्णीणं, तत्थ पडिसिद्धत्तादो ।  
सण्णीसु वि पहाणां देवा चेव, सेसगदिसण्णीणं देवाणं संखेज्जदिभागत्तादो । तत्थ वि  
देवेसु पहाणो कायजोगरासी, मण-वचिजोगरासीदो संखेज्जगुणत्तादो । तं पि कथं जाणिज्जे ?

जीव वनस्पति पर्याप्त द्रव्यसे विशेष अधिक हैं । निगोद जीव सूक्ष्मवनस्पतिकायिक द्रव्यसे  
विशेष अधिक हैं । वनस्पतिकायिक जीव निगोद जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई ।

**योगमार्गणाके अनुवादसे पांचा मनोयोगियों और तीन वचनयोगियोंमें  
मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके संख्यातवें भाग  
हैं ॥ १०३ ॥**

शंका — यहाँ तीन ही वचनयोगियोंका संग्रह किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगि-  
योंके साथ इन तीन वचनयोगियोंकी द्रव्यालापके प्रति समानता नहीं पाई जाती है । समाना-  
लापोंका ही एक योग होता है, भिन्नालापोंका नहीं । देवोंका द्रव्य, काल और क्षेत्रकी अपेक्षा  
जो प्रमाण पहले कह आये हैं उसके संख्यातवें भाग इन आठ राशियोंका प्रमाण है । क्योंकि,  
ये आठों योग संस्त्रियोंके ही होते हैं असंस्त्रियोंके नहीं, क्योंकि, असंस्त्रियोंमें ये आठों  
योग प्रतिषिद्ध हैं । संस्त्रियोंमें भी प्रधान देव ही हैं, क्योंकि, शेष तीन गतिके संस्त्री  
जीव देवोंके संख्यातवें भाग ही हैं । वहाँ देवोंमें भी प्रधान काययोगियोंकी राशि है, क्योंकि,  
काययोगियोंका प्रमाण मनोयोगियों और वचनयोगियोंसे संख्यातगुणा है ।

शंका — यह कैसे जाना जाना है ?

१ मनोयोगिनो ×× मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयमागममिताः । स. सि. १, ८.

२ प्रतिषु 'पहाणु' इति पाठः ।

जोगद्वप्पावहुगादो । तं जहा— 'सव्वत्थोवा मणजोगद्धा । वच्चिजोगद्धा संखेज्जगुणा । कायजोगद्धा संखेज्जगुणा चि ।' पुणो एदेसिमद्धानं समासं काऊण तेण तिहं जोगाणं सण्णिरासिमोवडिय अप्पप्पणो अद्धाहि पुध पुध गुणिदे मण-वच्चि-कायजोगरासीओ हवंति । तदो हिदमेदं एदे अट्ट वि मिच्छाइहिंरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागो चि ।

**सासणसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति ओघं ॥ १०४ ॥**

पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तं पडि ओघजीवेहि सह एदेसिं समाणत्तमत्थि चि ओघमिदि उच्चं । पज्जवडियणए पुण अवलंबिज्जमाणे तेहिंतो एदेसिं अत्थि महंतो भेदो । कुदो ? एदेसिमोघरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । तं पि कथं णव्वदे ? पुव्वुत्तद्वप्पावहुगादो । सेसं सुगमं ।

**पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति द्वपपमाणेण केव-  
डिया, संखेज्जा ॥ १०५ ॥**

समाधान—योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । वह इसप्रकार है— 'मनोयोगका काल सबसे शोक है । वचनयोगका काल उससे संख्यातगुणा है । काययोगका काल वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है ।' अनन्तर इन कालोंका जोड़ करके जो फल हो उससे तीनों योगोंकी संख्या जीवराशिको अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसे अपने अपने कालसे पृथक् पृथक् गुणित करने पर मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगी जीवराशि होती है । इसलिये यह निश्चित हुआ कि ये आठ ही मिथ्यादृष्टि जीवराशियां देवोंके संख्यातवें भाग हैं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पूर्वोक्त आठ योगवाले जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणके समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग है ॥ १०४ ॥

पर्योपमके असंख्यातवें भागके प्रति ओघ जीवोंके साथ इन आठ जीवराशियोंकी समानता है, इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा । परंतु पर्यायार्थिक नयका अवलंबन करने पर तो सासादनादि संयतासंयतान्त गुणस्थानप्रतिपन्न ओघप्ररूपणसे गुणस्थानप्रतिपन्न इन आठ राशियोंमें महान् भेद है, क्योंकि, ये राशियां ओघराशिके संख्यातवें भाग हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—पूर्वोक्त योगकालके अल्पबहुत्वसे यह जाना जाता है । शेष कथन सुगम है ।

**प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें**

१ प्रतिपु 'जोगवदप्पा' इति पाठः ।

एत्थ ओघराशिणा संखेज्जत्तं पडि एदेसिं रासीणं समाणत्ते संते किमट्ठमोघमिदि ण परूविदं सुत्ते ? ण, एत्थ अवलंबिदपञ्जवट्ठियणयत्तादो । सो वि एत्थ किमट्ठमवलंबिज्जे ? जोगद्वप्पावहुगमस्सिऊण रासिविसेसपदुप्पायणट्ठं । कथं जोगद्वप्पावहुगमिदि बुत्ते बुत्तेदं—‘सच्चमणजोगद्धा । मोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा । सच्चमोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगद्धा संखेज्जगुणा । मणजोगद्धा विसेसाहिया । सच्चवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । मोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । सच्चमोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । असच्चमोसवचिजोगद्धा संखेज्जगुणा । वचिजोगद्धा विसेसाहिया । कायजोगद्धा संखेज्जगुणा’ ति ।

वचिजोगि-असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केव-  
डिया, असंखेज्जा ॥ १०६ ॥

पूर्वोक्त आठ जीवराशिणां द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितनी हैं ? संख्यात हैं ॥ १०५ ॥

यहां पर संख्यातत्वकी अपेक्षा प्रमत्तादि ओघराशिके साथ इन राशियोंकी समानता रहने पर सूत्रमें ‘ओघं’ ऐसा किसलिये नहीं कहा ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, यहां पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है, अतः सूत्रमें ‘ओघं’ ऐसा नहीं कहा ।

शंका—वह पर्यायार्थिक नय भी यहां पर किसलिये ग्रहण किया गया है ?

समाधान—योगकालका आश्रय लेकर राशिविशेषका प्रतिपादन करनेके लिये यहां पर पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया गया है ।

योगकालके आश्रयसे अस्पष्टदृष्ट किमप्रकार है, ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं—सत्य मनोयोगका काल सबसे स्तोके है । मृषामनोयोगका काल उससे संख्यातगुणा है । उभयमनोयोगका काल मृषामनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगका काल उभय मनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है । इससे मनोयोगका काल विशेष अधिक है । सत्य वचनयोगका काल मनोयोगके कालसे संख्यातगुणा है । मृषा वचनयोगका काल सत्य वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है । उभय वचनयोगका काल मृषा वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है । अनुभय वचनयोगका काल उभय वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है । वचनयोगका काल अनुभय वचनयोगके कालसे विशेष अधिक है । काययोगका काल वचनयोगके कालसे संख्यातगुणा है ।

वचनयोगियों और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय वचनयोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १०६ ॥

१ अंतोवृद्धमेवा चउमणजोगा कमेण संखगुणा । तज्जोगो सामणं वउवचिजोगा तदो दु संखगुणा ॥  
वग्गो गो सामणं काओ संखाहो तिजोगमिदं । गो. जी. १६२-२६३.



एत्थ मिच्छाइट्ठी इदि एगवयणणिहेसो, केवडिया इदि बहुवयणणिहेसो; कधमेदाणं भिण्णाहियरणाणमेयदुपउत्ती ? ण, एयाणेयाणमणोण्णाजहुवुत्तीणमेयदुत्ताविरोहा । सेसं सुगमं । असंखेज्जा इदि सामण्णेण णवविहस्सासंखेज्जस्स गहणे पसत्ते अणिच्छिदा-संखेज्जपडिसेहदुमुत्तरसुत्तं भणदि—

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि—उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ॥ १०७ ॥

एदं सुत्तमइसुगमं । अणिच्छिदासंखेज्ज(संखेज्जवियप्पपडिसेह)णिमित्तमुत्तरसुत्ता-वदारो भवदि—

खेत्तेण वचिचोगि<sup>१</sup>असच्चमोसवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरम-वहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभागेण ॥ १०८ ॥

वचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो च वीईदियप्पहुडीणमुवरिमाणं जीवसमासाणं भासापज्जत्तीए पज्जत्तयाणं भवदि, तेण वि-ति-चउरिंदिय-असणिणपंचिंदियपज्जत्तरासीओ

श्रीका—इस सूत्रमें ‘मिच्छाइट्ठी’ यह एकवचन निर्देश है, और ‘केवडिया’ यह बहुवचन निर्देश है । अतएव भिन्न भिन्न अधिकरणवाले इन दोनोंकी एकार्थमें कैसे प्रवृत्ति हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, एक और अनेक अन्योन्य अजहद्वृत्ति हैं, इसलिये इन दोनोंकी एकार्थमें प्रवृत्ति होनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

शेष कथन सुगम है । ‘असंख्यात हैं’ इसप्रकार सामान्य वचन देनेसे नौ प्रकारके असंख्यातोंका ग्रहण प्राप्त होता है, अतएव अनिच्छित असंख्यातोंके प्रतिषेध करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं—

कालकी अपेक्षा वचनयोगी और अनुभय वचनयोगी जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १०७ ॥

यह सूत्र अतिसुगम है । अनिच्छित असंख्यातासंख्यातरूप विकल्पके प्रतिषेध करनेके लिये आगेके सूत्रका अवतार हुआ है—

क्षेत्रकी अपेक्षा वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियोंमें मिध्यादृष्टि जीवोंके द्वारा अंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १०८ ॥

द्वीन्द्रियोंसे लेकर ऊपरके संपूर्ण जीवसमासोंमें भाषापर्याप्तितसे पर्याप्त रूप जीवोंके वचनयोग और अनुभय वचनयोग पाया जाता है, इसलिये द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय

१ प्रतिपु ‘भणदि’ इति पाठः ।

२ योगानुवादेन ~~XX~~ वाग्योगिनद्वय मिध्यादृष्टयोऽसंखेयाः श्रेणयः प्रतरासंखेयभागप्रतिभाः । स. सि. १, ८.



एगडुं करिय वचिजोग-कायजोगद्वासमासेण खंडिय एगखंडं वचिजोगद्वाए गुणिय पंचि-  
दियअसच्चमोसवचिजोगरासिं पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगरासी होदि । एत्थ सच्चदि-  
सेसवचिजोगरासिं पक्खित्ते वचिजोगरासी होदि । अद्वासमासस आवलियाए गुणगारत्तेण  
टुविदसंखेज्जरूवेहितो पदरंगुलस्स हेट्ठा भागहारत्तेण टुविदसंखेज्जरूवाणि जेण संखेज्ज-  
गुणाणि तेण पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो भागहारो भवदि ।

### सेसाणं मणिजोगिभंगो ॥ १०९ ॥

जधा मणजोगरासी ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो, तहा वचिजोगि-असच्चमोस-  
वचिजोगीसु सासणादओ ओघसासणादीणं संखेज्जदिभागो । सेसं सुगमं ।

संपहि अप्पाबहुगवलेण पुत्तिल्लसुत्तेसु उत्तरासीणमवहारकाला परुविज्जंते । तं  
जहा—संखेज्जरूवेहि स्रचिअंगुले भागे हिदे लद्धे वग्गिदे वचिजोगिअवहारकालो होदि ।  
तम्मिह संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्मिह चैव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो

और असंखी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवराशिको एकहित करके और उसे वचनयोग और काययोगके  
कालके जोड़रूप प्रमाणसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे उसे वचनयोगके कालसे गुणित  
करके जो प्रमाण हो उसमें पंचेन्द्रिय अनुभय वचनयोगी राशिके मिला देने पर अनुभय  
वचनयोगी जीवराशि होती है । इसमें सत्यवचनयोगी जीवराशि आदि शेष वचनयोगी  
जीवराशियोंके मिला देने पर वचनयोगी जीवराशि होती है । यहां पर अद्वासमासके लिये  
आवलीके गुणकाररूपसे स्थापित संख्यातसे प्रतरांगुलके नीचे भागहाररूपसे स्थापित  
संख्यात चूँकि संख्यातगुणा है, इसलिये प्रकृतमें प्रतरांगुलका संख्यातवां भाग भागहार है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि आदि शेष गुणस्थानवर्ती वचनयोगी और अनुभय वचन-  
योगी जीव सासादनसम्यग्दृष्टि आदि मनोयोगिराशिके समान हैं ॥ १०९ ॥

जिसप्रकार मनोयोगी जीवराशि ओघसासादनसम्यग्दृष्टि आदिके संख्यातवें भाग है,  
इसीप्रकार वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवराशि  
ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके संख्यातवें भाग है । शेष कथन सुगम है ।

अथ अत्पबहुत्वके बलसे पूर्वोक्त सूत्रोंमें कही गई राशियोंके अवहारकाल कहे  
आते हैं । वे इसप्रकार हैं—संख्यातसे सूर्यंगुलके भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसके  
वर्गित करने पर वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे खंडित करके जो  
लब्ध आवे उसे इसी वचनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगियोंका  
अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर वैकिकिय काययोगियोंका अवहारकाल

होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वेउव्वियकायजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवच्चिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसवच्चिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चवच्चिजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वेउव्वियमिस्सअवहारकालो होदि । किं कारणं ? जेण अंतो-मुहुत्तमेत्तवेउव्वियमिस्सुवक्कमणकालादो संखेज्जवस्साउवदेवाणमुवक्कमणकालो संखेज्जगुणो तेण देवाणं संखेज्जदिभागो वेउव्वियमिस्सरासी होदि । हंतो वि सच्चमणरासिस्स संखेज्जदिभागो । कुदो ? सच्चमणजोगद्धोवट्ठिदसयलद्धासमासअंतोमुहुत्तमेत्तद्वाए आवलियगुणगारसंखेज्जरूवेहिंतो वेउव्वियमिस्सद्धोवट्ठिदसंखेज्जवस्सेसु संखेज्जगुणरूवोवलंभादो ।

संपहि ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर मृषा वचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यवचनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे इसी मनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर मृषा मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाल होता है ।

शंका—इसका क्या कारण है ?

समाधान—चूंकि अन्तर्मुहूर्तमात्र वैक्रियिकमिश्रके उपक्रमणकालसे संख्यात वर्षकी आयुवाले देवोंका उपक्रमणकाल संख्यातगुणा है, इससे तो यह सिद्ध हुआ कि वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी राशि देवोंके संख्यातवें भाग है, पर वह वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंकी राशि देवोंके संख्यातवें भाग होते हुए भी सत्यमनयोगियोंके प्रमाणके संख्यातवें भाग है, क्योंकि सत्यमनयोगके कालसे सर्व कालके जोइरूप अन्तर्मुहूर्त कालके अपवर्तित करने पर जो लब्ध आवे उसके लिये आवलीके गुणकार संख्यातसे वैक्रियिकमिश्रके कालसे अपवर्तित संख्यात वर्षोंमें संख्यातगुणी संख्या पाई जाती है ।

अब ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो

पक्खित्ते कायजोगिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-  
भाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेउच्चियअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि ।  
तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे वचिजोगिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्ज-  
रूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइड्ढिअवहार-  
कालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअसंजदसम्माइड्ढिअवहार-  
कालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मोमवचिजोगिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो  
होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चवचिजोगिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि ।  
तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे मणजोगिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि  
खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । ( तम्हि  
संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो होदि । ) तम्हि संखेज्जरूवेहि  
गुणिदे मोसमणजोगिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमणजोगि-  
अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगि-

लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी  
असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके  
अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध  
आवे उसे उसी काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर  
वैकिकिकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस वैकिकिकाययोगी  
असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी असंयतसम्य-  
ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको  
संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहार-  
कालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस  
अनुभय वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर उभय-  
वचनयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस उभय वचनयोगी असंयतसम्य-  
सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मृषावचनयोगी असंयतसम्य-  
ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सत्यवचनयोगी असंयत-  
ग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित  
करने पर मनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस मनयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे  
खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी मनयोगियोंके अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय मनो-  
योगियोंका अवहारकाल होता है । इस अनुभय मनयोगियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित  
करने पर उभयमनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस उभय मनयोगियोंके अवहारकालको  
संख्यातसे गुणित करने पर मृषामनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस मृषामनयोगियोंके  
अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर सत्यमनयोगियोंका अवहारकाल होता है । इस  
सत्यमनयोगियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिक

असंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेजदिभाएण गुणिदे वेउ-  
 वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेजदि-  
 भाएण गुणिदे कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइडिअवहारकालो होदि । एवं सम्मामिच्छा-  
 इडिस्स । णवरि वेउवियमिस्स कम्मइयं च छोट्टिय वत्तव्वं । ओघसासणसम्माइडिअव-  
 हारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते कायजोगिसासणसम्माइडि-  
 अवहारकालो होदि । तं हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय लद्धं तम्हि चेव  
 पक्खित्ते वेउवियकायजोगिसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि  
 गुणिदे वचिजोगिसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि भागे हिदे  
 लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते असच्चमोसवचिजोगिसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि  
 संखेज्जरूवेहि गुणिदे सच्चमोसवचिजोगिअवहारकालो होदि । एवं मोसवचिजोगि-सच्चवचि-  
 जोगिअवहारकालाणं जहाकमेण संखेज्जरूवेहि गुणयव्वं । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे  
 मणजोगिसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । तं हि संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव  
 पक्खित्ते असच्चमोसमणजोगिसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । तदो सच्चमोसमण-

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे  
 गुणित करने पर वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे  
 आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कर्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका  
 अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका भी अवहारकाल करना चाहिये । परंतु  
 इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कर्मणकाययोगको छोड़कर ही कथन  
 करना चाहिये । ओघ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके  
 जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर  
 काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे  
 खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें  
 मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे  
 संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे  
 संख्यातसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके  
 अवहारकालमें मिला देने पर अनुभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।  
 इसे संख्यातसे गुणित करने पर उभय वचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अवहारकाल होता  
 है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल लानेके लिये यथाक्रमसे  
 संख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्या-  
 तसे गुणित करने पर मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे  
 खंडित करके जो लब्ध आवे उसे इसी मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालमें  
 मिला देने पर अनुभय मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसके आगे

जोगि-मोसमणजोगि-सच्चैमणाणं जहाकमेण संखेज्जरूवेहिं गुणिज्जदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियमिस्ससासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउत्थियमिस्सजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । एवं संजदासंजदाणं । णवरि ओघावहारकालं संखेज्जरूवेहिं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खिस्सचे ओरालियकायजोगिसंजदासंजदाणं अवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहिं गुणिदे वच्चिजोगिसंजदासंजदावहारकालो होदि । सेतं पुच्चं व वच्चवं । पमत्तादीणं उच्चदे । मणजोग-वच्चिजोग-कायजोगद्वारं समासेण अप्पण्णो रासिम्हि भागे हिदे लद्धं तिप्पडिरासिं काऊण पुणो अप्पण्णो अट्ठाहि गुणिदे एकेकम्हि गुणट्ठाणे मण-वच्चि-कायजोगरासीओ हवंति । पुणो सच्चमोस-असच्चमोसमणजोगद्वारं समासेण मणजोगरासिं खंडिय लद्धं च दुप्पडिरासिं काऊण अप्पण्णो अट्ठाहि गुणिदे सच्चमोस-

उभयमनोयोगी, मृषामनोयोगी और सत्यमनोयोगी जीवोंका अवहारकाल लानेके लिये यथाक्रमसे संख्यातसे गुणित करना चाहिये । सत्यमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैकृतिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कामेणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार संयतासंयत वचनयोगी, मनोयोगी और काययोगियोंका अवहारकाल जानना चाहिये । यद्वा इतनी विशेषता है कि संयतासंयत ओघ अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी संयतासंयत ओघ अवहारकालमें मिला देने पर औदारिककाययोगी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर वचनयोगी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । शेष कथन पहलेके समान करना चाहिये । अब प्रमत्तसंयत आदिका द्रव्यप्रमाण कहते हैं— मनोयोग, वचनयोग और काययोगके कालके जोड़से अपने अपने गुणस्थानसंबन्धी राशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसकी तीन प्रतिराशियां करके पुनः उन्हें अपने अपने कालसे गुणित कर देने पर एक एक गुणस्थानमें मनोयोगी, वचनयोगी और काययोगियोंकी राशियां होती हैं । पुनः उभय मनोयोग और अनुभय मनोयोगके कालोंके जोड़से मनोयोगी जीवराशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी दो प्रतिराशियां करके अपने अपने कालसे गुणित करने पर उभय

असच्चमोसमणजोगरासीओ हवंति । एवं वचिजोगरासिस्स वि वच्चवं ।

**कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाहटी मूलोव्वं ॥ ११० ॥**

एदे दो वि रासीओ अणंता । अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण । खेत्तेण अणंताणंता लोगा इदि वुत्तं होदि । सेसं सुगमं ।

**सासणसम्माइट्टिपहुडि जाव सजोगिकेवलि ति जहा मणजोगि-भंगो ॥ १११ ॥**

एदं सुत्तं सुगमं । एत्थ धुवरासिविहाणं वुच्चदे । तं जहा—सगुणपडिवणमण-जोगि-वचिजोगिरासिं सिद्ध-अजोगिरासिं च कायजोगिभजिदं एदेसिं वगं च सच्चजीव-रासिम्हि पक्खित्ते कायजोगिधुवरासी होदि । तं पडिरासिं काऊण तत्थेकरासिम्हि संखेजुरुवेहि भागे हिदे लद्धं तस्मिं चैव पक्खित्ते ओरालियकायजोगिधुवरासी होदि ।

मनोयोगी और अनुभय मनोयोगी जीवराशियां होती हैं । इसीप्रकार वचनयोगी जीवराशिका भी कथन करना चाहिये ।

काययोगियों और औदारिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ ११० ॥

उपर्युक्त ये दोनों भी राशियां अनन्त हैं । कालकी अपेक्षा काययोगी और औदारिक-काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं और क्षेत्रकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं, यह इस कथनका तात्पर्य है । शेष कथन सुगम है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक काययोगी और औदारिककाययोगी जीव मनोयोगियोंके समान हैं ॥ १११ ॥

यह सूत्र सुगम है । अब यहां पर धुवराशिकी विधिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है—गुणस्थानप्रतिपन्न मनोयोगिराशि, वचनयोगिराशि, सिद्धराशि और अयोगि-राशिको तथा इन चारों राशियोंके वर्गमें काययोगिराशिका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर काययोगियोंकी धुवराशि होती है । अनन्तर इसकी प्रतिराशि करके उनमेंसे एक राशिमें संख्यातका भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी धुवराशिमें मिला देने पर औदारिककाययोगियोंकी धुवराशि होती है । सासादनसम्यग्दृष्टि

१ काययोगिषु मिथ्यादृष्ट्योऽनन्तानन्ताः । स. सि. १, ८. तदूणां संसारी एकजोगा इ । गो. जी. २६१.

सासणादीणं सग-सगअवहारकाले संखेज्जरूवेहिं<sup>१</sup> खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते काय-  
जोगिसासणादिगुणपडिवण्णाणं अवहारकाला भवंति । एदे अवहारकाले आवलियाए  
असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओरालियकायजोगिसासणादीणमवहारकाला भवंति । कुदो ?  
तिरिक्ख-मणुस्सगुणपडिवण्णरासीणं देवगुणपडिवण्णरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो । संजदा-  
संजदाणं पुण कायजोगिअवहारकालो चेव ओरालियकायजोगिअवहारकालो हेदि, तत्थ  
तच्चदिस्त्तिकायजोगाभावादो ।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोधं ॥ ११२ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं । एत्थ धुवरासी उच्चदे । ओरालियकायजोगिधुवरासिं पुब्बं  
परुविदं संखेज्जरूवेहिं गुणिदे ओरालियमिस्सकायजोगिधुवरासी हेदि । कुदो ? सुहुमे-  
इंदियअपज्जत्तरासीए पज्जत्तरासिस्स संखेज्जदिभागत्तादो । तं जहा- तिरिक्ख-मणुस-  
अपज्जत्तद्वादो पज्जत्तद्वा संखेज्जगुणा । ताणमट्ठाणं समासेण तिरिक्खरासिं खंडिय

आदि गुणस्थानोंके अपने अपने अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आधे उसे  
उसी सामान्य अवहारकालमें मिला देने पर काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थान-  
प्रतिपक्ष जीवोंके अवहारकाल होते हैं । इन अवहारकालोंको आवलोंके असंख्यातवें भागसे  
गुणित करने पर औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंके अवहारकाल होते  
हैं, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपक्ष तिर्यच और मनुष्य राशियां गुणस्थानप्रतिपक्ष देवराशिके  
असंख्यातवें भागमात्र हैं । औदारिककाययोगीकी अपेक्षा संयतासंयतका अवहारकाल ही  
औदारिककाययोगियोंका अवहारकाल है, क्योंकि, संयतासंयत गुणस्थानमें औदारिककाय-  
योगको छोड़कर और दूसरा कोई काययोग नहीं पाया जाता है ।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥११२॥

यह सूत्र भी सुगम है । अब यहां ध्रुवराशिका कथन करते हैं— पहले जो औदारिक  
काययोगियोंकी ध्रुवराशि कह आये हैं उसे संख्यातसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाय-  
योगियोंकी ध्रुवराशि होती है, क्योंकि, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि पर्याप्त राशिके  
संख्यातवें भागमात्र है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— तिर्यच और मनुष्योंके अपर्याप्त  
कालसे पर्याप्त काल संख्यातगुणा है । पुनः उन कालोंके जोड़से तिर्यच राशिको खंडित करके

१ प्रतिपु 'संखेज्जरूवे' इति पाठः ।

२ कम्मोराणियमिस्सयओरालद्धाए संविदअणता । कम्मोराणियमिस्सयओरालियजोगिणो जीवा । समय-  
कायसंखावसंखगुणावलिस्समावहिदरासी । सगगुणगुणिदे थोवो असंखसंखाइदो कमसो ॥ गो. जी. २६४-२६५.



लद्धमपज्जत्तद्वाए गुणिदे ओरालियमिस्सरासी हवदि । तमद्वाए गुणगारेण गुणिदे ओरालियकायजोगरासी हवदि । तेण ओरालियकायजोगरासीदो ओरालियमिस्सकायजोगरासी संखेज्जगुणहीणो ।

### सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ ११३ ॥

सासणसम्माइट्ठीणो देव-णेइया जेण तिरिक्ख-मणुस्सेसु उववज्जमाणा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्भंति तेण एदेसिं पमाणपरूवणाए ओघमंगो हवदि । एदेसिमवहार-कालो बुब्बदे । तं जहा— ओरालियकायजोगिसासणअवहारकालमावलिआए असंखेज्जदिभागण गुणिदे ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठीअवहारकालो होदि । कुदो ? देव-णेइएहिंते तिरिक्ख-मणुस्सेसु उप्पज्जमाणरासिणो पुव्वट्ठिदरासिस्स असंखेज्जदिभागत्तादो ।

### असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली द्ववपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ ११४ ॥

देव-णेइयसम्माइट्ठीणो मणुसेसु उववज्जमाणा संखेज्जा चेव लब्भंति, मणुस-पज्जत्तरासिस्स अण्णाहा असंखेज्जत्तप्पसंगा । ओरालियमिस्सकायजोगग्धि सुत्ताविरुद्धेण

जो लब्ध आवे उसे अपर्याप्त कालसे गुणित कर देने पर औदारिकमिश्रकाययोगी राशि होती है । इस औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशिको औदारिककाययोगके कालके गुणकरसे गुणित कर देने पर औदारिककाययोगीराशि होती है । इसलिये औदारिककाययोगी जीव-राशिसे औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशि संख्यातगुणी हीन है, यह सिद्ध हुआ ।

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव सामान्य प्ररूपणके समान हैं ॥ ११३ ॥

चूंकि तिर्यच और मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए सासादनसम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव पद्योपमके असंख्यातवें भाग पाये जाते हैं, इसलिये औदारिकमिश्रकाययोगी सासादन-सम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणके समान होती है । अब इनका अवहारकाल कहते हैं । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है— औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, देव और नारकीयोंमेंसे तिर्यच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाली राशियां पहले स्थित राशिके असंख्यातवें भागमात्र होती हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली औदारिकमिश्रकाययोगी जीव कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ ११४ ॥

सम्यग्दृष्टि देव और नारकी जीव मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए संख्यात ही पाये जाते हैं । यदि ऐसा न माना जाय तो मनुष्य पर्याप्त राशिको असंख्यातपनेका प्रसंग आ जाता है ।



आइरिओवएसेण' सजोगिकेवलियो चचालीसं हवंति । तं जहा— कवाडे आरुहंता वीस २०, ओदरंता वीसति २० ।

**वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छाइद्दी दव्वपमाणेण केवडिया, देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ ११५ ॥**

एदस्स सुचस्स अत्थो वुच्चदे । देवाणं जो रासीं अप्पण्णो संखेज्जदिमाणेण परिहीणो वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइद्दीणं पमाणं होदि । कुदो ? देवणेरइयरासिमेगडं करिय मण-वचिकायजोगसमासेण खंडिय लद्धं तिप्पडिरासिं काऊण अप्पण्णो अद्धहि गुणिदे सग-सगरासीओ हवंति । जेण मण-वचिजोगरासीओ देवाणं संखेज्जदिभागो हवंति,

विशेषार्थ—असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानमें औदारिकमिश्रकाययोगे तिर्यच और मनुष्य दोनोंमें पाया जाता है । फिर भी जो सम्यग्दृष्टि जीव मरकर तिर्यचोंमें उत्पन्न होते हैं वे मनुष्य ही होते हैं, अतएव ऐसे उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण स्वल्प ही रहेगा । तथा मनुष्य-गतितसे जो जीव सम्यक्त्वके साथ मनुष्योंमें उत्पन्न होंगे उनका भी प्रमाण स्वल्प ही रहेगा । अब रह गई नरक और देवगतिकी बात, सो इन दोनों गतियोंसे सम्यग्दृष्टि मरकर मनुष्योंमें ही उत्पन्न होते हैं । किन्तु पर्याप्त मनुष्योंका प्रमाण संख्यात ही है । अतएव नरक और देवगतितसे मरकर मनुष्योंमें होनेवाले सम्यग्दृष्टि जीव संख्यात ही उत्पन्न होंगे, अधिक नहीं । इसलिये औदारिकमिश्रकाययोगी सम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण संख्यात ही होगा, अधिक नहीं, यह सिद्ध हो जाता है ।

सूत्रके अविरोध आचार्योंके उपदेशानुसार औदारिकमिश्रकाययोगमें सयोगिकेवली जीव चालीस होते हैं । इसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—कपाट समुदातमें आरोहण करनेवाले औदारिकमिश्रकाययोगी वीस और उतरते हुए वीस होते हैं ।

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंके संख्यातवें भाग कम हैं ॥ ११५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं—अपनी अपनी राशिके संख्यातवें भागसे न्यून देवोंकी जो राशि है उतना वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण है, क्योंकि, देव और नारकियोंकी राशिको एकत्रित करके मनोयोग, वचनयोग और काययोगके कालके जोड़से खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी तीन प्रतिराशियां करके अपने अपने कालसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण होता है । नृक मनोयोगी जीवराशि और वचनयोगी जीव-

१ प्रतिपु 'ओवएस' इति पाठः ।

२ सुगणियकायजोगा वेउव्वियकायजोगा हु ॥ गो. जी. २६९.

३ प्रतिपु 'रासीओ' इति पाठः ।

तेण वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्टिरासिपमाणं संखेज्जदिभागपरिहीणदेवरासिणा समाणं भवदि ।

एत्थ अवहारकालो उच्चदे । देव-गेरइयमिच्छाइट्टिरासिसमासम्मि मण-वच्चि-वेउव्विय-मिस्सकाय-कम्मइयकायजोगिदेव-गेरइयमिच्छाइट्टिरासिसमासेण भागे हिदे संखेज्जरूवाणि लब्धंति । तेहि रूवूणेहि संखेज्जपदरंगुलमेत्तं देव-गेरइयसमासअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्मि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि ।

**सासणसम्माइट्ठी सम्मामिच्छाइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी द्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ ११६ ॥**

देवगुणपडिवण्णाणं रासिपमाणं अप्पप्पणो संखेज्जदिभाएण ऊणं वेउव्वियकाय-जोगिगुणपडिवण्णरासिपमाणं होदि । तं जहा— देव-गेरइयगुणपडिवण्णरासिम्मि अप्पप्पणो मण-वच्चि-वेउव्वियमिस्स-कम्मइयरासीहि भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि रूवूणेहि देव-गेरइयसमासअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्मि चेव पक्खित्ते वेउव्वियकायजोगिगुणपडिवण्णाणमवहारकाला भवंति ।

राशि देवोंके संख्यातवें भाग है, इसलिये वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण संख्या-तवें भाग कम देवराशिके समान होता है ।

अब यहाँ पर अवहारकालका कथन करते हैं— देव मिथ्यादृष्टिराशि और नारक मिथ्यादृष्टिराशिका जितना योग हो उसे मनोयोगी, वचनयोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और कर्मणकाययोगी देव और नारकी मिथ्यादृष्टि राशिके योगसे भाजित करने पर संख्यात लब्ध आते हैं । एक कम उस संख्यातसे संख्यात प्रतरांगुलमात्र देव और नारकियोंके जोड़रूप अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उन्हीं दोनोंके जोड़रूप अवहारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

**सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वैक्रियिककाय-योगी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणोके समान हैं ॥ ११६ ॥**

गुणस्थानप्रतिपन्न देवोंकी राशिका जो प्रमाण है, अपनी अपनी उस राशिमेंसे संख्यात भाग न्यून करने पर वैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न अपनी अपनी राशिका प्रमाण होता है । वह इसप्रकार है— गुणस्थानप्रतिपन्न देव और नारक राशिमें अपनी अपनी मनोयोगी, वचनयोगी, वैक्रियिकमिश्रकाययोगी और कर्मणकाययोगी जीवोंकी राशियोंका भाग देने पर वहाँ जो संख्यात लब्ध आवे उसमें एक कम करके शेषसे देव और नारकियोंके योग-रूप अवहारकालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी देव और नारकियोंके मिले हुए अव-हारकालमें मिला देने पर वैक्रियिककाययोगी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकाल होते हैं ।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,  
देवाणं संखेज्जदिभागो ॥ ११७ ॥

एदस्स सुत्तस्स वक्खणं वुच्चदे । संखेज्जवस्साउअमंतरआवलियाए असंखेज्जदि-  
भागमेत्तउवकमणकालेण<sup>१</sup> जदि<sup>२</sup> देवरासिसंचओ लब्भदि, तो एदम्हादो संखेज्जगुणहीण-  
वेउव्वियमिस्सउवकमणकालमिह केत्तियमेत्तरासिसंचयं लभासो त्ति इच्छारासिणा पमाण-  
रासिमिह भागे हिदे तत्थ लद्धसंखेज्जरूवेहि देवरासिमिह भागे हिदे तत्थेगभागे वेउव्विय-  
मिस्सकायजोगिमिच्छाद्विपमाणं होदि । सेसं सुगमं ।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने  
हैं ? देवोंके संख्यातवें भाग हैं ॥ ११७ ॥

अब इस सूत्रका व्याख्यान करते हैं— संख्यात वर्षकी आयुके भीतर आवलीके  
असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमण कालसे यदि देवराशिका संचय प्राप्त होता है, तो इससे  
संख्यातगुणे हीन वैक्रियिकमिश्र उपक्रमण कालके भीतर कितनामात्र राशिका संचय प्राप्त होगा,  
इसप्रकार त्रैराशिक करके इच्छाराशिसे प्रमाणराशिके भाजित करने पर वहां जो संख्यात  
लब्ध आधेगे उससे देवराशिके भाजित करने पर वहां एक भागप्रमाण वैक्रियिकमिश्रकाययोगी  
मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है । शेष कथन सुगम है ।

विशेषार्थ—उत्पत्तिको उपक्रमण कहते हैं, और इस सहित कालको सोपक्रमकाल  
कहते हैं । यह सोपक्रमकाल आवलीके असंख्यातवें भागमात्र है । अर्थात् देवोंमें यदि निरन्तर  
जीव उत्पन्न हों तो इतने काल तक उत्पन्न होंगे । इसके पश्चात् अन्तर पड़ जायगा । वह  
अन्तरकाल जघन्य एक समय है और उत्कृष्ट सोपक्रमकालसे संख्यातगुणा है । देवोंमें संख्यात  
वर्षकी आयु लेकर अधिक जीव उत्पन्न होते हैं, इसलिये यहां उन्हींकी विवक्षा है । इसप्रकार  
संख्यात वर्षके भीतर जितने उपक्रमकाल होते हैं उनमें यदि देवराशिका संचय प्राप्त होता है  
तो इससे संख्यातगुणे हीन मिश्रकालमें (अपर्याप्त अवस्थाके सोपक्रमकालमें) कितने जीव होंगे ।  
इसप्रकार त्रैराशिक करने पर सर्व देवराशिके संख्यातवें भागमात्र वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका  
प्रमाण होता है । यहां असंख्यात वर्षकी आयुवाले देवों और नारकियोंकी अपेक्षा वैक्रियिकमिश्र-  
काययोगियोंके प्रमाणके नहीं लानेका कारण यह है कि उनका अनुपक्रमकाल अधिक होनेसे  
उनमें वैक्रियिकमिश्रकाययोगियोंका प्रमाण अल्प होगा, इसलिये उनकी यहां विवक्षा नहीं की है ।

१ सोवक्कमायुवक्कमकालो संखेज्जवासिदिवाणे । आवलिअसंखमागो संखेज्जवल्लिपमा कमसो ॥ तर्हि  
सब्बे सुद्धसला सोवक्कमकालदो दु संखगुणा । तत्थो संखगुणा अपुण्णकालमिह सुद्धसला ॥ तं सुद्धसलागाहिदियि-  
रासिमपुण्णकाललद्धाहि । सुद्धसलागाहिं गुणे वेतरवेखव्वमिसा हु ॥ तर्हि सेसदेवरासियमिस्सज्जे सव्वोपिस्त्वेशुव्वं ॥  
गो. जी. २६६-२६९.

२ तत्र उत्पत्तिः उपक्रमः, तत्सहितः कालः सोपक्रमकालः निरन्तरात्पत्तिकालः इत्यर्थः । गो. जी. २६६ टीका.

३ 'अ प्रतौ'—कालेण गदिदे जदि' इति पाठः

**सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी द्ववपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ ११८ ॥**

तिरिक्ख-मणुससासण-असंजदसम्माइट्ठिणो जेण देवेसुप्पज्जमाणो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता लब्धंति तेणेदेसिं पमाणपरुवणा ओघं, ओघेण समाणा चि वुत्तं होदि । एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा—ओरालियमिस्ससासणसम्माइट्ठिअवहारकालमावल्याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । ओरालियकायजोगिअवहारकालमावल्याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । किं कारणं ? तिरिक्खाणमसंखेज्जदिभागस्स देवेसुप्पत्तीदो । केण कारणेण वेउव्वियमिस्सकायजोगिसासणे-हिंतो ओरालियमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा ? ण एस दोसो, कुदो ? देवेसुप्पज्जमाणतिरिक्खसासणेहिंतो तिरिक्खेसुप्पज्जमाणदेवसासणाणमसंखेज्जगुणत्तादो ।

**आहारकायजोगीसु पमत्तसंजदा द्ववपमाणेण केवडिया, चटु-वण्णं ॥ ११९ ॥**

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि वैकियिकमिश्रकाययोगी जीव द्रव्य-प्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ ११८ ॥

चूंकि सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यच और मनुष्य देवोंमें उत्पन्न होते हुए पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण पाये जाते हैं, इसलिये इनके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघ अर्थात् ओघप्ररूपणाके तुल्य होती है, यह इसका अभिप्राय है । अब इनके अवहारकालकी उत्पात्तिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है—औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैकियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । असंयतसम्यग्दृष्टि औदारिककाययोगियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वैकियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, तिर्यचोंके असंख्यातवें भागप्रमाण राशि देवोंमें उत्पन्न होती है ।

**शंका—**वैकियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे किस कारणसे हैं ?

**समाधान—**यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, देवोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे तिर्यचोंमें उत्पन्न होनेवाले देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यातगुणे पाये जाते हैं ।

**आहारकाययोगियों प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?**

१ आहारकायजोगा चटवण्णं होति एकसमयहि ॥ गो. जी. २७०

आहारसरीरमण्णगुणद्वानेसु पत्थि चि जाणावणद्धं पमत्तगहणं कदं । सेसं सुद्धु सुगमं ।

**आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १२० ॥**

एत्थ आहरियपरंपरागदोवएसेण आहारमिस्सकायजोगे सत्तावीस २७ जीवा हवन्ति । अहवा आहारमिस्सकायजोगे जिणदिट्ठभावा संखेज्जजीवा हवन्ति, ण सत्तावीसं, सुत्ते संखेज्जजिण्हिसण्णहाणुववच्चीदो मिस्सकायजोगेहिंतो आहारकायजोगीणं संखेज्जगुणत्तादो च । ण च दोण्हमेत्थ गहणं, अजहण्णअणुक्कस्ससंखेज्जस्स सव्वगहणादो, सव्वअपज्जत्तद्वाहिंतो पज्जत्तद्वाणं जहण्णाणं पि संखेज्जगुणत्तदंसणादो ।

**कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, मूलेव' ॥ १२१ ॥**

चौवन हैं ॥ ११९ ॥

प्रमत्तसंयत गुणस्थानको छोड़कर दूसरे गुणस्थानोंमें आहारशरीर नहीं पाया जाता है, इसका ज्ञान करानेके लिये प्रमत्तसंयत पदका ग्रहण किया । शेष कथन सुगम है ।

आहारमिश्रकाययोगियोंमें प्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२० ॥

यहां पर आचार्य परंपरासे आये हुए उपदेशानुसार आहारमिश्रकाययोगमें सत्तावीस जीव होते हैं । अथवा, आहारमिश्रकाययोगमें जिनदेवने जितनी संख्या देखी हो उतने संख्यात जीव होते हैं, सत्तावीस नहीं, क्योंकि, सूत्रमें संख्यात, यह निर्देश अन्यथा बन नहीं सकता है । तथा मिश्रयोगियोंसे आहारकाययोगी जीव संख्यातगुणे हैं, इससे भी प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी जीव संख्यात हैं, सत्तावीस नहीं । कदाचित् कहा जाय कि दो भी तो संख्यात हैं । परंतु दो यह संख्या संख्यात होते हुए भी उसका यहां पर ग्रहण नहीं किया है, क्योंकि, सबके द्वारा अजघन्यातुत्क्रुष्टरूप संख्यातका ही ग्रहण किया है । अथवा, सर्व अपर्याप्तकालसे जघन्य पर्याप्त काल भी संख्यातगुणा है, इससे भी यही प्रतीत होता है कि आहारमिश्रकाययोगी सत्तावीस नहीं लेना चाहिये ।

कर्मणकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२१ ॥

जदो सव्वजीवरासी गंगापवाहो च्व गिरंतरं विग्गहं काऊणुप्पज्जदि, तेण कम्मइय-  
रासिस्स मूलोघपरूवणा ण विरुद्धा । एदस्स सुत्तस्स धुवरासी वुच्चदे । कायजोगिधुव-  
रासिमंतोमुहुत्तेण गुणिदे कम्मइयजोगिधुवरासी होदि । तं जहा— संखेज्जावलियमेत्त-  
अंतोमुहुत्तकालेण जदि सव्वजीवरासिस्स संचओ होदि, तो तिण्हं समयाणं केचियं संचयं  
लभामो चि पमाणेण इच्छागुणिदफलमोवट्ठिय अंतोमुहुत्तोवट्ठियसव्वजीवरासी आगच्छदि ।

**सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी द्वपमाणेण केवडिया,  
ओघं ॥ १२२ ॥**

जेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खअसंजदसम्माइट्ठिणो विग्गहं  
काऊण देवेसुप्पज्जमाणा लब्भंति, देव-तिरिक्खसासणसम्माइट्ठिणो पलिदोवमस्स असंखे-  
ज्जदिभागमेत्ता तिरिक्ख-देवेसु विग्गहं करिय उववज्जमाणा लब्भंति, तेण एदेसि पमाण-  
परूवणा ओघपरूवणाए तुल्ला । एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । असंजदसम्मादिट्ठि-सासण-  
सम्मादिट्ठिवेउव्वियमिस्सअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे कम्मइयकाय-  
जोगिअसंजदसम्मादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिअवहारकाला भवंति । कुदो ? विग्गहं करिय

चूंकि सर्व जीवराशि गंगानदीके प्रवाहके समान निरंतर विग्रह करके उत्पन्न होती है, इसलिये कर्मणकाय राशिकी प्ररूपणा मूलोघ प्ररूपणाके समान होती है, विरुद्ध नहीं ।

अब इस सूत्रमें कहे गये कर्मणकाययोगियोंके प्रमाणकी धुवराशि कहते हैं—  
काययोगियोंकी धुवराशिको अन्तर्मुहूर्तसे गुणित करने पर कर्मणकाययोगियोंकी धुवराशि होती है । उसका स्पर्शकरण इसप्रकार है— संख्यात आवलीमात्र अन्तर्मुहूर्तकालके द्वारा यदि सर्व जीवराशिका संचय होता है, तो तीन समयमें कितना संचय प्राप्त होगा, इसप्रकार इच्छाराशिसे फलराशिको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे प्रमाणराशिसे भाजित करने पर अन्तर्मुहूर्तकालसे भाजित सर्व जीवराशि आती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि कर्मणकाययोगी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १२२ ॥

चूंकि पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीव विग्रह करके देवोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं । तथा पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण देव सासादनसम्यग्दृष्टि जीव, और उत्तने ही तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीव क्रमसे तिर्यंच और देवोंमें विग्रह करके उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं, इसलिये सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि कर्मणकाययोगियोंकी प्ररूपणा सामान्य प्ररूपणाके तुल्य है । अब इनके अवहारकालकी उत्पत्तिको कहते हैं— असंयतसम्यग्दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि वैकिक-  
मिश्र अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्रमसे कर्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अवहारकाल होते हैं, क्योंकि, विग्रह

मरमाणरासीए देवेसु उववज्जमाणरासिस्स असंखेज्जदिभागचादो ।

**सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२३ ॥**

एत्थ पुच्चाइरिओवएसेण संट्ठी जीवा हवति । कुदो ? पदरे वीस, लोगपूरणे वीस, पुणरवि ओदरमाणा पदरे वीस चेव भवति चि ।

भागाभागं वचइस्सामो । सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा ओरालियकायजोगरासीओ । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालियमिस्सकायजोगरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायमिच्छाइट्ठिरासी होदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चवचिजोगिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणमिच्छाइट्ठी होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणमिच्छा-

करके मरनेवाली राशि देवोंमें उत्पन्न होनेवाली राशिके असंख्यातवें भागमात्र पाई जाती है ।

**कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली जीव कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२३ ॥**

पूर्व आचार्योंके उपदेशानुसार सयोगिकेवलियोंमें कार्मणकाययोगी जीव साठ होते हैं, क्योंकि, प्रतर समुद्रातमें वीस, लोकपूरण समुद्रातमें वीस और उतरते हुए प्रतर समुद्रातमें पुनः वीस जीव होते हैं ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण औदारिककाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभागप्रमाण औदारिकमिश्रकाययोगी जीवराशि है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि राशि है । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभागप्रमाण सिद्ध जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैकिकिकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग उभय वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग असत्य वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग उभय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषा मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्य मनोयोगी







जोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसमणजोगि-  
सम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छा-  
इट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । सेसं  
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि । ओघसासणरासीदो  
ओघसम्मामिच्छाइट्टिरासी संखेज्जगुणो चि सुत्तसिद्धो । संपहि ओघसम्मामिच्छाइट्टिरासिस्स  
संखेज्जदिभागो सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी कथं ओघसासणरासीदो संखेज्जगुणो  
होदि चि उत्ते वुच्चदे- जोगद्धागुणगारादो' सम्मामिच्छाइट्टिरासिं पट्ठि सासणसम्मा-  
इट्टिरासिस्स गुणगारो बहुगो, तेण सच्चमणजोगिसम्मामिच्छाइट्टिरासी सेसस्स संखेज्ज-  
भागो' । तं कथं णव्वदे सुत्तेण विणा ? णत्थि सुत्तं वक्खणं वा, किंतु आहरियवयणमेव  
केवलमत्थि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउच्चियकायजोगिसासणसम्मामिच्छाइट्टिरासी  
होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असच्चमोसवच्चिजोगिसासणसम्मामिच्छाइट्टिरासी होदि ।

बहुभाग सत्यवचनयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने  
पर बहुभाग अनुभय मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड  
करने पर बहुभाग उभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात  
खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके  
संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । ओघ  
सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि संख्यातगुणी है, यह सूत्र सिद्ध  
है । अब ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशिसे संख्यातवें भागप्रमाण सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि  
जीवराशि ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशिसे संख्यातगुणी कैसे है, आगे इसी विषयके पूछने  
पर कहते हैं— योगकालके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि की अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टि  
जीवराशिका गुणकार बहुत है, इसलिये सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि  
भागभागमें मृषामनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टिका प्रमाण आनेके अनन्तर जो एक भाग शेष  
रहता है उसका संख्यातवां भाग है ।

श्रुंकां—सूत्रके बिना यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—यद्यपि इस विषयमें सूत्र या व्याख्यान नहीं पाया जाता है, किंतु आचा-  
र्योंके वचन ही केवल पाये जाते हैं, जिससे यह कथन जाना जाता है ।

सत्यमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके  
संख्यात खंड करने पर बहुभाग वैकृतिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष  
एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अनुभयवचनयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि

१ आ प्रती 'जोगद्धागुण' इति पाठः ।

२ प्रसिद्ध 'संखेज्जा भागो' इति पाठः ।



मणजोगिसंजदासंजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मोसमणजोगिसंजदा-  
संजदरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सच्चमणजोगिसंजदासंजदरासी होदि ।  
सुत्तेण विणा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्टिरासी तिरिक्खसम्माभिच्छाइट्टि-  
प्पहुडि तीहिं वि रासीहिंतो असंखेज्जगुणहीणो त्ति कथं णव्वदे ? आइरियवयणादो । आइ-  
रियवयणमणेयंतमिदि चे, होदु णाम, णत्थि मज्झेत्थ अग्गहो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहु-  
खंडा वेउव्वियमिस्सकायजोगिअसंजदसम्माइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा  
कम्मइयकायजोगिअसंजदसम्माइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओरालि-  
यमिस्सकायजोगिसासणसम्माइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेउव्विय-  
मिस्सकायजोगिसासणा हेंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कम्मइयकायजोगिसासण  
सम्माइट्टिरासी होदि । सेसं जाणिऊण णेयव्वं ।

अप्पावहुअं त्तिविहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । पंचमणजोगि-तिणिणवचिजोगि-

है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मृषामनोयोगी संयतासंयत जीवराशि  
है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सत्यमनोयोगी संयतासंयत जीवराशि है ।

शंका—सूत्रके बिना वैकियिकमिश्र काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि तिर्यंच  
सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे लेकर तीनों राशियोंसे असंख्यातगुणी हीन है, यह कैसे जाना  
जाता है ?

समाधान—यह कथन आचार्योंके वचनसे जाना जाता है ।

शंका—आचार्योंके वचनमें अनेकान्त है, अर्थात् वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं ?

समाधान—यदि वे अनेक प्रकारके पाये जाते हैं तो पाये जाओ, इसमें हमारा  
आग्रह नहीं है ।

सत्यमनोयोगी संयतासंयत राशिके अनन्तर जो एक भाग शेष रहे उसके असंख्यात  
खंड करने पर बहुभाग वैकियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक  
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग कर्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि  
है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग औदारिकमिश्रकाययोगी सासादन-  
सम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वैकियिकमिश्र-  
काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग  
कर्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष कथन समझकर ले जाना चाहिये ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत  
है । पाँचों मनोयोगी, तीन वचनयोगी, वैकियिककाययोगी और वैकियिकमिश्रकाययोगियोंका

वेउच्चिय-वेउच्चियमिस्सकायजोगीणं सत्थाणस्स देवगभंगो । वच्चिजोगि-असच्चमोस-  
वच्चिजोगीणं सत्थाणस्स पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तभंगो । सेसकायजोगीसु मिच्छाइट्ठीणं  
सत्थाणं णत्थि । सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं  
सत्थाणस्स ओघभंगो ।

परत्थाणे पयंदं । सच्चत्थोवा असच्चमोसमणजोगिणो चत्तारि उवसामगा । असच्च-  
मोसमणजोगिणो चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो सजोगिकेवलीं  
संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिणो अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमण-  
जोगिणो पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगिसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो  
असंखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्च-  
मोसमणजोगिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । असच्चमोसमणजोगिसंजदा-  
संजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगि-  
सासणसम्माइट्ठिद्वयमसंखेज्जगुणं । असच्चमोसमणजोगिसम्मामिच्छाइट्ठिद्वयं संखेज्जगुणं ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व देवगतिके समान है । वचनयोगी और अनुभयवचनयोगियोंका स्वस्थान  
अल्पबहुत्व पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । शेष काययोगियोंमें  
मिथ्यादृष्टि जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टि,  
सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान  
अल्पबहुत्वके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । अनुभय मनोयोगी चारों गुणस्थानवर्ती  
उपशामक सबसे स्तोक हैं । अनुभय मनोयोगी चार गुणस्थानवर्ती क्षपक उपशामकोंसे  
संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी सयोगिकेवली जीव उक्त क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय  
मनोयोगी अप्रमत्तसंयत जीव उक्त सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभय मनोयोगी प्रमत्त-  
संयत जीव उक्त अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । अनुभयमनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अव-  
हारकाल उक्त प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहार-  
काल उक्त असंयत अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका  
अवहारकाल उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी संयता-  
संयतोंका अवहारकाल उक्त सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं अनुभय-  
मनोयोगी संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी  
सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उक्त संयतासंयतोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगी  
सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य उक्त सासादनसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । अनुभयमनो-

१ प्रतिषु 'अजोगिकेवली' इति पाठः ।

२ प्रतिषु असंखे० गुणा' इति पाठः ।

असच्चमोसमणजोगिअसंजदसम्माइद्धिद्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवमसंखेज्जगुणं । असच्च-  
मोसमणजोगिमिच्छाइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा ।  
सेढी असंखेज्जगुणा । द्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो ।  
एवं चत्तारिमण-पंचवचिजोगीणं परत्थाणप्पावहुणं वत्तव्वं । वेउच्चियकायजोगीसु सव्वत्थोवो  
असंजदसम्माइद्धिअवहारकालो । उवरि मणजोगपरत्थाणभंगो । वेउच्चियमिस्सकायजोगीसु  
सव्वत्थोवो असंजदसम्माइद्धिअवहारकालो । सासणसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।  
तस्सेव द्वमसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइद्धिद्वमसंखेज्जगुणं । उवरि मणजोगिपरत्थाण-  
भंगो । सव्वत्थोवा कायजोगिणो उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । एवं पेयव्वं जाव पलि-  
दोवमं ति । पलिदोवमादो उवरि मिच्छाइद्धी अणंतगुणा । एवं ओरालियकायजोगीणं पि  
वत्तव्वं । ओरालियमिस्सकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली । असंजदसम्माइद्धी संखेज्ज-  
गुणा । सासणसम्माइद्धिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वमसंखेज्जगुणं । पलिदो-  
वमसंखेज्जगुणं । मिच्छाइद्धी अणंतगुणा । आहार-आहारमिस्सेसु णत्थि सत्थाणं परत्थाणं

योगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उक्त सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। पल्यो-  
पम उक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। अनुभयमनोयोगी मिथ्यादृष्टियोंका  
अवहारकाल पल्योपमसे असंख्यातगुणा है। उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यातगुणी  
है। जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है। उन्हीं अनुभयमनोयोगी मिथ्यादृष्टियोंका  
द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है। जगप्रतर द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है। लोक  
जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है। इसीप्रकार दोष चार मनोयोगी और पांचों वचनयोगियोंका  
परस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये। वैकियिकाययोगियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहार-  
काल सबसे स्तोक है। इसके ऊपर मनोयोगके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना  
चाहिये। वैकियिकमिश्रकाययोगियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक  
है। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यात-  
गुणा है। उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि वैकियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे  
असंख्यातगुणा है। असंयतसम्यग्दृष्टि वैकियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे  
असंख्यातगुणा है। इसके ऊपर मनोयोगियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये।  
काययोगी उपशामक सबसे स्तोक हैं। काययोगी क्षपक काययोगी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं।  
इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये। पल्योपमके ऊपर काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्त-  
गुणे हैं। इसीप्रकार औदारिककाययोगियोंका भी कथन करना चाहिये। औदारिकमिश्रकाय-  
योगियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं। असंयतसम्यग्दृष्टि जीव सयोगिकेवलियोंसे  
संख्यातगुणे हैं। सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंसे असंख्यातगुणा  
है। उन्हींका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। पल्योपम सासादनसम्यग्दृष्टि औदा-  
रिकमिश्रकाययोगियोंसे असंख्यातगुणा है। औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव पल्योपमसे

वा । कम्मइयकायजोगीसु सव्वत्थोवा सजोगिणो । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वम्मसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइट्ठिद्वम्मसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । कम्मइयकायजोगिमिच्छा-इट्ठिणो अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा आहारमिस्सकायजोगिजीवा । आहारकायजोगिजीवा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सव्वेसिमसंजदसम्माविट्ठिणं अवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । किमट्ठेमं जाणिज्जेदं ? वेउव्वियमिस्स-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगीसु सासणसम्मा-इट्ठि-असंजदसम्माइट्ठिरासीणं माहप्पं ण जाणिज्जदि ति । पुव्वं किमिदं परुविदं ? ण, आइरियाणं तस्स अभिप्पायंतरदरिसणट्ठत्तादो । पलिदोवमादो उवरि वच्चिजोगिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । असच्चमोसवच्चिजोगिअवहारकालो विसेसाहिओ । वेउव्वियकायजोगि-

अनन्तगुणे हैं । आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगमें स्वरथान अथवा परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कर्मणकाययोगियोंमें संयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संयोगियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य सासादन द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । कर्मणकाययोगी मिश्र्यादृष्टियोंका द्रव्य पल्योपमसे अनन्तगुणा है ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है । आहारमिश्रकाययोगी जीव सबसे स्तोक है । आहारकाययोगी जीव आहारमिश्र जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव आहारकाययोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सभीका असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये ।

शंका—ऐसा किसलिये समझें ?

समाधान—वैकियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कर्मणकाययोगियोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि राशियोंका माहात्म्य अर्थात् परस्पर अल्पबहुत्व नहीं जाना जाता है, इसलिये ऐसा समझना चाहिये ।

शंका—तो फिर इनके अल्पबहुत्वका पहले प्ररूपण किसलिये किया है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, वहां दूसरे आचार्योंका अभिप्रायान्तर दिखलाना उनके अल्पबहुत्वके कथनका प्रयोजन था ।

पल्योपमके रूपर वचनयोगियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । अनुभयवचनयोगियोंका अवहारकाल वचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । वैकियिककाययोगियोंका

अवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं सच्चमोसवचिजोगि-मोसवचिजोगि-सच्चवचिजोगि-मणजोगीणं अवहारकाला' संखेज्जगुणा । असच्चमोसमणजोगीणं अवहारकालो विसेसाहिओ । सच्चमोसमणजोगिअवहारकालो संखेज्जगुणो । एवं मोसमणजोगि-सच्चमणजोगि-वेउव्विय-मिस्सकायजोगीणं अवहारकाला संखेज्जगुणा । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । सच्चमणजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्च-मोसमणजोगीणं । तदो मणजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया । सच्चवचिजोगिविक्खंभसूई संखेज्जगुणा । एवं मोसवचिजोगि-( सच्चमोसवचिजोगि )-वेउव्वियकायजोगि-असच्च-मोसवचिजोगिविक्खंभसूचीओ संखेज्जगुणाओ । वचिजोगिविक्खंभसूई विसेसाहिया । सेढी असंखेज्जगुणा । तदो वेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छाद्दुट्ठिद्वमसंखेज्जगुणं । सच्चमण-जोगिद्वं संखेज्जगुणं । एवं मोसमणजोगि-सच्चमोसमणजोगि-असच्चमोसमणजोगि-द्व्वाणि जहाकमेण संखेज्जगुणाणि । मणजोगिद्वं विसेसाहियं । सच्चवचिजोगिद्वं

अवहारकाल अनुभयवचनयोगियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार उभय-वचनयोगी, मृषावचनयोगी और सत्यवचनयोगी जीवोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है । अनुभयमनोयोगियोंका अवहारकाल सत्यवचनयोगियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । उभयमनोयोगियोंका अवहारकाल अनुभयमनोयोगियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार असत्यमनोयोगी, सत्यमनोयोगी और वैकियिकमिश्रकाययोगियोंका अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुणा है । उन्हींकी अर्थात् वैकियिकमिश्रकाययोगियोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । सत्यमनोयोगियोंकी विष्कंभसूची वैकियिकमिश्रकाययोगि-योंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी और अनुभय-मनोयोगियोंकी विष्कंभसूची भी समझना चाहिये । अनुभयमनोयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे मनो-योगियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंकी विष्कंभसूची मनोयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । इसीप्रकार मृषावचनयोगी, उभयवचनयोगी, वैकियिककाययोगी और अनुभयवचनयोगियोंकी विष्कंभसूचीया भी उत्तरोत्तर संख्यातगुणी हैं । वचनयोगियोंकी विष्कंभसूची अनुभयवचनयोगियोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है । जगश्रेणी वचनयोगि-योंकी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणीसे वैकियिकमिश्रकाययोगियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । सत्यमनोयोगियोंका द्रव्य वैकियिकमिश्रकाययोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार मृषामनोयोगी, उभयमनोयोगी, अनुभयमनोयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संख्यातगुणा है । मनोयोगियोंका द्रव्य अनुभय मनोयोगियोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । सत्यवचनयोगियोंका



संखेज्जगुणं । एवं मोसवचिजोगि-सच्चमोसवचिजोगि-वेउव्वियकायजोगि-असच्चमोसवचि-जोगिदव्वाणि जहाकमेण संखेज्जगुणाणि । तदे। वचिजोगिदव्वं विसेसाहियं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोमो असंखेज्जगुणो । तदो अजेइणो अणंतगुणा । कम्मइयकायजोगिणो अणंतगुणा । ओरालियमिस्सकायजोगिणो असंखेज्जगुणा । ओरालियकायजोगिणो मिच्छाइट्ठी संखेज्जगुणा ।

एवं जोगमग्ना समत्ता ।

**वेदानुवादेण इत्थिवेदएसु मिच्छाइट्ठी द्वपमाणेण केवाडिया, देवीहि सादरेयं ॥ १२४ ॥**

देवगइमग्नाए देवीणं पमाणमेत्तियं होदि त्ति सुत्तमिह ण वुत्तं, तो कथं जाणिअदे इत्थिवेदरासी देवीहिंतो सादरेयो इदि ? जदि वि एत्थ ण वुत्तो तो वि 'ईसाणकप्प-वासियदेवाणमुवरि तमिह चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ । तदो सोहम्मकप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा । तमिह चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ । पढमाए पुढवीए गेरइया असंखेज्ज-

द्रव्य मनोयोगियोंके द्रव्यसे संख्यातगुणा है । इसीप्रकार सृष्टावचनयोगी, उभयवचनयोगी, वैक्रियिककाययोगी और अनुभय वचनयोगियोंका द्रव्य यथाक्रमसे संख्यातगुणा है । अनुभय वचनयोगियोंके द्रव्यसे वचनयोगियोंका द्रव्य विशेष अधिक है । जगप्रतर वचनयोगियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । लोकसे अयोगी जीव अनन्तगुणे हैं । अयोगियोंसे कर्मणकाययोगी जीव अनन्तगुणे हैं । कर्मणकाययोगियोंसे औदारिकमिश्रकाययोगी जीव असंख्यातगुणे हैं । औदारिकमिश्रकाययोगियोंसे औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणे हैं

इसप्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई ।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवियोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १२४ ॥

शंका—देवगति मार्गणामें देवियोंका प्रमाण इतना है, यह सूत्रमें नहीं कहा है, अतएव यह कैसे जाना जाता है कि स्त्रीवेदराशि देवियोंसे साधिक होती है ?

समाधान—यद्यपि यहां जीवद्वानमें यह बात नहीं कही है तो भी 'ऊपर ईशान-कल्पवासी देवोंके वहाँ पर देवियां उनसे संख्यातगुणी हैं । उनसे सौधर्म कल्पवासी देव संख्यातगुणे हैं और वहाँ पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । पढली पृथिवीमें नारकी जीव सौधर्म कल्पकी देवियोंसे असंख्यातगुणे हैं । भवनवासी देव नारकियोंसे



गुणा । भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ । पंचिदियतिरिक्ख-  
जोणिणीओ संखेज्जगुणाओ । वाणवैतरदेवा संखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ ।  
जोइसियदेवा संखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ चि ' एदम्हादो खुदाबंधसुत्तादो  
जाणिज्जद जहा देवाणं संखेज्जा भागा देवीओ होंति चि । तिरिक्खजोणिणीओ देवीणं  
संखेज्जदिभागो । ताओ देवीसु पक्खिचे इत्थिवेदरासी होदि चि क्कु देवीहि सादिरियमिदि  
तासिं पमाणं सुत्ते पुत्तं ।

तासिमवहारकालुप्पत्तिं वचइस्सामो । देवअवहारकालमिह वत्तीसरूवेहि भागे हिदे  
लद्धं तमिह चैव पक्खिखिय तिरिक्ख-मणुसित्थिवेदागमणीमिच्चं तत्तो एकस्स पदरंगुलस्स  
संखेज्जदिभाए अवणिदे इत्थिवेदअवहारकालस्स भागहारो होदि । वत्तीसरूवाणि देव-  
अवहारकालस्स भागहारो होंति चि कथं णव्वदे ? तेहिंतो देवीओ वत्तीसगुणा हव्वंति चि  
आहरियपरंपरागयुवेदादो णव्वदे । एदेण अवहारकालेण जगपदरे भागे हिदे इत्थिवेद-  
रासी होदि ।

सासणसम्माइट्ठिण्हुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १२५ ॥

असंख्यातगुणे हैं । तथा वहाँ पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमती  
जीव भवनवासी देवोंसे संख्यातगुणे हैं । वाणव्यन्तर देव पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिमतिर्योसे  
संख्यातगुणे हैं । तथा वहाँ पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं । ज्योतिषी देव वाणव्यन्तर  
देवियोंसे संख्यातगुणे हैं । तथा वहाँ पर देवियां देवोंसे संख्यातगुणी हैं ।<sup>१</sup> इस खुदाबन्धके  
सूत्रसे यह जाना जाता है कि देवोंके संख्यात बहुभाग देवियां होती हैं । तथा तिर्यक् योनिमती  
जीव देवियोंके संख्यातवें भाग होते हैं । अतएव इन तिर्यक् योनिमतिर्योके प्रमाणको देवियोंके  
प्रमाणमें मिला देने पर खीवेद जीवराशि होती है, ऐसा समझकर देवियोंसे कुछ अधिक इस-  
प्रकार खीवेदी जीवोंका प्रमाण सूत्रमें कहा ।

अब खीवेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं— देवोंके अवहारकालको  
बत्तीससे भाजित करके जो लब्ध आवे उसे उसी देव अवहारकालमें मिला कर जो योग हो  
उसमेंसे, तिर्यक् और मनुष्य खीवेदी जीवोंका प्रमाण लानेके लिये, एक प्रतरंगुलके संख्यातवें  
भागके निकाल लेने पर खीवेदी जीवोंका अवहारकाल होता है ।

शुंका— देव अवहारकालका भागहार वत्तीस होता है, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान— देवोंसे देवियां वत्तीसगुणी हैं, इसप्रकार आचार्य-परंपरासे आवे हुए  
उपदेशसे यह जाना जाता है ।

योनिमतिर्योके इस पूर्वोक्त अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर खीवेद  
जीवराशि होती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुण-

जेणेदे चदुगुणद्विगुणो जीवा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता तेणेदेसिं परूवणा ओघं होदि । ओघपमाणादो ऊणइत्थिवेदगुणपडिवण्णाणं कधमोघत्तं जुज्जेदे ? ण, ओघमिव ओघमिदि उवयारेण तस्से ओघत्तसिद्धीदो । ओघअसंजदसम्माइद्धिअवहारकाल-मावल्याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे इत्थिवेदअसंजदसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । कुदो ? कारिसग्गिसमाणइत्थिवेदेण दज्झंतहिययाणमित्थीणं सणिदाणाणं पउरं सम्मत्तपरिणामा-संभवादो । तम्हि आवल्याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइद्धिअवहारकालो होदि । तम्हि आवल्याए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पलिदोवमे भागे हिदे सग-सगरासीओ भवति ।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा द्वयपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १२६ ॥

स्थानमें स्त्रीवेदी जीव ओघप्ररूपणाके समान पत्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १२५ ॥

चूंकि ये चार गुणस्थानचर्त्ती जीव पत्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, इसलिये इनकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान होती है ।

शंका—गुणस्थानप्रतिपक्ष ओघप्ररूपणासे न्यून गुणस्थानप्रतिपक्ष स्त्रीवेदियोंके प्रमाणको ओघपना कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहा जाता है, इसलिये उपचारसे स्त्रीवेदियोंकी संख्याको ओघत्व सिद्ध हो जाता है ।

ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है, क्योंकि, उपलेकी अश्रिके समान स्त्रीवेदसे जिनका हृदय जल रहा है और जो कामाभिलाष सहित हैं, ऐसी स्त्रियोंके प्रचुरतासे सम्यक्त्वपरिणाम संभव नहीं है । अर्थात् स्त्रीवेदके साथ प्रचुर सम्यग्दृष्टि जीव नहीं होते हैं । उस स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे पत्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियोंका प्रमाण आता है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिबादरसांपरायप्रविष्ट उपशमक और

१ प्रतिष्ठा 'चदुगुणद्विगुण' इति पाठः ।

२ प्रतिष्ठा 'सणिदाणाणं' इति पाठः ।

३ प्रमत्तसंयतादयोऽनिवृत्तिबादरान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

पमत्तादीणं ओघरासि संखेज्जखंड कए एयखंडमिथिवेदपमत्तादो भवंति ।  
इत्थिवेदउवसामगा दस १०, खवगा वीस २० ।

पुरिसवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवेहि सादि-  
रेयं' ॥ १२७ ॥

देवलोए देवीगं संखेज्जदिभागमेत्ता देवा भवंति । पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं  
संखेज्जदिभागमेत्ता तिरिक्खेसु पुरिसवेदा भवंति । तेसु देवेषु पक्खिचेसु देवेहि सादिरयं  
पुरिसवेदरासिपमाणं होदि ।

एत्थ अवहारकालुप्पत्तिं वचइस्सामो । देवअवहारकालं तेत्तीसरूवेहि गुणिय तत्तो  
एक्कपदंगुलं घेतूण संखेज्जखंडं काउण तत्थेगखंडमवणिय बहुखंडं तत्थेव पक्खिचे  
पुरिसवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । एहेण जगपदरे भागे हिदे पुरिसवेदमिच्छाइट्ठि-  
रासी होदि ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उव-  
समा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं' ॥ १२८ ॥

क्षपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १२६ ॥

प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानसंबन्धी ओघराशिको संख्यातसे खंडित करने पर एक  
खंडप्रमाण खीवेदी प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानवर्ती जीव होते हैं । खीवेदी उपशामक दश और  
क्षपक वीस हैं ।

पुरुषवेदियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंसे कुछ  
अधिक हैं ॥ १२७ ॥

देवलोकेमें देवियोंके संख्यातवें भागमात्र देव हैं । पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके  
संख्यातवें भागमात्र तिर्यंचोंमें पुरुषवेदी जीव हैं । इन पुरुषवेदी तिर्यंचोंके प्रमाणको देवोंमें  
प्रक्षिप्त कर देने पर देवोंसे कुछ अधिक पुरुषवेद जीवराशिका प्रमाण होता है ।

अब यहां उक्त जीवोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं— देवोंके अवहारकालको  
तेतीससे गुणित करके जो लब्ध आवे उसमेंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात  
खंड करके उनमेंसे एक खंडको घटाकर बहुभाग उसी पूर्वोक्त राशियोंमें मिला देने पर पुरुषवेदी  
मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है । इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर पुरुषवेदी  
मिथ्यादृष्टि राशि होती है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्ति बादरसांपरायप्रविष्ट उपशमक

१ वेदानुवादेन ×× पुंवेदाश्च मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयमागप्रमिताः । स. सि. १, ८.  
देवेहि सादिरया पुरिसा । गो. जी. २७९.

इत्थिवेद-गुणुसयवेदरासिपरिहीणो ओघरासी पुरिसवेदस्स भवदि । कथं तस्स ओघत्तं जुज्जे ? ण एस दोसो, ओघमिव ओघमिदि तस्स ओघत्तसिद्धीदो ।

एत्थ अवहारकालो वुच्चे । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । ओघपमत्तादिसु अप्पणो संखेज्ज-भागभूदइत्थि-गणुसयवेदरासिपमाणमवणिदे पुरिसवेदपमत्तादो भवन्ति ।

गणुसयवेदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति ओघं  
॥ १२९ ॥

और क्षपक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२८ ॥

ओघराशिमेंसे खीवेदी और नपुंसकवेदी राशिको कम कर देने पर जो लब्ध रहे उतना पुरुषवेदियोंका प्रमाण है ।

शंका—इस सासादनसम्यग्दष्टि आदि पुरुषवेदीराशिको ओघपना कैसे बन सकता है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ओघके समानको भी ओघ कहते हैं, इसलिये उस सासादनसम्यग्दष्टि आदि पुरुषवेदीराशिके ओघपना सिद्ध हो जाता है ।

अब पुरुषवेदियोंके अवहारकालको कहते हैं—ओघ असंयतसम्यग्दष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दष्टियोंके अवहारकालमें मिला देने पर पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर पुरुषवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । ओघ प्रमत्तसंयत आदि राशियोंमेंसे उन्हींके संख्यातवें भागभूत खीवेदी और नपुंसकवेदी राशिके प्रमाणको घटा देने पर पुरुषवेदी प्रमत्तसंयत आदि जीव होते हैं ।

नपुंसकवेदियोंमें मिथ्यादष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १२९ ॥

१ नपुंसकवेदा मिथ्यादष्टयोऽनन्तानन्ताः । × नपुंसकवेदाश्च सासादनसम्यग्दष्टयादयः संयतासंयतान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. तैर्हि विहीण सर्वदो रासी संदाणं परिमाणं ॥ गो. जी. २७९.

णवुंसयवेदमिच्छाद्विणो अणंतचणेण ओघमिच्छाद्विहीहि समाणा । सासणादओ पलिदोवमस्स असंखेज्जिभागचणेण ओघगुणपडिवण्णेहि समाणा चि ओघचमेदेसि जुज्जे । एत्थ अवहारकालपत्ती बुच्चदे । तं जहः— इत्थि-पुरिसवेदसगुणपडिवण्णे अवगदवेदजीवे च णवुंसयवेदमिच्छाद्विहिरासिभजिदमेदेसि वगं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पभिखत्ते धुवरासी होदि । एदेण सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे णवुंसयवेदमिच्छाद्विहिरासी होदि । इत्थिवेदअसंजदसम्माद्विअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जिभागेण गुणिदे णवुंसयवेद-असंजदसम्माद्विअवहारकालो होदि । तस्मिह आवलियाए असंखेज्जिभागेण गुणिदे सम्मामिच्छाद्विअवहारकालो होदि । तस्मिह संखेज्जिवेहि गुणिदे सासणसम्माद्विअवहार-कालो होदि । तस्मिह आवलियाए असंखेज्जिभागेण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि ।

पमत्तसंजदपहुडि जाव अणियट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा  
स्वा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १३० ॥

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तत्वकी अपेक्षा ओघमिथ्यादृष्टियोंके समान हैं और नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीव पक्ष्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघ गुणस्थानप्रतिपक्षोंके समान हैं, इसलिये नपुंसकवेदी इन राशियोंके ओघपना बन जाता है । अब इन नपुंसकवेदियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको कहते हैं । वह इसप्रकार है— गुणस्थान-प्रतिपक्ष स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीव राशिकी तथा अपगतवेदी जीवराशिकी तथा नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित इन्हीं स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और अपगतवेदी राशिके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है । इससे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका अवहार-काल होता है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिवादरसांपरायिकप्रविष्ट उपशामक और क्षपक गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १३० ॥

इत्थिवेदपमत्तादिरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्तो णवुंसयवेदपमत्तादिरासी होदि । कुदो ? इदुपागगिसमाणेण णवुंसयवेदोदयेण सणिदाणेण<sup>१</sup> पउरं सम्मत्त-संजमादीणमुवलंभा-भावादे । ओघपमाणं ण पावेंति चि जाणावणडुं सुत्ते संखेज्जणिहेसो कओ । णवुंसयवेद-उवसामगा पंच ५, खवगा दस १० । इत्थिवेद-णवुंसयवेदे पमत्ता अपमत्ता च एत्ति या चेव होंति चि संपहि उवएसो णत्थि ।

अपगदवेदएसु तिण्हं उवसामगा<sup>२</sup> केवडिया, पवेसेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्खसेण चउवण्णं<sup>३</sup> ॥ १३१ ॥

एत्थ पुरदो भण्णमाणअवगदवेदजीवसंचयपदुप्पायणसुत्तेणेव पज्जत्तं किमणेण अवगदवेदपवेसपरुवणासुत्तेणेत्ति ? ण एस दोसो, उवसमसेटिपवेसणतुल्लो अवगयवेदपज्जाय-पवेसो चि जाणावणफलत्तादे । तिण्हमिदि णेदं छट्ठीवहुवयणं किंतु पटमावहुवयणमिदि घेत्तव्वं, छट्ठविहत्तिउप्पत्तिणिमित्ताभावादे । कथमुवसंतकसायस्स उवसामगवएसो ? ण,

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत आदि राशिके संख्यातवें भागमात्र नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयत आदि जीवराशि होती है, क्योंकि, इष्टपाककी अधिक समान नपुंसकवेदके उदयसे अतिक्रामामिलावसे युक्त होनेके कारण प्रचुरतासे सम्यक्त्व और संयमादि परिणामोंका उपलब्ध नहीं पाया जाता है । प्रमत्तसंयत आदि नपुंसकवेदी जीवराशि ओघप्रमाणको नहीं प्राप्त होती है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें संख्यात पदका निर्देश किया है । नपुंसकवेदी उपशामक पाँच और श्लेषक दश होते हैं । स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव इतने ही होते हैं, इसप्रकार इस समय उपदेश नहीं पाया जाता है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव कितने हैं ? प्रवेशसे एक, दो या तीन, और उत्कृष्टरूपसे चौबिन हैं ॥ १३१ ॥

शंका—यहां आगे कहा जानेवाला अपगतवेदी जीवोंके संचयका प्ररूपक सूत्र ही पर्याप्त है, फिर अपगतवेदी जीवोंके प्रवेशके प्ररूपण करनेवाले इस सूत्रका क्या प्रयोजन है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उपशामश्रेणीमें प्रवेश करनेके समान ही अपगतवेद पर्यायमें प्रवेश होता है, इस बातका ज्ञान कराना इस सूत्रका फल है ।

सूत्रमें आया हुआ ' तिण्हं ' पद षष्ठी विभक्तिका बहुवचन नहीं है, किन्तु प्रथमा विभक्तिका बहुवचन है, यहाँ ऐसा अर्थ लेना चाहिये, क्योंकि, यहाँ पर षष्ठी विभक्तिकी उत्पत्तिका कोई निमित्त नहीं पाया जाता है ।

<sup>१</sup> प्रतिपु ' सणिदाणेण ' इति पाठः ।

<sup>२</sup> प्रतिपु ' उवसामागेण ' इति पाठः ।

<sup>३</sup> अपगतवेदा अनित्यसिद्धादयोऽयोगकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ६.

द्वन्द्वद्विगणयं पडुच्च उवसंतकसायस्स वि उवसामगववएसं पडि विरोहाभावादो । एत्थ पवेसविधी उवसमसेटिपवेसेणेण तुल्ला । एदेण खवगअवगदवेदपवेसो वि खवगसेटि-पवेसेण तुल्लो चि जाणाविदं । कुदो ? खवगअवगदवेदपवेसं पडि पुघ सुत्तारंभाभावादो ।

**अद्वं पडुच्च संखेज्जा ॥ १३२ ॥**

एत्थ संखेज्जा चि ण भणिय ओघमिदि वत्तव्वं ? ण, अवलवियपज्जयत्तादो । सेसं सुगमं ।

**तिणिण्ण खा अजोगिकेवली ओघं ॥ १३३ ॥**

ओघादो एदेसिं पमाणं पडि विसेसाभावा ओघत्तं जुज्जेद ।

**शंका—** उपशान्तकषाय जीवको उपशामक संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

**समाधान—** नहीं, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयकी अपेक्षा उपशान्तकषाय जीवके भी उपशामक इस संज्ञाके प्रति कोई विरोध नहीं आता है ।

यहां अपगतवेदस्थानमें प्रवेशविधि उपशमश्रेणीसंबन्धी प्रवेशविधिके समान है । इसी कथनसे क्षपक अपगतवेदियोंका प्रवेश भी क्षपकश्रेणीसंबन्धी प्रवेशके समान है, इसका ज्ञान करा दिया, क्योंकि, क्षपक अपगतवेदियोंके प्रवेशके प्रति पृथक् रूपसे सूत्रका आरंभ नहीं पाया जाता है ।

**विशेषार्थ—** जिसप्रकार उपशमश्रेणीके त्रैलोक्य गुणस्थानमें सामान्यसे जघन्य एक और उत्कृष्ट चौवन जीव प्रवेश करते हैं, और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे लेकर सोलह आदि जीवतक प्रवेश करते हैं; तथा क्षपकश्रेणीमें सामान्यसे जघन्य एक और उत्कृष्ट एकलौ आठ जीव प्रवेश करते हैं, और विशेषरूपसे पहले आदि समयमें एक जीवसे लेकर बत्तीस आदि जीव प्रवेश करते हैं; वही नियम यहां अपगतवेदियोंके लिये भी प्रवेशकी अपेक्षा समझना चाहिये ।

कालकी अपेक्षा अपगतवेदी उपशामक संख्यात हैं ॥ १३२ ॥

**शंका—** इस सूत्रमें 'संख्यात हैं' इसप्रकार न कहकर 'ओघप्ररूपणके समान हैं' ऐसा कहना चाहिये ?

**समाधान—** नहीं, क्योंकि, यहां पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लिया है । शेष कथन सुगम है ।

अपगतवेदियोंमें तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक और अयोगिकेवली जीव ओघ-प्ररूपणके समान हैं ॥ १३३ ॥

ओघसे इन तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक और अयोगिकेवलियोंके प्रमाणके प्रति कोई विशेषता नहीं है, इसलिये ओघपना बन जाता है ।



## सजोगिकेवली ओघं ॥ १३४ ॥

गदत्थमेदं सुत्तं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा णत्तुंसयवेदमिच्छा-  
इट्ठिणो भवन्ति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अवगदवेदा हवन्ति । सेसं संखेज्जखंडे कए  
बहुखंडा इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिणो हन्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पुरिसवेदमिच्छा-  
इट्ठिणो हन्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सव्वेसिमसंजदसम्माइट्ठिणो हन्ति । सेसमोघं ।

अप्पावहुगं ति विहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । इत्थिवेद-पुरिसवेदाणं  
सत्थाणं देवमिच्छाइट्ठिणं भणो । सासणादि जाव संजदासंजदाणं सत्थाणमोघं । णत्तुंसयवेद-  
मिच्छाइट्ठिसत्थाणं णत्थि । सासणादीणं सत्थाणमोघं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा इत्थिवेदुवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्प-  
मत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । अतंसजदसम्माइट्ठिअवहारकालो  
असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो

अपगतवेदियोंमें सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १३४ ॥

इस सूत्रका अर्थ भी वही है जैसा ऊपर कह आये हैं ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग  
नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अपगतवेदी  
जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं ।  
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक  
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सर्व असेयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष कथन  
ओघप्ररूपणाके समान है ।

स्वस्थान आदिकके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व  
प्रकृत है । स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान  
अल्पबहुत्वके समान है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयततक स्वस्थान  
अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान  
अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, सासादनसम्यग्दृष्टि आदि नपुंसकवेदियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व  
ओघ स्वस्थानके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है—स्त्रीवेदी उपशमक सबसे स्तोक हैं । स्त्रीवेदी  
क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशमकोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी  
क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे  
संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी असेयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतोंसे  
असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असेयतसम्यग्दृष्टियोंके  
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी



संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दच्चमसंखेज्जगुणं । एवं पडिलोमेण पेयच्चं जाव असंजदसम्माइट्ठिदच्चं चि । तदो पल्लिदोवममसंखेज्जगुणं । तदो इत्थिवेदमिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंमद्धई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । दच्चमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । एवं पुरिसवेदस्स वि वत्तच्चं । एवं चेव णवुंसयवेदस्स । णवरि पल्लिदोवमादो उवरि मिच्छाइड्डी अणतगुणा चि वत्तच्चं ।

सच्चपरत्थाणे पयदं । सच्चत्थोवा णवुंसयवेदुवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । इत्थिवेदुवसामगा तच्चिया चेव । तेसिं खवगा संखेज्जगुणा । पुरिसवेदुवसामगा संखेज्जगुणा । तेसिं खवगा संखेज्जगुणा । णवुंसयवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तम्हि चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । इत्थिवेदे अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तम्हि चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । पुरिसवेद अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तम्हि

सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं संयतासंयतोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसप्रकार प्रतिलोमरूपसे स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्य आने तक ले जाना चाहिये । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे पल्योपम असंख्यातगुणा है । पल्योपमसे स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे स्त्रीवेदियोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदियोंकी विष्कंभसूचीसे जगध्रेणी असंख्यातगुणी है । जगध्रेणीसे स्त्रीवेदियोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । द्रव्यसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पुरुषवेदका भी परस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये । तथा इसीप्रकार नपुंसकवेदका भी । परंतु इतनी विशेषता है कि नपुंसकवेदियोंका कहते समय पल्योपमके ऊपर मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणे हैं, यह कहना चाहिये ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— नपुंसकवेदी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं । नपुंसकवेदी क्षपक जीव संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी उपशामक जीव नपुंसकवेदी क्षपकोंका जितना प्रमाण है उसने ही हैं । स्त्रीवेदी क्षपक जीव स्त्रीवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी उपशामक जीव स्त्रीवेदी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी क्षपक जीव पुरुषवेदी उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेदमें अप्रमत्तसंयत जीव पुरुषवेदी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव नपुंसकवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीव नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । स्त्रीवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलियोंसे संख्यात-

चेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । इत्थिवेदअसंजदसम्माइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । णवुंसयवेदअसंजदसम्माइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । एवं पडिलोमेण पेदव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो इत्थिवेदमिच्छाइडिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । पुरिसवेदमिच्छाइडिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभस्सु असंखेज्जगुणा । इत्थिवेदमिच्छाइडिविक्खंभस्सु संखेज्जगुणा । सेठी असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदमिच्छाइडि-

गुणे हैं । पुरुषवेदमें ही प्रमत्तसंयत जीव पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । पुरुषवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल पुरुषवेदी संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका अवहारकाल नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं नपुंसकवेदी संयतासंयतोंका द्रव्य अपने अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार प्रतिलोमक्रमसे पत्न्योपमतक ले जाना चाहिये । पत्न्योपमसे स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभस्वी उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभस्वी पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभस्वीसे संख्यातगुणी है । जगश्रेणी स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि विष्कंभस्वीसे असंख्यातगुणी है ।

द्वयमसंखेज्जगुणं । इत्थिवेदमिच्छाद्विद्वयं संखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । अवगतवेदा अणंतगुणा । णवुंसयवेदमिच्छाद्विद्वी अणंतगुणा । वेदगुणपडि-  
वण्णगुणगारो णं णव्वदि चि के वि आहिरिया भणंति । तेसिममिप्पाएण सव्वपरत्थाणं  
वुच्चदे । सव्वत्थोवा अप्पमत्तसंजदा तिवेदगदा । ( पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदा )  
तिवेदा विसेसाहिया । तिवेदअसंजदसम्माद्विद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं णेदव्वं  
जाव पलिदोवमं ति । उवरि इत्थिवेदमिच्छाद्विद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तदुवरि पुव्वं  
व वत्तव्वं ।

एवं वेदमगणा समत्ता ।

**कसायाणुवादेण क्रोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु  
मिच्छाद्विद्विद्विद्वि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ॥ १३५ ॥**

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा— अणंतत्तणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगज्जगणसे असंख्यातगुणा है । स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य  
पुरुषवेद मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे संख्यातगुणा है । जगप्रतर स्त्रीवेद मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे असंख्यात  
गुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । अपगतवेदी जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं -  
नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव अपगतवेदियोंसे अनन्तगुणे हैं । वेद गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके  
अवहारकालका गुणकार ज्ञात नहीं है, ऐसा कितने ही आचार्योंका कथन है । आगे उन्हींके  
अभिप्रायानुसार सर्व परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । तीनों वेदोंसे युक्त अप्रमत्तसंयत  
जीव सबसे स्तोक हैं । तीनों वेदोंसे युक्त प्रमत्तसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । तीन  
वेदवाले संयत जीव विशेष अधिक हैं । त्रिवेदी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्या  
तगुणा है । इसीप्रकार पत्योपमत्तक ले जाना चाहिये । इससे ऊपर स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टियोंका  
अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे ऊपर पहलेके समान कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई ।

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभ-  
कषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक  
गुणस्थानमें जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १३५ ॥

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है— अनन्तत्वकी अपेक्षा मिथ्यादृष्टि जीव  
और पत्योपमत्तके असंख्यातवै भागत्वकी अपेक्षा गुणस्थानप्रतिपन्न जीव ओघ मिथ्यादृष्टि और

१ प्रतिपु ' -गुणगारेण ' इति पाठः ।

२ कषायानुवादेन क्रोधमानमायासु मिथ्यादृष्ट्यादयः संयतासंयतान्ताः सामान्योत्तसंख्याः । लोभकषायण-  
मुक्त एव क्रमः । स. सि. १, c.

भागत्तणेण च मिच्छाइट्ठी गुणपडिवण्णा च ओघमिच्छाइट्ठि-गुणपडिवण्णेहि समाणा त्ति कट्टु सुत्ते एदेसिं परूवणा ओघमिदि बुत्ता । पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे अत्थि विससे । तं कथं ? चदुकसायमिच्छाइट्ठीसु तिरिक्खरासी पहाणो, सेसगदिरासिस्स तदर्णतभागत्तादो । तत्थ वि चदुकसायमिच्छाइट्ठिरासी ण<sup>१</sup> अण्णेण्णेण समाणो । कुदो ? तदद्धानं सारिच्छाभावा । तं जहा—

तिरिक्ख-मणुसेसु सव्वत्थोवा माणद्धा । कोधद्धा विससाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तेण । मायद्धा विससाहिया । केत्तियमेत्तो विससे ? पुवं परूविदे । लोभद्धा विससाहिया । केत्तियमेत्तो विससे ? आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तो । ण च अद्दासु असरिसासु तत्थ ट्ठिदरासीणं समाणणिग्गम-पवेसाणं संताणं पडि गंगाप-वाहो व्व अवट्ठिदाणं सरिसत्तं जुज्जेद । तदो चउण्हमद्धानं समासं काऊण चदुकसाइमिच्छा-इट्ठिरासिभिह भागे हिदे लद्धं चउप्पडिरासिं करिय माणादीणमद्दाहि पडिवाडीए गुणिदे सग-सगरासीओ भवंति<sup>२</sup> । एदमट्ठपदं काऊण चदुकसाइमिच्छाइट्ठिस्स रासिस्स अवहार-

गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके समान हैं, ऐसा समझकर सूत्रमें क्रोधादि कषाययुक्त ओघ मिथ्यादृष्टि और ओघ गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान है, यह कहा । परंतु पर्या-याधिक नयका अवलम्बन करने पर विशेषता है ही ।

शंका—यह विशेषता कैसे है ?

समाधान—चारों कषायवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंमें तिर्यचराशि प्रधान है, क्योंकि, शेष तीन गतिसंबन्धी जीवराशि तिर्यचराशिके अनन्तवें भाग है । उसमें भी चारों कषायवाली मिथ्यादृष्टिराशि परस्पर समान नहीं है, क्योंकि, चारों कषायोंका काल समान नहीं है । उसका स्पष्टीकरण इसप्रकार है—तिर्यच और मनुष्योंमें मानका काल सबसे स्तोक है । क्रोधका काल मानकालसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागमात्र विशेषसे अधिक है । मायाका काल क्रोधके कालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष है ? पहले प्ररूपण कर दिया है, अर्थात् आवलीका असंख्यातवां भाग विशेष है । लोभका काल मायाके कालसे विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष है ? आवलीका असंख्यातवां भागप्रमाण विशेष अधिक है । इसप्रकार कालोंके विचदश रहने पर जिनका निर्गम और प्रवेश समान है और संतानकी अपेक्षा गंगानदीके प्रवाहके समान जो अवस्थित हैं, ऐसी वहां स्थित उन राशियोंकी सदृशता नहीं बन सकती है । तदनन्तर चारों कषायोंके कालोंका योग करके उसका चारों कषायवाली मिथ्यादृष्टिराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके मानादिकके कालोंसे परिपाटीक्रमसे

१ प्रतिषु 'ण' इति पाठः ।

२ णरतिरियलोभमायाक्रोहो माणो विदियादिब्ब । आवलिअसंखमज्जा सगकालं व समावेज्ज ॥ गो. जी. २९८.

कालो बुच्चदे—

चउकसाइगुणपडिवण्णपमाणमकसाइपमाणं च चदुकसाइमिच्छाइट्टिरासिभजिद-  
तव्वगं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते चदुकसाइधुवरासी होदि । तं चदुहि गुणिदे कसाय-  
रासिचदुभभागस्स भागहारो होदि । पुणो तम्मि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं  
तम्मि चेव पक्खित्ते माणकसाइधुवरासी होदि । पुव्वभागहारमव्वहियं काऊण कसायचउ-  
व्वभागभागहारसिम्मि भागे हिदे लद्धं तम्मि चेव पक्खित्ते कोधकसाइधुवरासी होदि । पुणो  
कोधकसाइभागहारमव्वहियं काऊण पुव्विहलधुवरासिम्मि भागे हिदे लद्धं तम्मि चेव पक्खित्ते  
मायकसाइधुवरासी होदि । कसायचउव्वभागधुवरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय  
लद्धं तम्मि चेव अवणिदे लोभकसाइधुवरासी होदि । एदेहि अवहारकालेहि सव्वजीव-  
रासिस्सुवरिमव्वगे भागे हिदे सग-सगरासीओ आगच्छंति । तिण्हं कसायमिच्छाइट्टीणं  
पमाणं सव्वजीवरासिस्स चउव्वभागो देख्खणो । लोभकसाइमिच्छाइट्टिपमाणं चदुव्वभागो  
सादिरेगो । गुणपडिवण्णेसु देवरासी पहाणो । कुदो ? सेसगदिरासिस्स तदसंखेज्जदि-

गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इस अर्थपदको समझकर बार कषायवाली  
मिथ्यादष्टिराशिका अवहारकाल कहते हैं—

गुणस्थानप्रतिपन्न चारों कषायवाले जीवोंके प्रमाणको और कषाय रहित जीवोंके  
प्रमाणको तथा चारों कषायवाले मिथ्यादष्टियोंके प्रमाणसे भक्त पूर्वोक्त दोनों राशियोंके  
वर्गको सर्व जीवराशिके ऊपर प्रक्षिप्त करने पर चारों कषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती  
है । उसे चारसे गुणित करने पर कषायराशिके चौथे भागका भागहार होता है । पुनः इसे  
आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर  
मानकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । पुनः इस भागहारको अभ्यधिक करके उसका  
कषायराशिके चौथे भागकी भागहारराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी भागहार-  
राशिमें मिला देने पर क्रोधकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । पुनः क्रोधकषायके  
भागहारको अभ्यधिक करके उसका पूर्वोक्त ध्रुवराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे  
उसी ध्रुवराशिमें मिला देने पर मायाकषायवाले जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । कषायराशिके  
चौथे भागकी ध्रुवराशिको (भागहारको) आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध  
आवे उसे उसी ध्रुवराशिमेंसे निकाल लेने पर लोभकषाय जीवोंकी ध्रुवराशि होती है । इन  
अवहारकालोंसे सर्व जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती  
हैं । क्रोध, मान, और माया, इन तीनों कषायवाले मिथ्यादष्टियोंका पृथक् पृथक् प्रमाण सर्व  
जीवराशिका कुछ कम चौथा भाग है । लोभकषायवाले मिथ्यादष्टि जीवोंका प्रमाण कुछ  
अधिक चौथा भाग है । गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंमें देवराशि प्रधान है, क्योंकि, दोष तीन  
गतियोंकी गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशि गुणस्थानप्रतिपन्न देवराशिके असंख्यातवें भाग है ।

भागत्तादो । देवेसु चउकसायगुणपडिवण्णरासी ण समाणो तदद्धानाणं समाणत्ताभावादो । तं जहा—देवेसु सच्चत्थोवा कोधद्धा । माणद्धा संखेज्जगुणा । मायद्धा संखेज्जगुणा । लोभद्धा संखेज्जगुणा । णेरईएसु सच्चत्थोवा लोभद्धा । मायद्धा संखेज्जगुणा । माणद्धा संखेज्जगुणा । कोधद्धा संखेज्जगुणा । एत्थ देवगदिअद्धानं समासं काऊण ओघअसंजदरासिं खंडिय चउप्पडिरासिं काऊण परिवाडीए कोधादिअद्दाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवन्ति । एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणं पि कायच्चं । संजदासंजदाणं पुण तिरिखगइअद्दासमासं काऊण ओघसंजदासंजदरासिं खंडिय चदुप्पडिरासिं करिय कमेण कोधादिअद्दाहि गुणिदे सग-सगरासीओ भवन्ति । एदेण वीयपदेण एदेसिमवहार-कालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा—ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं संखेज्जरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चैव पबिखत्ते लोभकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्ज-रूवेहि गुणिदे मायकसाइअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि

देवोंमें चारों कषायवाली गुणस्थानप्रतिपक्ष जीवराशि समान नहीं है, क्योंकि, उन चारों कषायोंके काल समान नहीं हैं । आगे इसी विषयका स्पष्टीकरण करते हैं—देवोंमें क्रोधका काल सषसे स्तोका है । मानका काल उससे संख्यातगुणा है । मायाका काल मानके कालसे संख्यातगुणा है । लोभका काल मायाके कालसे संख्यातगुणा है । नारकियोंमें लोभका काल सषसे स्तोका है । मायाका काल लोभके कालसे संख्यातगुणा है । मानका काल मायाके कालसे संख्यातगुणा है । क्रोधका काल मानके कालसे संख्यातगुणा है । यहाँ देवगतिके कषायसंबन्धी कालका योग करके उससे देवोंकी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके उन्हें परिपाटीक्रमसे क्रोधादिके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशियोंका भी करना चाहिये । संयतासंयतोंका प्रमाण लाते समय तो तिर्यचगतिसंबन्धी कषायोंके कालका योग करके और उससे ओघसंयतासंयत राशिको खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियां करके क्रमसे क्रोधादिके कालोंसे गुणित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं । इस बीजपदके अनुसार इन पूर्वोक्त राशियोंके अवहारकालकी उत्पत्तिको बतलाते हैं । वह इसप्रकार है—ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको संख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर लोभकषायवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस लोभ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मायाकषायवाले असंयत-

१ पुह पुह कसायकालो णिरये अंतोपुहुपपरिमाणो । कोहादी संखगुणा देवेसु य कोहपहुदीदो ॥ सच्च-समासेणवहिइसगसगरासी पुणो वि संगुणिदे । सगसगगुणगरेहिं य सगसगरासीण परिमाणं ॥ गो. जी. २९६, २९७.

२ प्रतिपु 'कोभाओ' इति पाठः ।

गुणिदे माणकसाइअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जेरूवेहि गुणिदे कोधकसाइअसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो होदि । एवं सम्मासिच्छाइड्डि-सासणसम्माइड्डिणं पि वत्तव्वं । ओघसंजदासंजदअवहारकालं चटुहि गुणिय चटुप्पडिरासिं काऊण तथेग-रासिमसंखेज्जेहि रूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खिचे माणकसाइअसंजदासंजदअवहार-कालो होदि । पुणो पुव्वभागहारमम्भहियं काऊण चटुगुणियभागहारं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खिचे कोधकसाइअसंजदासंजदअवहारकालो होदि । पुणो पुव्वभागहारमम्भहियं काऊण चटुगुणिदअवहारकालं खंडिय लद्धं तम्हि चेव पक्खिचे मायकसाइअसंजदासंजद-अवहारकालो होदि । चटुगुणभागहारमसंखेज्जेरूवेहि खंडिय लद्धं तम्हि चेव अविणेद लोभकसाइअसंजदासंजदअवहारकालो होदि ।

प्रमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्ठि ति दव्वपमाणेण केवडिया,  
संखेज्जा' ॥ १३६ ॥

ओघमिदि अभणिय संखेज्जा इदि किमट्ठं वुच्चदे ? ण एस दोसो, कुदो ? ओघ-

सम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इस मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर मानकषायवाले असंयतसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इस मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टिओंका अवहारकाल होता है । इसीप्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टिओंका भी कथन करना चाहिये । ओघ संयतासंयतोंके अवहारकालको बारसे गुणित करके जो लब्ध आवे उसकी बार प्रतिराशियां करके उनमेंसे एक राशिको असंख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी राशिमें मिला देने पर मानकषायवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । पुनः पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित भाग-हारको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर क्रोधकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । पुनः पूर्व भागहारको अभ्यधिक करके और उससे चतुर्गुणित अवहार-कालको खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर मायाकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । चतुर्गुणित भागहारको असंख्यातसे खंडित करके जो लब्ध आवे उसे उसी चतुर्गुणित भागहारमेंसे घटा देने पर लोभकषायी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक चारों कषायवाले जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १३६ ॥

श्रुंका—सूत्रमें ' ओघ ' पेसा न बह कर ' संखेज्जा ' इसप्रकार किसलिये कहा है ?



पमत्तादिरासिं चदुण्हं कसायाणं पडिभागेण चउविहा विहत्ते तत्थ ओघरासिपमाणाणुव-  
लंभादो । कधमेत्थ विहज्जदे ? उच्चदे— चउण्हं कसायाणमद्वासमासं करिय चदुप्पडिरासिं  
अप्पप्पणो अद्वाहि ओवड्डिय लद्धसंखेज्जरूवेहि इच्छिदरासिं हि भागे हिदे सग-सगरासीओ  
भवन्ति । एत्थ चोदगो भणदि— पमत्तादीणं चदुकसायरासीओ समाणा आवलियाए  
असंखेज्जादिभागमेत्तद्वाविसेसाओ चि । आवलिअसंखेज्जादिभागमेत्तद्वाविसेसत्ते वि ण  
रासीणं विसेसाहियत्तं विरुज्जदे, पवेसांतराणं संखाणियमाभावदो । तेणेत्थ तेरासियं ण  
कीरदे ? ण, पमत्तादिसु माणकसायरासी थेवो । कोधकसायरासी विसेसाहिओ । माय-  
कसायरासी विसेसाहिओ । लोभकसायरासी विसेसाहिओ ।

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा ख्वा  
मूलोधं ॥ १३७ ॥

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, ओघ प्रमत्तसंयत आदि राशिको चार  
कषायोंके भागद्वारे भाजित करने पर वहाँ ओघराशिका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता है ।

शंका—इन राशियोंका यह विभाग किसप्रकार होता है ?

समाधान—चारों कषायोंके कालोंका योग करके और उसकी चार प्रतिराशियां  
करके अपने अपने कालसे अपघातित करके जो संख्यात लब्ध आधे उससे इच्छित राशिके  
भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां होती हैं ।

शंका—यहाँ पर शंकाकार कहता है, एक तो प्रमत्तसंयत आदिमें चारों कषायराशियां  
समान हैं, क्योंकि, यहाँ पर आवलीके असंख्यातर्धे भागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं है ?  
दूसरे, आवलीके असंख्यातर्धे भागप्रमाण कालकी विशेषता नहीं होने पर भी राशियोंकी विशेषता-  
धिकता विरोधको प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि प्रवेशान्तर करनेवाले जीवोंके संख्याका कोई  
नियम नहीं पाया जाता है । इसलिये यहाँ पर त्रैराशिक नहीं करना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानोंमें मानकषाय जीवराशि  
सबसे स्तोक है । क्रोधकषाय जीवराशि मानकषाय राशिसे विशेष अधिक है । मायाकषाय  
जीवराशि क्रोधकषाय राशिसे विशेष अधिक है । लोभकषाय जीवराशि मायाकषाय जीवराशिसे  
विशेष अधिक है ।

इतना विशेष है कि लोभकषायी जीवोंमें सूक्ष्मसांपरायिक शुद्धिसंयत उपशमक  
और क्षपक जीव मूलोध पररूपणाके समान हैं ॥ १३७ ॥

१ आ प्रती '—मेत्तद्वाए' इति पाठः ।

२ अर्थ तु विशेषः, सूक्ष्मसांपरायसंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.



खवमोवसामगसुद्धुमसांपराइएसु सुद्धुमलोभकसायवदिरित्तितांपरायाभावादो ओघत्तं ण विरुज्झदे ।

**अकसाईसु उवसंतकसायवीदरागछदुमत्था ओघं ॥ १३८॥**

एत्थ भावकसायाभावं पेक्खिऊण उवसंतकसाया अकसाइणो ण द्वक्कसायाभावं पडि, उदओदीरणोक्कट्टणुकट्टण-परपयडिसंकमादिविरिहददव्वकम्मस्स तत्थुवलंभादो । चउ-व्विहदव्वकम्मभेएण चउव्विहत्तो मूलो उवसंतकसायरासी कथं पादेक्कं मूलोघपमाणं पावदे ? ण एस दोसो, कुदो ? वुच्चदे- ण ताव दव्वकसायविसेसणमेत्थ संभवइ, तेण अहियाराभावा । ण भावकसायविसेसणं पि संभवइ, तस्स तत्थाभावादो । तदो उवसंतकसायरासी ण चदुविहा विहज्जेदो तो चेव मूलोघत्तं पि तस्स ण विरुज्झदि चि ।

**खीणकसायवीदरागछदुमत्था अजोगिकेवली ओघं ॥ १३९ ॥**

क्षपक और उपशामक सूक्ष्म सांपरायिक जीवोंमें सूक्ष्म लोभ कषायसे व्यतिरिक्त कषाय नहीं पाई जानेके कारण सूक्ष्म लोभियोंके प्रमाणको ओघत्वका प्रतिपादन करना विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

कषायरहित जीवोंमें उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ जीव ओघप्ररूपणके समान हैं ॥ १३८ ॥

यहां भाव कषायका अभाव देखकर उपशान्तकषाय जीवोंको अकषायी कहा है, द्रव्य कषायके अभावकी अपेक्षासे नहीं, क्योंकि, उदय, उदीरणा, अपकर्षण, उत्कर्षण और परप्रकृतिसंक्रमण आदिसे रहित द्रव्य कर्म वहां उपशान्तकषाय गुणस्थानमें पाया जाता है ।

श्रीका—द्रव्य कर्म चार प्रकारका होनेसे चार भेदोंमें विभक्त मूल उपशान्तकषायराशि प्रत्येक मूलोघ प्रमाणको कैसे प्राप्त होती है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है । दोष क्यों नहीं है, आगे इसीका कारण कहते हैं—द्रव्यकषायरूप विशेषण तो यहां संभव नहीं है, क्योंकि, उसका यहां अधिकार नहीं है । भावकषाय विशेषण भी संभव नहीं है, क्योंकि, भावकषाय वहां पाया नहीं जाता है । अतएव उपशान्तकषाय जीवराशि चार भेदोंमें विभक्त नहीं होती है और इसलिये उसके मूलोघपना भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ जीव और अजोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणके समान हैं ॥ १३९ ॥

एत्थ समुच्चयं च-सद्देवादाणं कायव्वं ? ण, च-सद्देण विणा वि तदद्देवलद्धीदो । एदेसिं दोहं गुणट्ठाणाणमेगजोगकरणं किमट्ठमिदि चे, ण एस दोसो, द्व्यपमाणं पडि एदेसिं गुणट्ठाणाणं पच्चासत्तिं पेक्खिय एगच्चविरोहाभावादो । ण च ओषत्तं विरुज्जदे, णिव्विसेसणादो ।

### सजोगिकेवली ओघं ॥ १४० ॥

सजोगि अजोगिकेवलीणमेगमेव सुत्तं किण्ण कीरदे, केवलित्तं पडि पच्चासत्ति-संभवादो ? ण, दोहं पमाणगदपहाणपच्चासत्तीए अभावादो । कथं पमाणस्त पधानत्तं ? तेणेत्य अहियारादो । सेसं सुगमं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए तत्थ बहुखंडा चउकसाय-मिच्छाइट्ठिणो भवंति । एगखंडमकसाइणो गुणपडिवण्णा च । पुणो चदुकसायमिच्छाइट्ठि-रासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय तत्थेगखंडं पुघ डुविय सेसबहुखंडे चचारि

शंका—इस सूत्रमें समुच्चयार्थ च शब्दका ग्रहण करना चाहिये ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, च शब्दके बिना भी समुच्चयरूप अर्थकी उपलब्धि हो जाती है ।

शंका—इन दोनों गुणस्थानोंका एक योग किसलिये किया है ?

समाधान—यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, द्रव्यप्रमाणके प्रति दोनों गुणस्थानोंकी प्रत्यासत्ति देखकर एक योग करनेमें कोई विरोध नहीं आता है ।

ओघत्व भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, ये दोनों गुणस्थान निर्विशेषण हैं ।

सयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणार्थ समान हैं ॥ १४० ॥

शंका—सयोगिकेवली और अयोगिकेवली, इन दोनोंका एक ही सूत्र क्यों नहीं बनाया है, क्योंकि, केवलित्वके प्रति इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, इन दोनोंकी प्रमाणगत प्रधान प्रत्यासत्ति नहीं पाई जाती है, इसलिये इन दोनोंका एक सूत्र नहीं किया ।

शंका—प्रमाणको प्रधानता किस कारणसे है ?

समाधान—क्योंकि, यहाँ उसका अधिकार है । शेष कथन सुगम है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग चार कषाय मिथ्यादृष्टि जीव हैं और एक भागप्रमाण अकषायी और गुणस्थानप्रतिपक्ष जीव हैं । पुनः चार कषाय मिथ्यादृष्टि राशिको आबलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको पृथक् करके शेष बहुभागके चार समान पुंज करके स्थापित करना

१ अ प्रती 'णाणात्तविरोहादो भावादो' इति पाठः ।

समपुंजे करिय ढुवेदव्वं । पुणो अवणिदएयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खिचे लोभकसायमिच्छाइट्ठिरासी हेदि । सेसेयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण बहुखंडे विदियपुंजे पक्खिचे मायकसायमिच्छाइट्ठिरासी हेदि । सेसेयखंडमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खिचे कोध-कसाइमिच्छाइट्ठिरासी हेदि । सेसं चउत्थपुंजे पक्खिचे माणकसायमिच्छाइट्ठिरासी हेदि । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अकसाया हेंति । एत्तो उवरि कसायगुणगारेहितो सम्मामिच्छाइट्ठिरासिं पडि सासणसम्माइट्ठिगुणगारो संखेज्जगुणो ति उवएसमवलंबिय भागाभागो वुच्चदे । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी हेदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी हेदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी हेदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायअसंजदसम्माइट्ठिरासी हेदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी हेदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसम्मा-मिच्छाइट्ठिरासी हेदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायसम्मामिच्छाइट्ठिरासी

चाहिये । पुन निकालकर पृथक् रखले हुए एक भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे बहुभाग पहले पुंजमें मिला देने पर लोभकषाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर मायाकषाय मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक भागको चौथे पुंजमें मिला देने पर मानकषाय मिथ्यादृष्टि राशि होती है । सर्व जीवराशिके अनन्त खंडोंमेंसे जो एक खंड प्रमाण अकषायी और गुणस्थानप्रतिपक्ष बतलाये थे उस एक खंडके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अकषाय जीव होते हैं । अब आगे कषायके गुणकारसे सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशिके प्रति सासादन-सम्यग्दृष्टिका गुणकार संख्यातगुणा है । इसप्रकारके उपदेशका अवलम्बन लेकर भागाभागका कथन करते हैं । शेषके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीव-राशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि

होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायसम्माइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा लोभकसायसासणसम्माइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मायकसायसासणसम्माइट्टिरासी होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा माणकसायसासणसम्माइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा कोधकसायसासणसम्माइट्टिरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चउकसायसंजदासंजदरासी होदि । तदो संजदासंजदरासिस्स असंखेज्जदिभागमवणिय सेसं चत्तारि समपुंजे करिय ढुवेदव्वं । पुणो पुव्वमवणिदपयखंडमसंखेज्जखंडं करिय तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खिस्से लोभकसाइसंजदासंजदरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडे करिय बहुखंडे विदियपुंजे पक्खिस्से मायकसाइसंजदासंजदरासी होदि । सेसमसंखेज्जखंडं करिय बहुखंडे तदियपुंजे पक्खिस्से कोधकसाइसंजदासंजदरासी होदि । सेसं चउत्थपुंजे पक्खिस्से माणकसाइसंजदासंजदरासी होदि । सेसं जाणिऊण णेयव्वं ।

अप्पाबहुगं ति विहं सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाणं वचइस्सामो । मिच्छाइड्डीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो मिच्छाइड्धिधुवरासिस्स अधिगत्तादो । असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव संजदासंजदा चि सत्थाणस्स मूलोघमंगो ।

जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग लोभकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मायाकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मानकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग क्रोधकषाय सासादनसम्यग्दृष्टि जीवराशि है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चार कषाय संयतासंयत जीवराशि है । तदनन्तर संयतासंयत जीवराशिके असंख्यातवै भागको घटा कर शेषके चार समान पुंज करके स्थापित कर देना चाहिये । पुनः पहले घटा कर रखके हुए एक खंडके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग प्रथम पुंजमें प्रक्षिप्त करने पर लोभकषाय संयतासंयत जीवराशि होती है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करके उनमेंसे बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर मायाकषायी संयतासंयत जीवराशि होती है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करके बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर क्रोधकषायी संयतासंयत जीवराशि होती है । शेष एक भागको चौथे पुंजमें मिला देने पर मानकषायी संयतासंयत जीवराशि होती है । शेष कथन जानकर ले जाना चाहिये ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान अल्पबहुत्वको बतलाते हैं— मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे मिथ्यादृष्टि ध्रुवराशि अधिक है । असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा कोधकसाइउवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्प-  
मत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइडिअवहारकालो  
असंखेज्जगुणो । एवं पेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । कोधकसाइमिच्छाइट्टिासी अणंतगुणो ।  
एवं माण-माय-लोभाणं पि परत्थाणं वत्तव्वं । अकसाइसु सव्वत्थोवा उवसंतकसाया ।  
खीणकसाया संखेज्जगुणा । अजोगिकेवली तत्तिया चेव । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा ।  
सिद्धा अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा माणकसायउवसामगा । कोधकसायउवसामगा  
विसेसाहिया । मायकसायउवसामगा विसेसाहिया । लोभकसायउवसामगा विसेसाहिया ।  
माणकसाइखवगा विसेसाहिया । कोधकसाइखवगा विसेसाहिया । मायकसाइखवगा विसे-  
साहिया । लोभकसाइखवगा विसेसाहिया । एवं जम्मि गुणट्ठणे चत्तारि कसाया संभवंति  
तमस्सिऊण भणिदं । अणत्थुवसामएहितो खवगा दुगुणा चेव । संसारत्था अकसाया  
संखेज्जगुणा । माणकसायअपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । कोधकसायअपमत्तसंजदा विसे-

परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— कोधकपायी उपशामक जीव सबसे स्तोके हैं ।  
क्रोधकपायी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । क्रोधकपायी अप्रमत्तसंयत जीव  
क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । क्रोधकपायी प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं ।  
क्रोधकपायी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार  
पश्योपमतक ले जाना चाहिये । पश्योपमसे क्रोधकपायी मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण अनन्तगुणा  
है । इसीप्रकार मान, माया और लोभकपायके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना  
चाहिये । कषायरहित जीवोंमें उपशान्तकषाय जीव सबसे स्तोके हैं । क्षीणकषाय जीव  
उपशान्तकषाय जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । अयोगिकेवली जीव उतने ही हैं । सयोगिकेवली  
जीव अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । सिद्ध जीव सयोगियोंसे अनन्तगुणे हैं ।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मानकपायी उपशामक जीव सबसे  
स्तोके हैं । क्रोधकपायी उपशामक जीव मानकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । माया-  
कपायी उपशामक जीव मानकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । लोभकपायी उपशामक जीव  
मायाकपायी उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । मानकपायी क्षपक जीव लोभकपायी  
उपशामकोंसे विशेष अधिक हैं । क्रोधकपायी क्षपक जीव मानकपायी क्षपकोंसे विशेष  
अधिक हैं । मायाकपायी क्षपक जीव क्रोधकपायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं । लोभकपायी  
क्षपक जीव मायाकपायी क्षपकोंसे विशेष अधिक हैं । इसप्रकार जिस गुणस्थानमें चारों  
कषाय संभव हैं उसका आश्रय लेकर कथन किया । अन्यत्र उपशामकोंसे क्षपक देने ही  
होते हैं । कषाय रहित संसारी जीव लोभकपायी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मानकषाय  
अप्रमत्तसंयत जीव संसारी कषाय रहित जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । क्रोधकषाय अप्रमत्तसंयत

साहिया । मायकसायअप्पमत्तसंजदा विसेसाहिया । लोभकसायअप्पमत्तसंजदा विसेसाहिया । माणकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया । कोधकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया । मायकसाय-पमत्तसंजदा विसेसाहिया । लोभकसायपमत्तसंजदा विसेसाहिया । लोभकसायअसंजद-सम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । मायकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्ज-गुणो । माणकसायअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । कोधकसायअसंजदसम्मा-इट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । लोभकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । मायकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । माणकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहार-कालो संखेज्जगुणो । कोधकसायसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । लोभकसाय-सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । मायकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्ज-गुणो । ( माणकसायसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । ) कोधकसायसासणसम्मा-इट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । लोभकसायसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।

[illegible]

मायकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ । कोधकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ । माणकसायसंजदासंजदअवहारकालो विसेसाहिओ । तस्सेव दव्वमसंसेअगुणं । एवं अवहारकालपडिलेमेण णेयव्वं जाव पल्लिदोवमं ति । अकसाई अणंतगुणा । माणकसाइ-मिच्छाइट्ठी अणंतगुणा । कोधकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया । मायकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया । लोभकसाइमिच्छाइट्ठी विसेसाहिया ।

एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

**णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुदअण्णाणीसु मिच्छाइट्ठी सासण-सम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १४१ ॥**

एदस्सत्थो वुच्चदे । तं जहा— ओघमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिरासीहिंतो मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिरासिणो ण एक्केण वि जीवेण ऊणा भवंति, दुवि-ह्णाणविरहिय-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठिणमभावादो । विसंराणाणिणो मिच्छाइट्ठि-सासण-

गुणा है । मायाकषाय संयतासंयतोंका अवहारकाल लोभकषाय संयतासंयत अवहारकालसे विशेष अधिक है । कोधकषाय संयतासंयतोंका अवहारकाल मायाकषाय संयतासंयत अवहारकालसे विशेष अधिक है । मानकषाय संयतासंयत अवहारकाल क्रोध-कषाय संयतासंयत अवहारकालसे विशेष अधिक है । मानकषाय संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यतगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पल्लोपमतक ले जाना चाहिये । पल्लोपमसे कषायरहित जीव अनन्तगुणे हैं । मानकषायी मिथ्यादृष्टि जीव कषायरहित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीव मानकषायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं । मायाकषायी मिथ्यादृष्टि जीव क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं । लोभकषायी मिथ्यादृष्टि जीव मायाकषायी मिथ्यादृष्टियोंसे विशेष अधिक हैं ।

इसप्रकार कषायमार्गणा समाप्त हुई ।

**ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४१ ॥**

इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है— ओघ मिथ्यादृष्टिराशि और ओघ सासा-दनसम्यग्दृष्टि राशिसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव-राशि एक भी जीव प्रमाणसे कम नहीं है, क्योंकि, उक्त दोनों प्रकारके ज्ञानोंसे रहित मिथ्या-दृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव नहीं पाये जाते हैं ।

१ ज्ञानाणुवादेन मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्टयः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. सण्णाणिरासिर्पंच्यपरिहीणो सब्बजीवरासी हु । मदिदुदअण्णाणीणं पत्तेयं होदि परिमाणं ॥ गो. जी. ४६४.



सम्मादिट्ठिणो अत्थि ति ओघमिच्छाइट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिहिंतो मदि-सुदअण्णाणमिच्छा-दिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठिणो ऊणा होंति चि ओघपमाणमेदंति णत्थि ति चे ण, मदि-सुदअण्णाणिविरहिदविभंगणाणीणमणुवलंभादो तदो ओघमिदि सुहु घडदे । एत्थ मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिस्स धुवरासी वुच्चदे । तं जहा—सिद्धतेरसगुणपडिवण्णरासिं मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिरासिभजिदत्तच्चगं च सच्चजीवरासिस्सुवरि पक्खिचे मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । ओघसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो चेव मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

**विभंगणाणीसु मिच्छाइट्ठी द्व्यपमाणेण केवडिया, देवेहि सादिरेयं ॥ १४२ ॥**

देवमिच्छाइट्ठिणो णेरइयमिच्छाइट्ठिणो च सच्चे विहंगणाणिणो, विहंगणाणभवपच्चयसमण्णिदत्तादो । तिरिक्खविहंगणाणिणो वि पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता होंता वि

**शंका—**विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं, इसलिये ओघमिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टियोंके प्रमाणसे मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीव कम हो जाते हैं, इसलिये इनके ओघप्रमाणका निर्देश नहीं बन सकता है ?

**समाधान—**नहीं, क्योंकि, मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानियोंको छोड़कर विभंगज्ञानी जीव पृथक् नहीं पाये जाते हैं, इसलिये इनका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान अच्छीतरह बन जाता है।

अब यहाँ पर मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशिकी ध्रुवराशिका कथन करते हैं। वह इसप्रकार है—सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न राशिको तथा सिद्ध और तेरह गुणस्थान प्रतिपन्न राशिके वर्गमें मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देने पर जितना लब्ध आवे उसको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी ध्रुवराशि होती है। ओघसासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल ही मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

विभंगज्ञानियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्व्यपमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १४२ ॥

देव मिथ्यादृष्टि जीव और नारक मिथ्यादृष्टि जीव, ये सब विभंगज्ञानी होते हैं, क्योंकि, ये जीव भवप्रत्यय विभंगज्ञानसे युक्त होते हैं। तिर्यक् विभंगज्ञानी जीव जगप्रतरके

१ विभंगज्ञानिनो मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयमागमिताः । स. सि. १, ८. पल्लासंख्यचणं गुलहदसेदितिरिक्खमदि विभंगजुद्धा । णरसहिदा किं पूणा च दुगदिवेसंगपरिमाणं ॥ गो. जी. ४६३.



असंखेजसेठिमेत्ता भवंति । तासिं सेठीणं विक्खंभसुई असंखेज्जघणं गुलमेत्ता । केत्तिय-  
मेत्ताणि घणं गुलाणि ? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । तदो देवमिच्छाइड्डिरासीदो  
विहंगणाणमिच्छाइड्डिरासी विसेसाहिओ भवदि । विहंगणाणविरहिदेवपज्जत्तरासिं गेर-  
इय-तिरिक्खविहंगणाणीहिंतो असंखेज्जगुणं देवेहिंतो अवणिदे देवेहिं सादिरेयत्तं ण घडदि ति  
णासंक्रणिज्जं, विहंगणाणिहस्सावित्तिकरणेण विहंगणाणिदेवां गं गहणादो । वेउव्वियमिस्स-  
रासिस्स सांतरत्तेण, देवपज्जत्ताणं सव्वकालमसंभवा च । एदस्स अवहारकालो वुच्चदे ।  
तं जहा— देवमिच्छाइड्डिअवहारकालमिह एगपदरंगुलं घेत्तूण असंखेज्जखंडं करिय तत्थेग-  
खंडमवणिय बहुखंडे तमिह चेव पक्खिस्से विहंगणाणिमिच्छाइड्डिअवहारकालो होदि ।  
एदेण जगपदरे भागे हिदे विहंगणाणिमिच्छाइड्डिरासी आगच्छदि ।

### सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ १४३ ॥

ओघसासणसम्माइड्डिरासीदो जदि वि एसो सासणसम्माइड्डिरासी अप्पणो असं-

असंख्यातवें भागप्रमाण होते हुए भी असंख्यात श्रेणीप्रमाण होते हैं । उन असंख्यात  
श्रेणियोंकी विष्कंभसूची असंख्यात घनांगुलप्रमाण है । वे असंख्यात घनांगुल कितने  
होते हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र होते हैं । अतएव देव मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे  
विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि विशेष अधिक होती है । नारक और तिर्यंच विभंगज्ञानियोंसे  
विभंगज्ञानसे रहित देव अपर्याप्त राशि असंख्यातगुणी है । अतएव उसे देवराशिमैंसे घटा  
देने पर देवोंसे साधिक विभंगज्ञानियोंका प्रमाण नहीं बन सकता है, इसप्रकार भी आशंका  
नहीं करनी चाहिये, क्योंकि, प्रकृतमें विभंगज्ञानी शब्दकी आवृत्ति कर लेनेसे विभंगज्ञानी  
देवोंका ग्रहण किया है । दूसरे वैकल्पिकमिश्र राशि सान्तर होनेके कारण देव अपर्याप्त जीव  
सर्वदा पाये भी नहीं जाते हैं, इसलिये विभंगज्ञानियोंका प्रमाण देवोंसे साधिक है इस कथनमें  
भी कोई बाधा नहीं आती है ।

अब विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशिका अवहारकाल कहते हैं । वह इसप्रकार है— देव  
मिथ्यादृष्टि राशिमैंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके असंख्यात खंड करके उनमेंसे  
एक खंडको निकाल कर बहुभाग उसी देवमिथ्यादृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर विभंगज्ञानी  
मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहारकालसे जगप्रतरके भाजित करने पर  
विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है ।

विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असं-  
ख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १४३ ॥

ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि राशिसे यद्यपि यह विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि राशि

खेज्जदिभाएण तिरिक्ख-मणुसदुणाणिपमाणेण हीणो, तो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदि-  
भागमेत्तत्तणेण दोण्हं पि रासीणं पच्चासत्ती अत्थि त्ति ओघमिदि वुच्चदे ।

**अभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि-ओहिणाणीसु असंजदसम्माइडि-  
प्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ॥ १४४ ॥**

आभिणिबोहिय-सुदणाणीणं पमाणस्स ओघत्तं जुज्जे, तेहि विरहिद-असंजदसम्मा-  
इडिआदीणमणुवलंभादे । ण पुण ओहिणाणीणं ओघत्तं जुज्जे, ओहिणाणविरहिदतिरिक्ख-  
मणुस्ससम्माइड्डीणमुवलंभा ? ण एस दोसो, बहुसो दत्तुत्तरादो ।

एदेसिमवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा— अभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिअसंजद-  
सम्माइडिअवहारकालो ओघअसंजदसम्माइडिअवहारकालो चेव भवदि । तम्ह आवलियाए  
असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खिचे ओहिणाणिअसंजदसम्माइडिअवहार-

अपने असंख्यातवें भागरूप मत्त्यज्ञान और श्रुताज्ञान इन दो अज्ञानोंसे युक्त तिर्यंच और मनुष्योंके  
प्रमाणसे हीन है, तो भी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओघसासादनसम्यग्दष्टि  
राशि और विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दष्टि राशि इन दोनोंकी प्रत्यासत्ति पाई जाती है,  
इसलिये सूत्रमें 'ओघ' ऐसा कहा है ।

आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानी जीवोंमें असंयतसम्यग्दष्टि  
गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव  
ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १४४ ॥

**शंका —** आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके प्रमाणके ओघपना बन जाता है,  
क्योंकि, इन दोनों ज्ञानोंके बिना असंयतसम्यग्दष्टि आदि गुणस्थान नहीं पाये जाते हैं । परंतु  
अवधिज्ञानियोंके प्रमाणके ओघपना नहीं बन सकता है, क्योंकि, अवधिज्ञानसे रहित तिर्यंच  
और मनुष्य सम्यग्दष्टि पाये जाते हैं ?

**समाधान —** यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, इस प्रकारके प्रश्नका अनेकवार उत्तर  
दे आये हैं ।

अब इनके अवहारकालोंकी उत्पत्तिको कहते हैं । वह इसप्रकार है— ओघ असंयत-  
सम्यग्दष्टि जीवोंका अवहारकाल ही आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी जीवोंका अवहारकाल  
होता है । इसे आचलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी  
अवहारकालमें मिला देने पर अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

मतिश्रुतिज्ञानिनोऽसंयतसम्यग्दष्ट्यादयः क्षीणकषायान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । अवधिज्ञानिनोऽसंयतसम्यग्दष्टि-  
संयतासंयतान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. चट्टादिमादिसुदबोहा पल्लासंखेज्जया ॥ गो. जी. ४६१.  
ओहिदिक्ख तिरिक्खा मदिणाणिअखलमागगा मणुगा । संखेज्जा हु तदुणा मदिणाणी ओहिपरिमाणं गो. जी. ४६२.

कालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे (मिस्समदि-सुदअण्णाणि-) सम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं चेव पक्खिस्से मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जस्वेहि गुणिदे मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खिस्से विहंगणाणिसासणसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणिसंजदसंजद-अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओहिणाणिसंजदसंजद-अवहारकालो होदि । अहवा ओघअसंजदसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खिस्से तिणाणिसंजदसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मिस्सतिणाणिसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जस्वेहि गुणिदे तिणाणिसासणसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे दुणाणिसंजदसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मिस्सदुणाणिसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्ज-स्वेहि गुणिदे दुणाणिसासणसम्मामिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-

इस अवधिज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र दो ज्ञानी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असं-ख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर मत्तज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अवधिज्ञानी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । अथवा, ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालमें मिला देने पर तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर तीन अज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मिश्र दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित

भाएण गुणिदे दुणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-  
भाएण गुणिदे तिणाणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पल्लिदोवमे  
भागे हिदे सग-सगरासीओ हवंति । पमत्तादीणं पमाणं ओषेभव भवदि, विसेसाभावादो ।  
ओहिणाणिपमत्तादीणं पि ओषत्तं पत्ते तप्पडिसेहट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि—

णवरि विसेसो, ओहिणाणिसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाय-  
वीयरायछदुमत्था त्ति द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जां ॥ १४५ ॥

ओहिणाणिणो पमत्तसंजदा अपमत्तसंजदा च सग-सगरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्ता  
भवन्ति । किंतु एत्तिया इदि परिप्फुडं ण णव्वन्ति, संपहियकाले गुरुवएसाभावादो । णवरि  
ओहिणाणिणो उवसामगा चोइस १४, खवगा अट्ठावीस २८ ।

मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसायवीदराग-  
छदुमत्था त्ति द्व्यपमाणेण केवडिया, संखेज्जां ॥ १४६ ॥

पमत्तापमत्तगुणट्ठाणेसु मणपज्जवणाणिणो तत्थट्ठियदुणाणीणं संखेज्जदिभागमेत्ता

करने पर दो ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आबलीके असंख्यातवें  
भागसे गुणित करने पर तीन ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहार-  
कालोंसे पृथक् पृथक् पच्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती हैं । प्रमत्तसंयत  
आदिका प्रमाण ओषरूप ही होता है क्योंकि वहां विशेष का अभाव है । अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयत  
आदिके प्रमाणको ओषत्वकी प्राप्ति होने पर उसका प्रतिषेध करनेकेलिये आगेका सूत्र कहते हैं—

इतना विशेष है कि अवधिज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय  
वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने  
हैं ? संख्यात हैं ॥ १४५ ॥

अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव अपनी अपनी राशिके संख्यातवें  
भागमात्र होते हैं, किन्तु वे इतने ही होते हैं यह स्पष्ट नहीं जाना जाता है, क्योंकि, वर्तमान-  
कालमें इसप्रकारका गुरुका उपदेश नहीं पाया जाता है । इतना विशेष है कि अवधिज्ञानी  
उपशामक चौदह और क्षपक अट्ठाईस होते हैं ।

मनःपर्ययज्ञानियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतराग छद्मस्थ  
गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १४६ ॥

प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानोंमें मनःपर्ययज्ञानी जीव वहां स्थित दो

१ प्रमत्तसंयतादयः क्षीणकषायान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

२ मनःपर्ययज्ञानिनः प्रमत्तसंयतादयः क्षीणकषायान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८. मणपज्जा  
संखेज्जा ॥ गो. जी. ४६१.

भवन्ति, लङ्घिसंपण्णरासीणं बहुणमसंभवादो । ते च एत्तिया इदि सम्मं ण णव्वन्ति, संप-  
हियकाले उवएसमाभावदो । णवरि मणपज्जवणाणिणो उवसामगा दस १०, खवगा २० ।

**केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ॥ १४७॥**

सुगममिदं सुचं ।

भागाभागं वचइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणि-  
मिच्छाइट्ठिणो भवन्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा केवलणाणिणो भवन्ति । सेसम-  
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा विभंगणाभिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए  
बहुखंडा आभिणिवोहिय-सुदणाणिअसंजदसम्माइट्ठिणो भवन्ति । ते चेव पडिरासिं काऊण  
आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे ओहिणाणिअसंजद-  
सम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिस्सदुणाणिसम्माभिच्छाइट्ठिणो  
होंति । ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि

ज्ञानवाले जीवोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं, क्योंकि, लब्धिसंपन्न राशियां बहुत नहीं हो  
सकती हैं । फिर भी वे इतने ही होते हैं, यह ठीक नहीं जाना जाता है, क्योंकि वर्तमानकालमें  
इसप्रकारका उपदेश नहीं पाया जाता है । इतना विशेष है कि मनःपर्ययज्ञानी उपशामक  
दश और क्षपक वीस होते हैं ।

केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव ओघग्ररूपणाके समान  
हैं ॥ १४७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे  
बहुभाग मत्तज्ञानी और श्रुतज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने  
पर उनमेंसे बहुभाग केवलज्ञानी जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग  
विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग  
आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इन्हीं आभिनिबोधिकज्ञानी  
और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंकी प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असंख्यातवें  
भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर अवधिज्ञानी  
असंयतसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग मिश्र  
दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । उन्हीं मिश्र दो ज्ञानवाले जीवोंके प्रमाणकी  
प्रतिराशि करके और उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे

१ प्रतिपु ' तदि ' इति पाठः ।

२ केवलज्ञानिनः सयोगा अयोगाश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. केवलिणो सिद्धादो होंति  
अदिरिप्ता ॥ गो. जी. ४६१.

चेव अवणिदे मिससतिणाणिसम्माभिच्छाइट्ठी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । ते चेव पडिरासिं काऊण आवलियाए असं-  
खेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव अवणिदे विभंगणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति ।  
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आभिणिबोहिय-सुदणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसम-  
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा ओहिणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसं जाणिय वचव्वं ।

अहवा सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मदि-सुदअण्णाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति ।  
सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलणाणियो भवन्ति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा  
विहंगणाणिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसंजदसम्मा-  
इट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसम्माभिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसम-  
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा तिणाणिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए  
बहुखंडा दुणाणिसंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणि-  
सम्माभिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसासणसम्माइट्ठिणो  
होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा दुणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे

उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर मिश्र तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ।  
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्-  
गृष्टि जीव होते हैं । उन्हीं मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्गृष्टि जीवराशिकी  
प्रतिराशि करके और उसे उसी आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध  
आवे उसे उसी प्रतिराशिमेंसे घटा देने पर विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्गृष्टि जीव होते हैं ।  
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आभिनिबोधिकज्ञानी और श्रुतज्ञानी  
संयतासंयत होते हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अवधिज्ञानी  
संयतासंयत जीव होते हैं । शेष अपषडुत्वका जानकर कथन करना चाहिये । अथवा, सर्व  
जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष  
एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केवलज्ञानी जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात  
खंड करने पर बहुभाग विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड  
करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्गृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड  
करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड  
करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्गृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड  
करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्गृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड  
करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड  
करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्गृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड  
करने पर बहुभाग दो ज्ञानवाले संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड

कए बहुखंडा तिणाणिसंजदासंजदा होंति । सेसं जाणिय वत्तवं ।

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाणादिभेएण । मदि-सुदअण्णाणीसु सत्थाणं गत्थि । कारणं पुव्वभणिदं । सासणसम्माइड्डिसत्थाणप्पाबहुगे ओघभंगो । विभंगणाणिमिच्छाइड्डीणं सत्थाणस्स देवमिच्छाइड्डीणं सत्थाणभंगो । तिणाणीसु मदि-सुदणाणीसु च असंजदसम्मा-इड्डि-संजदासंजदेसु सत्थाणमोघं । सत्थाणप्पाबहुगं गदं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो मदि-सुदअण्णाणिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । मिच्छाइड्डिदव्वमणंतगुणं । सव्वत्थोवो विभंग-णाणिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । विभंग-णाणिमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंसंखेज्जगुणा । ( सेटी असंखेज्जगुणा । ) दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । सव्व-त्थोवा मदि-सुदणाणिणो चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा

करने पर बहुभाग तीन ज्ञानवाले संयतासंयत जीव हैं । शेषका जानकर कथन करना चाहिये ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे मत्त्यज्ञानी और श्रुता-ज्ञानी जीवोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । कारण पहले कहा जा चुका है । मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंमें तथा मति और श्रुत इन दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंमें स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघस्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्य-ग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है । मत्त्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य पल्योपमसे अनन्तगुणा है । विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । पल्योपम द्रव्यप्रमाणसे असंख्यातगुणा है । विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल पल्योपमसे असंख्यातगुणा है । उन्हींको विक्खंसंखी अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । ( जगश्रेणी विक्खंसंखीसे असंख्यातगुणी है । ) जगश्रेणीसे उन्हींका द्रव्य असंख्यातगुणा है । द्रव्यप्रमाणसे जगप्रतर असंख्यातगुणा है । जगप्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी चार गुणस्थानोंके उपशामक सबसे स्तोक हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुण हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुण हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव



संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । असंजदसम्माइट्ठि-  
दव्वमसंखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । एवं चेव ओहिणाणिपरत्थणं पि वत्तव्वं ।  
मणपज्जवणाणिणो सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा  
संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । केवलणाणीसु सव्वत्थोवा सजोगिकेवली ।  
अजोगिकेवली अणंतगुणा । परत्थाणं गदं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणिउवसामगा दस १० । ओहि-  
णाणिउवसामगा विसेसाहिया १४ । मणपज्जवणाणिखवगा विसेसाहिया २० । ओहिणाणि-  
खवगा विसेसाहिया २८ । मणपज्जवणाणिणो अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तत्थेव  
ओहिणाणिणो विसेसाहिया । मणपज्जवणाणिणो पमत्ता विसेसाहिया । तत्थेव ओहिणाणिणो  
विसेसाहिया । कुदो एदमवगम्मदे ? उवसम-खवगसेट्ठिन्हि एदेसिं दोण्हं णाणाणं एदेणेव

अप्रमत्तसंयतोसे संख्यातगुणे हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल  
प्रमत्तसंयतोसे असंख्यातगुणा है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी संयतासंयतोका अवहारकाल असंयत-  
सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा  
है । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य संयतासंयतोके द्रव्यसे असंख्यात-  
गुणा है । पल्लोपम असंयतसम्यग्दृष्टियोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवधि-  
ज्ञानियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये । मनःपर्ययज्ञानी उपशामक सबसे  
स्तोक हैं । मनःपर्ययज्ञानी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्त-  
संयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । मनःपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोसे  
संख्यातगुणे हैं । केवलज्ञानियोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । अयोगिकेवली जीव  
सयोगिकेवलियोंसे अनन्तगुणे हैं । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है—मनःपर्ययज्ञानी उपशामक जीव सबसे स्तोक  
होते हुए दश हैं । अवधिज्ञानी उपशामक मनःपर्ययज्ञानियोंसे विशेष अधिक होते हुए  
चौदह हैं । मनःपर्ययज्ञानी क्षपक विशेष अधिक होते हुए बीस हैं । अवधिज्ञानी क्षपक  
विशेष अधिक होते हुए अष्टाईस हैं । मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे  
संख्यातगुणे हैं । वहाँ पर अर्थात् अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें अवधिज्ञानी जीव मनःपर्ययज्ञानि-  
योंसे विशेष अधिक हैं । मनःपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंयत जीव अवधिज्ञानी अप्रमत्तसंयतोसे  
विशेष अधिक हैं । वहाँ पर अर्थात् प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें ही अवधिज्ञानी जीव मनःपर्यय-  
ज्ञानियोंसे विशेष अधिक हैं ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—उपशाम और क्षपक श्रेणीमें इत दोनों ज्ञानोंके प्रमाणका प्ररूपण इसी



कमेण पमाणपरुवणादो । कजं कारणानुरुवं सव्वहा ण होदि त्ति ण वत्तव्वं, कथं वि  
कारणानुरुवकज्जदंसणादो । ण जिणंतरेण वभिचारो, तस्स पडिणिपयदित्थपडिबद्धत्तादो ।  
दुणाणिसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिणाणिसंजदसम्माइड्ढिअवहार-  
कालो विसेसाहिओ । दुणाणिसम्माभिच्छाइड्ढिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिणाणिसम्मा-  
भिच्छाइड्ढिअवहारकालो विसेसाहिओ । दुणाणिसासनसम्माइड्ढिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।  
तिणाणिसासनसम्माइड्ढिअवहारकालो विसेसाहिओ । दुणाणिसंजदासंजदअवहारकालो असं-  
खेज्जगुणो । तिणाणिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं ।  
एवमवहारकालपडिलोमेण पेदव्वं जाव पल्लिदोवमं ति । तदो विहंगणाणिमिच्छाइड्ढिअव-  
हारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंमसई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्जगुणा । दव्वम-  
संखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । केवलणाणिणो अणंतगुणा ।  
मदि सुदअणाणिमिच्छाइड्ढिणो अणंतगुणा ।

एवं णाणमग्गणा समत्ता ।

क्रमसे किया है । कार्य सर्वदा कारणके अनुरूप नहीं होता है, यह भी नहीं कहना चाहिये,  
क्योंकि, कहीं पर भी कारणके अनुरूप कार्य देखा जाता है । जिनान्तरसे व्यभिचार भी नहीं  
आता है, क्योंकि, जिनान्तर प्रतिनियत तीर्थसे प्रतिबद्ध होता है ।

अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयतोंसे दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यात-  
गुणा है । तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि-  
योंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल  
तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले  
सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष  
अधिक है । दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सम्यग्मिथ्या-  
दृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल  
दो ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो ज्ञानवाले  
संयतासंयतोंका अवहारकाल तीन ज्ञानवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे  
असंख्यातगुणा है । तीन ज्ञानवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो ज्ञानवाले संयतासंयतोंके  
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं तीन ज्ञानवाले संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके  
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पयोपमत के  
जाना चाहिये । पयोपमतसे विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है ।  
उन्हींकी विष्कंभसूत्री अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यात-  
गुणी है । उन्हींका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है ।  
लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानी लोकसे अनन्तगुणे हैं । मत्त्यज्ञानी और  
श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई ।

संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि  
त्ति ओघं ॥ १४८ ॥

एत्थ ओघद्ववादेो ण किंचि ऊणमधियं वा अत्थि, भेदणिबंधणविसेसामावादेो ।  
तदो एत्थ ओघत्तं जुज्जे ।

सामाइय- छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव आणि-  
यट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा त्ति ओघं ॥ १४९ ॥

एत्थ वि ओघत्तं ण विरुज्जेदे । कुदो ? द्ववट्ठियणयावलंबणेण पडिगहिदेगजमा  
सामाइयसुद्धिसंजदा वुच्चंति, ते चेय पज्जवट्ठियणयावलंबणेण ति-चदु-पंचादिभेएण  
पुविल्लजमं फालियं पडिवण्णा छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा णाम । तदो दो वि रासीओ  
ओघरासिपमाणादो ण भिज्जंति त्ति ओघत्तं जुज्जे ।

एत्थ चोदगो भणदि- उभयणयावलंबणं किं क्रमेण भवदि, आहो अक्रमेणेत्ति ?

संयम मार्गणाके अनुवादसे संयमियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगि-  
केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान संख्यात हैं ॥ १४८ ॥

यहां ओघद्रव्यप्रमाणसे कुछ न्यून या अधिक प्रमाण नहीं होता है, क्योंकि, सामान्य  
प्ररूपणमें भेदका कारणभूत विशेषकी अपेक्षा नहीं होती है, इसलिये यहां संयममार्गणामें  
सामान्यसे ओघपना बन जाता है ।

सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयत जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर  
अनिवृत्तिवादरसांपरायिकप्रविष्ट उपशमक और क्षपक गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें  
जीव ओघप्रमाणके समान संख्यात हैं ॥ १४९ ॥

यहां सामायिक और छेदोपस्थापन शुद्धिसंयतोंमें भी प्रमाणकी अपेक्षा ओघत्व  
विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, द्रव्यार्थिक नयका अवलम्बन करनेकी अपेक्षा जिन्होंने  
'मैं सर्व सावद्यसे विरत हूँ' इसप्रकार एक यमको स्वीकार किया है, वे सामायिकशुद्धिसंयत  
कहे जाते हैं । तथा वे ही जीव पर्यायार्थिक नयके अवलम्बन करनेकी अपेक्षा तीन, चार  
और पांच आदि भेदरूपसे पहलेके यमको भेद करके स्वीकार करते हुए छेदोपस्थापन  
शुद्धिसंयत कहे जाते हैं । इसलिये ये दोनों राशियां ओघराशिके प्रमाणसे भेदको प्राप्त नहीं  
होती हैं, इसलिये ओघपना बन जाता है ।

शंका—यहां पर शंकाकार कहता है कि दोनों नयोंका अवलम्बन क्या क्रमसे होता

१ संयमाणुवादेन सामायिकछेदोपस्थापनशुद्धिसंयताः प्रमत्तादयोऽनिवृत्तिवादास्ताः सामान्योक्तसंख्याः  
स. सि. १, ८. पमत्तादिवउण्हं खुदी सामायियदुगं ॥ गो. जी. ४८०.

२ प्रतिबु '—संजमं पालिय' इति पाठः ।

ण ताव अकमेण', विरुद्धेहि भेदाभेदेहि जुगवं ववहाराणुववचीदो। अह कमेण, ण सामा-  
इयसुद्धिसंजदा छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा भवंति, एगत्तज्झवसायाणं भेदज्झवसाइत्तिविरोहादो।  
छेदोवट्ठावणासुद्धिसंजदा वि ण सामाइयसुद्धिसंजदा तक्काले भवंति, भेदज्झवसायाणमभेदज्झ-  
वसाइत्तिविरोहादो। तदो अकमेण दोहि णएहि पादिदोघसंजदरासी तत्त्वेगेण भागेण ओघ-  
पमाणं ण पावेदि त्ति ओघत्तं ण जुज्जेदं। अध कदाइ सव्वो संजदरासी अकमेण एकं चिय  
णयमवलंबिऊण जदि चिट्ठदि त्ति इच्छिज्जदि, तो एदाओ दुविहसंजदरासीओ सांतराओ  
हवंति। ण च एवं, कालाणिओगे एदासिं णिरंतरसुवलंभादो। एत्थ परिहारो वुच्चदं। तं  
जहा— दव्वट्ठियणए अवलंबिदे सव्वेसिं संजदाणं एक्केओ चैव जमो होदि त्ति सामाइय-  
सुद्धिसंजदाणं ओघसंजदपमाणं होदि। पज्जवट्ठियणए अवलंबिदे सव्वेसिं संजदाणं पादेकं  
पंच पंच जमा हवंति त्ति छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा वि ओघसंजदरासिपमाणं पावेति तेणे-  
देसिमोघत्तं जुज्जेदं। ण च एगं चैवज्झवसाया एयंतेण अप्पण्णो पडिवक्खणिरेक्खा,

है या अकमसे ? अकमसे तो हो नहीं सकता, क्योंकि, परस्पर विरुद्ध भेद और अभेद इनके  
द्वारा एकसाथ व्यवहार नहीं बन सकता है। यदि क्रमसे होता है तो सामायिक शुद्धिसंयत  
जीव छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, एकस्वरूप परिणामोंका भेदरूप  
परिणामोंके साथ विरोध है। उसीप्रकार छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव भी उसी समय  
सामायिकशुद्धिसंयत नहीं हो सकते हैं, क्योंकि, भेदरूप परिणामोंका अभेदरूप परिणामोंके  
साथ विरोध है। इसलिये अकमसे दोनों नयोंकी अपेक्षा ओघसंयतराशि संयममार्गणमें एक  
भागके द्वारा ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं हो सकती है, इसलिये सामायिकशुद्धिसंयतों और  
छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयतोंका प्रमाण ओघप्रमाणपनेको प्राप्त नहीं हो सकता है ? कदाचित्  
संयतराशि अकमसे एक ही नयका अवलम्बन लेकर यदि रहती है, ऐसा आप चाहते हैं, तो ये  
दोनों संयतराशियां सान्तर हो जाती हैं। परंतु ऐसा है नहीं, क्योंकि, कालानुयोगमें ये  
राशियां निरन्तर हैं, ऐसा पाया जाता है ?

समाधान—यहां पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं। वह इसप्रकार है— द्रव्यार्थिक  
नयका अवलम्बन करने पर सर्व संयमियोंके एक एक ही यम होता है, इसलिये सामायिक-  
शुद्धिसंयतोंके ओघसंयतोंका प्रमाण बन जाता है। पर्यार्थिक नयका अवलम्बन करने पर  
तो सर्व संयमियोंके प्रत्येकके पांच पांच संयम होते हैं, इसलिये छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत  
भी ओघसंयतराशिके प्रमाणको प्राप्त हो जाते हैं, अतएव, इन दोनों संयतोंके ओघपना बन  
जाता है। कुछ एक जातिके परिणाम एकान्तसे अपने प्रतिपक्षी परिणामोंसे निरपेक्ष होते हैं,

१ प्रतिषु 'अकमे' इति पाठः।

२ प्रतिषु 'सत्तो' इति पाठः।

३ अ-आप्रत्योः 'एग चेद-', क प्रतो 'एगं चेद-' इति पाठः।

तेसिं दुण्णयत्तावत्तीदो । तदो जे सामाइयसुद्धिसंजदा ते चेय छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा  
होति । जे छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा ते चेय सामाइयसुद्धिसंजदा होति चि । तदो दोण्हं  
रासीणमोघत्तं जुज्जे ।

परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्तसंजदा द्वपमाणेण केवडिया,  
संखेज्जा' ॥ १५० ॥

ओघसंजदपमाणं ण पावेति चि भणिदं होदि । तो वि ते केत्तिया चि भणिदे  
उच्चदे, तिरूवूण-सत्तसहस्सेत्ता हवन्ति ।

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा  
खवा द्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५१ ॥

एत्थ एगं सुहुमसांपराइयग्गहणं अहियारपदुप्पायणहं, अवरेणं गुणट्ठाणहिस्सो ।  
तेसिं पमाणं तिरूवूण-णवसदमेत्तं । वुत्तं च—

ऐसा नहीं है, क्योंकि, ऐसा मानने पर उनको दुर्णयपनेकी आपत्ति आ जाती है । इसलिये  
जो सामायिकशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं । तथा जो  
छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत जीव हैं, वे ही सामायिकशुद्धिसंयत होते हैं । अतएव उक्त दोनों  
राशियोंके ओघपना बन जाता है ।

परिहारविशुद्धिसंयतोंमें प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी  
अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १५० ॥

परिहारविशुद्धिसंयतमें युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण ओघसंयतोंके  
प्रमाणको प्राप्त नहीं होता है, यह इस सूत्रका तात्पर्य है । तो भी उन परिहारविशुद्धिसंयतोंका  
प्रमाण कितना है, ऐसा पूछने पर कहते हैं कि वे परिहारविशुद्धिसंयत तीन कम सात  
हजार होते हैं ।

सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत उपशमक और क्षपक  
जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५१ ॥

इस सूत्रमें प्रथमवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण अधिकारका प्रतिपादन करनेके  
लिये किया है । और दूसरीवार सूक्ष्मसांपरायिक पदका ग्रहण गुणस्थानका निर्वेशरूप किया  
है । उन सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंका प्रमाण तीन कम नौ सौ है । कहा भी है—

१ परिहारविशुद्धिसंयताः प्रमत्ताऽवाप्रमत्ताश्च संख्येयाः । स. सि. १, ८. कमेण सेसत्तियं सपसहस्सा  
णवसय णवलक्खा तीहिं परिहीणा ॥ गो. जी. ४८०.

२ सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

सत्तादी छक्कता दोणवमज्जा य होति परिहारा ।

सत्तादी अहुता णवमज्जा सुद्धमरागा दु ॥ ७९ ॥

**जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु चउट्ठाणं ओघं ॥ १५२ ॥**

चउट्ठाणमिदि कधमेगवयणणिदेसो ? ण, चउण्हं पि जादीए एगत्तमवलंबिय तथोवेदेसादो । सेसं सुगमं ।

**संजदासंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५३ ॥**

सुगममिदं सुत्तं ।

**असंजदेसु मिच्छाइट्ठिण्णहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि ति दव्व-  
पमाणेण केवडिया, ओघं ॥ १५४ ॥**

चउण्हमसंजदगुणट्ठाणाणं ओघचउगुणट्ठाणेहिंतो अविसिट्ठाणमोघत्तं जुज्जेद । एत्थ

जिस संख्याके आदिमें सात, अन्तमें छह और मध्यमें दोवार नौ हैं उतने अर्थात् छह हजार नौसौ सत्तानवें परिहारविशुद्धिसंयत जीव हैं । तथा जिस संख्याके आदिमें सात, अन्तमें आठ और मध्यमें नौ हैं उतने अर्थात् आठसौ सत्तानवें सुद्धमरागवाले जीव हैं ॥ ७९ ॥

यथाख्यात विहारशुद्धिसंयतोमें ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें और चौदहवें गुण-स्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है ॥ १५२ ॥

शंका—सूत्रमें 'चउट्ठाणं' इसप्रकार एकवचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जातिकी अपेक्षा एकत्वका अवलम्बन लेकर चारों गुण-स्थानोंका एक वचनरूपसे उपदेश दिया है । शेष कथन सुगम है ।

संयतासंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १५३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंयतोमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान हैं ॥ १५४ ॥

असंयतसंयत्नी चारों गुणस्थान ओघ चारों गुणस्थानोंके समान हैं, इसलिये असंयत चारों गुणस्थानोंके प्रमाणके ओघपना बन जाता है । अब यहां पर अवधारकालकी उत्पत्ति

१ यथाख्यातविहारशुद्धिसंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

२ संयतासंयताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. पल्लासंखेज्जदिमं विरदाविरदाण दव्वपरिमाणं ॥ गो. जी. ४८१.

३ असंयताश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. पुब्बुत्तरासिहीणा संसारी अविरदाण पमा ॥ गो. जी. ४८१.

अवहारकालुप्पत्ती वुच्चदे । तं जहा— सिद्ध-तेरसगुणपडिवण्णरासिं मिच्छाइट्ठिरासिभजिद-  
तव्वगं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिचे मिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । सासणादीणमवहार-  
कालुप्पत्ती ओघसमाणा । एवं संजदासंजदाणं पि ।

भागाभागां वचइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो  
हैंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा हैंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा  
असंजदा हैंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो हैंति । सेसम-  
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो हैंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा  
संजदासंजदा हैंति । सेसं संखेज्जखंडे' कए बहुखंडा सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदा  
हैंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा जहाक्खादसुद्धिसंजदा हैंति । सेसं संखेज्जखंडे  
कए बहुखंडा परिहारया हैंति । ( सेसेगखंडं सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा हैंति । )

अप्यावहुगं ति विहं सत्थाणादिभेएण । तत्थ सत्थाणे पयदं । संजदाणं सत्थाणं  
णत्थि, अवहाराभावादो । मिच्छाइट्ठिणं पि सत्थाणं णत्थि, रासीदो भागहारस्स बहुत्तादो ।  
सासणसम्माइट्ठिमादिं करिय जाव संजदासंजदा ति एदेसिं सत्थाणस्स ओघमंगो ।

कहते हैं । वद इसप्रकार है— सिद्धराशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानवर्ती  
राशिको तथा मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्ध और तेरह गुणस्थानवर्ती राशिके धर्मको सर्व  
जीवराशिमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टिराशिकी धुवराशि होती है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिके  
अवहारकालोंकी उत्पत्ति ओघ सासादनसम्यग्दृष्टि आदि अवहारकालोंकी उत्पत्तिके समान है ।  
इसीप्रकार संयतासंयतोंके अवहारकालकी उत्पत्ति भी समझना चाहिये ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग  
मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव होते हैं ।  
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक  
भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके  
असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके  
असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव होते हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड  
करने पर बहुभाग सामायिक और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयत होते हैं । शेष एक भागके संख्यात  
खंड करने पर बहुभाग यथाख्यातशुद्धिसंयत होते हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर  
बहुभाग परिहारविशुद्धिसंयत होते हैं । ( शेष एक भाग सद्धमसांपरायिकशुद्धिसंयत हैं । )

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे यहाँ  
स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है— संयत जीवोंके अवहारकालका अभाव होनेसे स्वस्थान  
अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । मिथ्यादृष्टियोंके भी स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है, क्योंकि,  
मिथ्यादृष्टि राशिसे भागहार बहुत बड़ा है । सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत  
गुणस्थानतक इन जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्वसामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सामाइय-छेदेवट्टावणसुद्धिसंजदउवसामगा । तेसिं खवगा संखेज्जगुणा । अपमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । परिहार-सुद्धिसंजदेसु सव्वत्थोवा अपमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । सुहुमसांपराइयसुद्धि-संजदेसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसंजदेसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । संजदासंजदेसु परत्थाणं गत्थि । असंजदेसु सव्वत्थोवा असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव द्व्वमसंखेज्जगुणं । एवं गेयव्वं जाव पलिदेवमं ति । तदो मिच्छाइट्ठि अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदा । परिहारसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । जहाक्खादसुद्धिसंजदा संखेज्जगुणा । सामाइय-छेदेवट्टावणसुद्धिसंजदा दो वि तुल्ला संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । एवं गेयव्वं जाव पलिदेवमं ति । तदो उवरी मिच्छाइट्ठि अणंतगुणा ।

एवं संजममग्गणा गदा ।

अव परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— सामायिक और छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं । उन्हींके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । परिहारविशुद्धिसंयतोंमें अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । प्रमत्तसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयतोंमें उपशामक जीव सबसे थोड़े हैं । क्षपक जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । यथाख्यात संयतोंमें उपशामक जीव सबसे थोड़े हैं । क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । संयतासंयतोंमें परस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है । असंयतोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयत सम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यात-गुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पव्योपमतक ले जाना चाहिये । पव्योपमसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । परिहारविशुद्धिसंयत जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । यथाख्यातशुद्धिसंयत जीव परिहारविशुद्धिसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । सामायिक और छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत जीव दोनों समान होते हुए यथाख्यातसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उक्त दोनों संयतोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पव्योपमतक ले जाना चाहिये । पव्योपमसे ऊपर मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।



दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठी द्ववपमाणेण केवडिया,  
असंखेज्जा ॥ १५५ ॥

सुगममेदं सुत्तं, बहुसो वक्खाणिदत्तादो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्साप्पिणीहि अवहिरंति कालेण  
॥ १५६ ॥

अइथूल-थूल-सुहुमपरूवणाओ तिण्णि वि परिवाडीए किमट्ठं वुच्चंति, सुहुमपरूवणमेव  
किण्ण वुच्चदे ? ण, मेहावि-मंदाइमंदमेहाविजणाणुग्गहकारेण तहोवएसा । सेसं सुगमं ।

खेत्तेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरादि अंगुलस्स  
संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ॥ १५७ ॥

संखेज्जरूवेहि सूचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे चक्खुदंसणिमिच्छा-  
इट्ठीणं पडिभागो होदि । एदेण पडिभागेण चक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठीहि जगपदरमवहिरिदि ।  
एत्थ किं चक्खुदंसणावरणकम्मक्खओवसमा जीवा चक्खुदंसणिणो वुच्चंति, आहो चक्खु-

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी  
अपेक्षा कितने हैं ? असंख्यात हैं ॥ १५५ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, अनेकवार व्याख्यान हो गया है ।

कालकी अपेक्षा चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों  
और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ॥ १५६ ॥

शंका — अतिस्थूल, स्थूल और सूक्ष्म, ये तीनों प्ररूपणाएं परिपाटीक्रमसे किसलिये  
कही जाती हैं, केवल एक सूक्ष्म प्ररूपणा क्यों नहीं कही जाती है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, मेधावी, मन्दबुद्धि और अतिमन्दबुद्धि जनोंका अनुग्रह  
करनेके कारण इसप्रकारका उपदेश दिया गया है । शेष कथन सुगम है ।

क्षेत्रकी अपेक्षा चक्षुदर्शनीयोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके संख्यातवें  
भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगप्रतर अपहृत होता है ॥ १५७ ॥

सूच्यंगुलमें संख्यातका भाग देने पर वहां जो लब्ध आवे उसे वर्णित करने पर  
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रतिभाग होता है । इस प्रतिभागसे चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि  
जीवोंके द्वारा जगप्रतर अपहृत होता है ।

शंका — यहां पर क्या चक्षुदर्शनावरणकर्मके क्षयोपशमसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी  
कहे जाते हैं, या चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं ? इनमेंसे प्रथम

१ दर्शनानुवादेन चक्षुदर्शनीनां मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरासंख्येयभागप्रसिताः । स. सि. १, ८,  
जोगे चउरक्खाणं पंचवक्खाणं च खीणवर्माणं चक्खुणं । गो. जी. ४८७.



दंसणोवओगसहिदजीवा त्ति ? पढमपक्खे चक्खुदंसणिमिच्छाइड्ढिअवहारकालेण पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभाएण होदव्वं, चदु-पंचिदियापज्जत्तरासीणं पाहण्णादो । ण विदियपक्खो वि, चक्खुदंसणट्ठिदीए<sup>१</sup> अंतोमुहुत्तप्पसंगादो त्ति ? एत्थ परिहारो बुच्चदे । असंखेज्जदिभाए चन्दिदियपडिभागे<sup>२</sup> चक्खुदंसणुवजोगपाओग्गचक्खुदंसणखओवसमा चक्खुदंसणिणेो त्ति जेण बुच्चति तेण लद्धिअपज्जत्ताणं गहणं ण भवदि, तेसु चन्दिदियणिप्पचित्तिराहिदेसु चक्खुदंसणोवओगसहिदवखओवसमाभावादो । संखेज्जसागरोवममेत्ता चक्खुदंसणिट्ठिदी<sup>३</sup> वि ण विरुज्जदे, खओवसमस्स पहाणत्तब्भुवगमादो । तदो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तो चक्खुदंसणिमिच्छाइड्ढिअवहारकालो होदि त्ति सिद्धं, चदु-पंचिदियपज्जत्तरासीणं पहाणत्तब्भुवगमादो ।

सासणसम्माइट्ठिण्हुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति  
ओघं ॥ १५८ ॥

पक्षके ग्रहण करने पर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागमात्र होना चाहिये, क्योंकि, ऐसी स्थितिमें चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी प्रधानता है । इसप्रकार पहला पक्ष तो ठीक नहीं है । उसीप्रकार दूसरा पक्ष भी ठीक नहीं है, क्योंकि, उसके मानने पर चक्षुदर्शनीकी स्थितिको अन्तर्मुहूर्तमात्रका प्रसंग आ जाता है ?

समाधान—आगे पूर्वोक्त शंकाका परिहार करते हैं—चक्षुदर्शनवाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सूर्यगुलके असंख्यातवें भागरूप आक्षेपका परिहार यह है कि चूंकि चक्षुदर्शनीप-योगके योग्य चक्षुदर्शनावरणके क्षयोपशमवाले जीव चक्षुदर्शनी कहे जाते हैं, इसलिये यहां पर लब्धपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होता है, क्योंकि, वे जीव चक्षु इन्द्रियकी निष्पत्तिसे रहित होते हैं, इसलिये उनमें चक्षुदर्शनरूप उपयोगसे युक्त चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशम नहीं पाया जाता है । तथा चक्षुदर्शनवाले जीवोंकी स्थिति संख्यातसागरोपममात्र होती है, यह कथन भी विरोधको प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि, वहां पर क्षयोपशमकी प्रधानता स्वीकार की है । इसलिये चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल प्रतरांगुलके संख्यातवें भागमात्र होता है, यह कथन सिद्ध होता है, क्योंकि, यहां पर चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणके कथनमें चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी प्रधानता स्वीकार की है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें चक्षुदर्शनी जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५८ ॥

१ प्रतिबु ' -दंसणट्ठिदीए ' इति पाठः ।

२ अ-कप्रसोः ' पडिवादे ' , आपत्ती ' पडिवादे ' इति पाठः ।

३ ' चक्खुदंसणीह मिच्छाइड्ढी ' उक्तस्तेण वेसागरोवमसहसाणि ' जी. का. सू. २०९-२८१.

कुदो ? चक्खुदंसणक्खओवसमरहिदुगुणपडिवण्णाभावादो ।

अचक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठिण्हुडि जाव खीणकसायवीदराग-  
छदुमत्था त्ति ओघं ॥ १५९ ॥

किं कारणं ? अचक्खुदंसणक्खओवसमविरहिदुगुणमत्थजीवाभावादो । संपहि अचक्खु-  
दंसणीणं धुवरासी वुच्चदे । तं जहा— सिद्धतेरसगुणपडिवण्णरासिमचक्खुदंसणमिच्छाइट्ठि-  
रासिभजितदत्तवग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खिचे अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिधुवरासी  
होदि । एदेण सव्वजीवरासिस्सुवरिमवग्गे भागे हिदे अचक्खुदंसणिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।  
सासणादीणमोघमिह भणिदअवहारो चेव वत्तव्वो, विसेसाभावादो ।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ॥ १६० ॥

क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न जीव चक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित नहीं होते हैं ।  
अर्थात् गुणस्थानप्रतिपन्न प्रत्येक जीवके चक्षुदर्शनावरण कर्मका क्षयोपशम पाया जाता है,  
अतएव गुणस्थानप्रतिपन्न चक्षुदर्शनी जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान है ।

अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ  
गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १५९ ॥

शंका—अचक्षुदर्शनी जीवोंका प्रमाण सामान्य प्ररूपणाके समान है, इसका क्या  
कारण है ?

समाधान—क्योंकि, अचक्षुदर्शनरूप क्षयोपशमसे रहित छद्मस्थ जीव नहीं पाये  
जाते हैं, इसलिये उनका प्रमाण ओघप्रमाणके समान कहा है ।

अब अचक्षुदर्शनी जीवोंकी धुवराशिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— सिद्ध-  
राशि और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा  
मिथ्यादृष्टि राशिसे भाजित सिद्धराशि और गुणस्थानप्रतिपन्न राशिके वर्गको सर्व जीवराशिमें  
मिला देने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंकी धुवराशि होती है । इस धुवराशिसे सर्व  
जीवराशिके उपरिम वर्गके भाजित करने पर अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता  
है । अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि आदि जीवोंका ओघप्ररूपणामें कहा गया अवहारकाल  
ही कहना चाहिये, क्योंकि, गुणस्थानप्रतिपन्न ओघ अवहारकालसे अचक्षुदर्शनी गुणस्थान-  
प्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालमें कोई विशेषता नहीं है ।

अवधिदर्शनी जीव अवधिज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६० ॥

१ अचक्षुदर्शनिनो मिथ्यादृष्टोऽनन्तानन्ताः । उभये च सासादनसम्यग्दृष्ट्यादयः क्षीणकषायान्ताः सामान्योक्त-  
संख्याः । स. सि. १, ८. एइदियपहुदीणं खीणकसायंतणंतरासीणं । जोगो अचक्खुदंसणजीवाणं होदि परिमाणं ॥  
गो. जी. ४८८.

२ अवधिदर्शनिनोऽवधिज्ञानिन्वत् । स. सि. १, ८.

ओहिदंसणविरहिदओहिणाणीणमभावादो । एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । जो ओघ-असंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो सो चेव अचक्खुदंसणि-चक्खुदंसणिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खिसे ओहिदंसणिअसंजदसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्माभिच्छाड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जवेहि गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसासणसम्माइड्ढिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे ओहिदंसणिसंजदासंजदअवहारकालो होदि ।

**केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ॥ १६१ ॥**

केवलणाणविरहिदकेवलदंसणाभावादो । सुद-मणपज्जवणाणाणं किमिदि ण दंसणं ? वुच्चदे- ण ताव सुदणाणस्स दंसणमत्थि, तस्स मदिणाणपुव्वचादो । ण मणपज्जव-

चूँकि अवधिदर्शनको छोड़कर अवधिविज्ञानी जीव नहीं पाये जाते हैं, इसलिये दोनोंका प्रमाण समान है । अब यहाँ पर इनके अवहारकालका कथन करते हैं— जो ओघ असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है, वही अचक्षुदर्शनी और चक्षुदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर अवधिदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवधिदर्शनी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अवधिदर्शनी संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है ।

**केवलदर्शनी जीव केवलज्ञानियोंके समान हैं ॥ १६१ ॥**

चूँकि केवलज्ञानसे रहित केवलदर्शन नहीं पाया जाता है, इसलिये दोनों राशियोंका प्रमाण समान है ।

**शंका—** श्रुतज्ञान और मनःपर्ययज्ञानका दर्शन क्यों नहीं कहा जाता है ?

**समाधान—** श्रुतज्ञानका दर्शन तो हो नहीं सकता है, क्योंकि, वह मतिज्ञानपूर्वक होता है । उसीप्रकार मनःपर्ययज्ञानका भी दर्शन नहीं है, क्योंकि, मनःपर्ययज्ञान भी उसीप्रकारका है, अर्थात् मनःपर्ययज्ञान भी मतिज्ञानपूर्वक होता है, इसलिये उसका दर्शन नहीं पाया जाता है ।

१ केवलदर्शनेनः केवलज्ञानिवत् । स. वि. १, ८. ओहिकेवलपरिमाणं ताण पाणं व ॥ गो. जी. ४८७.

२ प्रतिशु 'सुद-मणपज्जवणाणं' इति पाठः ।

णाणस्स वि दंसणमत्थि, तस्स वि तथाविधत्तादो । जदि सरूवसंवेदणं दंसणं तो एदेसिं पि दंसणस्स अत्थित्तं पसज्जदे चेन्न, उत्तरज्ञानोत्पत्तिनिमित्तप्रयत्नविशिष्टस्वसंवेदनस्य दर्शनत्वात् । ण च केवलमिह एसो कमो, तत्थ अक्कमेण णाण-दंसणपउत्तीदो । ण च छदुमत्थेसु दोण्हमक्कमेण उत्ती अत्थि, 'हंदि दुवे णत्थि उवजोगा' त्ति पडिसिद्धत्तादो । ण च णाणादो पच्छा दंसणं भवदि, 'दंसणपुव्वं णाणं, ण णाणपुव्वं तु दंसणमत्थि' इदि वयणादो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा अचक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठी होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा केवलदंसणिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिदव्वं होदि । तत्थ तस्सेव असंखेज्जादिभागमवणिदे ओहिदंसणि-दव्वं होदि । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसम्माइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिदव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणिसंजदासंजददव्वं होदि । सेसमसंखेज्जखंडे कए

शंका—यदि दर्शनका स्वरूप स्वरूपसंवेदन है, तो इन दोनों ज्ञानोंके भी दर्शनके आस्तित्वकी प्राप्ति होती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, उत्तरज्ञानकी उत्पत्तिके निमित्तभूत प्रयत्नविशिष्ट स्वसंवेदनको दर्शन माना है । परंतु केवलीमें यह क्रम नहीं पाया जाता है, क्योंकि, वहां पर अक्रमसे ज्ञान और दर्शनकी प्रवृत्ति होती है । छद्मस्थोंमें दर्शन और ज्ञान, इन दोनोंकी अक्रमसे प्रवृत्ति होती है, यदि ऐसा कहा जावे सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, छद्मस्थोंके 'दोनों उपयोग एक साथ नहीं होते हैं' इस आगमवचनसे छद्मस्थोंके दोनों उपयोगोंके अक्रमसे होनेका प्रतिषेध हो जाता है । ज्ञानपूर्वक दर्शन होता है, यदि ऐसा कहा जावे सो भी ठीक नहीं है, क्योंकि, 'दर्शनपूर्वक ज्ञान होता है, किंतु ज्ञानपूर्वक दर्शन नहीं होता है' ऐसा आगमवचन है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग केवलदर्शनी जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी असं-यतसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्य है । इसमेंसे इसीका असंख्यातवां भाग घटा देने पर शेष अवधिदर्शनी जीवोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी संयतासंयतोंका द्रव्यप्रमाण होता है । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग

बहुसंख्दा ओहिदंसणि संजदा संजदव्वं होदि । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अप्पाबहुगं तिविहं सत्थाणादिमेषण । सत्थाणे पयदं । चक्खुदंसणि मिच्छा इट्ठि-  
सत्थाणस्स तसपज्जत्तमिच्छा इट्ठिसत्थाणमंगो । सासणादीणं सत्थाणस्स ओघसत्थाणमंगो ।

परत्थाणे पयदं । अचक्खुदंसणीसु सव्वत्थोवा उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा ।  
अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । उवरि ओघपंचिदियं व वत्तव्वं  
जाव पलिदोवमं ति । तदो मिच्छा इट्ठिणो अणंतगुणा । एवं चेव चक्खुदंसणि परत्थाणप्पाबहुगं  
वत्तव्वं । णवरि पलिदोवमादो उवरि चक्खुदंसणि मिच्छा इट्ठिणो असंखेज्जगुणा । ओहि-  
दंसणीणो मोहिणाणिमंगो । केवलदंसणीणं केवलणाणिमंगो ।

स्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा ओहिदंसण उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा ।  
चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणि उवसामगा संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । ओहिदंसण-  
अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । दुदंसणि अप्पमत्तसंजदा संखेज्ज-

अवधिदर्शनी संयता संयतोंका द्रव्य होता है । शेष भागाभागाका कथन जानकर करना चाहिये ।

स्वस्थानादिकके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व तस पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघस्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अचक्षुदर्शनियोंमें सबसे स्तोक उपशामक जीव हैं । क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । इसके ऊपर पत्योपमतक ओघ पंचेन्द्रियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान कथन करना चाहिये । पत्योपमसे मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं । इसीप्रकार चक्षुदर्शनियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इतना विशेष है कि पत्योपमसे ऊपर चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यातगुणे हैं । अवधि-दर्शनवालोंका अल्पबहुत्व अवधिज्ञानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । केवलदर्शन-वालोंका केवलज्ञानियोंके अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये ।

अब सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अवधिदर्शनी उपशामक जीव सबसे स्तोक हैं । अवधिदर्शनी क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनी उपशामक जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही क्षपक जीव अपने उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । अवधिदर्शनी अप्रमत्तसंयत जीव चक्षु और अचक्षुदर्शनवाले क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । दो दर्शनवाले अप्रमत्तसंयत जीव अवधिदर्शनी प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । वे ही प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । दो दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो

गुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । दुदंसणिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिदंसणअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो विसेसाहिओ । दुदंसणसम्माभिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । दुदंसणसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । दुदंसणसंजदासंजद-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । तिदंसणसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो चक्खु-दंसणिभिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । विक्खंभसई असंखेज्जगुणा । सेढी असंखेज्ज-गुणा । दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । केवलदंसणी अणंतगुणा । अचक्खुदंसणी अणंतगुणा ।

एवं दंसणमगणा गदा ।

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु मिच्छा-इट्ठिपहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि ति ओघं ॥ १६२ ॥

दर्शनवाले प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहार-काल दो दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है । दो दर्शनवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल तीन दर्शनवाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । दो दर्शनवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । तीन दर्शनवाले संयतासंयतोंका अवहारकाल दो दर्शनवाले संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं तीन दर्शनवाले संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमरूपक्रमसे पर्योपमतक ले जाना चाहिये । पर्योपमसे चक्षु-दर्शनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । उन्हींकी विष्कंभसूची अपने अवहार-कालसे असंख्यातगुणी है । जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । उन्हींका द्रव्य जग-श्रेणीसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यात-गुणा है । केवलदर्शनी जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं । अचक्षुदर्शनी जीव केवलदर्शनियोंके प्रमाणसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई ।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्यावाले, नीललेश्यावाले और कापोतलेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १६२ ॥

१ प्रतिभुं 'असंखेज्जगुणो' इति पाठः ।

२ लेश्यानुवादेन कृष्णनीलकापोतलेश्या मिथ्यादृष्ट्यादयोऽसंयतसम्यग्दृष्ट्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स.

सि. १, ८. किण्हदिरासिमावलिअसंखमारेण भजिय पविमते । हीणकमा काळं वा असितय दन्ना दु भजिदन्वा ॥

अणंततणेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण च ओषेण साधम्ममत्थि चि ओषमिदि भणिदं । विससे अवलंबिज्जमाणे पुण गत्थि समाणत्तं, सेसलेस्सेवलम्बिय-जीवाणं पयदगुणद्वारेणु असंभवादो । एत्थ धुवरासी वुच्चदे । तं जहा— सिद्ध-तेरसगुण-पडिवण्ण-तेउ-पम्म-सुक्खेस्समिच्छाइट्ठिरासिं किण्ह-णील-काउलेस्समिच्छाइट्ठिरासिमजिद-भेदेसिं वगं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते हि किण्ह-णील-काउलेस्समिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । तं तीहि रूवेहि गुणेऊण आदलियाए अणंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्खित्ते काउलेस्सियधुवरासी होदि । पुव्वभागहारमम्भहियं काऊण तिगुणधुव-रासिम्हि भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव पक्खित्ते णीललेस्सियधुवरासी होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चैव अवणिदे किण्हलेस्सियधुवरासी होदि । काउ-णीललेस्सरासीओ सव्वजीवरासिस्स तिभागो देव्वणो । किण्हलेस्सियरासी तिभागो सादिरेओ । गुणपडिवण्णाणमवहारकालं पुरदो भणिस्सामो ।

उक्त तीन लेख्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंकी अनन्तत्वकी अपेक्षा, और सासादनसम्यग्दृष्टि आदि गुणस्थानवर्ती जीवोंकी पश्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा ओद्यप्रमाणके साथ समानता पाई जाती है, इसलिये सूत्रमें 'ओद्यं' ऐसा कहा है । विशेष अर्थात् पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करने पर तो उक्त तीन लेख्यावाले जीवोंके प्रमाणकी ओद्यप्रमाणप्ररूपणके साथ समानता नहीं है, क्योंकि, ऐसा मान लेने पर शेष लेख्याओंसे उपलक्षित जीवोंका प्रकृत गुणस्थानोंमें रहना असंभव मानना पड़ेगा । अब यहाँ पर धुवराशिका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— सिद्धराशि, सासादनसम्यग्दृष्टि आदि तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और पीत, पद्म तथा शुक्कलेख्यावाले मिथ्यादृष्टियोंकी राशिको, तथा इन सर्व राशियोंके वर्गमें कृष्ण, नील और कापोतलेख्यावाली मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर कृष्ण, नील और कापोतलेख्यासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवोंकी धुवराशि होती है । इसे तीनसे गुणित करके जो प्रमाण हो उसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर कापोतलेख्यासे युक्त जीवोंकी धुवराशि होती है । पूर्वोक्त भागहारको अभ्यधिक करके और उसका त्रिगुणित धुवराशिमें भाग देने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रिगुणित धुवराशिमें मिला देने पर नीललेख्यासे युक्त जीवोंकी धुवराशि होती है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमेंसे घटा देने पर कृष्णलेख्यासे युक्त जीवोंकी धुवराशि होती है । कापोतलेख्यासे युक्त और नीललेख्यासे युक्त प्रत्येक जीवराशि सर्व जीवराशिके कुछ कम तीसरे भागप्रमाण है । तथा कृष्णलेख्यासे युक्त जीवराशि कुछ अधिक तीसरे भाग प्रमाण है । उक्त तीन लेख्याओंसे युक्त गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंके अवहारकालका कथन आगे करेंगे ।

खेपादो अछरतिपा अणंतलोका केमेण परिहीणा । कालादी तीदादो अणंतगुणिदा कमा हीणा ॥ केवलगाणाणंतिममागा मावाइ किण्हतिजजीवा ॥ गो. जी. ५१७, ५१९.



तेउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, जोइसियदेवेहि सादिरें ॥ १६३ ॥

एदस्स अत्थो वुच्चदे । जोइसियदेवा पज्जत्तकाले सव्वे तेउलेस्सिया भवंति । अपज्जत्तकाले पुण ते चेय किण्ह-णील-काउलेस्सिया होंति । ते च पज्जत्तरासिस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता । वाणवेंतरदेवा वि पज्जत्तकाले तेउलेस्सिया चेव होंति । ते च जोइसियदेवाणं संखेज्जदिभागमेत्ता होंति । एदेसिमपज्जत्ता किण्ह-णील-काउलेस्सिया भवंति । ते च सगपज्जत्ताणं संखेज्जदिभागमेत्ता । मणुस-तिरिक्खेसु वि तेउलेस्सिय-मिच्छाइट्ठिरासी पदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्तो तिरिक्खपम्मलेस्सियरासीदो संखेज्जगुणो अत्थि । एदं तिणि वि रासीओ भवणवासिय-सोहम्मसाणमिच्छाइट्ठिहि सह गदाओ जोइसियदेवेहि सादिरें हवंति । एदेसिमवहारकालो वुच्चदे । तं जहा— जोइसियअवहार-कालादो पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागे अवणिदे तेउलेस्सियअवहारकालो होदि । तदो एक-पदरंगुलं घेत्तुण संखेज्जखंडं करिय एगखंडमवणिय बहुखंडे तम्हि चेव पविस्सत्ते तेउ-

तेजोलेइयावाले जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १६३ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं— पर्याप्तकालमें सभी ज्योतिषी देव तेजोलेइयासे युक्त होते हैं । तथा अपर्याप्त कालमें वे ही देव कृष्ण, नील और कापोतलेइयासे युक्त होते हैं । वे अपर्याप्त ज्योतिषी जीव अपनी पर्याप्त राशिके असंख्यातवें भागमात्र होते हैं । वाणव्यन्तर देव भी पर्याप्तकालमें तेजोलेइयासे युक्त होते हैं, और वे वाणव्यन्तर पर्याप्त जीव ज्योतिषियोंके संख्यातवें भागमात्र होते हैं । इन्हीं वाणव्यन्तरोंमें अपर्याप्त जीव कृष्ण, नील और कापोतलेइयासे युक्त होते हैं, और वे अपर्याप्त वाणव्यन्तर देव अपनी पर्याप्त राशिके संख्यातवें भागमात्र होते हैं । मनुष्य और तिर्यचोंमें भी तेजोलेइयासे युक्त मिथ्यादृष्टिराशि जगप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण है, जो पञ्चलेइयासे युक्त तिर्यचराशिके संख्यातगुणी है । इन तीनों राशियोंको भवनवासी और सौधर्म-पेशान राशिके साथ एकत्रित कर देने पर यह राशि ज्योतिषी देवोंसे कुछ अधिक हो जाती है । अब इस राशिके अवहारकालका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— ज्योतिषी देवोंके अवहारकालमेंसे प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाणको घटा देने पर तेजोलेइयासे युक्त जीवराशिका अवहारकाल होता है । उक्त तेजोलेइयासे युक्त जीवराशिके अवहारकालमेंसे एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके एक खंडको घटा कर शेष बहुत खंडोंको उसी अवहारकालमें मिला देने पर

१ तेजःपथलेइया मिथ्यादृष्ट्यादयो संयतासंयतान्ताः ब्रविद्वत् । स. सि. १, ८. तेउतिया संखेज्जा संखसंखेज्जमागका ॥ जोइसियादो अहिया तिरिक्खसण्णस्स संखमागो दु । सुइस्स अंगुलस्स य असंखमागं दु तेउतियं ॥ तेउदु असंखकप्पा... । ओहिअसंखेज्जदिमं तेउतिया भावो होंति ॥ गो. जी. ५३९, ५४०, ५४२.



लेस्सियमिच्छाइट्टिअवहारकालो होदि । सेसं जोइसियमंगो ।

सासनसम्माइट्टिण्णहुडि जाव संजदासंजदा ति ओघं ॥ १६४ ॥

छसु लेस्सासु ट्टिदओघअसंजदसम्माइट्टि-सम्माभिच्छाइट्टि-सासनसम्मादिट्टीहि सरिसो एकाए तेउलेस्साए ट्टिदरासी कथं होदि ? ण, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागचेण सरिसत्तमवेक्खिय ओघोवएसादो ।

पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १६५ ॥

ओघरासिपमाणं ण पूरेदि त्ति जं वुत्तं होदि ।

पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्टी दव्वपमाणेण केवडिया, सण्णिपंचिंदिय-तिरिक्खजोणिणीणं संखेज्जदिभागो ॥ १६६ ॥

तेजोलेइयासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिका अवहारकाल होता है । शेष कथन ज्योतिषी देवोंके कथनके समान है ।

तेजोलेइयासे युक्त जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ॥ १६४ ॥

शंका—ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशि, ओघ सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और ओघ सासादनसम्यग्दृष्टिराशि छद्मों लेइयाओंमें स्थित है, अतएव उसके साथ केवल तेजोलेइयामें स्थित असंयतसम्यग्दृष्टिराशि, सम्यग्मिथ्यादृष्टिराशि और सासादनसम्यग्दृष्टिराशि समान कैसे हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उक्त दोनों राशि-योंमें समानता देखकर तेजोलेइयासे युक्त सासादनसम्यग्दृष्टि आदि राशिका ओघरूपसे उपदेश किया है ।

तेजोलेइयासे युक्त प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १६५ ॥

उक्त दो गुणस्थानोंमें तेजोलेइयासे युक्त जीवराशि ओघप्रमाणको पूर्ण नहीं करती है, यह इस सूत्रमें संख्यात पदके देनेका अभिप्राय है ।

पद्मलेइयावाल्लोमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिमती जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण हैं ॥ १६६ ॥

सुगममेदं सुचं । एदस्स अवहारकालो बुच्चं । पंचिदियतिरिक्खजोगिणीअवहार-  
काले संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोगिणीणमवहारकालो होदि । तम्हि  
संखेज्जरूवेहि गुणिदे सण्णिपंचिदियतिरिक्खतेउलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि ।  
तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे पम्मलेस्सियमिच्छाइट्ठीणमवहारकालो होदि।

**सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति ओघं ॥ १६७ ॥**

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो ।

**पमत्त-अप्पमत्तसंजदा द्वयपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १६८ ॥**

तेउलेस्सियाणं संखेज्जदिभागमेत्ता हवंति । कुदो ? पम्मलेस्साए' सह गदजीवाणं  
पउरं संभवाभावादो ।

**सुकलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा ति द्वय-  
पमाणेण केवडिया, पल्लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पल्लिदो-  
वममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण' ॥ १६९ ॥**

यह सूत्र सुगम है । अब पञ्चलेइयासे युक्त मिथ्यादृष्टि जीवराशिके अवहारकालका  
कथन करते हैं— पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंके अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर  
संखी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर  
संखी पंचेन्द्रिय तिर्यंच तेजोलेइयावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे  
गुणित करने पर पञ्चलेइयावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

पञ्चलेइयावाले जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत  
गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान पर्योपमके असंख्यातवें भाग  
प्रमाण हैं ॥ १६७ ॥

इस सूत्रका भी अर्थ सरल है ।

पञ्चलेइयावाले प्रमत्तसंयत जीव और अप्रमत्तसंयत जीव द्वयप्रमाणकी अपेक्षा  
कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १६८ ॥

पञ्चलेइयावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव तेजोलेइयावाले प्रमत्तसंयत और  
अप्रमत्तसंयत जीवोंके संख्यातवें भागप्रमाण होते हैं, क्योंकि, पञ्चलेइयासे युक्त प्रमत्तसंयत  
और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीव प्रचुर नहीं होते हैं ।

**शुक्कलेइयावालोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक**

१ प्रतिषु 'लेस्सा' इति पाठः ।

२ शुक्कलेइया मिथ्यादृष्टिवादयः संयतासंयतान्ताः पर्योपमासंख्येयमागप्रभिताः । स. सि. १, ८. पल्ला-  
संखेज्जभागया सूत्रका ॥ गो. जी. ५४२.

एत्थ पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागवयणं सावहारपरूवणं ओघपमाणपडिसेहफलं । कुदोवगम्मेदे ? संगहपरिहारेण पज्जवणयावलंबणादो । एत्थ अवहारकालो बुच्चदे । ओघ-  
असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव  
पक्खित्ते तेउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदि-  
भाएण गुणिदे पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए  
असंखेज्जदिभाएण गुणिदे काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि  
आवलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।  
तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते णील्लेस्सिय-  
असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सुक्क-  
लेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । सग-सगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आव-  
लियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सग-सगसम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । ते

गुणस्थानमें जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण  
हैं । इन जीवोंके द्वारा अन्तर्मुहूर्त कालसे पल्योपम अपहृत होता है ॥ १६९ ॥

इस सूत्रमें अवहारकालसहित पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण इस वचनका  
प्ररूपण ओघप्रमाणके प्रतिषेध करनेके लिये दिया है ।

शंका—यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—संग्रहनयका परिहार करके पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन लेनेसे यह  
जाना जाता है ।

अब यहां पर अवहारकालका प्ररूपण करते हैं— ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि अवहार-  
कालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने  
पर तेजोलेइयासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्या-  
तवें भागसे गुणित करने पर पद्मलेइयासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।  
इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कापोतलेइयासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टि-  
योंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर कृष्णलेइयासे  
युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित  
करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर नीललेइयासे युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका  
अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्ललेइयासे  
युक्त असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन अपने अपने असंयतसम्यग्दृष्टियोंके  
अवहारकालोंको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अपने अपने सम्यग्मिथ्या-  
दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन अपने अपने सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालको

संखेज्जरूवेहि गुणिदे सग-सगसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । तेसु आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदेसु तेउ-पम्मलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो होदि । णवरि सुकलेस्सियअसंजदसम्माइडिअवहारकाले संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुकमिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्माभिच्छाइडिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सुकलेस्सियसासणसम्माइडिअवहारकालो होदि । तम्हि आव-  
लियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सुकलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो होदि । सग-सग-  
अवहारकालेण पलिदोवमे भागे हिदे; सग-सगरासिणो हवंति ।

**पमत-अपमतसंजदा द्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥१७०॥**

एदे दो वि रासिणो ओघपमाणं ण पावेंति, तेउ-पम्मसुकलेस्ससु अकमेण विहज्जिय  
डिदत्तादो । सेसं सुगेज्जं ।

**अपुवकरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि ति ओघं ॥१७१॥**

संख्यातसे गुणित करने पर अपने अपने सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इन्हें  
अर्थात् तेजोलेख्यावाले और पञ्चलेख्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालोंको आवलीके  
असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर तेजोलेख्यावाले और पञ्चलेख्यावाले संयतासंयतोंके  
अवहारकाल होते हैं । इतना विशेष है कि शुक्लेख्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टियोंके  
अवहारकालको संख्यातसे गुणित करने पर शुक्लेख्यावाले मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल  
होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर शुक्लेख्यावाले सम्यग्मिथ्या-  
दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर शुक्लेख्यावाले  
सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित  
करने पर शुक्लेख्यावाले संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इस अपने अपने अवहार-  
कालसे पल्योपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशिका प्रमाण आता है ।

शुक्लेख्यावाले प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव द्वयप्रमाणकी अपेक्षा  
कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७० ॥

शुक्लेख्यासे युक्त प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत ये दोनों राशियां ओघप्रमाणको  
प्राप्त नहीं होती हैं, क्योंकि, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें जीव तेजोलेख्या,  
पञ्चलेख्या और शुक्लेख्यामें युगपत् विभक्त होकर स्थित हैं । शेष कथन सुग्राह्य है ।

शुक्लेख्यावाले जीव अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक  
प्रत्येक गुणस्थानमें ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७१ ॥

कुदो ? अण्णलेस्साभावादो । अजोगिणो अलेस्सिया । कुदो ? कम्मलेवणिमित्त-जोग-कसायाभावा । जोगस्स कधं लेस्साववएसो ? ण, लिपदि चि जोगस्स वि लेस्सा-ववएससिद्धीदो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा तिलेस्सिया होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अलेस्सिया होंति । सेसं सखेज्जखंडे कए बहुखंडा तेउ-लेस्सिया होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा पम्मलेस्सिया । सेसेगभागो सुक्क-लेस्सिया । तिलेस्सियरासिमाव लियाए असंखेज्जदिभाएण खंडेऊण तत्थेगखंडं तदो पुध डुविय सेसे बहुभागो धेत्तूण तिणिणं समपुंजं करिय अवणिदेगखंडमाव लियाए असंखेज्जदि-भाएण खंडिय तत्थ बहुखंडे पटमपुंजे पक्खिखेत्ते किण्हलेस्सिया । सेसेगखंडमाव लियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिय बहुखंडे विदियपुंजे पक्खिखेत्ते णीललेस्सिया । सेसेगखंडं तदियपुंजे पक्खिखेत्ते काउलेस्सिया । तदो काउलेस्सियरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छा-इट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो । सेसं सखेज्जखंडे कए

चूंकि अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें शुक्लद्रव्यको छोड़कर दूसरी द्रव्या नहीं पाई जाती है, इसलिये अपूर्वकरण आदि गुणस्थानोंमें ओषधप्रमाण ही शुक्लद्रव्यावालोंका प्रमाण है। अयोगी जीव द्रव्यारहित हैं, क्योंकि, अयोगी गुणस्थानमें कर्मलेपका कारणभूत योग और कषाय नहीं पाया जाता है।

शंका — केवल योगको द्रव्या यह संज्ञा कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, 'जो लिपन करती है वह द्रव्या है' इस निश्चितके अनुसार योगके भी द्रव्या संज्ञा सिद्ध हो जाती है।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग-प्रमाण कृष्ण, नील और कापोत इन तीन द्रव्यावाले जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग द्रव्यारहित जीव हैं। शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग तेजोद्रव्यावाले जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग पद्मद्रव्यावाले जीव हैं। शेष एक भागप्रमाण शुक्लद्रव्यावाले जीव हैं। कृष्ण, नील और कापोत इन तीन द्रव्यासे युक्त जीवराशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके उनमेंसे एक खंडको पृथक् स्थापित करके और शेष बहुभागके समान तीन पुंज करके घटाकर पृथक् रक्खे हुए एक खंडको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके वहाँ जो बहुभाग आवे उसे प्रथम पुंजमें मिला देने पर कृष्णद्रव्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक भागको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके बहुभाग दूसरे पुंजमें मिला देने पर नीलद्रव्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक भाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर कापोतद्रव्यावाले जीवोंका प्रमाण होता है। अनन्तर कापोतद्रव्यावाली राशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग मिथ्यापि जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दर्शि

बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो । सेसेगखंडं सासणसम्माइट्ठिणो । एवं नील-किण्हलेस्साणं पि भागाभागं कायव्वं । तेउलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो । सेसम-संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा । सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा । पम्मलेस्सियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा । सेसेगभागो पमत्तापमत्तसंजदा । सुक्कलेस्सियरासि संखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्माइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा संजदासंजदा । सेसेगभागो पमत्तापमत्तादओ ।

अप्पाबहुगं ति विहं सत्थाणादिभेएण । सत्थाणे पयदं । किण्ह-नील-काउलेस्सिय-

जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भाग प्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । इसीप्रकार नील और कापोतलेइया-वालोंका भी भागाभाग कर लेना चाहिये । तेजोलेइयावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं । पञ्चलेइयावाली जीवराशिके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत जीव हैं । शुक्कलेइयक राशिके संख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागप्रमाण प्रमत्तसंयत आदि जीव हैं ।

स्वस्थान आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थानमें अल्पबहुत्व

मिच्छाइट्ठीणं सत्थाणं णत्थि, रासीदो थोवदरभागहाराभावा । सासणादीणमोघभंगो । सव्वत्थोवो तेउलेस्सियमिच्छाइट्ठिअवहारकालो । विक्खंभद्धं असंखेज्जगुणा । सेट्ठी असंखेज्जगुणा । दव्वमसंखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोणो असंखेज्जगुणो । सासणादीणमोघं । एवं चेव पम्म-सुकलेस्साणं सत्थाणं वत्तव्वं । सत्थाणं गदं ।

परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवो काउलेस्सियअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो । सम्मा-मिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो काउलेस्सियमिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । एवं 'णील-किण्हाणं । सव्वत्थोवा तेउलेस्सियअपमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो तेउ-

प्रकृत है— कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है, क्योंकि, कृष्ण नील और कापोतलेश्यक राशियोंसे उनके भागहार स्तोक नहीं हैं । सासादन-सम्यग्दृष्टि आदिके स्वस्थान अल्पबहुत्व ओष स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान हैं । तेजोलेश्यक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । उन्हींकी विष्कंभसूची अवहारकालसे असंख्यात-गुणी है । जगश्रेणी विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी है । द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । जगप्रतर द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओष स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है । इसीप्रकार पद्मलेश्य और शुकुलेश्यावालोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । इसप्रकार स्वस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— कापोतलेश्यक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे कापोतलेश्यक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं । इसीप्रकार नील और कृष्णलेश्यक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्वका भी कथन करना चाहिये । तेजोलेश्यक अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यात-गुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्या-दृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादन-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयता-संयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे



लेस्सियमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि सत्थाणभंगो । एवं पम्मलेस्साए । सुकलेस्साए सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्माइड्डि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । मिच्छाइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डि-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजद-अवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्ववमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयव्वं जाव पल्लिदोवमं ति । परत्थाणं गदं ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली संखेज्जगुणा । सुकलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउ-लेस्सियअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । तेउलेस्सियअसंजदसम्मा-इड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्मा-

तेजोलेइयक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इसके ऊपर स्वस्थान अल्प-बहुत्वके समान कथन करना चाहिये । इसीप्रकार पञ्चलेइयके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये । शुक्लेइयमें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव सयोगिकेवलीयोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल मिथ्यादृष्टियोंके अवहार-कालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अव-हारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये । इसप्रकार परस्थान अल्पबहुत्व समाप्त हुआ ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है- चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं । क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । सयोगिकेवली संख्यातगुणे हैं । शुक्लेइयक अप्रमत्तसंयत जीव सयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पञ्चलेइयक अप्रमत्तसंयत जीव शुक्लेइयक प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । पञ्चलेइयक प्रमत्तसंयत जीव पञ्चलेइयक अप्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेइयक अप्रमत्तसंयत जीव पञ्चलेइयक प्रमत्तसंयत जीवोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेइयक प्रमत्तसंयत जीव तेजोलेइयक अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । तेजोलेइयक असंयतसम्यग्दृष्टि-योंका अवहारकाल तेजोलेइयक प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि-



इष्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियअसंजदसम्माइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो ।  
सम्माभिच्छाइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सातणसम्माइष्टिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।  
काउलेस्सियअसंजदसम्माइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । किण्हलेस्सियअसंजदसम्माइष्टि-  
अवहारकालो असंखेज्जगुणो । णीललेस्सियअसंजदसम्माइष्टिअवहारकालो विसेसाहिओ ।  
काउलेस्सियसम्माभिच्छाइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सातणसम्माइष्टिअवहारकालो  
संखेज्जगुणो । किण्हलेस्सियसम्माभिच्छाइष्टिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । णीललेस्सिय-  
सम्माभिच्छाइष्टिअवहारकालो विसेसाहिओ । किण्हलेस्सियसातणसम्माइष्टिअवहारकालो  
संखेज्जगुणो । णीललेस्सियसातणसम्माइष्टिअवहारकालो विसेसाहिओ । तेउलस्सियसंजदा-  
संजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो संखेज्जगुणो ।

[illegible]

सुकलेस्सियअसंजदसम्मइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सुकलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहार-  
कालो संखेज्जगुणो । सुकलेस्सियसम्ममिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सुकलेस्सिय-  
सासणसम्मइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो । सुकलेस्सियसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्ज-  
गुणो । तस्सेव द्व्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेद्व्वं जाव पलिदोवमं ति ।  
तदो तेउलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । पम्मलेस्सियमिच्छाइड्डिअवहारकालो  
संखेज्जगुणो । तस्सेव विक्खंभस्सई असंखेज्जगुणा । तेउलेस्सियमिच्छाइड्डिविक्खंभस्सई संखेज्ज-  
गुणा । सेठी असंखेज्जगुणा । पम्मलेस्सियमिच्छाइड्डिद्व्वमसंखेज्जगुणं । तेउलेस्सियमिच्छा-  
इड्डिद्व्वं संखेज्जगुणं । पदरमसंखेज्जगुणं । लोगो असंखेज्जगुणो । अलेस्सिया अणंतगुणा ।  
काउलेस्सिया अणंतगुणा । णीललेस्सिया विसेसाहिया । किण्हलेस्सिया विसेसाहिया । एसो  
सव्वपरत्थाणअप्पाबहुओ गुरुवएसेण लिहिदो, णत्थि एत्थ सुचज्जुत्ती वक्खणं वा ।

एवं लेस्साणुवादो गदो ।

अवहारकाल पञ्चलेइयक संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । शुक्कलेइयक  
मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे संख्यातगुणा है ।  
शुक्कलेइयक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके मिथ्यादृष्टि अवहारकालसे असंख्यात-  
गुणा है । शुक्कलेइयक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल उन्हींके सम्यग्मिथ्यादृष्टि अव-  
हारकालसे संख्यातगुणा है । शुक्कलेइयक संयतासंयतोंका अवहारकाल उन्हींके सासादन-  
सम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य पर्योपमसे असंख्यातगुणा है ।  
इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोम क्रमसे पर्योपमतक ले जाना चाहिये । पर्योपमसे  
तेजोलेइयक मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । पञ्चलेइयक मिथ्यादृष्टियोंका  
अवहारकाल तेजोलेइयक मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । उन्हींकी विष्कंभसूची  
अवहारकालसे असंख्यातगुणी है । तेजोलेइयक मिथ्यादृष्टि जीवोंकी विष्कंभसूची पञ्चलेइयक  
जीवोंकी विष्कंभसूचीसे संख्यातगुणी है । जगश्रेणी तेजोलेइयक विष्कंभसूचीसे असंख्यातगुणी  
है । पञ्चलेइयक मिथ्यादृष्टियोंका द्रव्य जगश्रेणीसे असंख्यातगुणा है । तेजोलेइयक मिथ्यादृष्टि  
जीवोंका द्रव्य पञ्चलेइयक मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे संख्यातगुणा है । जगप्रतर तेजोलेइयक द्रव्यसे असं-  
ख्यातगुणा है । लोक जगप्रतरसे असंख्यातगुणा है । लेइयारहित जीव लोकसे अनन्तगुणे हैं ।  
कापोतलेइयक जीव लेइयारहित जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । नीललेइयावाले जीव कापोतलेइयक  
जीवोंसे विशेष अधिक हैं । कृष्णलेइयक जीव नीललेइयक जीवोंसे विशेष अधिक हैं ।  
यह सर्व परस्थान अरूपबहुत्व गुरुके उपदेशसे लिखा है । परंतु इस विषयमें स्वयंकी  
अथवा व्याख्यान नहीं पाया जाता है ।

इसप्रकार लेइयानुवाद समाप्त हुआ ।

भविष्यानुवादेण भवसिद्धिः सुमिच्छाद्विपुलं जाव अजोगि-  
केवलि ति ओघं ॥ १७२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो । णवरि अभवसिद्धियसहिदसिद्ध-तेरसगुणपडिवण्ण-  
रासिं भवसिद्धियमिच्छाद्विपुलं जेहिं तेहिं वग्गं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते भवसिद्धिय-  
मिच्छाद्विपुलरासी होदि ।

अभवसिद्धिया दव्वपमाणेण केवडिया, अणंतां ॥ १७३ ॥

एत्थ अणंतवयणं संखेज्जासंखेज्जपडिसेहफलं । एत्थ कालपमाणं सुत्ते किमिदि ण  
वुत्तं ? ण एस दोतो, अभवसिद्धियाणं वयाभावा । वयाभावो त्रिं तेहिं मोक्खाभावो  
अवगम्मदे ।

खेत्तपमाणं किमिदि ण वुत्तं इदि चे ण, अपरिस्फुटस्स अत्थस्स फुड्डीकरणं

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिकोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगि-  
केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७२ ॥

इस सूत्रका अर्थ सुगम है । इतना विशेष है कि अभव्यसिद्धिक जीवराशिसे सहित  
सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानप्रतिपन्न जीवराशिको तथा उक्त राशियोंके वर्गमें भव्यसिद्धिक  
मिथ्यादृष्टि राशिका भाग देनेसे जो लब्ध आवे उसे सर्व जीवराशिमें मिला देने पर  
भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि भुवराशि होती है ।

अभव्यसिद्धिक जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १७३ ॥

यहां सूत्रमें अनन्त यह वचन संख्यात और असंख्यातके प्रतिषेधके लिये दिया है ।

शंका — यहां भव्य मार्गणामें अभव्योंका प्रमाण कहते समय सूत्रमें कालकी अपेक्षा  
प्रमाण क्यों नहीं कहा ?

समाधान — यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, अभव्यसिद्धिकोंका व्यय नहीं होता । उनका  
व्यय नहीं होता है यह कथन उनको मोक्षकी प्राप्ति नहीं होती है इससे जाना जाता है ।

शंका — अभव्योंका प्रमाण क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा क्यों नहीं कहा ?

समाधान — नहीं, क्योंकि, जो अर्थ अपरिस्फुट हो उसके स्फुट करनेके लिये

१ भव्यानुवादेन भव्येषु मिथ्यादृष्ट्यादयोऽयोगिकेऽव्ययान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. तेण  
विहिणो सव्वो संधारी मव्वरासिस्स ॥ गो. जी. ५६०.

२ अवमया अनन्ताः । स. सि. १, ८. अवरो लुत्ताणंतो अवमव्वरासिस्स होदि परिमाणं ॥ गो. जी. ५६०.

३ प्रसिद्ध ' वयामावादि ' इति पाठः ।

खेत्तपमाणं वुच्चदे । एसो पुण अभवसिद्धिरासिपमाणं सुहु परिण्णुडो । कुदो ? अभव-  
सिद्धिरासिपमाणं जहणजुत्ताणंतमिदि सयलाइरियजयप्पसिद्धदो ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा भवसिद्धियमिच्छा-  
इट्ठिणो । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया । सेसमणंतखंडे  
कए बहुखंडा अभवसिद्धिया । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा असंजदसम्माइट्ठिणो ।  
सेसमोघमंगो ।

अप्पावहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । भवसिद्धियसत्थाणं परत्थाणं मिच्छाइट्ठि-  
प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं । अभवसिद्धियसत्थाणं णत्थि ।

सच्चपरत्थाणे सच्चत्थोवा अजोगिकेवली । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । एवं  
जाव पलिदोवमं ति णेयवं । तदो अभवसिद्धिया अणंतगुणा । णेव भवसिद्धिया णेव  
अभवसिद्धिया अणंतगुणा । भवसिद्धियमिच्छाइट्ठी अणंतगुणा ।

एवं भवियमगणा समत्ता ।

क्षेत्रकी अपेक्षा प्रमाण कहा जाता है । परंतु यह अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण अत्यन्त स्फुट  
है, क्योंकि, अभव्यसिद्धिक राशिका प्रमाण जघन्य युक्तानन्त है, यह सर्व आचार्य जगत्में  
प्रसिद्ध है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर बहुभाग  
भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग भव्यसिद्धिक  
और अभव्यसिद्धिक विकल्परहित जीव होते हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर  
बहुभाग अभव्यसिद्धिक जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग असंयत-  
सम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष भागाभाग ओघ भागाभागके समान है ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे भव्य-  
सिद्धिक जीवोंका स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्व मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर  
अयोगिकेवली गुणस्थानतक ओघ स्वस्थान और परस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।  
अभव्यसिद्धिक जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है ।

सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें अयोगिकेवली जीव सबसे स्तोका हैं । चारों उपशामक  
अयोगियोंसे संख्यातगुणे हैं । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे अभव्य-  
सिद्धिक जीव अनन्तगुणे हैं । भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पसे रहित जीव  
अभव्यसिद्धिक जीवोंसे अनन्तगुणे हैं । भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीव अभव्योंसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टिण्हुडि जाव  
अजोगिकेवलि ति ओघं ॥ १७४ ॥

केण कारणेण ? सम्मत्तसामण्णेण अहियारादे । ण हि सामण्णवदिरित्तो तत्त्वसेसो  
अत्थि । तम्हा ओघपरूवणा चेय णिरवयवा एत्थ वत्तत्वा ।

खइयसम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टी ओघं ॥ १७५ ॥

जदि वि एसो खइयसम्माइट्टिरासी ओघअसंजदसम्माइट्टिरासिस्स असंखेज्जदि-  
भागमेत्तो, तो वि ओघपरूवणं लभदे; पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तच्चं पडि विसेसा-  
भावा ।

संजदासंजदण्हुडि जाव उवसंतकसायवीदरागछट्टुमत्था द्वन्-  
पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ॥ १७६ ॥

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर  
अयोगिकेवली गुणस्थानतक जीव ओघग्ररूपणाके समान हैं ॥ १७४ ॥

शंका—सम्यक्त्वजीव असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुण-  
स्थानतक ओघग्ररूपणाके समान किस कारणसे हैं ?

समाधान—क्योंकि, यहां पर सम्यक्त्व सामान्यका अधिकार है। सामान्यको  
छोड़कर उसके विशेष नहीं पाये जाते हैं। इसलिये ओघग्ररूपणा ही निश्चय यहां पर कहना  
चाहिये ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि जीव ओघग्ररूपणाके समान हैं ॥ १७५ ॥

यद्यपि यह क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टिराशि ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि राशिके असं-  
ख्यातत्वे भागमात्र है तो भी वह ओघग्ररूपणाको प्राप्त होती है, क्योंकि, पल्लोपमके  
असंख्यातत्वे भागत्वके प्रति उक्त दोनों राशियोंमें कोई विशेषता नहीं है ।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय वीतराग छद्मस्थ गुणस्थानतक  
क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १७६ ॥

१ प्रतिपु '—केवली' इति पाठः ।

२ सम्यक्त्वानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टयः पल्लोपमासंख्येयमागममिताः । स. सि. १, ८.  
नामपुष्पे खइया संखेज्जा जइ हवंति सोहम्मे । तो संखपल्लठिदिये केवडिया एवमणुपादे ॥ संखावलिहिदपल्ला  
खइया ॥ गो. वी. ६५७-६५८.

३ संयतासंयतदय उपशान्तकषायान्ताः संख्येयाः । स. सि. १, ८.

पुव्वसुत्तादो खइयसम्माइडि चि अणुवड्ढेद । ओघपमाणं ण पूरेदि' चि जाणा-  
वणड्ढं संखेज्जवयणं । संजदासंजदखइयसम्माइडिणो कधं संखेज्जा ? ण, तेसिं मणुसगइ-  
वदिरित्तसेसगईसु अभावादो । पुव्वं बद्धतिरिक्खाउआ सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय  
तिरिक्खेसु उववज्जता लब्भति तेण संजदासंजदखइयसम्माइडिणो असंखेज्जा लब्भंति  
चि चे ण, पुव्वं बद्धाउअखइयसम्माइडिणं तिरिक्खेसुप्पण्णाणं संजमासंजमगुणाभावादो ।  
कुदो ? भोगभूमिमंतरेण तेसिमुप्पत्तीए अण्णत्थ संभवाभावादो । ण च तिरिक्खेसु दंसण-  
मोहणीयखवणा वि अत्थि, 'णियमा मणुसगईए' इदि वयणादो ।

**चउण्हं खवा अजोगिकेवली ओघ' ॥ १७७ ॥**

एत्थ चउण्हं कम्माणं वाइसण्णिदाणं खवगा इदि अज्झाहारो कायव्वो । चउसदो-  
गुणट्ठाणाणं विसेसणं किण्ण होदि चि वुत्ते ण, तत्थ छट्ठीणिदेसाणुववत्तीदो । सेसं सुगमं ।

पूर्व सूत्रसे इस सूत्रमें क्षायिकसम्यग्दृष्टि इस पदकी अनुवृत्ति होती है । संयतासंयतसे  
उपशांतकषाय गुणस्थानतक क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंका प्रमाण ओघप्रमाणको पूर्ण नहीं करता  
है, इसका ज्ञान करानेके लिये सूत्रमें 'संख्यात हैं' यह वचन दिया है ।

शंका—संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव संख्यात कैसे हैं ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्य गतिको  
छोड़कर शेष गतियोंमें नहीं पाये जाते हैं, और पर्याप्त मनुष्य संख्यात ही होते हैं, इसलिये  
संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव भी संख्यात ही होते हैं, ऐसा कहा ।

शंका—जिन जीवोंने पहले तिर्यचायुका बंध कर लिया है ऐसे जीव सम्यक्त्वको  
ग्रहण करके और दर्शनमोहनीयका क्षय करके तिर्यचोंमें उत्पन्न होते हुए पाये जाते हैं,  
इसलिये संयतासंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव असंख्यात होना चाहिये ।

समाधान—नहीं, क्योंकि, जिन्होंने पहले तिर्यचायुका बंध कर लिया है ऐसे  
तिर्यचोंमें उत्पन्न हुए क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंके संयमासंयमगुण नहीं पाया जाता है,  
क्योंकि, भोगभूमिके विना अन्यत्र उनकी उत्पत्ति संभव नहीं है । तथा तिर्यचोंमें  
दर्शनमोहनीयकी क्षपणा भी नहीं पाई जाती है, क्योंकि, दर्शनमोहनीयकी क्षपणा नियमसे  
मनुष्यगतियोंमें ही होती है, ऐसा आगमवचन है ।

चारों क्षपक और अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७७ ॥

यहां पर क्षपक पदसे घातिसंज्ञक चारों कर्मोंके क्षपक, ऐसा अध्याहार कर लेना चाहिये ।

शंका—सूत्रमें आया हुआ 'चउ' शब्द गुणस्थानोंका विशेषण क्यों नहीं होता है ?

समाधान—ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, 'चउ' शब्दमें षष्ठी

१ प्रतिषु 'ओघपमाणं पूरेदि चि' इति पाठः ।

२ प्रतिषु 'संजदा' इति पाठः ।

३ त्वारः क्षपकाः सयोगिकेवलिनोऽयोगिकेवलिनश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १. ८.

सजोगिकेवली ओघं ॥ १७८ ॥

कुदो ? खइयसम्मचेण विणा सजोगिकेवलीणमणुवलंभा ।

वेदगसम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा  
ति ओघं ॥ १७९ ॥

एत्थ ओघरासी चेव त्थोवूणो वेदगरासी होदि तेणोषत्तं ण विरुज्जदे ।

उवसमसम्माइट्टीसु असंजदसम्माइट्टि-संजदासंजदा ओघं ॥ १८० ॥

एदे दो वि रासीओ ओघअसंजदसम्माइट्टि-संजदासंजदाणमसंखेज्जदिभागमेत्ता जदि  
वि होंति, तो वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागत्तेण समाणत्तमत्थि ति ओघमिदि भणिदं ।  
सेसं सुगमं ।

विभक्तिका निर्देश नहीं बन सकता है । अर्थात् सूत्रमें आया हुआ 'वउणहं' यह पद प्रथमा  
विभक्तिरूप है, पष्ठी नहीं, इसलिये गुणस्थानोंका विशेषण नहीं हो सकता है । शेष कथन  
सुगम है ।

सजोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७८ ॥

चूंकि सजोगिकेवली जीव क्षायिकसम्यक्त्वके विना नहीं पाये जाते हैं, इसलिये  
उनका प्रमाण ओघप्ररूपणाके समान है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुण-  
स्थानतक जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १७९ ॥

असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक ओघराशि ही कुछ  
कम वेदकसम्यग्दृष्टि जीवराशि होती है, इसलिये ओघत्व विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव ओघप्ररूपणाके  
समान हैं ॥ १८० ॥

ये दोनों भी राशियां ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके असंख्यातवें भाग-  
प्रमाण होती हैं, तो भी पल्योपमके असंख्यातवें भागत्वकी अपेक्षा उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत-  
सम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंकी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके साथ समानता  
है, इसलिये सूत्रमें 'ओघः' ऐसा कहा है । शेष कथन सुगम है ।

१ क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्ट्यादयोऽप्रमत्तान्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. ततो  
य वेदमुवसमया । आवलिअसंखगुणिदा असंखगुणहीणया कमसो ॥ गो. जी. ६५८.

२ प्रतिषु 'त्थोवूणो' इति पाठः ।

३ औपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टिसंयतासंयताः पल्योपमासंख्येयभागप्रमिताः । स. सि. १, ८.



प्रमत्तसंजदपहुडि जाव उवसंतकसायवीदरागलुदुमत्था त्ति द्व्य-  
पमाणेण केवडिया, संखेज्जा' ॥ १८१ ॥

एत्थ संखेज्जवयणं ओघपमाणपडिसेहफलं । ओघद्व्यपमाणं ण पावेदि त्ति कथ-  
मवगम्मदे ? ओघपमत्तादिरासिस्स संखेज्जदिभागो तस्मिह तस्मिह उवसमसम्माइट्ठिरासी  
होदि त्ति अप्पावहुगवयणादे ।

सासणसम्माइट्ठी ओघं ॥ १८२ ॥

सम्माभिच्छाइट्ठी ओघं ॥ १८३ ॥

मिच्छाइट्ठी ओघं ॥ १८४ ॥

एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि ओघम्मि परूविदाणि त्ति णेह परूविज्जंति । एत्थ  
अवहारकालुप्पायणविहिं वत्तइस्सामो । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकाले आवलियाए

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय वीतरागलुब्धस्थ गुणस्थानतक  
उपशमसम्यग्दष्टि जीव द्व्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? संख्यात हैं ॥ १८१ ॥

यहां सूत्रमें 'संख्यात हैं' यह वचन ओघप्रमाणके प्रतिषेधके लिये दिया है ।

शंका—प्रमत्तादि उपशान्तकषाय गुणस्थानतक उपशमसम्यग्दष्टि जीव ओघ  
द्व्यप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान—'ओघ प्रमत्तसंयत आदि गुणस्थानवर्ती राशिके संख्यातवें भाग उस  
उस गुणस्थानमें उपशमसम्यग्दष्टि जीव होते हैं' इस अल्पबहुत्व अनुयोगद्वाराके वचनसे  
जाना जाता है कि प्रमत्तसंयत आदि उपशान्तकषायतक प्रत्येक गुणस्थानके उपशमसम्यग्दष्टि  
जीव ओघप्रमाणको प्राप्त नहीं होते हैं ।

सासादनसम्यग्दष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग  
हैं ॥ १८२ ॥

सम्यग्मिथ्यादष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग  
हैं ॥ १८३ ॥

मिथ्यादष्टि जीव ओघप्ररूपणाके समान अनन्तानन्त हैं ॥ १८४ ॥

इन तीनों सूत्रोंका प्ररूपण ओघप्ररूपणाके समय कर आये हैं, इसलिये यहाँ उनका  
प्ररूपण नहीं करते हैं । अब यहाँ पर अवहारकालके उत्पन्न करनेकी विधिको बतलाते हैं—

१ प्रमत्ताप्रमत्तसंयताः संख्याताः । चत्तर औपवसिकाः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

२ सासादनसम्यग्दष्टयोः सम्यग्मिथ्यादष्टयोः मिथ्यादष्टयश्च सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८. पल्ला-  
संखेज्जदिमा सासणमिच्छा य संबुणिदा हु । मिसा तेहिं विहीणी संसारी वामपरिमाणं ॥ गो. जी. ६५९.



असंखेज्जदिभाएण भागे हिंदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेदगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे खइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे असंजदउवसमसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जस्वेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो होदि । एदेहि अवहारकालेहि पल्लोवमे भागे हिंदे सग-सगरासीओ आगच्छति । सिद्ध-तेरसगुणट्ठाणरासिं मिच्छाइट्ठिभजितत्तव्वगं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते मिच्छाइट्ठि-धुवरासी होदि ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा मिच्छाइट्ठिणो होति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा सिद्धा । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदग-असंजदसम्माइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयअसंजदसम्माइट्ठिणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमअसंजदसम्माइट्ठिणो । सेसं संखेज्जखंडे कए

भोष असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी अवहारकालमें मिला देने पर वेदक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर क्षायिक असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर असंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इन अवहारकालोंसे पशुपमके भाजित करने पर अपनी अपनी राशियां आती हैं ।

सिद्धराशि और तेरह गुणस्थानवर्ती राशिको तथा मिथ्यादृष्टि राशिले भाजित उन राशियोंके वर्गको सर्व जीवराशिमें मिला देने पर मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशि होती है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं—सर्व जीवराशिमें अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग सिद्ध जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशम असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक

बहुखंडा सम्भामिच्छाद्विणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा सासणसम्भद्विणो । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेदगसम्भद्विसंजदासंजदा । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा उवसमसम्भद्विसंजदासंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा खइयसम्भद्विसंजदासंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा अप्पमत्तसंजदा । सेसं जाणिय वत्तव्वं ।

अप्पावहुगं तिविहं सत्थाणादिभेएण । सव्वेसिं सत्थाणमोघं । परत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा वेदगसम्भद्विअप्पमत्तसंजदा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्भद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्ववमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । उवसमसम्भद्विसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । उवरि वेदगपरत्थाणभंगो । खइयसम्भद्विसु सव्वत्थोवा चत्तारि उवसावगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । संजदासंजदा संखेज्जगुणा । असंजदसम्भद्विअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्ववम-

भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग अप्रमत्तसंयत जीव हैं । शेष भागाभागका कथन जानकर करना चाहिये ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आदिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे सभीका स्वस्थान अल्पबहुत्व ओघप्ररूणाके समान है । अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव सबसे स्तोक हैं । इनसे प्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणे हैं । इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । इससे संयतासंयतोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामक सबसे थोड़े हैं । क्षपक संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । इसके ऊपर वेदकसम्यग्दृष्टियोंके परस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । क्षायिक सम्यग्दृष्टियोंमें चारों उपशामक सबसे स्तोक हैं । क्षपक उनसे संख्यातगुणे हैं । इनसे अप्रमत्तसंयत संख्यातगुणे हैं । इनसे प्रमत्तसंयत संख्यातगुणे हैं । इनसे संयतासंयत संख्यातगुणे हैं । इनसे असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा

संखेज्जगुणं । पलिदोवममसंखेज्जगुणं । केवलणाणिणो अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयंदं । सव्वत्थोवा उवसमसम्माइट्ठिणो चत्तारि उवसामगा । तत्थेव खइयसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदउवसम-सम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । कारणं, चारित्तमोहणीयखवणकालादो उवसमसम्मतकालस्स संखेज्जगुणात्ता । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा खइयसम्माइट्ठिणो संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । वेदगसम्माइट्ठिअप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्ता संखेज्जगुणा । खइयसम्माइट्ठिसंजदासंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदाणं संखेज्जभागमेत्त-पमत्तसंजदवेदगसम्माइट्ठीहिंतो कथं मणुससंजदासंजदाणं संखेज्जिदभागमेत्तखइयसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं संखेज्जगुणात्तं ? ण, सव्वसम्मत्तेसु संजदेहिंतो देससंजदाणं देससंजदेहिंतो असंजदाणं बहुत्तुवलंभादो । तं पि कुदो ? चारित्तावरणखओवसमस्स सव्वसम्मत्तेसुप्पायण-

है । इससे उर्द्धाका द्रव्य असंख्यातगुणा है । इससे पत्त्योपम असंख्यातगुणा है । इससे केवल-ज्ञानी अनन्तगुणे हैं ।

सर्वपरस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती उपशम-सम्यग्दृष्टि जीव सबसे स्तोके हैं । उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । क्षपक जीव उपशमश्रेणीके चारों गुणस्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव क्षपक जीवोंसे संख्यातगुणे हैं, क्योंकि, चरित्र मोहनीयके क्षपण कालसे उपशमसम्यक्त्वका काल संख्यातगुणा है । प्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव प्रमत्तसंयत उपशमसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीव अप्रमत्तसंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे हैं । वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं ।

शंका— प्रमत्तसंयतोंके संख्यातत्वं भागमात्र प्रमत्तसंयत वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे मनुष्य संयतासंयतोंके संख्यातत्वं भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव संख्यातगुणे कैसे हो सकते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे देशसंयत और देशसंयतोंसे असंयत जीव बहुत पये जाते हैं, इसलिये मनुष्य संयतासंयतोंके संख्यातत्वं भागमात्र क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीव प्रमत्तसंयतोंके संख्यातत्वं भागमात्र वेदकसम्यग्दृष्टियोंसे संख्यातगुणे बन जाते हैं ।

शंका— सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे संयतासंयत और संयतासंयतोंसे असंयत बहुत होते हैं, यह कैसे जाना जाता है ?

संभवाभावादे । ' तेरसकोडी देसे ' एदीए गाहाए एदस्स वक्खाणस्स किण्ण विरोहो ? होउ णाम । कथं पुण विरुद्धवक्खाणस्स भदत्तं ? ण, जुत्तिसिद्धस्स आइरियपरंपरागयस्स एदीए गाहाए णाभदत्तं काऊण सकिज्जदि, अइप्पसंगादो । वेदगअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । खइयअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवसमअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । वेदगसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवसमसम्माइट्ठिसंजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दन्वमसंखेज्जगुणं । एवमवहारकालपडिलोमेण णेयन्वं जाव पडिदोवमं ति । तदो खइयसम्माइट्ठिणो केवलणाणिणो अणंतगुणा । मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा ।

एवं समत्तमगणा गदा ।

समाधान—चूंकि चरित्रावरण मोहनीयकर्मका क्षयोपशम सर्व सम्यक्त्वोंमें प्रायः संभव नहीं है, इसलिये यह जाना जाता है कि सर्व सम्यक्त्वोंमें संयतोंसे संयतासंयत और संयतासंयतोंसे असंयत जीव अधिक होते हैं ।

शंका—यदि ऐसा है तो ' देशसंयतमें तेरह करोड़ मनुष्य हैं ' इस गाथाके साथ इस पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध क्यों नहीं आ जायगा ?

समाधान—यदि उक्त गाथार्थके साथ पूर्वोक्त व्याख्यानका विरोध प्राप्त होता है तो होओ ।

शंका—तो इसप्रकारके विरुद्ध व्याख्यानको समीचीनता कैसे प्राप्त हो सकती है ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, जो युक्तिसिद्ध है और आचार्य परंपरासे आया हुआ है उसमें इस गाथासे असमीचीनता नहीं लाई जा सकती, अन्यथा अतिप्रसंग दोष आ जायगा ।

वेदकसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंसे असंख्यातगुणा है । क्षायिकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल वेदकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल क्षायिकअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल उपशमअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा है । वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका अवहारकाल वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयतोंका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानी अनन्तगुणे हैं । मिथ्यादृष्टि जीव क्षायिकसम्यग्दृष्टि केवलज्ञानियोंसे अनन्तगुणे हैं ।

इसप्रकार सम्यक्त्वमार्गीणा समाप्त हुई ।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया,  
देवेहिं सादिरेंयं ॥ १८५ ॥

एदस्स सुचस्स अत्थो वुच्चदे । सव्वे देवमिच्छाइट्ठिणो सण्णिणो चेय । तेसिं  
संखेज्जदिभागमेत्ता तिगदिसण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति । तेण सण्णिमिच्छाइट्ठिणो देवेहिं  
सादिरेंया । एत्थ अवहारकालो वुच्चदे । तं जहा— देवअवहारकालादो पदरंगुलमेगं घेसूण  
संखेज्जखंडे करिय तत्थेगखंडमवणिय सेसवहुखंडं तम्हि चेव पक्खित्ते सण्णिमिच्छाइट्ठि-  
अवहारकालो होदि । एदेण जगपदरे भागे हिदे सण्णिमिच्छाइट्ठिदव्वं होदि ।

सासणसम्माइट्ठिणहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति  
ओधं ॥ १८६ ॥

सुगममेदं सुचं ।

असण्णी दव्वपमाणेण केवडिया, अणंतां ॥ १८७ ॥

संज्ञीमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा  
कितने हैं ? देवोंसे कुछ अधिक हैं ॥ १८५ ॥

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । सर्व देव मिथ्यादृष्टि जीव संज्ञी ही होते हैं । तथा  
उनके संख्यातवें भागप्रमाण तीन गतिसंबन्धी संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । इसलिये  
संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव देवोंसे कुछ अधिक हैं, ऐसा सूत्रमें कहा है ।

अब यहाँ पर अवहारकालका कथन करते हैं । वह इसप्रकार है— देव अवहारकालमें  
एक प्रतरांगुलको ग्रहण करके और उसके संख्यात खंड करके उनमेंसे एक खंडको निकालकर शेष  
बहु खंड उसीमें मिला देने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इस अवहार-  
कालसे जगप्रतरके भाजित करने पर संज्ञी मिथ्यादृष्टि द्रव्य होता है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय वीतरागछद्वय गुणस्थानतक  
प्रत्येक गुणस्थानमें संज्ञी जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १८६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

असंज्ञी जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? अनन्त हैं ॥ १८७ ॥

१ संज्ञाववादेन संज्ञिणु मिथ्यादृष्ट्यादयः क्षीणकषायान्ताश्चक्षुर्दर्शनिवन् । स. सि. १, ८. देवेहिं सादिरेंयो  
रास्सी सण्णीणं होदि परिमाणं ॥ गो. जी. ६६३.

२ असंज्ञिनो मिथ्यादृष्टयोऽनन्तानन्ताः । तदुभयव्यपदेशरहिताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. ३, ८.  
तेणूणो संसारी सव्वेसिमसण्णिजीवाणं ॥ गो. जी. ६६३.

अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण  
॥ १८८ ॥

खेत्तेण अणंताणंता लोका ॥ १८९ ॥

एदाणि तिण्णि सुत्ताणि अवगदत्थाणि चि एदेसिं ण वक्ख्वाणं बुच्चदे । एत्थ  
धुवरासिं वत्तइस्सामो । सण्णिरासिं णेव-सण्णि-णेव-असण्णिरासिं च असण्णिभजिदत्तव्वगं च  
सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते असण्णिधुवरासी होदि ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सव्वजीवरासिमणंतखंडे कए बहुखंडा असण्णिणो होंति ।  
सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा णेव सण्णी णेव असण्णी होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए  
बहुखंडा सण्णिमिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमोघभागाभागभंगो ।

तिविहमवि अप्पावहुगं जाणिऊण भाणिदव्वं ।

एवं सण्णिमगणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छाइट्ठिणहुडि जाव सजोगि-  
केवलि त्ति ओघं ॥ १९० ॥

कालकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और  
उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत नहीं होते हैं ॥ १८८ ॥

क्षेत्रकी अपेक्षा असंज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥ १८९ ॥

इन तीनों सूत्रोंका अर्थ अवगत है, इसलिये इनका व्याख्यान नहीं किया है। अब  
यहां पर ध्रुवराशिका प्रतिपादन करते हैं— संज्ञीराशि और संज्ञी तथा असंज्ञी इन दोनों  
व्यपदेशोंसे रहित जीवराशिको तथा असंज्ञी राशिसे भाजित उक्त राशियोंके घर्गको सर्व  
जीवराशिमें मिला देने पर असंज्ञी जीवोंके प्रमाण लानेके लिये ध्रुवराशि होती है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे  
बहुभाग असंज्ञी जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभाग संज्ञी और  
असंज्ञी इन दोनों व्यपदेशोंसे रहित जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर  
बहुभाग संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष भागाभागका ओघ भागाभागके समान कथन करना  
चाहिये ।

तीनों प्रकारके अव्यवहुत्वका भी जानकर कथन करना चाहिये ।

इसप्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई ।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगि-

१ आहाराणुवादेण आहारकेसु मिथ्यादृष्ट्यादयः सयोगिकेवत्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स. सि. १, ८.

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय । णवरि सगुणपडिक्खणअणाहाररासिं आहारमिच्छाइट्ठि-  
रासिभजिदत्तव्वगं च सव्वजीवरासिस्सुवरि पक्खित्ते आहारिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि ।

### अणाहारएसु कम्मइयकायजोगिभंगो ॥ १९१ ॥

एदं पि सुत्तं सुगमं चेय । एत्थ धुवरासी वुच्चदे । ओघमिच्छाइट्ठिधुवरासि-  
मंतोमुहुत्तेण गुणिदे अणाहारिमिच्छाइट्ठिधुवरासी होदि । ओघअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालं  
आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते आहारिअसंजदसम्मा-  
इट्ठिअवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे सम्मामिच्छाइट्ठि-  
अवहारकालो होदि । तम्हि संखेज्जरूवेहि गुणिदे सासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।  
तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे संजदासंजदअवहारकालो होदि । तम्हि  
आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिअसंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

केवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९० ॥

यह भी सूत्र सुगम है । इतना विशेष है कि गुणस्थानप्रतिपन्न राशि और अनाहारक  
जीवराशिको तथा आहारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे भाजित उक्त राशियोंके वर्गको सर्व  
जीवराशिमें मिला देने पर आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण लानेके लिये ध्रुवराशि  
होती है ।

अनाहारकोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगि-  
केवली जीवोंका प्रमाण कर्मणकाययोगियोंके प्रमाणके समान हैं ॥ १९१ ॥

यह भी सूत्र सुगम ही है । अब यहां ध्रुवराशिका प्रतिपादन करते हैं— ओघ  
मिथ्यादृष्टियोंकी ध्रुवराशिको अन्तमुहूर्तसे गुणित करने पर अनाहारक मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाण  
लानेके लिये ध्रुवराशि होती है । ओघअसंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालको आवलीके  
असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसीमें मिला देने पर आहारक  
असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित  
करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे संख्यातसे गुणित करने पर आहार-  
क सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित  
करने पर आहारक संयतासंयतोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे  
गुणित करने पर अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है । इसे आवलीके

तत्त्विवरीदसंसी सव्वो आहारपरिमाणं ॥ गो. जी. ६७१.

१ अनाहारकेषु मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्दृष्ट्यसंयतसम्यग्दृष्टयः सामान्योक्तसंख्याः । सयोगिकेवलिनः  
संख्याः । स. सि. १, ८. कम्मइयकायजोगी होदि अणाहारयाण परिमाणं ॥ गो. जी. ५७१.



तस्मिन् आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे अणाहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो होदि ।

**अजोगिकेवली ओघं ॥ १९२ ॥**

सुगममेदं ।

भागाभागं वत्तइस्सामो । सच्चजीवरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि-  
मिच्छाइट्ठिणो होंति । सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणाहारिवंधगा होंति । सेसमणंतखंडे  
कए बहुखंडा अणाहारिवंधगा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारि-  
असंजदसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं संखेज्जखंडे कए बहुखंडा सम्मामिच्छाइट्ठिणो होंति ।  
सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा आहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए  
बहुखंडा संजदासंजदा होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिअसंजदसम्मा-  
इट्ठिणो होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा अणाहारिसासणसम्माइट्ठिणो होंति । सेसं  
संखेज्जखंडे कए बहुखंडा पमत्तसंजदा होंति । सेसेगखंडं अप्पमत्तसंजदाओ' होंति ।

अप्पाचहुगं तिविहं सत्थाणादिभएण । तत्थ सत्थाणं मूलोघमंगो । परत्थाणे पयदं ।

असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल होता है ।

**अनाहारक अयोगिकेवली जीव ओघप्ररूपणाके समान हैं ॥ १९२ ॥**

यह सूत्र सुगम है ।

अब भागाभागको बतलाते हैं— सर्व जीवराशिके असंख्यात खंड करनेपर बहुभाग  
आहारक मिथ्यादृष्टि जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक  
बन्धयुक्त जीव हैं । शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर बहुभाग अनाहारक अबन्धक  
जीव हैं । शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि  
जीव हैं । शेष एक भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव हैं ।  
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं ।  
शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग संयतासंयत जीव हैं । शेष एक  
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक  
भागके असंख्यात खंड करने पर बहुभाग अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीव हैं । शेष एक  
भागके संख्यात खंड करने पर बहुभाग प्रमत्तसंयत जीव हैं । शेष एकभाग प्रमाण अप्रमत्तसंयत  
आदि जीव हैं ।

स्वस्थान अल्पबहुत्व आधिके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है । उनमेंसे स्वस्थान  
अल्पबहुत्व मूल ओघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है ।



सन्वत्थोवा चचारि उवसामगा । खवगा संखेज्जगुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । आहारिसंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मा-  
मिच्छाइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । आहारिसासणसम्माइड्डिअवहारकालो संखेज्जगुणो ।  
संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं गेयव्वं जाव  
पलिदोवमं ति । तदो आहारिमिच्छाइड्डिगो अणंतगुणा । अणाहारएसु सवत्थोवा सजोगि-  
केवली । असंजदसम्माइड्डिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । सासणसम्माइड्डिअवहारकालो  
असंखेज्जगुणो । तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं । एवं गेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो  
अबंधगा अणंतगुणा । बंधगा अणंतगुणा ।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवा अणाहारिसजोगिकेवली । ( अजोगिकेवली संखेज्ज-  
गुणा । चचारि उवसामगा संखेज्जगुणा । (खवगा संखेज्जगुणा ।) आहारिसजोगिकेवली संखेज्ज-  
गुणा । अप्पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा । आहारिसंजदसम्माइड्डिअव-

अव परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— चारों गुणस्थानवर्ती उपशामक जीव सबसे  
स्तोक हैं । क्षपक जीव उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे  
हैं । प्रमत्तसंयत जीव अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका  
अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल  
आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । आहारक सासादन-  
सम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके अवहारकालसे संख्यातगुणा  
है । संयतासंयतोंका अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे  
असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार  
पत्थोपमतक ले जाना चाहिये । पत्थोपमसे आहारक मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तगुणे हैं । अना-  
हारकोंमें सयोगिकेवली जीव सबसे स्तोक हैं । अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल  
अनाहारक सयोगिकेवलियोंसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका  
अवहारकाल अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका  
द्रव्य उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पत्थोपमतक ले जाना चाहिये ।  
पत्थोपमसे अवन्धक जीव अनन्तगुणे हैं । बन्धक जीव अवन्धकोंसे अनन्तगुणे हैं ।

अब सर्व परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है— अनाहारक सयोगिकेवली जीव  
सबसे स्तोक हैं । अयोगिकेवली जीव उनसे संख्यातगुणे हैं । चार गुण-  
स्थानवर्ती उपशामक जीव अयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । क्षपक जीव  
उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । आहारक सयोगिकेवली जीव क्षपकोंसे संख्यातगुणे हैं ।  
अप्रमत्तसंयत जीव आहारक सयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणे हैं । प्रमत्तसंयत जीव  
अप्रमत्तसंयतोंसे संख्यातगुणे हैं । आहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंसे

हारकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छाइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । आहारिसासण-  
सम्माइट्ठिअवहारकालो संखेज्जगुणो । संजदासंजदअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारि-  
असंजदसम्माइट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । अणाहारिसासणसम्माइट्ठिअवहारकालो  
असंखेज्जगुणो । तस्सेव द्वयमसंखेज्जगुणं । एवं णेयव्वं जाव पलिदोवमं ति । तदो अबंधगा  
अणंतगुणा । अणाहारिणो बंधगा मिच्छाइट्ठिणो अणंतगुणा । तदो आहारिणो मिच्छा-  
इट्ठिणो असंखेज्जगुणा ।

एवं द्वाणिओगहारं समत्तं ।

असंख्यातगुणा है । सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहार-  
कालसे असंख्यातगुणा है । आहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल सम्यग्मिथ्यादृष्टि  
अवहारकालसे संख्यातगुणा है । संयतासंयतोंका अवहारकाल आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि  
अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल संयता-  
संयतोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल  
अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकालसे असंख्यातगुणा है । उन्हींका द्रव्य अपने अवहार-  
कालसे असंख्यातगुणा है । इसीप्रकार पल्योपमतक ले जाना चाहिये । पल्योपमसे अबन्धक  
जीव अनन्तगुणे हैं । अनाहारक बन्धक मिथ्यादृष्टि जीव अबन्धकोंसे अनन्तगुणे हैं । इनसे  
आहारक बन्धक जीव असंख्यातगुणे हैं ।

इसप्रकार द्रव्यानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।



परिशिष्ट



## १ दन्वपरूवणासुत्ताणि ।

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१	दन्वपमाणाणुगमेण दुविहो णिदेसो ओघेण अदेसेण य ।		१२	अद्वं पडुच्च संखेज्जा ।	९३
२	ओघेण मिच्छाइट्ठी दन्वपमाणेण केवडिया, अणंता ।	१०	१३	सजोगिकेवली दन्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एको वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण अट्टत्तरसयं ।	९५
३	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ।	२७	१४	अद्वं पडुच्च सदसहस्सपुधत्तं ।	९५
४	खेत्तेण अणंताणंता खेसा ।	३२	१५	आदेसेण गदियाणुवादेण णिरय-गईए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दन्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	१२१
५	तिण्हं पि अधिगमो भावपमाणं ।	३८	१६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	१२९
६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा चि दन्वपमाणेण केवडिया, पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरिज्जदि अंतोमुहुत्तेण ।	६३	१७	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ जगपदरस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताओ । तासिं सेठीणं विक्खंभसूची अंगुलवग्गमूलं विदियवग्गमूलगुणिदेण ।	१३१
७	पमत्तसंजदा दन्वपमाणेण केवडिया, कोडिपुधत्तं ।	८८	१८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि चि दन्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	१५६
८	अप्पमत्तसंजदा दन्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	८९	१९	एवं पढमाए पुढवीए णेरइया ।	१६१
९	चटुण्हमुवसामणा दन्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एको वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण चउवण्णं ।	९०	२०	विदियादि जाव सत्तमाए पुढवीए णेरइएसु मिच्छाइट्ठी दन्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	१९८
१०	अद्वं पडुच्च संखेज्जा ।	९१	२१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	१९८
११	चउण्हं खवा अजोगिकेवली दन्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एको वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण अट्टत्तरसदं ।	९२	२२	खेत्तेण सेठीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेठीए आयामो असं-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	खेज्जाओ जोयणकोडीओ पढमा- दियाणं सेटिवग्गमूलणं संखेज्जाणं अण्णोण्णम्भासेण ।	१९९		इट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असं- खेज्जा ।	२२९
२३	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव असं- जदसम्माइट्ठि चि ओघं ।	२०६	३४	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२३०
२४	तिरिक्खगईए तिरिक्खेसु मिच्छा- इट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा चि ओघं ।	२१५	३५	खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खजोणिणि- मिच्छाइट्ठिहि पदरमवहिरदि देव- अवहारकालादो संखेज्जगुणेण का- लेण ।	२३०
२५	पंचिदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	२१७	३६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा चि ओघं ।	२३७
२६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२१७	३७	पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्ता दव्व- पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२३९
२७	खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खमिच्छा- इट्ठीहि पदरमवहिरदि देवअवहार- कालादो असंखेज्जगुणहीणकालेण ।	२१९	३८	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२३९
२८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा चि तिरिक्खोघं ।	२२६	३९	खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खअपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि देवअवहारकालादो असंखेज्जगुणहीणेण कालेण ।	२३९
२९	पंचिदियतिरिक्खपज्जत्तमिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२२६	४०	मणुसगईए मणुस्सेसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२४४
३०	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२२७	४१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२४५
३१	खेत्तेण पंचिदियतिरिक्खपज्जत्त- मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि देव- अवहारकालादो संखेज्जगुणहीणेण कालेण ।	२२८	४२	खेत्तेण सेटीए असंखेज्जदिभागो । तिस्से सेटीए आयामो असंखेज्जदि- जोयणकोडीओ । मणुसमिच्छा- इट्ठीहि रूवा पविखत्तएहि सेटी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तदिय- वग्गमूलगुणिदेण ।	२४५
३२	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा चि ओघं ।	२२९	४३	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा चि दव्वपमाणेण केव-	
३३	पंचिदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छा-				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	डिया, संखेज्जा ।			अंगुलवग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणि-	
४४	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगि- केवलि त्ति ओघं ।	२५१		देण ।	२६२
४५	मणुसपज्जत्तेसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, कोडाकोडा- कोडीए उवरि कोडाकोडाकोडा- कोडीए हेट्टदो छण्हं वग्गामुवरि सत्तण्हं वग्गणं हेट्टदो ।	२५२	५३	देवगईए देवेसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२६६
४६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संज- दासंजदा त्ति दव्वपमाणेण केव- डिया, संखेज्जा ।	२५३	५४	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२६८
४७	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अजोगि- केवलि त्ति ओघं ।	२५९	५५	खेत्तेण पदरस्स वेळप्पणंगुलसय- वग्गपडिमाणेण ।	२६८
४८	मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमा- णेण केवडिया, कोडाकोडाकोडीए उवरि कोडाकोडाकोडाकोडीए हे- ट्टदो छण्हं वग्गामुवरि सत्तण्हं वग्गणं हेट्टदो ।	२६०	५६	सासणसम्माइट्ठि-सम्माभिच्छाइट्ठि- असंजदसम्माइट्ठीणं ओघं ।	२६९
४९	मणुसिणीसु सासणसम्माइट्ठिप्पहु- डि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्व- पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	२६१	५७	भवणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७०
५०	मणुसअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केव- डिया, असंखेज्जा ।	२६२	५८	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२७०
५१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२६२	५९	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेढीओ पद- रस्स असंखेज्जादिभागो । तासिं सेढीणं विक्खंमसई अंगुलं अंगुल- वग्गमूलगुणिदेण ।	२७०
५२	खेत्तेण सेढीए असंखेज्जादिभागो । तिस्से सेढीए आयामो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ । मणुसअपज्जत्तेहि रूवा पक्खिच्चेहि सेढिमवहिरदि		६०	सासणसम्माइट्ठि-सम्माभिच्छाइट्ठि- असंजदसम्माइट्ठिपरुवणा ओघं ।	२७१
			६१	वाणंवेतरदेवेसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७२
			६२	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२७२
			६३	खेत्तेण पदरस्स संखेज्जजोयणसद- वग्गपडिमाणेण ।	२७२
			६४	सासणसम्माइट्ठि-सम्माभिच्छाइट्ठि- असंजदसम्माइट्ठी ओघं ।	२७४
			६५	जोइसियदेवा देवगईणं भोगो ।	२७५



सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
६६	सोहम्मीसाणकप्पवासियदेवेसु मि- च्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	२७६	७५	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्स- प्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण ।	३०६
६७	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	२७६	७६	खेत्तेण अणंताणंता लोगा ।	३०७
६८	खेत्तेण असंखेज्जाओ सेठीओ पद- रस्स असंखेज्जदिभागो । तासि सेठीणं विक्खंभसई अंगुलविदिय- वग्गमूलं तदियवग्गमूलगुणिदेण ।	२७७	७७	वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३१०
६९	सासणसम्माइट्ठि-सम्माभिच्छाइट्ठि- असंजदसम्माइट्ठी ओधं ।	२८०	७८	असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पि- णीहि अवहिरंति कालेण ।	३१२
७०	सणक्कुमारप्पहुडि जाव सदार- सहस्सारकप्पवासियदेवेसु जहा सत्तमाए पुटवीए णेरइयाणं भंगो ।	२८०	७९	खेत्तेण वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदरम- वहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि- भागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अं- गुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडि- भाएण ।	३१३
७१	आणद-पाणद जाव णवगेवेज्ज- विमाणवासियदेवेसु मिच्छाइट्ठि- प्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि चि दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदो- वमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ।	२८१	८०	पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मि- च्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३१४
७२	अणुहिस जाव अवराइदविमाण- वासियदेवेसु असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, पलिदो- वमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतोमुहुत्तेण ।	२८१	८१	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	३१४
७३	सव्वट्ठसिद्धि विमाणवासियदेवा द- व्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	२८६	८२	खेत्तेण पंचिंदिय-पंचिंदियपज्ज- त्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग- पडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदि- भागवग्गपडिभाएण ।	३१४
७४	इंदियाणुवादेण एइंदिया चादरा सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्व- पमाणेण केवडिया, अणंता ।	३०५	८३	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजो- गिकेवल चि ओधं ।	३१७
			८४	पंचिंदियअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३१७
			८५	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण । ३१७			केवडिया, असंखेज्जा । ३५५	
८६	खेत्तेण पंचिदियअपज्जत्तेहि पदर- मवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदि- भागवग्गपडिभाएण । ३१८		९३	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण । ३५५	
८७	कायाणुवादेण पुढविकाइया आउ- काइया तेउकाइया वाउकाइया बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फइकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढवि- काइया सुहुमआउकाइया सुहुम- तेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्तापज्जत्ता द्वपमाणेण केव- डिया, असंखेज्जा लोगा ॥ ३२९		९४	खेत्तेण असंखेज्जाणि जगपदराणि लोगस्स संखेज्जदिभागो । ३५५	
८८	बादरपुढविकाइय-बादरआउकाइय- बादरवणप्फइकाइयपत्तेयसरीर- पज्जत्ता द्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा । ३४८		९५	वणप्फइकाइया णिगोदजीवा बादरा सुहुमा पज्जत्तापज्जत्ता द्व- पमाणेण केवडिया, अणंता । ३५६	
८९	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण । ३४९		९६	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्स- प्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण । ३५८	
९०	खेत्तेण बादरपुढविकाइय-बादर- आउकाइय-बादरवणप्फइकाइय- पत्तेयसरीरपज्जत्तएहि पदरमवहि- रदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्ग- पडिभागेण । ३४९		९७	खेत्तेण अणंताणंता लोगा । ३५८	
९१	बादरतेउपज्जत्ता द्वपमाणेण केव- डिया, असंखेज्जा । असंखेज्जाव- लियवग्गो आवलियघणस्स अंतो । ३५०		९८	तसकाइय-तसकाइयपज्जत्तएसु मि- च्छाइट्ठी द्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा । ३६०	
९२	बादरवाउकाइयपज्जत्ता द्वपमाणेण		९९	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि- उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण । ३६१	
			१००	खेत्तेण तसकाइय-तसकाइयपज्ज- त्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहि- रदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभाग- वग्गपडिभागेण अंगुलस्स संखे- ज्जदिभागवग्गपडिभाएण । ३६१	
			१०१	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि चि ओवं । ३६२	
			१०२	तसकाइयअपज्जत्ता पंचिदियअप- ज्जत्ताण भंगो । ३६२	
			१०३	जोगाणुवादेण पंचमणजोगि-ति णिवचिजोगीसु मिच्छाइट्ठी द्व- पमाणेण केवडिया, देवाणं संखे- ज्जदिभागो । ३८६	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१०४	सासनसम्मादिट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	३८७	११७	असंजदसम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	३९९
१०५	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगि-केवल त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	३८७	११८	वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवाणं संखेज्जदिमाणो ।	४००
१०६	वच्चिजोगि-असच्चमोसवच्चिजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।	३८८	११९	सासनसम्माइट्ठी असंजदसम्मा-इट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	४०१
१०७	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहरिंति कालेण ।	३८९	१२०	आहारकायजोगीसु पमत्तसंजदा दव्वपमाणेण केवडिया, चदुवणं ।	४०१
१०८	खेचेण वच्चिजोगि-असच्चमोस-वच्चिजोगीसु मिच्छाइट्ठीहि पद-रमवहरिदि अंगुलस्स संखेज्जदि-भागवग्गपडिभागेण ।	३८९	१२१	आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्त-संजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४०२
१०९	सेसाणं मणजोगिभंगो ।	३९०	१२२	कम्मइयकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, मूलोघं ।	४०२
११०	कायजोगि-ओरालियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं ।	३९५	१२३	सासनसम्माइट्ठी असंजदसम्मा-इट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	४०३
१११	सासनसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवल त्ति जहा मण-जोगिभंगो ।	३९५	१२४	सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४०४
११२	ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी मूलोघं ।	३९६	१२५	वेदानुवादेण इत्थिवेदएसु मिच्छा-इट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवीहि सादिरें ।	४१३
११३	सासनसम्माइट्ठी ओघं ।	३९७	१२६	सासनसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सं-जदासंजदा त्ति ओघं ।	४१४
११४	असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	३९७	१२७	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणिय-ट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४१५
११५	वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, देवाणं संखेज्जदिभागूणो ।	३९८			
११६	सासनसम्माइट्ठी सम्मामिच्छा-				

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
१२७	पुरिसवेदएसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, देवेहि सादि- रेयं ।	४१६	मूलोघं ।		४२९
१२८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्ठिबादरसांपराइयपविट्ठ उ- वसमा खवा दव्वपमाणेण केव- डिया, ओघं ।	४१६	१३८ अकसाईसु उवसंतकसायवीदराग- छदुमत्था ओघं ।		४३०
१२९	णवुंसयवेदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा चि ओघं ।	४१७	१३९ खीणकसायवीदरागछदुमत्था अ- जोगिकेवली ओघं ।		४३०
१३०	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि- यट्ठिबादरसांपराइयपविट्ठ उव- समा खवा दव्वपमाणेण केव- डिया, संखेज्जा ।	४१८	१४० सजोगिकेवली ओघं ।		४३१
१३१	अपगदवेदएसु तिण्हं उवसामगा दव्वपमाणेण केवडिया, पवेसेण एक्को वा दो वा तिणिण वा, उक्कस्सेण चउवणं ।	४१९	१४१ णाणाणुवादेण मदिअण्णाणि-सुद- अण्णाणीसु मिच्छाइट्ठी सासण- सम्माइट्ठी दव्वपमाणेण केव- डिया, ओघं ।		४३६
१३२	अद्धं पडुच्च संखेज्जा ।	४२०	१४२ विभंगणाणीसु मिच्छाइट्ठी दव्व- पमाणेण केवडिया, देवेहि सादि- रेयं ।		४३७
१३३	तिणिण खवा अजोगिकेवली ओघं ।	४२०	१४३ सासणसम्माइट्ठी ओघं ।		४३८
१३४	सजोगिकेवली ओघं ।	४२१	१४४ आभिणिबोहियणाणि-सुदणाणि- ओहिणाणीसु असंजदसम्माइट्ठि- प्पहुडि जाव खीणकसायवीद- रागछदुमत्था चि ओघं ।		४३९
१३५	कसायाणुवादेण कोधकसाइ- माणकसाइ मायकसाइ-लोभकसा- ईसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा चि ओघं ।	४२४	१४५ णवरि विसेसो, ओहिणाणीसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीण- कसायवीयरायछदुमत्था चि दव्व- पमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।		४४१
१३६	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि- यट्ठि चि दव्वपमाणेण केव- डिया, संखेज्जा ।	४२८	१४६ मणपज्जवणाणीसु पमत्तसंजद- प्पहुडि जाव खीणकसायवीद- रागछदुमत्था चि दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।		४४१
१३७	णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांप- राइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा		१४७ केवलणाणीसु सजोगिकेवली अजोगिकेवली ओघं ।		४४२
			१४८ संजमाणुवादेण संजदेसु पमत्त-		

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	संजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ।	४४७	१५८	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं ।	४५४
१४९	सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजदेसु पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणि- यट्ठिवादरसांपराइयपविट्ठ उव- समा खवा त्ति ओघं ।	४४७	१५९	अचक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठि- प्पहुडि जाव खीणकसायवीद- रागछदुमत्था त्ति ओघं ।	४५५
१५०	परिहारसुद्धिसंजदेसु पमत्तापमत्त- संजदा दव्वपमाणेण केवडिया, संखेज्जा ।	४४९	१६०	ओहिदंसणी ओहिणाणिमंगो ।	४५५
१५१	सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदेसु सुहु- मसांपराइयसुद्धिसंजदा उवसमा खवा दव्वपमाणेण केवडिया, ओघं ।	४४९	१६१	केवलदंसणी केवलणाणिमंगो ।	४५६
१५२	जहाक्खादविहारसुद्धिसंजदेसु च- उट्ठाणं ओघं ।	४५०	१६२	लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय- णीललेस्सिय काउलेस्सिएसु मि- च्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजद- सम्माइट्ठि त्ति ओघं ।	४५९
१५३	संजदासंजदा दव्वपमाणेण केव- डिया, ओघं ।	४५०	१६३	तेउलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठि दव्व- पमाणेण केवडिया, जोइसिय- देवेहि सादिरेंयं ।	४६१
१५४	असंजदेसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति दव्वपमा- णेण केवडिया, ओघं ।	४५०	१६४	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	४६२
१५५	दंसणाणुवादेण चक्खुदंसणीसु मिच्छाइट्ठि दव्वपमाणेण केव- डिया, असंखेज्जा ।	४५३	१६५	पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमा- णेण केवडिया, संखेज्जा ।	४६२
१५६	असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पि- णि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।	४५३	१६६	पम्मलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठि दव्व- पमाणेण केवडिया, सणिपपिं- दियतिरिक्खजोणिणीणं संखेज्ज- दिभागे ।	४६२
१५७	खेत्तेण चक्खुदंसणीसु मिच्छा- इट्ठिहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ।	४५३	१६७	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति ओघं ।	४६३
			१६८	पमत्त-अप्पमत्तसंजदा दव्वपमा- णेण केवडिया, संखेज्जा ।	४६३
			१६९	सुक्कलेस्सिएसु मिच्छाइट्ठिप्प- हुडि जाव संजदासंजदा त्ति	

सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ	सूत्र संख्या	सूत्र	पृष्ठ
	द्वयपरमाणेण केवडिया, प- लिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । एदेहि पलिदोवममवहिरदि अंतो- मुहुत्तेण । ४६३		१८०	उवसमसम्माइट्ठीसु असंजदस- म्माइट्ठि-संजदासंजदा ओघं । ४७६	
१७०	पमत्त-अप्पमत्तसंजदा द्वयपरमा- णेण केवडिया, संखेज्जा । ४६५		१८१	पमत्तसंजदप्पहुडि जाव उवसंत- कसायवीदरागल्लदुमत्था त्ति द- व्वपरमाणेण केवडिया, संखेज्जा । ४७७	
१७१	अपुव्वकरणप्पहुडि जाव सजोगि- केवलि त्ति ओघं । ४६५		१८२	सासणसम्माइट्ठी ओघं । ४७७	
१७२	भवियाणुवादेण भवसिद्धिएसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजो- गिकेवलि त्ति ओघं । ४७२		१८३	सम्माभिच्छाइट्ठी ओघं । ४७७	
१७३	अभवसिद्धिया द्वयपरमाणेण के- वडिया, अणंता । ४७२		१८४	मिच्छाइट्ठी ओघं । ४७७	
१७४	सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीसु असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं । ४७४		१८५	सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छा- इट्ठी द्वयपरमाणेण केवडिया, देवहिं सादिरेंयं । ४८२	
१७५	खइयसम्माइट्ठीसु असंजदसम्मा- इट्ठी ओघं । ४७४		१८६	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खी- णकसायवीदरागल्लदुमत्था त्ति ओघं । ४८२	
१७६	संजदासंजदप्पहुडि जाव उवसंत- कसायवीदरागल्लदुमत्था द्वय- परमाणेण केवडिया, संखेज्जा । ४७४		१८७	असण्णी द्वयपरमाणेण केवडिया, अणंता । ४८२	
१७७	चउण्हं खवा अजोगिकेवली ओघं । ४७५		१८८	अणंताणंताहि ओसप्पिणि-उस्स- प्पिणीहि ण अवहिरंति कालेण । ४८३	
१७८	सजोगिकेवली ओघं । ४७६		१८९	खेत्तेण अणंताणंता लोणा । ४८३	
१७९	वेदगसम्माइट्ठीसु असंजदसम्मा- इट्ठिप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं । ४७६		१९०	आहाराणुवादेण आहारएसु मि- च्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगि- केवलि त्ति ओघं । ४८३	
			१९२	अणाहारएसु कम्मइयकायजोगि- भंगो । ४८४	
			१९२	अजोगिकेवली ओघं । ४८५	

## २ अवतरण-गाथा-सूची ।

क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अन्यत्र कहाँ	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ अन्यत्र कहाँ
३४	अट्टत्तिसल्लवा	६६ गो. जी. ५०५	८	नामं दृवणा दवियं...मर्ण-	११
४८	अट्टेव सयसहस्सा अट्टा-	९६ गो. जी. ६२९	५७	नामं दृवणा दवियं...मसं-	१२३
४९	अट्टेव सयसहस्सा णव-	९७	४१	तिगहिय-सद् णवणउदी	९० गो. जी. ६२५
३५	अट्टस्स अणलस्सस्स य	६६ गो. जी. टीका, आदि.	३६	तिणिण सहस्सा सत्त य	६६ अट्ट. आदि.
१२	अवगयणिवारणट्ठं	१७	४५	तिसदिं वदंति केई	९४ गो. जी. ६२६
५९	अपगयणिवारणट्ठं	१२६	७०	तेरस कोडी देसे वाव	२५४ गो. जी. ६४२
१	अरसमरुवमगंधं	२ प्रवच. आदि.	६९	तेरह कोडी देसे पण्णा-	२५२
२९	अवगयणरासिगुणिदो	४८	६८	तेरह कोडी देसे वाव-	२५२ गो. जी. ६४२
२४	अवहारवट्ठिरुवा	४६	१९	धम्ममाधम्मागासा	२९
२५	अवहारविसेलेण य	४६	६२	धम्ममाधम्मा लोगा	१२९
१०	आगमो ह्याप्तवचन-	१२ अट्ट. टीका	३	नयोपनयैकान्तानां	५ आ मी. १०७
३३	आवलि असंखसमया	६५ गो. जी. ५७४	५	नानात्मतामप्रजहत्तदेक-	६ युक्त्यनु. ५०
७७	आवलिपाप वग्गो	३५५	३०	पक्खेवरासिगुणिदो	४९
४४	उत्तरदलहयगच्छे	९४	३८	पण्डी च सहस्सा	८८
४७	एक्केक्कगुणट्ठाणे	९५	२२	पत्थेण कोद्वेण य	३२
४	एयदवियमि जे	६ गो. जी. आदि.	२०	पत्थो तिहा विहत्तो	२९
२१	कालो तिहा विहत्तो	२९	६५	पल्लो सायर-सुई	१३२ त्रि. सा. ९२
७१	गयणट्ठणयकसाया	२२५	२	पुढवी जलं च छाया	३ गो. जी. आदि.
४६	चउत्तरतिणिणसयं	९४	९	पूर्वापरविरुद्धान्दे-	१२
५२	चउसट्ठ छन्व सया	९९	५८	,,	१२३
५६	छक्कादी छक्कंता	१०१	४०	पंचसय बारसुत्तर-	८८
७८	जगसेदीप वग्गो	३५६	५४	पंचेव सयसहस्सा...उण-	१००
६०	जत्थ जहा जाणेउजो	१२६	५५	पंचेव सयसहस्सा...ते-	१०१
१३	जत्थ बहू जाणेउजो	१७	१४	प्रमाणनयनिक्षेपे-	१७
३१	जे अहिया अवहारे	४९	६१	,,	१२६
३२	जे ऊणा अवहारे	४९	७	बहिरर्थो बहुव्रीहिः	७
१५	ज्ञानं प्रमाणमित्याहु-	१८ लघीय ६, २.	६	बहुव्रीह्यव्ययीभावो	६
५०	णव चेव सयसहस्सा	९७	७६	बीजे जोणीभूदे	३४८
			११	रागाद्वा द्वेषाद्वा मोहाद्वा	१२



क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहां	क्रम संख्या	गाथा	पृष्ठ	अन्यत्र कहां
७५	रासिविसेसेणवह्नि-	३४२		७३	सत्तसहस्रसडसिदिहि	२५६	
२६	लद्धविसेसच्छिण्णं	४६		५१	सत्तादी अटुंता	९८ गो. जी. ६६३	
२७	लद्धतरसंगुणिदे	४७		७९	सत्तादी छक्कंता	४५०	
२३	लोगागासपदेसे	३३		७४	साहारणमाहारो	३३२ गो. जी. १९२	
४३	वत्तीसमट्टदालं	९३ गो. जी. ६२८		१६	सिद्धा णिगोदजीवा	२६ ति. प. आदि.	
३७	वत्तीस सोलस चत्तारि	८७		१७	सुहुमो य हवदि...हवदि	२७ वि. भा.	
६६	वारस दस अट्टेव य	१६७		६३	सुहुमो य हवदि...जायदे	१३०	
६७	,,	२०१		१८	सुहुमं तु हवदि...हवदि	२८	
३९	विसहस्रं अडयाळं	८८		६४	सुहुमं तु हवदि...जायदे	१३०	
५३	वे कोडि सत्तवीसा	१००		४२	सोलसयं चउवीसं	९१ गो. जी. ६२७	
७२	सत्त णव सुण्ण पंच	२५६		२८	हारान्तरहतहारा-	४७	

### ३ न्यायोक्तियां ।

सूचना—न्यायशास्त्रके पश्चात् १, ३ संख्या भागसूचक और शेष संख्याएं पृष्ठसूचक हैं ।

भाग पृष्ठ	भाग पृष्ठ
१ अग्निरिव माणवकोऽग्निः । १, २८	१६ भूतपूर्वगीतन्यायसमाश्रयणात् । १, २६३
२ कज्जणानत्तादो कारणणाणस्त-	१७ भूतपूर्वगीत । १, १६६
मणुमाणिज्जदि । १, २१९	१८ भूतपूर्ववगइ । १, १२९
३ कारणकम्माणुसारी कज्जकमो । १, २१८	१९ भूतपूर्ववगण । १, २५
४ कारणधर्मस्य कार्यानुवृत्तिः । १, २३७	२० यथोद्देशस्तथा निर्देशः । १, १६१
५ कारणानुरूपं कार्यम् । १, २७०	२१ यद्येकशब्देन न जानाति ततोऽ-
६ जहा उद्देशो तथा णिद्देशो । ३, १०-३१३-३१५	न्येनापि शब्देन ज्ञापयितव्यः । १, ३२
७ जं धूलं अप्पवण्णणीयं तं पुब्ब-	२२ रूढितन्त्रा व्युत्पत्तिः । १, १४०
मेव भाणियव्वं । ३, २७-१३०	२३ वक्तुमामाण्याद्वचनप्रामा-
८ नदीस्रोतोऽन्याय । १, १८०	ण्यम् । ३, ११
९ नहि प्रमाणं प्रमाणान्तरमपेक्षते- १, २०४	२४ व्याख्यानतो विशेषप्रतिपत्तिः । ३, १८
१० न हि स्वभावाः परपर्यनु-	सति संप्रवे व्यभिचारे च
योगाहः । १, २९६	विशेषणमर्थवद्भवति । १, १८५
११ नागमस्तर्कगोचरः । १, ३०४	२५ सव्वकालमवद्विदरासीणं वया-
१२ पमाणेण पमाणाविरोहिणा	णुसारिणा आपण होदव्वं । ३, १२०
होदव्वं । १, २१७	२६ सामान्यचोदनाश्च विशेषव-
१३ परिशेषन्याय १, ४२ १५७	तिष्ठन्ते । १, १४०
१४ प्रतिपाद्यस्य बुभुत्तिसतार्थविषय-	२७ सिद्धासिद्धाश्रया हि कथामार्गाः । १, ३४९
निर्णयोत्पादनं वक्तृवचंसः	२८ संते संप्रवे विग्रहिचारे च विसे-
फलम् । १, ९२३	सणमत्यवन्तं भवदि । १, २६२-३३१
१५ भाविनि भूतवत् (उपचारः) १, १८१	२९ सुपरिख्या हिययणिबुद्धकरा । १, ७०



## ४ ग्रन्थोल्लेख ।

भाग पृष्ठ

### १ अप्पाबहुग सुत्त

- १ 'उच्चसमसम्माइट्ठी थोवा । खइयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा । वेदयसम्माइट्ठी असंखेज्जगुणा' ति अप्पाबहुगसुत्तादो णव्वदे । ३ ६८
- २ 'तेइंदियअपज्जत्तरासीदो खउरिंदियरासी विसेसहीणो' ति वुत्तअप्पाबहुगसुत्तादो । ××× पदे पि अप्पाबहुगसुत्तादो चेव णव्वदे । ३ ३२१
- ३ 'सव्वथोवा णुंसयवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो । इत्थिवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा । पुरिसवेदअसंजदसम्माइट्ठिणो असंखेज्जगुणा' इदि अप्पाबहुगसुत्तादो कारणस्स थोवत्तणं जाणिज्जदे । ३ २६१
- ४ अण्णहा अप्पाबहुगसुत्तेण सह विरोहादो । ३ २७३

### २ कसायपाहुड, पाहुडसुत्त

- १ कसायपाहुडउवपसो पुण अट्ठकसाएसु खीणेषु पच्छा अंतोसुहुत्तं गंतूण सोलस कम्माणि खविज्जंति ति । १ २१७
- २ आइरियकहियाणं ×× कसायपाहुडाणं । १ २२१
- ३ 'अणंतरे पच्छदो य मिच्छत्तं' इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो । २ ५६६

### ३ कालसूत्र ( कालासुयोग )

- १ कालसूत्रेण सह विरोधः किञ्च भवेदिति चेन्न, तत्र क्षयोपशमस्य प्राधान्यात् । १ १४२
- २ तो एदाओ दुविहसंजदरासीओ सांतराओ हवंति । ण च एवे, कालाणिओगे एदासिं गिरंतरत्तुवलेभाओ । ३ ४४८

### ४ खुदाबंध

- १ 'पंखिंदियतिरिक्खजोणिणीहिंतो वाणवेंतरदेवा संखेज्जगुणा, तत्थेव देवीओ संखेज्जगुणाओ' पदम्मादो खुदाबंधसुत्तादो जाणिज्जदे । ३ २३१
- २ 'मणुसगईए मणुसेहि रुवं पक्खित्तएहि सेढी अवहिरदि अंगुलवग्गमूलं तवियवग्गमूलगुणिदेण' इदि खुदाबंधसुत्तादो । ३ २४९
- ३ 'ईसाणक्कप्पवासियदेवाणमुवरि तस्मिं चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ । तवो सोहम्मक्कप्पवासियदेवा संखेज्जगुणा । तस्मिं चेव देवीओ संखेज्जगुणाओ । पदेमाए पुदवीए णेरइया असंखेज्जगुणा । भवणवासियदेवा असंखेज्जगुणा ।

देवीओ संखेज्जगुणाओ । पंचिदियतिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ । वाण-  
वेंतरदेवा संखेज्जगुणा । देवीओ संखेज्जगुणाओ । जोइसियदेवा संखेज्जगुणा ।  
देवीओ संखेज्जगुणाओ' त्ति एदम्हादो खुदाबंधसुत्तादो जाणिज्जे जहा देवाणं  
संखेज्जा भागा देवीओ होंति ।

३ ४१४

४ खुदाबंधे वि घणधारुपणविकखंभसूईणं पादोलंभादो वा ।

३ २७९

५ खुदाबंधुवसंहारजीवट्टाणस्स मिच्छाइट्ठिविक्खंभसूईणं सामणविकखंभ-  
सूचिसमाणत्तविरोहा । एवं खुदाबंधमिह वुत्तसव्वअवहारकाला जीवट्टाणे  
सादिरेया वत्तव्वा ।

३ २७९

६ अवसेसिदमणुसरासिपरुवणादो जुत्तं खुदाबंधमिह भागलद्धादो एगरुवस्स  
अवणयणं ।

३ २४९

७ संपहि खुदाबंधेण सामण्णेण जीवपमाणपरुवण जाओ विक्खंभसूईओ  
××× इदि एसा खुदाबंधे ××× खुदाबंधे उत्ता ××× खुदाबंधे वुत्ता ××× ।  
तम्हा एत्थ वुत्ताविक्खंभसूईहि ऊणियाहि खुदाबंधवुत्ताविक्खंभसूईहि वा अधि-  
याहि होदव्वमिदि खोदगो भणदि । एत्थ परिहारो वुत्तवे । जीवट्टाणवुत्ताविक्खंभ-  
सूईओ संपुण्णाओ, खुदाबंधमिह वुत्ताविक्खंभसूईओ साधियाओ ।

३ २७४

८ खुदाबंधमिह वुत्ताविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ-किण्ण होंति ? ××× अहवा  
एत्थ वुत्ताविक्खंभसूईओ देसूणाओ, खुदाबंधमिह वुत्ताविक्खंभसूईओ संपुण्णाओ ।

३ २७५

#### ५ जीवट्टाण

१ जीवट्टाणमिच्छाइट्ठिविक्खंभसूचिपादो वि खुदाबंधसामणविकखंभसूचि-  
पादेण समाणो ।

३ २७९

२ एत्थ पुण जीवट्टाणमिह मिच्छत्तविलेसिदजीवपमाणपरुवणे कीरमाणे  
रुवाहियतेरसगुणट्टाणमेत्तेण अवणयणरासिणा होदव्वमिदि ।

३ २५०

३ एत्थ वि जीवट्टाणे ×× वुत्ताओ ।

३ २७८

#### ६ तत्वार्थभाष्य

१ उक्तं च तत्वार्थभाष्ये—उपपादो जन्म प्रयोजनमेवां त इमे औषपादिकाः । १ १०३

#### ७ तत्वार्थसूत्र

१ 'वनस्पत्यन्तानामेकम्' इति तत्वार्थसूत्राद्वा ।

१ २३९

१ 'कृमिपिपीलिकाभ्रमरमनुष्यादीनामेकैकवृद्धानि' इति अस्मात्तत्वार्थसूत्राद्वा । १ २५८

#### ८ तिलोपपणत्ती

१ 'दुगुण-दुगुणो दुवग्गो गिरंतरो तिरियल्लो' त्ति तिलोपपणत्तिसुत्तादो । ३ ३६

२ जोइसियभगदरसुत्तादो त्रंदाइच्चविषयमाणपरुवयतिलोपपणत्तिसुत्तादो च । ३ ३६

## ९ परियम्म

- १ 'जम्हि जम्हि अणंताणंतयं मग्गिज्जदि तम्हि तस्मि अजहणमणुक्कस्सअणंता-  
णंतस्सेव गहणं' इदि परियम्मवयणादो । ३ १९
- २ 'जहणअणंताणंतं वग्गिज्जमाणे जहणअणंताणंतस्स हेट्ठिमवग्गणट्ठणेहिंदो  
उवरि अणंतगुणवग्गणट्ठणाणि गंतूण सव्वजीवरासिवग्गसल्लागा उप्पज्जदि' ति  
परियम्मे वुत्तं । ३ २४
- ३ ण च तद्विषयवारवग्गिदल्लं वग्गिदरासिवग्गसल्लागाओ हेट्ठिमवग्गणट्ठणेहिंदो  
उवरि परियम्मउत्तअणंतगुणवग्गणट्ठणाणि गंतूणुप्पणाओ । ३ २४
- ४ 'अणंताणंतविसप्प अजहणमणुक्कस्सअणंताणंतेणेव गुणगारेण भागद्वारेण  
वि होव्वं' इदि परियम्मवयणादो । ३ २५
- ५ 'जत्तियाणि दीवसागररूवाणि जंबूदीवछेदणाणि च रूवाहियाणि' ति परि-  
यम्मसुत्तेण सह विरुज्झइ । ३ ३६
- ६ जं तं गणणासंखेज्जयं तं परियम्मे वुत्तं । ३ ९९
- ७ 'जम्हि जम्हि असंखेज्जासंखेज्जयं मग्गिज्जदि तम्हि तस्मि अजहणमणु-  
क्कस्सअसंखेज्जासंखेज्जस्सेव गहणं भवदि' इदि परियम्मवयणादो । ३ १२७
- ८ 'अट्ठरूवं वग्गिज्जमाणे वग्गिज्जमाणे असंखेज्जाणि वग्गणट्ठणाणि गंतूण सोह-  
म्मीसाणविकलंभसूर्ह उप्पज्जदि । सा सइ वग्गिदा णेरइयविकलंभसूर्ह हवदि । सा  
सइ वग्गिदा भवणवासियविकलंभसूर्ह हवदि । सा सइ वग्गिदा घणंगुलो हवदि'  
त्ति परियम्मवयणादो । ३ १३४
- ९ एदांसि अवहारकालपरुवयगाहासुत्तादो वा परियम्मपमाणादो वा जाणिज्जे । ३ २०१
- १० परियम्मादो असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ सेहीए पमाणमवगदमिदि वे  
ण, एदस्स सुत्तस्स बलेण परियम्मपबुत्तीदो । ३ २६३
- ११ परियम्मवयणादो । ३ ३३७
- १२ परियम्मवयणादो । ३ ३३८
- १३ ण च परियम्मेण सह विरोहो, तस्स तदुद्देशपदुप्पायणे वावारादो । ३ ३३८
- १४ ण परियम्मदो वगत्तसिद्धी, तस्स तेउक्काइयअद्धच्छेदणपहि अणेत्ये-  
यत्तादो । ३ ३३९

## १० पिंडिया

उत्तं च पिंडियाए—

१ लेस्सा य दव्व-भावं कम्मं णोकम्ममिस्सयं दव्वं ।

जीवस्स भावलेस्सा परिणामो अप्पणो जो सो ॥

२ ७८८

## ११ वर्गणासूत्र

१ कथसेतदवगम्यते ? वर्गणासूत्रात् । किं तद्वर्गणासूत्रमिति चेदुच्यते १ २९०

१२ वियाहपण्णत्ति

१ लोगो वादपदिट्ठिदो त्ति वियाहपण्णत्तीवयणादो । ३ ३५

१३ वेयणासुत्त, वेदनाक्षेत्रविधान

१ जो मच्छो जोयणसहसिसओ सयंभूरमणसमुहस्स बाहिरिल्लप तडे वेयण-  
समुग्घापण समुहदो काउलेस्सियाप लग्गो त्ति एदेण वेयणासुत्तेण सह विरोहो ३ ३७

२ तत्कुतोऽवसीयत इवि चेद्वेदनाक्षेत्रविधानसुत्तात् । तद्यथा..... । १ २५१

३ ण, बादरेइंदियओगाहणादो सुहुमेइंदियओगाहणाए वेदणस्सेत्तविहाणादो  
बहुत्तोचलंभा । ३ ३३०

४ सुहुमेइंदियओगाहणादो बादरेइंदियओगाहणाए वेदणस्सेत्तविहाणसुत्तादो  
थोवत्तुचलंभा । ३ ३३१

१४ सन्मातिवृत्त

१ णामं ठवणा दविण त्ति एस दब्बट्टियस्स णिक्खेवो ।

२ भावो दु पज्जवट्टियपरुवणा एस परमत्थो ।

३ अणेण सम्मइसुत्तेण सह कधमिदं वक्खानं ण विरुज्जदे ? १ १५

१५ संतकम्मपाहुड

१ एवं काऊण××× सोलस पयडीओ खवेदि । तदो अंतोमुहुत्तं गंतूण पच्च-  
क्खणापच्चक्खणावावरणकोध-माण माया-लोभे अकमेण खवेदि । एसो संतकम्म- १ २१७

२ पाहुडउवएसो

३ आइरियकहियाणं संतकम्म-कसायपाहुडाणं १ २२१

१६ संतसुत्त ( परुवणा )

१ अपज्जत्तकाले पंचिंदियपाणाणमत्थित्तपदुप्पायणसंतसुत्तदंसणादो २ ६५८

## ५ परिभाषिक शब्दसूची ।

सूचना— जो शब्द ग्रंथमें अनेकवार आये हैं उनके प्रायः प्रथम एक दो पृष्ठांक ही यहाँ दिये गये हैं ।

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
अ		अप्रदेशिक	३
अजीवद्रव्य	२	अप्रदेशिकानन्त	१२४
अतीतप्रस्थ	२९	अप्रदेशिकासंख्यात	१५, १६
अधर्मद्रव्य	३	अरूपी अजीवद्रव्य	२, ३
अधस्तनविकल्प	५२, ७४	अर्धच्छेद	२१
अधिगम	३९	अर्धच्छेदशलाका	३३५
अधस्तनविरलन	१६५, १७९	अर्धपुद्गलपरिवर्तनकाल	२६, २६७
अनन्त	११, १२, १५, २६७, २६८	अल्पबहुत्व	११४, २०८
अनन्तगुण	२२, २९	अवसर्पिणी	१८
अनन्तगुणहीन	९१, २१, २२	अवहार	४६, ४७, ४८
अनन्तानन्त	१८, १९	अवहारकाल	१६४, १६७
अनन्तप्रदेशिक	३	अवहारकालप्रक्षेपशलाका	१६५, १६६, १७१
असंख्येयप्रदेशिक	२	अवहारकालशलाका	१६५
अनन्तिमभाग	६१, ६२	अवहारविशेष	४६
अनागत ( काल )	२९	अवहारार्थ	८७
अनागतप्रस्थ	२९	अव्ययीभावसमास	७
अनुगम	८	अष्टरूपधारा ( घनधारा )	५७
अन्तर्मुहूर्त	६७, ७०	असंख्यात	१२१
अन्योन्यगुणकारशलाका	३३४	असंख्यातासंख्यात	१२७
अन्योन्याभ्यास	२०, ११५, १९९	असंख्येयगुण	२१, ६८
अपनयन ( राशि )	४८	असंख्येयगुणहीन	२१
अपनेय	४९	असंख्येयप्रदेशिक	३८
अपर्याप्ति	३३१	असंख्येयभाग	६३, ६८
अपवाहज्जमाण	९२	आ	
अपहृत	४२	आकाशद्रव्य	३

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
आगम	१२, १२३	कालद्रव्य	३
आगमद्रव्यानन्त	१२	कालभावप्रमाण	३९
आगमद्रव्यासंख्यात	१२३	कृतयुग्गराशि	२४९
आगमभावानन्त	१२३	क्षेत्रभावप्रमाण	३९
आगमभावासंख्यात	१२५	कोटाकोटी	२५५
आदि ( धन )	९१, ९३, ९४	ख	
आदेश	१, १०	खंडित	३९, ४१, ७१
आप्त	१२	ग	
आयाम	१९९, २००, २४५	गणनानन्त	१५, १८
आवलिका	६५, ६७	गणनासंख्यात	१२४, १२६
इ		गृहीत	५४, ५७
इच्छा ( राशि )	१८७, १९०, १९१	गृहीतगुणाकार	५४, ६१
उ		गृहीतगृहीत	५४, ५९
उच्छ्वास	६५, ६६, ६७	घ	
उत्तर ( धन )	९१, ९३, ९४	घनपल्य	८०, ८१
उत्तरपडिवत्ती	९४, ९९	घनांगुल	१३२, १३९
उत्सर्पिणी	१८	घनाघनधारा	५३, ५८
उपरिमवर्ग	२१, २२, ५२	च	
उपरिमविकल्प	५४, ७७	चतुष्कलेव	७८
उपरिमविरलन	१६५, १७९	छ	
उभयानन्त	१६	छद्मद्रव्यप्रक्षितराशि	१९, २६, १२९
उभयासंख्यात	१२५	ज	
ए		जगप्रतर	१३२, १४२
एकानन्त	१६	जघन्य अनन्तानन्त	२१
एकासंख्यात	१२५	जघन्य परीतानन्त	२१
ओ		जगध्रेणी	१३५, १४२, १७७
ओधनिर्वेश	१, ९	जाति	२५०
ओज ( राशि )	२४९	जातिस्मरण	१५७
क		जीवद्रव्य	२
कर्मधारयसमास	७	जंबूद्वीप	
कलिओजराशि	२४९	ज्ञायकशरीरद्रव्यानन्त	१३
कल्पकाल	१३१, ३५९	ज्ञायकशरीरद्रव्यासंख्यात	१२३
कारण	४३, ७२	त	
		तत्पुरुषसमास	७

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
तद्व्यतिरिक्तकर्मानन्त	१६	निगोदजीव	३५७
तद्व्यतिरिक्तकर्मासंख्यात	१२४	निक्षेप	१७
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यानन्त	१५	निरुक्ति	५१, ७३
तद्व्यतिरिक्तद्रव्यासंख्यात	१२४	निर्देश	१, ८, ९
तद्व्यतिरिक्तनोर्कमानन्त	१५	नोआगम	१३, १२३
तद्व्यतिरिक्तनोर्कमासंख्यात	१२४	नोआगमद्रव्यानन्त	१३
तेजोऽराशि	२४९	नोआगमद्रव्यासंख्यात	१२३
त्रिकच्छेद	७८	नोआगमभावानन्त	१६
त्रैराशिक	९५, ९६, १००	नोआगममावासंख्यात	१२५
		न्यास	१८
द		प	
दक्षिणप्रतिपत्ति	९४, ९८	परस्थान ( अल्पबहुत्व )	२०८
दिवस	६७	पर्याप्त	३३१
देय	२०	परिह्राणि ( रूप )	१८७
द्रव्य	२, ५, ६	परीतानन्त	१८
द्रव्यप्रमाण	१०	पल्योपम	६३, १३२
द्रव्यप्रमाणानुगम	१, ८	पुद्गलद्रव्य	३
द्रव्यभावप्रमाण	३९	पूर्वफल	४९
द्रव्यानन्त	१२	पृथक्त्व	८९
द्रव्यानुयोग	१	पृथिवीकायिक	३३०
द्रव्यासंख्यात	१२३	पञ्चच्छेद	७८
द्विगुणादिकरण	७७, ८१, ११८	प्रक्षेप	४८, ४९, १८७
द्विरूपधारा	५२	प्रक्षेपराशि	४९
द्विगुसमास	७	प्रक्षेपशालाका	१५९
द्वन्द्वसमास	७	प्रख्य	९४
ध		प्रतरपल्य	
धर्मद्रव्य	३	प्रतरांगुल	७८, ७९, ८०
धुवराशि	४१	प्रत्येकशरीर	३३१, ३३३
		प्रमाण	४, १८
न		प्रमाण ( परिमाण )	४०, ४२, ७२
नय	१८	प्रमाण ( राशि )	१८७, १९४
नामानन्त	११	प्रबाह्यमान ( पवाहजमान )	९२
नामासंख्यात	१२३	प्राण	६६
नालिका	६५	फ	
नाली	६६	फल ( राशि )	१८७, १९०

परिभाषिक शब्दसूची

( १९ )

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
ब		लब्धभवहार	४६
बहुव्रीहिसमास	७	लब्धविशेष	४६
बादर	३३०, ३३१	लब्धान्तर	४७
बादरनिगोदप्रतिष्ठित	३४८	लोक	३३, १३२
बादरयुग्मराशि	२४९	लोकप्रतर	१३३
		लोकप्रदेशपरिमाण	३
भ		व	
भज्यमानराशि	४७	वनस्पतिकायिक	३५७
भव्यानन्त	१४	वर्गमूल	१३३, १३४
भव्यासंख्यात	१२४	वर्गशलाका	२१, ३३५,
भागलब्ध	३८, ३९	वर्गस्थान	१९
भागहार	३९, ४८	वर्गितसंवर्गित	३३५
भागाभाग	१०१, २०७	वर्गितसंवर्गितराशि	१९
भाजित	३९, ४१	वर्तमानप्रस्थ	२९
भाज्यशेष	४७	वस्तु	६
भावप्रमाण	३२, ३९	वादाळ	२५५
भावानन्त	१६	विकल्प	५२, ७४
भिन्नमुहूर्त	६६, ६७	विरलन	१९
भंग	२०२, २०३	विरलित	४०, ४२
		विष्कंभसूची	१३१, १३३, १३८
म		विस्तारानन्त	१६
मानुषक्षेत्र	२५५, २५६	विस्तारासंख्यात	१२५
मुहूर्त	६६	वृद्धि ( रूप )	४६, १८७
य		श	
युक्तानन्त	१८	शलाका	३१
युग्म ( राशि )	२४९	शलाकाराशि	३३५, ३३६
		शाश्वतानन्त	१५
र		शाश्वतासंख्यात	१२४
रज्जु	३३	श्रेणी	३३, १४२
राशि	२४९	स	
राशिविशेष	३४२	समकरण	१०७
रूपीअजीवद्रव्य	३		
ल			
लव	६५		



( २० )

परिशिष्ट

शब्द	पृष्ठ	शब्द	पृष्ठ
समास	६	संख्या	७
समास ( जोड़ )	२०३	संख्यात	२६७
सर्वपरस्थान	११४, २०८	संख्यान	५, ६
सर्वानन्त	१६	संदिष्टि	८७, १९७
सर्वसंख्यात	१२५	स्वस्थान अल्प बहुत्व	११४, २०८
सागर	१३२	स्थापनासंख्यात	११
साधारणशरीर	३३३	स्तोक	१२३
सूक्ष्म	३३१		६५
सूच्यंगुल	१३२, १३५	ह	
संकलनसूत्र	९१, ९३	द्वार	४७
		द्वारान्तर	४७

## ६ मूडबिंद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके मिलान ।

अ — मूडबिंद्रीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो अर्थ व पाठ्युद्धिकी दृष्टिसे विशेषता रखते हैं, अतएव ग्राह्य हैं ।

### भाग १.

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
९	२	सयलत्थवत्थूणं	सयलत्थवत्थाणं
११	१३	अर्थ-वाचक	पदार्थोंकी अवस्थाके वाचक
१८	४	समवाय-णिमित्तं	समवायद्वन्वणिमित्तं
३४	७	मङ्गलप्राप्तिः	मङ्गलत्वप्राप्तिः
३८	२	मङ्गलम् । तन्न,	मङ्गलत्वम् । न
३९	१०	देहिंती कय-	×
४०	७	अव्योच्छित्ति य	अव्योच्छित्ति ( ची )
४१	६	णिवद्धदेवदा	कयदेवदा
४१	१७	निबद्ध कर दिया	स्वयं किया

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

॥	७	कथदेवदा	णिवद्धदेवदा
॥	१८-१९	देवताको....जाता है, )	अन्यकृत देवतानमस्कार निबद्ध किया जाता है,
४९	७	-साह्वण-	-सोह्वण-
४९	२०	साधन अर्थात् व्रतोंकी रक्षा	शोधन अर्थात् व्रतोंकी शुद्धि
५२	८	रत्नभोगस्य	रत्नभागस्य
६३	७	-प्राप्त्यतिशय-	प्राप्तातिशय
६३	१७	निश्चय व्यवहाररूप....प्राप्त हुई	निश्चय और व्यवहारसे प्राप्त अतिशयरूप
६४	३	चउक्क-घाह-तिण	तदेव घाहतिण
॥	१४	चार घातिया कर्मोंमेंसे	x
६५	६	तेण गोदमेण	तेण वि गोदमेण
॥	१४	गौतम गणधरने	गौतम गणधरने भी
६७	४	होहदि त्ति	होहदि त्ति
८०	८	चेव	चेव होंति
८३	११	द्रोष्यत्यदुदुवत्	द्रवति द्रोष्यत्यदुदुवत्
॥	२७	जो	जो वर्तमानमें पर्यायोंको प्राप्त होता है,
८६	५	सन्त्वेते	संतु ते
९७	३	पूजा-विहाणं	पूजादिविधानं
॥	१३	पूजाविधिकां	पूजा आदि विधिका
१०१	५	णेयप्पमाणं	णेयप्पमाण-
॥	१७	ज्ञेयप्रमाण है, क्योंकि ज्ञान-	है, क्योंकि ज्ञेयप्रमाण ज्ञानमात्र
		प्रमाण ही	
१०२	१	धम्मदेसणं	धम्मवदेसणं
१०६	५	समयस्स	ससमयस्स
११०	४	वेइयाणं	वेइया-वंसा
११९	६	संडाणं	संडाण-
॥	१४	नाना प्रकारके....गलाता है	छह प्रकारके संस्थानोंसे युक्त नाना प्रकारके शरीरोंसे पूरित होता है और गलाता है
१२३	८	अद्धवमं पणिधिकण्णे	अद्धवसंपणिधिकण्णे
॥	१०	वज्झण	वुज्झण
१४६	४	विक्रमेणोपलंभात्	उक्रमेणोपलंभात्

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

१५१	४	अद्धानमनुरक्तता	अद्धानमुक्तता
१५२	१	अवधारणं	अवधारणं
१७१	८	जायदि	जादि
१७१	९	समल्लियइ	समल्लियइ
१७१	२४	वेदकं सम्यक्त्वसे मेल कर लेता है	वेदकं सम्यक्त्वको प्राप्त होता है
१९४	६	सद्धार्यावयवस्य	सद्धार्यावयवस्य
१९६	६	अपौरुषेयत्वस्य	अपौरुषेयस्य
१९८	७	पुनर्नैवोत्पत्तिरिति	पुनर्नैवोत्पत्तिरिति
२०१	७	पातयति	यातयति
"	२३	गिराता है	यातना देता है
२०३	८	द्व्य-	द्व्य-
२०३	२२	द्रव्य और भावरूप	द्व्य त्वभाववाले
२१२	४	अणेणैव	अणेण
२१७	४	संखेज्जदि-	संखेज्जे
२२०	६	परिमाणत्तादो	परिणामत्तादो
२४३	२	उत्तिरंग-	उत्तिग ( उत्तिग )
"	४	घ्राणमिति	घ्राणमिति चेत्
२४८	२	भवेदिति	भवति
२५९	६	संश्लिप्त इति	संश्लिप्तः, अमनस्काः असंश्लिप्त इति
"	१९	कहते हैं	और मनरहित जीवोंको असंज्ञी कहते हैं
२६०	२	निष्पत्तौ	निष्पत्तेः
२७०	१	कर्मस्कन्धैः	नोकर्मस्कन्धैः
"	१४	कर्मस्कन्धोंके	नोकर्मस्कन्धोंके
२८१	२	सच्चमोसं ति	सच्चमोसं तं
२८७	९	प्रयत्ना-	सप्रयत्ना-
"	३०	प्रयत्न और	प्रयत्नसहित
२९३	१	तत्परित्यक्ता-	परित्यक्ता-
२९५	६	को ह्यौ-	केष्वौ-
३१८	५	भूतपूर्वगत-	भूतपूर्वगति-
३२०	७	ताभ्यां	पताभ्यां
३२१	४	जादि	जांति
"	"	जादि	जांति

पृष्ठ	पंक्ति	पाठ है ।	पाठ चाहिये ।
३२१	५	जादि	जाति
३४१	११	नपुंसकमुभया-	नपुंसक उभया-
३४४	३	अभिलाषे	अभिलाषो
३४९	८	गर्हा	गृह्णा
३४९	३०	गर्हा	गृहि
३६०	१	भेयं च	भेयगयं
३७३	७	सञ्चित्त-	सञ्चित्त-
३७४	६	न,	च
३७७	३	निबंधनावेवाभविष्यतां	निबंधनावभविष्यतां
३८८	५	पीत	तेज
३८९	५	अप्याणमिव	अप्याणं पिव
३९०	४	रायद्वोसो	रायद्वोसा
३९८	३	एकदेशे सत्यविरोधात्	एकदेशोत्पत्यविरोधात्
३९८	१७	एकदेश रहनेमें	एकदेशकी उत्पत्तिमें

## भाग २.

४१५	४	मिच्छाद्वि० सिद्धा० चेदि	मिच्छाद्वि० सिद्धा चेदि
४१९	४	एहंदिआदी	अस्थि एहंदिआदी
४२७	२	भण्णमाणे	ओघे भण्णमाणे
४४४	१	सिद्धमपज्जतं	सिद्धमपज्जत्तं
४४४	२	सरीर-पटुवण-	सरीरादवण ( सरीरादवण )
४६२	६	तिणिण सम्मत्तं	तिणिण सम्मत्ताणि
४६३	४	तिणिण सम्मत्तं	तिणिण सम्मत्ताणि
५१३	५	द्विविस्थिवेदा	द्विविस्थिवेदा पुण
५३४	७	असुह-ति-लेस्साणं गउरवण्णा-	असुह-ति-लेस्साणं धवलवण्णाभावप्पसंगादो,
		भावापत्तीदो ।	कम्मभूमिमिच्छाद्वि० पि अपज्जत्तकाले असुह-
			ति-लेस्साणं गउरवण्णाभावापत्तीदो ।
५३४	२६	भोगभूमियां मनुष्योंके गौर वर्णका	भोगभूमियां मनुष्योंके धवलवर्णके अभानका
			प्रसंग प्राप्त होगा । तथा, अशुभ तीनों लेप्प-
			वाले कर्मभूमियां मिथ्यादृष्टि जीवोंके भी अपर्याप्त
			कालमें गौर वर्णका

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

५३५	९	तेज-पद्म-सुकलेस्साओ भवन्ति । पंच-वर्ण-रस-कागस्स	तेज-पद्म-सुकलेस्साओ भवन्ति । बहुवर्णस्स- जीवसररिस्स कधमेक्कलेस्सा जुज्जदे ? ण, पाधणपद्मासेज्ज ' कसणो कागो ' त्ति पंच- वर्णस्स कागस्स
५३५	२५	तेज, पद्म और शुक्लेस्याएं होती हैं । जैसे पांचों वर्ण और पांचों रसवाले काकके अथवा पांचों वर्णवाले रसोंसे युक्त काकके कृष्ण व्यपदेश	तेज, पद्म और शुक्लेस्याएं होती हैं । शुंका—अनेक वर्णवाले जीवके शरीरके एक लेस्या कैसे बन सकती है ? समाधान—नहीं, क्योंकि, प्राधान्यपदकी अपेक्षा ' काक कृष्ण है ' इसप्रकार पांचों वर्णोंसे युक्त काकके जैसे कृष्ण व्यपदेश
५६८	६	एवं देवगदी	एवं देवगदी समतो ( ता )
५८९	३	तिरिक्खगदीओ त्ति	तिरिक्खगदि त्ति
५९०	१०	एवं विदियमग्गणा	एवमिदियमग्गणा
५९८	४	अपज्जत्ता दुविद्वा	अपज्जत्तमेयेण दुविद्वा
६०९	१२	आयारभावे मट्ठियाए	आधारभूमिमट्ठियाए
६१०	१२	आधारके होनेपर मट्ठीके	आधारभूत भूमिकी मट्ठीके
६११	३	बादरकाइयाणं	बादरतेउकाइयाणं
६४८	८	केवलीणं	सयोगकेवलीणं
६४८	२०	केवली जिनके	सयोगिकेवली जिनके
६५३	३	भावगद-पुव्वगई व	भूतपुव्वगई व
६५३	१७	भावमनोगत पूर्वगति अर्थात् भूतपूर्व न्यायके	भूतपूर्वगति न्यायके
६५७	४	मिच्छाइट्ठीणं	मिच्छाइट्ठीणं व'
६५९	२	समणा भवदि	संभवो भवदीदि
६५९	७	प्राणोंका सद्भाव हो जाता है,	प्राणोंका होना संभव है,
६६०	४	वारिद-जीव-पदेसाणं	वा टिदजीवपदेसाणं
६६०	१६	व्याप्त जीवके	स्थित जीवके

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

६६०	५	एवं बंधहरस्स	एवं दहरस्स ( डहरस्स )
"	१८	विशिष्ट बंधको धारण करनेवाले शरीरके	इस छोटे शरीरके
८२३	२	चढमाण	चढमाणणं
८२३	३	उवसमसम्मत्तेण	उवसमसम्मत्ते
"	१५	श्रेणि चढ़नेके पूर्वमें ही परिहार- शुद्धिसंयमके नष्ट हो जाने पर उपशमसम्यक्त्वके साथ परिहार- विशुद्धिसंयमीका	श्रेणिसे उतरनेके पश्चात् ही उपशमसम्यक्त्वके नष्ट हो जाने पर परिहारविशुद्धिसंयमीका ।
८४६	२	पज्जत्तापज्जत्ता आलावा	पज्जत्तापज्जत्ता बे आलावा
"	११	पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप	पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंबन्धी दो आलाप

### भाग ३

१४	३	धनुर्धृतायामेवायं	धनुर्धृतावस्थायामेवायं
२०	३	पुणो	पुणो वि
२६	९	अवट्टाणादो	अव्वट्टाणादो
"	२५	वह पदार्थ प्रमाणसे अवस्थित है ।	प्रमाणसिद्ध पदार्थकी पुनः प्रमाणसे परीक्षा करने पर किसी भी पदार्थकी व्यवस्था नहीं हो सकती है ।
२८	१०	ण अवहिरिज्जति	मा अवहिरिज्जंतु
३०	७	रुवदसपुधत्तं	रुवदसपुधत्तं, रुवदसमपुधत्तं
"	२६	शतप्रयक्त्वरूप	दसपृथक्त्वरूप
३४	४	एति	रासी
"	१५	यह जगच्छ्रेणीका सातवां भाग आता है ।	यह राशि जगच्छ्रेणीके सातवें भागप्रमाण है ।
३६	५	एदस्स समवट्टाणादो ।	एदस्स वक्खणस्स सम्मवट्टाणादो ।
३९	१	णाणपमाणमिदि	णाणं पमाणमिदि

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

३९	१२ अधिगम और ज्ञानप्रमाण ये दोनों	अधिगम, ज्ञान और प्रमाण ये तीनों
३९	२ द्रव्यस्थितिसयाणं	द्रव्यविसयाणं
॥	१५ द्रव्योंके अस्तित्व विषयक	द्रव्यविषयक
३९	५ सद्वियपमाणाभावे	सुद्वियपमाणाभावे
३९	६ अवधारणसिस्साणमभावादे ।	अवधारणसमस्यसिस्साणमभावादे ।
॥	२१ करनेवाले शिष्योंका	करनेमें समर्थ शिष्योंका
३९	६ अधवा एयं	अथवा एवं
॥	२३ अथवा, इस भावप्रमाणका कथन	अथवा, भावप्रमाणका कथन इसप्रकार करना
	करना चाहिये ।	चाहिये ।
४०	१ पगखंडंगहिदे	पगखंडं गहिदे
४४	४ खंडं	दो खंडं
४८	२ अवहारो	अवहारे
५४	४ केण कारणेण ?	केण कारणेण ? जेण
५६	५ सरूवेहि	रूवेहि
५८	२ तिगुणरूवेण	तिगुणिदरूवेणूणेण
६४	१ मिच्छाद्विस्सिव	मिच्छाद्विस्मि व
६५	३ अद्धापरूवणं	अत्थपरूवणं
॥	२४ कालका प्ररूपण	अर्थका प्ररूपण
६७	९ जाव उस्सासो	जावेगुस्सासो
६८	६ अवहारकालो	अवहारकालो आवलियाए
९७	५ परूविदसव्वं संजद-	परूविदसव्वसंजद-
१२५	४ संखातीदावो ।	संखादीदत्तादो ।
१७८	७ असंखेज्जदिभागं	असंखेज्जदिभागं च
१९१	६ -तिणिण-	-तिणिण-तिणिण-
॥	२० तीन संख्याको	तीन तीन संख्याको
१९१	९ अणंतरूपपण-	अणंतरूपपणरूवाणं
२०८	४ असंखेज्जेसु	संखेज्जेसु
॥	१८ असंख्यात खंड	संख्यात खंड
२०८	४ संखेज्जेसु	असंखेज्जेसु
॥	१९ संख्यात खंड	असंख्यात खंड
२०८	७ असंखेज्जेसु	संखेज्जेसु

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

२०८ २२ असंख्यात खंड

संख्यात खंड

२०८ ८ संखेज्जेसु

असंखेज्जेसु

” २३ संख्यात खंड

असंख्यात खंड

२१५ ६ ओघपडिवण्णेहि

ओघगुणपडिवण्णेहि

२३२ ३ भवणादियाणं

भवणादियाणं देवाणं

२७१ २ पडिसेहट्टं ।

पडिसेहट्टं । पदरस्स असंखेज्जदिभागो ते मि-  
च्छाइट्ठी होति त्ति उत्तं ।

” १४ कहा है ।

कहा है । भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव जगप्रतारके  
असंख्यातवै भागप्रमाण हैं, यह इस कथनका  
तात्पर्य है ।

२७५ ६ ओघपरूवणाए

देवओघपरूवणाए

२७६ १ द्ध्वमिच्छाइट्ठिरासिं

देवमिच्छाइट्ठिरासिं

२८३ १० असंखेज्जगुणा

संखेज्जगुणा

” २७ हुए भी वे असंख्यातगुणे

हुए भी वे संख्यातगुणे

२८६ ४ सव्वदेवरासिमसंखेज्जखंडे

सव्वदेवरासि संखेज्जखंडे

” १५ असंख्यात खंड

संख्यात खंड

२९५ ६ सेसमसंखेज्जखंडे

सेसं संखेज्जखंडे

” २२ असंख्यात खंड

संख्यात खंड

२९८ १० भवणवासियदेवे त्ति

भवणवासियदेवेत्ति

” २९ देवियोंके

देवोंके

३६१ ११ उवरिमहेट्ठिमसंखेज्जवियप्पा

उपरिमहेट्ठिमसव्वे वियप्पा

” २५ असंख्यात विकल्प

सर्व विकल्प

३८१ १२ त्ति

वेत्ति

३९८ ५ रासी

रासी सो

४०४ ६ कायजोगरासीओ

कायजोगरासी होदि

४१४ ९ इत्थिवेदअवहारकालस्स भागहारो

इत्थिवेदअवहारकालो

४१९ ६ उवसामगा केवडिया, पवेसेण

उवसामगा द्ध्वपमाणेण केवडिया, पवेसणेण

” १९ आंव कितने हैं ?

जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ?

४२६ ६ भागभागहाररासिम्हि

भागधुवरासिम्हि

” २१ चौथे भागकी भागहार राशिमें

चौथे भागरूप धुवराशिमें



पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

- ४२७ ४ देवगदिशब्दाणं देवगदिकसाश्चद्वाणं  
 ४३० ६ मूलो उवसंतकसायरासी मूलोऽुवसंतकसायरासी  
 ४३६ १०-११ दुविहणाणविरहिय- दुविहणाणविरहिय-  
 ४३६ २८ दोनो प्रकारके ज्ञानोसे दोनों प्रकारके अज्ञानोंसे  
 ४४० ३ खेव तस्मिं खेव  
 ४४२ १ लद्धिसंपण्णरार्षाणं लद्धिसंपण्णरार्षाणं  
 " १२ राशियां बहुत नहीं हो सकती हैं । ऋषि बहुत नहीं हो सकते हैं ।  
 ४४२ ६ सेसमसंखेज्जखंडे सेसमणंतखंडे  
 " २० असंख्यात खंड अनन्त खंड  
 ४४४ २ मदि-सुदअण्णाणि सु मदि-सुदअण्णाणि मिच्छाहट्ठी सु  
 " १४ -ज्ञानी जीवोंमें ज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंमें  
 ४४५ ९ विसेसाहिया २८ । विसेसाहिया २८ । आभिणि-सुदणाणि उवसामगा  
 " २५ अडाईस हैं । मनःपर्ययज्ञानी अप्रम- अडाईस हैं । आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी उप-  
 त्तसंयत जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे शामक जीव अवधिज्ञानी क्षपकोंसे संख्यातगुणे  
 हैं । मतिज्ञानी और श्रुतज्ञानी क्षपक जीव उक्त  
 उपशामकोंसे संख्यातगुणे हैं । मनःपर्ययज्ञानी  
 अप्रमत्तसंयत जीव उक्त क्षपकोंसे  
 ४४६ ३ दुणाणि असंजद- आभिणिणाणि-सुदणाणि अण्णमत्तसंजदा संखे-  
 ज्जगुणा । तत्थेव पमत्तसंजदा संखेज्जगुणा ।  
 दुणाणि असंजद-  
 " १६ अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयतोंसे अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयतोंसे आभिनिबोधिक और  
 श्रुतज्ञानी अप्रमत्तसंयत जीव संख्यातगुणे हैं ।  
 इन्हीं दो ज्ञानोंमें प्रमत्तसंयत जीव उक्त अप्रमत्त-  
 संयतोंसे संख्यातगुणे हैं । इनसे  
 ४४४ ३ चक्खुदंसणट्ठिदीप चक्खुदंसणमिच्छाहट्ठिदीप  
 " १५ चक्षुदर्शनकी चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टियोंकी  
 " ३ असंखेज्जदिभाप चर्क्खिदियपाडि- असंते चर्क्खिदियपाडिवादे  
 भागे

पृष्ठ पंक्ति पाठ है ।

पाठ चाहिये ।

- ४५४ १७ चक्षुदर्शनवाले मिथ्यादृष्टियोंका अव- चूँकि चक्षुश्न्द्रियके प्रतिघातके नहीं रहने पर  
हारकाल सूर्यगुलके असंख्यातवें  
भागरूप आक्षेपका परिहार यह है  
कि चूँकि
- ४६१ ११ तेउलेस्सियअवहारकालो देवतेउलेस्सियअवहारकालो  
,, २६ तेजोलेस्यासे युक्त जीवराशिका तेजोलेस्यासे युक्त देवोंका  
४७३ २ सयलाहरियजयप्पसिद्धादो । सयलाहरियवियप्पसिद्धादो ।  
,, १४ यह सर्व आचार्य जगत्में प्रसिद्ध है । यह कथन सर्व आचार्योंके वचनोंसे सिद्ध है ।  
४७८ ९ मिच्छाइट्टिभजिदत्तव्वगं मिच्छाइट्टिरासिभजिदत्तव्वगं  
४८६ १ खवगा संखेज्जगुणा । खवगां संखेज्जगुणा । सजोगिकेवली आहा-  
रिणो संखेज्जगुणा ।  
,, १३ अप्रमत्तसंयत जीव क्षपकोंसे सयोगिकेवली आहारक जीव क्षपकोंसे संख्यात-  
गुणे हैं । इनसे अप्रमत्तसंयत जीव

ब—मूडविद्रीकी प्रतियोंके ऐसे पाठभेद जो शब्द और अर्थकी दृष्टिसे दोनों शुद्ध हैं, अतएव जो संभवतः प्राचीन प्रतियोंमें वैकल्पिकरूपसे निबद्ध पाये जाते हों ।

## भाग १

- |     |                              |                            |
|-----|------------------------------|----------------------------|
| १३  | २ साह-पसाहा                  | साहुपसाहा                  |
| ३२  | १ किमिति                     | किमर्थ                     |
| ७१  | ६ तदो                        | पुणो                       |
| ९४  | ५ ओरालिय-सरीर-णिज्जरं        | ओरालिय-णिज्जरं             |
| १०८ | ३ स्वेष्टकृदैतिकायन-         | स्विष्टिकृदैतिकायन-        |
| १०८ | ११ स्वेष्टकृत्               | स्विष्टिकृत्               |
| ११० | ४ जिणहरादीणं                 | जिणहराणं                   |
| ११० | १६ जिनालय आदिका              | जिनालयोंका                 |
| ११२ | १ चउण्हमहियाराणमत्थ          | चउण्हमहियाराणमत्थ-         |
| ११२ | १४ चार अधिकारोंका नामनिर्देश | चार अधिकारोंका अर्थनिर्देश |
| ११६ | ६ छ-अहिय-                    | छद्दि अहिय-                |
| "   | ७ वाक्संस्कारकारणं           | संस्कारकारणं               |

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिंद्रीका पाठ
११८	१	साद्यनादीनौपशमिकादीन्	साद्यनादीन् भावान्
११८	१५	सादि और अनादिरूप औपशमिक आदिभावोंकी	सादि और अनादि भावोंकी
१२५	९	णैयव्वा	णायव्वा
„	२३	निषेध कर देना	निषेध जानना
१४७	१	अभावप्रसंगात्	अभावसंजनात्
„	५	इति चेन्न	इति चेत्
„	२२	ऐसी शंका करना ठीक नहीं है, क्योंकि,	क्योंकि,
१५६	६	चपणणीओ	चण्णओ
१५८	५	तेहिंतो	तेहि
१८६	५	तदेकत्वोपपत्तेः	तदेकत्वोक्तेः
„	२०	एकता बन जाती है ।	एकता कही है ।
२०९	१	प्रतिपादकार्पात्	प्रतिपादानार्पात्
२२८	४	मिश्रणमवगम्यते	मिश्रतेहावगम्यते
„	१३	जीवोंके साथ मिश्रण	जीवोंके साथ यहां मिश्रण
२५४	९	-शक्तेर्निमित्तानामासिः	×
„	२६	परिणमन करनेरूप शक्तिसे बने हुए आगत पुद्गलस्कंधोंकी प्राप्तिको	परिणमन करनेकी शक्तिकी पूर्णताको
२५५	२	औदारिकादिशरीरत्रयपरिणाम- शक्त्युपेतानां स्कंधानामावाप्तिः	औदारिकादिपरिणमनशक्तेर्निष्पत्तिः
„	१३	परिणमन करनेवाले औदारिक आदि तीन शरीरोंका शक्तिसे युक्त पुद्गलस्कंधोंकी प्राप्तिको	औदारिक आदि शरीररूप परिणमन करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको
„	४	-ग्रहणशक्त्युत्पत्तेर्निमित्तपुद्गल- प्रचयावाप्तिः	-ग्रहणशक्तेर्निष्पत्तिः
„	१६	ग्रहण करनेरूप शक्तिकी उत्पत्तिके निमित्तभूत पुद्गलप्रचयकी प्राप्तिको	ग्रहण करनेरूप शक्तिकी पूर्णताको
„	६	-निमित्तपुद्गलप्रचयावाप्तिः	×

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्दीका पाठ
२५५	२०	शक्तिकी पूर्णताके निमित्तभूत पुद्गल- प्रचयकी प्राप्तिको	शक्तिकी पूर्णताको
"	८	निमित्तनोर्कर्मपुद्गलप्रचयावाप्तिः	x
"	२३	शक्तिके निमित्तभूत नोर्कर्म पुद्गल- प्रचयकी प्राप्तिको	शक्तिकी पूर्णताको
"	९	मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गल- प्रचयः अनुभूतार्थस्मरणशक्ति- निमित्तः मनःपर्याप्तिः द्रव्य- मनोवष्टम्भेनानुभूतार्थस्मरण- शक्तेरुत्पत्तिर्मनःपर्याप्तिर्वा	मनोवर्गणाभिनिर्गतद्रव्यमनोवष्टम्भेनानुभूत- स्मरणशक्तेरुत्पत्तिः मनःपर्याप्तिः
"	२५	अनुभूत अर्थके स्मरणरूप शक्तिके निमित्तभूत मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे निष्पन्न पुद्गलप्रचयको मनःपर्याप्ति कहते हैं । अथवा, द्रव्यमनके	मनोवर्गणाओंसे निष्पन्न द्रव्यमनके
२५६	३	निष्पत्तेः कारणं	निष्पत्तिः
"	१५	पूर्णताके कारणको	पूर्णताको
२५७	४	इति चेन्न, पर्याप्तिनां	इति चेच्छक्तीनां
"	२२	पर्याप्तियोंकी अपूर्णताको	शक्तियोंकी अपूर्णताको
२८३	३	परिस्पन्दरूपस्य	x
"	१४	मनके निमित्तसे जो परिस्पन्दरूप प्रयत्नविशेष	मनके निमित्तसे जो प्रयत्नविशेष
३५३	७	ज्ञानानुवादेन	ज्ञानानुवादे
३८३	९	आसंजननात्	आसंजनात्
४००	२	आसंजननात्	आसंजनात्

### भाग ३

३	७	लोगपमाणं	लोगसमाणं
१६	७	तं पदरागारेण आगासं	तं पदरागारेण
२५	८	सर्वजीवरासिबग्गसल्लागाओ	x
३१	३	तेरसगुणट्ठाणमेत्तेण	तेरसगुणट्ठाण-
३६	४	जं भदत्तं	अ भदत्तं

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूढविद्रीका पाठ
४६	६	अवहारविलेसेण य	अवहारविलेसेण
५१	४	एयं खंडं	एयखंडं
५५	७	आगच्छदि त्ति ।	आगच्छदि ।
६०	७	"	"
६८	४	गुणिदे	गुणिदे हि
१०९	३	हेट्टिमविरलणाए	हेट्टिमविरलणाणं
११८	१	गुणगारो रासी	गुणगाररासी
११९	३	असंखेज्जगुणाए सेढीए	असंखेज्जगुणसेढीए
१२६	६	अणिज्जमाणं	अणिज्जमाणं
१३०	७	छंडिय	छड्डिय
१३२	५	अप्पिदत्तादो	पदिदत्तादो
१४२	१	एगसेढी	एगा सेढी
१६२	१	विलेसाभावादो	विलेसाभावा
१८४	६	पेच्छामो	पच्छामो
१८५	८	"	"
१९१	५	उवरिमविरलणरूव-	उवरिमविरलण-
१९२	७	सो	एसो
१९३	५	इच्छाए	-मिच्छाए
१९८	४	-परूवय-	-परूवण-
२०१	४	देवेसु ॥ ६७ ॥	देवेसु ( ६७ ) इदि
२१५	७	-ट्टियणए	-ट्टियणए पुण
२१६	१	अवलंविज्जमाणे ओघपरूवणादो	अवलंविओघपरूवणादो
२१८	१	सुत्तस्स वि	सुत्तस्स
२२४	७	होदि ।	आगच्छदि ।
४२६	२	चटुककसाइ-	चटुकसाइ
४४१	४	ओघत्तं	ओघत्ते
४४७	६	खवा	खवगा
४४८	५	विय	वेय
४७६	७	पदे दो वि	पदेणावि

स—मूढविद्रीय ताडपत्रीय प्रतियोंके वे पाठ भेद जो उच्चारण भेदसे संबन्ध रखते हैं, अतएव उनमेंसे किसीके भी रखनेमें कोई आपत्ति नहीं है ।

## भाग १

६ ३ विविहज्जि-  
" ५ गओह-

विविहिज्जि-  
गयोह-

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूढविद्रीका पाठ
७	१	पुष्पदंतं	पुष्पयंतं
"	३	भूयबलिं	भूयबलिं
"	५	हेऊ	हेउं
"	६	आहरियो	आहरिओ
५	२	"	"
९	१	पयत्थ	पयट्ट
११	२	भणिओ	भणिओ
१२	१	पज्जय	पज्जव
१५	२	सुवकुक्खि-	सुवकुक्कि (-क्खि)
१६	८	मोली	मउलि
१८	७	अण्ण-णिमित्तंतर-	अण्णं णिमित्तंतर-
२५	१	णिवददि	णिपददि
२६	२	घादेणियरेण	घायेणियरेण
४०	२	आदीवसाण	आदि-अधसाण
५१	३	मारुद	मारुव
६२	७	वसप्पिणीए	उवसप्पिणीये
६४	२	दंसण-णाणं चरित्ते	दंसण-णाण-चरित्ते (णाणच्चरित्ते)
६६	१	जंबूसामी य	जंबूसामी च
७०	३	णिब्बुइकरे ति	णिब्बुइकरेत्ति
७१	७	जिणवालिदस्स	जिणपालिदस्स
"	१०	एयं	एदं
७७	२	द्रमिल	द्रविल
८१-९-१०	जाणुग-	जाणग-	
९९	३	पण्हवायरणं	पण्हवाहरणं
१०३	३	किष्किबिल	किष्कबिल
१०८	८	दिट्ठिवादादो	दिट्ठिवायादो
११२	५	सब्बेहिं	सब्बेदि
"	१३	उप्पाय	उप्पाद
११४	१	पग्गूण	पऊण
"	८	अणियोग-	-यणियोग-
११९	६	सुख	सुह
१२१	८	वि-सद	वि-सय
१२२	३	वि-सद	उ-सय

पृष्ठ पंक्ति सुदित पाठ

मूडविद्रीका पाठ

"	५ लोक	लोक
१२३	३ अत्थाद्वियारो	अत्थाधियारो
१२४	४ चयण	चवण
१२६	४ पुच्छा	पच्छा
१२७	५ भवंति	हवंति
१३०	११ संपदि	संपदि
१५७	२ संतमत्थ-	संतमत्थ-
"	७ परिसेसादो	पारिसेसादो
१५८	५ तेहिंतो	तेहि
१७०	५ पुद्द भावं	पिद्द भावं
१८६	९ हुयवह	हुदवह
२०२	७ सुवियड	सुवियद
२१७	९ उवपसा	उवपसे
२२२	९ मेत्ति	मेत्ति ( मेत्ती )
२४३	१ पिपीलिक	पिपीलिय
२५२	१ वणप्फदि	वणप्फइ
२६४	६ आदधाना	दधाना
३१३	७ पंचेंदिया त्ति	पंचेंदिय त्ति
३४३	७ णुंसगवेदा	णुंसगवेदा
३४७	११ सम्मूर्च्छिम	सम्मूर्च्छित
३५०	८ हरिद्	हलिद्
३५८	८ उवपसा	उवदेसा
३६४	१० ओद्धिणाणं	ओधिणाणं
३७३	६ ज्झरिय	ज्झडिय
३९४	२ णिगोद	णियोद
४०७	४ अवराजिद्	अवराइद्

## भाग २

४१७	७ चत्तारि ( ३ वार )	चारि ( ३ वार )
४१९	९ छ लेस्साओ	छलेसाओ
४२१	५ वा	व
"	" "	"
"	६ संपदि	संपदि
४३४	४ एओ	एगो

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्रीका पाठ
४४८	२	मूलोघालावा समत्ता	मूलोघालावो समत्तो
"	८	सुदु कणहेत्ति	सुदु कसणेत्ति
४५२	५	असंजम	असंजमो
४५३	३	असंजम	असंजमो
४५६	४	काऊ काऊ काऊ	काउ काउ तह काओ
४७१	३	पंचविधा भवंति	पंचविहा हवंति
४९३	२	आहारिणी अणाहारिणी	आहारिणीओ अणाहारिणीओ
४९७	७	तासिं खेव	तासिं
५०३	२	पेक्खिऊण	पेक्खियूण
५२८	७	मणुसिणीसु	मणुसिणी-
५५९	७	परिणमिय	परिणामिय
५६३	८	कापिट्ठ	काविट्ठ
५६६	७	मणुस्साणं व	मणुसाण व
५६९	२	अदीदपज्जत्तीओ	अदीदपज्जत्तीणो
५९०	९	अर्णिदियाणं	अर्णिदिया
५९१	२	छव्वा	छावा
"	" "	" "	"
५९३	६	अट्टारस्स	अट्टारह
५९७	१	खेत्तूण	x
५९८	१०	एक्कावण	एक्कावण
६००	१	एद्वे	एए
६०४	२	मूलोघम्भुत्त	मूलोघम्मि उत्त-
६२९	१	पेक्खिय	पेक्खिऊण
६८८	१	सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि	सासणसम्माइट्ठि पड्डिं
६९९	८	ओघालावा मूलोघभंगा	ओघालाओ मूलोघभंगो
८२३	२	उवसंहरिद-	उवसंघरिद-

भाग ३

१	२	णमिऊण	णमियूण
"	"	द्व्वणिओगं	द्व्वणियोगं
१	५	दुविहो	दुविधो
३	१०	हेऊ	हेइ



पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मूढविद्वीका पाठ

५, ६ २, ३, ५, ७, ८ दुंद  
 ६ १२ तद्वद्भावादो  
 १३ ४ द्वाणंतं चेदि  
 ,, ,, -जाणुगसरीरं  
 १४ २ दुक्केज्जेत्ति  
 १४ २ गह्वयव्वं  
 १७ २ तथार्दसणादो  
 १९ ७ अहवा  
 २९ ५ ववहारजोगो  
 ३० ५ अणाइस्स  
 ३२ ७ जधा  
 ३२ ७ मिणिज्जदि  
 ३२ ८ लोएण  
 ३७ ५ वेयणासुत्तेण  
 ३८ ७ होंति  
 ४० ४ एगरुव्वं  
 ४० ९ -भाजिद-  
 ४३ ४ -विरलणय-  
 ६३ ६ -मवहिरिज्जदि  
 ६४ ५ अट्ठीस  
 ६७ १० सेसुस्सासे वि  
 ७१ २ वल्लिदोवमे  
 ९० २ तेणउदी  
 ९८ १० भावमावणं  
 ,, ९ चउसट्ठी  
 १०० १ णवणउदी  
 १०० २ अट्ठाणउदी  
 १०० १२ उणतीसा  
 ११४ २ भवदि त्ति  
 १२३ ३ सव्व-भावा  
 १४२ ९ -सुदी  
 १५७ ९ -स्सरण  
 १७३ १ आणेयव्वाओ

दंद  
 तद्वद्भावादो  
 द्वाणंतमिदि  
 -जाणुगस्स सरीरं  
 दुक्केज्जेदि त्ति  
 गह्वेद्वं  
 तद्वादसणादो  
 अथवा  
 ववहारजोगो  
 अणादिस्स  
 जधा  
 मिणिज्जदे  
 लोएण  
 वेयणसुत्तेण, वेदणसुत्तेण  
 हवन्ति, भवन्ति  
 एगं रुव्वं  
 -भाजिद-  
 -विरलण-  
 -मवहिरिदि  
 अट्ठीस  
 सेसुस्सासासो वि  
 पल्लिदोवमे  
 तेणउदा  
 भावमावणं  
 चउसट्ठा  
 णवणउदा  
 अट्ठाणउदा  
 उगुतीसा  
 भवदीदि  
 सव्व-भावो  
 सुदीदो  
 चरण  
 आणेद्व्वाओ

पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मूढविद्रीका पाठ

- १९० २ एगुणवीसेहि  
२०१ ३ दुयं  
२१० १० णेदब्बो  
२१३ ४ -अट्टम-  
२१९ ७, ९ वेसय-  
२२३ १ -भागेण  
” ५ भागे  
२२४ १ संपहि  
२२८ २ कप्पमाणपरूवणा  
२३९ १४ भागेदब्बा  
२४४ ७ सेसगहपडिसेदो  
२४६ ५ -मिच्छाहट्ठीण  
२६२ १२ वियहिचारे  
२७२ १० पदरस्सेदि  
२७३ ३ विरोद्दादो  
२७८ ३ अणूणाहियाओ  
२९५ २ चउग्गह-  
३३० २ -मकाहत्त-  
३३७ ६ गुणेज्ज-  
३३७ ६ पवेसमाण-  
३४८ ३ -भादओ  
३६० १ पज्जत्तरासिणा  
३७५ ३ पक्खेविय  
३७९ १ पविसिदब्बाणि  
३९० ३ -जोगरासिं  
३९७ १ तमद्दाय गुणगारेण  
३९७ १३ -कायजोगग्गिह  
४०८ ५ -मणेयंतियमिदि  
४२० २ पवेसविधी  
४२५ ११ पडिवाडीप

- एवकूणवीसेहि  
दुयं  
णयब्बो  
-अट्ट-  
विसय-  
-भाएण  
भाए  
संपदि  
कप्पयमाणपरूवणादो ।  
भाणिदब्बा  
सेसगहपडिसेधो  
-मिच्छाहट्ठीणं  
वमिचारे  
पदरस्सेत्ति  
विरोद्दा  
अणूणाहियाओ  
चउग्गह-  
-मकाहयत्त-  
गुणिज्ज-  
पविसमाण-  
-भुदओ  
पज्जत्तरासिपाहि  
पक्खिविय  
पवेसिदब्बाणि  
-जोगरासीओ  
तमद्दायगुणगारेण  
-कायजोगिग्गिह  
-मणेयंतियमिदि  
पवेसणविधी  
परिवाडीप

ड — मूडविद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतियोंके वे पाठ जो पाठ या अर्थकी दृष्टिसे अशुद्ध प्रतीत हुए ।

नोट—जिन पाठोंके संबंधमें कुछ विशेष कहना है वह नीचे पाद टिप्पणमें देखिये । जो पद पाठ या अर्थकी दृष्टिसे स्पष्टतः अशुद्ध प्रतीत हुए उनके ऊपर कोई टिप्पण देनेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई ।

## भाग १

पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मूडविद्रीका पाठ

८	३ अरिहंताणं	अरिहंताणं
१३	१ उजुसुद	उजुसुद
१६	४ णियत	च्चियत (?)
"	८ तस्यायुक्तं	तस्याप्युक्तं
२१	१ अणुवजुत्तो	अणवजुत्तो
३१	५ विपर्यस्थयोः	विपर्यस्थयोः
४४	४ अरिहंता	अरिहंतः
"	५ "	"
५३	५ तत्करणादप्युप-	तत्करणादप्युप-
५८	११ अव्यच्छिण्णं	अव्यच्छिण्णं
६०	३ व्याकुलता	व्याकुल
६४	६ दिव्वज्जुणी	दिव्वज्झाणे
६८	५ पादमूलसुवगया	पादमूलमवगया
८२	१० जीवट्टाणे	जीवट्टाण
८३	८ जीवट्टाणं	जीवट्टाणे

८ ३ पृष्ठ ४२ पर जो णमोकार सूत्रका अर्थ प्रारंभ किया गया है वहां 'अरिहंताणं' पाठ ही ग्रहण किया गया है और मूडविद्री प्रतियोंसे भी वहां कोई पाठान्तर प्राप्त नहीं हुआ । उसके अर्थ करनेमें भी धवलाकारने 'अरिमोहः' इत्यादि पदांश ग्रहण किया है । इससे अनुमान होता है कि धवलाकारके सम्मुख 'अरिहंताणं' पाठ ही रहा है । 'अरिहंताणं' पद ग्रहण करनेसे प्राकृत नियमावुसार उसका 'अरि+हंता' व 'अहंत' दोनों अर्थ हो सकते हैं ( देखो हैम प्राकृत व्याकरण ८, २, १११ ) किन्तु अरहंत से केवल अहंत अर्थ ही निकल सकता है 'अरिहंता' नहीं ।

३१, ५ 'विपर्यस्थयोः' पाठ तो व्याकरणसे शुद्ध है ही नहीं, किन्तु यदि उसके स्थान पर 'विपर्यस्थयोः' पाठ हो तो त्रास्य हो सकता है, क्योंकि उसका वही अर्थ निकल आता है जो प्रकृतोपयोगी है ।

४४, ४-५ इसका विचार हम पहले ही कर चुके हैं । देखो पट्टबंधागम, भाग १, मुद्रिका पृ. १२ व. ८४

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडबिंद्रीका पाठ
९२	३	वियोगापायस्य	वियोगापायस्य
९७	१	पुरिसं च	पुरिसं च
१०५	१	कहाओ	×
"	२	सुद्धिं करेंती	सुद्धिमकरेंती
१११	२	उत्तं च	उत्ता च
११२	३	हवइ	×
१२४	१२	नामं कम्माणं	नाम कम्माणं
१५८	४	जमत्थित्तं	जमत्तिथित्तं
१८६	८	जेस्सि	जंस
२१९	६	तो वि	ते वि
२२०	३	अव्वहिय	अव्वहिय
२२२	४	णिवट्ठति	पिण्डुदित्ति (?)
२६२	९	असंख्खिप्रभृतयः	संख्खिप्रभृतयः
२९८	६	नैष	नैष दोषः
३१५	२	बाधा	बाधात्
३२६	१०	महव्वदाई	महव्वदेसु य
३२८	८	तत्तैतासां	तत्तैतेषां
३३३	१	अस्मादेवार्षात्	यस्मादेवार्षात्
३५९	१	खदियुवसमियं	खदियुवसमियं
३६३	७	इदि ॥ ११९ ॥ अत्रैक-	इत्यत्र एक-
३६६	५	स्थितम्	स्थितः
३७६	७	पंचयमः	पंचयमाः
"	८	"	"
३८०	११	चक्षुषा	चक्षुषो
३९२	८	तद्	ते

भाग २

४१२	५	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशमापेक्ष्य
४१३	३	मैथुनसंज्ञायाः	मैथुनसंज्ञायां
"	"	विशेषलक्षण	विशेषलक्षणं
"	५	आलीढवाह्यार्थः	आलीढवाह्यार्थ
४१४	१०	वेदमार्गणाप्रभेदः	वेदमार्गणाप्रभेदाः
४१७	११	आणपानपाना	आणपानपान

[पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मूढविद्रीका पाठ

४२० ७ सिद्धगदी  
 ४३३ ३ -सण्णा  
 ४४३ ६ -मणिच्चमिदि  
 ४५३ ३ तिणिण अण्णाण  
 ४९३ ३ पज्जत्तजोणिणीणं  
 ५१३ ७ तेणित्थिवेदो पि  
 ६०९ ११ रत्ताअंब  
 ६५३ ५ सत्तब्भुवगमादो वा  
 ८२३ ३ ओदिण्णाणं

सिद्धगदी वि  
 सण्णाओ  
 -मणिच्चमि तेण  
 तिणिण णाणाणि  
 पज्जत्तजोणिणी  
 तेणित्थिवेदो पि  
 वत्ताअंब  
 सत्तब्भुवादो वा  
 उदिण्णाणं

## भाग ३

२ ५ सपरप्पगासओ  
 ५ ११ -मनेकधा  
 ६ ७ दब्बपमाणाणं  
 ७ २ पूर्वमव्ययीभावस्य  
 १२ १ भेदकम्मेसु  
 १८ ८ अण्णभेदस्स  
 २२ १ अणंतगुणाओ  
 २५ १० णट्ठंतस्स  
 २६ ६ तत्तियमेत्तो  
 २७ ९ एवं महंती  
 २८ २ मोगाहे  
 २८ ८ अवहिरिज्जमाणे सव्वे

सपरप्पगासदि  
 -मनेकवा  
 दब्बपमाणाणं परूवणाणं  
 पूर्वमव्ययीभावस्य<sup>१</sup>  
 भेदकम्मेसु  
 उण्णणभेदस्स  
 अणंतगुणादो  
 णिट्ठंतस्स  
 तत्तियाणिमेत्तो  
 एम्महंती  
 मोगादे  
 अवहिरिज्जमाणे सव्वे समैया अवहिरिज्जमाणे  
 सव्वे

३२ ३ अणंताणंता  
 ३८ २ अहंदिथविस्सप  
 ५२ ५ सव्वजीवरासिणा तस्स घणो  
 ५८ ३ अट्ठपरूवणा

अणंता<sup>१</sup>  
 अहंदिथविसयो  
 सव्वजीवरासिणा पुणो  
 अट्ठरूवणा

१ संस्कृत व्याकरणके नियमानुसार ' अव्ययीभाव ' ही होता है, किन्तु छंदकी रक्षाके हेतु वहां नृस्वत्व कर लिया जान पड़ता है ।

२ आगे इन्द्रिय आदि मार्गणाओमें, जिनका प्रमाण क्षेत्रकी अपेक्षा अनंतानन्त है, उनका प्रमाण ' अणंताणंता ' इसी रूपमें बतलाया गया है । देखो सूत्र ७६, ९७ व १८९.

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रित पाठ	मूडविद्रीका पाठ
६७	४	-मुहुत्तम्भुवगमादो ।	-मुहुत्तम्भुगदो
७०	३	-संजुद-	-संजत्त
९९	९	छासट्टि-	छावत्तरि-
१००	५	परिमाणं	पमाणं
१०५	७	अध वेरूवाहिय-	अथवा रूवाहिय-
१२३	४	कट्टकम्मादिसु	कट्टमादिसु
१३१	१	ओगाहे	ओगाडे
१३३	७	जडाहि	जदाहि
१९१	९	अवणिदसेसपमाणं	अवणिदे सेसपमाणं
१९१	९	हेट्टिमविरलणाप	विरलणाप
१९२	२	पुव्वट्टविद्वेत्ति-	पुव्वट्टविद्वेत्ति-
१९५	६	सोधिदे	सोविदे
१९९	३	अण्णोण्णम्भासेण	अण्णोण्णम्भासो
२०९	४	पदरम-	पढम-
२२७	४	अदीव-	अदीद-
२३२	३	भवणादियाणं	अणादियाणं
२३२	८	छज्जोयण-	तिणिज्जोयण-
२३६	१०	तव्वग्गवग्गं	तत्तस्स वग्गं
२४३	१	पज्जत्तअवहारकालो	पज्जत्तामिस्सअवहारकालो
२४५	७	असंखेज्जदि-	असंखेज्जदि-
२६०	६	कोडाकोडाकोडाकोडीप	कोडाकोडाकोडीप
२६२	११	तदियवग्गमूलगुणिदेण	तदियवग्गमूलगुणिदेण । तिस्से सेदीप आयामो
२६३	१	णेव	असंखेज्जाओ जोयणकोडीओ
२६८	३	असंखेज्जासंखेज्जाहि	खेव
२७५	५	बहुत्ताविरोहादो	असंखेज्जासंखेज्जाओ
२७९	६	घणधारुप्पण-	बहुत्ताविरोहो
३०७	२	गंधव्व-णागादि	घडणधारुप्पण-
३०७	४	वोच्छेज्जंति	गंधव्वणिगादि
			वोच्छेज्जतो

१ 'पमाणं' पद रखनेसे अर्थमें कोई भेद न पड़ते हुए भी छंदोभंग दोष हो जाता है ।

२ ' तिस्से सेदीप ' आदि पाठ ऊपरसे पुनरावृत्त होगया है ।

पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ

मूढविदीका पाठ

३४१	२ घणाघणे	बेरुवे
३४२	१० द्विये	हवे
३५३	५ आगच्छदि ।	आगच्छदि त्ति गुणेऊण भागग्गहणं कदं ।
३५९	७ -सेसरासिणा	-सेसरासि
३७२	३ -सरीरपज्जत्तेण	सरीरपज्जत्त
३८१	१२ किमहिओ ऊणो	किमादीओ ऊणा
३८२	३ बादरआउपज्जत्त-	बादरवाउपज्जत्त
३८४	१ -द्व्वमसंखेज्जगुणं	-द्व्वमणंतगुणं
३८६	९ जदो	जादो
४०४	४ पुणरवि ओदरमाणा	पुण द्रुवियोदरमाणा
४१२	१ मोसवविजोगि-सच्चवविजोगि	मोसवविजोगि संभवदि
४१४	२ संखेज्जगुणाओ	असंखेज्जगुणाओ
४२५	८ -भागमेत्तो	भागमेत्ते
"	९ ण च	णव
"	९ णिग्गम-पवेसाणं	णिग्गमपवेसणं
४३०	४ अकसाइणो ण	अकसाइणा
४४८	११ चेवज्जवसाया	चेदज्जवसाया
४५४	६ चक्खुदंसणट्ठिदी	चक्खुदंसणट्ठिदीओ
४७४	६ एसो	एगो
४८१	३ णामदत्तं	ण भदत्तं
४८४	१० अणाहारिअसंजद-	आहारिअसंजद-
४८६	१० ( खवगा संखेज्जगुणा )	बंधगा संखेज्जगुणा

